इस किताब की पी. डी. एफ. फाईल अभी तक हिंदी में मौजूद नहीं थी। इसलिए मैंने एक छोटी सी कोशिश की है कि इसकी हिंदी पी. डी. एफ. फाईल बनाऊ ताकि ज़्यादा से ज़्यादा लोग हमारे अस्लाफ़ो की बहादुरी के बारे में जान सके।

दुआ में याद रखना आपका भाई आपका दोस्त

[वसीम खान मंदसौर म. प्र.]
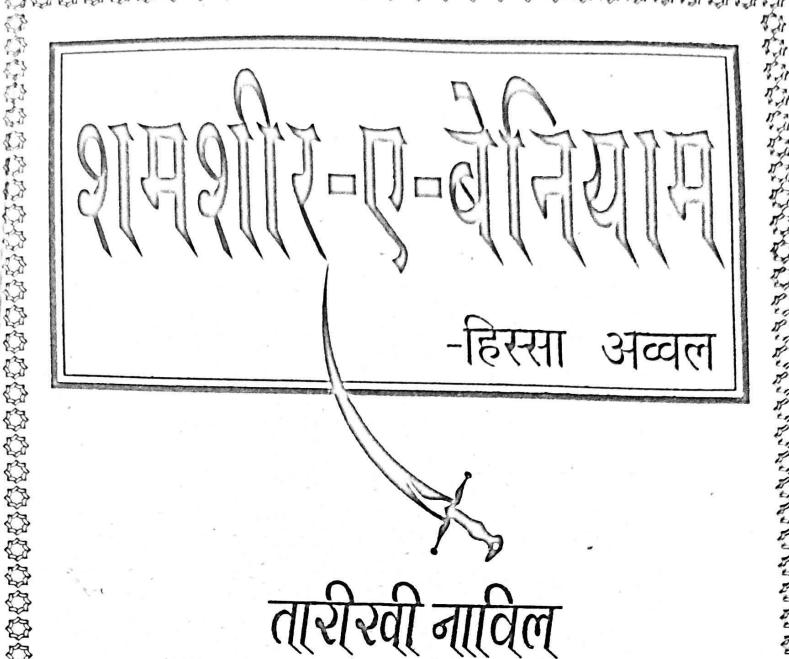
शमशीर-ए-बेनियाम

-हिस्सा अव्वल

तारीखी नाविल

ख़ालिद बिन वलीद की दास्तान-ए-शुजाअत

इनायत-उल्ला

अल्तमश

नाम किताब: शमशीर-ए-बेनियाम
मुसन्निफ़: इनायत-उल्ला अल्तमश

बार-ए-अव्वल:
तादाद: 1100
मतबआ: : New Allied Printers,Delh

नाशिर

अदबी दुनिया, 510 मटिया महल, दिल्ली.6

वो मुसाफ़िर अरब के सहरा में अकेला चला जा रहा था।

629 ई०(8 हिज्री) के ज़माने में अरब का वो इलाक़ा जहां मक्का और मदीना वाक़े है, बड़ा ही ख़ौफनाक सहरा हुआ करता था-जलता और इन्सानों को झुलसाता हुआ रेगज़ार-एक तो सहरा की अपनी सऊबतें थी, दूसरा ख़तरा रहज़नों का था। मुसाफिर क़ाफलों की सूरत में सफर किया करते थे लेकिन ये मुसाफिर अकेला जा रहा था। वो आला नस्ल के जंगी घोड़े पर सवार था। उस की ज़िरह घोड़े की ज़ीन के साथ बन्धी हुई थी। उस की कमर से तलवार लटक रही थी और उस के हाथ में बरछी थी।

उस ज़माने में मर्दों का क़द दराज़, सीने चौड़े और जिस्म गठे हुए होते थे। ये अकेला मुसाफिर भी उन्हीं मर्दों में से था लेकिन वो जिस अन्दाज़ से घोड़े की पीठ पर बैठा था उससे पता चलता था के वो शहसवार है और वो कोई मामूली आदमी नहीं। उसके चहरे पर ख़ौफ़ का हल्का सा भी तआस्सुर नहीं था के रहज़न उसे लूट लेंगे, उससे इतनी अच्छी नस्ल का घौड़ा छीन लेंगे और उसे पैदल सफर करना पड़ेगा लेकिन उसके चेहरे पर जो तआस्सुर था वो कुदरती नहीं था। वो कुछ सोच रहा था। यादों से दिल बहला रहा था या कुछ यादों को ज़हन में दफ़्न करने की कोशिश कर रहा था।

आगे एक घाटी आ गई। घोड़ा चढ़ता चला गया। ख़ासी बुलन्दी पर जाकर ज़मीन हमवार हुई। सवार ने घोड़ा रोक कर उसे घुमाया और रकाबों पर खड़े हो कर पीछे देखा। उसे मक्का नज़र न आया। मक्का उफक़ के नीचे चला गया था।

"अबु सुलेमान"!- उसे जैसे आवाज़ सुनाई दी हो - "अब पीछे न देखो। मक्का को ज़हन से उतार दो तुम मर्दे मैदान हो। अपने आप को दो हिस्सो में न कटने दो। अपने फैसले पर क़ायम रहो। तुम्हारी मंज़िल मदीना है।"

उस ने मक्का की सिम्त से निगाहें हटा लीं, घोड़े का रूख़ मदीना की तरफ किया और बाग को हल्का सा झटका दिया। घोड़ा अपने सवार के इशारे समझता था। जची तुली चाल चल पड़ा। सवार की उम्र 43 बरस थी लेकिन वो अपनी उम्र से जवान लगता था। सुलेमान उसके बेटे का नाम था। उसके बाप का नाम वलीद था, लेकिन सवार ने ख़ालिद बिन वलीद की बजाए अबु सुलेमान कहलाना ज़्यादा पसंद किया था। उसे मालूम न था के तारीख़ उसे खालिद बिन् वलीद के नाम से याद रखेगी

और ये नाम इस्लाम की अस्करी रिवायात और जज़्बे का दूसरा नाम बन जाएगा मगर 43 बरस की उम्र में जब ख़ालिद मदीने की तरफ जा रहा था उस वक़्त वो मुसलमान नहीं था। छोटी छोटी झड़पो के अलावा वो मुसलमानों के खिलाफ दो बड़ी जंगें-जंग-ए-ओहद और जंग-ए-खंदक-लड़ चुका था।

जब रसूल-ए-अकरम (स०) पर 610 ई० बरोज़ सोमवार पहली वही नाज़िल हुई उस वक़्त ख़ालिद की उम्र 24 साल थी। उस वक़्त तक वो अपने क़बीले बनु मख्ज़ूम की असकरी कुव्वत का क़ायद बन चुका था। बनु मख्ज़ूम का शुमार क़ुरैश के चन्द एक मोअज़्ज़िज़ ख़ानदानों में होता था। क़ुरैश के असकरी उमूर उसी ख़ानदान के सुपुर्द थे। क़ुरैश ख़ालिद के बाप वलीद के अहकाम और फैसले मानते थे। 24 बरस की उम्र में ये हैसियत ख़ालिद को भी हासिल हो गई थी मगर उस हैसियत को ठुकरा कर ख़ालिद अबु सुलेमान मदीना को जा रहा था।

कभी वो महसूस करता जैसे उस की ज़ात से कोई कुव्व्त उसे पीछे को घसीट रही हो। जब वो उस कुव्व्त के असर को महसूस करता तो उस की गरदन पीछे को मुड़ती जाती लेकिन उस की अपनी ज़ात से एक आवाज़ उठती-"आगे देख ख़ालिद! तू वलीद का बेटा है लेकिन वो मर गया है। अब तू सुलेमान का बाप है। वो ज़िन्दा है"।

उसके ज़हन में दो नाम अटक गए- मोहम्मद(रसूल अल्लाह) (स०) जो एक नया दीन लाए थे और वलीद जो ख़ालिद का बाप और मोहम्मद (स०) और आप के नए दीन का बहुत बड़ा दुश्मन था- बाप ये दुश्मनी विरसे के तौर पर ख़ालिद के हवाले करके दुनिया से उठ गया था।

ख़ालिद के घोड़े ने पानी की मुश्क पर अपने आप ही रूख़ बदल लिया था। ख़ालिद ने उधर देखा। उसे गोल दायरे में खजूरों के दरख़्त और सहरा के झाड़ी नुमा दरख़्त नज़र आए। घोड़ा उधर ही जा रहा था।

नख़लिस्तान में दाख़िल हो कर ख़ालिद घोड़े से कूद गया। अमामा उतार कर वो पानी के किनारे दो ज़ानो हो गया। उसने पानी चुल्लु भर भर कर अपने सर पर डाला और दो चार छींटे मुंह पर फैंके। उसका घोड़ा पानी पी रहा था। ख़ालिद ने उस चश्में से पानी पिया जो सिर्फ इन्सानों के इस्तेमाल के लिए था। ये छोटा सा एक जंगल था। ख़ालिद ने घोड़े की ज़ीन उतारी और ज़ीन के साथ बन्धी हुई छोटी सी एक दरी खोल कर झाड़ी नुमा दरख़्तों के झुण्ड तले बिछाई और लेट गया।

❂

वो थक गया था। थेड़ी सी देर के लिए सो जाना चाहता था मगर उसके ज़हन

में यादों का जो क़ाफ़िला चल पड़ा था वो उसे सोने नहीं दे रहा था। उसे सात साल पहले का एक दिन याद आया जब उसके अज़ीज़ों ने मोहम्मद(स०) को क़त्ल करने का मनसूबा बनाया था। उस मनसूबे में ख़ालिद का बाप वलीद पेश पेश था।

वो सितम्बर 622 ई० की एक रात थी। कुरैश ने रसूल-ए-खुदा को सोते में क़त्ल करने के लिए ऐसे आदमी चुने थे जो इन्सानों के रूप में वहशी और दरिंदे थे। ख़ालिद कुरैश के सरकरदा ख़ानदान का जवान था। उस वक़्त उस की उम्र सत्ताईस साल थी। वो आंहज़रत(स०) के क़त्ल की साज़िश में शरीक था लेकिन वो क़त्ल करने वालों में शामिल नहीं था, उसे सात साल पहले की वो रात कल की तरह याद थी, वो इस क़त्ल पर खुश भी था नाखुश भी। खुश इसलिए के उसके अपने क़बीले के ही एक आदमी ने उसके मज़हब को जो बुत परस्ती थी, बातिल कह दिया और अपने आप को खुदा का पैग़म्बर कह दिया था। ऐसे दुश्मन के क़त्ल पर खुश होना फितरी बात थी।

और वो नाखुश इसलिए था के वो अपने दुश्मन को लल्कार कर आमने सामने की लड़ाई लड़ने का क़ायल था। उसने सोए हुए दुश्मन को क़त्ल करने की कभी सोची ही नहीं थी। बहर हाल उसने उस साज़िश की मुख़ालफत नहीं की लेकिन क़त्ल की रात जब क़ातिल रसूले खुदा को मुक़र्ररा वक़्त पर क़त्ल करने गए तो आप(स०) का मकान खाली था। वहां घर का सामान भी नहीं था। न आप(स०) का घोड़ा था न ऊंटनी। कुरैश इस उम्मीद पर सोए हुए थे के सुबह उन्हें खुशख़बरी मिलेगी के उनके मज़हब को झुटलाने और उन्हें अपने नये मज़हब की तरफ बुलाने वाला क़त्ल हो गया है मगर सुबह वो एक दूसरे को मायूसी के आलम में देख रहे थे, फिर वो सरगोशियों में एक दूसरे से पूछने लगे-"मोहम्मद(स०) कहां गया"?

रसूल-ए-अकरम(स०) क़त्ल के वक़्त से बहुत पहले अपने क़त्ल की साज़िश से आगाह हो कर मक्का से यसरब(मदीना) को हिजरत कर गए थे। सुबह तक आप बहुत दूर निकल गए थे।

आज, सात बरसों बाद, ख़ालिद भी मदीना की तरफ जा रहा था और उसके ज़हन पर मोहम्मद(स०) का नाम सवार था। उसने जंग-ए-ओहद में अपने देवता, हुब्ल और देवी उज़्ज़ा के दुश्मन मोहम्मद(स०) को क़त्ल करने की भरपूर कोशिश की थी मगर आप ज़ख्मी हालत में वहां से निकल गए थे।

ख़ालिद के ज़हन से यादें फूटती चली आ रही थीं। ज़हन पीछे ही पीछे हटते हटते सोला बरस दूर जा रूका। 613 ई० की एक शाम रसूल करीम(स०) ने कुरैश के चन्द एक सरकरदा अफराद को अपने हां खाने पर मदऊ किया। खाने के बाद रसूले

करीम(स०) ने अपने मेहमानों से कहा:

"ऐ बनी अबदुल मुत्तलिब! में तुम्हारे सामने जो तोहफा पेश करने लगा हूं वो अरब का कोई और शख़्स पेश नही कर सकता। इसके लिए अल्लाह ने मुझे मुंतख़िब किया है। मुझे अल्लाह ने हुक्म दिया है के तुम्हें एक ऐसे मज़हब की तरफ बुलाऊं जो तुम्हारी दुनिया के साथ तुम्हारी आक़बत भी आसूदा और मसरूर कर देगा।"

इस तरह रसूल अकरम(स०) ने पहली वही के नुज़ूल के तीन साल बाद अपने क़रीबी अज़ीज़ों को इस्लाम कुबूल करने की दावत दी। ख़ालिद इस महफिल में नहीं था। उस का बाप मदऊ था। उसने ख़ालिद को मज़ाक़ उड़ाने के अन्दाज़ में बताया था के अबदुल मुत्तलिब के पौते मोहम्मद(स०) ने कहा है के वो अल्लाह का भेजा हुआ नबी है।

"हम जानते है अब्दुल मुत्तलिब कुरैश का एक सरदार था"-वलीद ने अपने बेटे ख़ालिद से कहा- बेशक मोहम्मद(स०) का ख़ानदान आला हैसियत रखता है लेकिन नबुव्वत का दावा इस ख़ानदान का कोई शख़्स क्यों करे? अल्लाह की क़सम' और कसम हुब्ल और उज़ा की, मेरे ख़ानदान का रूत्बा किसी से कम नहीं, क्या नबुव्वत का दावा करके कोई हम से ऊंचा हो सकता है?"

"आप ने उसे क्या कहा है?"- ख़ालिद ने पूछा।

"पहले तो हम चुप हो गए फिर हम सब हंस पड़े"-वलीद ने कहा-"लेकिन मोहम्मद(स०) के चचाज़ाद भाई अली(र०) बिन अबु तालिब ने मोहम्मद(स०) की नबुव्वत को कुबूल कर लिया है।"

ख़ालिद अपने बाप की तंज़िया हंसी को भूला नहीं था।

ख़ालिद को 629 ई० के एक रोज़ मक्का और मदीना के रास्ते में एक नख्लिस्तान में लेटे हुए वो वक़्त याद आ रहा था। रसूल अल्लाह(स०) जिनकी नबुव्वत को कुरैश के सरदार कुबूल नही कर रहे थे, इस नबुव्वत को लोग कुबूल करते चले जा रहे थे। इनमें अकसरियत नौजवानों की थी। बाज़ मुफलिस लोगों ने भी इस्लाम कुबूल कर लिया। इससे नबी करीम (स०) के हौसले में जान आ गई और आप ने इस्लाम की तबलीग़ तेज़ कर दी। आप(स०) बुत परस्ती के ख़िलाफ थे। मुसलमान उन तीन सौ साठ बुतों क़ा मज़ाक उड़ाते थे जो काबा के अन्दर बाहर रखे हुए थे।

तुलूए इस्लाम से पहले अरब एक खुदा को मानते थे और पूजते इन बुतों को थे। इन्हें वो देवियां और देवता कहते और इन्हें अल्लाह के बेटे और बेटियां मानते थे। वो हर बात में अल्लाह की क़सम खाते थे।

कुरैश ने देखा के मोहम्मद(स०) के जिस दीन का उन्होंने मज़ाक उड़ाया था वो मक़बूल होता जा रहा है तो उन्होंने आप(स०) की तबलीग़ी सरगरमियों के ख़िलाफ मुहाज़ बना लिया और मुसलमानों का जीना हराम कर दिया। ख़ालिद को याद आ रहा था के उसने अल्लाह के रसूल(स०) को गलियों और बाज़ारों में लोगों को इकळा करके इन्हें इस्लाम कुबूल करने की दावत देते और बताते देखा था के बुत इन्हें न फायदा दे सकते हैं न नुकसान। इबादत के लायक़ सिर्फ अल्लाह है जो वाहदहू ला शरीक है।

रसूले खुदा की मुख़ालफत के क़ायद कुरैश के चार सरदार थे। एक तो ख़ालिद का बाप वलीद था। दूसरा नबी-ए-करीम(स०) का अपना चचा अबु लहब था, तीसरा अबु सुफयान और चौथा अबुलहुक्म था जो ख़ालिद का चचाज़ाद भाई था। मुसलमानों पर सबसे ज़्यादा ज़ुल्म व तशद्दुद इसी शख़्स ने किया था। वो जहालत की हद तक कीना परवर और मुस्लिमकुश था। इसीलिए उसे अबुजहल कहते थे। ये नाम इतना आम हुआ के लोग जैसे उसका असल नाम भूल ही गए हों। तारीख़ ने भी इस पस्ता क़द, भैंगे और लौहे की तरह मज़बूत आदमी को अबुजहल के नाम से ही याद रखा है।

❁

ख़ालिद को ये यादें परेशान करने लगीं, शायद शर्मसार भी। कुरैश के लोगों ने रसूले खुदा(स०) के घर में कई बार ग़लाज़त फैंकी थी। जहां कोई मुसलमान इस्लाम की तबलीग़ कर रहा होता वहां कुरैश के आदमी जा पहुंचते और हुल्लड़ मचाते थे। बदअख़लाक़ और धुत्कारे हुए आदमियों को रसूले खुदा(स०) को परेशान करते रहने के काम पर लगा दिया गया था।

ख़ालिद को ये इतमेनान ज़रूर था के उसके बाप ने मोहम्मर्दुरसूल अल्लाह(स०) के खिलाफ ऐसी कोई घटिया हरकत नहीं की थी। वो दो मरतबा कुरैश के तीन चार सरदारों को साथ ले कर रसूले खुदा(स०) के चचा अबु तालिब के पास ये कहने गया था के वो अपने भतीजे(रसूले खुदा)(स०) को बुतों की तौहीन और नबुव्वत के दावे से रोके वर्ना वो किसी के हाथों क़त्ल हो जाएगा। अबुतालिब ने इन लोगों को दोनों मरतबा टाल दिया था।

ख़ालिद को अपने बाप की बहुत बड़ी कुरबानी याद आई। अम्मारा ख़ालिद का भाई था। वो ख़ास तौर पर खूबसूरत नौजवान था। वो ज़हीन था और उसमें बांकपन था। ख़ालिद के बाप वलीद ने अपने इतने खूबसूरत बेटे अम्मारा को कुरैश के दो सरदारों के हवाले किया और इन्हें कहा के इसे मोहम्मद(स०) के चचा अबु तालिब

के पास ले जाओ और उसे कहो के मेरा बेटा रख लो और इसके बदले मोहम्मद(स०) हमें दे दो।

ख़ालिद अपने बाप के इस फैसले पर कांप उठा था और जब उसका भाई अम्मारा दोनों सरदारों के साथ चला गया था तो ख़ालिद तनहाई में जाकर रोया था।

"अबुतालिब!"-सरदारों ने अम्मारा को रसूले करीम (स०)के चचा के आगे कर के कहा-"इसे तुम जातने हो। ये अम्मारा बिन वलीद है। तुम ये भी जानते होगे के बनु हाशिम ने जिसके तुम सरदार हो अभी तक इस जैसा सजीला और अक़्लमन्द जवान पैदा नहीं किया। ये हम हमेशा के लिए तुम्हारे हवाले करने आये है। इसे अपना बेटा बना कर रखोगे तो तमाम उम्र फरमांबरदार रहेगा और अगर इसे अपना गुलाम बनाओगे तो क़सम है अल्लाह की तुम पर अपनी जान भी कुरबान कर देगा।"

"मगर तुम इसे मेरे हवाले क्यों कर रहे हो?"-अबु तालिब ने पुछा- क्या बनू मख़्ज़ूम की मांओं ने अपने बेटों को नीलाम करना खुरू कर दिया है?....कहो इसकी कितनी क़ीमत चाहते हो।" "इसके इवज़ हमें अपना भतीजा मोहम्मद(स०) दे दो-कुरैश के एक सरदार ने कहा" "तुम्हारा ये भतीजा तुम्हारी रूसवाई का बाअस बन गया है। उसने तुम्हारे आबावअजदाद के मज़हब को रद्द करके नया मज़हब बना लिया है। क्या तुम देख नही रहे के उसने क़बीले में आदमी को आदमी का दुश्मन बना दिया है।"

"तुम मेरे भतीजे को ले जा कर क्या करोगे?"

"क़त्ल"- कुरैश के दूसरे सरदारों ने जवाब दिया-"हम मोहम्मद(स०) को क़त्ल करेंगे। ये बेइन्साफी नहीं होगी। तुम देख रहे हो के हम तुम्हारे भतीजे के बदले तुम्हें अपना बेटा दे रहे हैं।"

"ये बहुत बड़ी बेइन्साफी होगी"-अबु तालिब ने कहा-"तुम मेरे भतीजे को क़त्ल करोगे और मैं तुम्हारे बेटे को पालुंगा और इस पर ख़र्च करूंगा और इसे बहुत अच्छी ज़िन्दगी दूंगा। तुम मेरे पास कैसा इन्साफ ले कर आए हो?......मैं तुम्हें इज़्ज़त से रूख़्सत करता हूँ।"

ख़ालिद ने जब अपने भाई को अपने सरदारों के साथ वापस आते देखा और सरदारों से सुना के अबु तालिब ने ये सौदा कुबूल नहीं किया तो ख़ालिद को दिली मुर्सरत हुई थी।

❋

"मोहम्मद(स०) का तुम ने क्या बिगाड़ लिया था अबु सुलेमान!"-ख़ालिद की ज़ात से एक सवाल उठा। उसने ख्यालों ही ख़्यालों में सर हिलाया और दिल ही

दिल में कहा-"कुछ नही.........बेशक मोहम्मद(स०) का जिस्म ताक़तवर है लेकिन रूकाना बिन अब्दयज़ीद जैसे पहलवान को उठा कर पटखने के लिए सिर्फ जिस्मानी ताक़त काफी नही।"

रूकाना बिन अब्दयज़ीद रसूल-ए-अकरम(स०) का चचा था जिसने इस्लाम कुबूल नही किया था वो अरब का माना हुआ पहलवान था। नामी गिरामी पहलवान आए जिन्हें उसने एक ही दांव में पटख कर उठने के क़ाबिल न छोड़ा। वो वहशी इन्सान था। सिर्फ लड़ना मारना जानता था। ख़ालिद को वो वक्त याद आने लगा जब मुसलमानों को दिक़ करने वाले तीन चार आदमियों ने एक दिन रूकाना पहलवान को खूब खिलाया पिलाया और उसे कहा था के तुम्हारा भतीजा मोहम्मद(स०) किसी के हाथ नही आता ना अपनी तबलीग़ से बाज़ आता है न किसी से डरता है और लोग उसकी बातों के जादू में आते चले जा रहें हैं, क्या तुम उसे सीधा नहीं कर सकते?

"क्या तुम मेरे हाथों उसकी हड्डियां तुड़वाना चाहते हो?"-? रूकाना ने अपने चहरे पर मस्त भैंसे का तआस्सुर पैदा करके तकब्बुर के लहजे में कहा था-"लाओ उसे मेरे मुक़बाले में.....लेकिन वो मेरा नाम सुन कर मक्के से भाग जाएगा। नही, नहीं। मै उसके साथ लड़ना अपनी तौहीन समझता हूं।

उसने उकसाने वाले आदमियों की बात न मानी। वो किसी पहलवान को अपने बराबर समझता ही नही था। मुसलमानों के दुश्मन खामोश हो गए लेकिन सोचते रहे के रसूले खुदा(स०) को रूकाना के हाथों गिरा कर आप का तमाशा बनाया जाए। वो खुश थे के अहले कुरैश आपस में बट कर एक दूसरे के दुश्मन हो गए हैं। इन्हें पता चल गया के कुरैश के कुछ आदमियों ने रूकाना पहलवान को उकसाया है के वो रसूल अल्लाह को कुश्ती के लिए लल्कारे लेकिन वो नहीं मान रहा।

एक रोज़ रूकाना रात के वक्त एक गली से गुज़र रहा था के उसके क़रीब से एक बड़ी हसीन और जवान लड़की गुज़री। चांदनी रात में लड़की ने रूकाना को पहचान लिया और मुस्कुराई। रूकाना वहशी था। वो रूक गया और लड़की का रास्ता रोक लिया।

"क्या तुम जानती हो के औरत मर्द की तरफ देख कर मुस्कुराती है तो इसका मतलब क्या होता है?"-रूकाना पहलवान ने पूछा-"कौन हो तुम"?

"इस का मतलब ये होता है के औरत उस मर्द को चाहती है"-जवान लड़की ने जवाब दिया-"मै सिब्त बिनत-ए-अरमन हूं।"

"ओ.....अरमन यहूदी की बेटी!"-रूकाना ने कहा और लड़की के कन्धों पर हाथ रख कर और उसे अपने क़रीब करके बोला-"क्या मेरा जिस्म तुझे इतना अच्छा

लगता है और क्या मेरी ताक़त.....

"तुम्हारी ताक़त ने मुझे मायूस कर दिया है"-सिब्त ने पीछे हटते हुए कहा-"तुम अपने भतीजे मोहम्मद(स०) से डरते हो।"

"कौन कहता है?"-रूकाना ने गरज कर पुछा।

"सब कहते हैं"-सिब्त ने कहा-"पहले मोहम्मद(स०) को गिराओ। मैं अपना जिस्म तुम्हें इनाम में दूंगी।"

"अल्लाह के बेटे और बेटियों की क़सम। तेरी बात पूरी करके तेरे सामने आऊंगा।"-रूकाना ने कहा-"लेकिन तूने ग़लत सुना है के मै मोहम्मद(स०) से डरता हूं। बात ये है के मै अपने से कमज़ोर के साथ लड़ना अपनी तौहीन समझता हूं लेकिन तेरी बात पूरी करूंगा।

❁

मशहूर मोअर्रिख़ इब्ने हशाम ने लिखा है के रसूले करीम ने खुद रूकाना पहलवान को कुश्ती के लिए लल्कारा था लेकिन दूसरे मोअर्रिख़ इब्नुलअसीर ने जो शहादत पेश की है वो सही है के रूकाना ने रसूले खुदा(स०) को कुश्ती के लिए लल्कारा और उसने कहा था:

"मेरे भाई के बेटे! तुम बड़े दिल और जुर्रत वाले आदमी हो। मैं ये भी जानता हूं के तुम झूट बोलने से नफरत करते हो लेकिन मर्द की जुर्रत और सदाक़त का पता अखाड़े में चलता है। आओ मेरे मुक़ाबले में अखाड़े में उतरो। अगर मुझे गिरा लो तो में तुम्हें अल्लाह का भेजा हुआ नबी मान लूंगा। अल्लाह की क़सम, तुम्हारा मज़हब कुबूल कर लूंगा।"

"लेकिन ये एक भतीजे और चचा की कुश्ती नही होगी"-रसूले खुदा(स०) ने रूकाना की लल्कार के जवाब में कहा-"ये एक बुत परस्त और सच्चे दीन के एक पैग़म्बर की लड़ाई होगी। तू हार गया तो अपना वादा नहीं भूल जाना।"

मक्का में ये ख़बर सहरा की आंधी की तरह फैल गई के रूकाना पहलवान और मोहम्मद(स०) की कुश्ती होगी और जो हार जाएगा वो जीतने वाले का मज़हब कुबूल कर लेगा। कुरैश का बच्चा बच्चा, मर्द व ज़न और यहूदी हुजूम करके आ गए। मुसलमानों की तादाद बहुत थोड़ी थी। वो तलवारों और बरछियों से मुसल्लह हो कर आए क्योंकि इन्हें ख़तरा महसूस हो रहा था के कुरैश कुश्ती को बहाना बना कर रसूले खुदा(स०) को क़त्ल कर देंगे।

अरब का सबसे ताक़तवर और वहशी पहलवान रूकाना बिन अब्दयज़ीद रसूले करीम(स०) के मुक़ाबले में उतरा। उसने रसूल अल्लाह(स०) पर तंज़िया निगाह

डाली और आप पर फबती कसी। आप मुकम्मिल खामोशी और इतमेनान से रूकाना की आंखों मे आंखें डाल कर देखते रहे के वो बे ख़बरी में कोई दाव न खेल जाए। रूकाना आप के इर्द गिर्द यूं घूमा जैसे शेर अपने शिकार के इर्द गिर्द घूम गया हो और अब इसे खा जाएगा। हुजूम रसूले अकरम(स०) का मज़ाक़ उड़ा रहा था। मुसलमान खामोश थे। वो दिल ही दिल में अल्लाह को याद कर रहे थे। उन्होंने अपनी तलवारों के दस्तों पर हाथ रखे हुए थे।

फिर न जाने क्या हुआ? रसूल अकरम(स०) ने क्या दाव खेला? इब्नुलअसीर लिखता है के आप ने रूकाना को उठा कर ज़मीन पर पटख़ दिया। रूकाना ज़ख्मी शेर की तरह उठा और गुर्रा कर आप पर हमला आवर हुआ। आप ने फिर वही दांव खेला और उसे पटख दिया। वो उठा तो आप ने उसे तीसरी बार पटख़ा। भारी भरकम जिस्म तीन बार पटखा गया तो कुश्ती जारी रखने के क़ाबिल न रहा। रूकाना सर झटका कर अखाड़े से निकल गया।

हुजूम पर सन्नाटा तारी हो गया। अब मुसलमान नंगी तलवारें और बरछियां हवा में लहरा लहरा और उछाल उछाल कर नारे लगा रहे थे।

"चचा रूकाना!"-रसूल अल्लाह(स०) ने लल्कार कर कहा-"अपना वादा पूरा कर और यहीं ऐलान कर के आज से तू मुसलमान है।"

रूकाना ने कुबूले इस्लाम से साफ इन्कार कर दिया।

☸

"ये ताक़त जिस्मानी नहीं थी"-ख़ालिद ने नख्लिस्तान में लेटे लेटे अपने आप से कहा-"रूकाना को यूं तीन बार पटखना तो दूर की बात है, उसे कोई पछाड़ भी नहीं सका था।"

रसूले अकरम(स०) का तसव्वुर ख़ालिद के ज़हन में निखर आया। वो आप को अच्छी तरह जानता था लेकिन अब वो महसूस कर रहा था जैसे वो मोहम्मद(स०) कोई और थे जिन्हें वो बचपन से जानता था। इसके बाद आप ने जो रूप इख्तेयार किया था इसमें ख़ालिद आप(स०) को नही पहचानता था नबुव्वत के दावे के बाद ख़ालिद की आप(स०) साथ बोल चाल बंद हो गई थी। वो आप(स०) के साथ दो दो हाथ करना चाहता था लेकिन वो रूकाना की तरह पहलवान नहीं था। वो मैदाने जंग में लड़ने वाला और लड़ने वालों की क़यादत करने वाला जंगजु था लेकिन उस वक्त मुसलमान फौज की सूरत में लड़ने के क़ाबिल नही थे।

जब मुसलमान फौज की सूरत में लड़ने के क़ाबिल हुए और कुरैश के साथ उनका पहला मआरका हुआ उस वक्त ख़ालिद के लिए ऐसे हालात पैदा हो गए थे के

वो इस मआरके मे शामिल नहीं हो सका था। इसका उसे बहुत अफसोस था। ये मआरका बदर का था जिसमें, तीन सौ मुजाहेदीन-ए-इस्लाम ने एक हज़ार को शिकस्त दी थी। ख़ालिद दांत पीसता रह गया था लेकिन इस रोज़ जब वो एक नख़लिस्तान में लेटा हुआ था। उसे ख्याल आया के तीन सौ तेरा ने एक हज़ार को किस तरह शिकस्त दे दी थी। उसने शिकस्त खा कर आने वाले कुरैश से पूछा था के मुसलमानों में वो कौन सी खूबी थी जिसने उन्हें फ़तहयाब किया था।

ख़ालिद उठ बैठा और उंगली से रेत पर बदर के मैदान के ख़दोख़ाल बना कर कुरैश और मुसलमानों की पोजीशनें और मआरके के दौरान दोनो की चालों की लकीरें बनाने लगा। बाप ने उसे फने हर्ब व ज़र्ब का माहिर बनाया था। बचपन में उसे घुड़सवारी सिखाई। लड़कपन में उसे अख्खड़ मुंह ज़ोर घोड़ो को क़ाबू में लाने के क़ाबिल बनाया। नौजवानी में वो शहसवार बन चुका था। शतुर सवारी में भी वो माहिर था। उसका बाप ही उसका उस्ताद था। उसने ख़ालिद को सिर्फ सिपाही नहीं बल्कि सालार बनाया था। ख़ालिद को जंगो जदल इतनी अच्छी लगी के वो लड़ने और लड़ाने के तरीक़ों पर ग़ौर करने लगा और जवानी में फौज की क़यादत के क़ाबिल हो गया था।

उसे बदर की लड़ाई में शामिल न हो सकने का अफसोस था और वो इन्तेक़ाम के तरीक़े सोचता रहता था लेकिन अब उसकी सोचों का धारा किसी और तरफ चल पड़ा था। मक्का से रवांगी से कुछ दिन पहले से वो इस सोच में खो गया था के रसूले अकरम ने रूकाना पहलवान को तीन बार पटखा था और बदर में आप(स०) ने महज़ तीन सौ तेरा मुजाहेदीन से एक हज़ार को शिकस्त दी। ये कोई और ही कुव्वत थी, लेकिन बदर के मआरके के बाद उसके दिल में मुसलमानों के ख़िलाफ इन्तेक़ाम की आग सुलग रही थी।

मुसलमान मआरका-ए-बदर में कुरैश के बहुत से आदमियों को क़ैदी बना कर ले गए थे। कुरैश के सरदारों के लिए तो ये सदमा था ही, इसका बहुत बुरा असर ख़ालिद ने कुबूल किया था। उसे याद था के जब बदर का मआरका लड़ा जा रहा था तो मक्का में कोई ख़बर नहीं पहुंच रही थी के मआरके का अन्जाम क्या हुआ। मक्का के लोग बदर की सिम्त देखते रहते थे के उधर से कोई सवार दौड़ा आएगा और फतह की ख़बर सुनाएगा।

आख़िर एक रोज़ एक शतुर सवार आता नज़र आया। लोग उसकी तरफ दौड़ पड़े। सवार ने अरब के रिवाज के मुताबिक़ अपना कुरता फाड़ दिया था और वो रोता आ रहा था। बुरी ख़बर लाने वाले क़ासिद ऐसे ही किया करते थे। वो जब लोगो के

दरमियान पहुंचा तो उसने रोते हुए बताया के अहले कुरैश को बहुत बुरी शिकस्त हुई है जिनके अज़ीज़ रिश्तेदार लड़ने गए थे वो एक देसरे से आगे बढ़ बढ़ कर उनके मुताल्लिक़ पूछते थे के वो ज़िन्दा हैं, ज़ख्मी हैं या मारे गए हैं। शिकस्त खूरदा कुरैश पीछे आ रहे थे।

मारे जाने वालों में सतरह अफ़राद ख़ालिद के क़बीले बनु मख्ज़ूम के थे और इन सबके साथ ख़ालिद का खून का बड़ा क़रीबी रिश्ता था। अबु जहल भी मारा गया था। ख़ालिद का भाई जिस का नाम वलीद था, जंगी क़ैदी हो गया था।

अबु सुफ़यान जो कुरैश के सरदारों का सरदार था और उसकी बीवी हुंद भी मौजूद थे।

"कुछ मेरे बाप और मेरे चचा के मुताल्लिक़ बता ऐ क़ासिद!" – हुन्द ने पुछा।

"तुम्हारा बाप उत्बा अली(र०) और हम्ज़ा(र०) के हाथों मारा गया है" –क़ासिद ने कहा – "और तुम्हारे चचा शीबा को अकेले हम्ज़ा(र०) ने क़त्ल किया है और तुम्हारा बेटा ख़ंतला अली(र०) के हाथों मारा गया है।"

अबु सुफ़यान की बीवी हुन्द ने पहले तो अली(र०) और हमज़ा(र०) को बुलन्द आवाज़ से गालियां दीं फिर बोली– "अल्लाह की क़सम, मैं अपने बाप, अपने चचा और अपने बेटे के खून का बदला लूंगी।"

अबु सुफ़यान पर खामोशी तारी थी।

ख़ालिद का खून खौल रहा था।

कुरैश के सत्तर आदमी मारे गए और जो जंगी क़ैदी हुए उनकी तादाद भी इतनी ही थी।

❁

ख़ालिद उठा। दरी झाड़ कर लपेटी और घोड़े की ज़ीन के साथ बांध कर सवार हुआ और मदीना की सिम्त चल पड़ा। उसने ज़हन को यादों से ख़ाली कर देना चाहा लेकिन उसके ज़हन मदीना पहुंच जाता जहां रसूल अल्लाह(स०) थे और जो तबलीगे़ इस्लाम का मरकज़ बन बया था। आप(स०) का ख्याल आते ही उसका ज़हन पीछे चला जाता और उसे वो मंज़र दिखाता जिनके ख़ालिक़ आंहज़रत (स०) थे। उसके ज़हन में हुन्द के अल्फाज़ याद आए जो उसने अपने ख़ाविंद अबु सुफ़यान से कहे थे।

"मैं अपने बाप और चचा को भूल सकती हूं" –हुन्द ने कहा था– "क्या मैं अपने लख्ते जिगर ख़ंतला को भी भूल जाऊं? मां अपने बेटे को कैसे भूल सकती है? अल्लाह की क़सम, मैं मोहम्मद(स०) को अपने बेटे का खून माफ नहीं करूंगी। ये

लड़ाई मोहम्मद(स०) ने कराई है। मैं हम्ज़ा(र०) और अली(र०) को नही बख्शूंगी। वो मेरे बाप, मेरे चचा और मेरे बेटे के क़ातिल हैं।"

"मेरे खून को सिर्फ मेरे बेटे का क़त्ल गरमा रहा है"-अबु सुफयान ने कहा था-" मुझ पर अपने बेटे के खून का इन्तेक़ाम फर्ज़ हो गया है। मैं सब से पहले ये काम करूंगा के मोहम्मद(स०) के ख़िलाफ ज़बरदस्त फौज तैयार करके उसे आईंदा लड़ने के क़ाबिल नही छोड़ूंगा।"

मशहूर मोआर्रिख़ और वक़ेआ निगार वाक़दी लिखता है के अगले ही रोज़ अबु सुफयान ने तमाम सरदारों को बुलाया। इनमें ज़्यादा तादाद उन सरदारों की थी जो किसी न किसी वजह से बदर में शरीक नहीं हो सके थे और इनमें से हर एक का कोई न कोई अज़ीज़ इस जंग में मारा गया था। सब इन्तेक़ाम का इरादा ले कर इक्ळे हुए थे।

"क्या मुझे ज़्यादा बातें करने की ज़रूरत है?"-अबु सुफयान ने कहा-"मेरा अपना जवान बेटा मारा गया है। अगर मैं इन्तेक़ाम नहीं लेता तो मुझे जीने का कोई हक़ नहीं।"

सब एक ही बार बोलने लगे। वो इस पर मुत्तफिक़ थे के मुसलमानों से बदर की शिकस्त का इन्तेक़ाम लिया जाए।

"लेकिन आप में से अब कोई भी अपने घर में न बैठा रहे"-खालिद ने कहा-"बदर में हम सिर्फ इस लिए ज़िल्लत में गिरे के सरदार घरों में बैठे रहे और उन लोगों को लड़ने के लिए भेज दिया जो कुरैश की अज़मत को नहीं समझते थे।"

"क्या मेरे बाप को भी कुरैश की अज़मत का ख्याल न था?-खालिद के चचाज़ाद भाई अकरमा ने जो अबुजहल का बेटा था, बरहम होते हुए कहा-"क्या सुफयान बिन उमय्या के बाप को भी कुरैश की अज़मत का ख्याल न था?....तुम कहां थे वलीद के बेटे?"

"हम यहां एक दूसरे से लड़ने के लिए इक्ळे नहीं हुए"-इबु सुफयान ने कहा-"ख़ालिद! तुम्हें ऐसी बात नहीं कहनी चाहिए थी जिससे कोई अपनी बेइज़्ज़ती महसूस करे।"

"हम में से कोई भी इज़्ज़त वाला नहीं रहा-ख़ालिद ने कहा-"हम सब उस वक़्त तक बेइज़्ज़त रहेंगे जब तक हम मोहम्मद(स०) और उसके चेलों को हमेशा के लिए ख़त्म नहीं कर देते। मुझे अपने घौड़े के सुमों की क़सम, मेरे खून की गरमी ने मेरी आंखें जला दी हैं। इन आंखों को मुसलमानों का खून ठंडा कर सकता है..... मैं फिर कहूंगा के अब सरदार आगे होंगे और मैं जानता हूं के मैं मैदाने जंग में कहां होंगा

लेकिन जंग में हमारा जो सरदार होगा। मैं उसके हुकम का पाबन्द रहूंगा और अगर मैं समझूंगा के सरदार ने मुझे ऐसा हुकम दिया है जो हमें नुक़सान देगा तो मैं ऐसा हुकम नही मानूंगा।

सबने मुत्तेफक्क़ा तौर पर अबु सुफयान को अपना सरदार मुक़र्रर किया।

इससे कुछ रोज़ पहले अहले मक्का का एक क़ाफला फिलस्तीन से मक्का वापस आया था। ये तिजारती काफ़ला था। मक्का के बाशिन्दों, खुसूसन कुरैश के हर ख़ानदान ने इस तिजारत में हिस्सा डाला था। इस क़ाफ़ले में कमो बेश एक हज़ार ऊंट थे और जो माल गया था इस की मालियत पचास हज़ार दीनार थी। क़ाफ़ले का सरदार अबु सुफयान था जिसने पचास हज़ार दीनार मुनाफा कमाया था।

क़ाफ़ले की वापसी का रास्ता मदीना के क़रीब से गुज़रता था। मुसलमानों को पता चल गया। उन्होंने पूरे क़ाफ़ले को गिरफ्तार करने का इरादा किया और एक मुक़ाम पर क़ाफ़ले को घेरे में ले लिया लेकिन वो ज़मीन ऐसी थी के अबु सुफयान ने एक एक आदमी और एक एक ऊंट को ज़मीन के ऊंचे ऊंचे ख़दोख़ाल से फायदा उठाते हुए घेरे से निकाल दिया था।

❂

ख़ालिद का घोड़ा ख़रामा ख़रामा मदीना की तरफ चला जा रहा था मगर ख़ालिद का ज़हन पीछे को सफर कर रहा था। उसे उस वक्त का जब कुरैश इन्तेक़ाम की इस्कीम बनाने के लिए इक्ळे हुए थे, एक एक लफ्ज़ जो किसी ने कहा था। सुनाई दे रहा था।

"अगर तुम ने अपनी सरदारी मुझे दी है तो मेरे हर फैसले की पाबन्दी तुम पर लाज़िम है"-अबु सुफयान ने कहा-"मेरा पहला फैसला ये है के मैं ने अभी पचास हज़ार दीनार मुनाफा सब में तक़सीम नहीं किया वो में तक़सीम नहीं करूंगा। ये मुसलमानों के ख़िलाफ फैसला कुन जंग में इस्तेमाल होगा।"

"मुझे और मेरे ख़ानदान को ये फैसला मंज़ूर है"-सब से पहले ख़ालिद ने कहा।

फिर मंज़ूर है.....ऐसा ही करो.... मंज़ूर है की आवाज़ें उठीं।

"मेरा दूसरा हुकम ये है"-अबु सुफयान ने कहा-"के जंग-ए-बदर में हमारे जो आदमी मारे गए हैं। इन के लवाहेक़ीन आह वज़ारी कर रहे है। मैं ने मर्दो को दहाड़ें मारते और औरतों को बीन करते सुना है। अल्लाह की क़सम जब आंसू बह जाते हैं तो इन्तेक़ाम की आग सर्द हो जाती है। आज से बदर के मक़तूलीन पर कोई नही रोएगा.. ...और मेरा तीसरा हुकम ये है के मुसलमानों ने बदर की लड़ाई में हमारे जिन

आदमियों को कै़द किया है, इनकी रिहाई के लिए कोई कोशिश नही की जाएगी। तुम जानते हो के मुसलमानों ने कै़दियों की रिहाई के लिए इनके दरजे मुक़र्रर कर दिये है और इनका फिदया एक हज़ार से चार हज़ार दरहम मुक़र्रर किया है। हम मुसलमानों को एक दरहम भी नहीं देंगे। ये रक़म हमारे ही ख़िलाफ इस्तेमाल होगी।

ख़ालिद को घोड़े की पीठ पर बैठे और मदीना की तरफ जाते हुए जब वो लम्हे याद आ रहे थे तो इसकी मुळियां बन्द हो गई। गुस्से की लहर उसके सारे वजूद में फिर गई। वो वक्त बहुत पीछे रह गया था लेकिन अब भी इसके अन्दर गुस्सा बेदार हो गया। उसे गुस्सा इस बात पर आया था के इजलास में तय हो गया था के मुसलमानों के पास मक्का का कोई आदमी अपने कै़दी को छुड़ाने मदीना नहीं जाएगा लेकिन एक आदमी चोरी छुपे मदीना चला गया और फिदया अदा कर के अपने बाप को रिहा करा लाया। इसके बाद कुरैश का कोई न कोई आदमी चोरी छुपे मदीना चला जाता और अपने अज़ीज़ रिश्तेदार को रिहा करा लाता। अबु सुफयान ने अपना हुक़म वापस ले लिया।

ख़ालिद का अपना एक भाई जिस का नाम वलीद था मुसलमानों के पास जंगी कै़दी था। अगर इस वक्त तक कुरैश अपने बहुत से कै़दी रिहा न करा लाए होते तो ख़ालिद अपने भाई की रिहाई के लिए कभी न जाता। उसे अपने भाईयों ने मजबूर किया था के वलीद की रिहाई के लिए जाए। ख़ालिद को याद आ रहा था के वो अपने वक़ार को ठेस पहुंचाने पर आमादा नहीं हो रहा था लेकिन उसे एक ख्याल आया था। ख्याल ये था के रसूले करीम(स०) भी उसी के क़बीले के थे और आप के पैरूकार यानी जो मुसलमान हो गए थे वो भी कुरैश और अहले मक्का से थे। वो आसमान से तो नही उतरे थे। वो इतने जरी और दिलेर तो नहीं थे के तीन सौ तेरह की तादाद में एक हज़ार को शिकस्त दे सकते। अब उनमें कैसी कुव्वत आ गई है के वो हमें नीचा दिखा कर हमारे आदमियों की क़ीमतें मुक़र्रर कर रहें हैं?

"इन्हें एक नज़र देखूंगा,-ख़ालिद ने सोचा था-"मोहम्मद(स०) को ग़ौर से देखूंगा।"

और वो अपने भाई हशाम को साथ ले कर मदीना चला गया था। उसने अपने साथ चार हज़ार दरहम बांध लिए थे। उसे मालूम था के बनु मख्ज़ूम के सरदार वलीद के बेटे का फिदया चार हज़ार दरहम से कम नहीं होगा।

ऐसे ही हुआ। उसने मुसलमानों के हां जाकर अपने भाई का नाम लिया तो एक मुसलमान ने, जो कै़दियों की रिहाई और फिदया की वसूली पर मामूर था। कहा के चार हज़ार दरहम अदा करो।

"हम फिदया में कुछ रिआयत चाहते हैं"-ख़ालिद के भाई हशाम ने उस मुसलमान से कहा-"तुम लोग आख़िर हम में से हो। कुछ पुराने रिश्तों का ख्याल करो।

"अब हम तुम में से नही है"-मुसलमान ने कहा-"हम अल्लाह के रसूल(स०) के हुक्म के पाबन्द हैं।"

"क्या हम तुम्हारे रसूल से बात कर सकते हैं?"-हशाम ने पुछा।

"हशाम!"-ख़ालिद ने गरज कर कहा -"मैं अपने भाई को अपने वक़ार पर कुरबान कर चुका था मगर तुम मुझे साथ ले आए। ये जितना मांगते है इतना ही दे दो। मैं मोहम्मद(स०) के आगे जा कर भीख नहीं मांगूंगा।"

उसने दरहमों से भरी हुई थैलियां मुसलमानों के आगे फैंक कर कहा, गिन लो और हमारा भाई हमारे हवाले करो।

रक़म गिनी जा चुकी तो वलीद को ख़ालिद और हशाम के हवाले कर दिया गया। तीनों भाई उसी वक़्त मक्का को रवाना हो गए। रास्ते में दोनों भाईयों ने वलीद से पूछा के इनकी शिकस्त का बाअस क्या था। इन्हें तवक्क़ो थी के वलीद जो एक जंगजु ख़ानदान का जवान था। इन्हें जंगी फहमो फिरासत और हर्ब व ज़र्ब के तौर तरीक़ों के मुताबिक़ मुसलमानों की जंगी चालों की खूबियां और अपनी ख़ामियां बताएगा मगर वलीद का अन्दाज़ ऐसा और उसके होंटों पर मुस्कुराहट ऐसी थी जैसे उस पर पुरइसरार असर हो।

"वलीद कुछ तो बताओ"-ख़ालिद ने उससे पुछा-"हमें अपनी शिकस्त का इन्तेक़ाम लेना है। कुरैश के तमाम सरदार अगली जंग में शामिल हो रहें हैं। हम इर्द गिर्द के क़बायल को भी साथ मिला रहे हैं और वो मक्का में जमा होना शुरू हो गए हैं।"

"सारे अरब को इक्ळा कर लो!"-वलीद ने कहा-"तुम मुसलमानों को शिकस्त नहीं दे सकोगे। मैं नही बता सकता के मोहम्मद(स०) के हाथ में कोई जादू है या इनका नया अक़ीदा सच्चा है या क्या बात है के मैं ने इनका क़ैदी होते हुए भी इन्हे नापसंद नहीं किया।

"फिर तुम अपने क़बीले के ग़द्दार हो"-हशाम ने कहा-"ग़द्दार हो या तुम पर इनका जादू असर कर गया है वो यहूदी पैशवा ठीक कहता था के मोहम्मद(स०) के पास कोई नया अक़ीदा और नया मज़हब नहीं। इसके हाथ में कोई जादू आ गया है।"

"जादू था वरना बदर में कुरैश शिकस्त खाने वाले नही थे"-ख़ालिद ने कहा।

वलीद जैसे उनकी बातें सुन ही नहीं रहा था। उसके होंटों पर तबस्सुम था और

वो मुड़ मुड़ कर मदीने की तरफ देखता था। मदीना से कुछ दूर ज़ी हलीफा नाम की एक जगह हुआ करती थी। तीनों भाई वहां पहुंचे तों रात गहरी हो चुकी थी। रात गुज़ारने के लिए वो वही रूक गए।

सुबह आंख खुली तो वलीद ग़ायब था। उसका घोड़ा भी वहां नहीं था। ख़ालिद और हशाम सोच सोच कर इस नतीजे पर पहुंचे के वलीद वापस मदीने चला गया है। उन्होंने देखा था के उस पर कोई असर था। ये असर मुसलमानों का ही हो सकता था। दानों भाई मक्का आ गए। चन्द दिनों बाद उन्हें मदीने से वलीद का ज़बानी पैग़ाम मिला के उसने मोहम्मद(स०) को खुदा का सच्चा रसूल तस्लीम कर लिया है और वो आप की शख़्सियत और बातों से इतना मुतास्सिर हुआ है के उसने इस्लाम कुबूल कर लिया है।

मोअर्रिख़ लिखते है के वलीद बिन वलीद रसूले अकरम(स०) के मंज़ूरे नज़र रहे और उन्होंने मज़हब में भी और कुफ्फार के साथ मआरका आराई में भी नाम पैदा किया।

❁

ख़ालिद को उस वक्त बहुत गुस्सा आया था। एक तो उसका भाई गया। दूसरे चार हज़ार दरहम गए। चूंके कुरैश और मुसलमानों के दरमियान खूनी दुश्मनी पैदा हो चुकी थी इस लिए मुसलमानों ने ये रक़म वापस न की। रक़म वापस न करने की दूसरी वजह ये थी के वलीद ने रसूले करीम को बता दिया था के कुरैश मुसलमानों के ख़िलाफ फैसला कुन जंग की तैयारी कर रहे हैं और इस के लिए बे अन्दाज़ दरहमो दीनार इक्ळे किये जा चके हैं।

ख़ालिद मदीने की तरफ चला जा रहा था। उसे उफक़ से एक कोहान सी उभरी हुई नज़र आने लगी। ख़ालिद जानता था ये क्या है। ये ओहद की पहाड़ी थी जो मदीना से चार मील शुमाल में है। इस वक्त ख़ालिद रेत की बड़ी लम्बी और कुछ ऊंची टेकरी पर चला जा रहा था।

"ओहद....ओहद"–ख़ालिद के होंटों से सरगोशी निकली और उसे अपनी लल्कार सुनाई देने लगी– "मैं अबु सुलेमान हूं... मैं अबु सुलेमान हूं"–इस के साथ ही इसे एक खूंरेज़ जंग का शोरो गुल और सेंकड़ों घोड़ों के टाप और तलवारें टकराने की आवाज़ें सुनाई देने लगी। खालिद ये जंग लड़ने के लिए बेताब था और उसने ये जंग लड़ी।

ख़ालिद का ज़हन पीछे ही हटता गया।

चार ही साल पहले का वाक़ेया था। मार्च 625 ई०(शिवाल 3 हिज्री) के महीने

में कुरैश ने मदीना पर हमला करने के लिए जो लश्कर तैयार किया था वो मक्का में इक्ळा हो चुका था। इसकी कुल तादाद तीन हज़ार थी। इस में सात सौ अफराद ने ज़िरह पहन रखी थी। घुड़ सवार दो सौ के लगभग थे और रसद और सामान-ए-जंग तीन हज़ार ऊंटों पर लदा हुआ था। ये लशकर कूच के लिए तैयार था।

ख़ालिद को एक रोज़ पहले की बात की तरह याद था के इस लश्कर को देख कर वो किस क़दर खुश हुआ था। इन्तेक़ाम की आग बुझाने का वक़्त आ गया था। इस लश्कर का सालार-ए-आला अबु सुफयान था और ख़ालिद इस लश्कर के एक हिस्से का कमांडर था। उसकी बहन इस लश्कर के साथ जा रही थीं इसके आलावा चौदह औरतें इस लश्कर के साथ जाने के लिए तैयार थी। इनमें अबु सुफ़यान की बीवी हुन्द भी थी। उमरो बिन आस की और अबु जहल के बेटे अकरमा की बीवियां भी शामिल थीं। बाक़ी सब गाने बजाने वालियां थीं सब की आवाज़ में सोज़ था और इनके साज़ दफ़ और ढोलक थे। इन औरतों का जंग में ये काम था के जोशीले और जज़बाती गीत गा कर सिपाहियों का हौसला बुलन्द रखें और उनकी याद ताज़ा करती रहे जो जंग बदर में मारे गए।

ख़ालिद को अफरीक़ा का एक हबशी याद आया जिसका नाम वहशी बिन हरब था। वो कुरैश के एक सरदार जुबैर बिन मुतइम का गुलाम था। वो दराज़ क़द, सियाह रू और ताक़तवर था। उसने बरछी मारने के फ़न में शोहरत हासिल की थी। उसके पास अफ़रीक़ा की बनी हुई बरछी थी। उसका अफ़रीक़ी नाम कुछ और था। उसे अरबी नाम जुबैर ने उसकी उसके जंगी कमालात देख कर दिया था।

"बिन हरब!"-कूच से कुछ पहले जुबैर मुतइम ने उसे कहा-"मुझे अपने चचा के खून का बदला लेना है। शायद मुझे मौक़ा न मिल सके। मेरे चचा को बदर की लड़ाई में मोहम्मद(स०) के चचा हमज़ा(र०) ने क़त्ल किया था। अगर तुम हमज़ा(र०) को क़त्ल कर दो तो मै तुम्हें आज़ाद कर दूंगा।"

"हमज़ा(र०) मेरी बरछी से क़त्ल होगा या आक़ा!"-वहशी बिन हरब ने कहा।

ये हबशी गुलाम उस तरफ जा निकला जहां वो औरतें ऊंटों पर सवार हो चुकी थीं जो इस लश्कर के साथ जा रही थीं।

"अबु वसमा!-किसी औरत ने पुकारा।

ये वहशी बिन हरब का दूसरा नाम था। वो रूक गया। देखा के अबु सुफयान की बीवी हुन्द उसे बुला रही थी। वो उसके क़रीब चला गया।

"अबु वसमा!"-हुन्द ने कहा-"हैरान न हो। तुझे मैं ने बुलाया है। मेरा सीना

इन्तेक़ाम की आग से जल रहा है। मेरा सीना ठंडा कर दे।"

"हुक्म ख़ातून!-गुलाम ने कहा-"अपने सालार की ज़ोजा के हुक्म पर अपनी जान दे दूंगा।"

"बदर में मेरे बाप को हमज़ा(र०) ने क़त्ल किया था"-हुन्द ने कहा-"तू हमज़(र०) को अच्छी तरह पहचानता है। ये देख मैं ने सोने के जो ज़ेवरात पहन रखे हैं, अगर तू हमज़ा(र०) को क़त्ल कर देगा तो ये सब ज़ेवरात तेरे होंगें"

वहशी हरब ने हुन्द के ज़ेवरात पर निगाह डाली तो वो मुस्कुराया और ज़ेर-ए-लब पुर अज़्म लहजे में बोला-"हमज़ा(र०) को मैं ही क़त्ल करूंगा।"

ख़लिद को अपने लश्कर का कूच याद था। उसी रास्ते से लश्कर मदीना को गया था। उसने एक बुलन्द जगह खड़े होकर अपने लश्कर को देखा था; उसका सीना फ़ख़्र से फैल गया था। उसे मदीना के मुसलमानों पर रहम आ गया था लेकिन इस रहम ने भी उसे मुसर्रत दी थी। ये खून की दुश्मनी थी। ये उसके वक़ार का मसअला था। मुसलमानों को कुचल डालना उसका अज़्म था।

❁

जंग-ए-ओहद के बहुत दिन बाद उसे पता चला था के जब मक्का में कुरैश लश्कर जमा कर रहे थे तो इसकी इत्तेला रसूले अकरम(स०) को मिल गई थी और जब ये लशकर मदीना के रास्ते में था तो रसूले खुद(स०)ा को इसकी रफ़्तार पड़ाव और फासले की इत्तेलाऐं मुसलसल मिलती रहीं थी। आप(स०) को लश्कर के मक्का से कूच की इत्तेलआ हज़रत अब्बास(र०) ने दी थी।

कुरैश के इस लश्कर ने मदीना से कुछ मील दूर कोहे ओहद के क़रीब एक ऐसी जगह कैम्प किया था, जो हरी भरी थी और वहां पानी भी था। ख़ालिद को मालूम न था के मुसलमानों के दो जासूस इस लशकर की पूरी तादाद देख आए हैं और रसूले करीम(स०) को बता चुके हैं।

21 मार्च 625 ई० के रोज़ रसूले करीम(स०) ने अपनी फौज को कूच का हुक्म दिया और शैखेन नाम की एक पहाड़ी के दामन में जा खेमा ज़न हुए। आप(स०) के साथ एक हज़ार पियादे मुजाहेदीन थे जिन में एक सौ ने सिरों पर ज़िरह पहन रखी थी। मुजाहेदीन के पास सिर्फ दो घोड़े थे जिनमें से एक रसूले करीम(स०) के पास था।

इस मौक़े पर मुसलमानों के निफाक़ का पहला ख़तरनाक मुज़ाहेरा हुआ जो ग़द्दारी के मुतारादिफ़ था। मदीने के बाज़ ऐसे लोगों ने इस्लाम क़बूल कर लिया था जो दिल से मुसलमान नहीं हुए थे। इन्हें रसूले मक़बूल(स०) ने मुनाफेक़ीन कहा था। किसी के मुताल्लिक़ ये मालूम करना के वो सच्चा मुसमान है या मुनाफिक़, बहुत

मुश्किल था। जब मुजाहेदीन मदीने से शैख़ेन की पहाड़ी की तरफ कूच करने लगे तो एक बाअसर आदमी जिसका नाम अब्दुल्ला बिन उबी था, रसूल अल्लाह(स०) के साथ इस बहस में उलझ गया के कुरैश का लश्कर तीन गुनाह है इसलिए मदीने से बाहर जा लड़ना नुक़सानदेह होगा।

आप(स०) ने मुजाहेदीन के दूसरे सरदारों सें राय ली तो अक़सरियत ने कहा के शहर से बाहर लड़ना ज़्यादा बेहतर होगा। आप(स०) अब्बदुल्ला बिन उबी के हम ख़्याल थे लेकिन आप(स०) ने अक़सरियत का फैसला कुबूल फरमाया और कूच का हुक्म दे दिया। अब्दुल्लाह बिन उबी ने शहर से बाहर जाने से इन्कार कर दिया। उसके पीछे हटने की देर थी के मुजाहेदीन-ए-इस्लाम में से तीन सौ आदमी पीछे हट गए। तब पता चला के ये सब मुनाफेक़ीन थे और अब्बदुल्ला इनका सरदार है।

अब तीन हज़ार के मुक़ाबले में मुजाहेदीन की नफरी सिर्फ सात सौ रह गई। रसूल अल्लाह(स०) दिल बरदाश्ता न हुए और सात सौ को ही साथ ले कर कोह-ए-ओहद के दामन में शैख़ेन के मुक़ाम पर मुजाहेदीन को जंगी तरतीब में कर दिया। ख़ालिद ने एक बुलन्द टेक़री पर खड़े हो कर मुसलमानों की ये तरतीब देखी थी और उसने अपने सालार अबु सुफयान को बता कर अपने दस्ते की जगह तय कर ली।

रसूले अकरम(स०) ने मुजाहेदीन को कमो बेश एक हज़ार गज़ लम्बाई में फैला दिया। पीछे वादी थी। मुजाहेदीन के एक पहलू के साथ पहाड़ी थी लेकिन दूसरे पहलू पर कुछ नहीं था। इस पहलू को मज़बूत रखने के लिए रसूले करीम(स०) ने पचास तीरअंदाज़ों को क़रीब की एक टेकरी पर बैठा दिया। इन तीरअंदाज़ों के कमांडर अब्दुल्ला बिन जुबेर थे।

"अपनी ज़िम्मेदारी समझ लो अब्दुल्ला!"-रसूले खुदा(स०) ने उसे हिदायत देते हुए फरमाया-"अपने अक़ब को देखो। दुश्मन हमारे अक़ब में नक़्लो हरक़त कर सकता है जो हमारे लिए ख़तरा है। दुश्मन के पास घुड़सवार ज़्यादा हैं। वो हमारे पहलू पर घुड़ सवारों से हमला कर सकता है। अपने तीरअंदाज़ों को घुड़सवारों पर मरकूज़ रखो। पियादों का मुझे कोई डर नहीं।"

तक़रीबन तमाम मुस्तनिद मोअर्रेख़ीन जिनमें इब्ने हशाम और वाक़दी ख़ास तौर पर क़ाबिल-ए-ज़िक्र हैं, लिखते हैं के रसूले करीम(स०) ने अब्दुल्ला बिन जुबेर को वाज़ेह अल्फाज़ में कहा था-"हमारा अक़ब तुम्हारी बेदारी और मुसतेदी से महफूज़ रहेगा। तुम्हारी ज़रा सी कोताही भी हमें बड़ी ज़िल्लत आमेज़ शिकस्त दे सकती है...याद रखो अब्दुल्ला! अगर तुम दुश्मन को भागते हुए और हमें फतहयाब

होते हुए भी देख लो तो भा इस जगह से न हिलना। अगर देखो के हम पर दुश्मन का दबाव बढ़ गया है और तुम्हें हमारी मदद के लिए पहुंचना चाहिए तो भी ये जगह न छोड़ना। पहाड़ी की ये बुलन्दी दुश्मन के कब्जे में नहीं जानी चाहिए। ये बुलन्दी तुम्हारी है। वहां से तुम नीचे उस तमाम इलाके के हुकमरां होगे जहां तक तुम्हारे तीरअंदारज़ के तीर पहुंचेंगे।"

ख़ालिद ने मुसलमानों की तरतीब देखी और अबु सुफयान को बताया के मुसलमान खुले मैदान की लड़ाई नही लड़ेंगे। अबु सुफयान को अपनी कसीर नफरी पर नाज़ था। वो चाहता था के लड़ाई खुले मैदान यानी लामहदूद मुहाज़ पर हो ताके वो अपने पियादों और घोड़ों की इफ़रात से मुजाहेदीन-ए-इस्लाम को कुचल डाले। ख़ालिद को अपने बाप ने जंगी चालों की तरग़ीब बचपन से देनी शुरू कर दी थी। दुश्मन पर बेख़बरी में पहलु या अक़ब से झपटना दुश्मन को चक्कर दे दे कर मारना, अपने दस्तों की तक़सीम और इन पर कंट्रोल इस तरगीब में शामिल था जो उसे बाप ने दी थी। उसने तजुर्बेकार सरदार की निगाहों से मुजाहेदीन की तरतीब देखी तो उसने महसूस किया के मुसलमान फ़न-ए-ज़र्ब व हर्ब के कमालात दिखा सकते हैं।

अबु सुफयान अपनी फौज को मुसलमानों के मुक़ाबिल ले गया। उसने घुड़सवारों को मुसलमानों के पहलूओं पर हमला करना के लिए भेजा। एक पहलू पर ख़ालिद और दूसरे पर अकरमा था। दोनो के साथ एक सौ घुड़सवार थे। तमाम घुड़सवारों का कमांडर उमरो बिन आस था। पियादों के आगे अबु सुफयान ने एक सौ तीरअंदाज़ रखे। कुरैश का परचम तलहा बिन अबु तलहा ने उठा रखा था। उस ज़माने की जंगों में परचम को दिल जैसी अहमियत हासिल थी। परचम के गिरने से फौज का हौसला टूट जाता और भगदड़ मच जाती थी।

❁

कुरैश ने जंग की इब्तेदा इस तरह की के उनकी सफ़ओं से एक शख़्स अबु आमिर फासिक़ आगे हो कर मुजाहेदीन के क़रीब चला गया। उसके पीछे कुरैश के गुलामों की तादाद भी थी। अबु आमिर मदीना का रहने वाला था। वो क़बीला ओस का सरदार था। जब रसूले करीम(स०) मक्का से हिजरत करके मदीना गए तो अबु आमिर ने क़सम खाई थी के वो आप(स०) को और तमाम मुसलमानों को मदीना से निकाल कर दम लेगा। उस पर एक बड़ी ही हसीन यहूदन का और यहूदियों के मालो दौलत का तिलिस्म तारी था। यहूदियों की इस्लाम दुश्मन कार्रवाईयां ज़मीन दोज़ होती थीं। बज़ाहिर उन्होंने मुसलमानों के साथ दोस्ती और फरमांबरदारी का मुआहेदा कर रखा था। अबु आमिर इन्ही के हाथ में कठ पुतली बना हुआ था लेकिन इन यहूदियों ने

उसे कुरैश का दोस्त बना रखा था।

अब मुजाहेदीन कुरैश के ख़िलाफ लड़ने के लिए मदीना से निकले तो अबु आमिर कुरैश के पास चला गया। उसके क़बीले ओस के बहुत से आदमी रसूले करीम के दस्त-ए-मुबारक़ पर इस्लाम कुबूल कर चुके थे और वो कुरैश के मुक़ावले में सफ़ आरा थे। अबु आमिर आगे चला गया और मुजाहेदीन से बुलन्द आवाज़ में मुख़ातिब हुआ। रसूले करीम ने उसे फासिक़ का ख़िताब दिया था।

"क़बीले ओस के गै़रतमंद बहादुरों!"-अबु आमिर फासिक़ ने कहा-"तुम मुझे य़क़ीनन पहचानते हो। मैं कौन हूं। मेरी बात गौ़र से सुन लो और....."

वो अपनी लल्कार पूरी न कर पाया था के मुजाहेदीने इस्लाम की सफ़ से क़बीले ओस के एक मुजाहिद की आवाज़ गरजी-"ओ फासिक़, बदकार! हम तेरे नाम पर थूक चुके हैं।"

ख़ालिद को वो वक़्त याद आ रहा था। मुजाहेदीन-ए-इस्लाम की सफ़ से अबु आमिर और इसके साथ गए हुए गुलामों पर पत्थरों की बोछाड़ शुरू हो गई। मोअर्रिख़ लिखते है के पत्थर बरसाने वाले क़बीले ओस के मुजाहेदीन थे। अबु आमिर और गुलाम जो मुजाहेदीन के पत्थरों की ज़द में थे, एक एक दो दो पत्थर खा कर पीछे भाग आए।

यहूदी मदीने में बैठे लड़ाई की ख़बरों का इन्तेज़ार रहे थे। जिस यहूदन के तिलिस्म में अबु आमिर गिरफ़्तार था, वो अपनी कामयाबी की ख़बर सुनने के लिए बेताब थी। उसे अभी मालूम न था के उसके हुस्नो जवानी के तिलिस्म को मुसलमानों ने संगसार कर दिया है। (इस सिलसिले की आने वाली इक़्सात में यहूदियों और कुरैश की औरतों की ज़मीन दोज़ कार्रवाईयों की तफ़सीली कहानियां सुनाई जाएंगी।)

अबु आमिर फासिक़ के इस वाक़ेए से पहले वो औरतें जो कुरैश के लश्कर के साथ गई थीं लश्कर के दरमियान खड़ी हो कर सुरीली आवाज़ों में ऐसे गीत गाती रही थीं जिनमें बदर में मारे जाने वाले कुरैश का ज़िक्र ऐसे अल्फ़ाज़ और ऐसी तर्ज़ में किया गया था के सुनने वालों का खून खौलता और रोंगटे खड़े हो जाते थे। इन औरतों में से एक दो ने जोशीली तक़रीर की सूरत में भी कुरैश के खून को गरमाया था।

औरतों को पीछे चले जाने का हुक्म मिला तो अबु सुफयान की बीवी हुन्द ने एक घोड़े पर सवार हो कर एक गीत गाना शुरू कर दिया। इसकी आवाज़ बुलन्द थी और आवाज़ में सोज़ भी था। तारीख़ लिखने वालों ने उसके गीत के पूरे अश्आर क़लम बन्द नहीं किये। उन्होंने लिखा है के ये गीत फ़हश था जिसमें मर्द और औरत के दरपर्दा तआल्लुक़ात का ज़िक्र था। अश्आर जो तारीख़ में आए है वो इस तरह है।

इनमें जिस अब्दुलदार का नाम आता है, ये बनु अब्दुलदार है। वनु उमय्या इसी की एक शाख़ थी। बनु अब्दुलदार कुरैश का बहुत ऊंचा ख़ानदान था:

अब्दुलदार के सपूतों!
हमारे घरानों के पासबानों!
हम रात की बेटियां है
हम तकियों के दरमियान हरक़त किया करते है
इस हरक़त में लुत्फ़ और लज़्ज़त होती है
तुम दुश्मन पर चढ़ दौड़े तो हम तुम्हें अपने सीनों से लगा लेंगी
तुम भाग आए तो हम तुम्हारे क़रीब नहीं आऐंगी

❁

इसके बाद अबु आमिर फासिक़ पर मुजाहेदीन-ए-इस्लाम की तरफ से संगबारी हुई और इसके फौरन बाद कुरैश ने मुजाहेदीन पर तीर फैंकने शुरू कर दिये। मुजाहेदीन ने इस के जवाव में तीर बरसाए। ख़ालिद अपने पहलू वाले मुसलमानों के पहलू पर हमला करने के लिए अपने एक सौ सवारों के साथ तेज़ी से बढ़ा। उसे मालूम न था के बुलन्दी पर तीरअंदाज़ छुपे बैठे हैं। उसके सवार बेधड़क चले आ रहे थे। रास्ता ज़रा तंग था। सवारों को आगे पीछे होना पड़ा।

ख़ालिद सोच समझ कर अपने सवार दस्ते को इस पहलू पर लाया था। अपने बाप की तरबीयत के मुताबिक़ बड़ी खुद ऐतमादी से तव्वको थी के वो हल्ला बोल कर मुसलमानों को इस पोज़िशन में ले आएगा के वो पस्पा हो जांऐंगे और अगर जम कर न लड़े तो कुरैश के घोड़ों तले कुचले जाऐंगे मगर मुसलमानों के पहलू से उसके सवार अभी दूर ही थे के ऊपर से तीरअंदाज़ों ने उसके अगले सवारों को न आगे जाने के क़ाबिल छोड़ा न वो पीछे हटने के क़ाबिल रहे। एक एक सवार कई कई तीर खा कर गिरा और जिन घोड़ों को तीर लगे उन्होंने ख़ालिद के सवार दस्ते के लिए क़यामत बपा कर दी। पीछे वाले सवारों ने घोड़े मोड़े और पस्पा हो गए।

इधर कुरैश की औरतों ने दफ़ और ढोलक की थाप पर ही गीत गाना शुरू कर दिया जो हुन्द ने अकेले गाया था....."अब्दुलदार के सपूतों! हम रात की बेटियां है। हम तुम तकियों के दरमियान...."

मोअर्रिख़ वाक़दी लिखता है के अरबी जंगजुओं के इस वक़्त के रिवाज के मुताबिक़ एक एक जंगजु के लड़ने का मरहला आया। सबसे पहले कुरैश के परचम बरदर तलहा बिन अबु तलहा ने आगे जा कर मुजाहेदीन-ए-इसलाम को लल्कारा के उसके मुक़ावले के लिए किसी को आगे भेजो।

"आ मेरे दीन के दुश्मन!"–हज़रत अली(र०) ने तुन्द हवा के झोंके की तरह आगे आकर कहा–"मैं आता हूं तेरे मुक़ाबले के लिए।"

तलहा अपने क़बीले का परचम थामे, तलवार लहराते हुए, बिफरा हुआ आया मगर उसका वार हवा को चीतरता हुआ गुज़र गया। वो अभी संभल ही रहा था के हज़रत अली(र०) की तलवार ने उसे ऐसा गहरा ज़ख्म दिया के पहले उसका परचम गिरा फिर वो खुद गिरा। कुरैश का एक आदमी दौड़ा आया और परचम उठा कर पीछे चला गया। अली(र०) उसे भी गिरा सकते थे मगर इन्फरादी मुक़ाबलों में ये रवा न था।

तलहा को उठा कर पीछे ले आये। उसके खानदान का एक और आदमी आगे बढ़ा।

"मैं इन्तेक़ाम लेने का पाबंद हूं"–वो लल्कार कर आगे गया–"अली(र०)! आ, मेरी तलवार की काट देख।"

हज़रत अली(र०) खामोशी से उसके मुक़ाबले में आ गए। दोनो ने एक दूसरे की आंखो में आंखें डाले एक चकर काटा फिर उनकी तलवार और ढालें टकराइं और उसके बाद सबने देखा के हज़रत अली(र०) की तलवार से खून टपक रहा था और उनका मद्दे मुक़ाबिल ज़मीन पर पड़ा तड़प रहा था।

फिर कुरैश के मुताद्दिद आदमी बारी बारी लल्कारते हुए आगे बढ़े और मुजाहेदीन के मुक़ाबले में मरते गए।

कुरैश का सालार–ए–आला अबु सुफयान अपने आदमियों को गिरता देख कर गुस्से से बावला हो गया। जंगी दस्तूर के मुताबिक़ उसे इन्फरादी मुक़ाबले के लिए नहीं उतरना चाहिए था क्योंके वो सालार था। उसके मारे जाने से उसकी फौज में अब्तरी फैल सकती थी लेकिन वो अपने आप पर क़ाबू न रख सका। वो घोड़े पर सवार था। उसने घोड़े को ऐड़ लगाई और लल्कारता हुआ आगे चला गया।

उसकी बीवी हुन्द ने उसे जाते देखा तो अपने ऊंट पर सवार हो कर आगे चली गई और बड़ी बुलन्द आवाज़ से वही गीत गाने लगी जिसके अशआर ये भी थे के तुम भागे आए तो हम तुम्हें अपने क़रीब नहीं आने देंगी।

अबु सुफयान घोड़े पर सवार था लेकिन उसके मुक़ाबले के लिए जो मुसलमान आगे आया वो पियादा था। तारीख़ उसे हंज़ला बिन अबु आमिर के नाम से याद करती है। अबु सुफियान के हाथ में लम्बी बरछि छुपी थी। किसी को भी तवक्क़ो नहीं थी के तलवार वाला पियादा बरछी वाले घुड़ सवार से ज़िन्दा बच जाएगा। अबु सुफयान का घोड़ा हंज़ला पर सरपट दौड़ता आया। अबु सुफयान ने

बरछी तोल कर फिर ताक कर मारी लेकिन हंज़ला फुर्ती से एक तरफ हो गया।

इस तरह तीन मरतबा हुआ। तीसरी मरतबा अबु सुफयान का घोड़ा निकल गया तो हंज़ला उसके पीछे दौड़ पड़ा। घोड़ा रूक गया पीछे को मुड़ा तो हंज़ला उस तक पहुंच चुका था। अबु सुफयान उसे देख न सका। हंज़ला ने घोड़े की अगली टांगों पर ऐसा ज़ोर दार वार किया के घोड़ा गिर पड़ा। अबु सुफयान दूसरी तरफ गिरा। हंज़ला इस पर हमला करने को आगे बढ़ा तो अबु सुफयान गिरे हुए घोड़े के इर्द गिर्द दौड़ दौड़ कर अपने आप को बचाने लगा और उसके साथ ही उसने कुरैश को मदद के लिए बुलाया।

कुरैश का एक पियादा दौड़ा आया। मुसलमान इस ग़लत फहमी में रहे के ये आदमी अबु सुफयान को अपने साथ ले जाएगा लेकिन उसने बेउसूली का मुज़ाहेरा किया। पीछे से हंज़ला पर वार कर के उसे शहीद कर दिया। अबु सुफयान अपनी सफ़ों में भाग गया।

आख़री मुक़ाबले के लिए कुरैश की तरफ से अब्दुलरहमान बिन अबुवकर आया। मोअर्रिख़ वाक़दी ने ये वाक़ेया इस तरह ब्यान किया है के अब्दुलरहमान बिन अबुबकर की लल्कार पर उसके वालिद हज़रत अबु बकर(र०) जो इस्लाम कुबूल कर के रसूल अल्ल्हा(स०) के साथ थे तलवार निकाल कर अपने बेटे के मुक़ाबले के लिए निकले।

"आगे आ मुसलमान बाप के काफ़िर फ़रज़न्द!"- हज़रत अबु बक़र(र०) ने लल्कार कर कहा।

रसूले करीम(स०) ने देखा के बाप बेटा मुक़ाबले पर उतर आएं है तो आप ने दौड़ कर हज़रत अबु बकर को रोक लिया।-तलवार नियाम में डाले अबुवकर(र०)!" रसूले करीम(स०) ने फरमाया और अबुबकर(र०) को पीछे ले गए।

❁

ख़ालिद को शोर-ओ-गुल अब भी सुनाई दे रहा था। वो मंज़र उसकी आंखों ने अपनी पल्कों में महफूज़ कर रखा था। इन्फरादी मुक़ाबले ख़त्म होते ही कुरैश ने मुसलमानों पर हल्ला बोल दिया। रसूले अकरम(स०) ने ओहद की पहाड़ी को अपने अक़ब में रखा हुआ था इस लिए मुजाहेदीन-ए-इस्लाम को अक़बी हमले का ख़तरा नही था। आमने सामने का मआरका खुंरेज़ था। मुसलमानों की नफ़री बहुत थोड़ी थी। इस कमी को उन्हों ने जज़बे और तेग़ ज़नी के कमालात से पूरा कर दिया। अगर कुरैश को नफ़री की इफ़रात हासिल न होती तो वो मुसलमानों के आगे नही ठहर

सकते थे। वो नफ़री के ज़ोर पर लड़ रहे थे।

ख़ालिद की नज़र रसूले करीम(स०) पर थी। आप(स०) एक पहलू पर थे। यही पहलू था जिस पर ख़ालिद को हमला करना था। अब के उसने अपने सवारों को ये हुक्म दिया था के वो घोड़ो को सरपट दौड़ाते तंग रास्ते से आगे निकल जाएंगे और मुसलमानों के पहलू पर हल्ला बोलें मगर अब्दुल्ला बिन जुबैर(र०)के पचास तीरअंदाज़ों ने सवारों को इस तरह पस्पा कर दिया के वो चन्द घोड़े और ज़ख्मों से कराहते हुए कुछ सवारों को पीछे छोड़ गए।

मआरका उरूज पर था। सिर्फ एक आदमी था जो लड़ नहीं रहा था। वो मैदान जंग में बरछी उठाए यूं घूम रहा था जैसे किसी को ढूंड रहा हो। वो वहशी बिन हर्ब था। वो हमज़ा(र०) को ढूंड रहा था। हमज़ा(र०) को क़त्ल करने के उसके लिए दो इनाम थे। एक ये के उसका आक़ा उसे आज़ाद कर देगा और दूसरा अबु सुफयान की बीवी हुन्द के वो ज़ेवरात जो उसने पहन रखे थे।

उसे हमज़ा(र०) नज़र आ गए। वो कुरैश के एक आदमी सबा बिन अब्दुलउज़्ज़ा की तरफ बढ़ रहे थे। अरब में रिवाज था के ख़त्ना औरतें किया करती थीं। मोअर्रिख़ बिन हशाम के मुताबीक़ इस्लाम से पहले अरबों में ख़त्ने का रिवाज मौजूद था। हमज़ा(र०) ने जिस सबा को लल्कारा था उसकी मां ख़त्ना किया करती थी।

"ख़त्ने करने वाली के बेटे!"- हमज़ा(र०) ने उसे लल्कारा-"इधर आ और मुझे आखरी बार देख ले।"

सबा बिन अब्दुलउज़्ज़ा हमज़ा(र०) की तरफ बढ़ा। गुस्से से उसका चेहरा लाल था। वो तलवार और ढाल की लड़ाई का माहिर था। हमज़ा(र०) भी कुछ कम न थे। दोनो एक दूसरे के क़रीब आये और एक दूसरे पर वार करने लगे। दोनो की ढालें वार रोक रही थीं। वो पैंतरे बदल बदल कर वार करते थे लेकिन ढालें तलवारों के रास्ते में आ जाती थीं। इस वक़्त वहशी बिन हर्ब झुका हुआ, आहिस्ता आहिस्ता उनकी तरफ बढ़ रहा था। उसे ज़मीन और झाड़ियों ने ओट दे रखी थी। हमज़ा(र०) अपने दुश्मन की आंखों में देख रहे थे। सबा के सिवा उन्हें कुछ भी नज़र नहीं आ रहा था।

वहशी उनके क़रीब पहुंच गया। बरछी निशाने पर फैंकने का वो माहिर था। वो इतना क़रीब हो गया जहां से उसकी बरछी ख़ता नहीं हो सकती थी। वो उठ खड़ा हुआ और बरछी को हाथ में तोला फिर उसे फैंकने की पोज़ीशन में लाया। हमज़ा(र०) ने सबा पर एक के बाद एक तेज़ी से दो तीन वार किए आखरी वार ऐसा पड़ा के हमज़ा(र०) की तलवार सबा के पेट में उतर गई। हमज़ा(र०) ने तलवार उसके पेट से इस तरह निकाली के उसका पेट और ज़्यादा फट गया। और वो हमज़ा के क़दमों में

गिर पड़ा।

हमज़ा(र०) अभी संभले ही थे के वहशी ने उन पर पूरी ताक़त से बरछी फैंकी। फासला बहुत कम था। बरछी हमज़ा के पेट में इतनी ज़यादा उतर गई के उसकी अन्नी हमज़ा(र०) की पीठ से आगे निकल गई। हमज़ा(र०) गिरे नहीं। उन्होंने इधर उधर देखा। इन्हें वहशी दिखाई दिया। हमज़ा बरछी अपने जिस्म में लिए हुए वहशी की तरफ बढ़े। वहशी जहां खड़ा था वहीं खड़ा रहा। हमज़ा(र०) चार पांच क़दम चल कर गिर पड़े। वहशी उनके जिस्म को हिलता जुलता देखता रहा। जब जिस्म की हरकत बन्द हो गई तो वहशी उन तक आया। वो शहीद हो चुके थे। वहशी ने उनके जिस्म से बरछी निकाल ली और चला गया-अब वो हुन्द और अपने आक़ा हुबिया बिन मुतइम को ढूंढने लगा।

۞

ख़ालिद को वो मआरका याद आ रहा था और उसके दिल पर बोझ सा पड़ता जा रहा था। वो नशेबी जगह से गुज़र रहा था इस लिए ओहद की पहाड़ी की चोटी उसकी नज़रों से ओझल हो गई थी। उसे अपने क़बीले की औरतें याद आयीं जो कुरैश और उनके इत्तेहादी क़बायल को जोश दिला रही थी। ख़ालिद को याद आया के वो मआरके का नज़ारा करने के लिए एक बुलन्द जगह चढ़ गया था। उसे मुसलमान औरतें नज़र आयीं। मुसलमान अपने जिन ज़ख्मियों को पीछे लाते थे उन्हें औरते संभाल लेती थी। उनकी मरहम पट्टी करती और उन्हें पानी पिलाती थीं।

मुसलमानों के साथ चौदह औरतें थीं जिन में हज़रत फातिमा(र०) भी थी।

फिर यूं हुआ के क़लील तादाद मुजाहेदीन क़सीर तादाद कुफ्फार पर ग़ालिब आ गए। कुरैश का परचम बरदार गिरा तो किसी और ने परचम उठा लिया। वो भी गिरा। परचम कई बार गिरा। आख़िर में एक ग़ुलाम ने परचम उठा कर ऊंचा किया लेकिन वो भी मारा गया फिर मुसलमानों ने कुरैश को परचम उठाने की मोहलत न दी। कुरैश के जज़्बे जवाब दे गए।

ख़ालिद ने उनकी पस्पाई देखी और ये भी देखा था के मुसलमान उनका तआकुब कर रहे हैं। कुरैश अपने कैम्प में भी न ठहरे। अपना माल असबाब छोड़ कर अफ़रा तफ़री के आलम में भाग गए। यहां से जंग के बाद का मरहला शुरू हो गया। मुसलमानों ने फ़तह की खुशी में और इन्तेक़ामी जज़्बे के तहत कुरैश के कैम्प को लूटना शुरू कर दिया। वो फ़तेह-ओ-नुसरत के नारे लगा रहे थे। कुरैश ऐसे बोखला कर भागे के इन्हें अपनी औरतों का भी ख़्याल न रहा। वो पैदल भागी जा रही थी लेकिन मुसलमानों ने उनकी तरफ आंख उठा कर भी न देखा।

कुरैश के घुड़ सवारों के एक दस्ते का कमांडर अकरमा और दूसरे का ख़ालिद था। उनहोंने मुसलमानों के पहलूओं पर हमले करने थे मगर जंग का पांसा बुरी तरह पलट गया था। अकरमा और ख़ालिद ने फिर भी अपने अपने सवारों को वहीं रखा जहां उन्हें तैयारी की हालत में खड़ा किया गया था। ख़ालिद को इस कैफ़ियत में भी तव्वक़ो थी के वो शिकस्त को फ़तह में बदल देगा लेकिन जिस रास्ते से उसे गुज़ना था वहां मुसलमान तीरअंदाज़ तैयार खड़े थे।

इन मुसलमान तीरअंदाज़ों ने अपनी बुलन्द पोज़ीशन से देखा के कुरैश भाग गए हैं और उनके साथी लूट मार कर रहे हैं तो वो माले ग़नीमत के लालच में अपनी जगह छोड़ने लगे। उनके कमांडर अब्दुल्ला बिन जुबैर(र०) ने कहा के अपने रसूल की हुक्म अदूली न करो। आप(स०) का हुक्म है के आप(स०) की इजाज़त के बग़ैर यहां से कोई न हटे।

"जंग ख़त्म हो गई है"-तीरअंदाज़ शौर मचाते हुए पहाड़ी से उतरने लगे-माल-ए-ग़नीमत....फ़तह हमारी है।"

अब्दुल्लाह बिन जुबैर(र०) के साथ सिर्फ नौ तीरअंदाज़ रह गए।

ख़ालिद ने ये मंज़र देखा तो उसे ऐसा लगा जैसे ख्वाब देख रहा हो। वो यही चाहता था। वो तीरअंदाज़ों को देखता रहा। जब वो कुरैश के कैम्प में पहुंच गए तो उसने उस पहाड़ी (ऐनेन) पर हमला कर दिया जहां अब्दुल्ला बिन जुबैर(र०) और उसके नौ तीरअंदाज़ रह गए थे। ख़ालिद इन्हें नज़र अंदाज़ भी कर सकता था लेकिन उनसे वो इन्तेक़ाम लेना चाहता था। उसके घुड़सवार पहाड़ी पर चढ़ते जा रहे थे। ऊपर से तीरअंदाज़ तेज़ी से तीर बरसा रहे थे।

अकरमा ने ख़ालिद को ऐनेन पर हमला करते देखा तो वो भी अपने सवार दस्ते को वहीं ले गया और उसके घोड़े हर तरफ से ऊपर चढ़ने लगे। सवारों के पास भी तीर कमानें थी। वो ऊपर को तीर चला रहे थे। लेकिन इतने घुड़ सवारों को रोकना उनके लिए मुमकिन न था। सवार ऊपर चले गए। तीरअंदाज़ दस्त बदस्त लड़ाई भी लड़े और सब ज़ख्मी हो कर गिरे। ख़ालिद ने ज़ख्मियों को पहाड़ी से नीचे फैंक दिया। अब्दुल्ला बिन जुबैर(र०) भी शहीद हो गए।

वहां से ख़ालिद और अक़रमा ने अपने घुड़सवारों को उतारा और उस मुक़ाम पर आ गए जहां से मुसलमानों ने लड़ाई की इब्तेदा की थी। ख़ालिद के हुक्म पर दोनो ने मिल कर मुसलमानों पर हमला कर दिया। मुसलमान लड़ने की हालत में नही थे लेकिन रसूले करीम(स०) ने मुजाहेदीन की कुछ तादाद को अपने साथ रखा हुआ था। ये मुजाहेदीन घुड़सवारों के मुक़ाबले में डट गए।

कुरैश के साथ जो औरतें आयी थी वो भाग गई थी लेकिन उमरा नाम की एक औरत वही कही छुप गई थी। उसने जब कुरैश के घुड़सवारों को मुसलमानों पर हमला करते देखा तो उसे कुरैश का परचम ज़मीन पर पड़ा नज़र आ गया। उस औरत ने परचम उठा कर ऊपर कर दिया।

अबु सुफयान ने अपने भागते हुए पियादों पर क़ाबू पा लिया था। उसने इधर देखा तो उसे अपना परचम लहराता नज़र आया उसने "हुब्ल ज़िन्दाबाद" और "उज़ा ज़िन्दाबाद" के नारे लगाए और पियादों को वापस ला कर मुसलमानों को घेरे में ले लिया।

ख़ालिद को वो वक़्त याद आ रहा था। वो रसूले करीम(स०) को ढूंढ रहा था-और आज, चार बरस बाद, वो मदीना जा रहा था और उसके ज़हन पर रसूले करीम(स०) का ग़लबा था।

ओहद की पहाड़ी उफ्क़ से उभरती आ रही थी और ख़ालिद का घोड़ा ख़रामा ख़रामा चला जा रहा था। ख़ालिद की ज़हनी कैफ़ियत कुछ ऐसी होती जा रही थी जैसे उसे आगे जाने की कोई जल्दी न हो और कभी वो लगाम को यूं झटका देता जैसे उसे बहुत जल्दी पहुंचना हो लेकिन जिस मंज़िल को वो जा रहा था वो मंज़िल अभी उस पर पूरी तरह वाज़ेह नहीं हुई थी। कभी उसे यूं लगता जैसे एक मक़नातीसी कुव्वत है जो उसे आगे ही आगे को खींच रही है और कभी वो महसूस करता जैसे उसके अन्दर से उठती हुई एक कुव्वत उसे पीछे धकेल रही है।

"ख़ालिद!"- उसे एक आवाज़ सुनाई दी जो उसके अन्दर से उठती थी लेकिन इसे हक़ीक़ी समझ कर उसने घोड़े की बाग खींची और आगे पीछे देखो। वहां रेत के सिवा कुछ भी न था लेकिन आवाज़ आ रही थी-"ख़ालिद! क्या ये सच है जो मैंने सुना है"-ख़ालिद ने इस आवाज़ को पहचान लिया। ये उसके साथी अकरमा की आवाज़ थी। एक ही रोज़ पहले अकरमा उसे कह रहा था-" अगर तुम ये सोच रहे हो के मोहम्मद(स०) खुदा का भेजा हुआ नबी है तो ये ख़्याल दिल से निकाल दो। मोहम्मद(स०) हमारे बहुत से रिश्तेदारों का क़ातिल है। अपने क़बीले को देख जो सूरज गुरूब होने से पहले पहले मोहम्मद(स०) को क़त्ल करने की क़सम खाए हुए है।"

ख़ालिद ने लगाम को हल्का सा झटका दिया और घोड़ा चल पड़ा। उसका ज़हन फिर चार बरस पीछे चला गया और वो ओहद के मआरके में रसूले करीम (स०) को ढूंढ रहा था। वो कुरैश की इस क़सम को पूरा करने का अज़्म लिए हुए था के रसूल अल्लाह(स०) को सूरज गुरूब हाने से पहले पहले क़त्ल करना है। उसे याद आ रहा था के मुसलमानों के तीरअंदाज़ों ने जब ऐनेन की पहाड़ी छोड़ दी थी तो उसने इस पहाड़ी पर हमला कर के अब्दुल्ला बिन जुबैर(र०) और उन के नौ तीरअंदाज़ों को

जो रसूल अल्लाह(स०) के हुक्म की पैरवी करते हुए वहां रह गए थे, खत्म किया था। मुसलमानों के हाथों से भागे हुए कुरैश फिर वापस आ गए थे और उन्होंने अपने आप को मुनज़्ज़म कर लिया था।

मुसलमान ये मआरका हार चुके थे और ये अपने रसूल(स०) की हुक्म अदूली का नतीजा था। ख़ालिद अबु जहल का बेटा अकरमा फ़न-ए-हर्बो ज़र्ब के माहिर थे। उनके लिए एक एक मुसलमान को क़त्ल कर देना अब मुश्किल नहीं रहा था। अब अल्लाह के सिवा मुसलमानों की मदद कोई नहीं कर सकता था। ख़ालिद देख रहा था के मुसलमान दो हिस्सो में बट गए थे। बड़ा हिस्सा अलग था जो अपने कमांडर रसूले करीम (स०) से कट गया था। चन्द एक तीरअंदाज़ रसूल अल्लहा(स०) के साथ थे। ये वो सहाबा इकराम(र०) थे जिनके दिलों में माले ग़नीमत का लालच न था। इनकी तादाद तीस थी। इन में अबु दजाना, साद बिन अबी वक़ास, हज़रत अली, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन ओफ़, हज़रत अबुबक़र, हज़रत अबु उबैदा, तलहा बिन अब्दुल्ला, मसअब बिन उमैर(र०) ख़ास तौर पर क़ाबिल-ए-ज़िक्र है उन चौदह ख़्वातीन में से जो ज़ख़्मियों की देख भाल के लिए साथ आयीं थीं दो रसूल अल्लाह(स०) के साथ थीं। एक उम्मे अम्मारा(र०) थीं और दूसरी उम्मे ऐमन(र०) नाम की एक हबशी ख़ातून थीं। उम्मे ऐमन(र०) आप(स०) की दाया रह चुकी थीं। बाक़ी बारह ख़्वातीन अभी तक ज़ख़्मियों को उठाने, पीछे लाने और उनकी मरहम पट्टी करने में मसरूफ़ थीं।

ख़ालिद रसूले करीम(स०) को ढूंढ रहा था लेकिन वो मैदान-ए-जंग में ज़्यादा घूम फिर नहीं सकता था क्योंके उसकी कमान में घुड़सवारों का एक हबिश था जिसे उसने पूरी तरह अपने नज़्म-ओ-नस्क़ में रखा हुआ था। वो अन्धा धुंध हमले का क़ायल नहीं था। उसका उसूल था के दुश्मन की ऐसी रग पर ज़र्ब लगाओ के दूसरी ज़र्ब से पहले वो घुटने टेक दे।

❁

आज -चार बरस बाद- जब के वो तन तन्हा सहरा में जा रहा था उसके ज़हन में घोड़े दौड़ रहे थे। उसे तीर कमानों के ज़न्नाटे सुनाई दे रहे थे। उसके ज़हन में मुसलमानों के नारे गुंज रहे थे। उसका ख़्याल था के मुसलमान ये ज़ाहिर करने के लिए नारे लगा रहे है के इन्हें मौत का कोई डर नहीं। तंज़ ओर नफ़रत से अब भी उसके होंटो पर मुसकुराहट आ गई। उसने इरादा कर लिया था के वो ज़्यादा से ज़्यादा मुसलमानों को क़त्ल करेगा, क़ैदी कम ही बनाएगा। उसे अभी पता नहीं चल रहा था के रसूले करीम(स०) कहां है। उसने देखा के अबु सुफयान जो भागते हुए कुरैश को साथ ले कर वापस आ गया था, मुसलमानों की फौज के बड़े हिस्से पर हमला आवर हो चुका

था और मुसलमान बे जिगरी से लड़ रहे थे। मुसलमानों ने उसे अपनी ज़िन्दगी का आख़िरी मआरका समझ कर शुजाअत और बेख़ौफ़ी के ऐंसे ऐसे मुज़ाहेरे किये के कसीर तादाद कुरैश परेशान हो गए।

ये सूरत-ए-हाल देख कर ख़ालिद आग बगूला हो गया। उसने अपने सवारों को मुसलमानों पर हल्ला बोलने का हुक्म दिया। उसने तलवार नियाम में डाल ली और बरछी हाथ में ले ली। उसने मुसलमानों पर अक़ब से हमला किया था। उस ने इस बरछी से मुसलमानों को चुन चुन कर मारा। उसकी बरछी जब किसी मुसलमान के जिस्म में दाख़िल होती तो वो चिल्ला कर कहता-"मैं हूं अबु सुलेमान"-हर बरछी के वार के साथ उसकी लल्कार सुनाई देती-"मैं हूं अवु सुलेमान।"

आज चार बरस बाद जब वो मुसलमानों के मरक़ज़ मदीना की तरफ जा रहा था तो उसे अपनी ही लल्कार सुनाई दे रही थी-"मैं हूं अबु सुलेमान"-उसे याद नहीं आ रहा था के उसकी बरछी कितने मुसलमानों के जिस्मों में उतरी थी। वो रसूल अल्लाह(स०) को भूल गया था। थोड़ी देर बाद उसे पता चला था के मुसलमान अपने नबी की कमान से निकल चुके है और अकरमा मुसलमानों के नबी की तरफ चला गया।

हकीक़त भी यही थी के रसूले करीम(स०) की कमान ख़त्म हो चुकी थी और मआरका की सूरत-ए-हाल ऐसी हो गई थी के आप(स०) मुसलमानों को अज़ सरे नौ मुनज़्ज़म नहीं कर सकते थे लेकिन आप(स०) अपनी और अपने साथियों की जान बचाने के लिए मैदान-ए-जंग से निकलना भी नहीं चाहते थे हालांके सूरत-ए-हाल ऐसी थी के आप(स०) को निकल जाना चाहिए था लेकिन आप(स०) किसी बेहतर पोज़ीशन में जाने की कोशिश कर रहे थे। आप(स०) को मालूम था के कुरैश आप(स०) को ढूंढ रहे होंगे और आप(स०) के गिरोह पर बड़ा शदीद हमला होगा। आप(स०) एक पहाड़ी की तरफ बढ़ने लगे। आप(स०) के साथियों ने आप(स०) को अपने हल्के में ले रखा था।

आप थोड़ी ही दूर गए होंगे के अक़रमा ने अपने घुड़सवारों से आप(स०) पर हमला कर दिया। कुरैश के एक पियादा हबशी को किसी तरह पता चल गया के रसूले करीम(स०) पर अक़रमा ने हमला कर दिया है तो कुरैश का ये पियादा हबशी भी आप(स०) के गिरोह पर टूट पड़ा। आप(स०) के और आप(स०) के किसी एक भी साथी के बच निकलने का सवाल ही ख़त्म हो गया था। आप(स०) के तीस साथियों ने और उन दो ख्वातीन ने जो आप(स०) के साथ थीं आप(स०) के गिर्द गोश्त पोश्त की दीवार खड़ी कर दी थी।

और दो ख्वातीन की बेजिगरी का ये आलम था जैसे उनके जिस्म नहीं उनकी रूहें लड़ रही हों। मशहूर मोअर्रिख़ तिबरी लिखता है के एक एक मुसलमान ने बैक वक़्त चार चार पांच पांच कुरैश का मुक़ाबला किया। उनका अंदाज़ ऐसा दहशतनाक था के कुरैश पीछे हट जाते थे या इन पर हमला करने वाला अकेला मुसलमान ज़ख्मों से चूर हो कर गिर पड़ता था।

❁

कुरैश ने जब रसूले अकरम(स०) के फिदाईन की शुजाअत का ये आलम देखा तो कुछ पीछे हट कर उन पर तीरों के साथ साथ पत्थर भी बरसाने लगे। उसके साथ ही कुरैश के चन्द एक घुड़सवार सरपट घोड़े दौड़ाते आप(स०) पर हमला आवर हुए लेकिन आप(स०) के साथियों के तीर उन के जिस्मों में उतर कर उन्हें वापस चले जाने पर मजबूर कर देते थे। इस सूरत-ए-हाल से बचने के लिए कुरैश ने चारों तरफ से तीरों और पत्थरों का मीना बरसा दिया।

ख़ालिद को अकरमा ने बताया था के अबु दजाना(र०) रसूले अकरम(स०) के आगे जा खड़े हुए। उनकी पीठ दुश्मन की तरफ थी। अबु दजाना(र०) बेक वक़्त दो काम कर रहे थे। एक ये के वो अपने तीर साद बिन अबी वक़ास(र०) को देते जा रहे थे और साद(र०) बड़ी तेज़ी से तीर चला रहे थे। उसके साथ ही अबु दजाना(र०) रसूले अकरम(स०) को तीरों से बचाने की कोशिश कर रहे थे। तीरों और पत्थरों की बारिश में कोई न देख सका के अबु दजाना(र०) किस हाल में हैं। जब अबु दजाना(र०) गिर पड़े तो उस वक़्त देखा के उनकी पीठ में इतने तीर उतर गए थे के उनकी पीठ ख़ार पुश्त की पीठ लगती थी।

रसूले अकरम(स०) को बचाने के लिए आप(स०) के कई साथियों ने जान दे दी लेकिन अकरमा और उसके घुड़सवारों और पियादों पर इतनी दहशत तारी हो चुकी थी के वो पीछे हट गए। कुरैश थक भी गए थे। रसूले करीम(स०) ने अपने साथियों का जायज़ा लिया। हर तरफ खून ही खून था लेकिन ज़ख्मियों को उठाने और मरहम पट्टी करने का मौक़ा न था। दुश्मन एक और हल्ला बोलने के लिए पीछे हटा था।

"मुझे कुरैश के एक और आदमी का इन्तेज़ार है"-रसूले अकरम(स०) ने अपने साथियों से कहा।

"कौन है वो या रसूल अल्लाह(स०)!"-आप(स०) के एक सहाबी(र०) ने पूछा-"क्या वो हमारी मदद को आ रहा है?"

"नहीं"-आप(स०) ने फरमाया-"वो मुझे क़त्ल करने आएगा। उसे अब तक आ जाना चाहिए था।"

"लेकिन वो है कौन?"

"उब्बी बिन ख़ल्फ" -आप(स०) ने फरमाया।

उब्बी बिन ख़ल्फ रसूले अकरम(स०) के कट्टर मुख़ालेफीन में से था। वो मदीने का रहने वाला था। उसे जब पता चला के रसूल अल्लाह(स०) ने नबुव्वत का दावा किया है तो एक रोज़ वो आप(स०) के पास आया और उसने आप(स०) का मज़ाक उड़ाया। आप(स०) ने तहम्मुल और बुरदुबारी से उसे इस्लाम कुबूल करने की दावत दी।

"क्या तुम मुझे इतना कमज़ोर समझते हो के मैं तुम्हारे इस बे बुनियाद अक़ीदे को कुबूल कर लूंगा" -उब्बी बिन ख़ल्फ ने गुस्ताख़ाना लहजे में कहा था- "मेरी बात ग़ौर से सुन ले मोहम्मद(स०)! किसी रोज़ मेरा घोड़ा देख लेना। इसे मैं उस वक़्त के लिए मोटा ताज़ा कर रहा हूं जब तुम कुरैश को फिर कभी जंग के लिए लल्कारोगे। अब बदर के ख़्वाब देखने छोड़ दो। मैं इसी घोड़े पर सवार होंगा और तुम मुझे मैदान जंग में अपने सामने देखो और में अपने देवताओं की क़सम खा कर कहता हूं के तुम्हें अपने हाथों क़त्ल करूंगा।"

"उब्बी!"- रसूले खुदा(स०) ने मुस्कुरा कर कहा था- "ज़िन्दगी और मौत उस अल्लाह के इख्तियार में है जिसने मुझे नबुव्वत अता फरमाई है और मुझे गुमराह लोगों को सीधे रास्ते पर लाने का फर्ज़ सौंपा है। ऐसी बात मुंह से न निकालो जिसे मेरे अल्लाह के सिवा कोई भी पूरा न कर सके। यूं भी तो हो सकता है के तुम मुझे क़त्ल करने आओ और तुम मेरे हाथों क़त्ल हो जाओ।"

उब्बी बिन ख़ल्फ रसूल अल्लाह(स०) की इस बात पर तंज़िया हंसी हंस पड़ा और हंसता हुआ चला गया।

अब ओहद के मआरके में रसूले खुदा(स०) को उब्बी बिन ख़लफ याद आ गया। जूंही आप(स०) ने उसका नाम लिया तो दूर से एक घोड़ा सरपट दौड़ात आया। सब ने उधर देखा।

"मेरे अज़ीज़ साथियों!" -रसूले अकरम ने अपने साथियों से कहा-मुझे कुछ ऐसे लग रहा है जैसे ये सवार जो हमारी तरफ बढ़ता आ रहा है, उब्बी ही होगा। अगर वो उब्बी ही हुआ तो उसे रोकना नहीं। उसे मेरे सामने और मेरे क़रीब आने देना।"

मोअर्रेख़ीन वाक़दी, मग़ाज़ी और बिन हशाम ने लिखा है के वो सवार उब्बी ख़ल्फ ही था। उसने लल्कार कर कहा- "संभल जा मोहम्मद(स०)!उब्बी आ गया है। ये देख मैं उसी घोड़े पर सवार हूं जो तुम्हें दिखाया था।"

"या रसूल अल्लाह(स०)!"- रसूल अल्लह (स०)के साथियों में से तीन चार ने

आगे हो कर कहां-"हमें इजाज़त दें के उसे आप(स॰) के क़रीब आने तक ख़त्म कर दें।"

"नहीं"-रसूले अकरम(स॰) ने कहा-"इसे आने दो। मेरे क़रीब आने दो..... इसे रास्ता दे दो।"

रसूले करीम(स॰) के सर पर ज़ंजीरों वाली खुद थी। इसकी ज़ंजीरें आप(स॰) के चहरे के आगे और दायें बायें लटक रही थी। आप(स॰) के हाथ में बरछी थी और तलवार नियाम में थी। उब्बी का घोड़ा क़रीब आ गया था।

"आगे आजा उब्बी!"-रसूले खुदा(स॰) ने लल्कार कर कहा-"मेरे सिवा तेरे साथ कोई नही लड़ेगा।"

उब्बी बिन ख़ल्फ ने अपना घोड़ा क़रीब आ कर रोका और तंज़िया क़हक़हा लगाया। उसे शायद पूरा यक़ीन था के वो आप(स॰) को क़त्ल कर देगा। उसकी तलवार भी नियाम में थी। आप(स॰) उसके क़रीब चले गए। वो बड़े ताक़तवर घोड़े पर था और आप(स॰) ज़मीन पर। उसने अभी तलवार निकाली ही थी के आप ने आगे बढ़ कर और उछल कर उस पर बरछी का वार किया। वो वार बचाने के लिए एक तरफ को झुक गया लेकिन वार खाली नहीं गया। आप(स॰) की बरछी की अन्नी उसके दायें कंधे पर हंसली की हड्डी से नीचे लगी। वो घोड़े से गिर पड़ा और उसकी पसली टूट गई।

मोअर्रिख़ लिखते है के रसूले खुदा(स॰) का वार इतना कारी न था के उब्बी जैसा क़वी हैकल आदमी उठ न सकता। रसूले खुदा(स॰) उस पर दूसरा वार करने को दौड़े। वो घोड़े के दूसरी तरफ गिरा था। उस पर शायद दहशत तारी हो गई थी या आप(स॰) का वार उसके लिए ग़ैर मुतावक्क़े था। वो उठा और अपना घोड़ा वहीं छोड़ कर भाग गया। वो चिल्लाता जा रहा था-"मोहम्मद(स॰) ने मुझे क़त्ल कर दिया है.... ऐ अहले कुरैश, मोहम्मद(स॰) ने मुझे क़त्ल कर डाला है।"

कुरैश के कुछ आदमियों ने उसके ज़ख्म देखे तो उसे तसल्ली दी के उसे किसी ने क़त्ल नहीं किया। ज़ख्म बिल्कुल मामूली है, लेकिन उस पर न जाने कैसी कैफियत तारी हो गई थी के उसकी ज़बान से यही अल्फाज़ निकलते थे-"ज़िन्दा नहीं रहूंगा, मोहम्मद(स॰) ने कहा था के मैं उसके हाथों क़त्ल हो जाऊंगा।"

मोअर्रिख़ बिन हशाम ने यहां तक लिखा है के उब्बी ने ये अल्फाज़ भी कहे थे-"अगर मोहम्मद(स॰) मुझ पर सिर्फ थूक देता तो भी मै ज़िन्दा न रह सकता"-जब ओहद का मआरका ख़त्म हो गया तो उब्बी कुरैश के साथ मक्का को रवाना हुआ। रास्ते में उन्होंने पड़ावो किया तो उब्बी मर गया।

❁

ख़ालिद को आज चार बरस बाद वो वक्त कल की बात की तरह याद आ रहा था। उसे यक़ीन था के मुसलमानों को अहल-ए-कुरैश कुचल कर रख देंगे लेकिन मुसलमान जिस तरह जानें कुरबान कर रहे थे, उसने ख़ालिद को परेशान कर दिया यूं लगता था जैसे मुसलमान पियादों से कुरैश के घोड़े भी ख़ौफ़ज़दा हैं। ख़ालिद ने अपने घोड़े को ऐड़ लगाई और इस खूंरेज़ मआरके में अबु सुफ़यान को तलाश करता उस तक पहुंचा।

"क्या हम मुसलमानों को फैसला कुन शिकस्त देने के क़ाबिल नही रहे?"-ख़ालिद ने अबु सुफ़यान से कहा- "क्या कुरैश की माओं के दूध नाक़िस थे के ये इन मुळी भर मुसलमानों से ख़ौफ़ज़दा हुए जा रहे हैं?"

"देखो ख़ालिद!"-अबु सुफ़यान ने कहा-"जब तक मोहम्मद(स०) उनके साथ साथ है और वो ज़िन्दा व सलामत है, ये खून का आख़िरी क़तरा बह जाने तक शिकस्त नही खाएंगे।"

"तो ये फर्ज़ मुझे क्यों नही सौंप देते?"-ख़ालिद ने कहा।

"नहीं"-अबु सुफ़यान ने कहा-"तुम अपने सवारों के पास जाओ। तुम्हारी क़यादत के बग़ैर बिखर जाएंगे। मोहम्मद(स०) और उसके साथियों पर हमला करने के लिए में पियादे भेज रहा हूं।"

आज मदीना की तरफ जाते हुए ख़ालिद को अफसोस हो रहा था के अबु सुफ़यान ने उसके एक अज़्म को कुचल डाला था। रसूले खुदा(स०) के क़त्ल को वो अपना फर्ज़ समझता था! वो रसूले खुदा(स०) को क़त्ल कर के अपने सब से बड़े देवताओं हुब्ल और उज़ा की खुशनूदी हासिल (स०)करना चाहता था। उसने अपने सालार का हुक्म मानना ज़रूरी समझा और अपने घुड़सवार दस्ते की तरफ चला गया। उसे इतना इतमेनान ज़रूर था के रसूले अकरम(स०) के साथ अब चन्द एक साथी ही रह गए होंगें और आप को क़त्ल करना अब कोई मुश्किल नही होगा और उसके बाद मुसलमान उठने के क़ाबिल नहीं रहेंगे। ख़ालिद को मैदान-ए-जंग की कैफियत बड़ी अच्छी तरह याद थी। उसने ज़रा बुलंदी से देखा था के ओहद के दामन में दूर दूर तक ज़मीन खून से लाल हो गई थी। कहीं घोड़े तड़प रहे थे ओर कहीं खून में नहाए हुए इन्सान कराह रहे थे। ज़ख्मियों को उठाने का अभी किसी को होश न था।

फिर उसने देखा। पियादा कुरैश रसूले करीम(स०) के क़रीब पहुंच गए थे और उन्होंने आप(स०) के साथियों का हल्क़ा भी तोड़ लिया था। कुरैश के तीन आदमी-अतबा उबी वक़ास, अब्दुल्ला बिन शहाब और इब्ने कुमा- रसूले

करीम(स०) पर पत्थर बरसाने लगे। अजीब सूरत ये थी के अतबा का सगा भाई साद बिन अबी वक़ास(र०) रसूले अकरम(स०) की हिफ़ाज़त में लड़ रहा था। रसूले अकरम(स०) के साथियों की तादाद न होने के बराबर रह गई थी या वो लड़ते लड़ते बिखर गए थे।

अतबा ने आप(स०) पर जो पत्थर बरसाए इनसे आप(स०) के नीचे वाले दो दांत टूट गए और निचला होंट ज़ख्मी हो गया। अब्दुल्ला के पत्थर से आप(स०) की पेशानी पर ख़ासा गहरा ज़ख्म आया। बिन कुमा ने क़रीब आ कर इतनी ज़ोर से पत्थर मारा के आप(स०) के खुद की ज़ंजीर की दो कड़ियां टूट कर रूख्सार में उतर गयीं। इनसे रूख्सार की हड्डी भी बुरी तरह मजरूह हुई। आप(स०) ने बरछी से दुश्मनों पर वार करने की बहुत कोशिश की लेकिन दुश्मन क़रीब नहीं आते थे। आप(स०) का खून इतना निकल गया था के आप(स०) गिर पड़े। उस वक्त आप(स०) के एक सहाबी तलहा(र०) ने जो कुरैश के दूसरे आदमियों के साथ लड़ रहे थे, देख लिया और दौड़ते हुए आप(स०) तक पहुंचे। उनकी लल्कार पर उनके दूसरे साथी भी आ गए। आप(स०) को पत्थरों से गिराने वाले कुरैश आप(स०) पर तलवारों से हमला करने ही वाले थे के साद बिन अबी वक़ास(र०) ने अपने सगे भाई अतबा पर हमला कर दिया। अतबा अपने भाई का ग़ैज़ व ग़ज़ब देख कर भाग उठा।

तलहा(र०) ने रसूले खुदा(स०) को सहारा दे कर उठाया। आप पूरी तरह होश में थे। इस दौरान आप(स०) के साथियों ने इन आदमियों को भगा दिया था जिन्होंने रसूले करीम(स०) पर हमला किया था। मोअर्रिख़ लिखते हैं के साद(र०)बिन अबी वक़ास पर क़ाबू पाना मुश्किल हो रहा था। साद(र०) कहते थे–"मैं अपने भाई को क़त्ल कर के उसके जिस्म के टुकड़े कर देना चाहता हूं जिसने मेरी मौजूदगी में मेरे नबी(स०) पर हमला किया है"–वो अकेले ही कुरैश की तरफ दौड़ने की कोशिश करते थे। उन्हें बड़ी मुश्किल से रोका गया। अगर रसूले खुदा(स०) उन्हें रूकने का हुक्म न देते तो वो कभी न रूकते।

❁

कुरैश ग़ालेबन बहुत ही थक गए थे। वो मआरके से मुंह मोड़ गए।तब रसूले अकरम(स०) के साथियों ने आप(स०) के ज़ख्मों की तरफ तव्वजह दी। जो ख्वातीन आप(स०) के साथ थीं, उन्होंने आप(स०) को पानी पिलाया। कपड़ों से ज़ख्म साफ किये। इस वक्त ये देखा गया के खुद की ज़ंजीरों की टूटी हुई कड़ियां आप(स०) के रूख्सार की हड्डी में उतरी हुई हैं। एक सहाबी अबु उबेदा(र०) जो अरब के एक मशहूर जर्राह के फ़रज़न्द थे, आगे बढ़े और आप(स०) के रूख्सारों से कड़ियां निकालने लगे

लेकिन हाथों से कड़ियां न निकलीं। आख़िर अबु उबेदा(र०) ने दांतों की मदद से एक कड़ी निकाल ली जब दूसरी कड़ी निकाली तो कड़ी तो निकल आई लेकिन अबु उबेदा(र०) के सामने के दो दांत टूट गए। इसके बाद लोगों ने अबु उबेदा(र०) को अलअसरम कहना शुरू कर दिया जिसका मतलब है वो आदमी जिसके सामने वाले दांत न हों। फिर वो इसी नाम से मशहूर हो गए।

उम्मे ऐमन(र०) जो रसूले अकरम(स०) के बचपन में आप(स०) की दाया रह चुकी थीं, आप(स०) पर झुकी हुई थी। उस वक्त तक आप(स०0) की तबीअत संभल चुकी थी। अचानक एक तीर उम्मे ऐमन की पीठ में उतर गया और उसके साथ ही दूर से एक क़हक़हा सुनाई दिया। सब ने उधर देखा तो कुरैश का एक आदमी हुबान बिन अरक़ा दूर खड़ा हंस रहा था। उस के हाथ में कमान थी। ये तीर उसी ने चलाया था। वो हंसता हुआ पीछे को मुड़ा। रसूले खुदा(स०) ने एक तीर साद(र०)बिन वक़ास को दे कर कहा के ये शख्स यहां से तीर ले कर ही वापस जाए। साद(स०) ने जो तमाम क़बायल में तीरअंदाज़ी में ख़ुसूसी शौहरत रखते थे, कमान में तीर डाल कर हुबान पर चलाया। तीर हुबान की गरदन में उतर गया। साद(र०) के तमाम साथियों ने बड़ी ज़ोर से क़हक़हा लगाया। हुबान ने डगमगाते हुए चन्द क़दम उठाए और वो गिर पड़ा।

आज ख़ालिद जब मदीना की तरफ बढ़ता जा रहा था और ओहद की पहाड़ी उफक़ से ऊपर ही ऊपर उठती आ रही थी, उसे अपने कुछ साथी याद आने लगे। अक़ीदों के इख़्तेलाफ ने भाई को भाई का दुश्मन बना दिया था लेकिन ख़ालिद को ये ख्याल भी आया के बाज़ लोग अपने अक़ीदे को इसलिए सच्चा समझते हैं के वो उसके पैरूकार होते हैं। हक़ और बातिल के फर्क़ को समझने के लिए बड़ी मज़बूत शख़्सियत की ज़रूरत होती है।

एक सवाल उसे फिर परेशान करने लगा–"मैं मदीना क्यों जा रहा हूं?.... अपना अक़ीदा मदीना वालों पर थोपने के लिए या उनका अक़ीदा अपने ऊपर मुसल्लत करने के लिए?"–उसे अबु सुफयान की आवाज़ सुनाई दी जो एक ही रोज़ पुरानी थी–"क्या ये सच है के तुम मदीना जा रहे हो? क्या तुम्हारी रगों में वलीद का खून सफेद हो गया है?"

सहरा में जाते हुए इन आवाज़ों ने कुछ दूर तक उसका तआक़ुब किया। फिर वो अपने उन दोस्तों की याद में खो गया जिनके ख़िलाफ़ वो लड़ा और जिनका खून उसके सामने बह गया था। उनमें एक मसअब बिन उमेर(र०) भी थे।

क़ुरैश जो मआरके से मुंह मोड़ गए थे कुछ दूर ही पहुंचे थे के ख़ालिद ने अपने

घोड़े को ऐड़ लगाई और अबु सुफ़यान को जा पकड़ा। उसने अबु सुफ़यान से पूछा के तुम लोग जंग को अधूरा छोड़ कर कहां जा रहे हो? मुसलमानों के दम ख़म ख़त्म हो चुका है। अबु सुफ़यान भी यही चाहता था के ये मआरका फैसला कुन नतीजे पर पहुंचे। कुरैश के चन्द सवार वहीं से पलट आए। ख़ालिद देख चुका था के रसूले करीम(स०) कहां है यहां फिर अबु सुफ़यान ने ख़ालिद को किसी और तरफ़ भेज दिया और कुछ आदमियों को नबी करीम पर हमले का हुक्म दिया। अब रसूले करीम के साथ कुछ और मुसलमान आन मिले थे।

❁

अब फिर इब्ने कुमा लड़ते हुए मुसलमानों का हल्क़ा तोड़ कर रसूले अकरम(स०) तक पहुंचने की कोशिश करने लगा। उस वक़्त रसूले अकरम(स०) के पास मसअब बिन उमेर(र०) खड़े थे और उम्मे अम्मारा(र०) अपने क़रीब पड़े हुए दो तीन ज़ख़्मियों को पानी पिला रहीं थीं। उन्होंने जब कुरैश को एक बार फिर हमले के लिए आते देखा तो ज़ख़्मियों से हट कर उन्होंने एक ज़ख़्मी की तलवार उठा ली और कुरैश के मुक़ाबले में डट गईं। कुरैश का सबसे पहला सवार जो उनके क़रीब आया, उस तक वो नही पहुंच सकती थीं इसलिए उन्होंने तलवार से उसके घोड़े पर ऐसा वार किया के घोड़ा गिर पड़ा। सवार घोड़े के दूसरी तरफ गिरा। उम्मे अम्मारा(र०) ने घोड़े के ऊपर से कूद कर कुरैश के उस आदमी पर वार किया और उसे ज़ख़्मी कर दिया। वो उठा और भाग गया।

मसअब बिन उमेर(र०) की क़द बुत और शक्ल व सूरते में रसूले करीम(स०) के साथ नुमाया मुशाबहत थी। इब्ने कुमा मसअब(र०) को रसूले खुदा(स०)समझ कर उन पर हमला आवर हुआ। मसअब(र०) तैयार थे। उन्होंने इब्ने कुमा का मुक़ाबला किया। कुछ देर दोनो में तेग़ ज़नी हुई लेकिन इब्ने कुमा का एक वार मसअब(र०) पर ऐसा भर पूर पड़ा के वो गिरे और शहीद हो गए। उम्मे अम्मारा(र०) ने मसअब(र०) को गिरते देखा। गेज़ व ग़ज़ब से इब्ने कुमा पर तलवार का वार किया लेकिन इब्ने कुमा ने ज़िरह पहन रखी थी और वार करने वाली एक औरत थी इस लिए इब्ने कुमा को कोई ज़ख़्म न आया। इब्ने कुमा ने उम्मे अम्मरा(र०) के कन्धे पर भरपूर वार किया जिससे वो शदीद ज़ख़्मी हो कर गिर पड़ीं।

उस वक़्त रसूले करीम जो क़रीब ही थे, इब्ने कुमा की तरफ बढ़े लेकिन इब्ने कुमा ने पैंतरा बदल कर आप (स०) पर ऐसा वार किया जो आप के खुद पर पड़ा। तलवार खुद से फिसल कर आप(स०) के कन्धे पर लगी। आप(स०) के बिल्कुल पीछे एक गढ़ा था। आप(स०) ज़ख़्म खा कर पीछे हटे और गढ़े में गिर पड़े। इब्ने कुमा

ने पीछे हट कर गला फाड़ कर कहा-"मैं ने मोहम्मद(स०) को क़त्ल कर दिया है"-वो यही नारे लगाता मैदान-ए-जंग में घूम गया। उसकी आवाज़ कुरैश ने भी सुनी और मुसलमानों ने भी।

कुरैश को तो खुश होना ही था, मूसलमानों पर इसका बड़ा तबाह कुन असर हुआ। वो हौसला हार बैठे और ओहद की पहाड़ी की तरफ भागने लगे।

"अपने नबी के शैदाइयों!"-भागते हुए मुसलमानों को एक लल्कार सुनाई दी-"अगर नबी न रहे तो लानत है हम पर के हम भी ज़िन्दा रहें। तुम कैसे शैदाई हो के नबी करीम(स०) की शहादत के साथ ही तुम मौत से डर कर भाग रहे हो।"

मुसमान रूक गए। इस लल्कार ने इन्हें आग बगूला कर दिया। वो पियादा थे लेकिन उन्होंने कुरैश के घुड़सवारों पर हमला कर दिया। ये हमला ख़ालिद और अकरमा के घुड़सवारों पर हुआ था।

ख़ालिद को आज याद आ रहा था के उसके हाथों कितने ही मुसलमानों का खून बह गया था। इनमें एक रफाआ बिन वक़श(र०) भी थे। ख़ालिद के दिल में दर्द की एक टीस सी उठी। उसे कुछ ऐसा अहसास होने लगा जैसे वो बेमक़सद खून बहाता रहा है लेकिन उस वक्त वो मुसलमानों को अपना बदतरीन दुश्मन समझता था।

अब मुसलमानों का दम ख़म टूट चुका था। पियादे घुड़सवारों का मुक़ाबला कब तक करते। वो मजबूर हो कर पहाड़ी की तरफ पस्पा होने लगे। रसूले अकरम(स०) भी अपने साथियों के साथ एक तंग सी वादी की तरफ जा रहे थे। जिस तरह मुसलमानों ने माल-ए-ग़नीमत के लालच में अपना मोर्चा छोड़ दिया और जंग का पांसा अपने ख़िलाफ़ पलट दिया था उसी तरह अब कुरैश के आदमी मुसलमानों की लाशों पर और तड़पते हुए ज़ख्मियों पर माल-ए-ग़नीमत इक्ठा करने के लिए टूट पड़े। इनमें से कुछ कुरैश रसूले करीम के तआकुब में चले गए लेकिन आप के साथियों ने इन पर ऐसी बे जिगरी से हल्ला बोला के इनमें से ज़्यादा तर कुरैश को जान से मार डाला और जो बच गए वो भाग उठे। रसूले अकरम(स०) एक बुलन्द जगह पहुंच गए। आप(स०) ने वहां से सूरत-ए-हाल का जायज़ा लिया। आप(स०) के तीस सहाबा(र०) में से सोलह शहीद हो चुके थे जो चौदह ज़िन्दा थे इनमें ज़्यादा तर ज़ख्मी थे। आप(स०) ने बुलन्दी से मैदान-ए-जंग का जायज़ा लिया। आप को कोई मुसलमान नज़र नहीं आ रहा था। मुसलमान ये समझ कर के रसूल-ए-अकरम(स०) शहीद हो चुके हैं, सख्त मायूसी के आलम में इधर उधर बिखर गए। कुछ वापस मदीना चले गए। कुछ कुरैश के इन्तेक़ाम के डर से पहाड़ी के अन्दर जा छुपे।

यहां रसूले खुदा(स०) को अपने ज़ख्मों की तरफ तव्वजह देने की फुरसत मिली। आप(स०) की बेटी हज़रत फातिमा(र०) जो आप को हर तरफ तलाश कर कर के थक चुकी थी, आप(स०) के पास आ पहुंची। क़रीब ही एक चश्मा था। हज़रत अली(र०) वहां से किसी चीज़ में पानी लाए और आप को पिलाया। हज़रत फातिमा(र०) आप(स०) के ज़ख्म धोने लगीं। वो सिसक सिसक कर रो रहीं थी।

❁

ख़ालिद को आज याद आ रहा था के रसूले करीम(स०) की शहादत की ख़बर ने उसे रूहानी सा इतमेनान दिया था लेकिन एक लल्कार ने उसे चौंका दिया। वादी में इस लल्कार की गूंज बड़ी दूर तक सुनाई दे रही थी। कोई बड़ी ही बुलन्द आवाज़ में कह रहा था–"मुसलमानो! खुशियां मनाओ। हमारे नबी ज़िन्दा और सलामत हैं"–इस लल्कार पर ख़ालिद को हंसी भी आई थी और अफसोस भी हुआ था। उसने अपने आप से कहा था के कोई मुसलमान पागल हो गया है।

हुआ यूं था के जिस तरह मुसलमान इक्का दुक्का इधर उधर बिखर गए थे, इसी तरह काब बिन मालिक(र०) नाम का एक मुसलमान इधर उधर घूमता पहाड़ी के उस मुक़ाम की तरफ चला गया जहां रसूले अकरम(स०) सुस्ता रहे थे। उसने नबी करीम(स०) को देखा तो उस ने जज़बात की शिद्दत से नारा लगाया–"हमारे नबी ज़िन्दा हैं" तमाम मुसलमान जो अकेले अकेले या दो दो चार चार की टोलियों में इधर उधर बिखर गए थे, इस आवाज़ पर दौड़ते हुए आए। हज़रत उम्र(र०) भी इस आवाज़ पर रसूले खुदा(स०) तक पहुंचे थे।

इस से पहले अबु सुफयान मैदान–ए–जंग में पड़ी हुई हर एक लाश को देखता फिर रहा था। वो रसूले करीम(स०) का जस्द–ए–मुबारक तलाश कर रहा था। अब उसे कुरैश का जो भी आदमी मिलता उससे पूछता, तुम ने मोहम्मद(स०) की लाश नहीं देखी? इसी तलाश में ख़ालिद उसके सामने आ गया।

"ख़ालिद!"–अबु सुफयान ने पूछा–"तुम ने मोहम्मद(स०) की लाश नहीं देखी?"

"नहीं"–ख़ालिद ने जवाब दिया और अबु सुफयान की तरफ ज़रा सा झुक कर पूछा–"क्या तुम्हें यक़ीन है के मोहम्मद(स०) क़त्ल हो चुका है?"

"हां"–अबु सुफयान ने जवाब दिया–"वो हम से बच कर कहां जा सकता था?....क्या तुम्हें शक है?"

"हां अबु सुफयान"–ख़ालिद ने जवाब दिया–"मैं उस वक़्त तक शक में रहता हूं जब तक के अपनी आंखों से देख लूं। मोहम्मद(स०) इतनी आसानी से क़त्ल हो

जाने वाला शख्स नही।"

"मालूम होता है तुम पर मोहम्मद(स०) का तिलिस्म तारी है"-अबु सुफयान ने तकब्बुर के लहजे में कहा-"क्या मोहम्मद(स०) हम में से नही था। क्या तुम उसे नही जानते थे। जो शख्स इतनी क़त्ल व ग़ारत का ज़िम्मेदार है, एक रोज़ उसे भी क़त्ल होना है। मोहम्मद(स०) क़त्ल हो चुका है। जाओ और देखो। उसकी लाश को पहचानो। हम उसका सर काट कर मक्का ले जाएंगे।"

ऐन उस वक़्त पहाड़ी में से काब(र०)बिन मालिक की लल्कार गरजी-"मुसलमानो! खुशियां मनाओ। हमारे नबी ज़िन्दा सलामत हैं-फिर ये आवाज़ राद की कड़क की तरह गरजती, कड़कती, वादी और मैदान में घूमती फिरती रही।

"सुन लिया। अबु सुफयान!"-ख़ालिद ने कहा-"अब मैं तुम्हें बताता हूं मोहम्मद(स०) कहां है, मैं उस पर हमला करने जा रहा हूं लेकिन मैं तुम्हें यक़ीन नहीं दिला सकता के मैं मोहम्मद(स०) को क़त्ल कर आऊंगा।"

कुछ देर पहले ख़ालिद ने रसूले करीम(स०) और उन के साथियों को पहाड़ी के अन्दर जाते देखा था लेकिन वो बहुत दूर था। ख़ालिद हार मानने वाला और अपने इरादे को अधूरा छोड़ने वाला आदमी नहीं था। उसने अपने चन्द एक सवारों को साथ लिया और पहाड़ी के उस मुक़ाम की तरफ बढ़ने लगा जिधर उसने रसूले करीम(स०) को जाते देखा था।

मशहूर मोअर्रिख इब्ने हशाम की तहरीर से पता चलता है के रसूले अकरम ने जब ख़ालिद को अपने सवारों के साथ इस घाटी पर चढ़ते देखा जहां आप(स०) थे तो आप(स०) के मुंह से बे साख्ता दुआ निकली-"खुदाए जुलजलाल! इन्हें इस वक़्त वहीं कहीं रोक ले।"

ख़ालिद अपने सवारों के साथ घाटी चढ़ता जा रहा था। ये एक दर्रा सा था जो तंग होता चला जा रहा था। घोड़ो को एक क़तार में होना पड़ा। रसूले करीम(स०) ज़ख्मों से चूर पड़े थे। हज़रत उमर(र०) ने जब ख़ालिद और उस के सवारो को ऊपर आते देखा तो वो तलवार निकाल कर कुछ नीचे उतरे।

"वलीद के बेटे!"-हज़रत उमर(र०) ने लल्कारा-"अगर लड़ाई लड़ना जानते हो तो उस दर्रे की तंगी को देख लो। इस चढ़ाई को देख लो। क्या तुम अपने सवारों के साथ हमारे हाथ से बच निकल जाओगे।?"

ख़ालिद लड़ने के फ़न को खूब समझता था। उसने देख लिया था के ये जगह घोड़ों को घुमा फिरा कर लड़ाने के लिए मोज़ू नहीं बल्कि ख़तरनाक है। ख़ालिद ने ख़ामोशी से अपना घोड़ा घुमाया और अपने सवारों के साथ वहां से नीचे उतर आया।

जंग-ए-ओहद ख़त्म हो चुकी थी। कुरैश इस लिहाज़ से बरतरी का दावा कर सकते थे क्योंके उन्होंने मुसलमानों को ज़्यादा नुक़सान पहुंचाया था लेकिन ये जंग हार जीत के बग़ैर ख़त्म हो गई थी।

"लेकिन ये हमारी शिकस्त थी"-ख़ालिद को जैसे अपनी अवाज़ सुनाई दे रही थी-"मुसलमानों की नफरी सात सौ थी और हम तीन हज़ार थे। हमारे पास दो सौ घोड़े थे। हमारी फ़तह तब होती जब हम मोहम्मद(स०) को क़त्ल कर देते।"

ख़ालिद ने अपने आप में झुंझलाहट सी महसूस की। उस पर ऐसी कैफियत तारी हो गई के उस के दांत बजने लगे उसे जंग का आख़री मंज़र याद आने लगा था। उसने इस भयानक याद को ज़हन से निकालने के लिए सर को झटका दिया लेकिन मक्खियों की तरह ये याद उसके इर्द गिर्द भिनभिनाती रहीं। उसे अपने आप में शर्म सी महसूस होने लगी। जंगजू यूं नहीं किया करते।

ख़ालिद जब हज़रत उमर(र०) की लल्कार पर वापस आ रहा था तो उस बुलन्दी से उसकी नज़र मैदान-ए-जंग पर पड़ी। वहां लाशें बिखरी हुई थी, शायद उनमें बेहोश ज़ख्मी भी होंगे। लाशों और ज़ख्मियों को उठाने के लिए न मुसलमान आगे बढ़े थे और न अहल-ए-कुरैश। ख़ालिद को अबु सुफयान की बीवी हुन्द नज़र आई। वो हाथ में ख़ंजर लिए हुए दौड़ी चली आ रही थी। उसके इशारे पर कुरैश की वो औरतें जो कुरैश के लश्कर के साथ आई थी, उसके पीछे पीछे दौड़ी आयीं। हुन्द हर एक लाश को देखती थी। वो ऊंचे क़द की और फ़रबही मायल जिस्म की पहलवान क़िस्म की औरत थी। वो हर एक लाश को देखती थी। कोई लाश ओंधे मुंह पड़ी नज़र आती तो वो पांव की ठोकर से उस लाश को सीधा कर के देखती थी। उसने अपने साथ की औरतों से कहा के वो हमज़ा(र०) की लाश तलाश करें।

उसे हमज़ा(र०) की लाश मिल गई। हुन्द भूके दरिन्दे की तरह लाश को चीरने फाड़ने लगी। उसने लाश के कुछ आज़ा काट कर परे फैंक दिए। उसने दूसरी औरतों को देखा जो उस के क़रीब खड़ी थी।

"खड़ी देख क्या रही हो?"-हुन्द ने इन औरतों से यूं कहा जैसे वो पागल हो चुकी हो-"ये देखो, मैं ने अपने बाप, अपने चचा और अपने बेटे के क़ातिल की लाश का क्या हाल कर दिया है। जाओ, मुसलमानों की हर एक लाश का यही हाल कर दो और सब के कान और नाक काट कर ले आओ।"

जब वो औरतें मुसलमानों की लाशों को चीरने फाड़ने के लिए वहां से हट गयी तो हुन्द ने ख़ंजर से हमज़ा(र०) का पेट चाक कर के उसके अन्दर हाथ डाला। उसका

हाथ बाहर आया तो उस में लाश का कलेजा था जो हुन्द ने ख़ंजर से काट लिया। उसने इसी पर इक्तिफा न किया। हमज़ा(र०) के कलेजे का एक टुकड़ा काट कर उसने अपने मुंह में डाल लिया और दरिन्दों की तरह उसे चबाने लगी लेकिन थोड़ी देर बाद उसने कलेजे के इस टुकड़े को उगल दिया। साफ नज़र आ रहा था के वो इस टुकड़े को निगलने की कोशिश कर रही थी लेकिन ये टुकड़ा उसके हलक़ से नीचे नहीं जा रहा था।

ख़ालिद को दूर अबु सुफ़यान खड़ा नज़र आया। हुन्द की इस वहशियाना हरकत ने ख़ालिद का मज़ा किरकिरा कर दिया था। वो जंगजू था। वो सिर्फ आमने सामने आ कर लड़ने वाला आदमी था। अपने दुश्मन की लाशों के साथ ये सलूक न सिर्फ ये के उसे पसंद न आया बल्कि उसने नफ़रत की निगाह से देखा।

अबु सुफयान को देखकर ख़ालिद ने अपने घोड़े को ऐड़ लगाई और अबु सुफयान के पास जाकर घोड़ा रोका।

"अबु सुफयान!"-ख़ालिद ने गुस्से और हिक़ारत के मिले जुले लहजे में कहा-"क्या तुम अपनी बीवी और इन औरतों की इस वहशियाना हरकत को पसंद कर रहे हो?"

अबु सुफयान ने ख़ालिद की तरफ ऐसी निगाहों से देखा जिस में बे बसी की झलक थी और साफ पता चलता था के उसे लाशों के साथ अपनी बीवी का ये सलूक पसंद नहीं।

"ख़ामोश क्यों हो अबु सुफयान!"

"तुम हुन्द को जानते हो ख़ालिद!"-अबु सुफयान ने दबी सी ज़बान में कहा-"ये औरत इस वक़्त पागलों से बदतर है। अगर मैं या तुम इसे रोकने के लिए आगे बढ़े तो ये ख़ंजर से हमारे पेट भी चाक कर देगी।"

ख़ालिद हुन्द को जानता था। वो अबु सुफयान की बे बसी को समझ गया। अबु सुफयान ने सर झुकाया, घोड़े की लगाम को झटका दिया और मुंह फैर कर दूसरी तरफ चल पड़ा। ख़ालिद भी इस मंज़र को बर्दाश्त न कर सका।

जब हुन्द हमज़ा(र०) की लाश का कलेजा चबा कर उगल चुकी तो उसने पीछे देखा। उसके पीछे जुबैर बिन मुतइम का ग़ुलाम वहशी बिन हर्ब खड़ा था। उसके हाथ में अफरीक़ा की बनी हुई वही बरछी थी जिस से उसने हमजा(र०) को शहीद किया था।

"यहां क्या कर रहे हो बिन हर्ब!"- हुन्द ने तहक्कुमाना अंदाज़ में उसे कहा-"जाओ और मुसलमानों की लाशों के टुकड़े कर दो।"

वहशी बिन हर्ब बोलता बहुत कम था। उसकी कोशिश ये होती के ज़्यादा से ज़्यादा बात इशारों में कर ली जाए। उसने हुन्द का हुक्म मानने की बजाए अपना हाथ हुन्द के आगे फैला दिया और उसकी नज़रें हुन्द के गले में पड़े हुए सोने के हार पर जम गयी। हुन्द को अपना वादा याद आ गया। उसने वहशी से कहा था के तुम मेरे बाप, चचा और बेटे के क़ातिल को क़त्ल कर दो तो मैं ने जितने ज़ेवरात पहन रखे हैं वो तुम्हारे होंगे। अब वहशी अपना इनाम लेने आया था। हुन्द ने अपने तमांम ज़ेवरात उतार कर वहशी बिन हर्ब के फैले हुए हाथ पर रख दिये। वहशी के होंटो पर मुस्कुराहट आ गई और वो वहां से चल पड़ा। हुन्द पर उस वक्त फतह और इन्तेक़ाम का भूत सवार था।

"ठहर जाओ बिन हर्ब!"-हुन्द ने जोशीली आवाज़ में इस हबशी को बुलाया। वो जब उसके पास आया तो हुन्द ने कहा-"मैं ने तुम्हें कहा था के मेरा कलेजा ठंडा कर दो तो तुम्हें अपने ज़ेवरात दूंगी लेकिन तुम इससे ज़्यादा इनाम के हक़दार हो"-हुन्द ने कुरैश की औरतों की तरफ इशारा किया और कहा-"तुम जानते हो इन औरतों में क़नीज़ कौन कौन है। देखो, वो जवान भी है खुबसूरत भी। तुम्हे जो क़नीज़ अच्छी लगती है, उसे ले जोओ।"

वहशी बिन हर्ब ने अपनी आदत के मुताबिक़ ख़ामोशी से चन्द लम्हे हुन्द के चहरे पर नज़रें गाढ़ी लेकिन उसकी नज़रें क़नीज़ों की तरफ न गयी। उसने इन्कार में सर हिलाया और वहां से चला गया।

कुछ देर बाद मैदान-ए-जंग की होलनाकी में से हुन्द की बुलन्द और मुतारन्नुम आवाज़ सुनाई देने लगी। मोअररिख़ बिन हशाम के मुताबिक़ उसने तरन्नुम से जो नग़मा गाया उसके अल्फाज़ कुछ इस तरह थे:

हम ने बदर के मआरके का हिसाब बराबर कर लिया है।
एक खूंरेज़ मआरके के बदले हम ने एक खूंरेज़ मआरका लड़ लिया है।
अतबा का ग़म मेरी बर्दाशत से बाहर था।
अतबा मेरा बाप था।
मुझे चचा का भी ग़म था, अपने बेटे का भी ग़म था।
अब मेरा सीना ठंडा हो गया है।
मैंने अपनी क़सम पूरी कर दी है।
वहशी ने मेरे दिल के दर्द का मदावा कर दिया है।
मैं उम्र भर वहशी की अहसान मंद रहूंगी।
उस वक्त तक जक तक मेरी हड्डियां क़ब्र की मिट्टी में मिल कर मिट्टी नहीं हो

जाती।

❁

अबु सुफयान इस भयानक मंज़र को वर्दाश्त न कर सका था। वो पहले ही मुंह फैर कर जा चुका था। उसने अपने साथियों से कहा के उसे यक़ीन नही आ रहा के रसूल अकरम ज़िंदा(स०) हैं।

"ख़ालिद ने दूर से किसी और को देख कर समझ लिया होगा के वो मोहम्मद(स०) है"-किसी ने अबु सुफयान से कहा।

अबु सुफयान ये कह कर के वो अपनी आंखों से देख कर आया है, उस तंग से दर्रे की तरफ चला गया जहां से ख़ालिद अपने सवारों को वापस लाया था। वो ऐसी जगह जा खड़ा हुआ जहां से उसे मुसलमान बैठे हुए नज़र आ रहे थे।

"मोहम्मद(स०) के पैरूकारों!"-अबु सुफयान ने बुलन्द आवाज़ से कहा-"क्या तुम में मोहम्मद(स०) ज़िन्दा है?"

रसूले करीम(स०) ने आवाज़ सुनी तो अपने इर्द गिर्द बैठे हुए मुसलमानों को इशारा किया के वो ख़ामोश रहें। अबु सुफयान ने अपना सवाल और ज़्यादा बुलन्द आवाज़ से दोहराया। अब भी उसे कोई जवाब न मिला।

"क्या अबुबकर(र०) तुम में ज़िन्दा मौजूद है"-अबु सुफयान ने बुलन्द आवाज़ से पूछा। अब भी उसे कोई जवाब न मिला। तीन बार पूछने के बावजूद भी मुसलमान ख़ामोश रहे।

"क्या उमर ज़िन्दा है?"-अबु सुफयान ने पूछा।

अब के भी मुसलमानों ने ख़ामोशी इख़्तेयार किये रखी।

अबु सुफयान ने घोड़े को घुमाया। उसने नीचे देखा। कुरैश के बहुत से आदमी रसूले अकरम(स०) के मुताल्लिक़ सही ख़बर सुनने को बेताब खड़े थे।

"ऐ अहल-ए-कुरैश!"-अबु सुफयान ने चिल्ला कर कर ऐलान किया-"मोहम्मद(स०) मर चुका है। अबुबकर(र०) भी ज़िन्दा नहीं। अब मुसलमान तुम्हारे साये से भी डरेंगे। खुशियां मनाओ। नाचो।"

अहल-ए-कुरैश नाचने और हुल्लड़ मचाने लगे लेकिन गूंजती हुई आवाज़ ने उन्हें ख़ामोश कर दिया।

"ऐ खुदा के दुश्मन!"-दर्रे की बुलन्दी से हज़रत उमर(र०) की आवाज़ गूंजी-"इतना झूट न बोल। वो तीनों ज़िन्दा हैं जिनके नाम ले के तू इन्हें मुर्दा कह रहा है। अपने क़बीले को धोका मत दे। तुझे तेरे गुनाहों की सज़ा देने के लिए हम सब ज़िंदा हैं"

अबु सुफयान ने तंज़िया क़हक़हा लगाया और बुलन्द आवाज़ से बोला--इब्ने

खत्ताव! तेरा खुदा तुझे हम से महफूज़ रखे। क्या तू अव भी हमें सज़ा देने की बात करता है? क्या तू यक़ीन से कहता है के मोहम्मद(स०) जिन्दा है।"

"अल्लाह की क़सम! हमारे नबी ज़िन्दा हैं"-हज़रत उमर(र०) बिन खत्ताव की आवाज़ जवाब में गर्जी-" अल्लाह के रसूल तुम्हारा एक एक लफ्ज़ सुन रहे है।"

अरबों में ये रिवाज था के एक मआरका खत्म होने के बाद दोनो फ़रीक़ों के सरदार या सालार एक दूसरे पर तानों और फब्तियों के तीर बरसाया करते थे। अबु सुफयान इसी दस्तूर के मुताबिक़ दूर खड़ा हज़रत उमर(र०) से हमकलाम था।

"तुम हुब्ल और उज़ा की अज़मत को नहीं जानते" -अबु सुफयान ने कहा।

हज़रत उमर(र०) ने रसूले अकरम(स०) की तरफ देखा। आप ऊंचा बोल नहीं सकते थे। आप(स०) ने हज़रत उमर(र०) को बताया के वो अबु सुफयान को क्या जवाब दें।

"ओ बातिल के पूजारी!"-हज़रत उमर(र०) ने बुलन्द आवाज़ से कहा-"अल्लाह की अज़मत को पहचान जो सबसे बड़ा और सब से ज़्यादा ताक़त वाला है।"

"हमारे पास हुब्ल जैसा देवता और उज़ा जैसी देवी है"-अबु सुफयान ने कहा-"क्या तुम्हारे पास कोई ऐसा देवता और देवी है?"

"हमारे पास अल्लाह है"-रसूले करीम(स०) ने हज़रत उमर(र०) की ज़बान से कहलवाया जो हज़रत उमर(र०) ने बुलन्द आवाज़ से कहा-"तुम्हारा खुदा कोई नहीं।"

"जंग का फैसला हो चुका है"-अबु सुफयान ने कहा-" तुम ने बदर में फतह पाई थी। हमने इस पहाड़ी के दामन में तुम से इन्तेक़ाम ले लिया है। अगले साल हम तुम्हें बदर के मैदान में ही मुक़ाबले के लिए लल्कारेंगे।"

"इंशा अल्लाह!"-हज़रत उमर(र०) ने रसूले करीम(स०) के अल्फाज़ बुलन्द आवाज़ से दोहराए-"अब तुम्हारे साथ हमारी मुलाक़ात बदर के मैदान में ही होगी।"

अबु सुफयान ने घोड़ा मोड़ा। घोड़ा दो क़दम ही चला होगा के उसने घोड़े को रोक लिया।

"ऐ उमर(र०)अवुवकर(र०) और मोहम्मद(स०)!"-अबु सुफयान ने अब के ज़रा ठहरी हुई बावाज़ में कहा-"तुम जब मैदानं से अपनी लाशें उठाओगे तो तुम्हें कुछ ऐसी लाशें भी मिलेंगी जिन के आज़ा कटे हुए होंगे और उन्हें चीरा फाड़ा गया होगा। खुदा की क़सम! मैंने किसी को ऐसा करने का हुक्म नहीं दिया था और मै ने तुम्हारी लाशों के साथ ये सलूक बिल्कुल पसंद नहीं किया। अगर इसका इल्ज़ाम मुझ पर

आयद करोगे तो मैं इसे अपनी तौहीन समझूंगा" - अबु सुफयान ने घोड़ा मोड़ा और घोड़े को ऐड़ लगा दी।

۞

चलते चलते खा़लिद के घोड़े ने अपने आप ही रूख़ बदल लिया। खा़लिद ने घोड़े को न रोका। वो समझ गया के घोड़े ने पानी की मुश्क पा ली है। कुछ दूर जाकर घोड़ा नीचे उतरने लगा। खा़लिद को ये मुक़ाम याद आ गया। जंग-ए-ओहद के बाद वापसी पर कुरैश ने कुछ देर यहां क़याम किया था। नीचे पानी का खा़सा ज़खीरा मौजूद था। घोड़ा बड़ी तेज़ी से घाटी उतर गया और पानी पर जा रूका। खा़लिद घोड़े से कूद कर नीचे उतरा और दो ज़ानों हो कर चुल्लू भर भर कर अपने चहरे पर पानी फैंकने लगा। ज़रा सुस्ताने के लिए भुरभुरी सी एक चट्टान के साथ बैठ गया। उसे वो वक्त याद आया जब ओहद के मआरके के बाद अहल-ए-कुरैश वापस आए थे। उन्हों ने मदीने से कुछ दूर आकर क़याम किया था। इस क़याम के दौरान कुरैश के सरदार इस बहस में उलझ गए थे के वापस मक्का पहुंचा जाए या मुसलमानों पर एक और हमला किया जाए।

सफ़वान बिन उम्य्या ने कहा था-"हम शिकस्त खा कर नही आए। अगर तुम ये समझते हो के मुसलमानों की हालत बहुत बुरी है तो अपनी हालत देखो। हमारी हालत भी अच्छी नहीं। अब मुसलमानों के साथ इतनी जल्दी लड़ने का ख़तरा मोल नहीं लेना चाहिए। हो सकता है क़िस्मत हमारा साथ न दे।"

जब ये बहस जारी थी तो कुरैश के कुछ आदमी दो मुसाफिरों को पकड़ कर सरदारों के सामने ले आए। उन्हें बताया गया के ये दोनों आदमी जो अपने आप को मुसाफिर कहते हैं, हमारे खे़मों के इर्द गिर्द घूम फिर रहे थे और हमारे चार पांच आदमियों से उन्होंने पूछा के तुम लोग कहां जा रहे हो। इन दोनों ने अबु सुफयान और दूसरे सरदारों के सामने भी यही बयान दिये के वो मुसाफिर है और किसी जगह का नाम ले कर कहा के वो उधर जा रहे है। अबु सुफयान के हुक्म से उनके फटे पुराने कपड़े जो उन्होंने पहन रखे थे, उतरवाये गए तो अन्दर से खंजर ओर तलवारें बरामद हुई। उनसे पूछा गया के तुम ने ये हथियार छुपा कर क्यों रखे है खा़लिद की नज़र बहुत तेज़ थी उसे शक हुआ के ये मुसलमानों के जासूस है। इन दोनो को कुरैश की फौज के सामने खड़ा कर दिया गया और पूछा गया के इन्हें कोई पहचानता है?

दो तीन आवाज़े आयीं के हम इन्हें पहचानते है ये यसरब(मदीना) के रहने वाले हैं।

"इस एक को मैं अच्छी तरह पहचानता हूं" - कुरैश के एक आदमी ने उठ कर

कहा-"इसे मैंने अपने खिलाफ लड़ते हुए देखा था।"

"तुम अपनी ज़बान से कह दो के तुम मोहम्मद(स०) के जासूस हो"-अबु सुफयान ने इन दोनों से कहा-"और जाओ- मैं तुम्हारी जान बख्शी करता हूं।"

दोनों में से एक ने ऐतराफ़ कर लिया।

"जाओ"-अबु सुफयान ने कहा-"हम ने तुम्हें माफ किया।"

दोनों जो वाक़ई मुसलमानों के भेजे हुए जासूस थे और क़ुरैश के अज़ायम मालूम करने आए थे, हंसी खुशी अपने ऊंटों की तरफ चल पड़े। अबु सुफयान के इशारे पर कई एक तीरअंदाज़ों ने कमानों में तीर डाले और पीछे से इन दोनों मुसलमानों पर चला दिये। दोनों कई कई तीर अपने जिस्मों में ले कर गिरे। फिर उठ न सके।

"क्या तुम इसका मतलब समझते हो?"-अबु सुफयान ने अपने क़रीब खड़े सरदारों से कहा-"जासूस भेजने का मतलब ये है के मुसलमान हारे नही, वो अभी या कुछ ही अरसे बाद हम पर हमला करने का इरादा रखते हैं। फौरन मक्का को कूच करो और अगली जंग की तैयारी करें।"

अगले रोज़े रसूले अकरम(स०) को किसी ने आकर बताया के अहल-ए-कुरैश ने जाहां पड़ाव किया था वहां अपने दोनो जासूसों की लाशें पड़ी हुई हैं और अहल-ए-कुरैश मक्का को रवाना हो गए।

ख़ालिद ने ये पहली बड़ी जंग लड़ी थी लेकिन वो समझता था के वो मुसलमानों को शिकस्त नहीं दे सका। आज चार बरस बाद ये इस सोच में ग़र्क़ था के मुसलमानों की ये ताक़त आम इन्सानों की ताक़त नहीं। कोई राज़ है जिसे वो अभी तक नहीं पा सका। उसे अहल-ए-क़ुरैश की कुछ खामियां याद आने लगीं। कुछ बातें और कुछ आमाल उसे अच्छे नहीं लग रहे थे। उसे यहूदियों की दो बड़ी खूबसूरत औरतें भी याद आने लगीं जो अहल-ए-कुरैश के सरदारों में घुल मिल गई थीं। वो जानता था के यहूदी अपने निसवानी हुस्न के जादू से अहल-ए-कुरैश पर छा जाने की और इन्हें मुसलमानों के खिलाफ इस्तेमाल करने की कोशिश कर रहे हैं ये तरीक़ा उसे पसंद नहीं था लेकिन इनमें से एक औरत एक रोज़ ख़ालिद से मिली तो ख़ालिद ने महसूस किया के ये औरत जो कुछ कह रही है उसमें अक़्ल व दानिश है। इस औरत के हुस्न व जवानी का अपना एक असर था लेकिन तिलिस्म जो उसकी ज़बान में था, उसका असर ख़ालिद ने महसूस किया था- कुछ देर तक ये औरत ख़ालिद के ख्वाबों पर छाई रही। उसका घोड़ा हिनहिनाया तो ख़ालिद जैसे ख्वाब बेदारी से बेदार हो गया। वो तेज़ी से उठा। घोड़े पर सवार हुआ और फिर मदीने के रास्ते पर हो लिया।

वलीद का बेटा ख़ालिद शहज़ादा था। ऐश व इश्रत का भी दिलदादा था लेकिन फ़न-ए-हर्ब व ज़र्ब का जुनून ऐसा के ऐश व इश्रत को इस जुनून पर हावी नहीं होने देता था। मदीने की तरफ जाते हुए उसे वो यहूदन याद आई जिसका नाम योहावा था। उसने इस यहूदन को ज़हन से निकाल दिया। लेकिन योहावा रंगबिरंगी तितली बन कर उसके ज़हन में उड़ती रही। ख़ालिद उसे ज़हन से निकाल न सका।

ख़ालिद के ज़हन में उड़ती हुई उस तितली के रंग फीके पड़ने लगे कि तमाम रंग मिलकर सुर्ख हो गए-खून जैसे सुर्ख- ये एक भयानक याद थी। ख़ालिद ने उसे ज़हन से उगल देने की बहुत कोशिश की लेकिन तितली जो ज़हरीली भिड़ बन गई थी उसके ज़हन से न निकली।

ये मआरका-ए-ओहद के तीन चार माह बाद का एक वाक़ेया था। ये एक साज़िश थी जिस में वो शरीक़ न था लेकिन वो क़बीला कुरैश का बड़ा ही अहम फ़र्द था। मुसलमानों के ख़िलाफ किसी साज़िश में शरीक़ न होने के बावजूद दावा नहीं कर सकता था के वो इस में शरीक़ ना था।

मआरका-ए-ओहद में ज़ख्मी होने वाले बा'ज़ अहल-ए-कुरैश के ज़ख्म अभी ठीक नही हुए थे के एक रोज़ ख़ालिद को ख़बर मिली के मदीने से छः मुसलमान तबलीग़-ए-इस्लाम के लिए रजीअ की तरफ जा रहे थे के उफ्फ़ान से थेड़ी दूर एक ग़ैर मुस्लिम क़बीले ने उन्हें रोक लिया और उनमें से दो को मक्का लाया गया है और इन्हें नीलाम किया जा रहा है।

ख़ालिद दौड़ता हुआ वहां गया। वो मुसलमान ख़बीब बिन अदी(र०) और ज़ेद बिन दिसना(र०) थे। ख़ालिद दोनो को जानता पहचानता था। वो उसी क़बीले के अफ़राद हुआ करते थे। उन्होंने इस्लाम कुबूल कर लिया था। उनमें हुब्ब-ए-रसूल का ये आलम था के रसूले खुदा पर जानें कुरबान करने को तैयार रहते थे। रसूले खुदा(स०) इन्हें बहुत अज़ीज़ रखते थे। ख़ालिद ने देखा के चार अफ़राद इनके पास खड़े थे। दोनों के हाथ रस्सियों से बन्धे हुए थे।

"ये दोनो मुसलमान है" -एक आदमी चबूतरे पर खड़ा ऐलान कर रहा था- "ये दोनो ओहद में तुम्हारे खिलाफ़ लड़े थे। इनके हाथों तुम्हारे अजीज़ और खून के रिश्तेदार मारे गए थे। है कोई जो इन्तेकाम की आग बुझाना चाहता है?....इन्हें खरीदो, इन्हें अपने हाथों कत्ल करो और खून के बदले खून बहाओ.....ये आदमी सब से ऊंची बोली देने वाले को मिलेंगे.....बोलो।"

"दो घोड़े" -एक आवाज़ आई।

"बोलो....बढ़ कर बोलो।"

"दो घोड़े एक ऊंट" -एक और आवाज़ आई।

"घोड़ो ऊंटों को छोड़ो। सोने में बोली दो....सोना लाओ....दुश्मन के खून से इन्तेकाम की पियास बुझाओ।"

वो लोग जिन के करीबी रिश्तेदार ओहद की लड़ाई में मारे गए थे, बढ़ बढ़ कर बोली दे रहे थे। ख़बीब(र०) और ज़ेद(र०) चुप चाप खड़े थे। उनके चेहरों पर खौफ़ न था। घबराहट नहीं थी, हल्की सी बेचैनी भी नहीं थी। ख़ालिद हुजूम को चीरता हुआ आगे चला गया।

"ओ कुरैश के सरदार के जंजू बेटे!" -ख़बीब(र०) ने ख़ालिद को देख कर बड़ी बुलन्द आवाज़ से कहा- "तेरा कबीला हम दानो का खून बहा कर उस मुक़द्दस आवाज़ को खामोश नहीं कर सकता जो ग़ार-ए-हिरा से उठी है। ला अपने कबीले का कोई नामूर लड़ाका और मेरे हाथ खुलवा दे, फिर देख कौन किस के खून की पियास बुझाता है।"

"मैदान-ए-जंग में पीठ दिखाने वालो!" -ज़ेद(र०) ने गरजदार आवाज़ में कहा- "तुम ने शिकस्त का इन्तेकाम हमारे भाईयों की लाशों से लिया है। तुम्हारी औरतों ने ओहद के मैदान में हमारी लाशों के कान और नाकें काट कर इनके हार अपने गलों में लटकाए हैं"

आज -चार बरस बाद- मदीने की तरफ जाते हुए ख़ालिद को ख़बीब(र०) और ज़ेद की लल्कार और ताने साफ सुनाई दे रहे थे। वो ज़ेद(र०) के ताने बर्दाशत नहीं कर सका था। आज चार बरस बाद, उसे ये ताना याद आया तो भी उसके जिस्म ने झुरझुरी ली। उसे ओहद के मैदान का वो मंज़र याद आ गया जब अबु सुफयान की बीवी हुन्द ने हमज़ा(र०) का कलेजा निकाल कर अपने मुंह में डाल लिया और चबा कर उगल दिया। इसी औरत ने अपने साथ की औरतों से कहा था के वो मुसलमानों के कान और नाकें काट लायें। उन औरतों ने उसके आगे कानों और नाकों के ढेर लगा दिए थे हुन्द ने इन कानों और नाकों का हार बनाया और अपने गले में डाल लिया था

और वो पागलों की तरह मैदान में एक गीत गाती और नाचती फिरी थी इस मंज़र को उसके शौहर अबु सुफ़यान ने पसंद नही किया था। खालिद ने तो नफ़रत से मुंह फेर लिया था।

❁

तीन चार माह बाद वो मुसलमान ज़िनके हाथ रस्सियों से बन्धे हुए थे उसे ताने दे रहे थे। वो ओछे तरीक़े से इन्तेक़ाम लेने वाला आदमी नहीं था। वो वहां से खिसक आया और अहल-ए-कुरैश के हुजूम में गुम हो गया। उसे उस क़बीले का एक आदमी मिल गया जो इन दो मुसलमानों को पकड़ लाया था। (किसी तारीख़ में इस क़बीले का नाम नहीं मिलता। मोअररि़खों ने बिन हशाम के हवाले से इसे एक जंगजू क़बीला लिखा है जो कुरैश का इत्तेहादी था)

ख़ालिद ने इस जंगजू क़बीले के इस आदमी से पूछा के इन मुसलमानों को किस तरह पकड़ा गया है।

"खुदा की क़सम!"-इस आदमी ने कहा- "कहो तो हम मुसलमानों के रसूल(स०) को पकड़ लायें और नीलामी के चबूतरे पर खड़ा कर दें।"

तुम जो काम नहीं कर सकते उसकी क़सम न खाओ"-ख़ालिद ने कहा- इन दो को कहां से पकड़ा गया है।"

"ये छ: थे"- इस शख्स ने जवाब दिया-"हमने ओहद में मारे जाने वालों का इन्तेक़ाम लिया है। आईंदा ऐसे ही इन्तेक़ाम लेते रहेंगे। हमारे क़बीले के कुछ आदमी मदीना मोहम्मद(स०) के पास गए और कहा के वो इस्लाम कुबूल करने आए हैं। उन्होंने ये भी कहा के इनका पूरा क़बीला इस्लाम कुबूल करने का इरादा कर चुका है। लेकिन पूरा क़बीला मदीना नहीं आ सकता। हमारे इन आदमियों ने मोहम्मद(स०) से कहा के इनके साथ चन्द एक मुसलमानों को उनके क़बीले में भेजा जाए। जो पूरे क़बीले को मुसलमान करें और फिर क़बीले को मज़हबी तालीम देने के लिए कुछ अर्से वहीं रहें।......

"हमारे ये आदमी जब वापस आए तो उनके साथ छ: मुसलमान थे। इधर हमारे सरदार शारजा बिन मुग़ीस ने एक सौ आदमियों को रजीअ के मुक़ाम पर भेज दिया। जब ये छ: मुसलमान रजीअ पहुंचे तो हमारे एक सौ आदमियों ने इन्हे घेर लिया..... तुम सुनकर हैरान होगे के ये छ: मुसलमान तलवारें निकाल कर एक सौ आदमियों के मुक़ाबले पर आ गए। हमने तीन को मार डाला और तीन को पकड़ लिया इनके हाथ रस्सियों से बांध दिये। शारजा बिन मुग़ीस ने हुक्म दिया था वो मदीने से कुछ मुसलमान तुम्हारे धोके में आकर तुम्हारे साथ आ गए तो उनमें से दो तीन को

मक्का ले जाना और इन्तेक़ाम लेने वालों के हाथ फ़रोख़्त कर देना....

"हम तीन को इधर ला रहे थे। रास्ते में इनमें से एक ने रस्सियों में हाथ निकाल लिये मगर वो भागा नही। वो इतना फुर्तीला था उस ने हमारे एक आदमी की नियाम से तलवार निकाल ली क्योंके हमने उसे निहत्था रखा था उसने बड़ी तेज़ी से हमारे दो आदमियों को मार डाला। अकेला आदमी इतने सारे आदमियों का मुक़ाबला कब तक करता। वो मारा गया और हमने उसके जिस्म का क़ीमा कर दिया। ये दो रह गए। हमने इन के हाथ और ज़्यादा मज़बूती से बांध दिये और यहां ले आए।"

"और तुम खुश हो"-ख़ालिद ने उसे तंज़िया कहा- मोहम्मद(स०) क्या कहेगा?....अहल-ए-कुरैश और इनके दोस्त क़बीले इतने बुज़दिल हो गए हैं के अब धोके देने और छः आदमियों को एक सौ से मरवाने पर उतर आए है। क्या तुमने मुझे ये बात सुनाते शर्म महसूस नहीं की? क्या इन एक सौ आदमियों ने अपनी माओं को शर्मसार नहीं किया जिनका उन्होंने दूध पिया है?"

तुम ने मैदान-ए-जंग में मुसलमानों का क्या बिगाड़ लिया था वलीद के बेटे?"-इस आदमी ने कहा-"क्या तुम मोहम्मद(स०) की ताक़त का मुक़ाबला कर सकते हो? बदर में एक हज़ार कुरैश तीन सौ तैरह से मार खा आए थे। ओहद की लड़ाई में मोहम्मद(स०) के पैरूकार कितनी तादाद में थे?..सात सौ से कम होंगे ज़्यादा नहीं थे। कुरैश कितने थे?....हज़ारों.....सुन ख़ालिद बिन वलीद। मोहम्मद(स०) के हाथ में जादू है। जहां जादू चलता है वहां तलवार नहीं चल सकती।"

"फिर तुम्हारी तलवार किस तरह चली है?"- ख़ालिद ने पूछा- "अगर मोहम्मद(स०) के हाथ में जादू है तो वो तुम्हारे सरदार शारजा बिन मुग़ीस के धोके में किस तरह आ गया उसके चार आदमियों को किस तरह मार डाला? इन दोनों को मोहम्मद(स०) का जादू आज़ाद क्यों नही करा लेता?....तुम जिस चीज़ का मुक़ाबला करने की जुर्रत नहीं रखते उसे जादू कह देते हो।"

"हमने जादू को जादू से काटा है-" शारजा बिन मुग़ीस के क़बीले के इस आदमी ने कहा- "हमारे पास यहूदी जादूगर आए थे। इनके साथ तीन जादू गरनियां थी। इनमें से एक का नाम योहावा है। हमने अपनी आंखों से देखा है के एक घनी झाड़ी में से एक बरछी ज़मीन पर सरकती बाहर आई। ये बरछी झाड़ी में वापस चली गई और सांप बन कर वापस आई। ये सांप वापस झाड़ी में चला गया।

❁

मदीना की तरफ जाते उसे ये वाक़ेया याद आ रहा था। वो उसे याद नही करना चाहता था लेकिन ज़हरीली भिड़ों की तरह ये याद उसके ऊपर भिनभिनाती रही। उसे

योहावा याद आई। वो जादू गरनी थी या नहीं, उसके हुस्न में, जिस्म की साख्त मुसकुराहट और बोलने के अन्दाज़ में जादू था। उसने शारजा बिन मुग़ीस के इस आदमी के मुंह से योहावा का नाम सुना तो वो चौंका। मआरका-ए-ओहद के बाद जब अहल-ए-कुरैश की फौज मक्का वापस आई थी तो मक्का के यहूदी ऐसे अन्दाज़ से अबु सुफयान, ख़ालिद और अकरमा के पास आए थे जैसे ओहद में यहूददियों को शिकस्त हुई हो। यहूदियों के सरदारों ने अबु सफयान से कहा था के मुसलमानों को शिकस्त नहीं हुई और लड़ाई हार जीत के बग़ैर खत्म हो गई है तो ये कुरैश की शिकस्त है। ये यहूदियों की नाकामी है....यहूदियों ने अहल-ए- कुरैश के साथ इस तरह हमदर्दी का इज़हार किया था जैसे वो अहल-ए-कुरैश की नाकामी पर ग़म से मरे जा रहे हों।

इन्ही दिनों ख़ालिद ने पहली बार योहावा को देखा था। वो अपने घोड़े की टहलाई के लिए आबादी से बाहर निकल गया था। जब वो वापस आ रहा था तो रास्ते में उसे योहावा मिल गई। योहावा की मुसकुराहट ने उसे रोक लिया।

"मैं तस्लीम नहीं कर सकती के वलीद का बेटा जंग से नाकाम लौट आया है- योहावा ने कहा और ख़ालिद के घोड़े की गरदन पर हाथ फेरने लगी और बोली- मुझे इस घोड़े से प्यार है जो मुसलमानों से लड़ने गया था।"

ख़ालिद यूं घोड़े से उतर आया जैसे योहावा के जादू ने उसे घोड़े से ज़मीन पर खड़ा कर दिया हो।

"इससे बड़ी नाकामी और क्या होगी के तुम मुसलमानों को शिकस्त नहीं दे सकते-योहावा ने कहा-तुम्हारी शिकस्त हमारी शिकस्त है। अब हम तुम्हारा साथ देंगे लेकिन तुम्हारे साथ होते हुए भी तुम हमें अपने साथ नहीं देख सकोगे।"

ख़लिद ने यूं महसूस किया जैसे उसकी ज़बान बन्द हो गई हो। तलवारों, बरछियों और तीरों की बोछाड़ों का मुक़ाबला करने वाला ख़ालिद योहावा की मुसकुराहट का मुक़ाबला न कर सका।

"अगर यहूदी हमारे साथ नहीं होंगे तो हमारे किस काम आ सकेंगे ?-ख़ालिद ने पूछा।

"क्या तुम समझते हो के सिर्फ तीर ही इन्सान के जिस्म से पार हो जाता है?-योहावा ने कहा-"औरत का तबस्सुम तुम जैसे दिलैर और जरी मर्दों के हाथों से तलवार गिरा सकता है।"

ख़ालिद उस से कुछ पूछना चाहता था लेकिन कुछ पूछ न सका। योहावा ने उसकी आंखों में आंखें डालीं और फूलों की पंखड़ी जैसे होंटों पर तबस्सुम आ गया।

योहावा आगे चल पड़ी। ख़ालिद उसे देखता रहा। उसने अपने वजूद के अन्दर लतीफ से झटके महसूस किये। इसके घोड़े ने खुर मारा तो ख़ालिद अपने आप में आ गया। वो बड़ी तेज़ी से घोड़े पर सवार हुआ और चल पड़। कुछ दूर आकर उसने पीछे देखा। योहावा रूक कर उसे देख रही थी। योहावा ने अपना हाथ ज़रा ऊपर कर के हिलाया।

❁

अब जब के दो मुसलामनों को नीलाम किया जा रहा था और ख़ालिद को एक आदमी ने बताया था के इन मुसलमानों को किस तरह धोके में लाया गया है और उस आदमी ने योहावा का भी नाम लिया तो उसने इरादा कर लिया के मालूम करेगा के योहावा ने ये जादू किस तरह चलाया था। उसे अपने क़बीले का एक सरकरदा आदमी मिल गया। उस से उसे पता चला के ये मुसलमान अहल-ए-कुरैश के हाथ किस तरह आए हैं तीन चार सरकरदा यहूदी योहावा और दो तीन और यहूददियों को साथ ले कर शारजा बिन मुग़ीस के पास चले गए। ये क़बीला था तो जंजू लेकिन उस पर मुसलमानों का रौब कुछ इस तरह तारी हो गया था जैसे लोग जादूगरो से डरते थे। इस क़बीले में ये मशहूर हो गया था के रसूले अकरम(स०) के हाथ में कोई जादू है। यहूदियों ने अपनी ज़मीन दोज़ कार्रवाईयों के लिए इस क़बीले को इस लिए मुंतख़िब किया था के वो जंजू क़बीला थां।

यहूदी बड़ी दानिश मंद क़ौम थी। उन्होंने सोचा के मुसलमानों के जादू का वहम अगर फैल गया तो दूसरे क़बीले भी इस से मुतास्सिर होंगे। ये यहूदी इस क़बीले के सरदार शारजा बिन मुग़ीस के पास गए और उस का ये वहम दूर करने के लिए के मुसलमान जादूगर हैं। उसे बहुत कुछ कहा लेकिन शारजा बिन मुग़ीस ने तस्लीम किया। रात को यहूदियों के कहने पर शारजा ने इन मेहमानों की ज़ियाफ़त का इन्तेज़ाम बाहर खुले आसमान तले किया। इन यहूदियों ने अपने हाथों अपने मेज़बानों को शराब पिलाई। शारजा बिन मुग़ीस और इसके क़बीले के चन्द एक सरकरदा अफराद को जो शराब पिलाई गई, उसमें यहूदियों ने कोई सफूफ सा मिला दिया, फिर यहूदियों ने अपने जादू के कुछ शोब्दे दिखाए।

योहावा ने अपने हुस्न का जादू चलाया। इसका ज़रिया एक रक्स भी था जिसमें ये यहूदनें नीम बरहना थी। नाचते नाचते उनके जिस्मों पर जो अधूरे से लिबास थे वों सरक कर ज़मीन पर जा पड़े थे। यहूदी अपने साज़िंदे साथ ले गए थे।

अगले रोज़ जब शारजा बिन मुग़ीस की आंख खुली तो उसे महसूस हुआ जैसे वो बड़े ही हसीन ख्वाब से जागा हो। उसके ख्यालात बदले हुए थे। कुछ देर बाद वो

फिर अपने क़बीले के दूसरे सरदारों के साथ यहूदियों के पास बैठा था। यहूदन भी वहां मौजूद थी। योहावा को देख कर वो बे काबू हो गया। उसने लपक कर योहावा का बाज़ू पकड़ा और उसे खींच कर अपने पास बैठा लिया।

"ज़रूरी नहीं के दुश्मन को मैदान जंग में लल्कार कर उसे शिकस्त दी जाए"-एक यहूदी ने कहा-"हम मुसलमान को दूसरे तरीक़ों से भी खत्म कर सकते है। उसका एक तरीक़ा हम तुम्हें बताते है।"

ख़ालिद को बताया गया के इन छः मुसलमानों को मदीना से धोके से लाने का ये तरीक़ा यहूदियों ने बताया था और शारजा विन मुग़ीस ने जो आदमी रसूले करीम(स०) के पास भेजे थे उन में एक यहूदी भी था। ख़ालिद मुसलमानों को अपना बदतरीन दुश्मन समझता था लेकिन उसे ये ग़ैर जंगी तरीक़े अच्छे नहीं लगते थे।

ख़ालिद अपने घर गया और अपनी एक ख़ादिमा से कहा के वो योहावा यहूदन को बुला लाए। योहावा इतनी जल्दी उसके पास आई जैसे वो उसके बुलावे के इन्तेज़ार में क़रीब ही कहीं बैठी थी।

"तुम ने मुसलमानों को कामयाबी से धोका दिया है"-ख़ालिद ने योहावा से कहा-"और मुग़ीस के क़बीले के लोग तुम्हें जादूगरनी कहने लगे है लेकिन मुझे ये तरीक़ा पसंद नही आया।"

"मेरी बात ग़ौर से सुनो ख़ालिद!"-योहावा उसके क़रीब जा बैठी और उसकी रान पर हाथ रख कर बोली-"तुम अपने क़बीले के नामूर जंगजू हो लेकिन तुम में अक़ल की कमी है। दुश्मन को मारना है। तलवार से मारो, तीर से मारो या उसे तीखी नज़रों से हलाक कर दो। तीर और तलवार चलाए बग़ैर दुश्मन को कोई मुझ जैसी औरत ही मार सकती है।"

ख़ालिद योहावा के जिस्म की तपिश महसूस कर रहा था। योहावा उस के इतनी क़रीब बैठी हुई थी के एक बार योहावा ने चहरा ख़ालिद की तरफ मोड़ा तो उसके रूई जैसे मुलायम गाल ख़ालिद के गाल से जा लगे। ख़ालिद ने अपने जिस्म में बड़ी पुर लुत्फ हरारत की लहर दौड़ती महसूस की लेकिन किसी ख्याल से वो ज़रा परे सरक गया।

आज चार बरस बाद वो जब सहरा में तन्हा जा रहा था, वो अपने गाल पर योहावा के रूख़सार का लम्स महसूस कर रहा था। उस हद तक तो वो खुश था के यहूदी उनके साथ थे लेकिन उसे ये भी मालूम था के यहूदियों की दोस्ती में जहां मुसलमानों की दुश्मनी है वहां उनके अपने मफादात भी हैं अलबत्ता उसने ये तस्लीम कर लिया था के योहावा अगर जादूगरनी नहीं तो उसके सरापा में जादू का कोई असर

ज़रूर है।

❁

ख़ालिद का घोड़ा मदीना की तरफ चला जा रहा था। उसके ज़हन में फिर खबीब(र०) बिन अदी और ज़ेद(र०) बिन दिसना आ गए। लोग इन की बोलियां बढ़ चढ़ कर दे रहे थे आख़िर सौदा हो गया और कुरैश के दो आदमियों ने इन्हें बहुत से सोने के इवज़ ख़रीद लिया। ये दोनो आदमी इन दोनों सहाबियों को अबु सुफयान के पास ले गए।

"हम ने अपने अक़ीदे से हट कर मोहम्मद(स०) के पास चले जाने वाले इन दो आदमियों को इस लिए ख़रीदा है के उन अहल-ए-कुरैश के खून का इन्तेक़ाम लें जो ओहद के मैदान में मारे गए थे" -इन्हें ख़रीदने वालों ने कहा-"हम इन्हें आप के हवाले करते हैं। आप कुरैश के सरदार और सालार हैं।"

"हां!"-अबु सुफयान ने कहा-"मक्का की ज़मीन मुसलमानों के खून की प्यासी है। इन दो मुसलमानों का खून अपनी ज़मीन को पिला दो.....लेकिन मुझे याद आ गया है के ये महीना जो गुज़र रहा है हमारे देवताओं उज़ा और हुब्ल का मुक़द्दस महीना है। ये महीना ख़त्म हो लेने दो। अगले दिन इन्हें खुले मैदान में ले जा कर लकड़ी के खम्बों के साथ बांध देना और मुझे बुला लेना।"

ख़ालिद ने जब अबु सुफयान का ये हुक्म सुना तो वो उसके पास गया।

"मुझे आप का ये फैसला अच्छा नहीं लगा"-ख़ालिद ने अबु सुफयान से कहा-"हम दुगनी और तिगनी तादाद में होते हुए अपनी ज़मीन को मुसलमानों का खून नहीं पिला सकते तो हमें हक़ हासिल नहीं के दो मुसलमानों को धोके से यहां लाकर इनका खून बहाया जाए...अबु सुफयान! क्या आप जानते हैं के मुसलमानों को धोका देने वाली तीन चार औरतें थीं? क्या आप अपने दुश्मन से ये कहलवाना चाहते हैं के अहल-ए-कुरैश अब औरतों की आड़ में बैठ गए हैं?"

"ख़ालिद!"-अबु सुफयान ने बारौब लहजे में कहा-"खबीब(र०) और ज़ेद(र०) को मैं भी इतना ही अपने क़रीब समझा करता था जितना तुम इन्हें अपने क़रीब समझते थे। तुम अब भी इन्हे अपने क़रीब समझ रहे हो और ये भूल रहे हो के अब ये हमारे दुश्मन है। अगर तुम इन्हें आज़ाद कराना चाहते हो तो लाओ। उससे दुगना सोना ले आओ और इन दोनों के ले जाओ।"

"नहीं"-पर्दे के पीछे से एक गरजदार निसवानी आवाज़ आई। ये अबु सुफयान की बीवी हुन्द की आवाज़ थी। उसने गुस्से से लरज़ती हुई आवाज़ में कहा-"हमज़ा(र०) का कलेजा चबा कर भी मेरे सीने में इन्तेक़ाम की आग सर्द नही

हुई। अगर सारी दुनिया का सोना मेरे आगे ला रखोगे तो भी मैं इन दो मुसलमानों को आज़ाद नहीं करूंगी।"

"अबु सुफयान!"-ख़ालिद ने कहा-"अगर मेरी बीवी मेरी बात के दरमियान यूं बोलती तो मैं उसकी ज़बान खींच लेता।"

"तुम अपनी बीवी की ज़बान खींच सकते हो?"-हुन्द की आवाज़ आई-"तुम्हारा बाप नहीं मारा गया। तुम्हारा कोई बेटा नहीं मारा गया और तुम्हारा चचा भी नहीं मारा गया था। एक भाई कैद हुआ था और तुम मुसलमानों के पास जाकर मुंह मांगा फिदया दे कर अपने भाई को छुड़ा लाए थे। आग जो मेरे सीने में जल रही है तुम इसकी तपिश से नाआशना हो।"

ख़ालिद ने अबु सुफयान की तरफ देखा। अबु सुफयान के चहरे पर जहां मरदाना जाहो जलाल और एक जंजू सरदार का तआस्सुर था वहां एक ख़ाविंद की बेबसी की झलक भी थी।

"हां ख़ालिद!"-अबु सुफयान ने कहा- "जिस के दिल पर चौट पड़ती है उसके ख्यालात तुम से बहुत मुख्तलिफ होते हैं किसी को अपना दुश्मन कहना कुछ और बात है लेकिन अपने दुश्मन को अपने किसी अज़ीज़ का खून बख़्श देना बड़ी ही नामुमकिन बात है। तुम किस किस को कायल करोगे और इन दो मुसलमानों की जां बख्शी कर दें। तुम जाओ ख़ालिद! इन दो मुसलमानों को अपने क़बीले के रहम व करम पर छोड़ दो।"

ख़ालिद खामोशी से वापस चला गया।

❁

फिर ख़ालिद को वो भयानक मंज़र याद आया जब बाहर मैदान में लकड़ी के दो खेमों के साथ ख़बीब(र०) और ज़ेद(र०) बन्धे खड़े थे। तमाशाइयों का चीख़ता चिल्लाता हुजूम इक्ळा हो गया था। उधर से अबु सुफयान और हुन्द घोड़ों पर सवार हुजूम में दाखिल हुए। हुजूम के नारे और इन्तेक़ामी ताने पहले से ज़्यादा बुलन्द हो गए। अगर इस हुजूम में कोई ख़ामोश था तो सिर्फ ख़ालिद था।

अबु सुफयान घोड़े पर सवार दोनो कैदियों के करीब गया। दोनों ने उसे कहा के वो ज़िन्दगी की आखिरी नमाज़ पढ़ना चाहते हैं अबु सुफयान ने उन्हें इजाज़त दे दी।

ख़ालिद अब मदीने की तरफ जा रहा था। उसे जब वो मंज़र याद आया के दोनो कैदियों के हाथ खोल दिए गए और वो क़िबला रू हो कर नमाज़ पढ़ने लगे। ख़ालिद पर उस वक़्त जो असर हुआ था वो अब चार बरस बाद उसकी ज़ात से उभर आया। घोड़े की पीठ पर बैठे बैठे ख़ालिद का सर झुक गया।

ख़बीब बिन अेदी और ज़ेद बिन दिसना(र०) हुजूम की चीख़ व पुकार से ला ताल्लुक़, अपनी मौत से बे परवा ख़ुदा के हुज़ुर रूकू व सुजूद में महव थे। उन्होंने ने निहायत इत्मेनान से नमाज़ पढ़ी। दुआ के लिए हाथ उठाए। कोई नही बता सकता, तारीख़ भी ख़ामोश है के उन्हों ने खुदा से क्या दुआ मांगी। उन्होंने खुदा से ये नही कहा होगा के दुश्मन उन्हें अज़ाद कर दे।

वो उठे और खुद ही लकड़ी के खंबों के साथ पीठ लगा कर खड़े हो गए।

"ओ बद क़िस्मत इन्सानो!"–अबु सुफयान ने बड़ी बुलन्द आवाज़ से ख़बीब और ज़ेद(र०) से कहा–"तुम्हारी क़िस्मत और तुम्हारी ज़िन्दगी मेरे हाथ में है। अपनी ज़बानों से कह दो के हम इस्लाम को तर्क करते हैं और अब हम अहले कुरैश में से हैं और 360 बुतों को बरहक़ मानते हैं....ये ऐलान करो और अपनी ज़िन्दीगियां मुझ से वापस लो। अगर नहीं तो मौत को गले लगाओ। ये भी सोच लो के तुम्हारी मौत सहल नही होगी।"

"ऐ बातिल के पुजारी अबु सुफयान!"–ज़ेद(र०) की आवाज़ गरजी–"हम लानत भेजते हैं पत्थर के उन बुतों पर जो अपने ऊपर बैठी हुई मक्खी को भी नही उड़ा सकते। हम लानत भेजते हैं उज़्ज़ा और हुब्ल पर जो तुम्हें अगले जहान दोज़ख़ की आग में फैंकेंगे। हम पुजारी हैं उस एक अल्लाह के जो रहमान और रहीम है और हम आशिक हैं मोहम्मद(स०) के जो अल्लाह के रसूल हैं।"

"मेरा रास्ता वही है जो ज़ेद(र०) ने तुम्हें दिखा दिया है"–ख़बीब ने बुलन्द आवाज़ से कहा– "ऐ अहल-ए-मक्का! सच्चा वही है जिस के नाम पर हम कुरबान हो रहे हैं। हमें नई ज़िन्दगी मिलेगी जो इस ज़िन्दगी से बहुत ज़्यादा हसीन और मुक़द्दस होगी।"

"वान्ध दो इन्हें इन खम्बों के साथ"– अबु सुफयान ने हुक्म दिया–"ये मौत का ज़ायक़ा चखने के मुश्ताक़ हैं।"

दानों के हाथ पीछे कर के खेमों के साथ जकड़ दिये गए। अबु सुफयान ने घोड़ा मोड़ा हुजूम की तरफ आया।

"उज़्ज़ा और हुब्ल की क़सम"!– अबु सुफयान ने बुलन्द आवाज़ में हुजूम से कहा– "मैं ने अपने क़बीले में कोई एक भी ऐसा नही देखा जो अपने सरदार पर इस मोहब्बत और ईसार से जान कुरबान करने के लिए तैयार हो जिस तरह मोहम्मद(स०) के पैरूकार उसके नाम पर फ़िदा होते हैं"।

हुन्द अपने घोड़े पर सवार कुछ दूर खड़ी थी। उसके क़रीब उसके चन्द एक गुलाम खड़े थे। एक गुलाम ने अपने आक़ाओ को खुश करने के लिए जोश का ये

मुज़ाहेरा किया के बरछी तान कर दोनो कैदियों की तरफ किसी के हुक्म के बग़ैर बड़ी तेज़ दौड़ा और खंबे से बन्धे ज़ेद(र०) के सीने पर बरछी का इतना ज़ोर दार वार किया के बरछी की अन्नी ज़ेद(र०) की पीठ से बाहर निकल गई। ज़ेद बिन दिसना(र०) फौरन शहीद हो गए।

इस गुलाम ने सीना तान कर हुजूम की तरफ खि़राज-ए-तहसीन की तवक्को पर देखा लेकिन हुजूम कुछ और ही कि़स्म का शौर बुलन्द करने लगा था। तमाशाई कहते थे के ये कोई तमाशा नहीं हुआ। ये मुसलमान इतनी सहल मौत के का़बिल नही, हमें कोई तमाशा दिखाओ।

"क़त्ल कर दो इस गुलाम को जिस ने एक मुसलमान पर इतना रहम किया है के इसे इतनी जल्दी मार डाला है" –हुन्द ने दबंग आवाज़ में कहा।

कई आदमी तलवारें और बरछियां लहराते इस गुलाम की तरफ दौड़े लेकिन बहुत से आदमी दौड़ कर इन आदमियों और गुलाम के दरमियान आ गए।

"खबरदार पीछे खड़े रहो" –एक आदमी ने जो घोड़े पर सवार था लल्कार कर कहा– "अरबी खून इतना बुज़दिल नहीं के दो आदमियों को बान्ध कर मारने के लिए कुरैश का पूरा क़बीला इक्ठा हो गया है। खुदा की क़सम अबु सुफयान की जगह मैं होता तो इन दानों आदमियों को आज़ाद कर देता। ये हमारा खून है और ये हमारे मेहमान हैं हम इन से मैदान जंग में लड़ेंगे।"

"ये ठीक कहता है" –हुजूम में से कई आवाज़ें सुनाई दी– "दुश्मन को बान्ध कर मारना अरब की रिवायत के खि़लाफ़ है।"

तमाशाइयों के हुजूम में से बे शुमार आवाज़ें ऐसी सुनाई दे रहीं थीं जो कहती थीं के हम तमाशा देखेंगे। हम दुश्मन को इस तरह मारेंगे के वो मर मर के जिऐ।

थेड़ी देर बाद तमाशईयों का हुजूम दो हिस्सों में बट गया। एक गिरोह ख़बीब(र०) के क़त्ल के खि़लाफ़ था। इसे वो अरब की रिवायती बहादुरी के मनाफी समझता था और दूसरा गिरोह ख़बीब(र०) को तड़पा तड़पा कर मारने के नारे लगा रहा था। खा़लिद ने जब अहल-ए-मक्का को और दूर दूर से आते हुए तमाशईयों को इस तरह एक दूसरे के खि़लाफ़ नारे लगाते देखा तो वो दौड़ता हुआ अबु सुफयान तक गया।

"देख लिया अबु सुफयान!" –खा़लिद ने कहा– "देख लें यहां मेरे कितने हामी हैं। एक मार दिया है, दूसरे को छोड़ दो, वरना अहल-ए-कुरैश आपस में टकरा जाएंगे।"

हुन्द ने खा़लिद को अबु सुफयान के पास खड़े देखा तो वो समझ गई के

ख़ालिद भी ख़बीब (र०) की रिहाई का हामी है। हुन्द ने घोड़े को ऐड़ लगाई और इन दोनो के पास जा पहुंची।

"ख़ालिद!"–हुन्द ने सख़्त बिफरी हुई आवाज़ में कहा–"मैं जानती हूं तुम क्या चाहते हो। क्या तुम अबु सुफयान को अपना सरदार नही मानते? अगर नही तो यहां से चले जाओ। मैं ने जो सोचा है वो हो कर रहेगा।"

"ख़ालिद!"–अबु सुफयान ने कहा–"अगर तुम समझते हो के मेरा हुक्म और मेरे इरादे सही नहीं तो भी मुझे इन पर अम्ल करने दो। अगर मैं ने अपना हुक्म वापस ले लिया तो ये मेरी कमज़ोरी होगी। फिर लोग मेरे हर हुक्म पर ये तवक्क़ो रखेंगे के मैं अपना हुक्म वापस ले लूं।"

ख़ालिद को आज मदीना के रास्ते में याद आ रहा था और उसे अफ़सोस हो रहा था के उसने अबु सुफयान का हुक्म मान लिया था। ख़ालिद की खूबियों में सब से बड़ी खूबी नज़्म व नस्क़ और अपने सरदार की अताअत थी। उसने अपने सीने पर पत्थर रख कर सिर्फ इस लिए अबु सुफयान का हुक्म मान लिया था के अहल–ए–कुरैश में हुक्म अदूली की रिवायत क़ायम न हो।

"ऐ अहल–ए–मक्का!"–अबु सुफयान ने दो गिरोहो में बटे हुए तमाशाईयों से बुलन्द आवाज़ मे कहा–"अगर आज यहां दो मुसलमानों के क़त्ल पर हम यूं बट गए तो हम मैदान जंग में भी किसी न किसी मसले पर फट जाऐंगे और फ़तह तुम्हारे दुश्मन की होगी। अगर अपने सरदार की अताअत से यूं इन्हेराफ़ करोगे तो तुम्हारा अंजाम बहुत बुरा होगा।"

हुजूम का शौर व ग़ोग़ा कम हो गया लेकिन ख़ालिद ने देखा के अहल–ए–मक्का के कई एक सरदार चेहरों पर नफ़रत के आसार लिये वापस घरों को जा रहे थे। इन्हें देख कर बहुत से लोग भी जो तमाशा देखने आए थे वापस चले गए। ख़ालिद वहां नहीं रूकना चाहता था लेकिन वो ख़तरा महसूस कर रहा था के दोनो गिरोह आपस में टकरा जाऐंगे। उसके अपने क़बीले के ज़्यादा तर लोग तमाशाईयों में मौजूद थे। वो कम अज़ कम अपने क़बीले को अपने क़ाबू में रख सकता था।

❁

हुन्द ने तमाशे का पूरा इन्तेज़ाम कर रखा था। उसके इशारे पर चालिस कमसिन लड़के जिन के हाथों में बरछियां थीं दौड़े और चीख़ते चिल्लाते हुए तमाशाईयों में से निकले और ख़बीब(र०) के इर्द गिरर्द नाचने और चीख़ने चिल्लाने लगे। दो चार लड़के बरछियां ताने हुए ख़बीब(र०) तक जाते और बरछियां तोल कर

ख़बीब(र०) पर वार करते लेकिन ख़बीब(र०) को गज़ंद पहुंचाए बग़ैर हाथ रोक लेते। ख़बीव(र०) बिदकते और नारे लगाते-"मेरा खुदा सच्चा है और मोहम्मद(स०) खुदा के रसूल है।"

चन्द और लड़के इसी तरह बरछियां तान कर उन पर हल्ला बोलते जैसे ख़बीब(र०) के जिस्म को छलनी कर देंगे लेकिन वार कर के वार रोक लेते। ख़बीब(र०) के बिदकने पर तमाशाईयों का हुजूम दाद व तहसीन के नारे और कहक़हे लगाता।

लड़कों का ये खेल कुछ देर जारी रहा। इसके बाद लड़कों ने ये तरीक़ा इख्तेयार किया के बरछी का वार बड़ी ज़ोर से करते लेकिन ख़बीब(र०) के जिस्म पर इतना सा वार लगता के बरछियों की अन्नियां खाल में ज़रा सी उतर कर पीछे आजाती। बहुत देर तक यही खेल चलता रहा। तमाशाई दाद व तहसीन के नारे और ख़बीव(र०) अल्लाह अकबर और माहम्मर्दुरसूल अल्लाह के नारे बुलन्द करते रहे। ख़बीब(र०) के कपड़े खून से लाल हो चुके थे।

अबु जहल का बेटा अकरमा हाथ में बरछी लिए इन लड़कों के पास जा पहुंचा और इन्हें हिदायत जारी करने लगा। लड़के इब अपनी बरछियां ख़बीब(र०) के जिस्म में चुभो रहे थे। वो गोल दायरे में घूमते और नाचते थे। ख़बीब(र०) के जिस्म का कोई भी हिस्सा ऐसा न रहा जहां बरछी न चुभी हो और वहां से खून न टपक रहा हो। उनके(र०) चहरे पर भी बरछियां मारी गयीं जब बहुत देर गुज़र गई और लड़के नाच नाच कर और बरछियां चुभो चुभो कर थक गए तो अकरमा ने लड़कों को वहां से हटा दिया। ख़बीब(र०) खून में नहाए हुए थे और अभी जिन्दा थे। हर तरफ देख रहे थे। उनके नारों में कमी नहीं आई थी अकरमा उनके सामने खड़ा हो गया और बरछी तान कर ख़बीब के सीने में इतनी ज़ोर से मारी के फासला कम होने की वहज से बरछी ख़बीब(र०) के जिस्म से पार हो गई। ख़बीब(र०) शहीद हो गए।

इन की लाशें यहीं बन्धी रहने दो" - हुन्द की गरजदार आवाज़ सुनाई दी-"अब कई दिन इन की लाशों के गलने सड़ने का तमाशा देखते रहो।"

❁

ये वाक़ेया जूलाई 625 ई० का था जो ख़ालिद को याद आ रहा था। उसने अपने दिल में दर्द की टीस महसूस की। ख़बीव और ज़ेद(र०) के क़त्ल ने क़ुरैश के सरदारों में इख्तेलाफ़ का वीच वो दिया था। जिस तरह इन दो मुसलमानों ने आखिरी वक़्त नमाज़ पढ़ी और इस्लाम से निकल आने पर मौत को तरजीह दी थी। इस ने क़ुरैश के कई सरदारों पर गहरा असर छोड़ा था। खुद ख़ालिद ने अगर इस्लाम की नहीं तो

ख़बीब(र०) और ज़ेद(र०) की दिल ही दिल में बहुत तारीफ़ की थी। अबु सुफयान और उसकी बीवी हुन्द के खिलाफ उसके दिल में नापसंदीदगी पैदा हो गई थी।

"ये जंजुओ का शेवा नही था" -उसने अपने आप से कहा - ये जंजुओं को ज़ेब नही देता था।"

एक रोज़ वो उन सरदारों की महफिल में बैठा था जो रसूले खुदा(स०) के इन दो सहाबा-ए-इकराम(र०) के क़त्ल के ख़िलाफ थे।

"क्या तुम सब जानते हो के मारे जाने वाले यही दो नही बल्कि छः मुसलमान थे?" -ख़ालिद ने पूछा।

"हां" -एक ने जवाब दिया-"ये शारजा बिन मुग़ीस का काम था। वो इन छः मुसलमानों को धोके से फंदे में लाया था।"

और इसके पीछे मक्का के यहूदियों का दिमाग़ काम कर रहा था" -ख़ालिद ने कहा-"और इसमें योहावा यहूदन ने दो तीन और यहूदी लड़कियां साथ ले जाकर अपने और उन के हुस्न का जादू चलाया था।"

"योहावा जादूगरनी है" -एक सरदार ने कहा-"वो भाई को भाई के हाथों ज़िब्ह करा सकती है।"

"क्या ये ख़तरा नहीं के यहूदी हमें भी एक दूसरे का दुश्मन बना देंगे?" - किसी और सरदार ने कहा।

"नहीं" -एक बूढ़ा सरदार बोला-"वो मोहम्मद(स०) के इतने ही दुश्मन हैं जितने हम हैं यहूदियों का मफाद इस में है के वो हमारे और मुसलमानों के दरमियान दुश्मनी इतनी पक्की और इतनी शदीद कर दें के हम मुसलमानों का नाम व निशान मिटा दें।"

"हमें यहूदियों पर शक नहीं करना चाहिए" -एक सरदार ने कहा-"बल्कि ज़रूरत ये है के हम यहूदियों को मुसलमानों के ख़िलाफ ज़मीन के नीचे इस्तेमाल करें।"

"लेकिन ऐसें नही जैसे शारजा ने किया है" -ख़ालिद ने कहा-"और ऐसे भी नहीं जैसे अबु सुफयान और उसकी बीवी ने किया है।"

"क्या तुम सब जानते हो के योहावा मक्का के चन्द एक यहूदियों के साथ मदीना चली गई है?" -बूढ़े सरदार ने पूछा और खुद ही जवाब दिया-"वो मदीना और इर्द गिर्द के यहूदियों और दूसरे क़बायल को मुसलमानों के ख़िलाफ उभारेंगे। इस्लाम के फरोग़ से वो खुद ख़तरा महसूस कर रहे हैं अगर मोहम्मद(स०) का अक़ीदा फैलता चला गया और मैदान जंग में मोहम्मद(स०) के पैरूकारों का जज़्बा यही रहा जो हम

देख चुके हैं तो खुदाए यहूदा का सूरज गुरूब जो जाएगा।"

"लेकिन यहूदी लड़ने वाली क़ौम नहीं"–ख़ालिद ने कहा–"वो मैदान–ए–जंग में हमारा साथ नही दे सकते।"

"मुसलमानों के लिए वो मैदान–ए–जंग में ज़्यादा मोहलक साबित होंगे"–एक और सरदार ने कहा–"वो अपनी योहावा जैसी दिलकश लड़कियों के ज़रिये मुसलमान सरदारों और सालारों को मैदान–ए–जंग में उतरने के क़ाबिल नहीं छोड़ेंगे।

योहावा ख़ालिद के दिल व दिमाग़ पर ग़ालिब आती जा रही थी और चार बरस पुरानी बातें उसे सुनाई दे रहीं थीं वो मदीना की तरफ़ चला जा रहा था और ओहद की पहाड़ी ऊपर उठती आ रही थी, फिर ये पहाड़ी उस की नज़रों से ओझल होने लगी। उसका घोड़ा घाटी उतर रहा था। ये कोई एक मील लम्बा और ड़ेढ़ दो फरलांग चौड़ा नशेब था जिसमें कहीं कहीं मख़रूती टीले खड़े थे। ये रेतीली मिट्टी के थे। ख़ालिद को दौड़ते क़दमों की आहट सुनाई दी। उसने चौंक कर उधर देखा और उसका हाथ तलवार के दस्ते पर चला गया– वो चार पांच ग़ज़ाल थे जो उसके नीचे दौड़ते जा रहे थे। कुछ दूर जाकर एक ग़ज़ाल ने दूसरे ग़ज़ाल के पहलू में टक्कर मारी फिर दोनों ग़ज़ाल आमने सामने आ गए और उनके सर टकराने लगे। दूसरे ग़ज़ाल इन्हें देखने रूक गए।

❁

इतने खूबसूरत जानवर आपस में लड़ते अच्छे नहीं लगते। ख़ालिद इन्हें देखता रहा। एक तमाशाई ग़ज़ाल ने ख़ालिद के घोड़े को देख लिया। उसने गरदन तानी और खुर ज़मीन पर मारा। लड़ने वाले ग़ज़ाल जहां थे वहीं साकित व जामिद हो गए और फिर तमाम ग़ज़ाल एक तरफ भाग उठे और ख़ालिद की नज़रों से ओझल हो गए।

क़ुरैश के सरदार दो गिरोह में बट गए थे। इनकी आपस में दुश्मनी पैदा नहीं हुई थी लेकिन प्यार मोहब्बत और इत्तेहाद वाली पहली सी बात भी नहीं रही थी। ख़ालिद को आज याद आ रहा था के सब अबु सुफयान की सरदारी और सालारी को तस्लीम करते थे लेकिन खिंचाव सा पैदा हो गया था। जब इत्तेहाद की ज़रूरत थी, उस वक़्त अहल–ए–क़ुरैश निफाक़ के रास्ते पर चल पड़े थे। ख़ालिद को ये सूरत–ए–हाल सख़्त नागवार गुज़रती थी।

"क्या आप को मालूम नहीं के आपस का निफ़ाक दुश्मन को तक़वीयत दिया करता है?"–ख़ालिद ने एक रोज़ अबु सुफयान से कहा था–"क्या आप ने कभी सोचा है के इस निफ़ाक को इत्तेफाक़ में किस तरह बदला जा सकता है?"

"बहुत सोचा है ख़ालिद!"–अबु सुफयान ने उकताए हुए से लहजे में कहा था–

"बहुत सोचा है। सब मुझे पहले की तरह मिलते हैं लेकिन मैं महसूस करता हूं के बाज़ के दिल साफ नहीं....क्या तुम कोई सूरत पैदा कर सकते हो के दिलों से मैल निकल जाए?"

"हां, मैं ने ए सूरत सोच रखी है"-ख़ालिद ने कहा था-"मैं यही तजवीज़ आप के सामने ला रहा था। जिन सरदारों के दिलों में मैल पैदा हो गया है, वो समझने लगे हैं के हम अब नाम के जंगजू रह गए हैं और हम ने मुसलमानों का डर अपने दिलों में बैठा लिया है। शारजा ने छः मुसलमानों को धोका दे कर और उन में से दो को आप के हाथों मरवा कर हमारी शक्ल व सूरत ही बदल डाली है इसका इलाज ये है के हम मदीना पर हमला करें या मुसलमानों को कहीं लल्कारें और साबित कर दें के हम जंगजू हैं और हम मुसलमानों को ख़त्म कर के दम लेंगे।"

"हमारे पास जवाज़ मौजूद है"-अबु सुफयान ने उछल कर कहा था-"मैं ने ओहद की लड़ाई के आख़िर में मोहम्मद(स०) से ये भी कहा था के क़ुरैश के सीनों में इन्तेक़ाम की आग जलती रहेगी। हम अगले साल तुम्हें बदर के मैदान में लल्कारेंगे।"

"हां, मुझे याद है"-ख़ालिद ने कहा-"उधर से उमर(र०) की आवाज़ आई थी। उसने कहा था के हमारे अल्लाह ने चाहा तो हमारी अगली मुलाक़ात बदर के मैदान में ही होगी।"

"आवाज़ तो उमर(र०) की थी, अल्फ़ाज़ माहम्मद(स०) के थे"-अबु सुफयान ने कहा-"मोहम्मद (स०)बहुत ज़ख्मी था। वो ऊंची आवाज़ में बोल नहीं सकता था.. ..मैं मोहम्मद(स०) को पैग़ाम भेजता हूं के फलां दिन बदर के मैदान में आजाओ और अपने अंजाम को पहुंचो।"

दोनो ने एक दिन मुक़र्रर कर लिया और फैसला किया के किसी यहूदी को मदीने भेजा जाए।

दूसरे ही दिन अबु सुफयान ने कुरैश के तमाम सरदारों को अपने हां बुलाया और बड़े जोश व खरोश से ऐलान किया के वो मुसलमानों को बदर के मैदान में लल्कार रहा है। कुरैश यही ख़बर सुनने के मुंतज़िर थे। इन्हें अपने अज़ीज़ों के खून का इन्तेक़ाम लेना था। इन के दिलों में रसूले अकरम (स०) की दुश्मनी बारूद की तरह भरी हुई थी जो एक चिंगारी की मुंतज़िर थी। वो कहते थे के मोहम्मद(स०) ने बाप बेटे को और भाई भाई को एक दूसरे का दुश्मन बना दिया है।

अबु सुफयान के इस ऐलान ने सब के दिल साफ कर दिये और वो जंगी तैयारियों की बाते करने लगे। एक दानिशमंद यहूदी को पैग़ाम दिया गया के वो मदीने जा कर नबी-ए-करीम को दे कर जवाब ले आए।

ख़ालिद को याद आ रहा था के वो उस रोज़ किस क़दर मुतमईन था और मसरूर था। कुरैश के सरदारों के दिलों में जो तकद्दुर पैदा हो गया। वो साफ हो गया था। ख़ालिद बड़ हांकने वाला आदमी नहीं था लेकिन उस ने ये तहैय्या कर लिया था के वो रसूले खुदा(स०) को अपने हाथें क़त्ल करेगा।

यहूदी ईलची जवाब ले कर आ गया। रसूले करीम(स०) ने अबु सुफयान की लल्कार को कुबूल कर लिया था। लड़ाई का जो दिन मुक़र्रर हुआ वो मार्च 626 ई० का एक दिन था लेकिन हुआ यूं के सर्दियों के मौसम में जितनी बारिश हुआ करती थी उस से बहुत कम हुई। इसका नतीजा ये हुआ के ये मौसम तक़रीबन खुश्क गुज़र गया और मार्च के महीने में गरमी इतनी ज़्यादा हो गई जितनी इसके दो तीन माह बाद हुआ करती थी। अबु सुफयान ने इस मौसम को लड़ाई के लिए मोज़ू न समझा।

इस याद ने ख़ालिद को शर्मसार सा कर दिया। वजह ये हुई थी के अबु सुफयान मौसम की गर्मी का बहाना बना रहा था मशहूर मोर्रिख़ इब्ने साअद लिखता है के अबु सुफयान ने कुरैश के सरदारों को बुला कर कहा के वो कूच से पहले मुसलमानों को ख़ौफ़ज़दा करना चाहता है। उसने यहूदियों की ख़िदमात हासिल की और इन्हें ख़ासी उजरत दे कर ताजिरों के भेस में मदीना भेज दिया। उन्हें अबु सुफयान ने ये काम सौंपा था के मदीना में वो ये अफ़वाह फैलायें के कुरैश इतनी ज़्यादा तादाद में बदर के मैदान में आ रहें हैं जो मुसलमानों ने पहले कभी नहीं देखी।

इस मोर्रिख़ के मुताबिक, मदीना में इस अफवाह को सच माना गया और मुसलमानों के चहरों पर इस के असरात भी देखे गए। जब रसूल-ए- करीम(स०) तक ये अफवाह पहुंची और ये इतेला भी के बाज़ मुसलमानों पर ख़ौफ़ व हिरास के असरात देखे गए हैं तो रसूले करीम(स०) ने बाहर आ कर लोगों को जमा किया और ऐलान किया:

"क्या अल्लाह के नाम लेवा सिर्फ ये सुन कर डर गए है के कुरैश की तादद ज़्यादा होगी? अल्लाह से डरने वाले आज बुतों के पुजारियों से डर गए हैं? अगर तुम कुरैश से इस क़दर डर गए हो के उनकी लल्कार पर तुम मुंह मोड़ गए हो तो मुझे क़सम है खुदाए जुलजलाल की जिस ने मुझे रिसालत की ज़िम्मेदारी सोंपी है, मैं बदर के मैदान में अकेला जाऊंगा।"

रसूले खुदा(स०) कुछ और भी कहना चाहते थे लेकिन रिसालत मआब के शैदाईयों ने नारे से आसमान को हिला डाला। ये सुराग़ न मिल सका के अफवाह किस ने उड़ाई थी लेकिन रसूल अल्लाह(स०) की पुकार पर कुरैश की फैलाई हुई

अफवाह के असरात ज़ायल हो गए और मुसलमान जंगी तैयारियों में मसरूफ़ हो गए। दिन थोड़े रह गए थे। कूच के वक्त मुसलमानों की तादाद देढ़ हज़ार थी। इन में सिर्फ पचास घुड़ सवार थे।

जिन यहूदियों को अफवाह फैलाने के लिए मदीना भेजा गया था, उन्होंने वापस आ कर बताया के अफवाह ने पहले पूरा काम किया था लेकिन एक रोज़ मोहम्मद(स०) ने मुसलमानों को इक्ळा कर के चन्द अल्फ़ाज़ कहे तो तमाम मुसलमान बदर को कूच के लिए तैयार हो गए। उनकी तादाद मदीने में हमारी मौजूदगी तक देढ़ हज़ार तक पहुंच गई थी। हमारा ख़्याल है के तादाद इस से कम या ज़्यादा नहीं होगी।

आज मदीना को जाते हुए इस वाक़ेया की याद ने ख़ालिद को इस लिए शर्मसार कर दिया था के वो इस वक्त महसूस करने लगा था के अबु सुफयान किसी न किसी वजह से मुसलमानों के सामने जाने से हिचकिचा रहा है। ख़ालिद को जब मुसलमानों की तादाद का पता चला तो वो भड़का बिफरा हुआ अबु सुफयान के पास गया।

"अबु सुफयान!" -ख़ालिद ने उसे कहा- "सरदार की अताअत हमारा फर्ज़ है। मैं अहल-ए-कुरैश में सरदार की हुक्म अदूली की रिवायत क़ायम नहीं करना चाहता लेकिन मुझे कुरैश की अज़मत का भी ख़्याल है। आप अपने रवैये को तबदील करने की कोशिश करें। कहीं ऐसा न हो के क़बीला कुरैश की अज़मत का अहसस मुझ में इतना ज़्यादा हो जाए के मैं आप के हुक्म और रवैये की तरफ तवज्जह ही न दूं।

"क्या तुम ने सुना नहीं था के मैं ने यहूदियों को मदीना क्यों भेजा था?" -अबु सुफयान ने पूछा- "मैं मुसलमानों को डराना चाहता था....।"

"अबु सुफयान!"-ख़ालिद ने इसकी बात पूरी होने से पहले कहा। "लड़ने वाले डरा नहीं करते। क्या आप ने मुसलमानों को क़लील तादाद में लड़ते नहीं देखा? क्या आप ने ख़बीब और ज़ेद(र०) अहल-ए-कुरैश की बरछियों के सामने खड़ा हो कर नारे लगाते नहीं सुना था?....मैं आप से सिर्फ ये कहने आया हूं के अपनी सरदारी का अहतराम करें और बदर को कूच की तैयारी करें।"

❁

दूसरे ही दिन मक्का में ये ख़बर पहुंची के मुसलमान मदीना से बदर को कूच कर गए है। अब अबु सुफयान के लिए इसके सिवा और कोई रास्ता नहीं रह गया था के वो कूच का हुक्म दे। कुरैश की जो तादाद बदर को कूच के लिए तैयार हुई, वो दो हज़ार थी और एक सौ घुड़सवार इस के अलावा थे। क़यादत अबु सुफयान की थी

और इस के मातहत ख़ालिद, अकरमा और सफवान नायब सालार थे। हस्ब-ए-मामूल अबु सुफयान की बीवी हुन्द उसकी चन्द एक कनीज़ें और गाने बजाने वाली औरतें भी साथ थी।

मुसलमान रसूले अकरम(स०) की क़यादत में 4 अप्रैल 626 ई० बमुताबिक़ यकुम ज़ीक़दा 4 हिज़्री के रोज़ बदर के मैदान में पहुंच गए।

कुरैश अभी असफान के मुक़ाम तक पहुंचे थे। उन्होंने वहीं रात भर के लिए पड़ाव किया। सुबह उनकी रवांगी थी लेकिन सुबह तुलूअ होते ही अबु सुफयान ने अपने लश्कर को कूच का हुक्म देने की बजाए इक्ळा किया और लश्कर से यूं मुख़ातिब हुआ:

"कुरैश के बहादुरों! मुसलमान तुम्हारे नाम से डरते है। अब उनके साथ हमारी जंग फैसला कुन होगी। इन मुळी भर मुसलमानों का हम नाम व निशान मिटा देंगे। न मोहम्मद(स०) इस दुनिया में रहेगा न कोई उसका नाम लेने वाला लेकिन हम ऐसे हालात में लड़ने जा रहे है जो हमारे ख़िलाफ जा सकते हैं और हमारी शिकस्त का बाइस बन सकते हैं। तुम देख रहे हो के हम अपने साथ पूरा अनाज नहीं ला सकते। मज़ीद अनाज मिलने की उम्मीद भी नहीं क्योंके खुश्क साली ने क़हत की सूरत पैदा कर दी है। फिर इस गर्मी को देखो। मैं नहीं चाहता के मैं अपने बहादुरों को भूका और प्यासा मरवा दूं। मैं फैसला कुन जंग के लिए मोज़ूं हालात का इन्तेज़ार करूंगा। हम आगे नही जाएंगे। मक्का को कूच करो।"

ख़ालिद को याद आ रहा था के कुरैश के लश्कर ने दो तरह के नारे बुलन्द किये। एक उनके नारे थे जो इन्ही हालात में मुसलमानों के ख़िलाफ लड़ने का अज़्म किये हुए थे। दूसरे नारे अबु सुफयान के फैसले की ताईद में थे लेकिन हुक्म सब को मानना था। ख़ालिद, अकरमा और सफवान ने अबु सुफयान का ये हुक्म मानने से इन्कार कर दिया लेकिन अबु सुफयान पर उनके ऐहतजाज का कुछ असर न हुआ। इन तीनों नायब सालारों ने ये जाएज़ा भी लिया के कितने आदमी उनके साथ रहते हैं ये जाएज़ा उनके ख़िलाफ साबित हुआ। लश्कर की अकसरियत अबु सुफयान के हुक्म पर मक्का की तरफ कूच कर गई। ख़ालिद और उसके दोनो साथियों को मजबूरन लश्कर के पीछे पीछे आना पड़ा।

ख़ालिद को वो लम्हे याद आ रहे थे जब वो अहल-ए-कुरैश के लश्कर के पीछे पीछे अकरमा और सफवान के साथ मक्का को चला जा रहा था। उसका सर झुका हुआ था। ये तीनों एक दूसरे की तरफ देख भी नहीं रहे थे जैसे एक दूसरे से शर्मसार हों। ख़ालिद को बार बार ये ख़्याल आता था के लड़ाई में उसकी एक टांग

कट जाती, बाजू कट जाते, उसकी दोनो आंखें ज़ाए हो जाती तो उसे ये दुख न होता जो बग़ैर लड़े वापस जाने से हो रहा था। उस वक़्त वो इस तरह महसूस कर रहा था जैसे उसकी ज़ात मर चुकी हो और घोड़े पर उसकी लाश मक्का को वापस जा रही हो। नबी-ए-करीम(स०) का क़त्ल उसका अज़्म था जो वो पूरा किये बग़ैर वापस आ रहा था। ये अज़्म बिच्छू बन कर उसे डस रहा था।

उसे बहुत कुछ याद आ रहा था। यादों का एक रेला था जो कहीं ख़त्म नहीं हो रहा था। उसे यहूदियों के तीनों क़बीले-बनु नज़ीर, बनु क़रीज़ा और बनु कैनक़आ-याद आए। उन्होंने जब देखा के क़ुरैश मुसलमानों के ख़िलाफ लड़ने से मुंह मोड़ गए हैं ते वो सरगर्म हो गए। यहूदियों ने मुसलमानों के ख़िलाफ ज़मीन दोज़ कार्रवाईयां शुरू की, मक्का गए और क़ुरैश को मुसलमानों के ख़िलाफ भड़काया मगर क़ुरैश का सरदार अबु सुफ़यान टस से मस न हुआ। ख़ालिद को मालूम न हो सका के अबु सुफ़यान के दिल में क्या है और वो मुसलमानों से लड़ने से क्यों घबराता है।

उसी साल के मौसम सरमा के अवायल में ख़ैबर के चन्द एक सरकरदा यहूदी मक्का गए। इनका सरदार हय्यी बिन ख़तब था। ये शख़्स यहूदियों के क़बीले बनु नज़ीर का सरदार भी था। यहुदियों के पास ज़र व जवाहरात के ख़ज़ाने थे। ये चन्द एक यहूदी अबु सुफ़यान और क़ुरैश के दीगर सरदारों के लिए बेश क़ीमत तोहफे ले कर गए। इनके साथ हसीन व जमील लड़कियों का तोहफा भी था।

"अगर आप हमारा साथ दें"-हय्यी बिन ख़तब ने कहा-"तो हम मुसलमानों के ख़िलाफ खुफिया कार्रवाईयां शुरू कर देंगे।"

"हम मुसलमानों से दुगने थे तो भी उन्हें शिकस्त न दे सके"-अबु सुफ़यान ने कहा-"उनसे तीन गुनाह तादाद में उनसे लड़े तो भी उन्हें शिकस्त न दे सके। अगर चन्द और क़बीले हमारे साथ मिल जायें तो हम मुसलमानों को हमेशा के लिए ख़त्म कर सकते हैं।"

"हमने ये इन्तेज़ाम पहले ही कर दिया है"-हय्यी बिन ख़तब ने कहा-"क़बीला ग़तफान और बनु असद आप के साथ होंगे। चन्द और क़बीले हमारी कोशिशों से आपके साथ आजाएंगे।"

ख़ालिद को क्या कुछ याद न आ रहा था। तीन चार साल पहले के वाक़ेआत उसे एक रोज़ पहले की तरह याद थे। उसे अबु सुफ़यान का घबराया घबराया चेहरा अच्छी तरह याद था। ख़ालिद जानता था के यहूदी अहल-ए- क़ुरैश को मुसलमानों के ख़िलाफ सिर्फ इस लिए भड़का रहे हैं के यहूदियों का अपना मज़हब इस्लाम के मुक़ाबले में ख़तरे में आ गया था लेकिन उन्होंने अबु सुफ़यान को ऐसी तस्वीर दिखाई

थी जिसमें उसे मुसलमानों के हाथों तबाही नज़र आ रही थी। दूसरी तरफ ख़ालिद, अकरमा और सफवान बिन उमय्या ने सर उठाने के काबिल नही छोड़ा था।

"हम आप को अपना सरदार तस्लीम करते हैं लेकिन आप ये तस्लीम करें के आप बुज़दिल है।"

"अगर मुसलमान मौसम की ख़राबी और कहत में लड़ने के लिए आ गए थे तो हम भी लड़ सकते थे।"

"आप ने झूट बोल कर हमें धोका दिया है।"

"अबु सुफयान बुज़दिल है.....अबु सुफयान ने पूरे क़बीले को बुज़दिल बना दिया है....अब मोहम्मद(स०) के चेले हमारे सर पर कूदेंगे।"

और ऐसी बहुत सी तंज़ और गुस्से से भरी हुई आवाज़ें मक्का के गली कूचों में गश्त करती रहती थीं। इन आवाज़ों के पीछे यहूदियों का दिमाग भी काम कर रहा था लेकिन अहल-ए-कुरैश की गैरत और इनका जज़बा-ए-इन्तेकाम इन्हें चैन से बैठने नहीं देता था। अबु सुफयान इस हाल तक पहुंच गया के उसने बाहर निकलना ही छोड़ दिया।

ख़ालिद को वो दिन याद आया जब उसे अबु सुफयान ने अपने घर बुलाया था। ख़ालिद के दिल में अबु सुफयान का वो अहतराम नही रह गया था जो कभी हुआ करता था। वो बादल नख्वास्ता सिर्फ इस लिए चला गया के अबु सुफयान इस के क़बीले का सरदार है। वो अबु सुफयान के घर गया तो वहां अकरमा और सफवान भी बैठे हुए थे।

ख़ालिद- अबु सुफयान ने कहा- "मैंने मदीने पर हमले का फैसला कर लिया है"। ख़ालिद को ऐसा महसूस हुआ जैसे उसने गलत सुना हो। उसने अकरमा और सफवान की तरफ देखा उन दोनों के होंटों पर मुस्कुराहट आ गई।

"ख़ालिद" !-अबु सुफयान ने कहा-"जिस क़दर जल्दी हो सके लोगों को मदीने पर हमले के लिए तैयार कर लो।"

यहूदियों ने जिन क़बायल को कुरैश का साथ देने के लिए तैयार किया था, उन सब की तरफ पैगाम भेज दिए गए। ये फरवरी 627 ई० के आगाज़ के दिन थे। मुख्तलिफ क़बायल के लड़ाका दस्ते मक्का में जमा होने लगे। इन क़बायल में सब से ज़्यादा फौज गतफान की थी। इसकी तादाद तीन हज़ार थी। मुनय्या इसका सालार था। सात सौ आदमी बनु सलीम ने भेजे। अबु असद ने भी खासी फौज भेजी जिसका सालार तलीहा बिन ख़ालिद था(इसकी तादाद तारीख़ में नहीं मिलती)। कुरैश की अपनी फौज की तादाद 4 हज़ार पियादा, 3 सौ घुसवार और देढ़ हज़ार शतुर सवार

थे। इस पूरे लश्कर की तादाद जो मदीना पर फौज कशी के लिए जा रही थी, कुल दस हज़ार थी। इसकी कमान अबु सुफयान के हाथ थी। अबु सुफयान ने इस मुत्तेहदा फौज को जमीयतुल क़बायल कहा था।

इन में से कुछ क़बायल मक्का में नहीं आए थे। उन्होंने इत्तेला दी थी के जब लश्कर मक्का से रवाना होगा तो वो अपनी अपनी बस्ती से कूच कर जाएंगे और रास्ते में लश्कर से मिल जाएंगे। ख़ालिद को आज वो वक़्त याद आ रहा था जब उसने मक्का से कूच किया था। लश्कर का तीसरा हिस्सा उसकी कमान में था। उसने एक टेकरी पर घोड़ा चढ़ा कर वहां से इस तमाम लश्कर को देखा था। उसे लश्कर के दोनो सिरे नज़र नहीं आ रहे थे। दफ और नफरियां और शहनाईयां और लश्कर की मुतारन्नुम आवाज़ जो एक ही आवाज़ लगती थी ख़ालिद के खून को गर्मा रही थी। उसने गर्दन तान कर अपने आप से कहा था के मुसलमान पिस के रह जाएंगे और इस्लाम के ज़र्रे अरब की रेत में मिल कर हमेशा के लिए फना हो जाएंगे- ये उसका अज़्म था।

ये लश्कर 24 फरवरी 627 ई० बमुताबिक यकुम शव्वाल हिज्री मदीने के क़रीब पहुंच गया था कुरैश ने अपना पड़ाव उस जगह डाला जहां ओहद की लड़ाई के लिए खे़मा ज़न हुए थे। वहां दो नदियां आकर मिलती थी। दूसरे तमाम क़बायल ओहद की पहाड़ी के मशरिक़ की तरफ़ खे़मा ज़न हुए।

❁

कुरैश ने ये मालूम करने के लिए के मदीना के लोगों को कुरैश के लश्कर की आमद की इत्तेला मिली है या नहीं, दो जासूस ताजिरों के भेस में मदीना भेजे। अबु सुफयान और उसके तमाम नायब सालारों की ख्वाहिश और कोशिश ये थी के मदीने वालों पर बे ख़बरी में हमला किया जाए लेकिन दूसरे ही दिन कुरैश का एक जासूस जो यहुदी था मदीना से आया। इसने अबु सुफयान को बताया के मुसलमानों को हमला आवर लश्कर की आमद की इत्तेला मिल चुकी है।

"मुसलमानों में खौ़फ व हिरास फैल गया था"। इस यहूदी जासूस ने बताया-"सारे शहर पर खौ़फ़ तारी हो गया था लेकिन मोहम्मद(स०) और उसके क़रीबी हल्क़े के आदमियों की लल्कार पर मुसलमानों के दिल मज़बूत हो गए। गली कूचों में ऐसे ऐलान होने लगे। जिन से तमाम शहर का जज़्बा और हौसला ओद कर आया और मुसलमान लड़ाई के लिए एक जगह इक्ळे होने लगे। मेरे ख़्याल में उन की तादाद तीन हज़ार से ज्यादा नहीं होगी।"

मोर्रिख़ लिखते हैं के मुसलमानों की तादाद तीन हज़ार से ज़्यादा न थी। उन्हें

इत्तेला मिल चुकी थी के मदीना पर हमले के लिए जो लश्कर आया है उसकी तादाद दस हज़ार है जिस में सेंकड़ों घुड़सवार और शतुरसवार भी हैं। उस वक़्त तक अरब की सर ज़मीन ने किसी लड़ाई में इतना लश्कर नहीं देखा था।

तादाद को देखा जाता और फ़न-ए-हर्ब व ज़र्ब के पैमाने से दोनो इतराफ़ की फौजों को नापा तोला जाता तो मुसलमानों को लड़े बग़ैर हथियार डाल देने चाहिऐं थे या वो रात की तारीकी में मदीना से निकल जाते और किसी और बस्ती को अपना ठिकाना बनाते। कोई सोच भी नही सकता था के तीन हज़ार मुसलमान दस हज़ार के लश्कर का मुकाबला ज़रा सी देर के लिए भी कर सकेंगे। दस हज़ार लश्कर निहायत आसानी से मदीना की ईंट से ईंट बजा सकता था लेकिन ये हक़ और बातिल की टक्कर थी। ये अल्लाह के आगे सजदा करने वालों और बुत परस्तों का तसादुम था। खुदा को हक़ का साथ देना था। खुदा को अपने उस अज़ीम पैग़ाम की लाज रखनी थी जो इसकी ज़ात बारी ने ग़ार-ए-हिरा में अरब के सपूत(स०) को दिया था और उसे रिसालत अता की थी।

"खुदा उनका साथ देता है जिन के दिलों में हक़ और सिद्क़ होता है"-ये नबी-ए-करीम की लल्कार थी जो मदीने के गली कूचों में सुनाई दे रही थी-"लेकिन ऐ अल्लाह की इबात करने वालों!-खुदा तुम्हारा साथ इसी सूरत में देगा जब तुम दिलों से खौफ व हिरास निकाल कर एक दूसरे का साथ दोगे और अपनी जानें अल्लाह की राह में कुर्बान कर देने का अज़्म करोगे। जो हमारे अल्लाह को नहीं मानता और जो हमारे दीन को नही मानता वो हमारा दुश्मन है और उसका क़त्ल हम पर फर्ज़ है। याद रखो, क़त्ल करने के लिए क़त्ल होना भी पड़ता है। ईमान से बढ़ कर और कोई ताक़त नहीं जो तुम्हे दुश्मन से बचा सके। तुम्हें दिफाअ मदीना का नहीं अपने अक़ीदे का करना है। अगर इस अज़्म से आगे बड़ो तो दस हज़ार पर ग़ालिब आजाओगे। खुदा सोए हुए या खौफ़ज़दा इन्सान को मौअजज़े नहीं दिखाया करता। अपने अक़ीदे और अपनी बस्ती के दिफाअ का मौअजज़ा तुम्हें खुद दिखाना है।"

नबी-ए-करीम(स०) ने मदीने वालों का हौसला इस क़दर मज़बूत कर दिया था के वो इससे बड़े लश्कर के मुक़ाबले के लिए भी तैयार हो गए लेकिन रसूल-ए-खुदा(स०) इस सोच में डूब गए थे के इतने बड़े लश्कर से मदीने को बचाना किस तरह मुमकिन हो सकता है। आप(स०) को ये तो पूरा यक़ीन था के खुदा हक़ परस्तो के साथ है लेकिन लेकिन हक़ परस्तों को खुद भी कुछ कर के दिखाना था। बचाओ की कोई सूरत नज़र नहीं आ रही थी।

खुदा ने अपने नाम लेवाओं की मदद से इन्तेज़ाम कर रखा था। वो एक इन्सान था जिस ने उम्र के आख़िरी हिस्से में इस्लाम कुबूल किया था। इस इन्सान का नाम सलमान फारसी(र०) था। सलमान फारसी(र०) आतिश परस्तों के मज़हबी पेशवा थे लेकिन वो शब व रोज़ हक़ की तलाश में सरगरदां रहते थे। वो आग को पूजते तो थे लेकिन आग की तपिश और चमक में उन्हें वो राज़ नज़र नहीं आता था जिसे वो पा लेने के लिए बे ताब रहते थे। अक्ल व दानिश में उनकी टक्कर का कोई नही था। आतिश परस्त उन्हें भी इसी तरह पूजते थे जिस तरह आग को।

जव सलमान फारसी(र०) की उम्र बुढ़ापे की दहलीज़ फलांग कर ख़ासी आगे निकल गई तो उनके कानों में अरब की सरज़मीन की एक अनोखी आवाज़ पड़ी- "खुदा एक है। मोहम्मद(स०) इसका रसूल है" -ये आवाज़ सलमान फारसी के कान में घर बैठे नहीं पड़ी थी। उनकी उम्र इल्म की तलाश में सफर करते गुज़र रही थी। वो ताजिरों के एक क़ाफले के साथ शाम में आए थे जहां कुरैश के ताजिरों ने सलमान फारसी(र०) को तंज़िया और मज़ाहिया अंदाज़ में बताया के उनके क़बीले के एक आदमी का दिमाग़ चल गया है और उसने नबुव्वत का दावा किया है।

एक दो मुसलमानों ने अक़ीदत मंदी से सलमान फारसी(र०) को नबी करीम(स०) का अक़ीदा और आप(स०) की तालीमात सुनाई। सलमान फारसी(र०) ये सब सुन कर चौंक पड़े। उन्होंने इन मुसलमानों से कुछ और बातें पूछीं। इन्हें जो मालूम था वो उन्होंने बताया लेकिन सलमान फारसी(र०) तिशनगी महसूस कर रहे थे। वो इतना मुतास्सिर ज़रूर हो गए थे के उन्होंने नबी करीम(स०) तक पहुंचने का फैसला कर लिया। कुछ अर्से बाद सलमान फारसी(र०) रसूले खुदा(स०) के मुक़द्दस साए में जा बैठे- उन्हें वो राज़ मिल गया जिसकी तलाश में वो मारे मारे उम्र गुज़ार रहे थे। उन्होंने रसूल अल्लाह(स०) के दस्ते मुबारक पर इस्लाम कुबूल कर लिया। उस वक्त तक सलमान फारसी(र०) बुढ़ापे के आख़िरी हिस्से में पहुंच चुके थे।

अपने मुल्क में सलमान फारसी(र०) सिर्फ मज़हवी पैशवा ही न थे, वो जंगी उलूम के माहिर तस्लीम किए जाते थे। उस दौर के मज़हवी पैशवा भी जंग व जदल और सिपाह गिरी के माहिर होते थे। इल्म व अदव के आलिम भी सिपाही होते थे लेकिन सलमान फारसी(र०) को खुदा ने जंग व जदल के उमूर में ग़ैर मामूली ज़हानत दी थी। अपने मुल्क में जब कोई लड़ाई होती थी या दुश्मन हमलाआवर होता था तो सलमान फारसी(र०) को बादशाह तलब कर के सूरत-ए-हाल उनके आगे रखता और मशवरे लेता था। नामूर सालार भी उनके शार्गिद थे।

वो सलमान फारसी(र०) इस वक्त मदीने में रसूल-ए-अकरम(स०) के

सहाबाए-ए-इकराम(र०) में शामिल थे। रसूल अकरम(स०) ने ये सूरत-ए-हाल जो कुरैश ने आप के लिए पैदा कर दी थी सलमान फारसी(र०) के आगे रखी।

"खंदक़ खोदो जो सारे शहर को घेरे में ले ले"-सलमान फारसी(र०) ने कहा।

रसूले करीम(स०) और वहां बैठे हुए तमाम सहाबा-ए-इकराम(र०) और सालार एक दूसरे के मुंह की तरफ देखने लगे के सलमान फारसी (र०) ने क्या कह दिया है। अरब खंदक़ से वाकिफ नहीं थे। फारस में जंगों में खंदक का रिवाज था। सब को हैरान देख कर सलमान फारसी(र०) ने बताया के खंदक क्या होती है और इस से दिफाई काम किस तरह लिया जाता है। रसूले करीम(स०) ने जो खुद तारीख़ के नामूर सालार थे खंदक की ज़रूरत और अफादियत को समझ लिया लेकिन आप(स०) के दीगर सालार शश्स व पंज मे पड़ गए। इनके लिए इतने बड़े शहर के इर्द गिर्द इतनी चौड़ी और इतनी बड़ी खंदक़ खोदना ना क़ाबिल-ए-फहम नहीं था लेकिन उन्हें रसुले खुदा(स०) का हुक्म मानना था। खंदक़ की लम्बाई चौड़ाई और गहराई का हिसाब कर लिया गया। रसूले खुदा(स०) ने खंदक़ खोदने वालों की तादाद का हिसाब किया। आप(स०) ने खुदाई का काम इस तादाद पर तक़सीम किया तो एक सौ दस आदमियों के हिस्से में चालीस हाथ खुदाई आई। रसूले खुदा(स०) ने देखा के लोग खंदक़ को अभी तक नहीं समझे और वो खुदाई से हिचकिचा रहे हैं तो आप(स०) ने कुदाल उठाई और खुदाई शुरू कर दी।

ये देखते ही मुसलमान कुदालें और बेलचे ले कर नारे लगाते हुए ज़मीन का सीना चीरने लगे। उधर से उस वक्त के एक शायर हसान बिन साबित(र०) आ गए। हसान(र०) महशहूर नात गो थे जिन्हें रसूले अकरम(स०) अकसर अपने साथ रखा करते थे। इस मौके पर जब मुसलमान खंदक़ खोद रहे थे, हसान(र०) ने ऐसे अश्आर तरन्नुम से सुनाने शुरू कर दिये के खंदक खोदने वालों पर वजद और जुनून की कैफियत तारी हो गई। खंदक की लम्बाई चन्द गज़ नहीं थी उसे मीलों दूर तक जाना था। शैख़ेन की पहाड़ी से ले कर जिब्ल बनी उबैद तक ये खंदक़ खोदनी थी। ज़मीन नर्म भी थी और संगलाख़ भी थी और ये निहायत तेज़ी से मुकम्मिल करनी थी, क्योंकि दुश्मन सर पर आन बैठा था।

कुरैश का लश्कर इस अजीब व ग़रीब तरीका-ए-दिफाअ से बे ख़बर ओहद की पहाड़ी के दूसरी तरफ खेमा ज़न था।

"इस के पीछे यहूदियों का हाथ था"-चलते चलते ख़ालिद को अपनी आवाज़ सुनाई देने लगी-

"अहल-ए-कुरैश तो ठंडे पड़ गए थे। उन पर मुसलमानों की धाक बैठ गई थी।"

घोड़ा अपनी मर्ज़ी की चाल चला जा रहा था। मदीना भी दूर था। ख़ालिद को झेंप सी महसूस हुई। उसके क़बीले कुरैश ने उसे शर्मसार कर दिया था। उसे ये बात अच्छी नहीं लगी थी के यहूदियों के उकसाने पर उसके क़बीले के सरदार और सालार अबु सुफ़यान ने मदीने पर हमले का फैसला किया था लेकिन वो खुश था के हमले का फैसला तो हुआ। इतना बड़ा लश्कर जो सरज़मीन-ए-अरब पर पहली बार किसी जंग मैं देखा गया था, यहूदियों ने ही जमा किया था लेकिन ख़ालिद इस पर भी मुतमईन था के किसी ने ही ये काम किया हो, लश्कर तो जमा हो गया था।

वो उस रोज़ बहुत खुश था क़े इतने बड़े लश्कर को देख कर ही मुसलमान मदीना से भाग जाऐंगे। अगर मुक़ाबले पर जम भी गए तो घड़ी दो घड़ी में उनका सफाया हो जाएगा। वो उस वक़्त तो बहुत ही खुश था जब ओहद की पहाड़ी को दूसरी तरफ ये सारा लश्कर ख़ेमाज़न था। जिस सुबह हमला करना था उस रात उस पर ऐसी हीजानी कैफियत तारी थी के वो अच्छी तरह सो भी न सका। उसे हर तरफ मुसलमानों की लाशें बिखंरी हुई नज़र आ रही थी।

दूसरी सुबह जब कुरैश और दूसरे इत्तेहादी क़बायल का लश्कर जिस की तादाद दस हज़ार थी, ख़ेमागाह से निकल कर मदीना पर हमला लिए शहर के क़रीब पहुंचा तो अचानक रूक गया। शहर के सामने बड़ी गहरी खंदक़ खुदी हुई थी। अबु सुफ़यान जो लश्कर के क़ल्ब में था, लश्कर को रूका हुआ देख कर घोड़ा सरपट दौड़ाता आगे गया।

"कुरैश के जंगजू रूक क्यों गए हैं?"- अबु सुफयान चिल्लाता जा रहा था-"तुफान की तरह बढ़ो और मोहम्मद(स०) के मुसलमानें को कुचल डालो..... शहर की ईट से ईट बजा दो।"

अबु सुफयान का घोड़ा जब आगे गया तो उसने घोड़े की लगाम खींच ली और उसका घोड़ा उसी तरह रूक गया जिस तरह उसके लश्कर के तमाम सवार के खड़े थे। उसके सामने खंदक़ थी। उस पर ख़ामोशी तारी हो गई।

"खुदा की क़सम! ये एक नई चीज़ है जो मेरी आंखें देख रही हैं"-अबु सुफयान ने गुसेली आवाज़ में कहा-"अरब के जंजू खुले मैदान में लड़ा करते हैं.....ख़ालिद बिन वलीद को बुलाओ....अकरमा और सफवान को भी बुलाओ।"

अबु सुफयान खंदक़ के किनारे किनारे घोड़ा दौड़ाता ले गया। उसे कही भी ऐसी जगह नज़र नही आ रही थी जहां से उसका लश्कर खंदक़ उबूर कर सकता। ये खंदक़ शैखेन की पहाड़ी से ले कर जिब्ल-ए-बनी उबैद के ऊपर से पीछे तक चली गई थी।मदीना के मशरिक़ में शैख़ेन और लावा की पहाड़ियां थी। ये मदीने का कुदरती दिफाअ था।

❁

अबु सुफयान दूर तक चला गया। उसने देखा के खंदक़ के पार मुसलमान इस अंदाज़ से घूम फिर रहे हैं। जैसे पहरा दे रहे हों। उसने घोड़ा पीछे मोड़ा और अपने लश्कर की तरफ चल पड़ा। तीन घोड़े उसकी तरफ सरपट दौड़े आ रहे थे जो उसके क़रीब आ कर रूक गए। वो ख़ालिद, अकरमा और सफवान के घोड़े थे।

"क्या तुम देख नही रहे के मुसलमान कितने बुज़दिल हैं?"-अबु सुफयान ने उन तीनों से कहा- "क्या तुम कभी अपने रास्ते में रूकावट खड़ी कर के या रूकावट खोद कर अपने दुश्मन से लड़े हो?"

ख़ालिद पर ख़ामोशी तारी हो गई थी। आज मदीना की तरफ जाते हुए उसे याद आ रहा था के वो इस ख़्याल से चुप नहीं हो गया था के अबु सुफयान ने मुसलमानों को बुज़दिल जो कहा था वो ठीक कहा था बल्कि ख़ामोश रह कर वो इस सोच में खो गया था के ये खंदक़ बुज़दिली की नहीं, दानिशमंदी की अलामत थी। जिस किसी ने शहर के दिफाअ के लिए ये तरीक़ा सोचा था वो कोई मामूली अक़्ल वाला इन्सान नहीं था। इससे पहले भी उसने महसूस किया था के मुसलमान लड़ने में अपने जिस्म की ताक़त पर ही भरोसा नहीं करते, वो अक़्ल से भी काम लेते है। ख़ालिद का दिमाग़ ऐसी ही जंगी चालें सोचता रहता था मुसलमानों ने बदर के मैदान में निहायत थोड़ी तादाद में होते हुए कुरैश को बहुत बुरी शिकस्त दी थी। ख़ालिद ने अकेले बैठ

कर उस लड़ाई का जाएज़ा लिया था। मुसलमानों की इस फ़तेह में उसे मुसलमानों की असकरी दानिशमंदी नज़र आई थी।

ओहद की जंग में मुसलमानों की शिकस्त यक़ीनी थी लेकिन वो जंग फतेह और शिकस्त के फ़ैसले के बग़ैर ख़त्म हो गई थी। इस में भी मुसलमानों की अक्ल ने काम किया था।

"कोई और बात भी थी ख़ालिद!"-उसे ख़्याल आया-"कोई और बात भी थी।"

"कुछ भी था"-ख़ालिद ने अपने आप को जवाब दिया-"जो कुछ भी था, ये नही मानूंगा के ये मोहम्मद(स०) के जादू का असर था या उसके हाथ में कोई जादू है। हमारी अक्ल जिस अमल और जिस मुज़ाहरे को समझ नही सकती उसे हम जादू कह देते है। अहल-ए-कुरैश में ऐसा कोई दानिशमंद नही जो मुसलमानों जैसे जज़्बे से अहल-ए-कुरैश को सरशार कर दे और ऐसी जंगी चालें सोचे जो मुसलमानों को एक ही बार कुचल डालें।"

"खुदा की क़सम, हम इस लिए वापस नहीं चले जाऐंगे के मुसलमानों ने हमारे रास्ते में खंदक़ खोद रखी है"-अबु सुफयान ख़ालिद, अकरमा और सफवान से कह रहा था। फिर उसने उनसे पूछा-"क्या खंदक़ उबूर करने का कोई तरीक़ा तुम सोच सकते हो?"

ख़ालिद कोई तरीक़ा सोचने लगा लेकिन उसे ख़्याल आया के अगर उनके लश्कर ने खंदक उबूर कर भी ली तो मुसलमानों को शिकस्त देना आसान न होगा, ख्वाह वो कितनी ही थोड़ी तादाद में क्यों न हों। जिन इन्सानों ने थोड़े से वक़्त में ज़मीन और चट्टानों का सीना चीर डाला है उन इन्सानों को बड़े से बड़ा लश्कर भी ज़रा मुश्किल से ही शिकस्त दे सकेगा।

"क्या सोच रहे हो वलीद के बेटे!"-अबु सुफयान ने ख़ालिद को गहरी सोच में खोए हुए देख कर कहा-"हमारे पास सोचने का भी वक़्त नहीं। मुसलमान ये न समझें के हम बौखला गए है"

"हमें तमाम तर खंदक देख लेना चाहिए"-अकरमा ने कहा।

"कहीं न कहीं कोई ऐसी जगह होगी जहां से हम खंदक उबूर कर सकेंगे"-सफवान ने कहा।

"मुहासरा"-ख़ालिद ने खुद ऐतमादी से कहा-"मुसलमान खंदक़ खोद कर अंदर बैठ गए है हम मुहासरा कर के बाहर बैठे रहेंगे। वो भूक से तंग आकर एक न एक दिन खुद ही खंदक के इस तरफ आजऐंगे जिधर हम हैं।"

"हां"-अब सुफयान ने कहा-"मुझे यही एक तरीका नज़र आता है जो मुसलमानों को बाहर आकर लड़ने पर मजबूर कर देगा।"

अबु सुफयान अपने इन तीनों नायब सालारों के साथ खंदक़ के साथ साथ तमाम तर खंदक़ को देखने के लिए जिब्ल-ए-बनी उबैद की तरफ चल पड़ा। सुलअे की पहाड़ी मदीना और जिब्ल-ए-बनी उबैद के दरमियान थी। मुसलमान इसके सामने मोर्चा बंद थे। अबु सुफयान ने मुसलमानों की तादाद देखी तो उसके होंटों पर तंज़िया मुस्कुराहट आ गई। वो ज़रा आगे बढ़ा तो एक घोड़ा जो बड़ी तेज़ दौड़ा आ रहा था, उसके पहलू में आन रूका। सवार को अबु सुफयान बड़ी अच्छी तरह पहचानता था। वो एक यहूदी था जो ताजिरों के बहरूप में मदीना के अंदर गया था। वो मदीना से शैख़ेन के सिलसील-ए- कोह में से होता हुआ कुरैश के लश्कर में पहुंचा था।

❁

"अंदर से कोई ऐसी ख़बर लाए हो जो हमारे काम आ सके?"-अबु सुफयान ने पूछा और कहा-"हमारे साथ साथ चलो और इतना ऊंचा बोलते चलो के मेरे ये तीनों नायब भी सुन सकें।"

"मुसलमानों ने शहर के दिफाअ और आबादी के तहफ़ुफ़ज़ के जो इन्तेज़ामात कर रखे हैं वो इस तरह हैं"-यहूदी ने कहा-"ये तो तुम को मालूम है के मदीना छोटे छोटे क़िलों और एक दूसरे के साथ मिली हुई बस्तियों का शहर है। मुसलमानों ने शहर की औरतों, बच्चों और ज़ईफ़ों को पीछे की तरफ वाले क़िलों में भेज दिया है। खंदक पर नज़र रखने के लिए मुसलमानों ने गश्ती पहरे का जो इन्तेज़ाम किया है इसमें दो अढ़ाई सौ अफ़राद शामिल हैं। ये अफ़राद तलवारों के अलावा फैंकने वाली बरछियों और तीर कमानों से मुसल्लह हैं। उन्होंने इलाक़े तक़सीम कर रखे हैं जिन में वो सारा दिन और पूरी रात गश्त करते हैं। जहां कही से भी तुम खंदक उबूर करने की कोशिश करोगे वहां मुसलमानों की ख़ासी ज़्यादा तादाद पहुंच जाएगी और इस क़दर तीर और बरछियां बरसाई जाऐंगी के तुम लोग पीछे को भाग आने के सिवा कुछ नहीं कर सकोगे। ये भी हो सकता है के रातों को मुसलमानों के हबीश खंदक़ से बाहर आकर तुम पर शब खून मार कर वापस चले जाऐं।"

"अब्दुल्ला बिन उब्बी क्या कर रहा है?"-अबु सुफयान ने पूछा।

"ऐ कुरैश के सरदार!"-यहूदी जासूस ने कहा-"इतनी उम्र गुज़ार कर भी तुम इन्सानों को समझने के क़ाबिल नही हो सके। अब्दुल्ला बिन उब्बी मुनाफिक़ है। मुसलमान उसे जमाअत-ए-मुनाफेक़ीन का सरदार कहते हैं और हम उसे यहूदियत

का गद्दार समझते है। उस ने मुसलमान हो कर हम से गद्दारी की थी। मुसलमानों में जाकर उसने तुम्हारे हक़ में उन्हें धोके दिये अगर ओहद की जंग में तुम जीत जाते तो वो तुम्हारे साथ होता मगर मुसलमानों का पल्ला भारी देख कर उसने तुम से भी और यहूदियों से भी नज़र फैर ली है। तुम्हें ऐसे आदमी पर भरोसा नहीं करना चाहिए जो किसी मज़हब का पैरूकार और वफादार न हो।"

"और हुय्यी बिन ख़तब कहां है?"-अबु सुफयान ने पूछा।

"वो कुछ न कुछ कर रहा होगा"-यहूदी जासूस ने जवाब दिया-"मदीना में अभी मेरे साथी मौजूद हैं। वो मुसलमानों को जिस क़दर नुक़सान पहुंचा सके, पहुंचाऐंगे।"

ख़ालिद को आज मदीना की तरफ जाते हुए उस याद से ख़िफ्फत सी महसूस हो रही थी के मक्का से मदीना कूच के वक़्त जब उसने अपने साथ दस हज़ार का लश्कर देखा था तो उसकी गर्दन ऊंची हो गई और सीना फैल गया था लेकिन मदीना के सामने आकर दस हज़ार का लश्कर रेत के टीलों की तरह बेजान नज़र आने लगा था। उसे मुहासरे का मंज़र याद आने लगा लश्कर का जो हिस्सा उसकी ज़ेर-ए-कमान था, उसे उसने बड़े अच्छे तरीक़े से मुहासरे की तरतीब में कर दिया था।

ये मुहासरा बाईस रोज़ तक रहा। पहले दस दिनों में ही शहर के अंदर मुसलमान खुराक़ की कमी महसूस करने लगे लेकिन इससे कुरैश को कोई फायदा नहीं पहुंच सकता था क्योंकि वो अपने साथ खुराक़ और रसद बहुत कम लाए थे। उनके वहम व गुमान में भी नहीं था के उन्हें मुसलमान अपने मुहासरे में लम्बे अरसे के लिए बैठा लेंगे। खुराक की जितनी कमी शहर वाले महसूस कर रहे थे। उससे कुछ ज़्यादा कमी कुरैश के लश्कर में अपना असर दिखाने लगी थी। सिपाहियों में नुमायां तौर पर बेचैनी नज़र आने लगी।

मोअर्रिख़ इब्ने हशाम ने लिखा है के इस कैफियत में के शहर में खुराक का कोई ज़ख़ीरा न था और लोगों को रोज़ाना निस्फ़ खुराक दी जा रही थी, मुनाफेक़ीन और यहूदी तख़रीबकार दरपर्दा हरकत में आ गए। कोई भी न जान सका के ये आवाज़ कहां से उठी है लेकिन ये आवाज़ सारे शहर में फैल गई"-मोहम्मद(स०) हमें कैसी बुरी मौत मरवाने का बंदोबस्त कर रहा है। एक तरफ वो कहता के बहुत जल्द क़ैसर व किसरा के ख़ज़ाने हमारे क़दमों में पड़े होंगे। दूसरी तरफ हम ने उसकी नबुव्वत का ये असर भी न देखा के आसमान से हमारे लिए खुराक़ उतरे।"

लोगों ने इस्लाम तो कुबूल कर लिया था लेकिन वो गोश्त पोश्त के इन्सान थे। वो पेट की आवाज़ों से मुतास्सिर होने लगे। आख़िर एक आवाज़ ने उन्हें पेट के भूत से

आज़ादी दिला दी।

"क्या तुम खुदा से ये कहोगे के हम ने अपने पेट को खुदा से ज़्यादा मुक़द्दस जाना था"-ये एक रोद की कड़क की तरह आवाज़ थी जो मदीना के गली कूचों में सुनाई देने लगी-"आज खुदा को वो लोग अज़ीज़ होंगे जो उसके रसूल(स०) के साथ भूके और प्यासे जानें दे देंगे.....खुदा की क़सम, इससे बड़ी बुज़दिली और बे इज़्ज़ती मदीना वालों के लिए और क्या होगी के हम अहल-ए-मक्का के क़दमों में जा गिरें और कहें के हम तुम्हारे गुलाम हैं, हमें कुछ खाने को दो।"

रसूले अकरम(स०) शहर के दिफाअ मे इस क़दर सरगर्म थे के आप(स०) के लिए दिन और रात एक हो गए थे। आप(स०) अल्लाह के महबूब नबी थे। आप(स०) चाहते तो मोअजज़े भी रोनुमा हो सकते थे लेकिन आप(स०) को अहसास था के हर आदमी पैग़म्बर और रसूल नहीं न कोई इन्सान आप(स०) के बाद नबुव्वत और रिसालत का दरजा हासिल कर सकेगा, इस लिए आप(स०) इन इन्सानों के लिए ये मिसाल क़ायम कर रहे थे के इन्सान अपनी उन लाज़वाल जिस्मानी और नफ्सियाती कुव्वतों को जो खुदावंद-ए-तआला ने उसे अता की हैं, इस्तेमाल और साबित क़दमी से इस्तेमाल करे तो वो मोअजज़ा नुमा कारनामे अन्जाम दे सकता है। मुहासरे के दौरान आप(स०) की सरगर्मियां और आप(स०) की हालत एक सालार के अलावा एक सिपाही की भी थी। आप(स०) को इस कैफियत और इस सरगर्मी में देख कर मुसलमान भूक और प्यास को भूल गए और उनमें ऐसा जोश पैदा हो गया के उनमें बाज़ खंदक़ के क़रीब चले जाते और कुरैश को बुज़दली के ताने देते।

❁

वो 7 मार्च 627 ई० का दिन था जब अबु सुफयान ने परेशान हो कर कहा के हुय्यी बिन ख़तब को बुलाओ। उसकी परेशानी का बाअस ये था के दस दिनों में ही उसके लश्कर की खुराक का ज़खीरा बहुत कम रह गया था। सिपाहियों ने कुर्ब व जवार की बस्तियों में लूट मार कर के कुछ खुराक हासिल करली थी लेकिन उस रैगुज़ार में लोगों के घरों में भी खुराक का कोई ज़खीरा न होता था। कुरैश के लश्कर में बददिली फैलने लगी। अपने लश्कर के जज़्बे को यूं ठंडा पड़ते देख कर उसने यहूदियों के एक क़बीले के सरदार हुय्यी बिन ख़तब को बुलाया जो कुरैश की ज़मीन दोज़ मदद के लिए लश्कर के क़रीब ही कही मौजूद था। वो तो इस इन्तेज़ार में था के अहल-ए-कुरैश उसे बुलाऐं और उससे मदद मांगें।

मदीने से कुछ ही दूर यहूदियों के एक क़बीले बनू क़रीज़ा की बस्ती थी। इस क़बीले का सरदार काब बिन असद इस बस्ती में रहता था। रात जब वो गहरी नीद

सोया हुआ था, दरवाज़े की बड़ी ज़ोर की दस्तक से उसकी आंख खुल गई। उसने अपने गुलाम को आवाज़ दे कर कहा-"देखो, बाहर कौन है?"

"हुय्यी बिन ख़तब आया है" -गुलाम ने कहा।

"रात के इस वक्त वो अपने ही किसी मतलब से आया होगा"-काब बनी असद ने गुसेली आवाज़ में कहा-" उसे कहो के मैं इस वक्त तुम्हारा कोई मतलब पूरा नहीं कर सकता। दिन के वक्त आना।"

बनू क़रीज़ा यहूदियों का वो क़बीला था जिस ने मुसलमानों के साथ दोस्ती का और एक दूसरे के ख़िलाफ जंग न करने का मुहाएदा कर रखा था। इस मुहाएदे में यहूदियों के दूसरे दो क़बीले-बनू क़ीनक़ाअ और बनू नज़ीर- भी शामिल थे लेकिन इन दोनो क़बीलों ने इस मुहाएदे की ख़िलाफ वर्ज़ी की थी और मुसलमानों ने इन्हें वो सज़ा दी थी के वो लोग शाम की तरफ भाग गए थे। सिर्फ बनू क़रीज़ा था जिस ने मुहाएदे को बरक़रार रखा और इसका अहतराम किया। मुसलमान जंग-ए-ख़ंदक़ में इस क़बीले की तरफ से ज़रा सा भी ख़तरा महसूस नहीं कर रहे थे। हय्यी बिन ख़तब भी यहूदी था। वो काब बिन असद को अपना हम मज़हब भाई समझ कर उसके पास गया था। वो काब बिन असद को मुसलमानों के ख़िलाफ उकसाना चाहता था इसलिए वो गुलाम के कहने पर भी वहां से न हटा। काब बिन असद ने परेशान हो कर उसे अंदर बुला लिया।

"मैं जानता हूं तुम इस वक्त मेरे पास क्यों आए हो"-काब बिन असद ने हुय्यी से कहा- अगर तुम अबु सुफयान के कहने पर आए हो ते उसे कह दो के हम ने मुसलमानों के साथ जो मुहाएदा किया है इस पर मुसलमान पूरी दियानतदारी से क़ायम है। वो हमें अपना हलीफ समझते हैं और उन्होंने हमें पूरे हक़ूक़ दे रखे हैं।"

"काब बिन असद! होश में आ"-हुय्यी बिन ख़तब ने कहा-"बनू क़ीनक़ाअ और बनू नज़ीर का अंजाम देख ले। मुसलमानों की शिकस्त मुझे साफ नज़र आ रही है। खुदाए यहूद की क़सम, दस हज़ार का लश्कर मुसलमानों को कुचल डालेगा। फिर ये मुसलमान तुम पर टूट पड़ेंगे के यहूदियों ने उन्हें शिकस्त दिलाई है।"

"क़ुरैश के लश्कर का एक हिस्सा पहाड़ियों के पीछे से तुम्हारे पास पहुंच जाएगा"- हय्यी ने कहा-"तुम्हारी मौजूदगी में ये सिपाही मुसलमानों पर अक़ब से हमला नही कर सकते। तुम अपने क़बीले समेत क़ुरैश से मिल जाओ और मुसलमानों पर इस तरह हमला करो के तुम्हें जम कर न लड़ना पड़े बल्कि ज़र्ब लगा कर पीछे हट आओ। इस से क़ुरैश को ये फायदा होगा के मुसलमानों की तवज्जह ख़ंदक़ से हट जाएगी और क़ुरैश का लश्कर ख़ंदक को उबूर कर लेगा।"

"अगर मैं तुम्हारी बात मान लूं और हमारा हमला वो काम न कर सके जो तुम चाहते हो तो जानते हो मुसलमान हमारे साथ क्या सुलूक करेंगे?"–काब बिन असद ने कहा-"तुम मुसलमानों के क़हर व ग़ज़ब से वाकिफ़ हो। क्या बनू क़ीनकाअ और बनू नज़ीर का कोई एक भी यहूदी तुम्हें यहां नज़र आता है?"

"अबु सुफ़यान ने सब कुछ सोच कर तम्हें मुहाएदे की दावत दी हैं"–हुय्यी बिन ख़तब ने कहा-"अगर मुसलमानों का क़हर व ग़ज़ब तुम पर गिरने लगा तो क़ुरैश के लश्कर का एक हिस्सा तुम्हारे क़बीले की हिफाज़त के लिए शेख़ैन और लावा की पहाड़ियों में मौजूद रहेगा। वो शब खून मारने वाले तजुर्बे कार सिपाहियों का लश्कर होगा जो मुसलमानों को तुम्हारी तरफ आँख उठा कर भी देखने की मोहलत नहीं देंगे।"

"तुम मुझे इतने बड़े ख़तरे में डाल रहे हो जो मेरे पूरे क़बीले को तबाह कर देगा"- काब बिन असद ने कहा।

"तुम्हारा क़बीला तबाह हो या न हो, अहल–ए–क़ुरैश इतनी क़ीमत देंगे जो तुम ने कभी सोची भी न होगी"–हुय्यी ने कहा- "या अपने तआवुन की क़ीमत खुद बता दो.....जो कहोगे, जिस शक्ल में मांगोगे तुम्हें क़ीमत मिल जाएगी, और तुम्हारे क़बीले को पूरा तहफ्फ़ुज़ मिलेगा। मुसलमान अगले चन्द दिलों में नेस्त व नाबूद हो जाएंगे। तुम उसका साथ दो जो ज़िन्दा रहेगा और जिसके हाथ में ताक़त होगी।"

काब बिन असद आख़िर यहूदी था। उसने ज़र व जवाहरात के लालच में आकर हुय्यी बिन ख़तब की बात मान ली।

"क़ुरैश का कोई सिपाही हमारी बस्ती के क़रीब न आए"- काब बिन असद ने कहा-"मुसलमानों पर मेरा क़बीला शबखून मारता रहेगा। ये काम रात की तारीकी में किया जाएगा ताके मुसलमानों को पता ही न चल सके के शबखून मारने वाले बनू क़रीज़ा के आदमी हैं।.....और हुय्यी!"–काब ने होंटों पर हल्की सी मुस्कुराहट लाते हुए कहा-"तुम देख रहे हो के मैं यहां अकेला पड़ा हूं। मेरी रातें तन्हाई में गुज़र रही हैं।"

"आज की रात तन्हा गुज़ारो"–हुय्यी ने कहा-"कल तुम तन्हा नहीं होगे।"

"मुझे दस दिनों की मोहलत मिलनी चाहिए"- काब ने कहा-"मुझे अपने क़बीले को तैयार करना है।" क़ुरैश और बनू क़रीज़ा के दरमियान मुहाएदा हो गया।

❁

साद बिन अतीक़ मामूली सी क़िस्म का एक जवान था जिसकी मदीना में कोई हैसियत नहीं थी। वो खंजर और तलवारें तेज़ करने का काम करता था। उसमें खूबी ये

थी के खुदा ने उसे आवाज़ पुर सोज़ और सुरीली दी थी और वो शहसवार था। रातों को किसी महफ़िल में उसकी आवाज़ सुनाई देती थी तो लोग बाहर आकर उसका गाना सुना करते थे। कभी रात को वो शहर से बाहर चला जाता और अपनी तरंग में गाया करता था। उसने इस्लाम कुबूल कर लिया था।

एक रात वो पुर सोज़ ले में शहर से दूर कहीं गा रहा था के एक बड़ी खूबसूरत और जवान लड़की उसके सामने यूं आन खड़ी हुई जैसे कोई जिन या चुड़ैल इन्सान के हसीन रूप में आ गई हो। साद घबरा कर ख़ामोश हो गया।

"इस आवाज़ से मुझे महरूम न कर जो मुझे घर से निकाल लाई है"-लड़की ने कहा-"मुझे देख के तू ख़ामोश हो गया है तो दूर चली जाती हूं। अपने नग़मे का खून न कर....तेरी आवाज़ में ऐसा सोज़ है जैसे तू किसी के फिराक़ में नग़मा सरा है।"

"कौन है तू?"-साद ने कहा-"अगर तू जिन्नात में से है तो बता दे।"

लड़की की जल तरंग जैसी हंसी सुनाई दी। सहरा की शफ्फाफ़ चांदनी में उसकी आँखें हीरों की तरह चमक रही थीं।

"मैं बनू क़रीज़ा के एक यहूदी की बेटी हूं।"

"और मैं मुसलमान हूं।"

"मज़हब को दरमियान में न ला"-यहूदन ने कहा-"नग़मों का कोई मज़हब नहीं होता। मैं तेरे लिए नहीं तेरे नग़में और तेरी आवाज़ के लिए आई हूं।"

साद इस यहूदन के हुस्न में खो गया और यहूदन उसकी आवाज़ से मदहोश हो गई और आवाज़ के तिलिस्म ने उन्हें उस रिश्ते में जकड़ लिया जिसे मौत भी नहीं तोड़ सकती। उसके बाद भी वो मिले। वो एक दूसरे के क़ैदी हो गए। एक रोज़ यहूदन ने उसे कहा के साद कुबूल करे तो वो उसके पास आजाएगी और इस्लाम कुबूल कर लेगी।

दो तीन रोज़ ही गुज़रे थे के मदीना मुहासरे में आ गया। साद बिन अतीक़ का काम बढ़ गया। उसके पास तलवारें, ख़ंजर और बरछियों की अन्नियां तेज़ करवाने वालों का हुजूम रहने लगा। वो रातों को भी काम करता था।

एक राज़ यहूदन अपने बाप की तलवारें उठाए उसके पास आई।

"तलवार तेज़ कराने के बहाने आई हूं।"-यहूदन ने कहा-"आज ही रात यहां से निकलो वरना हम कभी न मिल सकेंगे।"

"क्या हो गया है?"

"परसों शाम मेरे बाप ने मुझे कहा के क़बीले के सरदार काब बिन असद को मेरी ज़रूरत है"-यहूदन ने बताया-"बाप ने हुय्यी बिन ख़तब का नाम भी लिया था।

में काब के घर चली गई। वहां हुय्यी के अलावा दो और आदमी बैठे हुए थे। वो इस तरह की बाते कर रहे थे के मुसलमानों के आख़िरी दिन आ गए हैं।"

काब बिन असद, हुय्यी बिन ख़तब और कुरैश के दरमियान इस लड़की की मौजूदगी में मुहाएदा हुआ और मुसलमानों पर अक़ब से हमलों का मनसूबा तय हुआ। इस यहूदन को रात भर काब के पास गुज़ारनी पड़ी। सुबह वो अपने घर आ गई। उसे मुसलमानों के साथ कोई दिलचस्पी न थी। उसकी दिलचस्पियां साद के साथ थीं। उसके कानों में ये बात भी पड़ी थी के काब उसे बीवी या दाश्ता की हैसियत से अपने पास रख लेगा।

साद बिन अतीक़ इस यहूदन की मोहब्बत को तो भूल ही गया। उसने यहूदन को घर भेज दिया और एक बुज़ुर्ग मुसमलान को बताया के काब बिन असद ने हुय्यी के कहने पर कुरैश के साथ मुहाएदा किया है। इस बुज़ुर्ग ने ये इत्तेला ऊपर पहुंचा दी और रसूले अकरम(स०) को बताया गया के अबू क़रीज़ा ने बनू क़ीनक़ाअ और बनू नज़ीर की तरह अपना मुहाएदा तोड़ दिया है। आप(स०) ने काब बिन असद के ख़िलाफ कोई कारर्वाई करने से पहले ये यक़ीन कर लेना ज़रूरी समझा के बनू क़रीज़ा ने वाक़ई कुरैश के साथ मुहाएदा किया है।

अल्लाह अपने नाम लेवा बंदों की मदद करता है। उसके फौरन बाद एक ऐसा वाक़िया हो गया जिससे तस्दीक़ हो गई के बनू क़रीज़ा और कुरैश के दरमियान ख़तरनाक़ मुहाएदा हुआ है।

वाक़िया यू हुआ। औरतों और बच्चों को शहर के उन मकानों और छोटे छोटे क़िलों में मुंतक़िल कर दिया गया था जो ख़ंदक़ से दूर थे। ऐसे एक क़िले में रसूले अकरम(स०) की फूफी सफ़िया(र०) चन्द एक औरतों और बहुत से बच्चों के साथ मुक़ीम थीं। एक रोज़ सफ़िया(र०) क़िले की फ़सील पर घूम फिर रही थीं। उन्होंने नीचे देखा। एक आदमी दीवार के साथ साथ मश्कूक सी चाल चलता जा रहा था। वो कहीं रूकता, दीवार को देखता और आगे चल पड़ता। सफिया(र०) उसे छुप कर देखने लगीं। साफ पता चलता था के ये आदमी क़िले के अन्दर आने का कोई रास्ता या ज़रयि देख रहा है।

सफिया(र०) को इस वजह से भी उस आदमी पर शक हुआ के शहर के तमाम आदमी ख़ंदक़ के क़रीब मौर्चा बंद थे या जंग के किसी और काम में मसरूफ थे। अगर ये कोई अपना आदमी होता ओर किसी काम से आया होता तो दरवाज़े पर दस्तक देता।

क़िले में औरतों और बच्चों के साथ सिर्फ एक मर्द था। ये थे अरब के मशहूर

शयर हसान बिन साबित। सफिया(र०) ने हसान से कहा के नीचे एक आदमी मश्कूक अंदाज़ से दीवार के साथ साथ जा रहा है।

"मुझे शक है वो यहूदी है"-सफिया(र०) ने हसान से कहा-"तुम जानते हो हसान! बनू क़रीज़ा ने दोस्ती का मुहाएदा तोड़ दिया है। ये शख़्स मुझे यहूदियों का मुख़्बिर मालूम होता है। बनू क़रीज़ा हम पर अक़ब से हमला करेंगे ताके हमारे मर्दों की तवज्जे ख़ंदक़ से हट जाए और वो पीछे आजाऐं। यहूदियों के पास हमारे मर्दों को मोर्चों से निकाल कर पीछे लाने का ये तरीक़ा कारआमद होगा के वो इन क़िलों पर हमला शुरू कर दें जिन में औरतें और बच्चे हैं.....नीचे जाओ हसान! अल्लाह तुम्हारा निगहबान हो। उस शख़्स को लल्कारो। अगर वो वाक़ई यहूदी हो तो उसे क़त्ल कर दो ख़्याल रखना के उसके हाथ में बरछी है और उसके चुग़े के अंदर तलवार भी होगी।"

"ऐ अज़ीम ख़ातून!"-हसान शायर ने कहा-"क्या आप नहीं जानती के मैं शायर हूं जो जोश दिला सकता है, जोश में आ नही सकता। शायर से तवक्क़ो न रखो के वो उस आदमी के मुक़ाबले में जाएगा जो इतनी दिलैरी से क़िले तक आ गया है।"

मोअररिख़ इब्ने हशाम और इब्ने क़तीबा ने लिखा है के अरब के अज़ीम शायर का ये जवाब सुन कर रसूलेअकरम की फूफी सफिया(र०) ने उसे क़हर की नज़रों से देखा और ऐसे तेश में आई के खुद इस मश्कूक आदमी को पकड़ने या मारने के लिए चल पड़ी लेकिन ये न देखा के एक मुसल्लेह मर्द के मुक़ाबले में जाते हुए उनके हाथ में कौन सा हथियार है। वो जल्दी में जो हथियार ले कर गई वो बरछी नहीं थी, तलवार नहीं थी, वो एक डंडा था। सफिया(र०) दौड़ती बाहर निकलीं और उस मश्कूक आदमी के पीछे जाकर जो दीवार के साथ एक और जगह खड़ा ऊपर देख रहा था।

"कौन है तू?"-सफिया(र०) ने उसे लल्कारा।

मश्कूक आदमी ने बिदक कर पीछे देखा। अगर वो किसी ग़लत नीयत से न आया होता तो उसका अंदाज़ कुछ और होता मगर उसने बरछी तान ली। सफिया(र०) ने उसका चेहरा देखा तो कोई शक न रहा। वो यहूदी था और वो बनू क़रीज़ा का ही हो सकता था। उसे यक़ीन था के एक औरत और वो भी एक डंडा से मुसल्लेह उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकेगी।।

"तुझ पर खुदा की लानत!"-सफिया(र०) ने लल्कार कर कहा-"क्या तू बनू क़रीज़ा का मुख़्बिर नही है?"

"मोहम्मद(स०) की फूफी! यहां से चली जा!"-यहूदी ने कहा-"क्या तू मेरे

हाथों मरने आई है?...हां, बनू क़रीज़ा का आदमी हूं।"

"फिर तू यहां से ज़िंदा नहीं जाएगा।"

यहूदी ने क़हक़हा लगाया और बढ़ कर बरछी मारी। जिस तेज़ी से बरछी आई थी। उससे ज़्यादा तेज़ी से सफ़िया(र०) एक तरफ हो गई।। यहूदी का वार ख़ाली गया तो वो संभल न सका। वो आगे को झुका और अपने बढ़ते हुए क़दमों को रोक न सका। सफीया(र०) ने पूरी ताक़त से उसके सर पर डण्डा मारा। एक औरत के बाज़ू में खुदा का क़हर आ गया था। यहूदी रूक कर सीधा हुआ लेकिन उसका सर डोलने लगा। सफीया ने उसे संभलने का मौक़ा न दिया और उसके सर पर पहले से ज़्यादा ज़ोर से डंडा मारा।

अब यहूदी खड़ा न रह सका। उसके हाथ से बरछी गिरी, फिर उसके घुटने ज़मीन से लगे। सफिया(र०) ने उसके सर पर जिससे खून बह बह कर उसके कपड़ों को लाल कर रहा था, एक और डंडा मारा। वो जब बेहोश हो कर लुड़क गया तो सफिया(र०) उसके सर पर ही डंडे मारती चली गई जैसे ज़हरीले नाग का सर कुचल रही हों-सफिया(र०) ने उस वक़्त हाथ रोका जब यहूदी की खोपड़ी कुचल गई और उसका जिस्म बेहिस हो गया। सफिया(र०) क़िले में चली गई।

"हसान!"-सफिया(र०) ने अपने शायर हसान से कहा- मैं वो काम कर आई हूं जो तुम्हें करना था। अब जाओ और उस यहूदी के हथियार उठा लाओ और उसके कपड़ों के अंदर जो कुछ है वो भी ले आओ। मैं औरत हूं। किसी मर्द के कपड़ों के अंदर हाथ डालना एक औरत के लिए मुनासिब नहीं.....चाहो तो ये माले ग़नीमत तुम ले सकते हो। मुझे इसकी ज़रूरत नहीं।"

"अल्लाह आप की असमत व इफ्फत की हिफ़ाज़त करे।" हसान ने शायरों की मुस्कुराहट से कहा- "माले ग़नीमत की ज़रूरत मुझे भी नहीं"-और हसान वहां से खिसक गया। वो शायद कहना ये चाहता था के उसमें इतनी हिम्मत नहीं के कुचली हुई खोपड़ी वाली लाश को हाथ लगाए।

मोअररिख़ेन लिखते हैं के ये ख़बर रसूले करीम(स०) तक पहुंची तो आप(स०) को परेशानी हुई। शहर में खुराक की कैफियत यहीं तक पहुंच गई थी के हर फ़र्द को उसकी असल ज़रूरत की सिर्फ एक चौथाई खुराक मिलती थी। रसूले करीम(स०) ने खुदाए जुलजलाल से मदद मांगी और कोई हिकमत-ए-अमली सोचने लगे।

❁

इधर खंदक़ का मुहाज़ गर्म था। ख़ालिद को अपनी उस वक़्त की बेचैनी और बेताबी अच्छी तरह याद थी। वो खंदक़ के सथ साथ घोड़ा दौड़ाता और कहीं से

खंदक उबूर करने के तरीके सोचता था। वो मर्दे मैदान था, लड़े बगैर वापस जाने को अपनी तौहीन समझता था मगर वहां लड़ाई उस नोइयत की हो रही थी के कुरैश के तीरअंदाज़ ख़ासी तादाद में खंदक के उस मुकाम पर करीब आते जहां मुसलमान मोर्चा बंद थे। ये सुलआ की पहाड़ी थी। तीरअंदाज़ मुसलमानों पर तीर बरसाते। मुसलमान जवाबी तीरअंदाज़ी करते। कभी कुरैश का कोई तीरअंदाज़ हबीश किसी और जगह गश्ती संतरियों पर तीर चलाता मगर मुसलमानों का हबीश फौरन पहुंच जाता। रात को मुसलमान खंदक पर संतरियों की तादाद में इज़ाफा कर देते थे और कुरैश खंदक से दूर पीछे खेमा गाह में चले जाते थे।

रसूले करीम(स०) को जहां मदीना में खुराक की किल्लत का जो कहत की सूरत इख्तेयार करती जा रही थी, अहसास था वहां आप(स०) को ये भी मालूम था के कुरैश का लश्कर भी नीम फाका कशी पर आ गया है। ये वो कैफियत होती है जो इन्सानों को एक दूसरे की शरायत मानने पर और मुहाएदों और समझौतों पर मजबूर कर देती है।

किसी भी तारीख में उस शख़्स का नाम नहीं लिखा जिसे रसूले करीम(स०) ने खुफिया तरीके से कुरैश के इत्तेहादी गतफान के सालार ईनीया के पास इस मकसद के लिए भेजा के उसे कुरैश की दोस्ती तर्क करने पर आमादा करे। उसे ये नहीं कहा गया था के वो मुसलमानों के साथ मिल जाए। रसूले करीम(स०) का मकसद सिर्फ ये था के गतफान और ईनया रज़ामंद हो जायें और अपने कबीले को वापस ले जायें तो कुरैश का लश्कर दो हज़ार नफरी की फौज से महरूम हो जाएगा। ये तवक्को भी की जा सकती थी के दूसरे कबीले भी गतफान की तकलीद में कुरैश के लश्कर से निकल जायेंगे।

"क्या मोहम्मद(स०) हमें ज़बानी मुहाएदे की दावत दे रहा है?"-सालार ईनया ने रसूल अल्लाह(स०) के ऐलची से कहा-"हम ने यहां तक आने का जो खर्च बर्दाश्त किया है वो कौन देगा?"

"हम देंगे"-रसूले खुदा(स०) के ऐलची ने कहा-"नबी करीम(स०) ने फरमाया है के तुम लोग अपने कबीले को वापस ले जाओ तो इस साल मदीना में खुजूर की जितनी पैदावार होगी इस का तीसरा हिस्सा तुम ले जाना। खुद मदीना आ जाना। पूरी पैदावार देख लेना और अपना हिस्सा अपने हाथों अलग कर ले जाना।"

सालार ईनया मैदान-ए-जंग में लड़ने और लड़ाने वालों की कयादत करने वाला जंगजू था, लेकिन गैर जंगी मसायल और उमूर को बहुत कम समझता था। मोअर्रिख़ इब्ने हशाम ने लिखा है के इस वाकेये के कुछ अर्से बाद रसूल

अल्लह(स०) ने उसे "मुस्तअद अहमक़" का ख़िताब दिया था। वो बड़े ताक़तवर जिस्म वाला और जिस्मानी लिहाज़ से फुर्तीला और मुसतअद रहने वाला आदमी था। उसने अपने सरदार ग़तफान से बात की।

"खुदा की क़सम, मोहम्मद(स०) ने हमें कमज़ोर समझ कर ये पैग़ाम भेजा है"-ग़तफान ने कहा-"उसके ऐलची से पूछो के मदीना के अंदर लोगों को भूक का सामना नहीं? हम इन्हें भूक से निढाल कर के मारेंगे।"

"क्या तुम देख नहीं रहे के हमारा अपना लश्कर भूक से निढाल हो रहा है?"-सालार ईनया ने कहा-"मदीना वाले अपने घरों में बैठे हैं। हम अपने घर से बहुत दूर आगए हैं। क्या लश्कर में तुम बे इतमेनानी नहीं देख रहे? क्या तुम ने देखा नहीं के हमारी कमानों से निकले हुए तीर अब इतनी दूर नहीं जाते जितनी दूर उस वक़्त जाते थे जब तीर अंदाज़ों को पेट भर कर खाना मिलता था? इनके बाज़ुओं में कमानें खींचने की ताक़त नहीं रही।"

"क्या इसका फैसला तुम करोगे के हमें मोहम्मद(स०) को क्या जवाब देना चाहिए?"-ग़तफान पूछा-"या मैं फैसला करूंगा जो क़बीले का सरदार हूं?"

"खुदा की क़सम, मैदान-ए-जंग में जो फैसला मैं कर सकता हूं वो तुम नहीं कर सकते"-सालार ईनया ने कहा-"और मैदान जंग से बाहर जो फैसला तुम कर सकते हो वो फैसला मेरी अक्ल नहीं कर सकती। मेरी अक्ल तलवार के साथ चलती है मगर यहां मेरी फौज की तलवारें और बरछियां और हमारे तीर मायूस हो गए हैं। हम खंदक़ के पार नहीं जा सकते। हमें मोहम्मद(स०) की बात मान लेनी चाहिए।"

और उन्होंने रसूले करीम(स०) की बात मान ली। ऐलची उम्मीद अफ़ज़ा जवाब ले कर आ गया। उसे कुरैश का कोई आदमी नहीं देख सका था क्योंके ग़तफान की फौज मुहासरे के किसी और मुक़ाम पर थी।

❋

अल्लाह के रसूल(स०) के ख़िलाफ कौन बोल सकता था?- मगर आप(स०) ने इस्लाम की तालीमात के ऐन मुताबिक अपने सरकर्दा साथियों को बुलाया और इन्हें मौक़ा दिया के किसी को आप(स०) के फैसले से इख्तेलाफ है तो वो बोले। आप(स०) एक शख़्स का फैसला पूरी क़ौम पर ठूंसने के क़ायल न थे। चुनांचे आप(स०) ने सब को बताया के आप(स०) ने ग़तफान को क्या पेशकश की है।

"नहीं"-आप(स०) के फैसले के ख़िलाफ दो तीन आवाज़ें उठीं- "हमारी तलवारें जिनके खून की प्यासी हैं, खुदा की क़सम, हम इन्हें अपनी ज़मीन की पैदावार

का एक दाना भी नही देंगे। जंग तो हुई नही। हम लड़े बग़ैर क्यों ज़ाहिर करें के हम लड़ नही सकते।"

इसकी ताईद में कुछ आवाज़ें उठीं। ऐसी दलीलें दी गई जिन्हें रसूल अल्लाह ने इस लिए कुबूल फरमा लिया के ये अकसरियत की आवाज़ थी। आप(स०) ने अपने ऐलची को दोबारा ग़तफान और ईनया के पास न भेजा लेकिन आप(स०) ने सब पर वाज़ेह कर दिया के तदब्बुर और हिकमते अमली के बग़ैर मुहासरा नही तोड़ा जा सकेगा।

खुदा हक़ परस्तों के साथ था। रसूले करीम(स०) ने अपने अल्लाह से मदद मांगी जो एक इन्सान के रूप में आप(स०) के सामने आ गई। ये थे नईम इब्ने मसऊद(र०)। इनका ताल्लुक़ ग़तफान के क़बीले के साथ था। नईम(र०) सरकर्दा शख़्सियत थे। खुदा ने इन्हें ग़ैर मामूली दिमाग़ अता किया था। तीन अहम क़बीलों -कुरैश, ग़तफान और बनू क़रीज़ा- पर इन का असर रसूख़ था। एक रोज़ नईम(र०) जो क़बीले ग़तफान में थे मदीना में रसूल ख़ुदा(स०) के सामने आन खड़े हुए।

"खुदा की क़सम, तू क़बीला-ए-ग़ैर का है"-रसूल अल्लाह(स०) ने फरमाया-"तू हम में से नहीं। तू यहां कैसे आ गया है?"

"मैं आप में से हूं"-नईम(र०) ने कहा-"मदीना में गवाह मौजूद हैं। मैं ने दरपर्दा इस्लाम कुबूल कर लिया था। अपने क़बीले के साथ इसी मक़सद के लिए आया था के आप(स०) के हुज़ूर हाज़िर हो जाऊंगा मगर मौक़ा न मिला। पता चला के आप(स०) ने मेरे क़बीले के सरदार और सालार को कुरैश से दोस्ती तर्क कर के वापस चले जाने का पैग़ाम भेजा था और आप(स०) ने इसका मुआवज़ा भी बता दिया था लेकिन आप ने बात को मज़ीद आगे न बढ़ाया।"

"अल्लाह की तुझ पर रहमत हो"-रसूले खुदा(स०) ने पूछा-"क्या तू बात को आगे बढ़ाने आया है?"

"नहीं मेरे अल्लाह के सच्चे नबी!"-नईम(र०) ने जवाब दिया-"मुझे आप(स०) के क़दमों में आना था। अहल-ए-मदीना पर मुश्किल का वक़्त आन पड़ा है। मैं अपनी जान ले के हाज़िर हुआ हूं। ये हुज़ूर के और इस्लाम के शैदाईयों के जिस काम आ सकती है हुज़ूर के क़दमों में पेश करता हूं...अपने लश्कर में से छुप छुप कर निकला हूं। खंदक़ में उतर तो गया लेकिन संतरियों की मौजूदगी में ऊपर आना खुदकुशी के बराबर था। ऊपर चढ़ना वैसे भी मुहाल था। बड़ी मुश्किल पेश आई। खुदा से आप के नाम पर इल्तिजा की। गिड़गिड़ा कर दुआ मांगी अल्लाह ने करम किया। संतरी आगे चले गए और मैं खंदक पर चढ़ आया।"

रसूले अकरम(स०) को नईम(र०) के मुताल्लिक़ बताया गया के ये किस हैसियत की शख़्सियत है। रसूले करीम(स०) ने उनके साथ दो चार बातें की तो आप को अंदाज़ा हो गया के नईम(र०) ऊंची सतह और अक्ल के इंसन हैं। आप(स०) ने नईम(र०) को बताया के मुहासरे ने जो हालात पैदा कर दिये हैं इनसे निकलने के लिए ज़रूरी हो गया है के कुरैश के लश्कर में जो मुख्तलिफ क़बायल शामिल हैं इन्हें कुरैश से बदज़न किया जाए। इसका तरीक़ा ये है के दो तीन क़बायल के साथ खुफिया मुहाएदे कर लिए जाऐं।

"या रसूल अल्लाह!-नईम(र०) ने कहा-"अगर मैं ये काम अपने तरीक़े से करूं तो क्या हुज़ूर मुझ पर ऐतमाद करेंगे?"

"तुझ पर अल्लाह की रहमत हो नईम!- रसूल अल्लह(स०) ने फरमाया- मैं तुझे और तेरे नेक इरादों को अल्लाह के सुपुर्द करता हूं।

"मैं वापस अपने क़बीले में चला जाऊंगा-नईम(र०) ने कहा- "लेकिन ये नहीं बताऊंगा के मैं मदीना में आया था। यहां से मैं काब बिन असद के पास जा रहा हूं...मेरे अल्लाह के रसूल! मेरी कामयाबी के लिए दुआ फरमायें।"

मदीना में रात को पहरे बड़े सख़्त थे। पीछे की तरफ ख़ंदक़ नहीं थी। उधर पहाड़ियों ने कुदरती दिफआ मुहैया कर रखा था। उधर पहरेदारों और गशती संतरियों की तादाद ज़्यादा रखी गई और शहर के किसी आदमी का भी उधर जाना मुश्किल था। रसूले अकरम(स०) ने नईम(र०) के साथ अपना एक आदमी भेज दिया था ताके कोई संतरी उन्हें रोक न ले ये आदमी नईम(र०) को मदीना से बाहर तक छोड़ कर वापस आ गया। रात का पहला पहर था जब नईम(र०) बनू क़रीज़ा की बस्ती में काब बिन असद के दरवाज़े पर पहुंचे। दरवाज़ा गुलाम ने खोला।

"तुम मुझे अच्छी तरह जानते हो ना काब?"-नईम(र०) ने पूछा।

"नईम बिन मसऊद(र०) को कौन नहीं जानता"-काब ने कहा-"ग़तफान के क़बीले को तुझ जैसे सरदार पर बहुत फख्र होगा....कहो नईम(र०)! रात के इस वक़्त मैं तुम्हारी क्या ख़िदमत कर सकता हूं?....मैं ने दस दिनों की मोहलत मांगी थी। अभी तो छ: दिन गुज़रे हैं। मैं ने मुसलमानों पर शब खून मारने के लिए आदमी तैयार कर लिए हैं..... क्या तुम यही मालूम करने आए हो?"

"मैं इसी सिलसिले में आया हूं"-नईम ने कहा-"तुम बेवकूफ हो काब! तुम ने कुरैश के साथ किस भरोसे पर मुहाएदा कर लिया है?.... मुझ से न पूछना के मेरे दिल में तुम्हारी हमदर्दी क्यो पैदा हुई है। मैं मुसलमानों का भी हमदर्द नहीं क्योंके मैं मुसलमान नही। तुम अच्छी तरह जानते हो। मेरे दिल में इन्सानियत की हमदर्दी है। मेरे दिल में हमदर्दी है तुम्हारी इन खूबसूरत और जवान बेटियों बीवीयों और बहनों की जो मुसलमानों की लोंडियां बन जायेंगी। तुम ने कुरैश से बड़ा ख़तरनाक मुहाएदा कर लिया है लेकिन इस की ज़मानत नहीं ली के अहल-ए-कुरैश तुम्हें मुसलमानों से बचा लेंगे। हम ने भी कुरैश के साथ मुहाएदा किया है लेकिन कुछ ज़मानत भी ली है।"

"क्या कुरैश जंग हार जायेंगे?"काब बिन असद ने पूछा।

"वो जंग हार चुके है"-नईम(र०) ने कहा- "क्या ये ख़ंदक़ इन्हे शहर पर हमला करने देगी?....कुरैश के लश्कर को भूक ने बेहाल करना शुरू कर दिया है। मेरा क़बीला भूक से परेशान हो गया है। मै नही चाहता के कल तुम मेरे क़बीले को बदनाम करो के ग़तफान तुम्हें मुसलमानों के रहम व करम पर छोड़ गए थे। तुम मुसलमानों पर हमला कर के इन्हें अपना दुश्मन बना लोगे और कुरैश और हम मुहासरा उठा कर वापस चले जाऐंगे। अपने दोनों क़बीलों बनू क़ीनक़आ और बनू नज़ीर का अन्जाम जो मुसलमानों के हाथों हुआ था वो तुम्हें याद होगा।"

काब बिन असद पर ख़ामोशी तारी हो गई।

"मैं जानता हूं तुम ने कुरैश से कितनी उजरत ली है"-नईम(र०) ने कहा-"लेकिन ये ख़ज़ाना जो तुम उनसे ले रहे हो और ये खूबसूरत लड़कियां जो हुय्यी बिन ख़बत ने तुम्हारे पास भेजी हैं, ये सब मुसलमानों की मिल्कियत हो जाएंगी और तुम्हारा सर तुम्हारे तन से जुदा होगा।"

"तो क्या मैं कुरैश से मुहाएदा तोड़ दूं?"-काब ने पूछा।

"मुहाएदा न तोड़ो"-नईम(र०)ने इन्हें कहा -इन्हें अभी नाराज़ न करो लेकिन अपनी हिफ़ाज़त की उनसे ज़मानत लो। अरब के रिवाज के मुताबिक इन्हें कहो के इनके ऊंचे ख़ानदानों के कुछ आदमी तुम्हें यरग़माल के तौर पर दे दें। अगर उन्होंने अपने चन्द एक मोअज़्ज़िज़ और सरकर्दा आदमी दे दिऐ तो ये सुबूत होगा के वो मुहाएदे में मुख्लिस हैं।"

"हां, नईम!"-काब बिन असद ने कहा-"मैं उनसे यरग़माल में आदमी मागूंगा।"

❁

नईम(र०) बिन मसऊद रात के वक़्त पहाड़ियों में चले जा रहे थे। उनकी मंज़िल कुरैश की ख़ेमागाह थी जो कई मील दूर थी। सीधा रास्ता छोटा था लेकिन रास्ते में ख़ंदक़ थी। वो बड़ी दूर का चक्कर काट कर जा रहे थे। वो गुज़िश्ता रात से मुसलसल चल रहे थे मगर छुप छुप कर चलने और आम सफर में बहुत फर्क़ होता है। नईम(र०) जब अबु सुफ़यान के पास पहुंचे तो एक और रात शुरू हो चुकी थी। उस वक़्त उनकी हड्डियां भी दुख रही थी और उनकी ज़बान सूख गई थी। एक ही बार बे शुमार पानी पी कर वो बोलने के क़ाबिल हुए। अबु सुफ़यान नईम(र०) की दानिशमंदी और तदब्बुर से मुतास्सिर था।

"तुम्हारी हालत बता रही है के तुम अपने लश्कर से नहीं आए"-अबु सुफ़यान ने नईम से पूछा-"कहां से आ रहे हो?"

"बहुत दूर से" -नईम(र०)बिन मसऊद ने जवाब दिया- "जासूसी की एक मुहिम से आ रहा हूं। तुम लोग बनू क़रीज़ा के साथ मुहाएदा कर आए हो। क्या तुम भूल गए थे के यहूदियों को हमारे साथ जो दिलचस्पी है वो सिर्फ इसलिए है के वो इस्लाम को हमारे हाथों यहीं पर ख़त्म करा देना चाहते हैं?....मैं बनू क़रीज़ा के दो दोस्तों से मिल आया हूं और मुझे मदीना का भी एक पुराना दोस्त मिल गया था मुझे पता चला है के काब बिन असद ने मोहम्मद का साथ नहीं छोड़ा बल्कि काब ने मुसलमानों को खुश करने का एक नया तरीक़ा सोचा है तुम ने उसे कहा के वो मदीना में मुसलमानों पर हमला करे। वो अब तुम से कुरैश के सरकर्दा ख़ानदानों के चन्द अफ़राद यरग़माल में ज़मानत के तौर पर रखने लिए मांगेगा मगर इन्हे वो मुसलमानों के हवाले कर देगा और मुसलमान इन अफ़राद को क़त्ल कर देंगे, फिर यहूदी मुसलमानों के साथ मिल जाएंगे और दोनों हम पर हमला करेंगे....तुम्हें ख़बरदार करने आया हूं के यहूदियों को यरग़माल में अपना एक भी आदमी न देना।"

"खुदा की क़सम नईम(र०) !" -अबु सुफयान ने कहा- "अगर तुम्हारी ये बात सच निकली तो मैं बनू क़रीज़ा की बस्तियां उजाड़ दूंगा। काब बिन असद की लाश को मैं अपने घोड़े के पीछे बांध कर घसीटता हुआ मक्का ले जाऊंगा। उसने क्या सोच कर हमें धोका देने की कोशिश की है?"

"उसकी सोच पर आप ने शराब और हसीन लड़कियों का तिलिस्म तारी कर दिया है।" -नईम(र०) बिन मसऊद ने कहा- "क्या शराब और औरत किसी दिल में खुलूस और दियानतदारी रहने देती है?"

"उसे शराब और औरत किस ने दी है?" -अबु सुफ़यान ने कहा- "क्या बदबख़्त काब इतनी सी बात नहीं समझ सका के मैं ने उसके साथ जो मुहायदा किया है, उसमें उसकी कौम और उसके मज़हब का तहफ़्फ़ुज़ है? अगर मोहम्मद(स०) का मज़हब इसी तरह फैलता चला गया तो यहूदियत ख़त्म हो जाएगी।"

"तुम यहूदियों को अभी तक नहीं समझ सके" -नईम(र०) ने कहा- वो अपने दुश्मन पर भी ज़ाहिर नहीं होने देते के उसके दुश्मन हैं। हुय्यी बिन ख़तब भी यहूदी है। उसने तुम्हारी तरफ से काब को शराब का निस्फ मटका और निहायत हसीन लड़कियां दी हैं। मैं जब काब से मिला तो शराब में बदमस्त था और दोनो लड़कियां नीम बरहना हालत में उसके पास थीं। उसने बदमस्ती के आलम में मुझ से कहा वो अहले कुरैश को उंगलियों पर नचा रहा है। नईम(र०)- अबु सुफयान ने तलवार पर हाथ मार कर कहा "मैं मदीना से मुहासरा उठा कर बनू क़रीज़ा की नसल ख़त्म कर दूंगा। उसकी ये जुर्रत के कबीला कुरैश के सरकर्दा चन्द अफ़राद को ज़मानत के तौर

पर यरग़माल बना कर रखना चाहता है?"

"तुम्हें इतना नही भड़कना चाहिए अबु सुफयन!"-नईम(र०) ने कहा-"ठंडे दिल से सोचो और फैसला कर लो के काब को तुम एक भी आदमी यरग़माल में नही दोगे।"

"मै फैसला कर चुका हूं"-अबु सुफयान ने कहा-"क्या तुम अहल-ए-मदीना की कोई ख़बर दे सकते हो? वो किस हाल में हैं। ? वो कब तक भूक बर्दाश्त करेंगे?"

"मै हैरान हूं अबु सुफयान!"-नईम(र०) ने कहा-"के अहल-ए-मदीना खुश और मुतमइन हैं। वहां भूक के काई आसार नहीं। खुराक़ की कमी ज़रूर है लेकिन अहल-ए-मदीना का जोश और जज़बा ऐसा है जैसे उन्हें खुराक की ज़रूरत ही नहीं।"

"इसका मतलब ये हुआ के हमारे मुहासरे का उन पर कोई असर नही हुआ"-अबु सुफयान ने कहा।

"बिलकुल नहीं"-नईम(र०)बिन मसऊद ने कहा-"उन पर मुहासरे का ये असर है के वो जोश व खरोश से फटे जा रहे हैं।"

"हमारे यहूदी जासूस हमें बता रहे हैं के मदीना में खुराक तक़रीबन ख़त्म हो चुकी है"-अबु सुफयान ने ज़रा परेशान हो कर कहा।

"वो झूट बोलते हैं"-नईम(र०) ने उसे और ज़्यादा परेशान करने के लिए कहा-"मैं तुम्हें फिर कहता हूं के यहूदियों पर भरोसा न करना। ये बता कर के मुसलमानों की हालत अच्छी नही, वो तुम्हें उकसा रहे हैं के तुम मुसलमानों को कमज़ोर समझ कर जल्द ही से खंदक उबूर कर लो और मदीना पर हमला कर दो। वो अहल-ए-कुरैश और मेरे क़बीले ग़तफान को मुसलमानों के हाथों तबाह कराना चाहते हैं।"

"मै उनकी नीयत मालूम कर लेता हूं"-अबु सुफयान ने कहा और अपने गुलाम को आवाज़ दी।

"अकरमा और ख़ालिद को बुलाओ"-अबु सुफयान ने गुलाम से कहा।

नईम(र०)बिन मसऊद ये कह कर चले गए- "मैं अपने सरदार ग़तफान को खबरदार करने जा रहा हूं"

❁

ख़ालिद और अकरमा आए तो अबु सुफयान ने उन्हे बताया के नईम(र०) उसे काब बिन असद के मुताल्लिक़ क्या बता गए हैं।

"ग़ैरों के सहारे ले कर लड़ाईयां नहीं लड़ी जा सकती अबु सुफयान!"-ख़ालिद ने कहा- "आप ने ये तो सोचा ही नही के बनू क़रीज़ा मुसलमानों के साए में बैठे हैं। वो ज़मीन के नीचे से मुसलमानों पर वार कर सकते हैं लेकिन वो हैं तो मुसलमानों के रहम व करम पर। अगर आप लड़ने आए हैं तो जंगजूओं की तरह लड़ें।"

"क्या ये सही नहीं होगा के तुम दानों में से कोई काब बिन असद के पास जाए?"-अबु सुफयान ने पूछा-"हो सकता है उसने नईम(र०) से कहा हो के वो हम से यरग़माल मांगेगा लेकिन तुम जाओ तो वो ऐसी शर्त पेश न करे?.....क्या तुम्हें नज़र नहीं आ रहा है के तमाम का तमाम लश्कर नीम फाक़ा कशी की हालत में है? क्या ये लश्कर ख़ंदक़ उबूर कर सकता है?....यही एक सूरत है के काब मदीना के अंदर मुसलमानों पर शब खून मारने का इन्तेज़ाम करे।"

"मैं जाऊंगा"-अकरमा ने कहा-"मैं आप को ये भी बता देता हूं के काब बिन असद ने यरग़माल की शर्त पेश की तो में आप से पूछे बग़ैर मुहाएदा मंसूख़ कर आऊंगा।"

"क्या में भी अकरमा के साथ चला जाऊं?"-ख़ालिद ने अबु सुफयान से पूछा-"इसका अकेले जाना ठीक नहीं।"

"नहीं"-अबु सुफयान ने कहा-"अगर ख़तरा है तो मैं दो सालार ज़ाय नहीं कर सकता। अकरमा अपनी हिफाज़त के लिए जितने लश्करी साथ ले जाना चाहता है ले जाए।"

अकरमा उसी वक़्त रवाना हो गया। उसके साथ चार लश्करी थे। उसे बड़ी दूर का चक्कर काट कर बनू क़रीज़ा तक पहुंचना था। वो जुम्अे की रात और तारीख़ 14 मार्च 627ई० थी जब अकरमा ख़ंदक़ से दूर दूर चलता शेख़ैन के सिसिला-ए-कोह में दाख़िल हुआ और काब बिन असद के घर पहुंचा काब को मालूम था के अकरमा क्यों आया है।

"आओ !"-काब बिन असद ने कहा-"मैं जानता हूं तुम क्यों आए हो। तुम्हारे आने की ज़रूरत नहीं थी। मैंने दस दिन की मोहलत मांगी थी।"

काब बिन असद ने अपने ग़ुलाम को आवाज़ दी। ग़ुलाम आया तो उसने ग़ुलाम से शराब और पियाले लाने को कहा।

"पहले मेरी बात सुन लो काब!"-अकरमा ने दो टूक लहजे में कहा-"मैं शराब पीने नही आया। मुझे बहुत जल्दी वापस जाना है हम मुहासरे को और ज़्यादा तूल नहीं दे सकते हम कल मदीने पर हमला कर रहे है। तुम्हारे साथ हमारा जो

मुहाएदा हुआ है उसके मुताबिक तुम मदीना में उन जगहों पर जो हम ने तुम्हें बताई है। कल से हमले शुरू कर दो हमें ये भी मालूम हुआ है के तुम ने ज़ाहिरी तौर पर हमारे साथ मुहाएदा किया है लेकिन दरपर्दा तुम ने वो मुहाएदा क़ायम रखा है जो मुसलमानों के साथ तुम ने किया है।"

इतने में एक निहायत हसीन लड़की शराब की सुराही और पियाले उठा के कमरे में दाखि़ल हुई। वो अकरमा को देख कर मुस्कुराई। अकरमा ने उसे देखा तो उसके चहरे पर संजीदगी का तास्सुर और ज़्यादा गहरा हो गया।

"काब!"-अकरमा ने कहा-"तुम ने अपना मज़हब और अपनी ज़बान इन चीज़ों के इवज़ बेच डाली है जिन्होंने कभी किसी का साथ नहीं दिया।"

काब बिन असद ने लड़की को इशारा किया तो वो चली गई।

"मेरे अज़ीज़ अकरमा!"-काब ने कहा-"मैं तुम्हारे चहरे पर रऊनत के आसार देख रहा हूं। साफ पता चलता है के तुम मुझे अपना ग़ुलाम समझ कर हुक्म देने आए हो मैं ने मुसलमानों के साथ जो मुहाएदा किया था वो बनू क़रीज़ा के तहफ़्फ़ुज़ और सलामती के लिए किया गया था। और मैं ने जो मुहाएदा तुम्हारे साथ किया है। वो तुम्हारी फ़तह और मुसलमानों की शिकस्त के ख़ातिर किया है। मुसलमानों को खत्म करना मेरे मज़हब का हुक्म है तुम्हारे साथ मुहाएदा निभाना इसी सिलसिले की एक कोशिश है। अपना मज़हबी फ़रीज़ा अदा करने के लिए मैं तुम्हें इस्तेमाल करूंगा। हुय्यी बिन ख़तब से मैंने कह दिया था के अहल कुरैश और अहल-ए-ग़तफान मुझे बनू क़रीज़ा की सलामती की ज़मानत दें ताके ऐसा न हो के तुम लोग नाकाम हो जाओ और मुसलमान हम से ज़ालिमाना इन्तेक़ाम लें।"

नईम(र०)बिन मसऊद ने जो चिंगारी इन लोगों के दरमियान फैंक दी थी वो अकरमा के सीने में सुलग उठी। नईम(र०) ने अकरमा के ज़हन में अबु सुफयान की मारफत पहले ही डाल दिया था के काब अफराद की सूरत में ज़मानत मांगेगा। काब की ज़बान से ज़मानत का लफ़्ज़ सुनते ही अकरमा भड़क उठा।

"क्या तुम्हें हम पर ऐतबार नहीं?"-अकरमा ने गुसेली आवाज़ में कहा-"क्या तुम ये समझते हो के हम शायद भूल गए हैं के मोहम्मद(स०)हमारा और तुम्हारा मुश्तरका दुश्मन है?"

"मैं ये नहीं कहता जो तुम कह रहे हो"-काब बिन असद ने कहा-"लेकिन मैं ये ज़रूर कहूंगा के अपने मुश्तरका दुश्मन को जितना मैं जानता हुं इतना तुम नहीं जानते। मैं ऐतराफ करता हूं के जो अक्ल खुदा ने मोहम्मद(स०) को दी है वो हम में से किसी को नहीं दी.....मैं इसकी ज़मानत चाहता हूं।"

"कहो, तुम्हें कैसी ज़मानत चाहिए?" –अकरमा ने पूछा।

"क़बीला क़ुरैश और ग़तफान के चन्द एक सरकर्दा अफराद हमारे पास भेज दो" –काब बिन असद ने कहा– "मैं कोई नई बात नही कह रहा अकरमा! ये हमारा तुम्हारा दस्तूर है। इस रिवाज और शर्त से तुम वाकिफ़ हो। मैंने ज़मानत के तौर पर यरग़माल में लेने वाले आदमियों की तादाद नही बताई। ये तादाद तुम खुद मुक़र्रर कर लो। तुम जानते हो के मुहाएदे की ख़िलाफ वरज़ी करोगे तो तुम्हारे इन सरकर्दा अफराद को हम क़त्ल कर देंगे।"

"इन्हें तुम क़त्ल नहीं करोगे" –अकरमा ने भड़की हुई आवाज़ कहा– "तुम इन्हें मुसलमानों के हवाले कर दोगे।"

"क्या कह रहे हो अकरमा?" –काब बिन असद ने हैरत और परेशानी के लहजे में पूछा– "क्या तुम मुझे इतना रज़ील समझते हो के मैं तुम्हें ये धोका दूंगा के तुम्हारे क़बीलों के सरदारों को मुसलमानों के हाथें क़त्ल करवाऊंगा? मुझ पर ऐतबार करो।"

"यहूदी पर ऐतबार करना ऐसा ही है जैसे किसी ने सांप पर ऐतबार कर लिया हो" –अकरमा ने गुस्से के आलम में कहा– "अगर तुम अपने आप को इतना ही क़ाबिल–ए–एतमाद समझते हो तो कल मदीना में उन छोटे क़िलो पर हमले शुरू कर दो जहां मुसलमानों ने अपनी औरतों और बच्चों को रखा हुआ है।"

"कल?" –काब ने कहा– "कल हफ़्ते का दिन है। हफ़्ते का दिन यहूदियों का एक मुक़द्दस दिन होता है जिसे हम 'सुब्त' कहते हैं इस रोज़ इबादत के सिवा हम और कोई काम नहीं करते। कोई यहूदी सुब्त के दिन कोई काम या कारोबार कर ले या किसी पर हमला करे तो खुदा–ए–यहूदा उसे इन्सान से खंज़ीर या बन्दर की शक्ल में तबदील कर देता है।"

अकरमा देख चुका था के काब बिन असद की नीयत ठीक नहीं। वो शराब पीता चला जा रहा था। अकरमा ने शराब पीने से इन्कार कर दिया था। उसने अबु सुफयान से कहा था के वो फैसला कर के ही वापस आएगा।

"तुम कल हमला करो या एक दिन बाद करो हम तुम्हारी नीयत को अमली सूरत में देख कर फैसला करेंगे के तुम्हें यरग़माल में अपने आदमी दिये जाऐं या न दिये जाऐं" –अकरमा ने कहा– "उससे पहले हम तुम्हें एक आदमी भी नहीं देंगे।"

"मैं कह चुका हूं के यरग़माल के बग़ैर हम कुछ नहीं करेंगे" –काब बिन असद ने कहा– "जूं ही तुम्हारे आदमी हमारे पास पहुंच जाऐंगे हम तुम्हारी मंशा के मुताबिक़ मदीना के अंदर खलबली बचा देंगे। तुम देखना हम मोहम्मद(स०) की पीठ में किस

तरह छुरा घोंपते है।"

अकरमा उठ खड़ा हुआ और गुस्से में बोला–"तुम बदतीनत हो। तुम्हारी नीयत साफ होती तो तुम कहते के मुझे किसी ज़मानत की ज़रूरत नहीं, आओ मिल कर मुसलमानों को मदीना के अन्दर हमेशा के लिए ख़त्म कर दें।"

"मुझे अगर हुक्म ही मानना है तो मैं मोहम्मद(स०) का हुक्म क्यों न मान लूं"–काब बिन असद ने अकरमा का गुस्सा देखते हुए कहा–"हम मुसलमानों के साथ रहते हैं। हमें जो तहफ्फुज़ उनसे मिल सकता है वो तुम नहीं दे सकोगे।"

मोअररिख़ इब्ने हशाम और इब्ने साद ने लिखा है के नईम(र०) बिन मसऊद का छोड़ा हुआ तीर निशाने पर लगा। अकरमा गुस्से के आलम में काब बिन असद के घर से निकल आया। यहूदियों और अहल–ए–कुरैश का मुहाएदा जो अगर बरक़रार रहता तो मुसलमानों की कमर टूट जाती, काब के घर के अन्दर ही टूट गया।

❁

जब अकरमा काब बिन असद से मिलने जा रहा था, उस वक्त नईम(र०)बिन मसऊद अपने क़बीले के सरदार ग़तफान के पास बैठे हुए थे। उसके साथ भी उन्होंने काब बिन असद के मुताल्लिक़ वही बातें कीं जिन बातों से वो अबु सुफयान को भड़का चुके थे। अबु सुफयन ने गुस्से में आकर अकरमा को बुला लिया था, ग़तफान ने अपने सालार ईनया को बुला लिया।

"क्या तुम ने सुना है के काब बिन असद हमें क्या धोका दे रहा है?"–ग़तफान ने ईनया से कहा–"–वो हम से यरग़माल में रखने के लिए सरकर्दा अफ़राद मांगता है। क्या ये हमारी तौहीन नहीं?"

"सरदार ग़तफान!"–सालार ईनया ने कहा–"मैं पहले तुम्हें कह चुका हूं के मेरे साथ मैदान–ए–जंग की बात करो। मैं आमने सामने की लड़ाई लड़ना जानता हूं। मुझे उस शख़्स से नफ़रत होगी जो पीठ के पीछे आकर वार करता है और मुझे उस शख़्स से भी नफ़रत होगी जिसकी पीठ पर वार होता है....और फिर तुम यहूदियों पर ऐतबार करते हो? अगर काब बिन असद कहेगा के मुझे अपने क़बीले का सरदार ग़तफान यरग़माल में दो, तो क्या मैं तुम्हें उसके हवाले कर दूंगा।?"

"मैं उस शख़्स का सर उड़ा दूंगा जो ऐसा मुतालबा करेगा"–नईम(र०)बिन मसऊद ने कहा–" मैं इन यहूदियों को अपने क़बीले की एक भेड़ या बकरी भी न दूंगा... खुदा की क़सम काब ने हमारी तौहीन की है।"

"अबु सुफयान क्या कहता है?"–ग़तफान ने नईम(र०) से पूछा।

"ये बात सुन कर अबु सुफयान गुस्से से कांपने लगा था"–नईम(र०) ने कहा...

"अबु सुफयान कहता है के वो काब बिन असद से इस तौहीन का इन्तेक़ाम लेगा।"

"और उसे इन्तेक़ाम लेना चाहिए"–सालार ईनया ने कहा–"बनू क़रीज़ा की हैसियत ही क्या है। वो हमारे और मुसलमानों के दरमियान इस तरह पिस जाएंगे के उनका वजूद ही ख़त्म हो जाएगा।"

❁

ख़ालिद को आज मदीना की तरफ जाते हुए वो वक़्त याद आ रहा था जब अकरमा बनू क़रीज़ा की बस्ती से वापस आया था। ख़ालिद दौड़ता हुआ उस तक पहुंचा था। उधर से अबु सुफयान घोड़ा दौड़ाता गया। अकरमा के चहरे पर गुस्से और थकन के गहरे आसार थे।

"क्या ख़बर लाए हो?–अबु सुफयान ने उससे पूछा।

"खुदा की क़सम अबु सुफयान! मैं ने काब से ज़्यादा बदतीनत इन्सान पहले कभी नहीं देखा था"–अकरमा ने घोड़े से कूद कर उतरते हुए जवाब दिया–"नईम(र०) ने ठीक कहा था"।

"क्या उसने हमसे यरग़माल में रखने के लिए आदमी मांगे हैं?"–ख़ालिद ने पूछा था।

"हां ख़ालिद!"–अकरमा ने कहा था–"उसने मुझे शराब पेश की और मेरे साथ इस तरह बोला जैसे हम उसके मक़रूज़ हैं....उसने कहा के पहले यरग़माल में अपने आदमी दो फिर मैं मदीना के अन्दर शब खून मारूंगा।"

क्या तुम ने उसे कहा नहीं के अहल-ए-कुरैश के सामने बनू क़रीज़ा की हैसियत ऊंट के मुक़ाबले में एक चूहे की है?–ख़ालिद ने कहा था–"क्या तुम ने उसका सर उसके कंधों से उतार नहीं दिया?"

"मैंने अपना हाथ बड़ी मुश्किल से रोका था–अकरमा ने कहा था– "उसके साथ हमारा जो मुहाएदा हुआ था वो मैं तोड़ आया हूं।"

"तुम ने अच्छा किया– अबु सुफयान ने दबी दबी आवाज़ में कहा था–"तुम ने अच्छा किया"–और वो परे चला गया था।

ये कोई बहुत पुराना वाक़ेया नहीं था। डेढ दो साल पहले की ही बात थी। आज जब ख़ालिद मदीना की तरफ जा रहा था तो ये जाना पहचाना रास्ता उसे अजनबी सा लग रहा था। कभी उसे ऐसे महसूस होने लगता जैसे वो खुद अपने लिए अजनबी हो गया हो। उसे अबु सुफयान का अफसुर्दा चेहरा नज़र आने लगा। ख़ालिद ने महसूस कर लिया था के अबु सुफयान मदीना पर हमले से मुंह मोड़ रहा है। ख़ालिद और अकरमा वहीं खड़े रह गए थे।

"क्या सोच रहे हो खालिद?"-अकरमा ने पूछा था।

"क्या तुम मेरी ताईद नहीं करोगे के मैं उस शख़्स अबु सुफयान की मौजूदगी को सिर्फ इस लिए बर्दाश्त कर रहा हूं के ये मेरे क़बीले का सरदार है?" ख़ालिद ने अकरमा को जवाब दिया था-"अहल-ए-कुरैश को अबु सुफयान से बढ़ कर बुज़दिल सरदार कोई नहीं मिलेगा....तुम पूछते हो मैं क्या सोच रहा हूं...मैं और ज़्यादा इंतेज़ार नही कर सकता। मैं ने खंदक़ को एक सिरे से दूसरे सिरे तक देखा है। एक जगह खंदक़ तंग है और ज़्यादा गहरी भी नहीं। हम वहां से खंदक के पार जा सकते है। अगर तुम मेरा साथ दो तो मैं आज ही अभी उस जगह से चन्द सवार खंदक़ के पार ले जाना चाहता हूं। अबु सुफयान किसी ग़ैबी मदद और सहारे का इंतेज़ार करना चाहता है तो करता रहे।"

"मैं तुम्हारा साथ क्यों न दूंगा ख़ालिद?"-अकरमा ने कहा था-"क्या मैं मुसलमानों के उन क़हक़हों को बर्दाश्त कर सकूंगा जो उस वक़्त बुलंद होंगे जब हम यहां से लड़े बग़ैर वापस जाएंगे?...चलो, मैं तुम्हारे साथ हुं।"

❁

वो जगह ज़बाब की पहाड़ी के मग़रिब और सुलअ की पहाड़ी के मशरिक़ में थी जाहां खंदक़ की चौड़ाई इतनी थी के घोड़ा उसे फलांग सकता था। ज़रूरत शहसवार की थी। पियादे खंदक़ में उतर कर ऊपर चढ़ सकते थे। उसी जगह के क़रीब तक़रीबन सामने मुसलमानों की खेमागाह थी।

"पहले मेरे सवार खंदक़ फलांगेंगे"-अकरमा ने कहा-"लेकिन अभी हम तमाम का तमाम सवार दस्ता नहीं गुज़ारेंगे। पार जाकर मुसलमानों को एक एक सवार के मुक़ाबले के लिए लल्कारेंगे। वो इस रिवाज की खिलाफ वर्ज़ी नहीं करेंगे...
.मेरे साथ आओ खालिद! मैं अपने मुंतखिब सवार आगे लाऊंगा। तुम अभी खंदक़ के पार न जाना। अगर हम दानों मारे गए तो अहल-ए-कुरैश को सिवाए ज़िल्लत के कुछ नहीं मिलेगा। अबु सुफयान का दिल मुहासरा उठा चुका है। वो लड़ने के जज़्बे को सर्द कर चुका है।

वो मुक़ाम जहां खंदक़ घोड़े की लम्बी छलांग से फलांगी जा सकती थी ऐसी ओट में था जिसे गश्ती संतरी क़रीब आकर ही देख सकते थे। अकरमा ने सात सवार मुंतखिब कर लिए थे। इन में एक क़वी हैकल बल्कि देव क़ामत शख़्स उमरो बिन अब्दूद भी था जिस की धाक उसकी जिसामत की बदोलत दूर दूर तक फैली हुई थी। अकरमा इन सात सवारों को मुक़र्रर मुक़ाम से कुछ दूर तक इस अंदाज़ से ले गया जैसे घोड़ों को टहलाई के लिए ले जा रहे हों। मुसलमानों के संतरियों को इन पर शक न

हुआ।

"सब से पहले मैं ख़ंदक़ फलांगूंगा"-अकरमा ने चलते चलते अपने सात सवारों से कहा।

"क्या ये ठीक नहीं होगा के सब से पहले मेरा घोड़ा ख़ंदक़ को फलांगेगा? उमरो बिन अब्दूद ने कहा।

"नहीं उमरो!"-अकरमा ने कहा-"पहले मैं जाऊंगा। अगर मेरा घोड़ा ख़ंदक़ में गिर पड़ा तो ख़ंदक़ फलांगने की कोशिश न करना। तुम्हारा सालार अपनी जान की कुरबानी देगा।"

ये कह कर अकरमा ने घोड़े की बाग को झटका दिया। घोड़े का रूख़ ख़ंदक़ की तरफ हुआ तो अकरमा ने ऐड़ लगा दी। अरबी नसल का घोड़ा हवा से बातें करने लगा। अकरमा ने लगाम और ढीली कर दी और घोड़े की पीठ से उठा और आगे को झुक गया। घोड़ा हवा में बुलंद हो गया। ख़ालिद कुछ दूर खड़ा देख रहा था। क़बीला क़ुरैश के बहुत से लश्करी देख रहे थे। ज़मीन व आसमान देख रहे थे-तारीख़ देख रही थी!

घोड़े के अगले पांव ख़ंदक़ के दूसरे किनारे से कुछ आगे और पिछले पांव ऐन किनारे पर पड़े। घोड़ा रफ्तार के ज़ोर पर आगे चला गया। उसकी अगली टांगें दोहरी हो गईं। उसका मुंह ज़मीन से लगा। अकरमा गिरते गिरते बचा। घोड़ा भी संभल गया और अकरमा भी। उसे अपने पीछे लल्कार सुनाई दी।

अकरमा ने पीछे देखा। उमरो बिन अब्दूद का घोड़ा हवा में उड़ा आ रहा था। उमरो रकाबों पर खड़ा आगे को झुका हुआ था। किसी को तवक़्क़ो नहीं थी के इतने वज़नी सवार के नीचे घोड़ा ख़ंदक़ फलांग जाएगा लेकिन घोड़ा उसी जगह जा पड़ा जहां अकरमा का घोड़ा गिरा था। उमरो के घोड़े की टांगे ऐसी दोहरी हुईं के मुंह के बल गिरा और एक पहलू पर लढ़क गया। उमरो घोड़े की पीठ से लुड़क कर क़लाबाज़ियां खाता गया। एक लम्हे में घोड़ा उठ खड़ा हुआ। उधर उमरो उठा और पलक झपकते घोड़े पर सवार हो गया।

उसके पीछे अकरमा के दो सवार इक्ळे चले आ रहे थे। ख़ंदक़ के किनारे पर आ कर दोनों सवारों ने अपने घोड़ों की पीठें खाली कर दी थीं और उनकी गर्दनों पर झुके हुए थे। दोनों घोड़े ख़ंदक़ फलांग आए।

अलहल-ए-क़ुरैश के लश्कर ने दाद व तहसीन के नारे लगाए। इस शोर से मुसलमान पहरेदार दौड़े आए। इतने में अकरमा के दो और घोड़े अपने सवारों को उठाए ख़ंदक़ के किनारे से हवा में उठे।। उनके पीछे सात में से बाक़ी सवारों ने भी

अपने घोड़ों को ऐड़ लगा दी। तमाम घोड़े ख़ंदक़ फलांग आए।

"ठहरो"-अकरमा ने मुसलमान संतरियों को बुलंद आवाज़ में कहा-"कोई और घोड़ा ख़ंदक़ के इस तरफ नहीं आएगा। मोहम्मद(स०) को बुलाओ। तुम में जो सब से ज़्यादा बहादुर है उसे लाओ। वो मेरे एक आदमी का मुक़ाबला कर के गिरा ले तो हम सब को क़त्ल कर देना....खुदा की क़सम हम तुम्हारा खून इस रेत पर छिड़क कर वापस चले जाएँगे।"

۞

मुसलमानों की इजतमाअ गाह में खलबली बपा हो चुकी थी। एक शोर था-"कुरैश और ग़तफान ने ख़ंदक़ उबूर कर ली है....मुसलमानो! तुम्हारे इम्तेहान का वक्त आ गया है....होशियार....ख़बरदार....दुश्मन आ गया है।"

रसूल अल्लाह(स०) ने मुसलमानों को बे क़ाबू न होने दिया। आप(स०) ने देख लिया था के अहल-ए-कुरैश ख़ंदक़ के पार खड़े क़हक़हे लगा रहे थे वो मुसलमानों का मज़ाक़ उड़ा रहे थे। फब्तियां भी कस रहे थे। रसूले करीम(स०) उस जगह पहुंचे जहां अकरमा और उसके सवार खड़े लल्कार रहे थे। रसूले करीम(स०) के साथ हज़रत अली(र०) भी थे। आप(स०) ने सूरत-ए-हाल का जायज़ा लिया तो समझ गए के अकरमा इन्फरादी मुक़ाबले के लिए आया है। आप(स०) को और हज़रत अली(र०) को देख कर उमरो बिन अब्दूद ने अपना घोड़ा आगे बढ़ाया।

"क़सम है हुब्ल और उज़ा की!"-उमरो ने लल्कार कर कहा-"तुम में मुझे कोई एक भी नज़र नहीं आ रहा जो मेरे मुक़ाबले में उतर सके।"

मोअरिख़ ऐनी शाहिदों के हवाले से लिखते हैं के मुसलमानों की ख़ामोशी गवाही दे रही थी के उन पर उमरो का ख़ौफ़ तारी हो गया है। वजह ये थी के उमरो की जिसामत और ताक़त के ऐसे ऐसे क़िस्से मशहूर थे जैसे वो माफूकुल फितरत ताक़त का मालिक हो। देखा शायद किसी ने भी नहीं था लेकिन सब कहते थे के उमरो घोड़े को अपने कंध पर उठा सकता है और वो पांच सौ घुड़ सवारों को अकेला शिकस्त दे सकता है। उसके मुताल्लिक़ हर कोई तस्लीम करता था के उसे न कोई गिरा सका है न कोई गिरा सकेगा।

"मैं जानता हूं तुम में से कोई भी आगे नहीं आएगा"-उमरो बिन अब्दूद की लल्कार एक बार फिर गरजी। ख़ंदक़ के पार कुरैश का क़हक़हा बुलंद हुआ और कई फब्तियां सुनाई दी।

हज़रत अली (र०) ने रसूले खुदा(स०) की तरफ देखा। आप(स०) ने अपना अमामा सर से उतारा और हज़रत अली(र०) के सर पर बांध दिया, फिर अपनी

तलवार हज़रत अली(र०) को दी। मोअररि़ख़ इब्ने साद ने लिखा है के रसूले करीम(स०) की सरगोशी सुनाई दी-"अली(र०) का मददगार तू ही है मेरे अल्लाह!"

मोअररि़ख़ ने इस तलवार के मुताल्लिक़ जो रसूले अकरम ने हज़रत अली(र०) को दी थी लिखा है के ये कु़रैश के एक मशहूर जंजू मुनब्बा बिन हजाज की थी। वो बदर की लड़ाई में मारा गया था। फातेह मुजाहेदीन ने ये तलवार हुज़ूर को पेश की थी। आप(स०) ने इसके बाद यही तलवार अपने पास रखी। अब आप(स०) ने वही तलवार हज़रत अली(र०) को दे कर अरब के एक देव क़ामत के मुक़ाबले में उतारा। ये तलवार तारीख़-ए-इस्लाम में जु़लफेक़ार के नाम से मशहूर हुई।

हज़रत अली(र०) उमरो बिन अब्दूद के सामने जा खड़े हुए।

"अबु तालिब के बेटे!"-उमरो जो घोड़े पर सवार था, हज़रत अली(र०) से मुख़ातिब हुआ-"क्या तुम भूल गए हो के तुम्हारा बाप मेरा कितना गहरा दोस्त था? क्या ये मेरे लिए बहुत बुरा फेल नहीं होगा के मैं अपने अज़ीज़ दोस्त के बेटे को क़त्ल कर दूं?"

"ऐ मेरे बाप के दोस्त!" हज़रत अली(र०) ने लल्कार कर जवाब दिया-"हमारी दोस्ती ख़त्म हो चुकी है। खुदा की क़सम, मैं तुम्हें सिर्फ एक बार कहूंगा के अल्लाह को बरहक़ और मोहम्मद(स०) को अल्लाह का रसूल तस्लीम कर लो और हम में शामिल हो जाओ।"

"तुम ने एक बार कह लिया है"-उमरो ने कहा-"मैं दूसरी बार ये बात नहीं सुनूंगा....मैं ये भी कहूंगा के मैं तुम्हें क़त्ल नहीं करना चाहता।"

"मैं तुम्हें क़त्ल करना चाहता हूं उमरो!"-हज़रत अली(र०) ने कहा-"उतर घोड़े से और आ मेरे मुक़ाबले में और बचा अपने आप को इस तलवार से जो मुझे अल्लाह के रसूल(स०) ने अता की है।"

❁

उमरो के मुताल्लिक़ मोअररि़ख़ लिखते हैं के वो वहशी था। जब गुस्से में आता था तो उसका चेहरा ग़ज़बनाक हो कर दरिंदों जैसा हो जाता था। वो घोड़े से कूद कर उतरा और तलवार सूंत कर हज़रत अली(र०) पर पहला वार इतनी तेज़ी से किया के देखने वाले ये समझे के उसकी तलवार ने अली(र०) को काट दिया है। हज़रत अली(र०) ने हर वार ग़ैर मुतावक्क़े पैतरा बदल कर बचाया। उमरो ने ये तो सोचा ही नहीं था के जिस जिसामत और ताक़त पर उसे इतना घमंड है वो हर जगह काम नहीं आ सकती। तेग़ज़नी के मआरके में जिस तेज़ी और फुर्ती का मुज़ाहेरा हज़रत अली(र०) कर रहे थे वो उमरो नहीं कर सकता था क्योंके उसका जिस्म भारी भरकम

था। अगर वो घोड़े को अपने कंधों पर उठा भी सकता था तो भी उसमें घोड़े जैसी रफ्तार नहीं थी। उसकी ताक़त घोड़े से ज़्यादा भी हो सकती थी। हज़रत अली(र०) ने उस पर एक भी वार न किया जिसे उमरो ने खौफज़दगी समझा होगा। वो वार पे वार करता रहा और हज़रत अली(र०) कभी इधर कभी उधर होते रहे।

खंदक़ के पार अहल-ए-कुरैश का लश्कर जो क़हक़हे लगा रहा था, यकलख्त ख़ामोश हो गया क्योंके उनका देवक़ामत उमरो वार करते करते रूक गया था और ख़ामोश खड़ा हो गया था। वो हांप रहा था। वो ग़ालेबन हैरान था के ये नौजवान जो कुव्वत में उसके जिस्म का बीसवां हिस्सा भी नहीं, उससे मरऊब क्यों नहीं हुआ। दरअसल उमरो थक गया था।

हज़रत अली(र०) ने जब उसकी ये हालत देखी के वो अपनी ताक़त इतने सारे वार करते करते सर्फ कर चुका है और हैरान व परेशान खड़ा है तो हज़रत अली(र०) ने ये हैरान कुन मुज़ाहेरा किया के तलवार फैंक कर बिजली की सी तेज़ी से उमरो पर झपटे और उछल कर उसकी गर्दन अपने हाथों में दबोच ली। उसके साथ ही हज़रत अली(र०) ने उमरो की टांगों में अपनी टांगे ऐसे फंसाईं के वो पीठ के बल गिरा।

उसने अपनी गर्दन छुड़ाने के लिए बहुत ज़ोर लगाया लेकिन उसकी गर्दन हज़रत अली(र०) की आहनी गिरफ्त से आज़ाद न हो सकी। हज़रत अली(र०) ने उसकी गर्दन से एक हाथ हटा कर कमर बंद से ख़ंजर निकाला और उसकी नोक उमरो की शेह रग पर रख दी।

"अब भी मेरे अल्लाह के रसूल(स०) पर ईमान ले आ तो मैं तेरी जान बख्शी कर दूंगा"–हज़रत अली(र०) ने कहा।

उमरो बिन अब्दूद ने जब देखा के उसकी वो ताक़त जिससे अहले अरब लरज़ते थे, बेकार हो गई है तो उसने ये ओछी हरकत की के हज़रत अली(र०) के मुंह पर थूक दिया।

देखने वाले एक बार फिर हैरान रह गए क्योंके हज़रत अली(र०) ख़ंजर से उसकी शह रग काट देने की बजाए उठ खड़े हुए थे। उन्होंने ख़ंजर कमर बंद में उड़स लिया और हाथों से अपना चेहरा साफ किया। उमरो अब इस तरह उठा जैसे उसके जिस्म की ताक़त ख़त्म हो चुकी हो। सिर्फ उसे ही नहीं हर किसी को तवक्क़ो थी के हज़रत अली(र०) उसे ज़िंदा नहीं उठने देंगे लेकिन हज़रत अली(र०) बड़े आराम से पीछे हटे।

"उमरो!"–हज़रत अली(र०) ने कहा–"मैं ने अल्लाह के नाम पर तेरे साथ ज़िंदगी और मौत का मुक़ाबला किया था लेकिन तूने मेरे मुंह पर थूक कर मेरे दिल में

ज़ाती दुश्मनी पैदा कर दी है। मैं तुझे ज़ाती दुश्मनी की बिना पर कत्ल नही करूंगा। कहीं ऐसा न हो के मेरे खुदा को मेरा ये इन्तेक़ाम अच्छा न लगे....जा यहां से अपनी जान ले कर वापस चला जा।"

उमरो बिन अब्दूद शिकस्त तस्लीम करने वाला आदमी नही था। मोअरिख़ लिखते हैं के मैदान में ये उसकी पहली हार थी जिसे वो बर्दाश्त न कर सका। उसने अपनी हार को जीत में बदलने के लिए ये ओछी हरकत की के तलवार निकाल कर हज़रत अली(र०) पर झपट पड़ा। हज़रत अली(र०) इस हमले के लिए तैयार नहीं थे लेकिन इनकी कामयाबी के लिए रसूले खुदा(स०) ने खुदा से मदद मांगी थी। ऐन वक्त पर जब उमरो की तलवार और हज़रत अली (र०) की गर्दन में दो चार लम्हों का फासला रह गया था, हज़रत अली(र०) ने अपनी ढाल आगे कर दी। उमरो का वार इस क़दर ज़ोरदार था के उसकी तलवार ने हज़रत अली(र०) की ढाल को काट दिया। ढाल हज़रत अली(र०) के कान के क़रीब सर पर लगी जिससे खून फूटने लगा।

उमरो ढाल में से तलवार खींच ही रहा था के हज़रत अली(र०) की वो तलवार जो उन्हें रसूले करीम(स०) ने दी थी, इतनी तेज़ी से हरकत में आई के उमरो की गर्दन कट गई। गर्दन पूरी न कटी लेकिन शह रग कट चुकी थी। उमरो की तलवार उसके हाथ से छूट गई। उसका जिस्म डोलने लगा। हज़रत अली(र०) ने उस पर दूसरा वार न किया। उन्होंने देख लिया था के यही वार काफी है। उमरो की टांगे दोहरी हुईं। उसके घुटने ज़मीन पर लगे और वो लुड़क गया। अरब की मिट्टी उसका खून चूसने लगी।

खंदक़ के पार दुश्मन के लश्कर पर ऐसा सुकूत तारी हो गया जैसे पूरे का पूरा लश्कर खड़े खड़े मर गया हो। अब मुसलमानों के नारे गरज रहे थे।

अरबों की रस्म के मुताबिक़ इस मुक़ाबले का दूसरा मरहला शुरू हो गया। मुसलमानों के एक हबिश ने अकरमा और उसके बाक़ी सवारों पर हमला कर दिया कुरैश के इन सवारों के लिए भाग निकलने के सिवा और कोई चारा न था। वो ख़ैरियत से पस्पा होने के लिए लड़े। इस मआरके में कुरैश का एक आदमी मारा गया। अकरमा ने अपना घोड़ा खंदक की तरफ मोड़ कर भाग निकलने के लिए

ऐड़ लगा दी। ख़ंदक़ फलांगने से पहले अकरमा ने अपनी बरछी फैंक दी। इन में से एक सवार जिस का नाम ख़ालिद बिन अब्दुल्लाह था, ख़ंदक को फलांग न सका। उसका घोड़ा ख़ंदक़ के अगले किनारे से टकराया और ख़ंदक में जा पड़ा। वो उठ कर किनारे पर चढ़ने की कोशिश करने लगा लेकिन मुसलमानों ने उस पर पत्थरों की बोछाड़ कर दी और वो वही ख़त्म हो गया।

रसूले करीम(स०) ने हुक्म दिया के ख़ंदक़ के इस मुक़ाम पर मुस्तक़िल पहरे का इन्तेज़ाम कर दिया जाए क्योंके वहां से ख़ंदक फलांगी जा सकती थी।

दूसरे दिन ख़ालिद अपने घुड़ सवार दस्ते में से चन्द एक जांबाज़ सवार मुंतख़िब कर के ख़ंदक़ उबूर करने को चल पड़ा।

"ख़ालिद! रूक जाओ"-अबु सुफयान ने उसे कहा-"क्या तुम ने कल अकरमा के सवारों का अन्जाम नहीं देखा? अब मुसलमानों ने वहां पेहरे का और ज़्यादा मज़बूत इन्तेज़ाम कर दिया होगा।"

क्या ये बहतर नहीं के लड़े बग़ैर वापस जाने की बजाए तुम मेरी लाश मेरे घोड़े पर रख कर मक्का ले जाओ"-ख़ालिद ने कहा-"अगर हम एक दूसरे के अंजाम से डरने लगे तो वो दिन बहुत जल्द तुलूअ होगा जब हम मुसलमानों के गुलाम होंगे।"

"मैं तुम्हें नहीं रोकूंगा मेरे दोस्त!"-अकरमा ने ख़ालिद से कहा-"लेकिन मेरी एक बात सुन लो। अगर तुम मेरी शिकस्त का इन्तेक़ाम लेने जा रहे हो तो रूक जाओ। अगर तुम्हें कुरैश की अज़मत अज़ीज़ है तो ज़रूर जाओ।"

आज मदीना की तरफ जाते हुए ख़ालिद को वो लम्हे याद आ रहे थे। उसे न उस वक़्त ये ख़्याल आया था न आज के वो ये जानते हुए भी के ख़ंदक़ उबूर कर के भी मारा जाएगा, ना उबूर कर सका तो भी मारा जाएगा, क्योंके ख़ंदक की तरफ चल पड़ा था।

वो 16 मार्च 627ई० के दिन का तीसरा पहर था। ख़ालिद चन्द एक मुंतख़िब सवारों के साथ ख़ंदक़ की तरफ बढ़ा। उसने ख़ंदक़ फलांगने के लिए कुछ फासले से अपने घोड़े को एंड़ लगाई मगर उस मुक़ाम के पहरे पर जो मुसलमान कहीं छुपे बैठे थे, उन्होंने तीरों का मीना बरसा दिया। ख़ालिद ने लगाम को पूरी ताक़त से खींचा और

उसका घोड़ा खंदक़ के ऐन किनारे पर जा रूका। ख़ालिद ने घोड़े को पीछे मोड़ा और अपने तीरअंदाज़ों को बुलाया। उसने सोचा था के उसके तीरअंदाज़ मुसलमानों पर तीर फैंकते चले जाऐंगे जिससे मुसलमान सर नही उठा सकेंगे और वो खंदक़ फलांग लेगा लेकिन मुसलमानों ने तीरअंदाज़ी में इज़ाफा कर दिया। मुसलमान तीरों की बोछाड़ों में तीर चला रहे थे। ख़ालिद को पस्पा होना पड़ा।

ख़ालिद इस अंदाज़ से अपने सवारों को वहां से हटा कर दूसरी तरफ चल पड़ा जैसे उसने खंदक़ पर एक और हमला करने का इरादा तर्क कर दिया हो। मोअररिख़ीन जिन में इब्ने हशाम ओर इब्ने साद क़बीले ज़िक्र हैं, लिखते हैं के ये ख़ालिद की एक चाल थी। उसने चलते चलते अपने सवार हबिश में मज़ीद सवार शामिल कर लिए। उसने सोचा ये था के उसे पस्पा होते देख कर मुसलमान पहरेदार इधर उधर हो जाएंगे। उसने उधर देखा। वहां उसे कोई पहरेदार नज़र न आया। उसने अपने दस्ते को खंदक़ के कम चौड़ाई वाले मक़ाम की तरफ मोड़ कर सरपट दौड़ा दिया।

ख़ालिद की ये चाल सिर्फ इस हद तक कामयाब रही के उसके तीन चार घुड़ सवार खंदक फलांग गए। इनमें ख़ालिद सब से आगे था। मुसलमान पहरेदारों ने इन्हें घेरे में ले लिया। कुरैश के जो सवार अभी खंदक़ के पार थे, उन पर मुसलमानों ने इतने तीर बरसाए के उन्हें पस्पा होना पड़ा। ख़ालिद और उसके सवारों के लिए मुसलामनों के घेरे से निकलना बहुत मुश्किल हो गया। ये ज़िंदगी और मौत का मआरका था जो ख़ालिद ने घोड़ा दौड़ा दौड़ा कर और पैंतरे बदल बदल कर लड़ा। उसके सवार भी तजुर्बेकार और फुर्तीले थे। उनमें से एक मारा गया। ख़ालिद अब दिफाई मआरका लड़ रहा था। उसने कई मुसलामनों को ज़ख्मी किया जिन में से एक शहीद हो गया। आख़िर उसे निकलने का मौक़ा मिल गया और उसका घोड़ा खंदक़ को फलांग आया। उसके जो सवार ज़िन्दा रह गए थे वो भी खंदक़ फलांग आए।

इसके बाद कुरैश में से किसी ने भी खंदक़ के पार जाने की जुर्रत न की। अकरमा और ख़ालिद की नाकामी के बाद कुरैश और उनके दीगर इत्तेहादी क़बायल के लश्कर में मायूसी जो पहले ही कुछ कम न थी और बढ़ गई। खुराक़ न होने के बराबर रह गई थी। अबु सुफयान जो अपने और दीगर तमाम क़बायल के लश्कर का सालार आला था, पहले ही हाथ पांव छोड़ बैठा था। ख़ालिद, अकरमा और सुफयान ने ये ज़ाहिर करने के लिए के उसका लश्कार ज़िन्दा बेदार है, ये कारर्वाई जारी रखी के वक़्तन फवक़्तन खंदक़ के क़रीब जा कर मुसलमानों की ख़ेमा गाह पर तीर बरसाते रहे। उसके जवाब में मुसलमानों ने तीरअंदाज़ों को खंदक़ के क़रीब फैला दिया जो अहल-ए- कुरैश के तीरअंदाज़ों पर जवाबी तीरअंदाज़ी करते रहे। तीरों के

तबादले का ये सिलसिला सिर्फ एक दिन सुबह से शाम तक चला।

❁

अहल-ए-कुरैश और गतफान और दीगर क़बायल जिस मोहम्मद(स०) को शिकस्त देने आए थे। वो मोहम्मद(स०) किसी मुल्क के बादशाह नही थे। वो खुदा के रसूल थे। खुदा ने उन्हें एक अज़ीम पैग़ाम दे कर रिसालत अता की थी। आप(स०) ने खुदा से मदद मांगी थी। खुदा अपने रसूल को कैसे मायूस करता। उसके अलावा मदीने के अन्दर मुसलामानों की औरतें और बच्चे दिन रात अपनी कामयाबी और निजात की दुआऐं मांगते रहते थे। ये दुआऐं रायगां कैसे जाती।

18 मार्च 627ई० बरोज़ मंगल मदीना की फिज़ा ख़ामोश हो गई। सर्दी ख़ासी थी। हवा बंद हो गई। मौसम खुशगवार हो गया लेकिन ये तूफान से पहले की ख़ामोशी थी। अचानक आंधी आ गई जो इस क़दर तेज़ तुंद थी के ख़ेमे उड़ने लगे। झगड़ बड़े ही सर्द थे। आंधी की तुंदी और इसकी चीख़ों से घोड़े और ऊँट भी घबरा गए और रस्सियां तुड़वाने लगे।

मुसलमानों की इजतमाअ गाह सुलेअ की पहाड़ी की ओट में थी इस लिए आंधी उन्हें इतना परेशान नहीं कर रही थी जितना मक्का के लश्कर को। कुरैश खुले मैदान में थे। आंधी उनका सामान उड़ा रही थी। ख़ेमे उड़ गए या लपेट दिये गए थे। लश्कर के सरदार और सिपाही अपने ऊपर हर वो कपड़ा डाल कर बैठ गए थे जो उन के पास थे। उनके लिए ये आंधी खुदा का क़हर बन गई थी। इसकी चीख़ों में क़हर और ग़ज़ब था।

अबु सुफयान बर्दाशत न कर सका। वो उठा। उसे अपना घोड़ा नज़र न आया। क़रीब ही एक ऊँट बैठा था। अबु सुफयान ऊँट पर चढ़ बैठा और उसे उठाया। मोअररिख़ इब्ने हशाम की तहरीर के मुताबिक़ अबु सुफ़यान बुलंद आवाज़ से चिल्लाने लगा।

"ऐ अहल-ए-कुरैश.... ऐ अहल-ए-गतफान! काब बिन असद ने हमें धोका दिया है। आंधी हमारा वहुत नुक़सान कर चुकी है। अब यहां ठहरना बहुत ख़तरनाक है। मक्का को कूच करो...मैं जा रहा हूं। मैं जा रहा हूं।

उसने ऊंट को मक्का की तरफ दौड़ाया।

ख़ालिद को आज वो मंज़र याद आ रहा था। तमाम लश्कर जिसे मक्का से मदीना की तरफ कूच करते देख उसका सीना फख़्र से फैल गया और सर ऊंचा हो गया था, अबु सुफयान के पीछे पीछे डरी हुई भेड़ों की तरह जा रहा था। ख़ालिद और उमरो बिन आस ने अपने तौर पर सोचा था के हो सकता है मुसलमान अक़ब से हमला

कर दें। चुनांचे उन्होंने अपने सवार दस्तों को अपने काबू में रख कर लश्कर के अक़ब में रखा था। अबु सुफयान ने ऐसे हिफाज़ती इन्तेज़ाम की सोची ही नहीं थी।

इस पस्पा होते लश्कर में वो आदमी नहीं थे जो मारे गए थे- और इस लश्कर में नईम बिन मसऊद(र०) भी नहीं थे। कुरैश का लश्कर चला तो नईम(र०) आंधी से फायदा उठाते हुए खंदक़ में उतर गए और रसूले करीम(स०) के पास पहुंच गए थे।

आज ख़ालिद मदीना की तरफ उसी रास्ते पर जा रहा था जिस रास्ते से उसका लश्कर नाकाम वापस गया था। उसे शैख़ेन की पहाड़ी नज़र आने लगी थी।

❁

आंधी ने तारीख़-ए-इस्लाम का रूख़ मोड़ दिया।

आंधी ने ये हकीकत वाज़ह कर दी के खुदा हक़ परस्तों के साथ होता है।

रसूले खुदा(स०) के दुश्मनों की पस्पाई तिनकों की मानिन्द थी जो आंधी में उड़े जाते है और उन्हें एक दूसरे की ख़बर नहीं होती।

ख़ालिद को ये परेशानी लाहक़ थी के मुसलमान तआकुब करेंगे लेकिन मुसलमानों ने तआकुब की सोची ही नहीं थी। इस आंधी में तआकुब और लड़ाई मुसलमानों के ख़िलाफ भी जा सकती थी। जिस दुश्मन को खुदा ने भगा दिया था उसके पीछे जाना दानिश मंदी नहीं थी। अलबत्ता रसूल अल्लाह(स०) के हुक्म से चन्द एक आदमियों को बुलंदियों पर खड़ा कर दिया गया था के वो दुश्मन पर नज़र रखें। ऐसा न हो के दुश्मन कहीं दूर जाकर कर रूक जाए और मुनज़्ज़म हो कर वापस आजाए।

आंधी इतनी मिट्टी और रेत उड़ा रही थी के थेड़ी दूर तक भी कुछ नज़र नहीं आता था। बहुत देर बाद तीन चार मुसलमान घुड़ सवार उस जगह से खंदक़ फलांग गए जहां से अकरमा और ख़ालिद के घोड़ों ने खंदक़ फलांगी थी। वो दूर तक चले गए। उन्हें उड़ती हुई गर्द और रेत के सिवा कुछ भी नज़र न आया। वो रूक गए लेकिन वापस न आए।

शाम से कुछ देर पहले आंधी का ज़ोर टूट गया और झगड़ थम गए। फिज़ा साफ हो गई और नज़र दूर तक काम करने लगी। दूर उफक़ पर ज़मीन से गर्द के बादल उठ रहे थे। वो अहल-ए-कुरैश और उनके इत्तेहादी क़बायल की पस्पाई की गर्द थी जो डुबते सूरज की आख़री किरनों में बड़ी साफ नज़र आ रही थी। ये गर्द मक्का को जा रही थी। तआकुब में जाने वाले मुसलमान सवार उस वक़्त वापस आए जब रात बहुत गहरी हो चुकी थी।

"खुदा की क़सम!"-उन्होंने वापस आकर बताया-"वो जो हमारे अक़ीदे को

तोड़ने और मदीना की ईंट से ईंट बजाने आए थे, वो मदीना से इतनी वहशत ले कर गए है के रूक नहीं रहे। कही पड़ाव नहीं कर रहे। क्या रातों को मुसाफिर पड़ाव नही किया करते? क्या लश्कर रातों को भी चलते रहते हैं?....वही चलते रहते है जो मंज़िल तक बहुज जल्दी पहुंचना चाहते हों।

अहादीस और मोअररि्ख़ों की तहरीरों के मुताबिक़ रसूले करीम (स०) को जब यक़ीन हो गया के दुश्मन घबराहट के आलम में भागा है और ऐसा इम्कान ख़त्म हो चुका है के वो मुनज़्ज़म हो कर वापस आ जाए, तब आप(स०) ने कमर से तलवार खोली, ख़ंजर उतार कर रख दिया और अल्लाह का शुक्र अदा कर के गुसल किया।

❁

इस रात की कोख़ से जिस सुबह ने जन्म लिया वो मदीना वालों के लिए फतह व नुसरत और मुसर्रत व शादमानी की सुबह थी। हर ताफ अल्लाह अकबर और खुशियों के नारे थे। सबसे ज़्यादा खुशी औरतें और बच्चे मना रहे थे जिन्हें छोटे छोटे क़िलों में बन्द कर दिया गया था। वो खुशी से चीख़ते चिल्लाते बाहर निकले। मदीना की गलियों में मसुलमान बहुत मसरूर फिर रहे थे।

फतह के इस जश्न मे बनू क़रीज़ा के यहूदी भी शामिल थे। रसूल करीम(स०) ने उन्हें अमन व अमान में रहने के इवज़ कुछ मुराआत दे रखी थी। ज़ाहिरी तौर पर वो अपने आप को मुसलमानों का दोस्त कहते और दोस्तों की तरह रहते थे। अहल-ए-कुरैश की पस्पाई पर वो मुसलमानों की तरह खुशियाँ मना रहे थे लेकिन उनका सरदार काब बिन असद अपने क़िले नुमा मकान में बैठा था। उसके पास अपने क़बीले के तीन सरकर्दा यहूदी बैठे थे और उस वक़्त की ग़ैर मामूली तौर पर हसीन यहूदन योहावा भी वहां मौजूद थी। वो गुज़िश्ता शाम अहल-ए-कुरैश की पस्पाई की ख़बर सुन कर आई थी।

"क्या ये अच्छा नहीं हुआ के हम ने मुसलमानों पर हमले नही किये?" -काब बिन असद ने कहा-"मुझे नईम(र०) बिन मसऊद ने अच्छा मशवरा दिया था। उसने कहा था के कुरैश से मुहाएदे की ज़मानत के तौर पर चन्द आदमी यरग़माल के लिए मांगो। उसने ये भी कहा था के कुरैश इस से दुगना लश्कर ले आऐं तो भी ख़ंदक़ उबूर नहीं कर सकते। मैंने नईम(र०) का मशवरा इस लिए कुबूल कर लिया था के वो अहल-ए-कुरैश में से है।"

"वो अहल-ए-कुरैश में से नहीं"-एक यहूदी ने कहा- "वो मोहम्मद(स०) के पैरूकारों में से है।"

"खुदाए यहूदा की क़सम, तुम्हारी बात सच नही हो सकती"-काब बिन असद

ने कहा-"वो अहल-ए-कुरैश के साथ आया था।"

"मगर उनके साथ गया नहीं"-उसी यहूदी ने कहा-"मैंने कल शाम उसे मदीने में मुसलमानों के साथ देखा है। उस वक़्त तक अहल-ए-कुरैश का लश्कर मदीना से बहुत दूर जा चुक था।"

"फिर तुम्हें किसने बताया है के वो मोहम्मद(स०) के पैरूकारों में से है?"-काब ने कहा-"मैं ऐसी बात को क्यों सच मानूंगा जो तुम ने किसी से पूछी नही?"

"मैंने अपने एक मुसलमान दोस्त से पूछा था"- यहूदी ने कहा-"मैं ने नईम को देख कर कहा था, क्या मुसलमान अहल-ए-कुरैश के जंगी क़ैदियों को अब खुला रखते हैं?.... मेरे दोस्त ने जवाब दिया था के नईम(र०) कभी का इस्लाम कुबूल कर चुका है। उसे मदीना में आने का मौक़ा अब मिला है।"

"फिर उसने हमें मुसलमानों से नहीं बल्कि मुसलमानों को हम से बचाया है"-काब बिन असद ने कहा-"उसने जो कुछ भी किया है, हमारे लिए अच्छा साबित हुआ है। अगर हम कुरैश की बात मान लेते तो...."

"तो मुसलमान हमारे दुश्मन हो जाते"-एक और यहूदी ने कहा-"तुम यही कहना चाहते हो ना काब! मुसलमान फिर भी हमारे दुश्मन हैं। हमें मोहम्मद(स०) के नए मज़हब को यहीं पर ख़त्म करना है वरना मोहम्मद(स०) हमें ख़त्म कर देगा।"

"क्या तुम देख नहीं रहे के ये मज़हब जिसे ये लोग इस्लाम कहते हैं, कितनी तेज़ी से मक़बूल होता जा रहा है?"-तीसरे यहूदी ने जो मोअम्मिर था, कहा-"हमें इसके आगे बंद बांधना है। इसे रोकना है।"

"लेकिन कैसे?"-काब बिन असद ने पूछा।

"क़त्ल!"-मोअम्मिर यहूदी ने क़हा- मोहम्मद(स०) का क़त्ल!"

"ऐसी जुर्रत कौन करेगा?"-काब बिन असद ने कहा-"तुम कहोगे के वो एक यहूदी होगा। अगर वो मोहम्मद(स०) के क़त्ल में नाकाम हो गया तो बनू क़ेनक़आ और बनू क़रीज़ा का अंजाम देख लो। मुसलमानों ने इन्हें जिस तरह क़त्ल किया है और इन में से ज़िन्दा बच रहने वाले जिस तरह दूर दराज़ के मुल्कों में भाग गए हैं वो न भूलो।"

"खुदाए यहूदा की क़सम!"-मुअम्मिर यहुदी ने कहा-"मेरी अक़्ल तुम से ज़्यादा काम नहीं करती तो तुम से कम भी नहीं। तुम ने जो आज सोचा है वो मैं और लेस बिन मोशान बहुत पहले सोच चुके है। कोई यहूदी मोहम्मद(स०) को क़त्ल करने नहीं जाएगा।"

"फिर वो कौन होगा?"

"वो क़बीला कुरैश का एक आदमी है" -बूढ़े यहूदी ने जवाब दिया-"लेस बिन मोशन ने उसे तैयार कर लिया है। मेरा ख़्याल है के अब वक़्त आ गया है के ये काम कर दिया जाए।"

"अगर तुम लोग भूल नही गए के मैं बनू क़रीज़ा का सरदार हूं तो मैं उस काम की इजाज़त कैसे दे सकता हूं जो मुझे मालूम ही न हो के कैसे किया जाएगा" -काब बिन असद ने कहा-"और मुझे कौन बताएगा के उस आदमी को इतने खतरनाक काम के लिए कैसे तैयार किया गया है? क्या उसे अबु सुफयान ने तैयार किया है? ख़ालिद बिन वलीद ने तैयार किया है?"

"सुनो काब!" -बूढ़े यहूदी ने कहा और यहूदी हसीना योहावा की तरफ देखा।

❁

"मैं ये बात लेस बिन मोशान की मौजूदगी में सुनाऊं तो क्या अच्छा न होगा?" - योहावा ने कहा-"उस बात में इस बुजुर्ग का अमल दख़ल ज़्यादा है।"

"हम उस बूढ़े जादूगर को कहां से बुलाएं?" -काब बिन असद ने कहा-"हम तुम पर ऐतबार करते हैं"

"वो यहीं है" -बूढ़े यहूदी ने कहा-"हम उसे साथ लाए हैं और हम उसे भी साथ लाए हैं जो मोहम्मद(स०) को को क़त्ल करेगा। अब हम इन्तेज़ार नही कर सकते। हम सब को उम्मीद थी के कुरैश ग़तफान और इनके दोस्त क़बायल इस्लाम का नाम व निशान मिटा देंगे मगर हर मैदान में उन्होंने शिकस्त खाई। हमने उन्हें मदीना पर हमला के लिए उकसाया था। वो यहां से भी भाग निकले.....खुदाए यहूदा की क़सम! तुम ने मुसलमानों पर अक़ब से हमले न कर के बहुत बुरा किया है।"

"मैं इसकी वजह बता चुका हूं" -काब बिन असद ने कहा।

"वजह सही थी या ग़लत!" -मुअम्मिर यहूदी ने कहा-"वक़्त हाथ से निकल गया है। अब हम कुरैश की फतह का इन्तेज़ार नही कर सकते" - उसने योहावा से कहा-"लेस बिन मोशान को बुलाओ...दूसरे को अभी बाहर रखो

योहावा कमरे से निकल गई। वापस आई तो उसके साथ लेस बिन मोशान था। वो एक बूढ़ा यहूदी था जिस की उम्र सत्तर बरस के दरमियान थी। उसके सर और दाढ़ी के बाल दूध की तरह सफ़ेद हो चुके थे। दाढ़ी बहुत लम्बी थी। उसके चेहरे का रंग सुर्ख व सफ़ैद था। उसने ऊंट के रंग की क़बा पहन रखी थी। उसके हाथ में लम्बा असा था जो ऊपर से सांप के फन की तरह तराशा हुआ था।

लेस बिन मोशान को यहूदियों में जादूगर के नाम से शोहरत हासिल थी। शांब्दे

वाज़ी और काले इल्म में वो महारत रखता था। वो मक्का और मदीना के दरमियान किसी गांव का रहने वाला था। उसके मुताल्लिक़ बहुत सी रिवायतें मशहूर थीं जिन में से एक ये थी के वो मुर्दे को थेड़ी सी देर के लिए ज़िन्दा कर सकता है और वो किसी भी मर्द या औरत को अपने ताबे करने की ताक़त रखता था। यहूदी उसे अपना पीर व मुरशिद समझते थे वो जहांदीदा और आलिम फाज़िल था।

वो कमरे में दाख़िल हुआ तो सब उसकी ताज़ीम को उठे। वो जब बैठ गया तो सब बैठे।

"ख़ानदान मोशान की अज़मत से कौन वाक़िफ नहीं"--काब बिन असद ने कहा-"खुदाए यहूदा की क़सम, हम में से कोई भी आप को यहां बुलाने की जुर्रत नहीं कर सकता था। योहावा शायद आप को ले आई है।"

"मैं पैग़म्बर नहीं काब बिन असद!"-लेस बिन मोशान के कहा- "मैं ये खूबसूरत अल्फाज़ सुनने का आदी नहीं और ताज़ीम व एहतराम का वक़्त भी नहीं। कोई न बुलाता तो भी मुझे आना था। तुम लोग अपने फ़र्ज़ की अदाएगी में बहुत वक़्त ज़ाय कर चुके हो। तुम से ये लड़की अच्छी है जिसने वो कान कर दिया है जो तुम्हें करना चाहिए था।

"मोअज़ज़िज़ मोशान!"-काब बिन असद ने कहा- "हम ने अभी इस इन्तेहाई इक़दाम की सोची नहीं थी। अगर हम मोहम्मद(स०) के क़त्ल का ख़ौफनाक इरादा करते भी तो योहावा को इस्तेमाल न करते। हम इतनी खूबसूरत और ऐसी जवान लड़की को इस्तेमाल नहीं कर सकते।"

"क्यों नहीं कर सकते?"-लेस बिन मोशान ने कहा-"क्या तुम फरामोश कर बैठे हो के सारी दुनिया पर खुदाए यहूदा की हाकमियत होगी?.....दाऊद के सितारे की क़सम, बनी नूअ इन्सान पर बनी इसराईल की हाकमीयत क़ायम करने के लिए हम सब को कुर्बानियां देनी पड़ेंगी। हमें इन्सान की फितरी कमज़ारियों को अपने हाथ में लेना है। क्या तुम नहीं जानते के मर्द क्या चाहता है?....आला नस्ल के बीस घोड़े और बीस गुलाम योहावा के साथ खड़े कर दो। किसी से भी कहो के उसे जो पसंद है वो ले जाए। दाऊद के सितारे की क़सम, वो आदमी बीस घोड़े और बीस गुलाम छोड़ देगा और योहावा को ले जाएगा।"

इस महफिल पर ख़ामोशी तारी रही।

"मैं देख रहा हूं के तुम मेरी बात नहीं समझ सके" -लेस बिन मोशान ने कहा- तुम्हारे दिमाग़ों में अपनी बेटियों की असमत समाई हुई है....मेरी बात ग़ौर से सुनो। असमत का शर्म व हया के साथ कोई ताल्लुक़ नहीं। ये एक हथियार है जो हमें अपने

दुश्मनो को बेकार करने के लिए इस्तेमाल करना है। बदी क्या है? नेकी क्या है?.... मैं जानता हूं तुम मुझे क्या जवाब दोगे। ये जवाब सही होगा लेकिन जब तुम दुनिया के कोने कोने तक यहूदियत को पहुंचाने की बात करोगे तो बदी और नेकी के माने बदल जाएंगे। मोहम्मद(स०) बुराई और बदी को ख़त्म कर रहा है। हमें बुराई और बदी पैदा करनी है मगर हम खुद बुरे और बदकार नहीं होंगे। अगर तुम रूएं ज़मीन पर फैली हुई नसल-ए-इंसानी को अपनी गुलामी के जहन्नुम में डालना चाहते हो तो गै़र यहूदियों को जन्नत दिखाओ। उन्हें जन्नत की हूरें दिखाओ। उन्हें मीठी शराब पिलाओ- ये लोग बदमस्त हैवान हैं। इनमें और ज़्यादा हैवानियत पैदा करो। ये मत सोचो के अच्छा क्या और बुरा क्या है। ये देखो के यहूदियत की हाकमीयत के लिए क्या अच्छा है, ख्वाह वो बुरा ही हो-"उसने योहावा की तरफ देखा और बोला-" इन्हें बताओ योहावा इन्हें समझाओ।"

योहावा के होंटों पर मुस्कुराहट आ गई और उसने एक कहानी सुना दी।

❁

ये कहानी चन्द माह पहले मक्का से शुरू हुई थी। योहावा ने शर्म व हिजाब के बग़ैर सब को सुनाया के वो क़ुरैश के तीन नामूर सालारों-ख़ालिद,अकरमा और सफवान- को अपने हुस्न व जवानी के तिलिस्म मे अलग अलग गिरफ्तार करना चाहती थी। उसने इन्हें आपस में टकराने की सोची थी लेकिन उनमें कोई भी उसके हाथ न आया। उसने ये भी सोचा था के वो तीनों के दिलों में अपने सरदार अबु सुफयान की नफरत पैदा कर देगी।

....लेकिन ख़ालिद पत्थर साबित हुआ"-योहावा ने कहा-"उसने मुझे धुत्कारा नही लेकिन वो दिलचस्पी भी ज़ाहिर न की जिस की मुझे तवक्को थी। मेरा ख्याल है अकरमा और सफवान पर ख़ालिद का ही असर है। ये तीनों ज़ंग व जदाल के दिलदादा हैं। इसके सिवा कुछ सोचते ही नहीं।"

योहावा मायूस न हुई। उसने अपनी कोशिश जारी रखी। ख़ालिद से उसने तवज्जह जल्दी हटा दी क्योंकि उसके दिमाग़ में यही एक सौदा समाया हुआ था के मुसलमानों को मैदान में शिकस्त देनी है और रसूले अकरम(स०) को मैदान-ए-जंग में या जंगी क़ैदी बना कर क़त्ल करना है।

एक रोज़ योहावा मक्का से चार मील दूर एक गांव में गई और दिन के पिछले पहर वहां से वापस चली। उसके साथ दो लड़कियां और तीन आदमी थे। वो सब यहूदी थे और दो घोड़ों वाली गाड़ी पर सवार थे। अभी आधा रास्ता भी तय नहीं हुआ था के वो सहराई आंधी आ गई जो रेत के टीलों को उड़ा ले जाती है। एक तो उसकी

रफ्तार इतनी तेज़ होती है के तनू मंद आदमी भी पांव जमा कर खड़ा नही रह सकता। अगर जिस्म का कोई हिस्सा नंगा रह जाए तो रेत इतनी जोर से टकराती है क खाल उतरती महसूस होती है। ऊंट घोड़े बे काबू हो कर भाग उठते है।

अचानक रेत की एक दीवार जो ज़मीन से आसमान तक पहुंची हुई थी बड़ी तेज़ी से आई और इन यहुदियों की घोड़ा गाड़ी को इस दीवार ने निगल लिया। फिज़ा लाल हो गई। रेत के थपेड़े इतनी ज़ोर से पड़ने लगे जैसे बहरी तूफान में मोजें उठ उठ कर कश्ती मे पड़ती और कश्ती को पटख़ती है। टीले जड़ों से उखड़ने लगे। सहराई आंधी में रूक कर खड़े हो जाना बहुत ही ख़तरनाक होता है। रेत इस तरह जिस्म से टकरा कर वही इक्ठी होने लगती है जैसे कोई बेलचे से रेत फैंक रहा हो। कुछ देर बाद वहां रेत की ऊंची ढेरी बन जाती है और इस में एक इन्सान दफ़्न होता है मगर वो ज़िन्दा रह नही सकता।

"आंधी हमारे पहलू की तरफ से आई थी"-योहावा ने सुनाया-"घोड़े रेत से लदे हुए झग्गड़ बर्दाश्त न कर सके और बे लगाम हो गए। उन्होंने अपना रूख़ आंधी के रूख़ के मुताबिक़ कर लिया और सरपट दौड़ पड़े। आगे छोटे बड़े गढ़े आ गए। घेड़ा गाड़ी बड़ी ज़ोर से उछलती, डोलती और बे लगाम घोड़े के रहम व करम पर उड़ी जा रही थी। गाड़ी के अन्दर इस क़दर रेत आ रही थी के अपना आप भी नज़र न आता था।

"एक जगह गाड़ी के एक तरफ के पहिये गढ़े में चले गए या दूसरी तरफ के पहिये ऊंची जगह चढ़ गए। गाड़ी एक तरफ से इतनी ऊपर उठ गई के इसका पहलू के बल गिरना यक़ीनी था लेकिन गाड़ी न गिरी। उसे इतना सख्त झटका लगा के मैं जो उस तरफ बैठी थी, लुड़क कर बाहर जा पड़ी। गाड़ी आगे निकल गई। मैं कलाबाज़ियां खाती गई। संभल कर उठी और अपने साथियों को पुकारा मगर आंधी के ज़न्नाटों और इसकी चीख़ों में अपनी आवाज़ मुझे भी मुशकिल से सुनाई दे रही थी। मेरे साथ गाड़ी में जो बैठे थे, उन्होंने शायद मुझे गिरते नही देखा था। अगर देखा था तो उनमें से किसी ने इतनी हिम्मत न की के मेरे पीछे कूद आता ताके मैं तन्हा न रहती.....

"मैं इतनी ख़ौफज़दा कभी नहीं हुई थी और मैं ऐसी ख़ौफनाक आंधी में भी कभी नहीं फंसी थी। आंधी मे कुछ नज़र नहीं आता था। मेरे नीचे कोई रास्ता नहीं था। मुझे ये भी मालूम था के घोड़े सही रास्ते से हट कर न जाने गाड़ी को किस तरफ ले आए थे। मैं चेहरे पर कपड़ा डाले आंधी के रूख़ में जा रही थी। पांव जमते नहीं थे।"

❁

योहावा को आंधी धकेलती ले जा रही थी। अचानक आंधी की चीखें बहुत ही

बुलंद और डरावनी हो गई। योहावा पहले नीचे गई। वो घाटी थी जो वो आंधी के ज़ोर पर उतर गई, फिर वो एक दीवार से टकराई ये रेतीली मिट्टी की दीवार थी। योहावा इस पर हाथ रख रख कर आगे चलती गई। ये नशीबी जगह थी जिस में मिट्टी के टीले और टुंड मुंड से सहराई दरख्त भी थे। यहां आंधी की चीखें ऐसी हो गई थीं जैसे बहुत सी औरतें चीख़ चिल्ला रही हों। बाज़ चीखें आंधी की लगती ही नहीं थी। ये इन्सानों की भी नही लगती थी। ये चुड़ेलों या दरिन्दों की मालूम होती थी।

ये यहूदी हसीना जो अपने आप को निडर और दिलैर समझती थी, खौफ़ से रो पड़ी। वो जानती थी के आंधी थम जाएगी लेकिन वो ये भी जानती थी के किसी के हाथ चढ़ गई तो वो उसे उसके घर नहीं अपने घर ले जाएगा और ये भी हो सकता था के कोई उसे ख़राब कर के क़त्ल कर जाए। रात आ रही थी। भेड़ियों का ख़तरा अलग था। कोई और ख़तरा न होता तो ये ख़तरा मौजूद था के वो मक्का के रास्ते से भटक आई है। सहरा में रास्ते की तलाश ना मुमकिन होती है। भटके हुए मुसाफिर का अंजाम मौत होता है। वो थकन से नहीं प्यास से मरता है।

उसे ऊंट के बड़बड़ाने की आवाज़ आई । उसकी वहशत ज़दगी बढ़ गई लेकिन उसे आंधी की आवाज़ समझ कर उसने दिल को तसल्ली दे ली। उसे कुछ भी नज़र नहीं आ रहा था। वो मिट्टी की दीवार पर हाथ रख रख कर जा रही थी। ये दीवार बहुत बड़ा टीला था जो आगे जा कर घूम गया। ऊंट की आवाज़ एक बार फिर सुनाई दी। अब ये आवाज़ बहुत क़रीब से आई थी। इतनी क़रीब से के योहावा रूक कर पीछे हट आई। अब उसे शक न रहा। ये ऊंट की ही आवाज़ थी।

ऊंट अकेला नहीं हो सकता था। दो तीन आदमियों का वहां होना ज़रूरी था। ये आदमी उसके हमदर्द तो नहीं हो सकते थे। वो गुनाह और बदी का दौर था। योहावा ने वहां से भागने का इरादा किया लेकिन किस तरफ? कहां? वहां कोई पनाह नहीं थी। आंधी टीलों और खुश्क दरख्तों के दरमियान से गुज़र कर हैबत नाक चीखें पैदा कर रही थी। योहावा के पांव जैसे ज़मीन ने जकड़ लिए थे। उसे अपने उन आदमियों पर गुस्सा आने लगा जिन के साथ वो घोड़ा गाड़ी में जा रही थी। उन्हें इतना भी पता न चला के वो गाड़ी से गिर गई है।

❁

कोई ताक़त थी जो उसे धकेल कर एक तरफ ले गई। वहां से दीवार की तरह सीधा खड़ा टीला अन्दर को चला गया था। ये बड़ी अच्छी ओट थी। वो आंधी के थपेड़ों से महफूज़ हो गई वहां तीन चार गज़ दूर तक वो देख भी सकती थी। उसे ऊंट नज़र नही आ रहा था। दीवार के साथ साथ वो और अन्दर गई तो एक ग़ार का दहाना

दिखाई दिया लेकिन उसने अन्दर जाने की जुर्रत न की। वो रूक गई।

"अन्दर आ जाओ"-उसे एक आदमी की आवाज़ सुनाई दी-"बाहर क्यों खड़े हो भाई। अन्दर आजाओ।"

योहावा की बे इख़्तियार चीख़ निकल गई और वो पीछे को दौड़ी। जूं ही वो इस ओट से बाहर निकली, आंधी ने उस पर इस तरह रेत फैंकी जैसे किसी ने बेलचे से फैंकी हो। योहावा घबरा कर पीछे हटी। एक आदमी जो पीछे से आया था, उसके सामने आन खड़ा हुआ।

"ओह...तुम औरत हो"-उस आदमी ने पूछा-"अकेली हो? तुम अकेली नहीं हो सकती।"

"मेरे साथ चार आदमी हैं"-योहावा ने अपना चेहरा ओढ़नी में छुपा कर कहा-"उनके पास घोड़े हैं। उनके पास तलवारें और बरछियां हैं।"

"कहां है वो?"-उस आदमी ने कहा-"तुम उनसे अलग हो कर इधर क्यों आई थीं?.....उन्हें इधर ले आओ। बड़ा अच्छा ग़ार है हम सब आसानी से इस में बैठ सकेंगे

योहावा वहां से न हिली। उस आदमी ने उसे तीन बार कहा के वो उन आदमियों को साथ ले आए लेकिन योहावा की ज़बान बन्द हो गई थी। उस आदमी ने झप्पटा मार कर योहावा की ओढ़नी खींच ली।

"तू उस यहूदी की बेटी नहीं?"-उस आदमी ने पूछा और योहावा के बाप का नाम ले कर बोला-"तुम अकेली हो।"

"हां मैं अकेली हूं"-योहावा ने रोती हुई आवाज़ में कहा-"मुझ पर रहम करो।"

योहावा ने उसे बता दिया के यहां किस तरह पहुंची है।

"मेरे साथ आओ"-उस आदमी ने कहा और योहावा का बाजू पकड़ कर उसे अपने साथ ले चला।

"ज़रा रूको-योहावा ने कहा-"तुम कितने आदमी हो?....क्या तुम मुझ पर रहम नहीं करोगे?....तुम क़बीला क़ुरैश के आदमी हो शायद!"

"मैं अकेला हूं"-आदमी ने कहा-और मेरा क़बीला क़ुरैश ही है। मैं तुम पर रहम ही कर रहा हूं।"

"मैं ने तुम्हें मक्का में अकसर देखा है"-योहावा ने कहा-"तुम्हारे नाम से मैं वाक़िफ़ नहीं।"

"मैं जरेद बिन मुसय्यब हूं...मेरे साथ आओ।"

"फिर तुम मुझे घर तक पहुंचा दोगे?"-योहावा ने पूछा-"मैं तुम्हें नाराज़ नहीं करूंगी।"

❁

ऊंट जिस की आवाज़ें योहावा ने सुनी थीं वो जरेद बिन मुसय्यब का था जो बाहर कहीं बैठा था। जरेद योहावा को ग़ार में ले गया। जरेद दराज़ क़द गठे हुए जिस्म और दिलकश चेहरे मोहरे वाला जवान आदमी था। उसने ग़ार में ले जा कर योहावा को पानी पिलाया और एक थैली उसके आगे रख दी जिस में खजूरें थी।

"ख़ामोशी से बैठी रहो"-जरेद ने कहा-"आंधी का ज़ोर टूट रहा है। मैं तुम्हें घर पहुंचा दूंगा"-ज़रा खामोश रह कर उसने योहावा से पूछा-"तुम ने ये क्यों कहा था के मैं तुम्हें नाराज़ नही करूंगी?"

"तुम मुझे घर पहुंचाने का मुआवज़ा लोगे"-योहावा ने कहा-"मैं और क्या मुआवज़ा दे सकती हूं?"

"मैं कोई मुआवज़ा नहीं लूंगा"-जरेद ने कहा-"मैं उनमें से नहीं हूं। अगर मैं ने तुम्हें किसी से लड़ कर छीना होता तो तुम मेरा इनाम होतीं मगर तुम ने मुझ से रहम मांगा है। रहम करने का मुआवज़ा कौन लेता है?"

योहावा उसके मुंह की तरफ देखती रही। जरेद बिन मुसय्यब लेट गया। योहावा ने उसके साथ कुछ बातें कीं थोड़ी देर बाद उसे यक़ीन हो गया के जरेद की नीयत में खराबी नहीं। वो तो उसके साथ खुल कर बात भी नहीं करता था। योहावा परेशान हो गई।

"जरेद!"-योहावा ने पूछा-"क्या मैं खूबसूरत नहीं? क्या तुम मुझे पसंद नहीं करते?"

जरेद ने क़हक़हा लगाया मगर बोला कुछ भी नही।

"तुम क्यों हंसे हो?"-योहावा ने पूछा-"मैं तुम्हारी हंसी से डर गई हूं।"

"खुदा की क़सम, तुम बहुत खूबसूरत हो"-जरेद ने कहा-"तुम मेरी पसंद की लड़की हो लेकिन जिस तरह और जिस जगह तुम मुझे मिली हो, ये मुझे पसंद नहीं.... मेरी मर्दांगी को मत ललकारो। तुम्हारा जिस्म मुझे बहुत अच्छा लगता है लेकिन मेरे देवता मुझ पर लानत भेजेंगे के मैं ने मुसीबत में फंसी हुई लड़की का हाथ पकड़ा और उसके जिस्म को अपना इनाम समझ लिया।"

जरेद फिर ख़ामोश हो गया। योहावा के दिल से ख़ौफ निकलता चला गया और जरेद उसे बड़ा ही खूबसूरत नज़र आने लगा।

❁

"मैंने जरेद को मक्का में बई बार देखा था"-योहावा ने काब बिन असद के घर में सब को ये कहानी सुनाते हुए कहा-"लेकिन मैंने उसकी तरफ कभी तवज्जह नही दी थी। अपने कबीले में उसे कोई रूतबा या ऊंची हैसियत हासिल नही थी मगर उस रोज़ ग़ार में उसके पास तन्हा और बे बस बैठ कर मुझे महसूस होने लगा के ये तो ऊंची हैसियत वाले लोगों से भी ऊंचा है....

"आंधी का ज़ोर टूटा तो सूरज डूब रहा था। उसने मुझे कहा, आओ चलें। मैं उसके पीछे पीछे ग़ार से निकली। कुछ दूर उसका ऊंट टीले के साथ लगा बैठा था। वो ऊंट पर बैठा और मुझे अपने पीछे बैठा लिया। उसके इशारे पर ऊंट उठा और चल पड़ा। गर्द व गुबार साफ हो गया था। मैंने वो जगह देखी। वो बड़ी ही डरावनी जगह थी। मैंने उस जगह के मुताल्लिक़ कुछ पुरइसरार बातें सुनी थी। आंधी में तो मैं देख न सकी थी के ये कौन सी जगह है। आंधी के बाद देखा तो मेरे रोंगटे खड़े हो गए। बाज़ टीले इन्सानों की तरह थे। इन का रंग भी डरावना था....

"मैं शतुर सवारी जानती हूं। ऊंट को दौड़ा सकती हूं लेकिन उस शाम जरेद के पीछे ऊंट पर बैठे हुए मैं डरने लगी के मैं गिर पडुंगी। मैं ने जरेद की कमर में बाज़ो डाल कर उसे मज़बूती से पकड़ लिया। मुझ में ये अहसास बेदार हो गया के मैं बड़ी कमज़ोर लड़की हूं और जरेद बिन मुसय्यब मेरा मुहाफ़िज़ है। आप को ये तो मालूम है के मैं अपने मज़हब के लिए क्या कर रही हूं लेकिन आप को ये मालूम नही होगा के उस रास्ते पर मुझे मेरे बाप ने डाला है।"

योहावा ने इन्हें बताया के जब अहल-ए-कुरैश बदर में मुसलमानों के हाथों शिकस्त खा कर आए तो उन की औरतों ने बाजू लहरा लहरा कर बीन किए थे। योहावा का बाप कट्टर यहूदी था। कुरैश की शिकस्त पर उसके आंसू निकल आए थे। उसने कहा था के कुरैश के एक हज़ार जंगजू अगर रसूले खुदा के तीन सौ तेरा आदमियों से शिकस्त खा आए हैं तो उससे यही ज़ाहिर होता है के "मोहम्मद(स०) कोई जादू ले के आया है"-उसने कहा था-"मोहम्मद(स०) के पैरूकारों में इसी क़बीले कुरैश के आदमी हैं। वो आसमान से नहीं उतरे, फिर वो जीत किस तरह गए?"

उस वक़्त योहावा कमसिन थी। अगले रोज़ उस के बाप ने घर वालों को अपना ख्वाब सुनाया जो उसने गुज़िश्ता रात देखा था। उसने देखा के उसके हाथ में तलवार है जो खून से लाल है और उस के सामने एक आदमी ज़मीन पर पड़ा तड़प रहा है। उसके कपड़े खून से लाल हैं। योहावा को मालूम नहीं के ये कौन है जिसे उसने क़त्ल कर दिया है। उसे एक आवाज़ सुनाई देती है- "ये काम तुम्हें करना

है"-तड़पता हुआ ज़ख्मी मर जाता है और लाश अपने आप ज़मीन में गायब हो जाती है। वहां से एक बड़ी खूबसूरत और कमसिन लड़की उभरती है जिस के होंटो पर मुसकुराहट है।

उस पर इस ख्वाब का ऐसा असर हुआ के वो लेस बिन मोशान के पास चला गया और उस से ख्वाब की ताबीर पूछी। लेस बिन मोशान ने उसे बताया के वो अपनी कमसिन बेटी योहावा को इस्लाम की जड़ें काटने के लिए वक्फ़ कर दे। इस बूढ़े यहूदी जादूगर ने ये पैशन गोई भी की थी के जिस ने नबूव्वत का दावा किया है यानी रसूले करीम, वो इस लड़की के हाथों क़त्ल होंगे या ये लड़की उनकी नबूव्वत के ख़ात्मे का ज़रिया बनेगी। उसने योहावा के बाप से ये भी कहा था को वो योहावा को उसके पास ले आए।

योहावा को लेस बिन मोशान के हवाले कर दिया गया।

❁

"मैंने इस लड़की की तरबीयत की है"-लेस बिन मोशान योहावा की बात काट कर कहा-"खुदाए यहूदा ने इसे जो हुस्न और जो जिस्म दिया है। ये एक दिलकश तलवार है या इसे मीठा ज़हर समझ लें। उसने कुरैश को मुसलमानों से टकराने में जो काम किया है वो तुम में से कोई नही कर सकता। छोटे छोटे क़बीले के सरदारों को इस लड़की ने कुरैश का इत्तेहादी और मोहम्मद(स०) का दुश्मन बनाया है। अब उसने मोहम्मद(स०) के क़त्ल का जो इन्तेज़ाम मुझ से कराया है, वो इसी से सुनो।"

योहावा ने सुनाया के लेस बिन मोशान ने उसमें ऐसी जुर्रत और ऐसी अक्ल पैदा कर दी है वो मर्दो पर अपने हुस्न का जादू चलाने की माहिर हो गई। हसीन लड़की होते हुए उसमें मर्दों जैसी जुर्रत आ गई थी लेकिन उसका उस्ताद उसे ये न बता सका के जिस नए अक़ीदे को रोकने का और जिस शख्सियत के क़त्ल का उन्होंने इरादा कर रखा है, वो अक़ीदा खुदा ने उतारा है और उस शख़्सियत को खुदा ने इस अक़ीदे के फरोग़ के लिए रिसालत अता की है।

योहावा की तरबीयत ऐसी ही हुई के वो अपने मज़हब को दुनिया का वाहिद सच्चा मज़हब समझती रही और ये न समझ सकी के हक़ परस्तों पर अल्लाह का हाथ होता है। खुदा ने आंधी में उसे तन्हा फैंक दिया लेकिन वो खुदा का ये इशारा न समझ सकी। कहां वो जुर्रत के मामले में अपने आप को मर्दो के बराबर समझती थी, कहां वो एक कमज़ोर और बे बस लड़की बन गई।

वो मर्द के जिस्म से नाआशना नही थी। जरेद बिन मुसय्यब का जिस्म भी एक

मर्द का ही जिस्म था लेकिन उस जिस्म को वो मुक़द्दस और पाक समझने लगी और जरेद उसे फरिश्ता लगने लगा। वजह ये थी के वो उसके हसीन चेहरे रेशम जैसे बालों और दिलकश जिस्म से ज़रा सा भी मुतास्सिर नही हुआ था। योहावा पर जरेद के इस रवैये का ये असर हुआ के वो जरेद के जिस्म में कशिश महसूस करने लगी।

मक्का दूर नही था। शाम के बाद जब रात गहरी हो चुकी थी, जरेद ने योहावा को उसके घर पहुंचा दिया। योहावा के क़िले नुमा मकान का दरवाज़ा खुला तो उसका बाप परेशान नज़र आया। उसे तवक्क़ो नही थी के उसकी बेटी ज़िन्दा वापस आजाएगी। उन्होंने जरेद को रोक लिया और शराब से उसकी तवाज़े की। जरेद जब चला गया तो योहावा ने अपनी ज़ात में ख़ला महसूस किया।

दूसरे ही रोज़ उसने जरेद को पैग़ाम भेजा के उसे मिले। जरेद आ गया। ये एक जज़बाती मुलाक़ात थी। जरेद ने ये मुलाक़ात जज़बात तक ही रखी। उसके बाद उनकी मुलाकातें होती रहीं और जरेद के दिल में भी योहावा की मोहब्बत पैदा हो गई। ये मोहब्बत पाक रही। योहावा हैरान थी के उसके अन्दर पाकीज़ा और वालेहाना मोहब्बत के जज़बात मौजूद हैं। एक रोज़ जरेद ने योहावा से पूछा के वो उसके साथ शादी क्यों नहीं कर लेती?

"नहीं"-योहावा ने जवाब दिया-"मैं तुम्हारे जिस्म की पूजा करती हूं। शादी हो गई तो जज़बात मर जाएंगे।"

"मेरी बेटियां है बेटा कोई नहीं"--जरेद ने उसे कहा-"मैं दूसरी शादी करना चाहता हूं। मुझे बेटा चाहिए।"

योहावा सोच में पड़ गई। वो जरेद बिन मुसय्यब की ये ख्वाहिश पूरी करना चाहती थी। उसे एक रास्ता नज़र आ गया।

"हमारा एक बुजुर्ग है। लेस बिन मोशान"-योहावा ने कहा-"उसके पास कोई इल्म है। उसके हाथ में कोई ताक़त है। मुझे उम्मीद है के वो अपने इल्म और अमल के ज़ोर से तुम्हें इसी बीवी से बेटा देगा। तुम मेरे साथ चलो। वो मेरा अतालीक़ है।"

जरेद उसके साथ लेस बिन मोशान के पास जाने के लिए तैयार हो गया।

❁

उनकी दोस्ती दो आदमियों या दो औरतों की दोस्ती की सूरत इख्तियार कर गई थी। वो जब इक्ळे बैठते तो रसूले अकरम के खिलाफ भी बातें करते थे। इसलाम के फरोग़ को रोकने के मंसूबे भी बनाते थे लेकिन जरेद मुसलमानों के खिलाफ किसी जंगी कारर्वाई में शरीक नही होता था। योहावा को उसकी ये बात पसंद नही थी। उसे वो उकसाती और भड़काती थी।

"मेरा मज़हब तुम हो" -जरेद बिन मुसय्यब ने उसे एक रोज़ फैसले के लहजे में कह दिया था- "तुम मेरी बीवी नही बन सकती तो न सही, मैं तुम्हें देखे बग़ैर ज़िन्दा नही रह सकता।"

"मैं तुम्हें एक राज़ बता देती हूं जरेद!" -योहावा ने उसे कहा था- "मैं किसी की भी बीवी नही बनूंगी। मेरे बाप ने मेरी ज़िन्दगी यहूदीयत के लिए वक्फ़ कर दी है। लेस बिन मोशान ने मुझे ये फर्ज़ सौंपा है के इस्लाम के ज़्यादा से ज़्यादा दुश्मन पैदा करूं। मेरे दिल में अपने मज़हब के बाद सिर्फ तुम्हारी मोहब्बत है। मुझे तुम अपनी मिल्कियत समझो।"

एक रोज़ जरेद योहावा के साथ लेस बिन मोशान से मिलने उसके पास चला गया। योहावा उसे लेस बिन मोशान के सामने ले जाने की बजाए पहले खुद अन्दर गई और उसने लेस को साफ अल्फाज़ में बताया के जरेद को वो मोहब्बत का देवता समझती है। उसने लेस बिन मोशान को बताया के जरेद ने उसे मौत के मुंह से निकाला था। उसने लेस को बताया के जरेद की बेटियां हैं बेटा एक भी नही।

"क्या आप के इल्म में इतनी ताक़त है के जरेद की बीवी के वतन से लड़ाका पैदा हो?" -योहावा ने पूछा।

"क्या नहीं हो सकता" -लेस बिन मोशान ने कहा- "पहले मैं उसे देखूंगा फिर बता सकूंगा के मुझे क्या करना पड़ेगा। उसे मेरे पास भेज दो।"

योहावा ने उसे अन्दर भेज दिया और खुद बाहर खड़ी रही। बहुत सा वक़्त गुज़र जाने के बाद लेस बिन मोशान जरेद को बाहर भेज कर योहावा को अन्दर बुलाया।

"जो शख़्स तुम जैसी खूबसूरत और दिलकश लड़की के साथ इतना अरसा पाक मोहब्बत कर सकता है वो बहुत ही मज़बूत शख़्सीयत का आदमी है-लेस बिन मोशान ने कहा- "या वो इस क़दर कमज़ोर शख्सीयत का हो सकता है के तुम्हारे हुस्न का जादू अपने ऊपर तारी कर के तुम्हारा गुलाम हो जाए।"

"जरेद मज़बूत शख़्सीयत का आदमी है" -योहावा ने कहा।

"जरेद की ज़ात बहुत कमज़ोर है" -लेस बिन मोशन ने कहा- "मैं ने तुम्हारे मुताल्लिक़ इस के साथ कोई बात नही की। मैंने इसकी ज़ात में उतर कर मालूम कर लिया है। ये शख़्स तुम्हारे तिलिस्म का असीर है।"

"मुक़द्दस अतालीक़!" -योहावा ने पूछा- "आप इस के मुताल्लिक़ ऐसी बातें क्यों कर रहे हैं?...मैं इसे एक बेटा देना चाहती हूं। मुझे इसके साथ इतनी मोहब्बत है के मैं ने ये भी सोच रखा है के मैं इसके बेटे को जन्म दूंगी।"

"नहीं लड़की!"-बूढ़े लेस ने कहा-"तुम्हारी कोख से इस का बेटा जन्म नहीं लेगा। ये शख़्स ज़रिया बनेगा इस फर्ज़ का जो खुदाए यहूदा ने मुझे और तुम्हें सौंपा है।"

योहावा ख़ामोशी से लेस बिन मोशान के चेहरे पर नज़र जमाए हुए थी।

"जिसे तुम अपनी मोहब्बत का देवता समझती हो वो इस शख़्स को क़त्ल करेगा जो कहता है के उसे खुदा ने नबुव्वत दी है"-लेस बिन मोशान ने कहा-"जरेद से ज़्यादा मोज़ूं आदमी और कोई नहीं होगा।"

"क्या आप पैशन गोई कर रहे हैं?"-योहावा ने पूछा-"ये किस तरह क़त्ल करेगा?"

"इसे मैं तैयार करूंगा।"

"ये तैयार नहीं होगा"-योहावा ने कहा-"ये कहा करता है के उसका कोई मज़हब नहीं। मोहम्मद(स०) को ये अपना दुश्मन नहीं समझता। क़त्ल व ग़ारत को पसंद नहीं करता।"

"ये सब कुछ करेगा"-बूढ़े लेस ने कहा-"उसके ज़हन पर मेरा क़ब्ज़ा होगा। तुम मेरे साथ होगी। तीन रोज़ तक ये सूरज की रोशनी नहीं देख सकेगा। जब हम उसे बाहर निकालेंगे तो ये एक ही बात कहेगा-कहां है खुदा का नबी! वो हम में से है। मैं उसे ज़िन्दा नहीं रहने दूंगा।"

"मुक़द्दस बाप!"-योहावा ने रूंधाई हुई आवाज़ में इल्तेजा की-"जरेद मारा जाएगा। ये वाहिद शख़्स है...."

"खुदाए यहूदा से बढ़कर मोहब्बत के लायक़ कोई नहीं"-लेस बिन मोशान ने कहा-"तुम्हें ये कुर्बानी देनी होगी। जरेद अब मक्का को वापस नहीं जाएगा।"

☸

फिर योहावा भी मक्का को वापस न गई, जरेद बिन मुसय्यब भी न गया। बूढ़े लेस ने दोनो को तीन दिन और तीन रातें एक कमरे में बंद रखा। जरेद को अपने सामने बैठा कर इसकी आँखों में आखें डाल दी फिर उसे कुछ पिलाया और कुछ ज़ेर-ए-लब बड़बड़ाने लगा। उसने योहावा को नीम बरहना कर के इसके साथ बैठा दिया। लेस योहावा को जो कहता रहा वो करती रही।

"ये ज़रूरी नहीं के मैं तुम सब को ये भी बताऊं के मै ने जरेद के ज़हन और उसकी सोचों को किस तरह अपने कब्ज़े में लिया"-लेस ने कहा-"मैं उसे साथ लाया हूं। तुम उसे खुद देख लो।"

लेस बिन मोशान ने योहावा को इशारा किया। योहावा बाहर चली गई और

जरेद बिन मुसय्यब को अपने साथ ले आई। जरेद ने अन्दर आकर सब को बारी बारी देखा।

"वो यहां नहीं है" -जरेद ने कहा - "हम तुम्हें उस तक पहुंचाऐंगे। कल ....कल जरेद!.....बैठ जाओ।"

जरेद योहावा के साथ लग कर बैठ गया और बाजू उसकी कमर में डाल कर उसे अपने और क़रीब कर लिया।

अगली सुबह जब मदीना में लोग फतह की खुशियां मना रहे थे और काब बिन असद के घर रसूले अकरम(स०) और इस्लाम के खिलाफ बड़ी ही ख़तरनाक साज़िश तैयार हो चुकी थी, रसूले करीम(स०) को याद दिलाया गया के बनू क़रीज़ा ने जिस का सरदार काब बिन असद था, मदीने के मुहासरे के दौरान अहले कुरैश और ग़तफान के साथ खुफिया मुहाएदा किया था जिसे नईम(र०) बिन मसऊद ने बड़ी दानिशमंदी से बेकार कर दिया था।

ये वाक़ेया भी दो चार रोज़ पहले का था जिस में रसूल अल्लाह(स०) की फूफी हज़रत सफिया(र०) ने एक यहूदी मुख्बिर को क़त्ल किया था। ये मुख्बिर इस छोटे से क़िले में दाख़िल होने का रास्ता देख रहा था जिस में मुसलमानों की औरतों और इन के बच्चों को रखा गया था। इस यहूदी ने एक औरत को अपने मुक़ाबले में देख कर बड़े रौब और घमंड से कहा था के वो यहूदी है और मुख्बिरी के लिए आया है। हज़रत सफिया(र०) ने इस की तलवार का मुक़ाबला डण्डे से किया और उसे हलाक कर दिया था।

"खुदा की क़सम!"-किसी सहाबी ने ललकार कर कहा-"इन यहूदियों पर ऐतबार करना और इनकी बद अहदी पर इन्हें बख्श देना ऐसा ही है जैसे अपना ख़ंजर अपने ही दिल में उतार लिया जाए।"

अब्दुल्ला बिन मोहम्मद बिन असमा और नाफे हज़रत इब्ने उमर(र०) के हवाले से रिवायत करते हैं के मआरका-ए-ख़ंदक़ के ख़ात्मे पर रसूले अकरम(स०) ने फरमाया-"तुम में हर कोई नमाज़-ए-असर बनू क़रीज़ा के पास पहुंच कर पढ़े।"

एक और हदीस है जिस के रावी हज़रत उन्स(र०) हैं। उन्होंने कहा था "मैं अब तक लश्कर जिबराईल का गर्द व गुबार बनू ग़नम में उड़ते हुए देख रहा हूं। ये उस वक़्त की बात है जब रसूले करीम(स०) बनू क़रीज़ा को बद अहदी और धोका दही की सज़ा देने गए थे।"

तमाम मोअर्रिख़ीन ने लिखा है के रसूले करीम(स०) के हुक्म से मुसलमानों ने चढ़ाई कर दी और बनू क़रीज़ा की क़िला बंद बस्ती को मुहासरे में ले लिया। अहादीस

के मुताबिक़ साद(र०) बिन मआज़ को बनू क़रीज़ा के सरदारों के पास इस पैग़ाम के साथ भेजा गया के वो अपनी बद अहदी की सज़ा खुद तजवीज़ करें। साद बिन मआज़(र०) ज़ख्मी थे। ख़ंदक़ की लड़ाई में उन्हें क़बीला कुरैश के एक आदमी हब्बान बिन अरफा की बरछी लगी थी।

❁

लेस बिन मोशान, योहवा और यहूदियों के तीन चार सरकर्दा आदमी अभी तक काब बिन असद के पास बैठे हुए थे। जरेद बिन मुसय्यब भी वहीं था। उन्होंने अपनी साज़िश का वक़्त रात का मुक़र्रर किया लेकिन एक यहूदी दौड़ता हुआ अन्दर आया।

"मुसलमान आ रहे हैं"-उस ने घबराहट से कांपती हुई आवाज़ में कहा-"साफ नज़र आता है के वो दोस्त बन कर नहीं आ रहे। गर्द बता रही है के वो चढ़ाई कर के आ रहें हैं। गर्द दायें बायें फैल रही है...देखो। उठो और देखो।"

काब बिन उसद दौड़ता बाहर निकला और क़िले के बुर्ज में चला गया। वहां से दौड़ता उतरा और लेस बिन मोशान के पास पहुंचा।

"मुक़द्दस मोशान!"-काब बिन असद ने कांपती हुई आवाज़ में कहा-"क्या आप का जादू उन बरछियों और तलवारों को तोड़ सकता है जो हमें क़त्ल करने आ रही हैं?"

"खुदाए यहूदा की क़सम!"-काब बिन असद ने कहा-"ये मुख्बरी नईम(र०) बिन मसऊद ने की है। मुझे मालूम न था के वो मुसलमान हो चुका है.....मुसलमान मुहासरे की तरतीब में आ रहे हैं। हम निकल नहीं सकेंगे।"

इन दोनों को निकाल दो"-लेस बिन मोशान ने कहा-"योहावा! जरेद को साथ ले कर पिछले दरवाज़े से निकल जाओ। मैं तुम्हारे पीछे पीछे आ रहा हूं।"

"आप ऊपर क्यों नही जाते लेस बिन मोशान?"-काब बिन असद ने कहा-"आप का वो इल्म और वो जादू कहां गया जो आप...."

"तुम इस राज़ को नहीं समझ सकते"-बूढ़े लेस ने कहा-"मूसा(अ०) ने फिरओन को एक दिन में ख़त्म नहीं कर दिया था। ये असा जो तुम मेरे हाथ मे देख रहे हो, वही है जो मूसा(अ०) ने दरिया में मारा था तो पानी ने उन्हें रास्ता दे दिया था। ये असा का करिश्मा था के फिरओन का लश्कर और वो खुद दरिया में डूब कर फना हो गया था जिस तरह मूसा(अ०) अपने क़बीले को मिस्र से निकाल लाए थे इसी तरह मैं तुम्हें यहां से निकाल दूंगा।"

योहावा और जरेद बिन मुसय्यब पिछले दरवाज़े से निकल गए और लेस बिन

मोशान भी चल पड़ा।

❁

मुसलमान जब बनू क़ुरीज़ा की बस्ती के क़रीब आए तो औरतों और बच्चों में हड़बोंग बपा हो गई और भगदड़ मच गई। औरतें और बच्चे अपने घरों को भागे जा रहे थे। कोई आदमी मुक़ाबले के लिए बाहर न आया जो मुसलमान टेकरियों की तरफ से मुहासरे के लिए आगे बढ़ रहे थे, उन्हें दो आदमी और एक औरत नज़र आई। तीनों भागे जा रहे थे। आदमी जो बूढ़ा था और औरत अपने साथी को घसीट रहे थे। वो पीछे को मुड़ मुड़ कर देखता और आगे नहीं चलता था।

वो लेस बिन मोशान, जरेद और योहावा थे। लेस ने जरेद के ज़हन पर कब्ज़ा कर के उसे रसूले करीम(स०) के क़त्ल पर आमादा कर लिया था लेकिन अब जरेद उसके लिए मुसीबत बन गया था। वो उस अमल के ज़ेर-ए-असर था जिसे आज हिपनोटिज़्म कहा जाता है। योहावा अपनी मोहब्बत की ख़ातिर उसे अपने साथ ले जा रही थी। उसे यही एक ख़तरा नज़र आ रहा था के जरेद मुसलमानों के हाथों मारा जाएगा और लेस जरेद को इस लिए अपने साथ ले जाने की कोशिश में था के उसे किसी और मौक़े पर रसूल अल्लाह(स०) का क़त्ल के लिए इस्तेमाल करेगा लेकिन जरेद लेस के अमल-ए-तनवीम के ज़ेर-ए-असर बार बार कहता था-"कहां है वो जो अपने आप को खुदा का नबी कहता है....वो हम में से है....वो मेरे हाथों क़त्ल होगा....मुझे छोड़ दो....मुझे मदीना जाने दो।"

एक मुसलमान ने टेकरी पर खड़े हो कर इन्हें लल्कारा और रूकने को कहा। लेस और योहावा ने पीछे देखा और वो जरेद को अकेला छोड़ कर भाग गए। जरेद ने तलवार निकाल ली।

"कहां है मोहम्मद(स०)!"-जरेद ने तलवार लहरा कर टेकरी की तरफ आते हुए कहा-"वो हम में से है। मैं उसे पहचानता हूं। मैं उसे क़त्ल करूंगा जिस ने नबुव्वत का दावा किया है....योहावा मेरी है"-वो लल्कारता आ रहा था-"योहावा हुब्ल और उज़ा से ज्यादा मुक़द्दस है। सामने लाओ अपने नबी को।"

कौन मुसलमान अपने अल्लाह के रसूल(स०) की इतनी तौहीन बर्दाश्त करता। जिस मुसलमान ने इन तीनों को लल्कारा था उसने कमान में तीर डाला और दूसरे लम्हे ये तीर जरेद बिन मसुय्यब की दायी आंख में उतर कर खोपड़ी के दूर अंदर पहुंच चुका था। जरेद के एक हाथ में तलवार थी। इसका दूसरा हाथ दांयी आंख पर चला गया और उसने तीर को पकड़ लिया। वो रूक गया इसका जिस्म डोला, फिर उसके घुटने ज़मीन से जा लगे। उसका वो हाथ जिस में तलवार थी, इस तरह ज़मीन

से लगा के तलवार की नोक ऊपर को थी। जरेद बड़ी ज़ोर से आगे को गिरा! तलवार की नोक उसकी शह रग में उतर गई। वो ज़रा सा तड़पा और हमेशा के लिए बे हिस व हरकत हो गया।

❁

साद बिन मआज़(र०) जो ज़ख्मी थे, काब बिन असद के दरवाज़े पर जा रूके और दस्तक दी। काब ने गुलाम भेजने की बजाए खुद दरवाज़ा खोला।

"बनू क़रीज़ा के सरदार!"-साद बिन मआज़(र०) ने कहा-तेरे क़बीले के बच्चे बच्चे ने देख लिया है के तेरी बस्ती हमारे घेरे में है। क्या तू कह सकता है के तूने वो गुनाह नही किया जिस की सज़ा आज तेरे पूरे क़बीले को मिलेगी? क्या तूने सोचा नहीं था के बद अहदी की सज़ा क्या है?"

"मुझे इन्कार नहीं"-काब बिन असद ने हारे हुए लहजे मे कहा-"लेकिन मैं ने व्रो गुनाह किया नही जो अबु सुफयान मुझ से कराना चाहता था।"

"इसलिए नहीं किया के तू उससे यरग़माल में ऊंचे ख़ानदानों के आदमी मांगता था"-साद बिन मआज़(र०) ने कहा- उससे पहले तू ने उसे कह दिया था के तेरा क़बीला मदीने के उन मकानों पर शबखून मारेगा जिनमें हमारी औरतें और हमारे बच्चे थे। तूने एक मुख्बिर भी भेजा था। बद इन्सान! तू न सोच सका के मुसलमानों की सिर्फ एक औरत बेदार हुई तो वो यहूदी की शैतानीयत को सिर्फ एक डण्डे से कुचल देगी।"

"मैं जानता हूं तुम्हें नईम(र०)बिन मसऊद ने ख़बर दी है के मैं ने तुम से बद अहदी की है"-काब बिन असद ने शिकस्त खुर्दा आवाज़ में कहा-"तुम ये जान लो के ये ख़बर ग़लत नहीं। मैंने जो कुछ किया वो अपने क़बीले की सलामती के लिए किया था।"

"अब अपने क़बीले के लिए सज़ा खुद ही मुक़र्रर कर दे"-साद बिन मआज़(र०) ने कहा- "तू जानता है के मुहाएदा तोड़ने वाले क़बीले को क्या तावान देना पड़ता है। अगर तू खुद अपनी सज़ा का फैसला नही करता तो भी तुझे मालूम है के तेरे क़बीले का अंजाम क्या होगा। क्या तू बनू केनक़ाअ और बनू क़रीज़ा का अंजाम भूल गया है? मुझे इस ज़ख्म की क़सम जो मैं ने खंदक़ की लड़ाई में खाया है, तेरे क़बीले का अंजाम उन से ज़्यादा बुरा होगा।"

"हां साद!"-काब बिन असद ने कहा-"मैं जानता हूं मेरे क़बीले का अंजाम क्या होगा। हमारे बच्चे और हमारी औरतें भी ख़त्म हो जाएंगी। मेरा फैसला ये है के मुहाएदे के मुताबिक़ मेरे क़बीले के तमाम मर्दों को क़त्ल कर दो और हमारी औरतों

और हमारे बच्चों को अपने साथ ले जाओ। वो ज़िन्दा तो रहेंगे।"

"सिर्फ ज़िन्दा नही रहेंगे"-साद बिन मआज़(र०) ने कहा-"वो खुदा के सच्चे नबी के पैरूकार बन कर बाइज़्ज़त ज़िन्दगी बसर करेंगे....अपने तमाम आदमियों को बाहर निकालो।

सआद बिन मआज़(र०) वापस आ गए।

"या रसूल अल्लाह(स०)!"-उन्होंने रसूले करीम(स०) से कहा-"बनू क़रीज़ा ने अपनी सज़ा खुद मक़र्रर की है। इन में जो आदमी लड़ने के क़ाबिल हैं, उन्हें क़त्ल कर दिया जाए और औरतों बच्चों और बूढ़ों को अपनी तहवील में ले लिया जाए।"

सब ने देखा के बनू के लोग क़िले से बाहर आ रहे थे। मुहासरे में से किसी को भाग निकलने का मौक़ा न मिला। मोअररिख़ों ने लिखा है के यहूदियों की तारीख़ फितना व फसाद और बद अहदी से भरी पड़ी थी। इसी खुदा की धुत्कारी हुई क़ौम कहा गया था। इनके साथ जिस ने भी नरमी बरती, उसे यहूदियों ने नुक़सान पहुंचाया। चुनानचे बनू क़रीज़ा को बख्श देना बड़ी ख़तरनाक हिमाक़त थी। मुसलमानों ने इस क़बीले के ऐसे तमाम आदमियों को क़त्ल कर दिया जो लड़ने के क़ाबिल थे और बूढ़ों, औरतों और बच्चों को अपनी तहवील में ले लिया।

दो मोअररिख़ेन ने लिखा है के रसूले करीम(स०) ने बनू क़रीज़ा पर फौज कशी की तो यहूदियों ने बड़ा सख्त मुक़ाबला किया मुसलमानों ने पच्चीस रोज़ बनू क़रीज़ा को मुहासरे में लिए रखा। आख़िर यहूदियों ने रसूले अकरम(स०) को पैग़ाम भेजा के साद बिन मआज़(र०) को उन के पास सुलह की शरायत तय करने के लिए भेजा जाए। चुनानचे सद बिन मआज़(र०) गए और ये फैसला कर आए के बनू क़रीज़ा के आदमियों को क़त्ल कर दिया जाए और उनकी औरतों और बच्चों को माल-ए-ग़नीमत में ले लिया जाए। जिन यहूदियों को क़त्ल किया गया उनकी तादाद चार सौ थी।

ज़्यादा तर मोअररिख़ों ने लिखा है के बनू क़रीज़ा ने मुक़ाबला नहीं किया और अपने किए की सज़ा पाने के लिए क़िले से बाहर निकल आए।

मदीना में यहूदियों के क़त्ल-ए-आम के साथ ये ज़िक्र दिलचस्पी से खाली न होगा के इससे पहले मुसलमानों ने यहूदियों के दो क़बीलों बनू नज़र और बनू केनक़आ को ऐसी ही बद अहदी और फितना परवाज़ी पर ऐसी ही सज़ा दी थी। इन क़बीलों के बचे कुचे यहूदी शाम को भाग गए थे। शाम में रोमियों की हकूमत थी। एक इसाई बादशाह हरकुल ने हमला कर के शाम पर कब्ज़ा कर लिया। यहूदियों ने इस के साथ

भी बद अहदी की। इधर मदीना में मुसलमान बनू क़रीज़ा को क़त्ल कर रहे थे, उधर हरकुल बनू नज़ीर और कनकुआ का क़त्ल-ए-आम कर रहा था।

एक हदीस है जो हज़रत आयशा(र०) के हवाले से हशाम बिन उरवा ने बयान की है के साद बिन मआज़(र०) के फैसले को रसूले करीम(स०) ने क़बूल फरमाया और बनू क़रीज़ा के यहूदियों को क़त्ल कर दिया गया था। हशाम बिन उरवा ने ये भी कहा है के उन के वालिद बुज़ुर्गवार ने उन्हें ये वाक़ेया सुनाया था के साद बिन मआज़(र०) को सीने में बरछी लगी थी। जब बनू क़रीज़ा को सज़ा दी जा चुकी तो रसलू अल्लाह(स०) के हुक्म से साद बिन मआज़(र०) को लिए मस्जिद के क़रीब एक खेमा लगा कर इस में उन्हें रखा गया ताके उनके ज़ख्म की देखभाल आसानी से होती रहे।

साद बिन मआज़(र०) इस खेमे में लेट गए लेकिन उठ बैठे और उन्होंने खुदा से दुआ मांगी, के उनकी एक ही ख्वाहिश है के हर उस क़ौम के ख़िलाफ लड़ें जो अल्लाह के रसूल(स०) को सच्चा नबी नहीं समझती मगर लड़ाई ख़त्म हो चुकी है। उन्होंने खुदा से इल्तेजा की मुसलमानों को कोई और लड़ाई लड़नी है तो मुझे इस में शरीक होने के लिए ज़िन्दगी अता फरमा। अगर ये सिलसिला ख़त्म हो गया है तो मेरे ज़ख्म को खोल दे के में तेरी राह मैं जान दे दूं।

साद बिन मआज़(र०) की ये दुआ तीन चार आदमियों ने सुनी थी लेकिन उन्होंने इसे अहमीयत नहीं दी थी। सुबह किसी ने देखा के साद बन मआज़(र०) के खेमे से खून बह बह कर बाहर आ रहा था। खेमे में जाकर देखा। साद बिन मआज़(र०) शहीद हो चुके थे। उन्हेंने खुदा से शहादत मांगी थी। खुदा ने उनकी दुआ कुबूल कर ली। उनके सीने का ज़ख्म खुल गया था।

❁

बनू करीज़ा की तबाही की ख़बर मक्का पहुंची तो सब से ज़्यादा खुशी अबु सुफयान को हुई।

"खुदा की क़सम, बनू क़रीज़ा को उस बद अहदी की सज़ा मिली है जो उसके सरदार काब बिन असद ने हमारे साथ थी"-अबु सुफयान ने कहा-"अगर उसका क़बीला मदीना पर शबखून मारता रहता तो फतह हमारी होती और हम बनू क़रीज़ा को मौत की बजाए माल-ए-ग़नीमत देते....क्यों ख़ालिद! क्या बनू क़रीज़ा का अंजाम बहुत बुरा नहीं हुआ?"

ख़ालिद ने अबु सुफयान की तरफ ऐसी निगाहों से देखा जैसे उसे उसकी बात अच्छी न लगी हो।

"क्या तुम बनू क़रीज़ा के इस अंजाम से खुश नही हो ख़ालिद?"-अबु सुफयान ने पूछा।

"मदीना से पस्पाई का दुख इतना ज़्यादा है के बड़ी से बड़ी खुशी भी मेरा ये दुख हल्का नहीं कर सकती"-ख़ालिद ने कहा-"बद अहद की दोस्ती दुश्मनी से ज़्यादा ख़तरनाक होती है। क्या तुम मुझे बता सकते हो के यहूदियों ने किस के साथ वफा की है? अपनी बेटियों को यहूदियत के तहफ़्फ़ुज़ और फ़रोग़ के लिए दूसरी क़ौमों के आदमियों की अय्याशी का ज़रिया बनाने वाली क़ौम पर भरोसा नहीं किया जा सकता।"

"हमें मुसलमानों ने नहीं तूफानी आंधी ने मुहासरा उठाने पर मजबूर किया था"-अबु सुफयान ने कहा- "हमारे पास खुराक़ नहीं रही थी।"

"तुम लड़ना नही चाहते थे"-ख़ालिद ने कहा और उठ कर चला गया।

ख़ालिद अब ख़ामोश रहने लगा था। उसे कोई ज़बरदस्ती बुलाता तो वो झुंझला उठता। उसके क़बीले का सरदार अबु सुफयान उससे घबराने लगा था। ख़ालिद उसे बुज़दिल कहता था। ख़ालिद ने अपने आप से अहद कर रखा था के वो मुसलमानों को शिकस्त देगा लेकिन उसे जब मैदान-ए-जंग में मुसलमानों की जंगी चालें और उनका जज़्बा याद आता था तो वो दिल ही दिल में रसूले अकरम(स०) को ख़िराज-ए-तहसीन पेश करता था। ऐसा असकरी जज़बा और ऐसी असकरी फहम व फिरासत कुरैश में नापैद थी। ये फहम व फिरासत ख़ालिद में थी लेकिन अपने क़बीले से उसे तआवुन नहीं मिलता था।

आज जो वो मदीना की तरफ अकेला जा रहा था तो उसे मआरका ख़ंदक़ से पस्पाई याद आ रही थी। उसे गुस्सा भी आ रहा था और वो शर्मसार भी हो रहा था। उसे याद आ रहा था के उसने एक साल किस तरह गुज़ारा था। वो मदीना पर एक और हमला करना चाहता था लेकिन अहल-ए-कुरैश मदीना का नाम सुन कर दुबक़ जाते थे।

आख़िर इत्तेला मिली के मुसलमान मक्का पर हमला करने आ रहे हैं। उसे ये ख़बर अबु सुफयान ने सुनाई थी।

"मुसलमान मक्का पर हमला करने सिर्फ इस लिए आ रहे हैं के हम ने साबित कर दिया है के क़बीला कुरैश मोहम्मद(स०) से डरता है"-ख़ालिद ने अबु सुफयान से कहा- क्या तुम ने अपने क़बीले को कभी बताया है के मुसलमान मक्का पर हमला कर सकते हैं? क्या क़बीला हमला रोकने के लिए तैयार है?"

"अब इस बहस का वक़्त नहीं के हम ने क्या क्या और क्या नही

किया"-अबु सुफयान ने कहा-"मुझे इत्तेला देने वाले ने बताया है मुसलमानों की तादाद तक़रीबन डेढ़ हज़ार है....तुम कुछ सोच सकते हो?"

"मैं सोच चुका हूं" -ख़ालिद ने कहा-"मुझे तीन सौ सवार दे दो। मैं मुसलमानों को रास्ते में रोक लूंगा। मैं कराग़म की पहाड़ियों में घात लगाऊंगा। वो इसी दर्रे से गुज़र कर आएंगे। मैं उन्हे इन पहाड़ियों में बखेर कर मारूंगा।"

"तुम जितने सवार चाहो ले लो"-अबु सुफयान ने कहा-"और फौरन रवाना हो जाओ। ऐसा न हो के वो दर्रे से गुज़र आएं।"

ख़ालिद को आज याद आ रहा था के इस ख़बर ने उसके जिस्म में नई रूह फूंक दी थी। उसने उसी रोज़ तीन सौ सवार तैयार कर लिए थे। मुसलमानों की तादाद एक हज़ार चार सौ थी। इनमें ज़्यादा तर नफरी पियादा थी। ख़ालिद खुश था के अपने सवारों की क़यादत उसके हाथ में है। अब अबु सुफयान उसके सर पर सवार नहीं था। सब फैसले उसे खुद करने थे- वो मुसलमानों को फैसला कुन शिकस्त देने के लिए रवाना हो गया।

खालिद कुछ देर आराम कर के और घोड़े को पानी पिला कर चल पड़ा था। उसने घोड़े को थकने नही दिया था। मक्का से घोड़ा आराम आराम से चलता आया था। खालिद बड़ी मज़बूत शख्शीयत का आदमी था। उसके ज़हन में ख्वाहिशें कम और इरादे ज़्यादा हुआ करते थे। वो ज़हन को अपने कब्ज़े में रखा करता था, मगर मदीना को जाते हुए ज़हन उस पर काबिज़ हो जाता था। यादों के थपेड़े थे जो उसे तूफानी समुंद्र में बहती हुई कश्ती की तरह पटख़ रहे थे कभी उसकी ज़हनी कैफियत ऐसी हो जाती जैसे वो मदीना बहुत जल्दी पहुंचना चाहता हो और कभी यूं जैसे उसे कहीं भी पहुंचने की जल्दी न हो। उसकी आंखों के आगे मंज़िल सराब बन जाती और दूर ही दूर हटती नज़र आती थी।

घोड़ा अपने सवार के ज़हनी खुलफिशार से बे ख़बर जा रहा था।

सवार ने अपने सर को झटक कर गर्द व पेश को देखा। वो ज़रा बुलंद जगह पर जा रहा था। उफक़ से ओहद का सिलसिला कोह और ऊपर उठ आया था। ख़ालिद को मालूम था के कुछ देर बाद इन पहाड़ियों के क़रीब मदीना के मकान उभरने लगेंगे।

उसे एक बार फिर ख़ंदक़ और पस्पाई याद आई और उसे मुसलमानों के हाथों चार सौ यहूदियों का क़त्ल भी याद आया। बनू क़रीज़ा की इस तबाही की ख़बर पर क़ुरैश का सरदार अबु सुफयान तो बहुत खुश हुआ था मगर ख़ालिद को न खुशी हुई न अफसोस हुआ था।

"क़ुरैश यहुदियों की फरेबकारियों का सहारा ले कर मोहम्मद(स०) के पैरूकारों को शिकस्त देना चाहते हैं" -ख़ालिद को ख्याल आया। उसने अपने माथे पर हाथ फैरा जैसे उस ख्याल को ज़हन से साफ कर देना चाहता हो।

उसका ज़हन पीछे ही पीछे हटता जा रहा था। घंटियों की मुतरन्नुम आवाज़ें उसे

माज़ी से निकाल लायी। उसने दायें बायें देखा। बायें तरफ़ वसीअ नशेब था। ख़ालिद ऊपर जा रहा था। नीचे चार ऊंट चले आ रहे थे। ऊंट एक दूसरे के पीछे थे। इनके पहलूओ में एक घोड़ा था। ऊंटों पर दो औरतें, चन्द बच्चे और दो आदमी सवार थे। ऊंटों पर सामान भी लदा हुआ था। घुड़ सवार बूढ़ा आदमी था। उनकी रफ़्तार तेज़ थी। ख़ालिद ने अपने घोड़े की रफ़्तार कम कर दी।

ऊंटों का ये मुख़्तसर सा काफ़ला उसके क़रीब आ गया। बूढ़े घुड़सवार ने उसे पहचान लिया।

"तुम्हारा सफ़र आसान हो वलीद के बेटे!"-बूढ़े ने बाज़ू बुलंद कर के लहराया और बोला-"नीचे आ जाओ। कुछ दूर इक्ठे चलेंगे।"

ख़ालिद ने घोड़े की लगाम को एक झटका दिया और हल्की सी ऐंड़ लगाई घोड़ा नीचे उतर गया।

"हा हा!"-ख़ालिद ने अपना घोड़ा बूढ़े के घोड़े के पहलू में ले जाकर खुशी का इज़हार किया और कहा-"अबु जरीह!.....और ये सब तुम्हारा ख़ानदान है।"

"हां!"-बूढ़े अबु जरीह ने कहा-"ये मेरा ख़ानदान है....और तुम ख़ालिद बिन वलीद किधर का रूख़ किया है? मुझे यक़ीन है तुम मदीना को नहीं जा रहे....मदीना में तुम्हारा क्या काम?"

ये क़बीला ग़तफान का एक ख़ानदान था जो नक़ल-ए-मकानी कर के कहीं जा रहा था। अबु जरीह ने खुद ही कह दिया था के ख़ालिद मदीना को नहीं जा रहा तो ख़ालिद ने उसे बताना मुनासिब भी न समझा।

"अहल-ए-कुरैश क्या सोच रहे हैं?"-अबु जरीह ने कहा-"क्या ये सही नहीं के मोहम्मद(स०) को लोग नबी मानते ही चले जा रहे हैं? क्या ऐसा नहीं होगा एक रोज़ मदीना वाले मक्का पर चढ़ दौड़ेंगे और अबु सुफ़यान इन के आगे हथियार डाल देगा?"

"जो सरदार अपनी शिकस्त का इन्तेक़ाम लेना ज़रूरी नहीं समझता वो हथियार डालने को भी बुरा नहीं समझेगा"-ख़ालिद ने कहा-"क्या तुम्हें याद नहीं के हम सब मिल कर मदीना पर हमला करने गए थे तो मदीने वालों ने अपने इर्द गिर्द ख़ंदक़ खोद ली थी?"-ख़ालिद ने कहा- "हम ख़ंदक़ फलांग सकते थे। मैं ख़ंदक़ फलांग गया था। अकरमा भी ख़ंदक़ के पार चला गया था मगर हमारा लश्कर जिस में तुम्हारे क़बीले के जंजू भी थे, दूर खड़ा तमाशा देखता रहा था। मदीना से पस्पा होने वाला सब से पहला आदमी हमारा सरदार अबु सुफ़यान था।"

"मेरे बाज़ूओं में ताक़त नहीं रही इब्ने वलीद!"-अबु जरीह ने अपना एक हाथ

जो ज़ईफी से कांप रहा था, ख़ालिद के आगे कर के कहा- "मेरा जिस्म ज़रा सा भी साथ देता तो मैं भी उस मआरके में अपने क़बीले के साथ होता...उस रोज़ मेरे आंसू निकल आए थे जिस रोज़ क़बीला मदीना से पस्पा हो कर लौटा था....अगर काब बिन असद धोका न देता और मदीना पर तीन चार शब खून मार देता तो फ़तह यक़ीनन तुम्हारी होती।"

"क्या तुम ने सुना था के योहावा यहूदन ने तुम्हारे क़बीले के एक आदमी जरेद बिन मुसय्यब को मोहम्मद(स०) के क़त्ल के लिए तैयार कर लिया था?"-अबु जरीह ने पूछा।

"हां!"-ख़ालिद ने कहा-"सुना था....और मुझे ये कहते हुए शर्म आती है के जरेद बिन मुसय्यब मेरे क़बीले का आदमी था...कहां है वो? एक साल से ज़्यादा अरसा गुज़र गया है, उसका पता नहीं चला। मैं ने सुना था के योहावा यहूदन उसे अपने साथ यहूदी जादूगर लेस बिन मोशन के पास ले गई थी और उसने जरेद को मोहम्मद(स०) के क़त्ल के लिए तैयार किया था मगर मुसलमानों की तलवारों के सामने लेस बिन मोशान का जादू जवाब दे गया। जरेद बिन मुसय्यब मुसलमानों के हाथें क़त्ल हो गया। बनू क़रीज़ा में से ज़िंदा भाग जाने वाले सिर्फ दो थे। लेस बिन मोशान और योहावा।"

"अब सिर्फ एक ज़िन्दा है"-अबु जरीह ने कहा-"लेस बिन मोशान....सिर्फ लेस बिन मोशान ज़िन्दा है।"

"और जरेद और योहावा?"

"वो बदरूहें बन गए थे"-अबु जरीह ने कहा- "मैं तुम को उनकी कहानी सुना सकता हूं। तुम ने योहावा को देखा था। वो मक्का की ही रहने वाली थी। अगर तुम कहोगे के उसे देख कर तुम्हारे दिल में हलचल नहीं होती थी और तुम अपने अन्दर हरारत सी महसूस नहीं करते थे तो ख़ालिद! मैं कहूंगा के तुम झूट बोल रहे हो। क्या तुम्हें किसी ने नहीं बताया था के मदीना पर हमला के लिए ग़तफान अहल-ए-कुरेश से क्यों जा मिला था और दूसरे क़बीलों के सरदारों ने क्यों अबु सुफयान को अपना सरदार तस्लीम कर लिया था?....ये योहावा और इस जैसी चार यहूदनों का जादू चला था।"

घोड़े और ऊंट चले जा रहे थे। ऊंटों की गर्दनों से लटकती हुई घंटियां बूढ़े अबु जरीह के बोलने के अंदाज़ में जल तरंग का तरन्नुम पैदा कर रही थी। ख़ालिद इन्हमाक से सुन रहा था।

"जरेद बिन मुसय्यब योहावा के इश्क़ का असीर हो गया था"-अबु जरीह

कह रहा था-"तुम नही जानते इब्ने वलीद योहावा के दिल में अपने मज़हब के सिवा किसी आदमी की मोहब्बत नही थी। वो जरेद को अपने तितिलस्म में गिफ़्तार कर के अपने साथ ले गई थी। मै लेस बिन मोशान को जानता हूं। जवानी में हमारी दोस्ती थी। जादूगरी और शोब्देबाज़ी उसके बाप का फ़न था। बाप ने ये फ़न उसे विरसे में दिया था...तुम मेरी बात सुन रहे हो वलीद के बेटे या उक्ता रहे हो?....अब मै बातों के सिवा कुछ भी नही कर सकता।"

खा़लिद हंस पड़ा और बोला-"सुन रहा हूं अबु जरीह! ग़ौर से सुन रहा हूं।

"ये तो तुम्हें मालूम होगा के जब हमारे लश्कर को मुसलमानों की खंदक़ और आंधी ने मदीने का मुहासरा उठा कर पस्पाई पर मजबूर कर दिया तो मोहम्मद(स०) ने बनू क़रीज़ा की बस्ती को घेर लिया था"-अबु जरीह ने कहा-"लेस बिन मोशान और योहावा जरेद बिन मुसय्यब को वहीं छोड़ कर निकल भागे।"

"मै जानता हूं तुम मेरी बातों से उक्ता गए हो"-अबु जरीह ने हंसते हुए कहा-"तुम मेरी पूरी बात नहीं सुन रहे।"

"मुझे ये बात वहां से सुनाओ"-खा़लिद ने कहा-"जहां से मै ने पहले नही सुनी। मै वहां तक जानता हूं के जरेद मुसय्यब इसी पागल पन की हालत में मारा गया था जो इस बूढ़े यहूदी शोब्दे बाज़ ने उस पर तारी किया था और वो खुद योहावा को साथ ले कर वहां से निकल भागा था।"

"फिर यूं हुआ"-अबु जरीह ने कहा-"ओहद की पहाड़ी के अन्दर जो बस्तियां आबाद हैं वहां के रहने वालों ने एक रात किसी औरत की चीखें सुनी। तीन चार दिलैर क़िस्म के आदमी घोड़ों पर सवार हो कर तलवारें और बरछियां उठाए सरपट दौड़े गए लेकिन उन्हे वहां कोई औरत नज़र न आई और चीखें भी खा़मोश हो गयीं। वो इधर उधर घूम फिर कर वापस आ गए।"

"ये चीखें सहराई लोमड़ियों की भी हो सकती थीं"-खा़लिद ने कहा।

"भेड़िये और औरत की चीख़ में फर्क़ है"-अबु जरीह ने कहा-"लोग इसे किसी मज़लूम औरत की चीखें समझे थे। वो ये समझ कर चुप हो गए के किसी औरत को डाकू ले जा रहे होंगे या वो किसी ज़ालिम खा़विंद की बीवी होगी और वो सफ़र में होंगे लेकिन अगली रात यही चीखें एक और बस्ती के क़रीब सुनाई दीं। वहां के चन्द आदमी भी इन चीखों के तआकुब में गए लेकिन उन्हें कुछ नज़र न आया। उसके बाद दूसरी तीसरी रात कुछ देर के लिए ये निसवानी चीखें सुनाई देती और रात की खा़मोशी में तहलील हो जाती...

"फिर इन पहाड़ों के अन्दर रहने वाले लोगों ने बताया के अब चीखों के साथ

औरत की पुकार भी सुनाई देती है-जरेद जरेद! कहां हो? आजाओ, आजाओ-वहां के लोग जरेद नाम के किसी आदमी को नही जानते थे। उनके बुजुर्गों ने कहा के ये किसी मरे हुए आदमी की बदरूह है जो औरत के रूप में चीख़ चिल्ला रही है।"

अबु जरीह के बोलने के अन्दाज़ मे ऐसा तआस्सुर था जो हर किसी को मुतास्सिर कर दिया करता था लेकिन ख़ालिद के चेहरे पर कोई तआस्सुर न था जिससे पता चलता के वो क़बीला ग़तफान के इस बूढ़े की बातों से मुतास्सिर हो रहा है।

"लोगों ने उस रास्ते से गुज़रना छोड़ दिया जहां ये आवाज़ें अमूमन सुनाई दिया करती थीं"-अब जरीह ने कहा-"एक रोज़ यूं हुआ के दो घुड़ सवार जो बड़े लम्बे सफ़र पर थे, एक बस्ती में घोड़े सरपट दौड़ाते पहुंचे। घोड़ों का पसीना यूं फूट रहा था जैसे वो पानी में से गुज़र कर आए हों। हांपते कांपते सवारों पर खौफ़ तारी था। उन्होंने बताया के वो एक वादी में से गुज़र रहे थे के उन्हें किसी औरत की पुकार सुनाई दी-जरेद! ठहर जाओ। जरेद, ठहर जाओ मैं आ रही हूं- इन घुड़सवारों ने उधर देखा जिधर से आवाज़ आ रही थी। एक पहाड़ी की चोटी पर एक औरत खड़ी इन घुड़सवारों को पुकार रही थी। वो थी तो दूर लेकिन जवान लगती थी। वो पहाड़ी से उतरने लगी तो दोनो घुड़सवारों ने घोड़ों को ऐड़ लगा दी....

"सामने वाली चट्टान घुमती थी। घुड़ सवार इसके मुताबिक़ वादी के अन्दर घूम गए। इन्हें तीन चार मज़ीद मोड़ मुड़ने पड़े। घबराहट में वो रास्ते से भटक गए थे। वो एक और मोड़ मुड़े तो उनके सामने तीस चालीस क़दम दूर एक जवान औरत खड़ी थी जिस के बाल बिखरे हुए थे और वो नीम बरहना थी। उसका चेहरा लाश की मानिंद सफेद था। घुड़सवारों ने घोड़े रोक लिए औरत ने दोनों बाज़ू उनकी तरफ फैला कर और आगे को दौड़ते हुए कहा- मैं तुम दोनों के इन्तेज़ार में बहुत दिनों से खड़ी हूं-दोनों घुड़सवारों ने वही से घोड़े मोड़े और ऐड़ लगा दी"-बूढ़ा अबु जरीह बोलते बोलते ख़ामोश हो गया। उसने अपना हाथ ख़ालिद की रान पर रखा और बोला-"मैं देख रहा हूं के तुम्हारे पास खाने के लिए कुछ नही। क्या ये अच्छा नहीं होगा के हम कुछ देर के लिए रूक जायें। फिर न जाने तुम कब मिलो। तुम्हारा बाप वलीद बड़ा ज़बरदस्त आदमी था। तुम हमारे हाथों में पैदा हुए थे। मैं तुम्हारी ख़ातिर तवाज़ो करना चाहता हूं। रोको घोड़े को और उतर आओ।"

ये काफ़ला वहीं रूक गया।

❁

"वो किसी मरे हुए आदमी या औरत की बदरूह ही हो सकती थी"-अबु

जरीह ने भुना हुआ गोश्त ख़ालिद के आगे रखते हुए कहा-"खाओ, वलीद के बेटे!... ..फिर एक खौफ़नाक वाक़ेया हो गया। एक बस्ती में एक अजनबी इस हालत में आन गिरा के उसके चेहरे पर लम्बी लम्बी ख़राशें थी जिन से खून बह रहा था। उसके कपड़े फटे हुए थे और जिस्म पर भी ख़राशें थी। वो गिरते ही बेहोश हो गया। लोगों ने उसके ज़ख्म धोए और उसके हलक़ में पानी डाला। वो जब होश में आया तो उसने बताया के वो दो चट्टानों के दरमियान से गुज़र रहा था के एक चट्टान के ऊपर से एक औरत चीख़ती चिल्लाती इतनी तेज़ी से उतरी जितनी तेज़ी से कोई औरत नहीं उतर सकती....

"ये आदमी इस तरह रूक गया जैसे दहशत ज़दगी ने उसके जिस्म की कुव्वत सलब कर ली हो। वो इतनी तेज़ी से आ रही थी के रूक न सकी। वो इस आदमी के साथ टकराई और चीख नुमा आवाज़ में बोली-"तुम आ गए जरेद! मैं जानती थी तुम ज़िन्दा हो। आओ चलें.....

"उस शख़्स ने उसे बताया के वो जरेद नहीं लेकिन वो औरत उसे बाज़ू से पकड़ कर घसीटती रही और कहती रही-'तुम जरेद हो। तुम जरेद हो'-उस शख़्स ने उससे आज़ाद होने की कोशिश में उसे धक्का दिया। वो गिर पड़ी और उठ खड़ी हुई। ये आदमी उसे कोई पागल औरत समझ कर वहीं खड़ा रहा। वो इस तरह उसकी तरफ आई के उसके दांत भेड़ियों की तरह बाहर निकले हुए थे और उसने हाथ इस तरह आगे कर रखे थे के इसकी उंगलियां दरिंदों के पंजों की तरह टेढ़ी हो गई थीं। ये आदमी डर कर उलटे क़दम पीछे हटा और एक पत्थर से ठोकर खा कर पीठ के बल गिरा। ये औरत इस तरह इस पर गिरी और पंजे उसके चेहरे पर गाड़ दिये जैसे भेड़िया अपने शिकार को पंजों में दबोच लेता है। उसने इस आदमी का चेहरा नोच डाला.....

"उसने इस औरत क़ो धक्का दे कर परे किया और उसके नीचे से निकल आया लेकिन उस औरत ने अपने नाखून इस शख़्स के पहलूओं में उतार दिये और इसके कपड़े भी फाड़ डाले और खाल भी बुरी तरह ज़ख्मी कर दी। उस ज़ख्मी ने बताया के इस औरत की आंखों और मुंह से शोले से नितकलते हुए महसूस होते थे। वो इसे इन्सानों के रूप में आया हुआ कोई दरिन्दा समझा। इस आदमी के पास ख़ंजर था लेकिन इस के होश ऐसे गुम हुए के वो ख़ंजर निकालना भूल गया। इत्तेफाक से इस आदमी के हाथ में इस औरत के बाल आ गए। इस ने बालों को मुठ्ठी में ले कर ज़ोर से झटका दिया। वो औरत चट्टान पर गिरी। ये आदमी भाग उठा। उसे अपने पीछे इस औरत की चीखें सुनाई देती रही। उसे बिल्कुल याद नही था के वो इस बस्ती तक किस तरह पहुंचा है। वो इन ख़राशों की वजह से बेहोश नहीं हुआ था। उस पर दहशत

सवार थी....

"फिर दो मुसाफिरों ने बताया के उन्होंने रास्ते में एक आदमी की लाश पड़ी देखी है जिसे किसी दरिंदे ने चीर फाड़ कर हलाक किया होगा। उन्होंने बताया के उसके कपड़े फटे हुए थे और तमाम जिस्म पर ख़राशें थीं। उस जगह के क़रीब जिस जगह इस औरत की मौजूदगी बताई जा सकती थी, छोटी सी एक बस्ती थी। वहां के लोगों ने नक़ल-ए-मकानी का इरादा कर लिया लेकिन यहूदी जादूगर लेस बिन मोशान पहुंच गया। उसे किसी तरह पता चल गया था के एक औरत इस इलाके में जरेद जरेद पुकारती और चीख़ती चिल्लती रहती है और जो आदमी इस के हाथ आ जाए उसे चीर फाड़ देती है।"

❀

अबु जरीह ने ख़ालिद को बाक़ी कहानी यूं सुनाई। उसे बदरूहों के इल्म के साथ गहरी दिलचस्पी थी और वो लेस बिन मोशान को भी जानता था। जब उसे पता चला के ये यहूदी जादूगर वहां पहुंच गया है तो वो भी घोड़े पर सवार हुआ और वहां जा पहुंचा। दो तीन बस्तियों में पूछता वो उस बस्ती में जा पहुंचा जहां लेस बिन मोशान आ कर ठहरा था।

"अबु जरीह !"-बुढ़े लेस बिन मोशान ने उठ कर बाजू फैलाते हुए कहा-"तुम यहां कैसे आ गए?"

"मैं ये सुन कर आया हूं के तुम इस बदरूह पर क़ाबू पाने के लिए आए हो"-अबु जरीह ने उस से बग़लगीर होते हुए कहा-"क्या मैं ने ठीक सुना है के इस बदरूह ने या वो जो कुछ भी है, दो तीन आदमियों को चीर फाड़ा डाला है?"

"वो बदरूह नहीं मेरे भाई!"-लेस बिन मोशान ने ऐसी आवाज़ में कहा जो मलाल और परेशानी से दबी हुई थी-"वो खुदाए यहूदा की सच्ची नाम लेवा एक जवान औरत है। उसने अपनी जवानी अपना हुस्न और अपनी ज़िन्दगी यहूदियत के नाम पर वक़्फ कर रखी थी। उसका नाम योहावा है।"

"मैं ने उसे मक्का में दो चार मरतबा देखा था"-अबु जरीह ने कहा-"उसके कुछ झूटे सच्चे किस्से भी सुने थे। ये भी सुना था के उसने कुरेश के एक आदमी जरेद बिन मुसय्यब को तुम्हारे पास ला कर मोहम्मद(स०) के क़त्ल के लिए तैयार किया था। फिर मैं ने ये भी सुना था के तुम और योहावा मुसलमानों के मुहासरे से निकल गए थे और जरेद पीछे रह गया था...अगर योहावा ज़िन्दा है और वो बदरूह नहीं तो वो इस हालत तक किस तरह पहुंची है?"

"उसने अपना सब कुछ खुदाए यहूदा के नाम पर कुर्बान कर रखा था"-लेस

बिन मोशान ने कहा-"लेकिन वो आख़िर इन्सान थी, जवान थी, वो जज़बात की कुरबानी न दे सकी। उसने जरेद की मोहब्बत को अपनी रूह में उतार लिया था। जरेद पर जितना असर मेरे ख़ास अम्ल का था इतना ही योहावा की वालहाना मोहब्बत का था।"

"मैं समझ गया"-अबु जरीह ने कहा-"उसे जरेद बिन मुसय्यब की मौत ने पागल कर दिया है.....क्या तुम्हारा अम्ल और तुम्हारा जादू इस औरत पर नहीं चल सकता था?"

लेस बिन मोशान ने लम्बी आह भरी और बे नूर आंखों से अबु जरीह को टिकटिकी बांध कर देखा और कुछ देर चुप रहने के बाद कहा- "मेरा अम्ल उस पर क्या असर करता! वो मुझे भी चीरने फाड़ने को मुझ पर टूट पड़ी थी। मेरा अम्ल इस सूरत में काम करता के मैं उसकी आंखो में आंखें डाल सकता और मेरा हाथ थोड़ी सी देर के लिए उसके माथे पर रहता।"

"जहां तक मैं इस इल्म को समझता हूं"- अबु जरीह ने कहा-"वो पहले ही पागल हो चुकी थी और तुम्हें अपना दुश्मन समझने लगी थी।"

"और उसे मेरे ख़िलाफ दुश्मनी ये थी के मैं जरेद बिन मुसय्यब को मुसलमानों के रहम व करम पर छोड़ आया था"-लेस बिन मोशान ने कहा-"मैं उसे अपने साथ ला सकता था। लेकिन वो इस हद तक मेरे तिलिस्माती अम्ल के ज़ेर-ए-असर आ चुका था के हम उसे ज़बरदस्ती लाते तो शायद मुझे या योहावा को क़त्ल कर देता। मैं ने उसके ज़हन में दरिंदगी का ऐसा तआस्सुर पैदा कर दिया था के वो क़त्ल व ग़ारत के सिवा कुछ सोच ही नहीं सकता था। अगर मैं एक दरख़्त के तने की तरफ इशारा कर के कहता के ये है मोहम्मद(स०), तो वो तलवार उस दरख़्त के तने में उतार देता। मुझे ये तवक़्क़ो भी थी के ये पीछे रह गया तो हो सकता है मोहम्मद(स०) तक पहुंच जाए और उसे क़त्ल कर दे। लेकिन वो खुद क़त्ल हो गया।"

"क्या तुम अब योहावा पार क़ाबू पा सकोगे?"-अबु जरीह ने पूछा।

"मुझे उम्मीद है के मैं उसे अपने असर में ले आऊंगा"-लेस बिन मोशान ने जवाब दिया।

"क्या तुम मुझे इस काम में शरीक कर सकोगे?"-अबु जरीह ने पूछा और कहा-"मैं कुछ जानना चाहता हूं, कुछ सीखना चाहता हूं।"

"अगर बुढ़ापा तुम्हें चलने दे तो चले चलो"-लेस बिन मोशन ने कहा-"मैं थोड़ी देर तक रवाना होने वाला हूं। यहां के कुछ आदमी मेरे साथ चलने को तैयार हो गए है।"

"और फिर ख़ालिद बिन वलीद!"-बूढ़े न जरीह ने अपने पास बैठे हुए ख़ालिद के कंधे पर हाथ रख कर जज़्बाती आवाज़ ने कहा-"हम दानों बूढ़े ऊंटों पर सवार उस पहाड़ी इलाके में पहुंचे जहां के मुताल्लिक़ बताया गया था के एक औरत को देखा गया है। हम तंग सी एक वादी में दाख़िल हो गए। हमारे पीछे दस बाराह घुड़ सवार और तीन चार शतुर सवार थे। वादी में दाख़िल हुए तो इन सब ने कमानों में तीर डाल लिए। वादी आगे जाकर खुल गई। हम दांये को घूमे तो हमें कई गिद्ध नज़र आए जो किसी मुरदार को खा रहे थे। एक सहराई लोमड़ी गिद्धों में से दौड़ती हुई निकली। मैं ने देखा के उसके मुंह में एक इंसानी बाज़ू था। हम आगे गए। दो और लोमड़ियां भागी और गिद्ध उड़ गए। वहां इन्सानी हड्डियां बिख़री हुई थीं। सर अलग पड़ा था। उसके लम्बे बाल इधर उधर बिख़रे हुए थे। कुछ खोपड़ी के साथ थे। आधे चेहरे पर अभी खाल मौजूद थी.....वो योहावा थी। लेस बिन मोशान कुछ देर उसकी बिखरी हुई हड्डियों को और अध खाये चेहरे को देखता रहा। उसकी आंखों से आंसू बह कर उसकी दूध जैसी सफेद दाढ़ी में जज़्ब हो गए। हम वहां से आ गए।

"लेस बिन मोशान और योहावा ने जरेद बिन मुसय्यब को मोहम्मद(स०) के क़त्ल के लिए तैयार किया था" -ख़ालिद ने ऐसे लहजे में कहा जिस में तंज़ की हल्की सी झलक भी थी-"जरेद बिन मुसय्यब मुसलमानों के हाथों क़त्ल हुआ और योहावा का अंजाम तुम ने अपनी आंखों देखा है....क्या तुम समझे नहीं हो अबु जरीह?"

"हां,हां!"-बूढ़े अबु जरीह ने जवाब दिया- लेस बिन मोशान के जादू से मोहम्मद(स०) का जादू ज़्यादा तेज़ और ताक़तवर है। लोग ठीक कहते हैं के मोहम्मद(स०) के हाथ में जादू है। इस जादू का ही करिश्मा है के इस के मज़हब को लोग मानते ही चले जा रहे हैं....जरेद को क़त्ल होना ही था।"

"मेरे बुज़ुर्ग दोस्त!"-ख़ालिद ने कहा-"इस बदरूह के क़िस्से मदीना में भी पहंचे होंगे लेकिन वहां कोई नहीं दौड़ा होगा। मोहम्मद(स०) के पैरूकारों ने तस्लीम ही नहीं किया होगा के ये जिन भूत या बदरूह है।"

"मोहम्मद(स०) के पैरूकारों को दौड़ने की क्या ज़रूरत है" -अबु ज़रीह ने कहा-"मोहम्मद(स०) के जादू ने मदीना के गिर्द हिसार खींचा हुआ है। मोहम्मद(स०) को क़त्ल नहीं किया जा सकता। वो ओहद की लड़ाई में ज़ख्मी हुआ और ज़िन्दा रहा। तुम्हारा और हमारा इतना ज़्यादा लश्कर मदीना की ईंट से ईंट बजाने गया तो ऐसी आंधी आई के हमारा लश्कर तितर बितर हो कर भागा। मैदान ए-जंग में मोहम्मद(स०) के सामने जो भी गया उसका दिमाग़ जवाब दे गया....क्या तुम जानते

हो मोहम्मद(स०) के क़त्ल की एक और कोशिश नाकाम हो चुकी है?"

"सुना था"-ख़ालिद ने कहा-"पूरी बात का इल्म नहीं।"

"ये ख़ेबर का वाकेया है"-अबु जरीह ने कहा-"मुसलमानों ने ख़ेबर के यहूदियों पर चढ़ाई की तो यहूदी एक दिन भी मुक़ाबले में जम न सके।"

"फ़रेब कार क़ौम मैदान में नहीं लड़ सकती"-ख़ालिद ने कहा-"यहूदी पीठ पर वार किया करते हैं।"

"और वो ही उन्होंने ख़ेबर में किया"-अबु जरीह ने कहा-"यहूदियों ने मुक़ाबला तो क्या किया था लेकिन उन पर मोहम्मद(स०) का ख़ौफ पहले ही तारी हो गया था। मैं ने सुना था के जब मुसलमान ख़ेबर के मुक़ाम पर पहुंचे तो यहूदी मुक़ाबले के लिए निकल आए। इनमें से बाज़ मोहम्मद(स०) को पहचानते थे। किसी ने बुलंद आवाज़ से कहा-मोहम्मद(स०) भी आया है,-फिर किसी और ने चिल्ला कर कहा-मोहम्मद(स०) भी आया है,-यहूदी लड़े तो सही लेकिन उन पर मोहमम्द(स०) का ख़ौफ ऐसा सवार हुआ के उन्होंने हथियार डाल दिये।"

अबु जरीह ने ख़ालिद को ख़ेबर के मआरके की रौदाद सुना कर एक यहूदन का क़िस्सा सुनाया। फतह ख़ेबर के बाद रसूल अल्लाह(स०) ने वहां चन्द दिन क़याम किया और नबी अदी के भाई अंसारी को ख़ेबर का अमीर मुक़र्रर किया। इसी मौक़ा पर जब फतह-ए-ख़ेबर के बाद माल-ए-ग़नीमत तक़सीम हो रहा था। रसूल अल्लाह(स०) ने फ़रमाया था-"अगर मुझे अपनी आने वाली उम्मत की मुफलिसी का अंदेशा न होता तो मैं हर वो मुल्क जो फतह होता, फातेह मुजाहेदीन में तक़सीम कर देता लेकिन में हर मफतूहा मुल्क को आने वाली उम्मत के लिए विरसे में छोड़ जाऊंगा।"

यहूदियों ने शिकस्त खाई तो उन्होंने रसूले करीम(स०) से वफादारी का इज़हार शुरू कर दिया और ऐसे मुज़ाहरे किये जिन से पता चलता था के मुसलमानों की मोहब्बत से यहूदियों के दिल लबरेज़ हैं। इन्ही दिनों जब रसूले करीम(स०) ख़ेबर में थे, एक यहूदन ने आप(स०) को अपने हां खाने पर मदूअ किया। उसने अक़ीदतमंदी का इज़हार ऐसे जज़बाती तरीक़े से किया के रसूले खुदा(स०) ने उसे मायूस करना मुनासिब न समझा। आप(स०) उसके घर चले गए। आप(सं०) के साथ बशर बिन बारा थे।

यहूदन ज़ेनब बिन्त हारिस ने जो सल्लाम बिन शिकम की बीवी थी, रसूले खुदा(स०) के रास्ते में आंखें बिछायीं और आप(स०) को खाना पेश किया उसने सालिम दुम्बा भूना था। उसने रसूल अल्लाह(स०) से पूछा के आप को दुम्बे का कौन

सा हिस्सा पसंद है। आप(स०) ने दस्ती पसंद फरमाई। यहूदन दुम्बे की दस्ती काट लाई और रसूले खुदा(स०) और बशर बिन बारा के आगे रख दी।

बशर बिन बारा(र०) ने एक बोटी काट कर मुंह में डाल ली। रसूले अकरम(स०) (स०) ने बोटी मुंह में डाली मगर उगल दी।

"मत खाना बशर(र०)!"-आप(स०) ने फरमाया-"इस गोश्त में ज़हर मिला हुआ है।"

बशर इब्न बारा(र०) बोटी चबा रहे थे। उन्होंने उगल तो दी लेकिन ज़हर लुआब दहन के साथ हलक़ से उतर चुका था।

"ऐ यहूदन!"-रसूले खुदा(स०) ने फरमाया- "क्या मैं ग़लत कह रहा हूं के तूने इस गोश्त में ज़हर मिलाया है?"

यहूदन इन्कार ना कर सकती थी। उसके जुर्म का सुबूत सामने आ गया था। बशर बारा (र०)हलक़ पर हाथ रख कर उठे और चकरा कर गिर पड़े। ज़हर इतना तेज़ था के इसने बशर(र०) को फिर उठने न दिया। वो ज़हर की तल्ख़ी से तड़पे और फौत हो गए।

"ऐ मोहम्मद!(स०)"-यहदून ने बड़ी दिलैरी से एतराफ किया- "खुदाए यहूदा की क़सम, ये मेरा फर्ज़ था जो मैं ने अदा किया।"

रसूल अल्लाह(स०) ने इस यहूदन और इसके ख़ाविंद के क़त्ल का हुक्म फरमाया और खेबर के यहूदियों के साथ आप(स०) ने जो मुशफक़ाना रवैय्या इख्तियार किया था वो इनकी ज़हनीयत के मुताबिक़ बदल डाला।

इब्ने इस्हाक़ लिखते हैं-"मरवान बिन उसमान ने मुझे बाताया था के रसूले खुदा(स०) आखिरी मर्ज़ में मुबतेला थे आप(स०) ने वफात से दो तीन रोज़ पहले उम्मे बशर(र०)बिन बारा को जब वो आप(स०) के पास बैठी थी फरमाया था-- उम्मे बशर! मैं आज भी अपने जिस्म में उस ज़हर का असर महसूस कर रहा हूं जो उस यहूदन ने गोश्त में मिलाया था। मैं ने गोश्त चबाया नहीं, उगल दिया था मगर ज़हर का असर आज तक मौजूद है- इस में शक व शुबह की गुंजाईश नहीं के रसूल अल्लाह(स०) की आखिरी बीमारी का बाअस यही ज़हर था।"

❁

"मोहम्मद(स०) को कोई क़त्ल नहीं कर सकता"-ख़ालिद ने कहा।

"आख़िर कब तक!"-अबु जरीह ने कहा--"उसका जादू कब तक चलेगा? उसे एक न एक दिन क़त्ल होना है.....ख़ालिद!"-अबु जरीह ने ख़ालिद के क़रीब होते हुए पूछा-"क्या तुम ने मोहम्मद(स०) के क़त्ल की कभी कोई तरकीब सोची

है?"

"बई बार"-ख़ालिद ने जवाब दिया-"जिस रोज़ मेरे क़बीले ने बदर के मैदान में शिकस्त खाई थी। उसे रोज़ से मोहम्मद(स०) को अपने हाथों क़त्ल करने की तरकीबें सोच रहा हूं लेकिन मेरी तरक़ीब कारगर नहीं हुई।"

"क्या वो तरक़ीब मुझे बातओगे?"

"क्यों नही!"-ख़ालिद ने जवाब दिया-"बड़ी आसान तरक़ीब है। ये है खुले मैदान में आमने सामने की लड़ाई लेकिन मैं एक लश्कर के मुक़ाबले में अकेला नहीं लड़ सकता। हम तीन लड़ाईयां हार चुके हैं।"

"खुदा की क़सम!"-अबु जरीह ने क़हक़हा लगा कर कहा-"मैंने कभी नहीं सोचा था के वलीद का बेटा बेवकूफ हो सकता है.....में यहूदियों जैसी तरक़ीब की बात कर रहा हूं। मैं धोके और फ़रेब की बात कर रहा हूं। मोहम्मद(स०)को तुम आमने सामने की लड़ाई में नहीं मार सकते।"

"और तुम उसे फरेब कारी से भी नहीं मार सकते-ख़ालिद ने कहा-"फरेब कभी कामयाब नहीं हुआ।"

बूढ़ा अबु जरीह ख़ालिद की तरफ झुका और उसके सीने पर उंगली रख कर बोला-"किसी और का फ़रेब नाकाम हो सकता है, यहूदियों का फरेब नाकाम नहीं होगा। उसकी वजह ये है के फ़रेब कारी यहूदियों के मज़हब में शामिल है। मैं लेस बिन मोशान का दोस्त हूं। कभी उसकी बातें सुनो। वो दानिशमंद है। उसकी ज़बान में जादू है। वो तुम्हें ज़बान से मसहूर कर देगा। वो कहता है के साल लग जाएंगे, सदियां गुज़र जाएंगी, आख़िर फतह यहूदियों की होगी। दुनिया में कामयाब होगा तो सिर्फ़ फरेब कामयाब होगा। मुसलमान अभी तादाद में थोड़े हैं इस लिए इन में इत्तेफाक़ और इत्तेहाद है। अगर इनकी तादाद बढ़ गई तो यहूदी ऐसे तरीक़ों से इन में तिफरेक़ा डाल देंगे के मुसलमान आपस में लड़ते रहेंगे और समझ न सकेंगे के ये यहूदियों की कारसतानी है। मोहम्मद(स०) इन्हें यकजान रखने के लिए कब तक ज़िन्दा रहेगा!"

ख़ालिद उठ खड़ा हुआ। अबु जरीह भी उठा। ख़ालिद ने दोनों हाथ आगे किये। अबु जरीह ने उस के हाथ अपने हाथों में ले लिये। मुसाफा कर के ख़ालिद अपने घोड़े पर सवार हो गया।

"तुम ने ये तो बताया नहीं के जा कहां रहे हो"-अबु जरीह ने पूछा।

"मदीने!"

"मदीने?"-अबु जरीह ने हैरत से पूछा-"वहां क्या करने जा रहे हो? अपने दुश्मन के पास...."

"मै मोहम्मद(स०) का जादू देखने जा रहा हूं"-ख़ालिद ने कहा और घोड़े को ऐड़ लगा दी।

उसने कुछ दूर जाकर पीछे देखा। उसे अबु जरीह का काफ़ला नज़र न आया। ख़ालिद उस जगह से निकल कर दूर चला गया था। उसने घोड़े की रफ़्तार कम कर दी। उसे ऐसे लगा जैसे अवाज़ें उसका तआकुब कर रही हों-"मोहम्मद(स०)..... जादूगर.... मोहम्मद(स०) के जादू में ताक़त है।"

"नही.... नहीं"-उसने सर झटक कर अपने आप से कहा-"लोग जिस चीज़ को समझ नही सकते उसे जादू कह देते है। और जिस आदमी का सामना नही कर सकते उसे जादूगर समझने लगते है....फिर भी....कुछ न कुछ राज़ ज़रूर है.... मोहमम्द(स०) में कोई बात ज़रूर है।"

ज़हन उसे चन्द दिन पीछे ले गया। अबु सुफ़यान ने उसे,अकरमा और सफ़वान को बुला कर बताया था के मुसलमान मक्का पर हमला करने आ रहे हैं। अबु सुफ़यान को ये इत्तेला दो शतुर सवारों ने दी थी जिन्होंने मुसलमानों के लश्कर को मक्का की तरफ आते देखा था।

ख़ालिद तीन सौ अपनी पसंद के चुने हुए घुड़सवारों को साथ ले कर मुसलमानों के रास्ते में घात लगा कर रोकने के लिए चल पड़ा था। वो अपने इस जांबाज़ दस्ते को सरपट दौड़ाता ले जा रहा था। उसके सामने तीस मील की मुसाफत थी। उसे बताया गया था के मुसलमान किराय ग़मीम से अभी दूर हैं। ख़ालिद इस कोशिश में था के मसुलमानों से पहले किराय ग़मीम पहुंच जाए।

मक्का से तीस मील दूर कराय ग़मीम एक पहाड़ी सिलसिला था जो घात के लिए मोज़ू था। अगर मुसलमान पहले वहां पहुंच जाते तो ख़ालिद के लिए जंगी हालात दुशवार हो जाते।

उस ने रास्ते में सिर्फ दो जगह दस्ते को रोका और घुड़सवारों को सुसताने का मौक़ा दिया। उसने दो जगहों पर अपने घुड़सवारों को अपने सामने खड़ा कर के कहा- "ये हमारे लिए कड़ी आज़माईश है। अपने क़बीले की अज़मत के मुहाफिज़ सिर्फ हम हैं। आज हमें उज़्ज़ा और हुब्ल की लाज रखनी है। हमें अपनी शिकस्त का इन्तेक़ाम लेना है। अगर हम नुसलमानो को किराय ग़मीम के अन्दर ही रोक कर इन्हें तवाह न कर सके तो मक्का पर मुसलमानों का कब्ज़ा होगा। हमारी बहनें और बेटियां इन की लोंडियां होंगी और हमारे बच्चे इन के गुलाम होंगे। उज़्ज़ा और हुब्ल के नाम पर हलफ उठाओ के हम कुरैश और मक्का की आन और वक़ार पर जाने कुर्बान कर देंगे।"

तीन सौ घुड़सवारों ने नारे लगाए-"हम उज़्ज़ा और हुब्ल के नाम पर मर मिटेंगे.. ..एक भी मुसलमान ज़िंदा नही जाएगा.....किराय ग़मीम की वादी में मुसलमानों का खून बहेगा....मोहम्मद(स०) को ज़िन्दा मक्का ले जाऐंगे...मुसलमानों की की खोपड़ियां मक्का ले जाऐंगे..... काट देंगे..... तबाह कर के रख देंगे।"

ख़ालिद का सीना फैल गया और सर ऊंचा हो गया था। उसने घात के लिए बड़ी अच्छी जगह का इन्तेख़ाब किया था। उसने निहायत कारगर जंगी चालें सोच ली थीं। वो अपने साथ सिर्फ सवार दस्ता इस लिए लाया था के वो मुसलमानों को बिखेर कर और घोड़े दौड़ा दौड़ा कर लड़ना चाहता था। मुसलमानों की ज़्यादा तादाद पियादा थी। ख़ालिद को यक़ीन था के वो तीन सौ सवारों से एक हज़ार चार सौ मुसलमानों को घोड़ों तले रौंद डालेगा। उसे अपनी जंगी फहम व फिरासत पर इस क़दर भरोसा था के उसने तीरअंदाज़ दस्ते को साथ लाने की ज़रूरत ही नहीं समझी थी। हालांके पहाड़ी इलाके में तीरअंदाज़ों को बुलंदियों पर बिठा दिया जाता तो वो नीचे गुज़रते हुए मुसलमानों को चुन चुन कर मारते।

❁

आगे जा कर ख़ालिद ने दस्ते को ज़रा देर के लिए रोका तो एक बार फिर अपने सवारों के जज़्बे को भड़काया। उसे इन सवारों की शुजाअत पर ऐतमाद था।

मुसलमान अभी दूर थे। ख़ालिद ने शतुरबानों के बहरूप में अपने तीन चार आदमी आगे भेज दिये थे जो मुसलमानों की रफ्तार की और दीगर कवाईफ की इत्तेलायें दे रहे थे। वो बारी बारी पीछे आते और बताते थे के मुसलमान किराय ग़मीम से कितनी दूर रह गए है। ख़ालिद इत्तेलाओं के मुताबिक़ अपने दस्ते की रफ्तार बढ़ता जा रहा था। मुसलमान रसूले करीम(स०) की क़यादत में मामूली रफ्तार से उस फंदे की तरफ चले आ रहे थे जो उनके लिए ख़ालिद किराय ग़मीम में बिछाने जा रहा था।

ख़ालिद इस इत्तेला को नहीं समझ सका था के मुसलमान अपने साथ बहुत से दुम्बे और बकरे ला रहे है। उसे इस सवाल का जवाब नही मिल रहा था के वो मक्का पर हमला करने आ रहे हैं तो दुम्बे और बकरे क्यों साथ ला रहे हैं?

"इन्हें डर होगा के मुहासरा तूल पकड़ गया तो खुराक कम हो जाएगी"-ख़लिद के एक साथी ने ख्याल ज़ाहिर किया-"इस सूरत में वो इन जानवरों का गोश्त खाऐंगे.....इस के सिवा इन जानवरों का और क्या इस्तेमाल हो सकता है!"

"बेचारों को मालूम नही के मक्का तक वो पहुंच ही नही सकेंगे"-ख़ालिद ने कहा-"इनके दुम्बे और बकरे हम खाऐंगे।"

मुसलमान अभी किराय ग़मीम से पंदराह मील दूर ग़सफान के मुक़ाम पर थे के ख़ालिद इस सिलसिला कहा में दाखिल हो गया। उसने अपने दस्ते पहाड़ियों के दामन में एक दूसरे से दूर दूर रूकने को कहा और खुद घात की मोज़ू जगह देखने के लिए आगे चला गया। वो दर्रे तक गया। यही रास्ता था जिस से क़ाफले और दस्ते गुज़रा करते थे। वो यहां से पहले भी गुज़रा था लेकिन उसने इस दर्रे को इस निगाह से कभी नही देखा था जिस निगाह सें आज देख रहा था।

उसने इस दर्रे को दांये बायें वाली बुलंदियों पर जाकर देखा। नीचे आया। चट्टानों के पीछे गया और घोड़ों को छुपाने की ऐसी जगहों को देखा जहां से वो इशारा मिलते ही फौरन निकल आयें और मुसलमानों पर बे ख़बरी में टूट पड़ें।

वो मार्च 628ई० के आख़िरी दिन थे। मौसम अभी सर्द था मगर ख़ालिद का और उसके घेड़ों का पसीना बह रहा था। उसने घात का इलाक़ा मुंतख़िब कर लिया और अपने दस्ते को कई हिस्सों में तक़सीम कर के घोड़ों को दर्रे के इलाक़े में छुपा दिया। अब इस ने अपने इन आदमियों को जो मुसलमानों की पेश क़दमी की इत्तेलायें लाते थे, अपने पास रोक़ लिया क्योंकि ख़दशा था के मुसलमान उनकी असलियत मालूम कर लेंगे। मुसलमान क़रीब आ गए थे। रात को उन्होंने पड़ाव किया था।

अगली सुबह जब नमाज़ फ़ज्र के बाद मुसलमान कूच की तैयारी कर रहे थे। एक आदमी रसूले अकरम(स०) के पास आया।

"तुम्हारी हालत बता रही है के तुम दौड़े हुए आए हो "-रसूले अकरम(स०) ने कहा-"और तुम कोई अच्छी ख़बर भी नही लाए।"

"या रसूल अल्लाह(स०)!"-मदीने के इस मुसलमान ने कहा-"ख़बर अच्छी नहीं और इतनी बुरी भी नही...मक्का वालों की नीयत ठीक नहीं। मैं कल से किराय ग़मीम की पहाड़ियों के अन्दर घूम फिर रहा हूं। खुदा की क़सम वो मुझे नहीं देख सके जिन्हें मैं देख आया हूं। मैं ने उनकी तमाम नक़्ल व हरकत देखी है।"

"कौन है वो?"

"अहल-ए-कुरैश के सिवा और कौन हो सकता है"-इस ने जवाब दिया-"वो सब घुड़सवार हैं ओर दर्रे के इर्द गिर्द की चट्टानों में छुप गए है।"

"तादाद?"

"तीन और चार सौ के दरमियान है"-रसूले करीम(स०) के इस जासूस ने कहा-"मैं ने अगर सही पहचाना है तो वो ख़ालिद बिन वलीद है जिस की भाग दौड़

को मै सारा दिन छुप छुप कर देखता रहा हूं। मै इतना क़रीब चला गया था के वो मुझे देखते तो क़त्ल कर देते। ख़ालिद ने अपने सवारों को दर्रे के इर्द गिर्द फैला कर छुपा दिया है। क्या ये ग़लत होगा के वो घात मे बैठ गए है?"

"मक्का वालों को हमारे आने की इत्तेला मिली तो वो समझे होंगे के हम मक्का का मुहासरा करने आए है"-सहाबा इकराम(र०) में से किसी ने कहा-

"क़सम खुदा की जिस के हाथ में हम सब की जान है"-रसूले अकरम(स०) ने फ़रमाया-"अहल-ए-कुरैश मुझे लड़ाई के लिए लल्कारेंगे तो भी मै नही लड़ूंगा। हम जिस इरादे से आए है उस इरादे को बदलेंगे नहीं। हामरी नीयत मक्का में जाकर उमरा करने की है और हम ये दुम्बे और बकरे कुर्बानी के लिए साथ लाए है। मै अपनी नीयत में तबदीली कर के खुदाए जुलजलाल को नारज़ नही करूंगा। हम खून ख़राबा नही उमरा करने आए है।"

"या रसूल अल्ला(स०)!"-एक सहाबी ने पूछा-"वो दर्रे में हमें रोकेंगे तो क्या हम पर अपने दुश्मन का खून ख़राबा जाइज़ होगा?"

सहाबा इकराम(र०) रसूले खुदा(स०) के इर्द गिर्द इक्ळे हो गए। इस सूरत-ए-हाल से बच कर निकलने के तरीक़ो और रास्तों पर बहस मुबाहेसा हुआ। रसूले करीम(स०) अच्छे मशवरे को धयान से सुनते और इसके मुताबिक़ हुक्म सादर फरमाते थे।

आख़िर रसूले खुदा(स०) ने हुक्म सादर फरमाया। आप(स०) ने बीस घुड़सवार मुंतख़िब किए और इन्हें इस हिदायत के साथ आगे भेज किया के वो किराय ग़मीम तक चले जाऐं लेकिन दर्रे में दाख़िल न हों। वो ख़ालिद के दस्ते का जायज़ा लेते रहें और ये दस्ता इन पर हमला करे तो यूं लड़ें के पीछे को हटते आयें और बिखर कर रहें। तआस्सुर ये दें के ये मदीना वालों का हराविल हबीश है।

इन बीस सवारों को दुआओं के साथ रवाना कर के बाक़ी अहल-ए-मदीना का रास्ता आप(स०) ने बदल दिया। आप(स०) ने जो रास्ता इख़्तियार किया वो बहुत ही दुश्वार गुज़ार था और लम्बा भी था लेकिन आप(स०) लड़ाई से बचने की कोशिश कर रहे थे। एक मुश्किल ये भी थी के अहल-ए-मदीना में कोई एक भी आदमी न था जो इस रास्ते से वाक़िफ होता।

ये एक और दर्रा था जो सनियुल मरार कहलाता था। उसे ज़ातुल हंज़ल भी कहते थे। रसूले करीम(स०) अपने साथियों के साथ इस दर्रे में दाख़िल हो गए और सिलसिला-ए-कोह के ऐसे रास्ते से गुज़रे जहां से कोई नही गुज़रा करता था। वो रास्ता किसी के गुज़रने के क़ाबिल था ही नहीं।

खालिद की नज़रें मुसलमानों के हराविल दस्ते पर लगी हुई थीं लेकिन हराविल के ये बीस सवार रूक गए थे। कभी इनके दो तीन सवार दर्रे तक आते और इधर उधर देख कर वापस चले जाते। अगर वो बीस के बीस सवार दर्रे में आ भी जाते तो खालिद इन्हें गुज़र जाने देता क्योंकि इस का असल शिकार तो पीछे आ रहा था। इन बीस सवारों पर हमला कर के वो अपनी घात को बे नक़ाब नहीं करना चाहता था।

ये कोई पुराना वाक़ेया नहीं था। चन्द दिन पहले की बात थी। खालिद परेशान हो रह था के मुसलमानों का लश्कर अभी तक नज़र नहीं आया। क्या इसने कूच मुल्तवी कर दिया है या उसे घात की खबर हो गई है?– उसने अपने एक शतुरसवार से कहा के वो अपने बहरूप में जाए और देखें के मुसलमान कहां है और क्या कर रहे हैं।

इस दौरान बीस मुसलमान सवारों ने अपनी नक्ल व हरकत जारी रखी। एक दो मरतबा वो दर्रे तक आए और ज़रा रूक कर वापस चले गए। एक दो मरतबा वो पहाड़ियों में किसी और तरफ से दाखिल हुए। खालिद छुप छुप कर इधर आ गया। वो सवार वहां से भी वापस चले गए। इस तरह उन्होंने खालिद की तवज्जह अपने ऊपर लगाए रखी। खालिद के सवार इशारे के इन्तेज़ार में घात में छुपे रहे।

सूरज गुरूब हो चुका था जब खालिद का शतुर सवार जासूस वापस आया।

"वो वहां नहीं है"–जासूस ने खालिद को बताया।

"क्या तुम्हारी आंखें अब इन्सानों को नहीं देख सकती?"–खालिद ने तंज़िया लहजे में पूछा।

"सिर्फ उन इन्सानों का देख सकती है जो मौजूद हों"–शतुर सवार ने कहा–"जो नहीं है। वो नहीं है। वो कूच कर गए है। किधर गए है? मै नहीं बता सकता।"

खालिद और ज़्यादा परेशान हो गया। सहरा की शाम गहरी हो गई तो उसने महसूस किया के मुसलमानों के हराविल के सवार भी वहां नहीं हैं। उसे इनके किसी घोड़े के हिनहिनाने की आवाज़ नही सुनाई दे रही थी।

❁

सुबह तुलू हुई तो खालिद ने दर्रे से निकल कर देखा। बीस सवार ग़ायब थे। उसे अपनी नाकामी का अहसास होने लगा। उसके इरादे और उसके जंगी मंसूबे खाक में मिलते नज़र आए। उसने सोचा के खुद ग़सफान तक चला जाए लेकिन पहचाने जाने के डर से रूका रहा। उसने दो तीन आदमी ऊंची पहाड़ियों पर भेज दिये के वो हर

तरफ नज़र रखें।

दिन आधा गुज़र गया था। उसे कोई इत्तेला न मिली। मुसलमानों के हराविल के बीस सवार भी नज़र न आए। उसे तवक्क़ो थी अब वो आयेंगे। दोपहर के लगभग उसका एक सवार घोड़ा सरपट दौड़ाता उसके पास आ रूका।

"मेरे साथ चलो"-सवार ने तेज़ तेज़ बोलते हुए कहा-"जो मैंने देखा है वो तुम भी देखो।"

"क्या देखा है तुम ने?"

"गर्द"-सवार ने कहा-"खुदा की क़सम, वो गर्द किसी काफ़ले की नही हो सकती। क्या ऐसा नही हो सकता के वो मुसलमानों का लश्कर हो?"

ख़ालिद ने घोड़े को ऐड़ लगाई और मक्का की सिम्त पहाड़ी इलाके से निकल गया। उसे ज़मीन से गर्द के बादल उठते दिखाई दिए।

खुदा की क़सम ख़ालिद ने कहा- कबीला कुरैश में कोई ऐसा नहीं जो मोहम्मद(स०) जैसा दानिशमंद हो। वो मेरी घात से निकल गया है।

मुसलमान रसूल अल्लाह की क़यादत में दूसरी तरफ से मक्का की तरफ निकल गए थे। रात को उनके बीस सवार भी दूर के रास्ते से उन के पीछे गए और उन से जा मिले थे। ख़ालिद ने घोड़ा मौड़ा और ऐड़ लगाई। वो किराय ग़मीम के अन्दर चिल्लाता और घोड़े को सरपट दौड़ाता फिर रहा था।

"बाहर आजाओ.....मदीना वाले मक्का को चले गए हैं....तमाम सवार सामने आओ।"

थोड़ी सी देर में उसके तीन सौ घुड़सवार उसके पास आ गए।

"वो हमें धोका दे गए हैं"-ख़ालिद ने अपने सवारों से कहा-"तुम नहीं मानोगे वो गुज़र गए है। गुज़रने का कोई दूसरा रास्ता नही है....हम अब ज़िंदगी और मौत की दौड़ लगानी पड़ेगी। सुस्त हो जाओगे तो वो मक्का का मुहासरा कर लेंगे। वो बाज़ी जीत जाऐंगे।"

आज मदीने के रास्ते पर जब मदीना क़रीब रह गया था, ख़ालिद को याद आ रहा था के उसे मक्का पर मुसलमानों के कब्ज़े का डर तो था लेकिन वो रसूले करीम(स०) की इस चाल पर अश अश कर उठा था। वो खुद फने हर्ब व ज़र्ब और असकरी चालों का माहिर और दिलदादा था। वो समझ गया के रसूल अल्लाह(स०) ने अपने हराविल के बीस सवार धोका देने के लिए भेजे थे। सवारों ने उसे कामयाबी से धोका दिया। इसकी तवज्जह को गिरफ्तार किये रखा और मुसलमान दूसरी तरफ से निकल गए।

"ये जादू नहीं"-ख़ालिद ने अपने आप से कहा-"अगर अपने क़बीले की सरदारी मुझे मिल जाए तो जादू के ये करतब मैं भी दिखा सकता हूं।"

ये सही था के उसके बाप ने उसे ऐसी असकरी तालीम व तरबीयत दी थी के वो मैदान-ए-जंग का जादूगर कहालता था मगर उसके ऊपर एक सरदार था, अबु सुफ़यान। वो क़बीले का सालार-ए-आला भी था। उसके मातहत ख़ालिद अपनी कोई चाल नही चल सकता था। अपनी इस मजबूरी ने उसके दिल में अबु सुफ़यान की नफ़रत पैदा कर दी थी।

उसे चन्द दिन पहले का ये वाक़ेया याद आ रहा था। एक हज़ार चार सौ मुसलमान उसकी घात को धोका दे कर मक्का की तरफ निकल गए थे। उसने ये सोचा ही नहीं के तीन सौ सवारों से मुसलमानों पर अक़ब से हमला कर दे। उसे अहसास था के जो मुसलमान क़लील तादाद में कसीर तादाद के दुश्मन को शिकस्त दे सकते हैं इन्हें तीन सौ सवारों से शिकस्त नहीं दी जा सकती क्योंके वो कसीर तादाद में हैं।

उसे मक्का हाथ से जाता नज़र आने लगा था और उसे ये ख़फ्त भी महसूस होने लगी थी के उसकी घात की नाकामी पर अबु सुफयान उसे ताने देगा और हंसी उड़ाएगा, फिर उसे कुरैश की शिकस्त और मक्का के सुकूत का मुजरिम कहा जाएगा।

उसने अपने सवारों को एक रास्ता समझा कर कहा के मुसलमानों से पहले मक्का पहुंचना है। ये दूर का रास्ता था लेकिन वो मुसलमानो की नज़रों से बचने की कोशिश कर रहा था। उसके तीन सौ सवारों ने घोड़ों को ऐड़ लगा दी। रास्ता लम्बा होने की वजह से तीन मील का फासला डेढ़ गुना हो गया था जिसे ख़ालिद ने रफ्तार से कम करने के जतन कर रहा था।

अरवी नस्ल के आला घोड़े शाम से बहुत पहले मक्का पहुंच गए। वहां मुसलमानों की अभी हवा भी नहीं पहुंची थी। मक्का के लोग घोड़ों के शोर व गुल पर घरों से निकल आए। अबु सुफयान भी बाहर आ गया।

क्या तुम्हारी घात कामयाव रही?"-अबु सुफयान ने पूछा।

"वो घात में आए ही नहीं"-ख़ालिद ने घोड़े से कूद कर उतरते हुए कहा-"क्या तुम मक्का के इर्द गिर्द ऐसी ख़ंदक़ खुदवा सकते हो जैसी मोहम्मद(स०) ने मदीना के इर्द गिर्द खुदवाई थी?"

"वो कहां हैं?"-अबु सुफयान ने घबराई हुई आवाज़ में पूछा-"क्या ये बेहतर नहीं होगा के मुझे उनकी कुछ ख़बर दो?"

"जितनी देर में तुम ख़बर सुनते और सोचते हो, इतनी देर में वो मक्का को मुहासरे

में ले लेंगे"-ख़ालिद ने कहा-हुब्ल और उज़ा की अज़मत की क़सम, वो पहाड़ों और चट्टानों को रोंदते आ रहे है। अगर वो किराय ग़मीम में से या किसी और रास्ते से गुज़रे है तो वो इन्सान नही। कोई पियादा वहां से इतनी तेज़ी से नहीं गुज़र सकता जितनी तेज़ी से वो गुज़र आए है।"

"ख़ालिद!"-अबु सुफ़यान ने कहा- "ज़रा ठंडे हो कर सोचो। खुदा की क़सम, घबराहट से तुम्हारी आवाज़ कांप रही है।"

"अबु सुफ़यान!"-ख़ालिद ने जल कर कहा- "तुम में सिर्फ ये खूबी है के तुम मेरे क़बीले के सरदार हो। मैं तुम्हें ये बता रहा हूं के उन के लिए मक्का की ईंट से ईंट बजा देना कोई मुश्किल नहीं"-ख़ालिद ने देखा के उसके दो साथी सालार, अकरमा और सफवान, क़रीब खड़े थे। ख़ालिद ने उन से कहा-"आज भूल जाओ के तुम्हारा सरदार कौन है। सिर्फ ये याद रखो के मक्का पर तूफान आ रहा है। अपनी आन को बचाओ। यहां खड़े एक दूसरे का मुंह न देखो। अपने शहर को बचाओ, अपने देवताओ को बचाओ।"

❁

सारे शहर में भगदड़ बपा हो गई। लड़ने वाले लोग बरछियां, तलवारें और तीर कमान उठाए मक्का के दिफाअ को निकल आए। औरतों और बच्चों को ऐसे बड़े मकानों में मुंतक़िल किया जाने लगा जो क़िलों जैसे थे। जवान औरतें भी लड़ने के लिए तैयार हो गईं। ये इन के शहर का और जान व माल का ही नहीं, उनके मज़हब का भी मसअला था। ये दो नज़रियों की टक्कर थी लेकिन ख़ालिद इसे अपने ज़ाती वक़ार का और अपने ख़ादानी वक़ार का मसअला समझता था। उसका ख़ानदान जंग व जदल के लिए मशहूर था। उसके बाप को लोग असकरी क़ायद कहा करते थे। ख़ालिद अपने ख़ानदान के नाम और ख़ानदानी रिवायत को ज़िन्दा रखने की सर तोड़ कोशिश कर रहा था।

उसने अबु सुफयान को नज़र अंदाज़ कर दिया। अकरमा और सफवान को साथ लिया और ऐसी चालें सोच लीं जिन से वो मुसलमानों को शहर से दूर रख सकता था। उसने सवारों की कुछ तादाद उस काम के लिए मुंतख़िब कर ली के ये सवार शहर से दूर चले जायें और मुसलमान अगर मुहासरा कर लें तो ये घुड़ सवार अक़ब से मुहासरे पर हमला कर दें मगर वहां जम कर लड़े नहीं बल्कि मुहासरे में कहीं शिगाफ़ डाल कर भाग जायें।

शहर में अफरा तफरी और लड़ने वालों की भाग दौड़ और लल्कार में चन्द एक औरतों की मुतरन्नुम आवाज़ें सुनाई देने लगीं। उनकी आवाज़ें एक आवाज़ बन

गई थी। वो ज़रमिया गीत गा रही थी जिस में रसूल अल्लाह के क़त्ल का ज़िक्र था। बड़ा जोशीला और भड़का देने वाला गीत था। ये औरतें गलियों में ये गीत गाती फिर रही थीं।

चन्द एक मुसल्लह शतुर सवारों को मदीना की तरफ से आने वाले रास्ते पर और दो तीन और सिम्तों को दौड़ा दिया गया के वो मुसलमानों की पैशक़दमी की खबरें पीछे पहुंचाते रहें। औरतें ऊंचे मकानों की छतों पर चढ़ कर मदीना की तरफ देख रही थी। सूरज उफक़ में उतरता जा रहा था। सहरा की शफक़ बड़ी दिलफरेब हुआ करती है मगर उस शाम मक्का वालों को शफ़क में लहू के रंग दिखाई दे रहे थे।

कहीं से किसी भी तरफ गर्द उठती नज़र नहीं आ रही थी।

"उन्हें अब तक आजाना चाहिए था"-ख़ालिद ने अकरमा और सफवान से कहा-"हम इतनी जल्दी ख़ंदक़ नहीं खोद सकते।"

"हम ख़ंदक़ का सहारा ले कर नहीं लड़ेंगे"-अकरमा ने कहा।

"हम उनके मुहासरे पर हमला करेंगे"-सफवान ने कहा-"उनके पांव जमने नहीं देंगे।"

सूरज गुरूब हो गया। रात गहरी होने लगी। कुछ भी न हुआ।

मक्का में ज़िन्दगी बेदार और सरगर्म रही जैसे वहां रात आई ही न हो। औरतों बच्चों और बुढ़ों को किलों जैसे मकानों में मुंतक़िल कर दिया गया था और जो लड़ने के क़ाबिल थे वो अपने सालारों की हिदायत पर शहर के इर्द गिर्द अपने मोर्चे मज़बूत कर रहे थे।

रात आधी गुज़र गई। मदीना वालों की आमद के कोई आसार नज़र न आए।

फिर रात गुज़र गई।

❁

"ख़ालिद!"-अबु सुफयान ने पूछा-"कहां है वो?"

"अगर तुम ये समझते हो के वो नहीं आए तो ये बहुत ख़तरनाक फरेब है जो तुम अपने आप को दे रहे हो"-ख़ालिद ने कहा-"मोहम्मद(स०) की अक़्ल तक तुम नहीं पहुंच सकते। जो वो सोच सकता है वो तुम नहीं सोच सकते.....वो आयेंगे।"

उस वक़्त तक मुसलमान चन्द एक मआरके दूसरे क़बीलों के ख़िलाफ लड़ कर अपनी धाक बैठा चुके थे। उनमें ग़ज़वा ख़ेबर एक बड़ा मआरका था। उन्हें जंग का तजुर्बा हो चुका था।

"अबु सुफयान कुछ कहने ही लगा था एक शतर सवार नज़र आया जिस का ऊंट बहुत तेज़ रफ्तार से दौड़ता आया था। अबु सुफयान और ख़ालिद के क़रीब

आकर उसने ऊंट रोका और कूद कर नीचे आया।

"मेरी आंखों ने जो देखा है वो तुम नहीं मानोगे"-शतुर सवार ने कहा-"मैं ने मुसलमानों को हदीबिया में ख़ेमा ज़न देखा है।"

"वो मोहम्मद(स०) और उसका लश्कर नहीं हो सकता"-अबु सुफ़यान ने कहा।

"खुदा क़सम, मैं मोहम्मद(स०) को इस तरह पहचानता हूं जिस तरह तुम दोनों मुझे पहचानते हो"-शतुरसवार ने कहा- "और में ने ऐसे और आदमियों को भी पहचाना है जो हम में से थे लेकिन उन के साथ जा मिले थे।"

हदीबिया मक्का से तेरा मील दूर मग़रीब में एक मुक़ाम था। रसूले करीम खूंरेज़ी से बचना चाहते थे इस लिए आप(स०) मक्का से दूर हदीबिया में जा ख़ेमा ज़न हुए थे।

"हम उन पर शबखून मारेंगे"-ख़ालिद ने कहा-"उन्हें सुस्ताने नहीं देंगे। वो जिस रास्ते से हदीबिया पहुंचे हैं, उस रास्ते ने उन्हें थका दिया होगा। उनकी हड्डियां टूट रही होंगी। वो ताज़ा दम हो कर मक्का पर हमला करगें। हम इन्हें आराम नहीं करने देंगे।"

"हम इन्हें वहां से भगा सकते हैं"-अबु सुफ़यान ने कहा-"छापा मार हवीश तैयार करो।"

❁

रसूले अकरम(स०) ने अपनी ख़ेमा गाह की हिफाज़त का इन्तेज़ाम कर रखा था। घुड़ सवार हबीश रात को ख़ेमा गाह के इर्द गिर्द गश्ती पहरा देते थे। दिन को भी पहरे का इन्तेज़ाम था।

एक और घुड़सवार हबीश ने अपने जैसा एक घुड़सवार हबीश देखा जो ख़ेमा गाह से दूर आहिस्ता आहिस्ता चला जा रहा था। मुसलमान सवार उन सवारों की तरफ चले गए। वो कुरैश के सवार थे जो वहां न रूके और दूर चले गए। कुछ देर वाद वो एक और तरफ से आते नज़र आए और मुसलमानों की ख़ेमा गाह से थोड़ी दूर रूक कर चले गए।

दूसरे रोज़ वो सवार ख़ेमा गाह के क़रीब आ गए। अब के मुसलमान सवारों का एक हवीश जो ख़ेमा गाह से दूर निकल गया था, वापस आ गया। इस हबीश ने इन सवारों को घेर लिया। उन्होंने घेरे से निकलने के लिए हथियार निकाल लिये। इन में झड़प हो गई लेकिन मुसलमान सवारों के कमांडर ने अपने सवारों का रोक दिया।

"उन्हे निकल जाने दो"-हबीश के कमांडर ने कहा-"हम लड़ने आए होते तो इन में से एक को भी ज़िन्दा नहीं जाने देते।"

वो मक्का के लड़ाका सवार थे। उन्होंने वापस जा कर अबु सुफ़यान को बताया।

"चन्द और सवारों को भेजो"–अबु सुफ़यान ने कहा–"एक शबखून मारो।"

"मेरे क़बीले के सरदार!"–एक सवार ने कहा–"हम ने शबखून मारने की बहुत कोशिश की है लेकिन उनकी खे़मा गाह के इर्द गिर्द दिन रात घुड़सवार घुमते फिरते रहते हैं।"

कुरैश के चन्द और सवारों को भेजा गया। उन्होंने शाम के ज़रा बाद शबखून मारने की कोशिश की लेकिन मुसलमान सवारों ने इन के कुछ सवारों को ज़ख्मी कर के वहां से भगा दिया।

मक्का वालों पर तज़बजुब की कैफियत तारी रही। वो रातों को सोते भी नहीं थे। आखि़र एक रोज़ मक्का में एक मुसलमान सवार दाखि़ल हुआ। उसने अबु सुफ़यान के मुताल्लिक़ पूछा। लोगों का एक हुजूम उसके पीछे चल पड़ा। अबु सुफ़यान ने दरू से देखा और दौड़ा आया। खा़लिद भी आ गया।

"मैं मोहम्मर्दुरसूल अल्लाह का पैग़ाम ले कर आया हूं"–मुसलमान सवार ने कहा–"हम लड़ने नहीं आए हम उमरा करने आए हैं। उमरा कर के चले जाऐंगे।"

"अगर हम इजाज़त न दें तो?"–अबु सुफ़यान ने पूछा।

"हम मक्का वालों का नहीं खुदा का हुक्म मानने वाले हैं"–मुसलमान सवार ने कहा–"हम अपने और अपनी इबात गाह के दरमियान किसी को हायल नहीं होने दिया करते। अगर मक्का के मकान हमारे लिए रूकावट बनेंगे तो खुदा की क़सम, मक्का मलबे और खंडरों की बस्ती बन जाएगी। अगर यहां के लोग हमें रोकेंगे तो मक्का की गलियों में खून बहेगा....अबु सुफ़यान हम अमन का पैग़ाम ले कर आए हैं और यहां के लोगों से अमन का तहफ्फुज़ ले कर जाऐंगे।"

खा़लिद को वो लम्हे याद थे जब ये मुसलमान सवार पुर वक़ार लहजे में धमकी दे रहा था। खा़लिद का खून खोल उठना चाहिए था लेकिन उसे ये आदमी बड़ा अच्छा लगा था। उसे अबु सुफ़यान का जवाब भी जो उसने रसूले करीम को भेजा था, अच्छा लगा था। अबु सुफ़यान ने कहा था के दोनों तरफ के जि़म्मेदार आदमी सुलह समझौते की शरायत तय करेंगे।

❁

फिर एक सुलह नामा तहरीर हुआ था जिसे हदीबिया का नाम दिया गया। मुसलमानों की तरफ से इस पर रसूले अकरम ने और कुरैश की तरफ से सुहैल बिन उमर ने दस्तखत किये थे। इस सुलह नामे में तय पाया था के मुसलमान और

अहल-ए-कुरैश दस साल तक नही लड़ेंगे और मुसलमान आईंदा साल उमरा करने आयेंगे और मक्का में तीन दिन ठहर सकेंगे।

रसूले करीम कुरैश में से थे। ख़ालिद आप(स०) को बहुत अच्छी तरह जानता था लेकिन अब उसने आप(स०) को देखा तो उसने महसूस किया के "ये कोई और मोहम्मद(स०)"है। वो ऐसा मुतास्सिर हुआ के उसके ज़हन से उतर गया के ये वही मोहम्मद(स०) हैं जिसे वो अपने हाथें क़त्ल करने के मंसूबे बनाता रहता था।

ख़ालिद नबी-ए-करीम को एक सालार की हैसियत से ज़्यादा देख रहा था। वो आप(स०) की असकरी अहलीयत का क़ायल हो गया था। सुलेह हदीबिया तक मुसलमान रसूले अकरम की क़यादत में छोटे बड़े अठ्ठाईस मआरके के लड़ चुके और फतह व नुसरत की धाक बिठा चुके थे।

मुसलमान उमरा कर के चले गए। दो महीने गुज़र गए। इन दो महीनों में ख़ालिद पर ख़ामोशी तारी रही लेकिन इस खमोशी में एक तूफान और एक इंक़ेलाव परवरिश पा रहा था। ख़ालिद ने मज़हब में कभी दिलचस्पी नहीं ली थी। उसे न कभी अपने बुतों का ख्याल आया था न कभी उसने रसूले करीम की रिसालत को समझने की कोशिश की थी, मगर अब अज़ख़ुद उसका ध्यान मज़हब की तरफ चला गया और वो इस सोच में खो गया के मज़हब कौन सा सच्चा है और इन्सान की ज़िंदगी में मज़हब की अहमीयत और ज़रूरत क्या है।

"अकरमा!"-एक रोज़ ख़ालिद ने अपने साथी सालार अकरमा से जो उसका भतीजा भी था, कहा-"मैं ने फ़ैसला कर लिया है। मैं समझ गया हूं।"

"क्या समझ गए हो ख़ालिद!"-अकरमा ने पूछा।

"मोहम्मद(स०) जादूगर नहीं"-ख़ालिद ने कहा-"और मोहम्मद(स०) शायर भी नहीं। मैं ने मोहम्मद(स०) को अपना दुश्मन समझना छोड़ दिया है और मैं ने मोहम्मद(स०) को खुदा का रसूल(स०) तस्लीम कर लिया है।"

"हुब्ल और उज़ा की क़सम, तुम मज़ाक़ कर रहे हो"-अकरमा ने कहा-"कोई नहीं मानेगा के वलीद का बटा अपना मज़हब छोड़ रहा है।"

"वलीद का बेटा अपना मज़हब छोड़ चुका है"-ख़ालिद ने कहा।

"क्या तुम भूल गए हो के मोहम्मद(स०) हमारे कितने आदमियों को क़त्ल कर चुका है?"-अकरमा ने कहा-"तुम उनके मज़हब को कुबूल कर रहे हो जिन के खून के हम प्यासे हैं!"

"मैंने फैसला कर लिया है अकरमा!"-ख़ालिद ने दो टूक लहजे में कहा-"मैंने सोच समझ कर फैसला किया है।"

उसी शाम अबु सुफ़यान ने ख़ालिद को अपने हां बुलाया। अकरमा भी वहां मौजूद था।

"क्या तुम भी मोहम्द(स०) की बातों में आ गए हो?"-अबु सुफ़यान ने उससे पूछा।

"तुम ने ठीक सुना है अबु सुफ़यान!"-ख़ालिद ने कहा-"मोहम्मद(स०) की बातें ही कुछ ऐसी है।"

मशहूर मोअररिख़ वाक़दी ने लिखा है के अबु सुफ़यान क़बीले का सरदार था। उसने ख़ालिद का फैसला बदलने के लिए उसे क़त्ल की धमकी दी। ख़ालिद उस धमकी पर मुस्कुरा दिया मगर अकरमा बर्दाश्त न कर सका हालांके वो खुद ख़ालिद के फैसले के ख़िलाफ था।

"अबु सुफ़यान!"-अकरमा ने उसे कहा-"मैं तुम्हें अपने क़बीले का सरदार मानता हूं लेकिन ख़ालिद को जो तुम ने धमकी दी है, वो मैं बर्दाश्त नहीं कर सकता। तुम ख़ालिद को अपना मज़हब बदलने से नहीं रोक सकते। अगर तुम ख़ालिद के ख़िलाफ कोई काररवाई करोगे तो हो सकता है के मैं भी ख़ालिद के साथ मदीने चला जाऊं।"

❁

अगले रोज़ मक्का में हर किसी की ज़बान पर ये अल्फाज़ थे-"ख़ालिद बिन वलीद मोहम्मद(स०) के पास चला गया है"

ख़ालिद यादों के रेले में बहता मदीना को चला जा रहा था। उसे अपना माज़ी इस तरह याद आया था जैसे वो घोड़े पर सवार मदीना को नही बल्कि पियादा अपने माज़ी में चला जा रहा हो। उसे मदीने के ऊंचे मकानों की मुंडेरे नज़र आने लगी थी।

"ख़ालिद!"-उसे किसी ने पुकारा लेकिन उसे गुज़रे हुए वक़्त की आवाज़ समझ कर उसने नज़रअंदाज़ कर दिया।

उसे घोड़ों के टाप सुनाई दिये तब उसने देखा। उसे दो घोड़े अपनी तरफ आते दिखाई दिये। वो रूक गया। घोड़े उसके क़रीब आ कर रूक गए। एक सवार उसके क़बीले का मशहूर जंगजू उमरो बिन आस थे और दूसरे उसमान बिन तलहा। इन दोनों ने अभी इस्लाम कुबूल नहीं किया था।

"क्या तुम दोनों मुझे वापस मक्का ले जाने के लिए आए हो?"-ख़ालिद ने उन से पूछा।

"तुम जा कहां रहे हो?"-उमरो बिन आस ने पूछा।

"और तुम दोनों कहां जा रहे हो?"-ख़ालिद ने पूछा।

"खुदा की क़सम, हम तुम्हें बताऐंगे तो तुम खुश नही होगे"-उसमान बिन तलहा ने कहा-"हम मदीना जा रहे है।"

"बात पूरी करो उसमान!"-उमरों बिन आस ने कहा-"ख़ालिद! हम मोहम्मद(स०) का मज़हब कुबूल करने जा रहे हैं। हम ने मोहम्मद(स०) को खुदा का सच्चा नबी मान लिया है।"

"फिर हम एक ही मंज़िल के मुसाफिर हैं"-ख़ालिद ने कहा-"आओ, इक्ळे चलें।"

वो 31 मई 628ई० का दिन था जब तारीखे़ इस्लाम के दो अज़ीम जरनल, ख़ालिद बिन वलीद और उमरो बिन आस मदीना में दाख़िल हुए। इन के साथ उसमान बिन तलहा थे। तीनों रसूले करीम(स०) के हुज़ूर पहुंचे। सब से पहले ख़ालिद बिन वलीद अंदर गए। इनके पीछे उमरों बिन आस और उसमान बिन तलहा गए। तीनों ने कुबूले इस्लाम की ख्वाहिश ज़ाहिर की।

रसूल अल्लाह(स०) उठ खड़े हुए और तीनों को बारी बारी गले लगाया।

शहीदों को दिल से उतार दें। ज़हन से उनका नाम व निशान मिटा दें। इनकी यादों को शराब में डुबो दें। उस ज़मीन पर जो खुदा ने हमें शहीदों के सदक़े अता की है, बादशाह बन कर गर्दन अकड़ा लें और कहें के मैं हूं इस ज़मीन का शहंशाह। शहीदों के नाम पर मट्टी डाल दें। किसी शहीद की कहीं क़ब्र नज़र आए तो उसे ज़मीन से मिला दें मगर ज़िन्दगी के हर मोड़ और हर दोराहे पर आप को शहीद खड़े नज़र आऐंगे। आप के ज़हन के किसी गोशे से शहीद उठें और शराब और शहंशाहियत का नशा उतार देंगे के जिस ने तख्त व ताज के नशे में शहीदों से बे वफाई की वो शाह से गदा और ज़लील व ख्वार हुआ क्योंके उसने कुरआन के इस फरमान की हुक्म अदूली की के शहीद ज़िन्दा हैं, उन्हें मुर्दा मत कहो।

अरब के मुल्क उरदन में गुमनाम सा एक मुक़ाम है जिस का नाम मूता है। इस के क़रीब से गुज़र जाने वालों को भी शायद पता न चलता होगा के वहां एक बस्ती है। इस की हैसियत छोटे से एक गांव से बढ़ कर कुछ भी नहीं लेकिन शहीदों ने उरदन के बादशाह को अपनी मौजूदगी का और अपनी ज़िन्दगी का जो उन्हें अल्लाह तआला ने अता की है अहसास दिला दिया है। वो जिस मआरके में शहीदा हुए थे वो साढ़े तेरा सदियां पहले इस मुक़ाम पर लड़ा गया था। फिर ये मुक़ाम गुज़रते ज़माने की उड़ती रेत में दवता चला गया।

कुछ अर्से से मूता के रहने वाले एक अजीब सूरत-ए-हाल से दोचार होने लगे। आज भी वहां चले जाऐं और वहां के रहने वालों से पूछें तो वो बताऐंगे के उनमें से काई न कोई आदमी रात को ख़्वाब में देखता है के साढ़े तेरा सदियां पहले के मुजाहेदीन-ए-इस्लाम चल फिर रहे हैं। कुफ्फार का एक लश्कर आता है और मुजाहेदीन इस के मुक़ाबले में जम जाते हैं। इन की तादाद थोड़ी है और लश्कर-ए-कुफ्फार मानिंदे सैलाब है। मआरका बड़ा खूंरेज़ है।

ये ख्वाब एक दो आदमियों ने नहीं, वहां के बहुत से आदमियों ने देखा है और किसी न किसी को ये ख्वाब अभी तक नज़र आता है। ये लोग पड़े लिखे नहीं। उन्हें मालूम नहीं था के साढ़े तेरा सदियों पहले यहां हक़ व बातिल का मआरका लड़ा गया था मगर उनके ख्वाबों में वही आने लगे। ये खबर उरदन के ऐवानो तक पहुंची। तब याद आया के ये वो मूता है जहां मुसलमानों और इसाईयों की एक लड़ाई हुई थी। ये इसाई अरब के बाशिंदे थे।

शहीदों ने अपने ज़िंदा होने का ऐसा अहसास दिलाया के उरदन की हुकूमत ने जंग मूता और इस जंग के शहीदों की यादगार के तौर पर एक निहायत खूबसूरत मस्जिद तामीर करने के अहकाम जारी कर दिये। मस्जिद की तामीर 1968ई० में शुरू हुई थी। इस जंग में तीन सिपाह सालार-ज़ेद बिन हारिस, जाफर बिन उबी तालिब और अब्दुल्लाह बिन रोहा(र०)-यके बाद दीगरे शहीद हो गए थे। इन तीनों की क़ब्रें मूता से तक़रीबन दो मील दूर हैं जो अभी तक महफूज़ हैं।

मदीने में आ कर ख़ालिद बिन वलीद(र०) ने इस्लाम कुबूल किया तो उनकी ज़ात में अज़ीम इंक़लाब आ गया। तीन महीने गुज़र गए थे। ख़ालिद(र०) ज़्यादा तर वक़्त रसूले करीम(स०) के हुज़ूर बैठे फैज़ हासिल करते रहते मगर उन्हें अभी असकरी जौहर दिखाने का मौक़ा नहीं मिला था। वो फ़ने हर्ब व ज़र्ब के माहिर जंगजू थे। उन का हस्ब व नस्ब भी आम अरबों से ऊंचा था लेकिन उन्हेंने ऐसा दावा न किया के उन्हें सालार का रूतबा मिलना चाहिए। उन्होंने अपने आप को सिपाही समझा और इसी हैसियत में खुश रहे।

❋

आज के शाम और उरदन के इलाके में उस ज़माने में क़बीला गुस्सान आबाद था जो इस इलाक़े में दूर तक फैला हुआ था। ये क़बीला ताक़त के लिहाज़ से ज़बरदस्त माना जाता था क्योंके जंगजू होने के अलावा इस की तादाद बहुत ज़्यसदा थी। इस क़बीले में ईसाई भी शामिल थे।

उस वक़्त रोमा का शहनशाह हरकुल था जिसकी जंग पसंदी और जंगी दहशत दूर दूर तक पहंची हुई थी इस्लाम तेज़ी से फैल रहा था। क़बीला क़ुरैश के हज़ार हा लोग इस्लाम कुबूल कर चुके थे। उनके माने मंझे हुए संरदार और सालार भी मदीना आकर रसूले करीम (स०) के दस्ते मुबारक पर बैत कर चुके थे और मुसलमान एक जंगी ताक़त बनते जा रहे थे। कई एक छोटे छोटे क़बायल हल्का बगोश इस्लाम हो गए थे।

मदीना इत्तेलाएं पहुंच रही थीं के क़बीला गुस्सान मुसलमानों की बढ़ती हुई

ताक़त और इस्लाम की मक़बूलियत को रोकने के लिए मुसलमानों को लल्कारना चाहता है और जंगी तैयारियों में मसरूफ है। ये भी सुना गया के गुस्सान का सरदार -ए-आला रोमा के बादशाह हरकुल के साथ दोस्ती कर के उसकी जंगी ताक़त भी मुसलमानों के खिलाफ इस्तेमाल करने की कोशिश कर रहा है। रसूले करीम(स०) ने अपना एक ऐलची(जिस का नाम तारीख़ में महफूज़ नही) गुस्सान के सरदार-ए-आला के हां इस पैग़ाम के साथ भेजा के अल्लाह के सिवा कोई मावूद नहीं और वो वाहदा हु ला शरीक है और इस्लाम एक मज़हब और एक दीन है, बाक़ी तमाम अक़ीदे जो मुखतलिफ मज़ाहिब की सूरत इख्तियार कर गए हैं, तोहम्मात हैं। और ये इन्सानों के बनाए हुए हैं। रसूले अकरम ने गुस्सान के सरदार-ए-आला को कुबूले इस्लाम की दावत दी।

नबी-ए- करीम ने ये पैग़ाम इस ख्याल से भेजा था के पेशतर इस के के क़बीला गुस्सान रोमा के शहंशाह हरकुल की जंगी कुव्वत से मरऊब हो कर ईसायीत की आग़ोश में चला जाए, ये क़बीला इस्लाम कुबूल कर ले और इसे अपना इत्तेहादी बना कर हरकुल से बचाया जाए।

"खुदा की क़सम, इस से बहतर फैसला और कोई नहीं हो सकता"-ख़ालिद(र०) ने एक महफिल में कहा-"हरकुल ने फौज कशी की तो यूं समझो के बातिल का तूफान आ गया जो सब को उड़ा ले जाएगा।"

"गुस्सान की ख़ैरियत इसी में है के रसूल अल्लाह(स०) की दावत कुबूल कर ले"-किसी और ने कहा।

"नहीं करेगा तो हमेशा के लिए हरकुल का गुलाम हो जाएगा एक और ने कहा।

उस वक़्त हरकुल क़बीले गुस्सान के इलाक़े में दाख़िल हो चुका था। इस के साथ जो फौज थी। इस की तादाद एक लाख थी। गुस्सान के सरादर-ए-आला को इत्तेला मिल चुकी थी मगर वो परेशान नहीं था। वो हरकुल के साथ दोस्ती का हाथ बढ़ाने का फैसला कर चुका था।

नबी-ए-करीम का ऐलची बसरा को जा रहा था। गुस्सान का दारूल हकूमत बसरा था। ऐलची के साथ एक ऊंट पर लदे हुए ज़ाद-ए-राह के अलावा तीन मुहाफिज़ भी थे।

बड़ी लम्बी मुसाफत के बाद ऐलची मूता पहुंचा और उसने ज़रा सुसताने के लिए अपना मुखतसिर सा क़ाफिला रोक लिया। क़रीब ही क़बीला गुस्सान की एक बस्ती थी। इसके सरदार को इत्तेला मिली के चार अजनबी बस्ती के क़रीब पड़ाव

किये हुए है। सरदार ने जिस का नाम शरजील बिन उमरो था, मदीना के ऐलची को अपने हां बुलाया और पूछा के वो कौन है और कहां जा रहा है।

"मै मदीना का ऐलची हूं और बसरा जा रहा हूं"-ऐलची ने जवाब दिया-"मै अल्लाह के रसूल(स०) का पैग़ाम तुम्हारे सरदार-ए-आला के लिए ले जा रहा हूं।"

"क्या तुम क़बीला-ए-क़ुरैश के मोहम्मद(स०) की बात कर रहे हो?"-शरजील बिन उमरो ने तंज़िया लहजे में पूछा- "पैग़ाम क्या है?"

"पैग़ाम ये है के इस्लाम कुबूल कर लो"-ऐलची ने कहा-"और बतिल के अक़ीदे तर्क कर दो।"

"क्या तुम ये समझते हो के मै अपने सरदार-ए-आला की और अपने मज़हब की तौहीन बर्दाश्त कर लूंगा?"-शरजील बिन उमरो ने कहा-"?अगर तुम ज़िन्दा रहना चाहते हो तो यहीं से वापस मदीना चले जाओ।"

"मै बसरा के रास्ते से हट नही सकता"-ऐलची ने कहा-"ये रसूल अल्लाह का हुक्म है जिस की तामील में मै फ़ख्र से अपनी जान दे दूंगा।"

"और मै बड़े फ़ख्र से तुम्हारी जान लूंगा"-शरजील बिन उमरो ने कहा और अपने आदमियों को इशारा किया।

ऐलची के तीनों मुहाफिज़ बाहर बैठे थे। अन्दर से तीन आदमी निकले। वो किसी की खून आलूद लाश घसीटते हुए बाहर ला रहे थे। मुहाफिज़ों ने देखा के लाश की गर्दन कटी हुई थी। उन्होंने पहचान लिया। ये उनके ऐलची की लाश थी। शरजील बिन उमरो बाहर आया।

"तुम इस के साथी थे"-शरजील ने मुहाफ़िज़ों से कहा-"मुझे यक़ीन है के इस के बग़ैर तुम बसरा नहीं जाओगे।"

"नहीं"-एक मुहाफ़िज़ ने जवाब दिया-"पैग़ाम इस के पास था।"

"जाओ। मदीना को लौट जाओ"-शरजील ने कहा-"और मोहम्मद(स०) से कहना के हम अपने क़बीले और आने अक़ीदे की तौहीन बर्दाश्त नही किया करते। अगर ये शख़्स बसरा पहुंच जाता तो वहां क़त्ल हो जाता।"

"खुदा की क़सम!"-एक मुहाफिज़ ने कहा-"हम अपने मेहमान के साथ ये सूलूक़ नहीं किया करते।"

"मै तुम्हें मेहमान समझ कर तुम्हारी जान बख़्शी कर रहा हूं"-शरजील ने कहा-"और मुझे ये न कहना के मै तुम्हें इसकी लाश दे दूंगा।"

❁

मदीना की तमाम तर आबादी को मालूम हो चुका था के रसूलअल्लाह(स०)

का ऐलची दावत-ए-इस्लाम ले कर बसरा गया हुआ है। सब ऐलची की वापसी के मुंतज़िर थे लेकिन तीनों मुहाफिज़ ऐलची के बग़ैर वापस आए। उनके चेहरों पर सिर्फ गर्द की तह और थकन के आसार ही नही थे, ग़म व गुस्से के तास्सुरात भी थे। वो मदीना में दाख़िल हुए तो लोग हुजूम कर के आ गए।

"खुदा की क़सम, हम इन्तेक़ाम लेंगे"-मुहाफिज़ बाज़ू लहरा लहरा कर कहते जा रहे थे। "मूता के शरजील बिन उमरो का क़त्ल हम पर फ़र्ज हो गया है।"

जब ये ख़बर रसूले अकरम को मिली तो बाहर मदीना की आबादी इक्ळी हो गई थी। अरबों के रिवाज के मुताबिक़ क़त्ल क़ी सज़ा क़त्ल थी। बाहर लोग "इन्तेक़ाम इन्तेक़ाम" के नारे लगा रहे थे। उस दौर में भी, आज कल की तरह एक दूसरे के ऐलची को जिन की हैसियत सफीरों जैसी होती थी, दुशमन भी तहफ्फ़ुज़ देता था। किसी के ऐलची को क़त्ल कर देने का मतलब ऐलाने जंग समझा जाता था।

"अहल-ए-मदीना"-रसूले करीम(स०) ने बाहर आकर मदीना वालों के बिफरे हुए हुजूम से फरमाया-"मैंने इन्हें लड़ाई के लिए नही लल्कारा था। मैंने इन्हें सच्चा दीन कुबूल करने को को कहा था। अग़र वो लड़ना चाहते है तो हम लड़ेंगे।"

"हम लड़ेंगे.....हम इन्तेक़ाम लेंगे...मुसलमान कमज़ोर नहीं"-हुजूम नारे लगा रहा था-"मुसलमान का खून इतना अर्ज़ी नही.....हम अल्लाह और रसूल के नामों पर मर मिटेंगे।

रसूले करीम(स०) के हुक्म से उसी रोज़ मुजाहेदीन-ए-इस्लाम की फौज तैयार हो गई जिस की तादाद तीन हज़ार थी। रसूले करीम(स०) ने सिपाह सालारी के फराइज़ ज़ेद बिन हारिस(र०) को सौंपे।

"अगर ज़ेद शहीद हो जाए तो सिपाह सालार जाफर बिन अबी तालिब(र०) होगा।"-नबी-ए-करीम(स०) ने फरमाया जाफ़र(र०) भी शहीद हो जाए तो सिपाह सालार अब्दुल्ला बिन रवाहा(र०) होगा। अगर अब्दुल्ला(र०) को भी अल्लाह शहादत अता कर दे तो फौज अपना सिपाह सालार खुद चुन ले।"

मोअररिख़ साद और मग़ाज़ी लिखते हैं के रसूले करीम ने ये तीन सिपाह सालार दर्जा बदर्जा मुक़र्रर कर के मुजाहेदीन को दुआओं के साथ रूख़सत किया। आप ने सिपाह सालार ज़ेद बिन हारिस से फरमाया के मूता पहुंच कर सब से पहले शरजील बिन उमरो को जो हमारे ऐलची का क़ातिल है। क़त्ल किया जाए फिर मूता और उसके इर्द गिर्द के लोगों को कहा जाए के वो इस्लाम क़बूल कर लें। उन्हें बाताया जाए के इस्लाम क्या है। अगर वो कुबूल कर लें तो इन पर हाथ ना उठाया जाए।

मुजाहेदीन की इस फौज में ख़ालिद बिन वलीद महज़ सिपाही थे, किसी दस्ते

या हबीश के कमांडर [illegible] थे।

❁

रोमा के शहंशाह हरकुल की फौज आज के उरदन में किसी जगह खेमा ज़न थी। ये क़बीला गुस्सान का इलाक़ा था। फौज की तादाद(मोअरर्ख़िों के मुताविक़) एक लाख थी। ये फौज इस इलाक़े की बस्तियों पर छा चुकी थी। खड़ी फ़सल घोड़े और ऊंट खा रहे थे। लोगों के घरों से अनाज और खुजूरों के ज़खीरे फौज ने उठा लिये थे और जवान और खूबसूरत औरतें फौज के सरदारों और कमांडरों के खेमों में थी।

हरकुल का खेमा क़न्नातों और शामियानों का महल था। क़बीला गुस्सान का सरदार-ए-आला हरकुल के सामने बैठा था। उसे हरकुल की फौज कशी की इत्तेला मिली थी तो वो बेश क़ीमत तहाइफ और अपने क़बीले की बड़ी हसीन दस वारह लड़कियां अपने साथ ले कर हरकुल के इस्तक़बाल को चला गया था। अव इन लड़कियों में से दो तीन हरकुल के पहलूओं में बैठी थी।

"....और तुम ने बताया है के मदीना से मोहम्मद(स०) ने तुम्हें पैग़ाम भेजा था के तुम्हारा क़बीला उसका मज़हब कुबूल कर ले"-हरकुल ने कहा।

"मैं ने ये भी बताया है के मेरे एक सरदार शरजील बिन उमरो ने मदीना के ऐलची को मुझ तक नहीं पहुंचने दिया"-गुस्सान के सरदार-ए-आला ने कहा-"उसे मूता में क़त्ल कर दिया था।"

"क्या मदीना वालों मे इतनी ताक़त और जुर्रत है के वो अपने ऐलची के क़त्ल का इन्तेक़ाम लेने आऐं?"-हरकुल ने पूछा।

"उनकी ताक़त कम है और जुर्रत ज़्यादा है"-सरदार-ए-आला ने कहा-"उन लोगों पर मोहम्मद(स०) का जादू सवार है। पहले पहल मुझे उनके मुताल्लिक़ इत्तेला मिली तो मैंने उन्हें कोई अहमीयत न दी मगर उन्होंने हर मैदान में फतह पाई है और हर मैदान में उनकी तादाद बहुत थोड़ी थी। मैं ने सुना है के मोहम्मद(स०) और उसके सालारों की जंगी चालों के सामने कोई ठहर नहीं सकता। उसने मुझे अपने मज़हब का जो पैग़ाम भेजा था, उससे पता चलता है के वो अपने आप को बहुत ताक़तवर समझने लगा है।"

तुम क्या चाहते हो?"-हरकुल ने एक नीम बरहना लड़की के हाथ से शराब का पियाला लिये हुए पूछा।

"बात साफ कह दूं तो मेरे लिए भी अच्छा है, आप के लिए भी"-सरदार-ए-आला ने कहा-"मैं ने आप की फौज देख ली है। मेरा क़बीला कोई छोटा क़बीला नहीं। अगर ज़्यादा नहीं तो आप जितनी फौज मेरे पास भी है। आप

अपने मुल्क से दूर हें। अगर हम लड़ेंगे तो मैं अपनी ज़मीन पर लड़ूंगा जहां का बच्चा बच्चा आप का दुश्मन होगा।"

"क्या तुम मुझे धमकी दे रहे हो?"-हरकुल ने मुस्कुरा कर पूछा।

"अगर ये धमकी है तो ये मैं अपने आप को भी दे रहा हूं"-गुस्सान के सरदार-ए-आला ने कहा-"मैं आप को आपस की लड़ाई का नतीजा बता रहा हूं जो हम दोनों के लिए अच्छे नही होंगे। इस का फायदा मदीना वालों को पहुंचेगा। क्या ये बहतर नहीं होगा के हम दोनों मिल कर मुसलमानों को ख़त्म करें? मैं फतह की सूरत में आप से कुछ नही मागूंगा। मफतूहा इलाक़ा आप का होगा। मैं अपने इलाक़े में वापस आजाऊंगा....हम आपस में लड़ कर अपनी ताक़त ज़ाय न करें। पहले एक ऐसी ताक़त को ख़त्म करें जो मदीना में हम दोनों के ख़िलाफ तैयार हो रही है।"

"मैं तुम्हारी तजवीज़ को कुबूल करता हूं"-शहंशाह हरकुल ने कहा।

"फिर अपनी फौज को हुक्म दें के गुस्सान की बस्तियों में लूट मार बन्द कर दें।"

"दे दूंगा"-हरकुल ने कहा-"मदीना वालों के इन्तेज़ार में नहीं रहना चाहिए। हम मदीना की तरफ बढ़ेंगे।"

❁

इन्हें ज़्यादा इन्तेज़ार न करना पड़ा। मदीना के तीन हज़ार मुजाहेदीन मदीना से बहुत दूर निकल गए थे। मूता से कुछ फासले पर मआन नाम का एक मुक़ाम था, वहां उन्होंने पड़ाव किया। इस इलाक़े और इस से आगे के इलाक़े में मुजाहेदीन अजनबी थे। उन्हें कुछ ख़बर नही थी के आगे क्या है। मालूम ये करना था के आगे दुश्मन की फौज मौजूद है या नही। अगर है तो कितनी है और कैसी है। ये मालूम करने के लिए तीन चार मुजाहेदीन को गुरूब से पहले शतुर सवारों के भेस में आगे भेज दिया गया।

इन आदमियों ने रात आगे कहीं जा कर गुज़ारी और अगली शाम को वापस आए। वो जो ख़बर लाए वो अच्छी नहीं थी। वो दूर तक चले गए थे। पहले उन्हें गुस्सान के दो कुन्बे नज़र आए जो नक़ल मकानी कर के कहीं जा रहे थे। दोनों कुन्बों में नौजवान लड़कियां और जवान औरतें ज़्यादा थीं। वो लोग अमीर कबीर मालूम होते थे। उनका सामान कई ऊंटों पर लदा हुआ था। ये क़ाफला एक जगह आराम के लिए रूका हुआ था।

मजाहेदीन भी वहीं रूक गए और उन्हेंने काफले वालों के साथ राह व रसम पैदा कर ली और ये ज़ाहिर न होने दिया के वो मुसलमान है। उन्होंने बातया के वो बसरा जा रहे है आर वहां से तिजारत का सामान लाऐंगे।

"यही से वापस चले जाओ"-क़ाफले के आदमियों ने उन्हें बताया-"रोमा के बादशाह हरकुल का लश्कर लूट मार और क़त्ल व ग़ारत करता चला आ रहा है। तुम से ऊंट और माल व दौलत छीन लेंगे और हो सकता है तुम्हें क़त्ल भी कर दें।"

फिर हरकुल की फौज कशी की बातें होती रहीं। पता चला के उन्होंने हरकुल की फौज देखी नहीं, सिर्फ सुना है के ये फौज उरदन में दाख़िल हो कर लूट मार कर रही है। इन कुन्बों में चूंके औरतें ज़्यादा थीं इस लिए उन्हें बचाने के लिए ये लोग भाग निकले।

मुजाहेदीन के लिए ज़रूरी हो गया के वो हरकुल के मुताल्लिक़ सही सूरत-ए-हाल मालूम करें। ये बहुत बड़ा ख़तरा था। मुजाहेदीन और आगे चले गए। उन्हें गुस्सान की एक बस्ती नज़र आ गई वो बस्ती में चले गए और बताया के वो बसरा जा रहे थे मगर रास्ते में रहज़नों ने उन्हें लूट लिया है। बस्ती वालों ने उन्हें खाना खिलाया ओर ख़ासी आव भगत की। वहां से उन्हें सही इत्तेला मिल गई।

सही सूरत-ए-हाल ये थी के हरकुल और क़बीला गुस्सान के दरमियान मुहायदा तय पा गया था। क़बीला गुस्सान ने अपनी फौज हरकुल की फौज में शामिल कर दी थी और दोनों फौजों का रूख़ मदीना की तरफ था। मोअररिख़ों ने हरकुल के लश्कर की तादाद एक लाख और एक लाख गुस्सान की फौज की तादाद लिखी है लेकिन बाज़ मोअररिख़ इस से इत्तेफाक़ नहीं करते। वो दोनों फौजों की मजमूई तादाद एक लाख बताते हैं, बहरहाल मदीना की इस्लामी फौज की तादाद सब ने तीन हज़ार लिखी है।

इस सूरत-ए-हाल ने मुजाहेदीन के सालारों को परेशान कर दिया। हालात का तकाज़ा ये था के दुश्मन की इस हैबत नाक जंगी कुव्वत और अपनी क़लील तादाद को देखते हुए वापस आ जाते लेकिन उन्हेंने वापसी की न सोची, अलबत्ता मआन से आगे पैश क़दमी रोक दी।

"अगर हम वापस चले गए तो ये हरकुल और गुस्सान के लिए दावत होगी के वे धड़क मदीना तक चले आओ"-अब्दुल्ला बिन रहावा(र०) ने कहा-"हम दुश्मन को यहीं रोकेंगे।"

"क्या हम इतनी थोड़ी तादाद में इतने बड़े लश्कर को रोक सकेंगे?"-ज़ेद बिन हारिस(र०) ने पूछा।

"कौन से मैदान में हम थोड़ी तादाद में नहीं थे?"-जाफर बिन अबी तालिब (र०) ने कहा-"अगर हम मिल कर किसी फैसले पर नहीं पहुंच सकते तो हम में से कोई मदीना चला जाए और रसूल अल्लाह(स०) से अहकाम ले आए।"

"हम इतना वक़्त ज़ाय नही कर सकते"-अब्दुल्ला(र०) ने कहा-"दुश्मन हमें इतनी मोहलत नही देगा खुदा की क़सम, मै दुश्मन को ये तआस्सुर नही दूंगा के हम उसके लश्कर से डर गए है।"

"और में मदीना मे ये कहने के लिए दाखि़ल नही होंगा के हम पस्पा हो आए हैं"-ज़ेद(र०) ने कहा-"हम जानें कुर्बान कर के जि़न्दा रहने वालों के लिए मिसाल क़ायम कर जाऐंगे। ये मत भूलो के गु़स्सान की फौज में ईसाइयों की तादाद ज़्यादा है। ईसाइ अपने मज़हब की खा़तिर लड़ेंगे।"

अब्दुल्ला बिन रवाहा(र०) उठ खड़े हुए और अपने मुजाहेदीन को इक्ठा कर के इतने जोशीले लहजे में खिताब किया के तीन हज़ार मुजाहेदीन के नारे ज़मीन व आसमान को हिलाने लगे। सिपाह सालार ज़ेद बिन हारिस(र०) ने आगे को कूच का हुक्म दे दिया।

मोअररि़खेन लिखते है के मुजाहेदीन-ए-इस्लाम ने अपने आप को बड़े ही ख़तरनाक इम्तेहान में डाल दिया। हरकुल और गुस्सान के सरदार-ए-आला को मालूम हो गया था के मदीना से चन्द हज़ार नफरी की फौज अपने ऐलची के क़त्ल का इन्तेक़ाम लेने आ रही है। मुजाहेदीन को कुचल डालने के लिए हरकुल और गु़स्सान के लश्कर आ रहे थे।

❁

मुजाहेदीन बढ़ते चले गए और बलक़ा पहुंचे। उन्हें और आगे जाना था लेकिन गुस्सान की फौज के दो दस्ते जिन की तादाद मुजाहेदीन की निसबत तीन गुनाह थी। रास्ते में हायल हो गए। ज़ेद बिन हारिस(र०) ने मुजाहेदीन को दूर ही रोक लिया और एक बुलंद जगह खड़े हो कर इलाके का जाएज़ा लिया। उन्हें ये ज़मीन लड़ाई के लिए मोज़ू न लगी। दूसरे सालारों से मशवरा कर के ज़ेद बिन हारिस(र०) मुजाहेदीन को पीछे ले आए। गुस्सान की फौज ने इसे पस्पाई समझ कर मजाहेदीन का तआकुब किया।

ज़ेद(र०) मूता के मुक़ाम पर रूक गए और फौरन अपने मुजोदीन को लड़ाई की तरतीब में कर लिया। उन्होंने फौज को तीन हिस्सों मे तक़सीम किया- दायां और बांया पहलू और क़ल्ब- दायें पहलू की कमान कुतबा बिन क़तादा(र०) के पास और बायें पहलू की उबाया(र०) बिन मालिक के हाथों थी। ज़ेद(र०) खुद क़ल्ब में रहे।

"अल्लाह के सच्चे नबी(स०) के आशिक़!"-ज़ेद बिन हारिस(र०) ने बड़ी बुलंद आवाज़ से मुजाहेदीन को लल्कारा-"आज हमें साबित करना है के हम हक़ के परस्तार है। आज बातिल के नीचे से ज़मीन खी़च लो। अपने सामने बातिल का

लश्कर देखो और इससे मत डरो....ये लड़ाई ताकृत की नहीं, ये जुर्रत जज़्बे और दिमाग़ की जंग है। मै तुम्हारा सिपेह सालार भी हूं और अलम बरदार भी। दुश्मन का लश्कर इतना ज़्यादा है के तुम इस में गुम हो जाओगे लकिन अपने होश गुम न होने देना। हम इक्ळे लड़ेंगे और इक्ळे मरेंगे"-ज़ेद(र०) ने अलम उठा लिया।

दुश्मन की तरफ से तीरों की पहली बौछाड़ आई। ज़ेद(र०) के हुक्म से मुजाहेदीन के दायें ओर बायें पहलू फैल गए और आगे बढ़े। ये आमने सामने का तसादुम था। मुजाहेदीन दायें और बायें फैलते और आगे बढ़ते चले गए और ज़ेद(र०) ने क़ल्ब को आगे बढ़ाया दिया। वो खुद आगे थे। ये मआरका ऐसा था के मुजाहेदीन का हौसला और जज़्बा बरक़रार रखने के लिए सिपाह सलार का आगे होना ज़रूरी था।

चूंके अलम भी सिपेह सलार ज़ेद बिन हारिस(र०) के पास था इस लिए दुश्मन इन्ही पर तीर बरसाते और हल्ले बोल रहा था। ज़ेद(र०) को तीर लग चुके थे। जिस्म से खून बह रहा था लेकिन उन्होंने अलम नीचे न होने दिया और इनकी लल्कार खामोश न हुई। अलम उठाए हुए वो तलवार भी चला रहे थे। फिर उनके जिस्म में बरछियां लगीं। आख़िर घोड़े से गिर पड़े और शहीद हो गए। अलम गिरते ही मुजाहेदीन कुछ बददिल हुए लेकिन जाफर बिन अबी तालिब(र०) ने बढ़ कर अलम उठा लिया।

"रसूल अल्लाह(स०) के शैदाइयों!"-जाफर(र०) ने अलम ऊपर कर के बड़ी बुलंद आवाज़ से कहा- "खुदा की क़सम इस्लाम का अलम गिर नही सकता"- और उन्होंने ज़ेद बिन हारिस(र०) शहीद की जगह संभाल ली।

मुजाहेदीन-ए-लश्कर कुफ्फार में गुम हो गए थे लेकिन उनका जज़्बा क़ायम था। उनकी लल्कार और उनके नारे सुनाई दे रहे थे। सालार सिपाहियों की तरह लड़ रहे थे। इनका अलम बुलंद था।

थोड़ी ही देर बाद अलम गिरने लगा। अलम गिरता था, उठता था। अब्दुल्लाह बिन रवाहा(र०) ने देख लिया और समझ गए के अलम बरदार ज़ख्मी है और अलम संभाल नहीं सकता। अलम बरदार सिपाह सालार खुद था। वो जाफर बिन अबी तालिब(र०) थे। अब्दुल्ला(र०) उनकी तरफ दौड़े। उन तक पहुंचना मुमकिन नज़र नहीं आता था।

अब्दुल्ला(र०) जाफर(र०) तक पहुंचे ही थे के जाफर(र०) गिर पड़े। उनका जिस्म खून में नहा गया था। जिस्म पर शायद ही कोई ऐसी जगह हो जहां तीर, तलवार या बरछी का ज़ख़्म नही था। जाफर(र०) गिरते ही शहीद हो गए।

अब्दुल्लाह(र०) ने परचम उठा कर बुलंद किया और नारा लगा कर मुजाहेदीन को बताया के उन्होंने अलम और सिपाह सालारी संभाल ली है।

ये दुश्मन की फौज का एक हिस्सा था जिस की तादाद दस से पंद्रह हज़ार तक थी। ये तमाम तर नफरी गुस्सानी ईसाइयों की थी जो इस मआरके को मज़हबी जंग समझ कर लड़ रहे थे। इतनी ज़्यादा तादाद के ख़िलाफ तीन हज़ार मुजाहेदीन क्या कर सकते थे लेकिन उनकी क़यादत इतनी दानिशमंद और असकरी लिहाज़ से इतनी क़ाबिल थी के इसके तहत मुजाहेदीन जंगी तरीक़े और सलीक़े से लड़ रहे थे। उनका अंदाज़ लठ बाज़ों वाला नहीं था मगर दुश्मन की तादाद इतनी ज़्यादा थी के मुजाहेदीन बिखरने लगे। यहां तक के बाज़ इस इंतेशार और दुश्मन के दबावो और ज़ोर से घबरा कर मआरके से निकल गए लेकिन वो भाग कर कहीं गए नहीं, क़रीब ही कहीं मौजूद रहे। बाक़ी मुजाहेदीन इंतेशार का शिकार होने से यूं बचे के वो चार चार पांच पांच इक्ळे हो कर लड़ते रहे।

जंगी मुबस्सेरीन ने लिखा है के गुस्सानी मुसलमानों की इस अफरातफरी की कैफियत से कुछ भी फायदा न उठा सके जिसकी वजह ये है के मुसलमान इतनी बे जिगरी से और ऐसी महारत से लड़ रहे थे के गुस्सानियों पर उनका रौब तारी हो गया था। वो समझते थे के मुसलमानों का बिखर जाना भी इन की चाल है। मोअरिख़ लिखते हैं के मुसलमानों के सालारों और कमांडरों ने इस सूरत-ए-हाल को यूं संभाला के अपने आदमियों को मआरके से निकालने लगे ताके इन्हें मुनज़्ज़म किया जा सके।

इस दौरान अलम एक बार फिर गिर पड़ा। तीसरे सिपाह सालार अब्दुल्ला बिन रवाहा(र०) भी शहीद हो गए। अब के मुजाहेदीन में बददिली नज़र आने लगी। अलम का तीसरी बार गिरना अच्छा शगुन नहीं था। रसूल करीम(स०) ने यही तीन सालार मुक़र्रर किए थे। अब मुजाहेदीन को सिपाह सालार खुद मुक़र्रर करना था।

अलम गिरा हुआ था जो शिकस्त की निशानी थी। एक सरकर्दा मुजाहिद साबित बिन अरकम(र०) ने अलम उठा कर बुलंद किया और नारे लगाने के अंदाज़ से कहा-"अपना सिपाह सालार किसी को बना लो। अलम को मैं बुलंद रखूंगा....मैं साबित बिन अरकम(र०)।"

मोअरिख़ इब्ने साद ने लिखा है साबित(र०) अपने आप को सिपाह सालारी के क़ाबिल नहीं समझते थे और वो मुजाहेदीन की राय के बग़ैर सिपाह सालार बनना भी नहीं चाहते थे क्योंके नबी-ए-करीम(स०) ने यही तीन सालार मुक़र्रर किये थे। अब मुजाहेदीन को सिपेह सालार खुद मुक़र्रर करना था।

अलम गिरा हुआ था जो शिकस्त की निशानी थी। एक सरकर्दा मुजाहेद

साबित बिन अरकम(र०) की नज़र ख़ालिद बिन वलीद(र०) पर पड़ी जो क़रीब ही थे मगर ख़ालिद बिन वलीद को मुसलमान हुए अभी तीन ही महीने हुए थे इस लिए उन्हें इस्लामी मआशरत में अभी कोई अहमियत हासिल नहीं हुई थी। सावित विन अरकम(र०) ख़ालिद(र०) के असकरी जौहर और जज़्बे से वाक़िफ़ थे। उन्होंने हाथ बढ़ाया।

"बेशक इस रूत्बे के क़ाबिल तुम हो ख़ालिद(र०)!"

"नहीं"-ख़ालिद(र०) ने जवाब दिया-"मैं अभी इस का मुस्तहिक़ नहीं"-ख़ालिद(र०) ने अलम लेने से इन्कार कर दिया।

लड़ाई का ज़ोर कुछ टूट गया था साबित(र०) ने लल्कार कर मुजाहेदीन से कहा के ख़ालिद(र०) से कहो के अलम ले ले। बेशतर मुजाहेदीन ख़ालिद(र०) से वाक़िफ़ थे और क़बीला क़ुरैश में उनकी हैसियत से बे ख़बर नहीं थे।

"ख़ालिद(र०)...ख़ालिद(र०)....ख़ालिद(र०)- हर तरफ से आवाज़ें बुलंद होने लगी-"ख़ालिद हमारा सिपाह सालार है।"

ख़ालिद(र०) ने लपक कर अलम साबित(र०) से ले लिया।

❀

गुस्सानी लड़ तो रहे थे लेकिन ज़रा पीछे हट गए थे। ख़लिद(र०) को पहली वार आज़ादी से क़यादत के जौहर दिखाने का मौक़ा मिला। उन्होंने चन्द एक मुजाहेदीन को अपने साथ रख लिया और इन से क़ासिदों का काम लेने लगे। खुद भी भाग दौड़ करने लगे। लड़ते भी रहे। इस तरह उन्हेंने उन मुजाहेदीन को जो लड़ने के क़ाविल रह गए थे, यकजा कर के मुनज़्ज़म कर लिया और इन्हें पीछे हटा लिया। गुस्सानी भी पीछे हट गए और दोनों तरफ से तीरों की बोछाड़ें बरसने लगीं। फिज़ा में हर तरफ तीर उड़ रहे थे।

ख़ालिद(र०) ने सूरत हाल का जाएज़ा लिया, अपनी नफरी और इस की कैफियत देखी तो उनके सामने यही एक सूरत रह गई थी के मआरका ख़त्म कर दें। दुश्मन को कुमक भी मिल रही थी लेकिन ख़ालिद(र०) पस्पा नहीं होना चाहते थे। पस्पाई वजा थी लेकिन ख़तरा ये था के दुश्मन तआकुब में आएगा जिसका नतीजा मुजाहेदीन की तवाही के सिवा कुछ न होगा।

ख़ालिद(र०) ने सोच कर एक दिलेराना फैसला किया। वो मुजाहेदीन के आगे हो गए और गुस्सानियों पर हल्ला बोल दिया। मुजाहेदीन ने जब अपने सिपाह सालार और अपने अलम को आगे देखा तो उनके हौसले तरोताज़ा हो गए। ये हल्ला इतना दिलेराना और इतना तेज़ था के कसीर तादाद गुस्सानी ईसाइयों के क़दम उखड़ गए।

मुजाहेदीन के हल्ले और इनकी ज़र्बों में क़हर था। मोअररिख़ लिखते हैं(और हदीस भी है) के उस वक्त तक ख़ालिद(र०) के हाथ में नौ तलवारें टूट चुकी थी।

ख़ालिद(र०) दरअसल गुस्सानियों को बिखेर कर मुजाहेदीन को पीछे हटाना चाहते थे। इस में वो कामयाब रहे। उन्होंने अपने और मजाहेदीन के जज़्बे और इस्लाम के इश्क के बल बूते पर ये दिलेराना हमला किया था। हमले और हल्ले की शिद्दत ने तो पूरा काम किया लेकिन गुस्सानी मुजाहेदीन की इस ग़ैर मामूली दिलेरी से मरऊब हो गए और पीछे हट गए। उनमें इन्तेशार पैदा हो गया था। इसके साथ ही मुजाहेदीन के दायें पहलू के सालार कुत्बा बिन क़तादा(र०) ने गुस्सानियों के क़ल्ब में घुस कर उनके सिपाह सालार मालिक को क़त्ल कर दिया। इस से गुस्सानियों के हौसले जवाब दे गए और वो तादाद की इफरात के बावजूद बहुत पीछे चले गए और मुनज़्ज़म न रह सके।

ख़ालिद(र०) ने इसी लिए ये दिलेराना हल्ला कराया था के मुजाहेदीन को तबाही से बचाया जा सके। वो उन्होंने कर लिया और मुजाहेदीन को वापसी का हुक्म दे दिया। इस तरह ये जंग हार जीत के बग़ैर ख़त्म हो गई।

जब मुजाहेदीन ख़ालिद(र०) बिन वलीद की क़यादत में मदीना में दाख़िल हुए तो मदीना में पहले ही ख़बर पहुंच चुकी थी के मुजाहेदीन पस्पा हो कर आ रहे हैं। मदीना के लोगों ने मुजाहेदीन को ताने देने शुरू कर दिये के वो भाग कर आए हैं। ख़ालिद(र०) ने रसूलेअकरम(स०) के हुज़ूर मआरके की तमाम तर रूदाद पेश की। लोगों के ताने बुलंद होते जा रहे थे।

"ख़ामोश हो जाओ"-रसूले करीम(स०) ने बुलंद आवाज़ से फ़रमाया-"ये मैदान-ए-जंग के भगोड़े नहीं। ये लड़ कर आए हैं और आईंदा भी लड़ेंगे.... ख़ालिद(र०) अल्लाह की तलवार है।"

इब्ने हशाम, वाक़दी और मग़ाज़ी लिखते हैं के रसूले करीम(स०) के ये अलफ़ाज़ ख़ालिद(र०) बिन वलीद का ख़िताब बन गए-"सेफुल्लाह"-अल्लाह की शमशीर। इसके बाद ये शमशीर अल्लाह की राह में हमेशा बे नियाम रही।

क़बीला क़ुरैश का सरदारे आला अबु सुफयान जो किसी वक़्त लल्कार कर बात किया करता और मुसलमानों को "मोहम्मद(स०) का गिरोह" कह कर उन्हें पल्ले ही नही बान्धता था, अब बुझ के रह गया था। ख़ालिद(र०) बिन वलीद के क़बूले इस्लाम के बाद तो अबु सुफयान सिर्फ सरदार रह गया था। यूं लगता था जैसे जंग व जदाल के साथ उनका कभी ताल्लूक़ रहा ही नहीं था। उसमान(र०) बिन तलहा और उमरो बिन आस(र०) जैसे माहिर जंगजू भी उसका साथ छोड़ गए थे। उसके पास अभी अकरमा और सफवाँन जैसे सालार मौजूद थे लेकिन अबु सुफयान साफ तौर पर महसूस करने लगा था के उसकी यानी क़ुरैश की जंगी ताक़त बहुत कमज़ोर हो गई है।

"तुम बुज़दिल हो गए हो अबु सुफयान!"-उसकी बीवी हुन्द ने एक रोज़ उसे कहा-"तुम मदीना वालों को मोहलत और मौक़ा दे रहे हो के वो लश्कर इक्ळा करते चले जायें और एक रोज़ आकर मक्का की ईंट से ईंट बजा दें।"

"मेरे साथ रह ही कौन गया है हुन्द?"-अबु सुफयन ने मायूसी के आलम में कहा।

"मुझे उस शख़्स की बीवी कहलाते शर्म आती है जो अपने ख़ानदान और अपने क़बीले क मक़तूलीन के खून का इन्तेक़ाम लेने से डरता है"-हुन्द ने कहा।

"मैं क़त्ल कर सकता हूं"-अबु सुफयान ने कहा-"मैं क़त्ल हो सकता हूं। मैं बुज़दिल नहीं, डरपोक भी नहीं लेकिन मैं अपने वादे से नहीं फिर सकता....क्या तुम भूल गई हो के हदीबिया में मोहम्मद(स०) के साथ मेरा क्या मुहाएदा हुआ था?.... अहल-ए-क़ुरैश और मुसलमान दस साल तक आपस में नही लड़ेंगे। अगर में मुहाएदा तोड़ दूं और मैदान-ए-जंग में मुसलमान हम पर ग़ालिब आ जायें तो...."

"तुम मत लड़ो"-हुन्द ने कहा-"क़ुरैश नही लड़ेंगे। हम किसी और क़बीले को मुसलमानों के खिलाफ लड़ा सकते हैं। हमारा मक़सद मुसलमानों की तबाही है।

हम मुसलमानों के खिलाफ लड़ने वालों को दरपर्दा मदद दे सकते हैं।"

"कुरैश के सिवा कौन है जो मुसलमानों के खिलाफ लड़ने की जुर्रत करेगा?"-अबु सुफयान ने कहा-"मूता में हरकुल और गुस्सान के एक लाख के लश्कर ने मुसलमानों का क्या बिगाड़ लिया था? तुम ने सुना नही था के एक लाख के मुक़ाबले में मुसलमानों की तादाद सिर्फ तीन हज़ार थी?....मैं अपने क़बीले के किसी आदमी को मुसलमानों के खिलाफ लड़ने वाले किसी क़बीले की मदद के लिए जाने की इजाज़त नही दूंगा।"

"मत भूल अबु सुफयान!"-हुन्द ने ग़ज़ब नाक लहजे में कहा-"मैं वो औरत हूं जिसने ओहद की लड़ाई में हम्ज़ा(र०) का पेट चाक कर के उसका कलेजा निकाला और उसे चबाया था। तुम मेरे खून को किस तरह ठण्डा कर सकते हो।"

"तुम ने हम्ज़ा(र०) का नहीं उसकी लाश का पेट चाक किया था"-अबु सुफयान ने होंटों पर तंज़िया मुस्कुराहट ला कर कहा-"मुसलमान लाशें नहीं.....और वो जो कुछ भी है, खुदा की क़सम, मैं मुहाएदा नही ताडूंगा।"

"मुहाएदा तो मैं भी नहीं तोड़ूंगी"-हुन्द ने कहा-"लेकिन मुसलमानों से इन्तेक़ाम ज़रूर लूंगी और ये इन्तेक़ाम भयानक होगा। क़बीला कुरैश में ग़ैरत वाले जंगजू मौजूद हैं।"

"आख़िर तुम कहना क्या चाहती हो?"-अबु सुफयान ने पूछा।

"तुम्हें जल्दी पता चल जाएगा"-हुन्द ने कहा।

❁

मक्का के गर्द व नवाह में ख़ज़ाआ और बनू बकर दो क़बीले आबाद थे। इन की आपस में बड़ी पुरानी अदावत थी। हदीबिया में जब मुसलमानों और कुरैश में सुलह हो गई और दस साल तक अदम जारहीयत का मुहाएदा हो गया तो ये दोनों क़बीले इस तरह इस मुहाएदे के फरीक़ बन गए के क़बीला ख़ज़ाआ ने मुसलमानों का और क़बीला बनू बकर ने कुरैश का इत्तेहादी बनने का ऐलान कर दिया था। मुहाएदा जो तारीख़ में सुलह हदीबिया के नाम से मशहूर हुआ। खज़ाआ और बनू बकर के लिए यूं फायदा मंद साबित हुआ के दोनों क़बीलों की आए दिन की लड़ाईयां बंद हो गई।

अचानक यूं हुआ के बनू बकर ने एक रात ख़ज़ाआ की एक बस्ती पर हमला कर दिया। ये कोई भी न जान सका के बनू बकर ने मुहाएदा क्यों तोड़ दिया है। एक रिवायत है के इस के पीछे हुन्द का हाथ था। ख़ज़ाआ चूंके मुसलमानों के इत्तेहादी थे इस लिए हुन्द ने इस तवक्क़ो पर खुज़ाआ पर बनू बकर पर हमला करेंगे तो कुरैश मुसलमानों पर हमला कर देंगे।

एक रिवायत ये है के ये गुस्सानी ईसाइयों और यहूदियों की साज़िश थी। उन्होंने सोचा था के कुरैश और मुसलमानों के इत्तेहादियों को आपस में लड़ा दिया जाए तो कुरैश और मुसलमानों के दरमियान लड़ाई हो जाएगी। बनू बकर ख़ज़ाआ के मुक़ाबले में ताक़तवर क़बीला था। गुस्सानियों और यहूदियों ने बनू बकर की एक लड़की अग़वा कर के क़बीला ख़ज़ाआ की एक बस्ती में पहुंचा दी और बनू बकर के सरदारों से कहा के खुज़ाआ ने उनकी लड़की को अग़वा किया है। बनू बक़र ने जासूसी की और पता चला के उनकी लड़की वाक़ेई ख़ज़ाआ की एक बस्ती में है।

हुन्द ने अपने खाविंद अबु सुफयान को बताए बग़ैर कुरैश के कुछ आदमी बनू बकर को दे दिये। इनमें कुरैश के मशहूर सालार अकरमा और सफवान भी थे। चूंके हमला रात को किया गया था, इस लिए ख़ज़ाआ के बीस आदमी मारे गए। ये राज़ हर किसी को मालूम हो गया के बनू बकर के हमले में कुरैश के आदमी मदद के लिए गए थे।

ख़ज़ाआ का सरदार अपने साथ दो तीन आदमी ले कर मदीना चला गया। ख़ज़ाआ ग़ैर मुस्लिम क़बीला था। ख़ज़ाआ के ये आदमी हज़रत रसूले अकरम(स०) के हुज़ूर पहुंचे और आप(स०) को बताया के बनू बकर ने कुरैश की पुश्त पनाही से हमला किया था और कुरैश के कुछ जंगजू भी इस हमले में शरीक थे। ख़ज़ाआ के ऐलची ने रसूले अकरम(स०) को बातया के अकरमा और सफवान भी हमले में शामिल थे। रसूले अकरम गुस्से में आ गए। ये मुहाएदे की खिलाफ वर्ज़ी थी। आप(स०) ने मुजाहेदीन को तैयारी का हुक्म दिया।

मोअररिख़ लिखते हैं के रसूल अल्लाह(स०) का रद्दे अमल बड़ा ही शदीद था। अगर मामला सिर्फ बनू बकर और ख़ज़ाआ की आपस की लड़ाई का होता तो हुज़ूर(स०) शायद कुछ और फैसला करते लेकिन बनू बकर के हमले में कुरैश के नामी गिरामी सालार अकरमा और सफवान भी शामिल थे। इस लिए आप(स०) ने फरमाया के मुहाएदे की ख़िलाफ वर्ज़ी की ज़िम्मेदारी अहल-ए-कुरैश पर आयद होती है।

"अबु सुफयान ने सुलह-ए-हदीबिया की खिलाफ वर्ज़ी की है"-मदीना की गलियों और घरों में आवाज़ें सुनाई देने लगी-"रसूल अल्लाह(स०) के हुक्म पर हम मक्का की ईंट से ईंट बजा देंगे...अब कुरैश को हम अपने क़दमों में बिठा कर दम लेंगे।"

रसूल अल्लाह(स०) ने मक्का पर हमले की तैयारी का हुक्म दे दिया।

अबु सुफयान को इतना ही पता चला था के बनू बकर ने ख़ज़ाआ पर शबखून की तर्ज़ का हमला किया है और ख़ज़ाआ के कुछ आदमी मारे गए हैं। उसे याद आया के अकरमा और सफवान सुबह सवेरे घोड़ों पर सवार कही से आ रहे थे। उसने उनसे पूछा था के वो कहां से आ रहे हैं तो उन्होंने झूट बूला था के वो घुड़ दौड़ के लिए गए थे। दोपहर के वक्त जब उसे पता चला के बनू बकर ने ख़ज़ाआ पर हमला किया है तो उसने अकरमा और सफवान को बुलाया।

"तुम दोनों मुझे किस तरह यकीन दिला सकते हो के ख़ज़ाआ की बस्ती पर बनू बकर के हमले में तुम शरीक नहीं थे?"-अबु सुफयान ने उनसे पूछा।

"क्या तुम भूल गए हो के बनू बकर हमारे दोस्त हैं?"-सफवान ने कहा-"अगर दोस्त मदद के लिए पुकारें तो क्या तुम दोस्तों को पीठ दिखाओगे?"

"मैं कुछ भी नहीं भूला"-अबु सुफयान ने कहा-"खुदा की कसम तुम भूल गए हो के कबीला कुरैश का सरदार कौन है....मैं हूं तुम्हारा सरदार..मेरी इजाज़त के बग़ैर तुम किसी और का साथ नहीं दे सकते।"

"अबु सुफयान!"-अकरमा ने कहा-"मैं तुम्हे अपने कबीले का सरदार मानता हूं। तुम्हारी कमान में लड़ाईयां लड़ी हैं। तुम्हारा हर हुक्म माना है लेकिन हम देख रहे हैं के तुम कबीले के वकार को मजरूह करते चले जा रहे हो। तुम ने अपने दिल पर मदीने वालों का ख़ौफ तारी कर लिया है।"

"अगर मैं कबीले का सरदार हूं तो मैं किसी को ऐसा जुर्म बख्शूंगा नहीं जो तुम ने किया है"-अबु सुफयान ने कहा।

"अबु सुफयान!"-अकरमा ने कहा-"वो वक्त तुम्हें याद होगा जब ख़ालिद मदीने को रूख़सत हुआ था। तुमने उसे भी धमकी दी थी और मैं ने तुम्हें कहा था के हर किसी को हक हासिल है के वो उस अकीदे का पैरूकार हो जाए जिसे वो अच्छा समझता है। और मैं ने तुम्हें ये भी कहा था के तुम ने अपना रवैय्या न बदला तो मैं भी तुम्हारा साथ छोड़ने और मोहम्मद(स०) की इताअत कुबूल करने पर मजबूर हो जाऊंगा।"

"क्या तुम नहीं समझते के बा वकार लोग अपने अहद की ख़िलाफ वर्ज़ी नहीं किया करते?"-अबु सुफयान ने कहा-"तुम ने बनू बकर का साथ दे कर और मुसलमानों के इत्तेहादी कबीले पर हमला कर के अपने कबीले का वकार तबाह कर दिया है। अगर तुम ये सोच रहे हो के मोहम्मद(स०) ने मक्का पर हमला कर दिया तो तुम हमला पस्पा कर दोगे तो तुम खुश फहमी में मुब्तेला हो। कौन से मैदान में तुम ने मुसलमानों को शिकस्त दी है? कितना लश्कर ले कर तुम ने मदीने को मुहासरे में

लिया था?"

"वहां से पस्पाई का हुक्म तुम ने दिया था"–सफवान ने कहा–"तुम ने हार मान ली थी।"

"मैं तुम जैसे ज़िद्दी और कोताह बीन आदमियों के पीछे पूरे क़बीले को ज़लील व ख्वार नही कराऊंगा"– अबु सुफयान ने कहा–"मैं मुसलमानों के साथ अभी छेड़ ख़ानी नही कर सकता। मैं मोहम्मद(स०) को बताना चाहता हूं के हमारे एक दोस्त क़बीले ने मुसलमानों के एक दोस्त क़बीले पर हमला किया है और इस में कुरैश के चन्द एक आदमी शामिल हो गए थे तो इसका ये मतलब न लिया जाए के मैं ने मुहाएदे की खिलाफ़ वर्ज़ी की है। मैं मोहम्मद(स०) को बताऊंगा के क़बीला कुरैश हदीबिया के मुहाएदे पर क़ायम है।"

वो अकरमा और सफवान को वहीं खड़ा छोड़ कर वहां से चला गया।

❁

अबु सुफयान उसी रोज़ मदीने को रवाना हो गया। अहल–ए–मक्का हैरान थे के अबु सुफयान अपने दुश्मन के पास चला गया है। उसके खि़लाफ आवाज़ें उठने लगीं। उसकी बीवी हुन्द जो बड़े मोटे जिस्म और ऊंचे क़द की औरत थी फुंकारती फिर रही थी।

मदीना पहुंच कर अबु सुफयान ने जिस दरवाज़े पर दस्तक दी वो उसकी अपनी बेटी उम्मे हबीबा(र०) का घर था। दरवाज़ा खुला। बेटी ने बाप को देखा तो बेटी के चेहरे पर मुर्सरत की बजाए बे रूखी का आसार आ गया। बेटी इस्लाम कुबूल कर चुकी थी और बाप इस्लाम का दुश्मन था।

"क्या बाप अपनी बेटी के घर में दाखि़ल नहीं हो सकता?"–अबु सुफयान ने उम्मे हबीबा(र०) से पूछा।

"अगर बाप वो सच्चा मज़हब कुबूल कर ले जो उसकी बेटी ने कुबूल किया है तो बेटी बाप की राह में आंखें बिछाएगी"– उम्मे हबीबा(र०) ने कहा।

"बेटी!"–अबु सुफयान ने कहा–"मैं परेशानी के आलम में आया हूं। मैं दोस्ती का पैग़ाम ले कर आया हूं।"

"बेटी क्या कर सकती है?"–उम्मे हबीबा(र०) ने कहा–"आप रसूले खुदा के पास जायें।"

बेटी की इस बे रूखी पर अबु सुफयान सटपटा उठा। वो रसूले करीम के घर की तरफ चल पड़ा। रास्ते में उसने वो शनासा चेहरे देखे जो कभी अहल–ए–कुरैश कहलाते और उसे अपना सरदार मानते थे। अब उससे बैगाने हो गए थे। वो उसे चुप

चाप देख रहे थे। वो उनका दुश्मन था। उसने इनके खिलाफ लड़ाईयां लड़ी थीं। ओहद की जंग में अबु सुफयान की बीवी हुन्द ने मुसलमानों की लाशें के पेट चाक किये और उनके कान और नाकें काट कर उनका हार बनाया और अपने गले में डाला था।

अबु सुफयान अहल-ए-मदीना की घूरती हुई नज़रों से गुज़रता रसूले करीम(स०) के हां जा पहुंचा। उसने हाथ बढ़ाया रसूले करीम(स०) ने मुसाफा किया लेकिन आप(स०) की बे रूख़ी नुमायां थी। रसूले करीम(स०) को इत्तेला मिल चुकी थी के बनू बकर ने अहले कुरैश की मदद से ख़ज़ाआ पर हमला किया है। आप(स०) अहल-ए-कुरैश को फरैब कार समझ रहे थे। ऐसे दुश्मन का आप(स०) के पास एक ही इलाज था के फौज कशी करो ताके वो ये न समझे के हम कमज़ोर हैं।

"ऐ मोहम्मद(स०)!"-अबु सुफयान ने कहा-" मैं ये ग़लत फहमी रफआ करने आया हूं के मैं ने हदीबिया के सुलह नामे की खिलाफ वर्ज़ी नहीं की। अगर बनू बकर की मदद को क़बीला कुरैश के चन्द आदमी मेरी इजाज़त के बग़ैर चले गए तो ये मेरा कुसूर नहीं। मैं ने मुहाएदा नहीं तोड़ा। अगर तुम चाहते हो तो मैं मुहाएदे की तजहीद के लिए तैयार हूं।"

मोअररिख़ इब्ने हशाम और मग़ाज़ी की तहरीर से पता मिलता है के रसूले अकरम(स०) ने न उसकी तरफ देखा न उसके साथ कोई बात की।

रसूले करीम(स०) की खामोशी ने अबु सुफयान पर खौफ तारी कर दिया। वो वहां से उठा आया और हज़रत अबु बकर(र०) से जा मिला।

"मोहम्मद(स०) मेरी कोई बात सुनने पर आमादा नहीं"-अबु सुफयान ने अबु बकर(र०) से कहा-"तुम हम में से हो अबु बकर(र०)! ख़ुदा की क़सम हम घर आए महमान के साथ ऐसा सुलूक नहीं किया करते के उसकी बात भी न सुनें। में दोस्ती का पैग़ाम ले कर आया हूं। मैं जंग न करने का मुहाएदा करने आया हूं।"

"अगर मोहम्मद(स०) ने जो अल्लाह के रसूल हैं, तुम्हारी बात नहीं सुनी तो हम तुम्हारी किसी बात का जवाब नहीं दे सकते"-अबु बकर(र०) ने कहा-"हम उस मेहमान की बात सुना करते हैं जो हमारी बात सुनता है। अबु सुफयान! क्या तुम ने मोहम्मद की बात सुनी है के वो अल्लाह का भेजा हुआ रसूल(स०) है? क्या तुम ने अल्लाह के रसूल(स०) की ये बात नहीं सुनी थी के अल्लाह एक है और उसके सिवा कोई मावूद नहीं?......सुनी थी तो तुम रसूल(स०) के दुश्मन क्यों हो गए थे?"

"क्या तुम मेरी कोई मदद नहीं करोगे अबु बकर(र०)?"-अबु सुफयान ने इल्तेजा की।

"नही"-अबु बकर(स०) ने कहा-"हम अपने रसूल(स०) के हुक्म के पाबन्द है।"

अबु सुफयान मायूसी के आलम में सर झुकाए हुए चला गया और किसी से हज़रत उमर(र०) का घर पूछ कर उनके सामने जा बैठा।

"इस्लाम के सब से बड़े दुश्मन को मदीना में देख कर मुझे हैरत हुई है"-उमर(र०) ने कहा-"खुदा की क़सम, तुम इस्लाम कुबूल करने वालों में से नहीं।"

अबु सुफयान ने उमर(र०) को मदीना में आने का मक़सद बताया और ये भी के रसूले करीम ने उसके साथ बात तक नहीं की और अबु बकर(र०) ने भी उस की मदद नहीं की।

"मेरे पास अगर च्योंटियों जैसी कमज़ोर फौज हो तो भी तुम्हारे ख़िलाफ लड़ूंगा"-उमर(र०) ने कहा-"तुम मेरे नहीं, मेरे रसूल(स०) और मेरे मज़हब के दुश्मन हो। मेरा रवैय्या वही होगा जो अल्ला के रसूल(स०) का है।"

अबु सुफयान फातिमा(र०) से मिला, हज़रत अली(र०) से मिला लेकिन किसी ने भी उसकी बात न सुनी। वो मायूस और नामुराद मदीना से निकला। उसके घोड़े की चाल अब वो नहीं थी जो मदीना की तरफ आते वक्त थी। घोड़े का भी जैसे सर झुका हुआ था। वो मक्का को जा रहा था।

रसूले खुदा(स०) ने उसके जाने के बाद इन अल्फाज़ में हुक्म दिया के मक्का पर हमले के लिए ज़्यादा से ज़्यादा तादाद में फौज तैयार की जाए। आप के हुक्म में खास तौर पर शामिल था के जंगी तैयारी इतने बड़े पैमाने की हो के मक्का वालों को फैसला कुन शिकस्त दे कर कुरैश को हमेशा के लिए तेह तेग़ कर लिया जाए। इस के अलावा हुज़ूर अकरम(स०) ने फरमाया के कूच बहुत तेज़ होगा और इसे ऐसा खुफिया रखा जाएगा के मक्का वालों को बेख़बरी में दबोच लिया जाए या मक्का के क़रीब इतनी तेज़ी से पहुंचा जाए के कुरैश को मोहलत न मिल सके के वो अपने इत्तेहादी क़बायल को मदद के लिए बुला सकें।

☸

मदीना में मुसलमानों ने रातों को भी सोना छोड़ दिया। जिधर देखो तीर तैयार हो रहे थे। तीरों से भरी हुई तरकशों के अम्बार लगते जा रहे थे। बरछियां बन रही थीं। घोड़े और ऊंट तैयार हो रहे थे। तलवारें तेज़ हो रही थी।, नई बन रही थीं। औरतें और बच्चे भी जंगी तैयारियों में मसरूफ थे। रसूले अकरम(स०) और सहाबा इकराम(र०) भागते दौड़ते नज़र आते थे।

मदीना में एक घर था जिस के अन्दर कुछ और सरगर्मी थी। वो ग़ैर मुस्लिम

घराना था। वहां एक अजनबी आया बैठा था। घर में एक बूढ़ा था, एक अधेड़ उम्र आदमी, एक जवान लड़की, एक अधेड़ उम्र औरत और दो तीन बच्चे थे।

"मैं मुसलमानों के इरादे देख आया हूं"-अजनबी ने कहा-"इन का इरादा है के मक्का वालों को बे ख़बरी में जालें। बिला शक व शुबहा मोहम्मद(स०) जंगी चालों का माहिर है। उसने जो कहा है वो कर के दिखा देगा।"

"हम क्या कर सकते हैं?"-बूढ़े ने पूछा।

"मेरे बुर्जुग!"-अजनबी ने कहा-"हम और कुछ नहीं कर सकते लेकिन हम मक्का वालों को ख़बरदार कर सकते हैं के तैयार रहो और इधर उधर के क़बीलों को अपने साथ मिला लो और मक्का के रास्ते में कही घात लगा कर मुसलमानों पर टूट पड़ो। मक्का पहुंचने तक इन पर शबखून मारते रहो। मुसलमान जब मक्का पहुंचेंगे तो इन का दम ख़म टूट चुका होगा।"

"क़सम उस की जिसे मैं पूजता हूं"-बूढ़े ने जोशीली आवाज़ में कहा-"तुम अक्ल वाले हो। तुम खुदाए यहूदा के सच्चे पुजारी हो। खुदाए यहूदा ने तुम्हें अक्ल व दानिश अता की है। क्या तुम मक्का नहीं जा सकते?"

"नहीं"-अजनबी ने कहा-"मुसलमान हर ग़ैर मुस्लिम को शक की निगाह से देख रहे हैं। वो जानते हैं मैं यहूदी हूं। वो मुझ पर शक करेंगे....मैं अपनी जान पर खेल जाऊंगा मुझे उन यहूदियों के खून का इन्तेक़ाम लेना है जिन्हें मुसलमानों ने क़त्ल किया था। मेरी रगों में बनू क़रीज़ा का खून दौड़ रहा है। ये मेरा फर्ज़ है के मैं मुसलमानों को ज़र्बें लगाता रहूं। अगर मैं अपना ये फर्ज़ अदा न करूं तो खुदाए यहूदा मुझे उस कुत्ते की मौत मारे जिसके जिस्म पर ख़ारिश और फौड़े होते हैं और वो तड़प तड़प कर मरता है लेकिन मैं नहीं चाहता के मैं पकड़ा जाऊं। मैं मुसलमानों को डंक मारने के लिए ज़िन्दा रहना चाहता हूं।"

"मैं बूढ़ा हूं"-बूढ़े ने कहा-"मक्का दूर है। घोड़े या ऊंट पर इतना तेज़ सफर नहीं कर सकूंगा के मुसलमानों से पहले मक्का पहुंच जाऊं। ये काम बच्चों और औरतों का भी नहीं। मेरा बेटा है मगर बीमार है।"

"इस इनाम को देखो जो हम तुम्हें दे रहे हैं"-अजनबी यहूदी ने कहा-"ये काम करा दो। इनाम के आलावा हम तुम्हें अपने मज़हब में शामिल कर के अपनी हिफाज़त में ले लेंगे।"

"क्या ये काम मैं कर सकती हूं?"-अधेड़ उम्र औरत ने कहा-"तुम ने मेरी ऊंटनी नहीं देखी? तुम ने मुझे ऊंटनी की पीठ पर कभी नहीं देखा इतनी तेज़ ऊंटनी मदीना में किसी के पास नहीं।"

"हां!" - यहूदी ने कहा-"तुम ये काम कर सकती हो। ऊंटों और बकरियों को बाहर ले जाओ। तुम्हारी तरफ कोई ध्यान नहीं देगा। तुम उन्हें चराने के लिए हर रोज़ ले जाती हो। आज भी ले जाओ और मदीना से कुछ दूर जा कर अपनी ऊंटनी पर सवार हो जाओ"-उसने एक काग़ज़ इस औरत को देते हुए कहा-"इसे अपने सर के बालों में छुपा लो। ऊंटनी को दौड़ाती ले जाओ और मक्का में अबु सुफयान के घर जाओ और बालों में से ये काग़ज़ निकाल कर उसे दे दो।"

"लाओ" - औरत ने काग़ज़ ले कर कहा-"पूरा इनाम मेरे दूसरे हाथ पर रख दो और यक़ीन के साथ मेरे घर से जाओ के मुसलमान मक्का से वापस आएगे तो इन की तादाद आधी भी नहीं होगी और इन के सर झुके हुए होगे और शिकस्त इन के चेहरों पर लिखी होगी।"

यहूदी ने सोने के तीन टुकड़े औरत को दिए और बोला-"यह इस इनाम के निस्फ हैं जो हम तुम्हें इस वक्त देगे जब यह पैग़ाम अबु सूफयान के हाथ में देकर वापस आ जाओगी।"

"अगर मैं ने काम कर दिया और ज़िंदा वापस न आ सकी तो?"

"बाक़ी इनाम तुम्हारे बीमार ख़ाविंद को मिलेगा"-यहूदी ने कहा।

❁

ये औरत(किसी भी तारीख़ में नाम नहीं दिया गया) अपने ऊंट और बकरियां चराने के लिए ले गई। उन्हें वो हांकती ले जा रही थी। किसी ने भी न देखा के ऊंटों की पींठें नंगी थी लेकिन एक ऊंटनी सवारी के लिए तैयार की गई थी। इस के साथ पानी का मुश्कीज़ा और एक थेला भी बन्धा हुआ था। औरत इस खड़े को शहर से दूर ले गई।

बहुत देर गुज़र गई तो यहूदी ने उसे जावान लड़की को जो घर में थी, कहा-"वो जा चुकी होगी। तुम जाओ और ऊंटों और बकरियों को शाम के वक्त वापस ले आना।"

वो लड़की हाथ में गडरियों वाली लाठी ले कर बाहर निकल गई लेकिन वो शहर से बाहर जाने की बजाए शहर के अन्दर चली गई। वो इस तरह इधर उधर देखती जा रही थी जैसे किसी को ढूंढ रही हो। वो गलियों में से गुज़री और एक मैदान में जा रूकी। वहां बहुत से मुसलमान ढालें ओर तलवारें लिए तेग़ ज़नी की मश्क कर रहे थे। एक तरफ शतुर दौड़ हो रही थी। तमाशाइयों का भी हुजूम था।

लड़की इस हुजूम के इर्द गिर्द घूमने लगी। वो किसी को ढूंढ रही थी। उसके चेहरे पर परेशानी के आसार थे जो बढ़ते जा रहे थे। उसके क़दम तेज़ी से उठने लगे।

एक जवां साल आदमी ने उसे देख लिया और बड़ी तेज़ चाल चलता उसके पीछे गया। क़रीब पहुंच कर उसने धीमी सी आवाज़ में कहा-"ज़ारिया!" लड़की ने चौंक कर पीछे देखा और उसके चेहरे से परेशानी का तअस्सूर उड़ गया।

ज़ारिया को वहां पहुंचते खासा वक़्त लग गया जहां वो औरत ऊंटों और बकरियों को ले जाया करती थी। ऊंट और बकरियां वहीं थीं, वो औरत और उसकी ऊंटनी वहां नहीं थी। ज़ारिया वहां इस अंदाज़ से बैठ गई जैसे बकरियां चराने आई हो। वो बार बार उठती और शहर की तरफ देखती थी। उसे अपनी तरफ कोई आता नज़र नहीं आ रहा था। वो एक बार फिर परेशान होने लगी।

सूरज डूबने के लिए उफक़ की तरफ जा रहा था जब वो आता दिखाई दिया। ज़ारिया ने सुकून की आह भरी और बैठ गई।

"ओह उबैद!"-ज़ारिया ने उसे अपने पास बिठा कर कहा-"तुम इतनी देर से क्यों आए हो। मैं परेशान हो रही हूं।"

"क्या मैं ने तुम्हें परेशानी का इलाज बताया नहीं?"-उबैद ने कहा-"मेरे मज़हब में आ जाओ और तुम्हारी परेशानी ख़त्म हो जाएगी। जब तक तुम इस्लाम कुबूल नहीं करतीं मैं तुम्हें अपनी बीवी नहीं बना सकता। सोचो ज़ारिया सोचो। हम कब तक इस तरह छुप छुप कर मिलते रहेंगे।"

"ये बातें फिर कर लेंगे"-ज़ारिया ने कहा-"मेरी मोहब्बत मज़हब की पाबंद नहीं। मैं तुम्हारी ही पूजा करती हूं। ख्वाबों में भी तुम्हें ही देखती हूं लेकिन आज मेरे दिल पर बोझ आ पड़ा है।"

"कैसा बोझ?"

"मुसलमान मक्का पर हमला करने जा रहे हैं"-ज़ारिया ने कहा-"तुम न जाओ उबैद! तुम्हें अपने मज़हब की क़सम है न जाना....कहीं ऐसा न हो...."

"मक्का वालों में इतनी जान नहीं रही के हमारे मुक़ाबले में जम सकें"-उबैद ने कहा-"लेकिन ज़ारिया! उन में जान हो न हो, मुझे अगर मेरे रसूल आग में कूद जाने का हुक्म देंगे तो मैं आप(स०) का हुक्म मानूंगा....दिल पर बोझ न डालो ज़ारिया! हमारा ये हमला ऐसा होगा के उन्हें उस वक़्त हमारी ख़बर होगी जब हमारी तलवारें उनके सरों पर चमक रही होंगी।"

"ऐसा नहीं होगा उबैद!"-ज़ारिया ने परेशान और जज़बात की शिद्दत से उबैद का सर अपने सीने से लगा कर कहा-"ऐसा नहीं होगा। वो घात में बैठे होंगे। आज रात के पिछले पहर या कल सुबह अबु सुफयान को पैग़ाम मिल जाएगा के मुसलमान तुम्हें बेख़बरी में दबोचने के लिए आ रहे हैं...तुम न जाना उबैद! कुरैश और उन के

दोस्त क़बीले तैयार होंगे।"

"क्या कह रही हो ज़ारिया?"-उबैद ने बिदक कर अपना सर उसके सीने से हटाते हुए पूछा-"अबु सुफयान को किस ने पैग़ाम भेजा है?"

"एक यहूदी ने"-ज़ारिया ने कहा-"और पैग़ाम मेरे बड़े भाई की बीवी ले कर गई है.....मेरी मोहब्बत का अंदाज़ा करो उबैद! मैं ने तुम्हें वो राज़ दे दिया है जो मुझे नहीं देना चाहिए था। ये सिर्फ इस लिए दिया है के तुम किसी बहाने रूक जाओ। कुरैश और दूसरे क़बीले मुसलमानों का कुश्त व खून करेंगे के कोई क़िस्मत वाला मुसलमान ज़िन्दा वापस आएगा।

उबैद ने उससे पूछ लिया के उसके भाई की बीवी किस तरह और किसी वक़्त रवाना हुई है। उबैद उठ खड़ा हुआ और ज़ारिया जैसी हसीन ओर नौजवान लड़की और उसकी वालेहाना मोहब्बत को नज़र अन्दाज़ कर के शहर की तरफ दौड़ पड़ा। उसे ज़ारिया की आवाज़ें सुनाई देती रहीं-"उबैद!...रूक जा उबैद!"-और उबैद ज़ारिया की नज़रों से ओझल हो गया।

❁

रसूले करीम(स०) को पूरी तफसील से बताया गया के एक औरत बड़ी तेज़ रफ्तार ऊंटनी पर अबु सुफयान के नाम पैग़ाम अपने बालों में छुपा कर ले गई है। उसे अभी रास्ते में होना चाहिए था। रसूले करीम ने उसी वक़्त हज़रत अली(र०) और ज़ुबैर(र०) को बुला कर उस औरत और उस की ऊंटनी की निशानियां बताईं और उन्हें इस औरत को रास्ते में पकड़ने को भेज दिया।

हज़रत अली(र०) और हज़रत ज़ुबैर(र०) के घोड़े अरबी नस्ल के थे। उन्होंने उसी वक़्त घोड़े तैयार किए और ऐड़ें लगा दीं। उस वक़्त सूरज ग़ुरूब हो रहा था। दोनों शहसवार मदीना से दूर निकल गए तो सूरज गुरूब हो गया।

अगले दिन का सूरज तुलूअ हुआ तो हज़रत अली(र०) और हज़रत ज़ुबैर(र०) के घोड़े मदीने में दाख़िल हुए। उनके दरमियान एक ऊंटनी थी जिस पर एक औरत सवार थी। मदीना के कई लोगों ने इस औरत को पहचान लिया। उसे रसूले करीम के पास ले गए। उस के बालों से जो पैग़ाम निकाला गया था वो हुज़ूर(स०) के हवाले किया गया। आप(स०) ने पैग़ाम पढ़ा तो चेहरा लाल हो गया। ये बड़ा ही ख़तरनाक पैग़ाम था। इस औरत ने इक़बाल जुर्म कर लिया और पैग़ाम देने वाले यहूदी का नाम भी बता दिया। रसूले अकरम(स०) ने इस औरत को सज़ाए मौत दे दी लेकिन यहूदी उसके घर से ग़ायब हो गया था- अगर ये पैग़ाम मक्का पहुंच जाता तो मुसलमानों का अंजाम बहुत बुरा होता। मक्का पर फौज कशी की क़यादत रसूल अल्लाह(स०)

फरमा रहे थे।

रसूल अल्लाह ने तैयारियों का जाएज़ा लिया और कूच का हुक्म दे दिया।

इस इस्लामी लश्कर की तादाद दस हज़ार पियादा और सवार थी। इस लश्कर में मदीना के इर्द गिर्द के वो क़बीले भी शामिल थे जो इस्लाम क़ुबूल कर चुके थे। मोअर्रिख़ेन ने लिखा है के ये लश्कर मक्का जा रहा था तो रास्ते में दो तीन क़बीले इस लश्कर में शामिल हो गए। तकरीब तमाम मुस्लिम और ग़ैर मुस्लिम मोअर्रिख़ों ने लिखा है के रसूले खुदा(स०) की क़यादत में इस लश्कर की पैशकदमी ग़ैर मामूली तौर पर तेज़ थी और ये मुसलमानों का पहला लश्कर था जिस की नफरी दस हज़ार तक पहुंची थी।

ये लश्कर मक्का के शुमाल मग़रिब में एक वादी मर्रूलजुहर में पहुंच गया जो मक्का से तक़रीबन दस मील दूर है। इस वादी का एक हिस्सा वादी-ए-फातिमा कहलाता है। रसूल अकरम(स०) इस मक़सद में कामयाब हो चुके थे के अहल-ए-मक्का को इस्लामी लश्कर की आमद की ख़बर न हो। अव ख़बर हो भी जाती तो कोई फर्क नहीं पड़ता था। अब कुरैश दूसरे क़बीलों को मदद के लिए बुलाने नहीं जा सकते थे। रसूले अकरम(स०) ने किसी न किसी बहरूप में अपने आदमी मक्का के क़रीब गर्द व नवाह में भेज दिए थे।

❁

थोड़ी देर आराम कर के इस्लामी लश्कर मक्का की तरफ चल पड़ा। जोअफा एक मुक़ाम है जहां लश्कर का हराविल दस्ता पहुंचा तो मक्का की तरफ से छोटा सा एक क़ाफला आता दिखाई दिया। इसे क़रीब आने दिया गया। वो कुरैश का एक सरकर्दा आदमी अब्बास था जो अपने पूरे ख़ानदान को साथ लिए मदीना को जा रहा था। ये वो शख़्स था जिसने हज़रत अब्बास(र०) के नाम से तारीख़े इस्लाम में शौहरत हासिल की। उन्हें रसूले अकरम(स०) के हुज़ूर ले जाया गया। आप(स०) उन्हें अच्छी तरह जानते थे।

"क्यों अब्बास(र०)!"-रसूले अकरम(स०) ने कहा-"क्या तू इस लिए मक्का से भाग निकला है के मक्का पर क़यामत टूटने वाली है?"

"खुदा की क़सम, मक्का वालों को ख़बर ही नही के मोहम्मद(स०) का लश्कर उनके सर पर आ गया है"-अब्बास(र०) ने कहा-"और मैं तेरी इताअत कुबूल करने मदीना को जा रहा था।"

"मेरी नहीं अब्बास(र०)!"-रसूले ख़ुदा(स०) ने कहा-"इताअत उस अल्लाह की कुबूल कर जो वाहदहू ला शरीक है और वही इबादत के लायक़ है। मैं उसका

भेजा हुआ रसूल हूं।"

हज़रत अब्बास(र०) ने इस्लाम कुबूल कर लिया। रसूले करीम ने उन्हें गले लगा लिया। आप(स०) को मुर्सरत इस से हुई के अहले कुरैश मक्का में बे फिक्र और बे ग़म बैठे थे।

हज़रत अब्बास(र०) ने जब ये सूरत हाल देखी तो उन्होंने रसूल अल्लाह(स०) से कहा के अहल-ए-कुरैश आखिर हमारा अपना खून है। दस हज़ार के इस लश्कर के क़दमों में कुरैश के बच्चे और औरतें भी कुचली जाएंगी। अब्बास(र०) ने रसूल अल्लाह(स०) को ये भी बताया के कुरैश में इस्लाम की कुबूलयित की एक लहर पैदा हो गई है। क्या ये मुनासिब न होगा के उन्हें सुलह का एक मौक़ा दे दिया जाए?

रसूले अकरम(स०) ने अब्बास(र०) को न सिर्फ मक्का जाने की इजाज़त दी बल्कि उन्हें अपना खच्चर भी दिया जो आप(स०) घोड़े के अलावा अपने साथ रखते थे।

❁

अबु सुफयान मदीना से जो तआस्सूर ले कर गया थे वो उसके लिए बड़ा ही डरावना और खतरनाक था। वो तजुर्बे कार आदमी था और वो मुसलमानों की शुजाअत और अज़्म की पुख्तगी से भी वाकिफ था। उसे हर लम्हा धड़का लगा रहता था के मुसलमान मक्का पर हमला करेंगे। उसकी बीवी हुन्द, उसके सालार अकरमा और सफवान इसका हौसला बढ़ाते रहते थे लेकिन उसे अपने ज़ाती वकार की और अपने क़बीले की तबाही नज़र आ रही थी। वो हर वक्त बेचैन रहने लगा था।

एक रोज़ वो इस क़दर बेचैन हुआ के घोड़े पर सवार हो कर मक्का से बाहर चला गया। उसकी कोई हिस उसे बता रही थी के कुछ होने वाला है। उसके दिल पर घबराहट तारी होती चली गई उसने अपने आप से कहा के होगा यही के मुसलमान मक्का पर हमला करने आ जाएंगे। ये सोच कर वो ये देखने के लिए मदीने के रास्ते पर हो लिया के मदीना की फौज आ ही तो नही रही? उसे ऐसे महसूस हो रहा था जैसे हवा की बू भी बदली बदली सी हो।

वो इन सोचों में गुम मक्का से चन्द मील दूर निकल गया। उसे अब्बास(र०) एक खच्चर पर सवार अपनी तरफ आते दिखाई दिए। वो रूक गया।

"अब्बास(र०)!"-उसने पूछा-"क्या तुम अपने पूरे खानदान के साथ नहीं गए थे? वापस क्यों आ गए हो?"

"मेरे खानदान की मत पूछ अबु सुफयान!"-अब्बास(र०) ने कहा-"मुसलमानों के दस हज़ार पियादों, घुड़सवारों और शतुर सवारों का लश्कर

मक्का के इतना क़रीब पहुंच चुका है जहां से छोड़े हुए तीर मक्का के दरवाज़ों में लग सकते हैं। क्या तू मक्का को इस लश्कर से बचा सकता है? किसी को मदद के लिए बुला सकता है तू सुलह का मुहाएदा तेरे सलारों ने तोड़ा है। मोहमद(स०) जिसे मैं अल्लाह का रसूल मान चुका हूं सब से पहले तुझे क़त्ल करेगा। अगर तू मेरे साथ रसूल अल्लाह(स०) के पास चला चले तो मैं तेरी जान बचा सकता हूं।"

"खुदा की क़सम, मैं जानता था मुझ पर ये वक़्त भी आएगा"-अबु सुफयान ने कहा-"चल मैं तेरे साथ चलता हूं।"

❁

शाम के बाद अब्बास(र०) अबु सुफयान को साथ लिए मुसलमानों के पड़ाव में दाख़िल हुए हज़रत उमर(र०) कैम्प के पहरे दारों को देखते फिर रहे थे। उन्होंने अबु सुफयान को देखा तो आग बगूला हो गए। कहने लगे के अल्लाह के दीन का ये दुश्मन हमारे पड़ाव में रसूल अल्लाह(स०) की इजाज़त के बग़ैर आया है। उमर(र०) रसूल अल्लाह(स०) के ख़ेमे की तरफ दौड़ पड़े। वो अबु सुफयन के क़त्ल की इजाज़त लेने गए थे लेकिन अब्बास(र०) भी पहुंच गए। रसूले अकरम(स०) ने उन्हे सुबह आने को कहा। अब्बास(र०) ने अबु सुफयान को रात अपने पास रखा।

"अबु सुफयान!"-सुबह रसूले करीम(स०) ने अबु सुफयान से पूछा-"क्या तू जानता है के अल्लाह वाहदहू ला शरीक है और वही माबूद है और वही हम सब का मददगार है?"

"मैं ने ये ज़रूर मान लिया है के जिन बुतों की इबादत मैं करता हूं वो बुतो के सिवा कुछ भी नहीं"-अबु सुफयान ने कहा-"वो मेरी कोई मदद नहीं कर सके।"

"फिर ये क्यों नहीं मान लेता के मैं उस अल्लाह का रसूल(स०) हूं जो माबूद है?"-रसूले करीम(स०) ने पूछा।

"मैं शायद ये न मानूं के तुम अल्लाह के रसूल हो"-अबु सुफयान हारी हुई सी आवाज़ में बोला।

"अबु सुफयान!"-अब्बास ने क़हर भरी आवाज़ से कहा-"क्या तू मेरी तलवार से अपना सर तन से जुदा कराना चाहता है?"-अब्बास(र०) ने रसूले करीम(स०) से कहा-"या रसूल अल्लाह(स०)! अबु सुफयान एक क़बीले का सरदार है। बावक़ार और खुद्दार भी है। ये मुलतजी हो के आया है।"

अबु सुफयान पर कुछ ऐसा असर हुआ के उसने बे इख़्तियार कहा-"मोहम्मद(स०) अल्लाह के रसूल हैं.....मैं ने तस्लीम कर लिया। मैं ने मान लिया।"

"जाओ"-रसूले करीम(स०) ने कहा-"मक्का में ऐलान कर दो के मक्का के वो लोग मुसलमानों की तलवारों से महफूज़ रहेंगे जो अबु सुफयान के घर में दाख़िल हो जाएंगे और वो लोग महफूज़ रहेंगे जो मस्जिद में दाख़िल हो जाएंगे और वो लोग महफूज़ रहेंगे जो अपने दरवाज़े बन्द कर के अपने घरों में रहेंगे।"

अबु सुफयान उसी वक्त मक्का को रवाना हो गया और रसूले अकरम(स०) ने सहाबा इकराम(र०) के साथ इस मसले पर तबादला-ए-ख्यालात शुरू कर दिया के मक्का में अकरमा और सफवान जैसे नामी और दिलैर सालार मौजूद है। वो मुकाबला किये बग़ैर मक्का पर कब्ज़ा नही होने देंगे।

ऊंट बहुत तेज़ दौड़ा आ रहा था। जब वो मक्का के क़रीब पहुंचा तो उसके सवार ने चिल्लाना शुरू कर दिया–"उज़्ज़ा और हुब्ल की क़सम, मदीना वालों का लश्कर मर्राउल ज़हर में पड़ाव किये हुए है और मैं ने अपने सरदार अबु सुफ़यान को वहां जाते देखा है....अहल–ए–कुरैश! होशियार हो जाओ। मोहम्मद(स०) का लश्कर आ रहा है"–उसने ऊंट को रोका ओर उसे बिठा कर उतरने की बजाए इस की पीठ से कूद कर उतरा।

उसकी पुकार जिस ने सुनी वो दौड़ा आया। वो घबराहट के आलम में यही कहे जा रहा था के मदीना का लश्कर मर्राउल ज़हर तक आन पहुंचा है और अबु सुफ़यान को उस लश्कर के पड़ाव की तरफ जाते देखा है। मक्का के लोग उसके इर्द गिर्द इकठ्ठे होते चले गए।

"अबु हुस्ना!"–एक मुअम्मिर आदमी ने उसे कहा–"तेरा दिमाग़ सही नहीं या तू झूट बोल रहा है।"

"मेरी बात को झूट समझोगे तो अपने अंजाम को बहुत जल्द पहुंच जाओगे"–शतुर सवार अबु हुस्ना ने कहा–"किसी से पूछो हमारा सरदार उधर क्यों गया है?" उसने फिर चिल्लाना शुरू कर दिया–"ऐ क़बीला–ए–कुरैश! मुसलमान अच्छी नीयत से नहीं आए।"

अबु हुस्ना का वावेला मक्का की गलियों से हाता हुआ अबु सुफ़यान की बीवी हुन्द के कानों तक पहुंचा। वो आग बगुला हो के बाहर आई और उस हुजूम को चीरने लगी जिसने अबु हुस्ना को घेर रखा था।

"अबु हुस्ना!"–उसने अबु हुस्ना का गिरेबान पकड़ कर कहा–"मेरी तलवार मोहम्मद(स०) के खून की पियासी है। तू मेरी तलवार से अपनी गर्दन कटवाने क्यों आ गया है? क्या तू नहीं जानता के जिस पर तू झूटा इल्ज़ाम थोप रहा है वो मेरा शौहर और क़बीले का सरदार है?"

"अपनी तलवार घर से ले आ ख़ातून!"-अबु हुस्ना ने कहा-"लेकिन तेरा शौहर आजाए तो उससे पूछना वो कहां से आया है।"

"और तू कहता है मोहम्मद(स०) लश्कर ले कर आया है?"-हुन्द ने पूछा।

"खुदा की क़सम!"-अबु हुस्ना ने कहा-"मैं वो कहता हूं जो मैं ने देखा है।"

"अगर तू सच कहता है तो मुसलमानों की मौत इधर ले आई है"-हुन्द ने कहा

अबु सुफयान वापस आ रहा था।

अहल-ए-मक्का एक मैदान मे जमा हो चुके थे। रसूले करीम(स०) की पेश क़दमी अब राज़ नही रह गई थी लेकिन अब कोई फ़र्क नहीं पड़ता था। अहल-ए-कुरैश अब किसी को मदद के लिए नही बुला सकते थे।

अबु सुफयान आ रहा था। लोगों में खामोशी तारी हो गई। अबु सुफयान की बीवी हुन्द लोगों को दायें बायें धकेलती आगे चली गई उसके चेहरे पर क़हर और ग़ज़ब था और उसकी आंखों से जैसे शोले निकल रहे थे। अबु सुफयान ने लोगों के सामने आकर घोड़ा रोका। उसने अपनी बीवी की तरफ तवज्जे न दी।

"अहल-ए-कुरैश!"-अबु सुफयान ने बुलंद आवाज़ से कहा-"पहले मेरी बात ठण्डे दिल से सुन लेना, फिर कोई और बात कहना। मैं तुम्हारा सरदार हूं। मुझे तुम्हारा वक़ार अज़ीज़ है....मोहम्मद(स०) इतना ज़्यादा लाव लश्कर ले कर आया है जिसके मुक़ाबले में तुम क़त्ल होने के सिवा कुछ नही कर सकोगे। अपनी औरतों को बचाओ। अपने बच्चों को बचाओ। कुबूल कर लो उस हकीकत को जो तुम्हारे सर आ गई है। तुम्हारे लिए भाग जाने का भी कोई रास्ता नहीं रहा।"

"हमें ये बता हमारे सरदार हम क्या करें?"-लोगों में से किसी की आवाज़ आई।

"मोहम्मद(स०) की अताअत कुबूल कर लेने के सिवा और कोई रास्ता नहीं"-अबु सुफयान ने कहा।

"खुदा की क़सम, मुसलमान हमें फिर भी नहीं बख्शेंगे"-एक और आवाज़ उठी-"वो अपने मक़तूलों का बदला लेंगे। वो सब से पहले तुम्हें क़त्ल कर देंगे। ओहद में तुम्हारी बीवी ने उनकी लाशों को चीरा फाड़ा था।"

हुन्द अलग खड़ी फुंकार रही थी।

"मैं तुम सब की सलामती की ज़मानत ले आया हूं"-अबु सुफयान ने कहा-"मैं मोहम्मद(स०) से मिल कर आ रहा हूं। उसने कहा है के तुम में से जो मेरे घर में आजाएंगे वो मुसलमानों के जबरो तशद्दुद से महफूज़ रहेंगे।"

"क्या मक्का के सब लोग तुम्हारे घर में समा सकते हैं?"-किसी ने पूछा।

"नही"-अबु सुफयान ने कहा-"मोहम्मद(स०) ने कहा है के जो लोग अपने घरों से बाहर नही निकलेंगे और उनके दरवाज़े बन्द रखेंगे, उन पर भी मुसलमान हाथ नही उठाऐंगे...और जो लोग खाना-ए-खुदा वंद के अन्दर चले जाऐंगे, उनको भी मुसलमान अपना दोस्त समझेंगे। वो दुशमन सिर्फ उसे जानेंगे जो हथियार ले कर बाहर आएगा"-अबु सुफयान घोड़े से उतर आया और बोला-"तुम्हारी सलामती इसी में है, तुम्हारी इज़्ज़त इसी में है के तुम दोस्तों और भाईयों की तरह उनका इस्तक़बाल करो।

"अबु सुफयान!"-कुरैश के मशहूर सालार अकरमा ने लल्कार कर कहा-"हम अपने क़बीले के क़ातिलों का इस्तक़बाल तलवारों और बरछियों से करेंगे।"

"हमारे तीर उनका इस्तक़बाल मक्का से दूर करेंगे"-कुरैश के दूसरे दिलैर और तर्जुबा कार सालार सफवान ने कहा-"हमें अपने देवताओं की क़सम, हम दरवाज़े बन्द कर के अपने घरों में बंद नही रहेंगे।"

"हालात को देखो अकरमा!"-अबु सुफयान ने कहा-"होश की बात करो सफवान! वो हम में से हैं। आज ख़ालिद(र०) मोहम्मद(स०) के साथ जा मिला है तू मत भूल के उसकी बहन फाख्ता तुम्हारी बीवी है। क्या तू अपनी बीवी के भाई को क़त्ल करेगा?......क्या तुझे याद नहीं रहा के मेरी बेटी उम्मे हबीबा(र०) मोहम्मद(स०) की बीवी है? क्या तू यक़ीन नहीं करेगा के मैं अपने क़बीले की इज़्ज़त और नामूस की ख़ातिर मदीना गया तो मेरी अपनी बेटी ने मेरी बात सुनने से इन्कार कर दिया था? मैं मोहम्मद(स०) के घर में चार पाई पर बैठने लगा तो उम्मे हबीबा(र०) ने मेरे नीचे से चार पाई पर बिछी हुई चादर खींच ली थी?....बाप अपनी बेटी का दुशमन नहीं हो सकता सफवान!"

मक्का के लोगों में अकरमा और सफवान और दो तीन और आदमियों के सिवा और किसी की आवाज़ नहीं सुनाई दे रही थी। मोअररिख़ों ने लिखा है के क़बीला कुरैश की खामोशी ज़ाहिर करती थी के उन लोगों ने अबु सुफयान का मशवरा कुबूल कर लिया है। अबु सुफयान के चेहरे पर इतमीनान का तआस्सूर आ गया मगर उसकी बीवी हुन्द जो अलग खड़ी फुंकार मार रही थी, तेज़ी से अबु सफयान की तरफ बढ़ी और उसकी मूंछें जो ख़ासी बड़ी थी।, अपने दोनों हाथों में पकड़ ली।

"मैं सब से पहले तुझे क़त्ल करूंगी"-हुन्द ने अबु सुफयान की मूंछे ज़ोर ज़ोर से खींचते हुए कहा-"बुज़दिल बूढ़े! तू ने क़बीले की इज़्ज़त खाक में मिला दी है"-उसने अबु सुफयान की मूंछे छोड़ कर उसके मंह पर बड़ी ज़ोर से थप्पड़ मारा और लोगों से मुख़ातिब हो कर बोली-"तुम लोग इस बूढ़े को क़त्ल क्यों नहीं कर देते

जो तुम्हें मुसलमानों के हाथों ज़लील व ख़्वार कराने की बातें कर रहा है?"

"हम लड़ेंगे हुन्द!"-सफवान ने कहा-"इसे जाने दे। इस पर मोहम्मद(स०) का जादू चल गया है।"

अबु सुफयान ख़ामोश रहा।

शाम तक अहल-ए-कुरैश दो हिस्सों में बट चुके थे ज़्यादा तर लोग लड़ने के हक़ में नही थे। बाक़ी सब अकरमा, सफवान और हुन्द का साथ दे रहे थे।

❁

शाम के बाद सफवान अपने घर गया। उसकी बीवी जिस का नाम फाख्ता था, ख़ालिद बिन वलीद(र०) की बहन थी। वो भी अबु सुफयान की बातें सुन चुकी थी।

"क्या मैंने ठीक सुना है के तुम अपने क़बीले के सरदार की नाफरमानी कर रहे हो?"-फाख्ता ने सफवान से पूछा।

"अगर फरमांबरदारी करता हूं तो पूरे क़बीले का वक़ार तबाह होता है"-सफवान ने कहा-"क़बीले का सरदार बुज़दिल हो जाए तो क़बीले वालों को बुज़दिल नही होना चाहिए। सरदार अपने क़बीले के दुश्मन को दोस्त बना ले तो वो क़बीले का दोस्त नही हो सकता।"

"क्या तुम मुसलमानों का मुक़ाबला करोगे?"-फाख्ता ने पूछा।

"नो क्या तुम ये पसंद करोगी के तुम्हारा शौहर अपने घर के दरवाज़े बन्द कर के अपनी बीवी के पास बैठ जाए और दुश्मन उस के दरवाज़े के सामने दंदनाता फिरे? क्या मेरे बाज़ू टूट गए हैं? क्या मेरी तलवार टूट गई है? क्या तुम इस लाश को पसंद नही करोगी जो तुम्हारे घर में लाई जाएगी और सारा क़बीला कहेगा के ये है तुम्हारे ख़विंद की लाश जो बड़ी बहादुरी से लड़ता हुआ मारा गया है? या तुम उस शौहर को पसंद करोगी जो तुम्हारे पास बैठा रहेगा और लोग तुम्हें कहेंगे के ये है एक बुज़दिल और बे वक़ार आदमी की बीवी जिस ने अपनी बस्ती और इबादत गाह अपने दुश्मन के हवाले कर दी है.....तुम मुझे किस हाल में देखना पसंद करोगी?"

"मैंने तुम पर हमेशा फख्र किया है सफवान!"-फाख्ता ने कहा-"औरतें मुझे कहती हैं के तुम्हारा ख़ाविंद क़बीले की आंख का तारा है, लेकिन अब हालात कुछ और हैं। तुम्हारा साथ देने वाले बहुत थोड़े हैं। सुना है मदीना वालों की तादाद बहुत ज़्यादा है और अब मेरा भाई ख़ालिद(र०) भी उनके साथ है तुम जानते हो वो लड़ने मरने वाला आदमी है।"

"क्या तुम मुझे अपने भाई से डरा रही हो फाख्ता?"

"नही-फाख्ता ने कहा-"मुझे ख़ालिद(र०) मिल जाता तो मैं उसे भी यही कहती जो मैं तुम्हें कह रही हूं....वो मेरा भाई है। वो तुम्हारे हाथ से मारा जा सकता है। तुम उसके हाथ से मारे जा सकते हो। तुम एक दूसरे के मुक़ाबले में न आओ। मैं उसकी बहन और तुम्हारी बीवी हूं। लाश तुम्हारी हुई या ख़ालिद(र०) की, मेरा ग़म एक जैसा होगा।"

"ये कोई अजीब बात नहीं फाख़्ता!"-सफवान ने कहा-"दुश्मनी ऐसी पैदा हो गई है के बाप बेटे का और भाई भाई का दुश्मन हो गया है। अगर मैं तुम्हारे रिश्ते का ख्याल रखूंगा तो....."

"तुम मेरे रिश्ते का ख्याल न रखो"-फाख्ता ने उसकी बात काटते हुए कहा-"क़बीले का सरदार तुम्हें कह रहा है के लड़ाई नहीं होगी, मोहम्मद(स०) की अताअत कुबूल कर लेंगे, फिर तुम लड़ाई का इरादा तर्क क्यों नहीं कर देते? तुम्हारे साथ बहुत थोड़े आदमी होंगे।"

"मैं अताअत कुबूल करने वालों में से नहीं"-सफ़वान ने कहा।

"फिर मेरी एक बात मान लो"-फाख्ता ने कहा-"ख़ालिद(र०) के आमने सामने न आना। उसे मेरी मां ने जन्म दिया है। हम दोनों ने एक मां का दूध पिया है। वो जहां कहीं भी है बहन यही सुनना चाहती है के उसका भाई ज़िन्दा है....मैं बेवा भी नहीं होना चाहती सफवान!"

"फिर अपने भाई से जा के कहो के मक्का के क़रीब न आए"-सफवान ने कहा-"वो मेरे सामने आएगा तो हमारे रिश्ते ख़त्म हो जाएंगे।"

फाख्ता के आंसू सफवान के इरादों को ज़रा सा भी मुताज़लज़ल न कर सके।

❁

रसूल अकरम(स०) ने एक और इन्तेज़ाम किया। उन्हेंने चन्द एक आदमी मुख्तलिफ बहरूपों में मक्का के इर्द गिर्द छोड़ रखे थे। इनका काम ये था के मक्का से कोई आदमी बाहर निकल कर कहीं जाता नज़र आए तो उसे पकड़ लें जासूसी का ये एहतमाम इस लिए किया गया था के कुरैश अपने दोस्त क़बीलों को मदद के लिए न बुला सकें।

दूसरे ही दिन दो शतुर सवारों को पकड़ा गया जो आम से मुसाफिर मालूम होते थे। उन्हें मुसलमानों के पड़ाव में ले जाया गया। एक दो धमकियों से डर कर उन्होंने अपनी असलीयत ज़ाहिर कर दी। इन में से एक यहूदी था और दूसरा कुरैश क़बीले का। वो मक्का से चन्द मील दूर रहने वाले क़बीले बनू बकर के हां ये इत्तेला ले के जा रहे थे के मुसलमान मर्राउल ज़हर में पड़ाव किए हुए हैं। बनू बकर को पैग़ाम भेजा जा

रहा था के वो मुसलमानों पर शबखून मारें और दूसरे क़बीलों को भी अपने सथ मिला लें। पैग़ाम में ये भी था के मुसलमान मक्का को मुहासरे में लें तो बनू बकर और दूसरे क़बीले अक़ब से इन पर हमला कर दें।

उनसे पूछा गया के मक्का में लड़ाई की तैयारियां किस पैमाने पर हो रही हैं। उन्होंने बताया के अबु सुफयान लड़ाई नहीं चाहता और मक्का वालों की अकसरीयत उसके साथ है। सिर्फ अकरमा और सफवान लड़ेंगे लेकिन उनके साथ वहुत थोड़े आदमी हैं। इन दोनों आदमियों को अबु सुफयान ने नहीं, अकरमा और सफवान ने भेजा था।

रसूले करीम(स०) ने अपने सालारों वग़ैरा से कहा के मक्का में ये फर्ज़ कर के दाख़िल हुआ जाएगा के कुरैश शहर के दिफाअ में लड़ेंगे। आप(स०) ने अपनी फौज को चार हिस्सों में तक़सीम किया। उस ज़माने में मक्का की तरफ चार रास्ते जाते थे जो मक्का के इर्द गिर्द खड़ी पहाड़ियों में से गुज़रते थे। फौज के हर हिस्से को एक एक रास्ता दे दिया गया। इन्हें अपने अपने रास्ते से मक्का शहर की तरफ पेश क़दमी करनी थी।

फौज के इन हिस्सों में एक की नफरी सब से ज़्यादा रखी गई। इस की कमान अबु उबैदा(र०) को दी गई। हज़रत रसूले करीम को इस दस्ते के साथ रहना था। एक हिस्से की कमान अली(र०) के पास थी। एक के कमांडर ज़ुबैर(र०) थे और चौथे हिस्से की कमान ख़ालिद(र०) के पास थी।

मोअररिख़ों ने लिखा है के इस तक़सीम में ग़ैर मामूली दानिश कारफर्मा थी चार सिम्तों से पेश क़दमी का मक़सद ये था के मक्का के दिफाई दस्तों को चार हिस्सों में बिखेर दिया जाए। अगर वो मुसलमानों की पेश क़दमी को किसी एक या दो रास्तों पर रोक भी लें तो दूसरे दस्ते आगे बढ़ कर शहर में दाख़िल हो सकें। इस के अलावा फौज की इस तक़सीम का मक़सद ये भी था के कुरैश अगर दिफाअ में न लड़ें तो वो किसी रास्ते से भाग भी न सकें। रसूले अकरम(स०) ने इस तक़सीम के अलावा जो एहकाम दिये, वो ये थे के कुरैश दिफाअ में न लड़ें तो उन पर हाथ न उठाया जाए। अमन का जवाब पुर अमन तरीक़े से दिया जाए। अगर कहीं झड़प हो जाए तो ज़ख्मियों को क़त्ल नहीं किया जाए बल्कि उनकी मरहम पट्टी और देख भाल की जाए। लड़ने वालों में जो पकड़ा जाए। उस पर न तशद्दुद किया जाए न उसे क़त्ल किया जाए और उसे जंगी क़ैदी भी न समझा जाए और इन में से कोई भाग निकले तो उसे भाग जाने दिया जाए।

इस्लामी लश्कर के चारों हिस्सों को पेश क़दमी का हुक्म दे दिया गया।

20 रमज़ानुल मुबारक 8 हिज्री (11 जनवरी 630 ई०) का दिन था। इस्लामी लश्कर के तीन हिस्से अपने रास्तों से गुज़र कर मक्का में दाख़िल हो गए। किसी तरफ से उन पर एक तीर भी न आया। शहर का कोई दिफाअ न था। कुरैश की कोई तलवार नियाम से न निकली। लोग घरों में बन्द रहे। किसी किसी मकान की छत पर कोई औरत या बच्चे खड़े नज़र आते थे। मुसलमान चौकन्ने थे। शहर का सुकूत मशकूक और डरावना था। ऐसे लगता था जैसे इस सुकूत से तूफान उठने वाला हो।

शहर से कोई तूफान न उठा। तुफान उठाने वाले दो आदमी थे। एक अकरमा दूसरा सफवान दोनों शहर में नहीं थे। कई और आदमी शहर में नहीं थे। वो क़रीब ही कहीं छुपे हुए थे।

वो रात को बाहर निकल गए थे। उनके साथ तीरअंदाज़ भी थे। ये एक हवीश था जो उस पहाड़ी रास्ते के क़रीब जा पहुंचा था जो ख़ालिद(र०) के दस्ते की पेश क़दमी का रास्ता था। अकरमा और सफवान को मालूम नहीं था के इस इस्लामी दस्ते का क़ायद ख़ालिद(र०) है। अकरमा और सफवान का एक आदमी कहीं बुलंदी पर था। उसने ख़ालिद(र०) को पहचान लिया और ऊपर से दौड़ता नीचे गया।

"ऐ सफवान!"-इस आदमी ने सफवान से कहा-"क्या तू हमें इजाज़त देगा के तेरी बीवी के भाई को क़त्ल कर दें?....मेरी आंखें धोका नहीं खा सकतीं। मैंने ख़ालिद(र०) को देखा है।"

"अपने क़बीले की इज़्ज़त और ग़ैरत से बढ़ कर मुझे कोई और अज़ीज़ नहीं"-सफवान ने कहा-"अगर ख़ालिद(र०) मेरी बहन का खाविंद होता तो आज मैं अपनी बहन को बेवा कर देता।"

"मत देखो कौन किसका भाई, किस का बाप और किस का खाविंद है"-अकरमा ने कहा-"ख़ालिद(र०) मेरा भी कुछ लगता है लेकिन आज वो मेरा दुश्मन है।"

ख़ालिद(र०) का दस्ता और आगे आया तो उस पर तीरों की पहली बौछाड़ आई। ख़ालिद(र०) ने अपने दस्ते को रोक लिया।

"ऐ अहल-ए-कुरैश!"-ख़ालिद(र०) ने बड़ी बुलंद आवाज़ से कहा-"हमें रास्ता दे दोगे तो महफूज़ रहोगे। हमारे रसूल(स०) का हुक्म है के उस पर हाथ न उठाना जो तुम पर हाथ नहीं उठाता....क्या तुम्हें अपनी जानें अज़ीज़ नहीं? मै तुम्हें सिर्फ एक मौक़ा दूंगा।"

तीरों की एक और बौछाड़ आई।

"हम तेरे रसूल(स०) के हुक्म के पाबंद नही ख़ालिद(र०)!"-अकरमा ने लल्कार कर कहा-"हिम्मत कर और आगे आ। हम है तुम्हारे पुराने दोस्त..... सफवान और अकरमा.....तू मक्का में ज़िन्दा दाख़िल नही हो सकेगा।"

ख़ालिद(र०) ने तीरों की दूसरी बोछाड़ से मालूम कर लिया था के दुश्मन कहां है। ख़ालिद(र०) ने अपने दस्ते को रोक कर पीछे हटा लिया और अपने कुछ आदमियों को पहाड़ियों के ऊपर से आगे बढ़ने और तीरअंदाज़ों पर हमला करने के लिए भेज दिया। अकरमा और सफवान ख़ालिद(र०) के इन आदमियों को न देख सके।

थोड़ी सी देर में ये आदमी दुश्मन के सर पर जा पहुंचे। वादी से ख़ालिद(र०) ने हल्ला बोल दिया जो इस क़दर तेज़ और शदीद था के कुरैश के पांव उखड़ गए। ख़ालिद(र०) ने ऊपर से भी हमला कराया था और नीचे से भी।

"कहां हो अकरमा!"-ख़ालिद(र०) लल्कार रहे थे-"कहां हो सफवान!"

वो दोनों कही भी नहीं थे। वो ख़ालिद(र०) के हल्ले की ताब न ला सके और ख़ालिद(र०) को नज़र आए बग़ैर कही भाग गए। उनका हबीश भी लापता हो गया। पीछे कुरैश की बारह लाशें रह गईं। मुख़्तसिर सी इस झड़प में दो मुसलमान-हबीश बिन अशहर(र०) और कोज़ बिन जाबिर(र०)फहरी- शहीद हुए।

❁

इस्लामी फौज के तीन हिस्से मक्का में दाख़िल हो चुके थे। ख़ालिद(र०) का दस्ता अभी नही पहुंचा था। सब हैरान थे के अहल-ए-मक्का ने मज़ाहमत नही की फिर ख़ालिद(र०) के न आने की वजह क्या हो सकती हैं। एक क़ासिद को दौड़ाया गया। वो ख़बर लाया के ख़ालिद(र०) दो मुसलमानों की लाशें ले कर आ रहा है और इस के दस्ते ने कुरैश के बारह आदमी मार डाले हैं। रसूले करीम(स०) ने सुना तो आप(स०) बहुत बरहम हुए। आप(स०) अच्छी तरह जानते थे के ख़ालिद(र०) जंग व जदाल का दिलदादा है, उसने बग़ैर इश्तेआल के लड़ाई मोल ले ली होगी।

ख़ालिद(र०) के मक्का आने की इत्तेला मिली तो रसूल अल्लाह(स०) ने उन्हें बुला कर पूछा के इस हुक्म के बावुजूद के लड़ाई से गुरेज़ किया जाए उन्होंने कुरैश के बारह आदमियों को क्यों मार डाला?

ख़ालिद(र०) ने हुज़ूरे अकरम को बताया के अकरमा और सफवान के साथ कुरैश के मुतआदिद आदमी थे। जिन्होंने इन पर तीर बरसाए। ख़ालिद(र०) ने ये भी बताया के उन्होंने अकरमा और सफवान को एक मौक़ा दिया था लेकिन उन्होंने तीरों की एक और बौछाड़ फेंक दी।

रसूले खुदा(स०) ने अबु सुफयान से पूछा के अकरमा और सफवान कहां है।।

अबु सुफयान ने बताया के वो मक्का के दिफाअ में लड़ने के लिए चले गए थे। रसूले खुदा(स०) को यक़ीन हो गया के लड़ाई ख़ालिद ने शुरू नहीं की थी।

मक्का पर मुसलमानों का कब्ज़ा हो चुका था।

रसूले अकरम(स०) मक्का में दाख़िल हुए तो आप(स०) के हमराह सामा बिन ज़ैद(र०), बिलाल(र०) और उसमान बिन तलहा(र०) थे।

रसूले करीम(स०) को मक्का से हिजरत कर के मदीना को गए सात साल गुज़र चुके थे। आप(स०) ने मक्का के दरो दीवार को देखा। वहां के लोगों को देखा। दरवाज़ों में और छतों पर खड़ी औरतों को देखा। बहुत से चेहरे शनासा थे। आप(स०) गुज़रते चले गए और काबा में दाख़िल हुए। सात मरतबा बेतुल्लाह का तवाफ किया और अल्लाह का शुक्र अदा किया। अब मक्का में किसी को इतनी हिम्मत नहीं पड़ती थी के आप(स०) को जादूगर कहे या आप पर फब्ती कसे।

अहले कुरैश चेहरों पर ख़ौफ व हिरास के तआस्सुरात लिए अपने अंजाम के मुंतज़िर खड़े थे। अरबों के हां अपनी बेइज़्ज़ती और क़त्ल के इन्तेक़ाम का रिवाज बड़ा भयानक था। रसूल अल्लाह(स०) ने हुक्म दे दिया था के जो अमन क़ायम रखेंगे उनके साथ पुरअमन सुलूक किया जाएगा, इसके बावुजूद कुरैश डरे सहमे हुए थे।

"अहल-ए-कुरैश!"-हुज़ूरे अकरम ने लोगों के सामने रूक कर पूछा-"खुद बताओ तुम्हारे साथ क्या सुलूक हो।"

लोगों की आवाज़ें बुलंद हुईं। वो ख़ेर और बख्शीश के तलबगार थे।

"अपने घरों को जाओ"-हुज़ूर अकरम(स०) ने कहा-"हम ने तुम्हें बख्श दिया।"

रसूल अल्ला(स०) की हयात-ए-मुक़द्दसा की अज़ीम घड़ी तो वो थी जब आप(स०) ने काबा में रखे हुए बुतों की तरफ तवज्जेह दी। बुतों की तादाद तीन सौ साठ थी। इन में एक बुत हज़रत इब्राहीम(अ०) का भी था। इस बुत के हाथों में तीर थे। इन तीरों से बुत खाने के पेशवा फाल निकाला करते थे।

हुज़ूरे अकरम(स०) के हाथ में एक मोटी और मज़बूत लाठी थी। आप(र०) ने इस लाठी से बुत तोड़ने शुरू कर दिये- आप(र०) अपने जद्दे अमजद हज़रत इब्राहीम(अ०) की सुन्नत को ज़िन्दा कर रहे थे- आप(स०) बुत तोड़ते जाते और बुलंद आवाज़ से कहते जाते-"हक़ आया, बातिल चला गया....बेशक बातिल को चले जाना था"-मोअररिख़ लिखते हैं के ऐसे लगता था जैसे ये सदायें हुज़ूरे अकरम की लाठी की हर ज़र्ब से काबा की दीवारों से उठ रही हों। काबा से बुतों के टुकड़े उठा कर बाहर फैंक दिये गए और काबा आलमे इस्लाम की इबादत गाह बन गया।

इस के बाद आप(स०) ने मक्का के इन्तेज़ामी उमूर की तरफ तवज्जेह दी। कुरैश और दीगर क़बायल के लोग इस्लाम क़ुबूल करने के लिए आते रहे।

बुत सिर्फ काबा में ही नहीं थे। मक्का के गर्द व नवाह की बस्तियों में मंदिर थे, वहां भी बुत रखे थे। सब से अहम बुत उज़्ज़ा का था जो चन्द मील दूर नख्ला के मंदिर में रखा गया था। रसूले अकरम(स०) ने उज़्ज़ा का बुत तोड़ने का काम ख़ालिद(र०) के सुपुर्द किया। ख़ालिद(र०) ने अपने साथ तीस सवार लिये और इस मुहिम पर रवाना हो गए। दूसरे मंदिरों के बुत तोड़ने के लिए मुख़्तलिफ हवीश रवाना किए गए थे।

उज़्ज़ा का बुत अकेला नहीं था। चूंके ये देवी थी इस लिए इसके साथ छोटी देवियों के बुत भी थे। ख़ालिद(र०) वहां पहुंचे तो मंदिर का पुरोहित उनके सामने आ गया। उसने इल्तेजा की उनके बुत न तोड़े जायें।

"मुझे उज़्ज़ा का बुत दिखाओ"-ख़ालिद(र०) ने नियाम से तलवार निकाल कर पुरोहित से पूछा।

पुरोहित मौत के ख़ौफ से मंदिर के एक बग़ली दरवाज़े में दाख़िल हो गया। ख़ालिद(र०) उसके पीछे गए। एक कमरे से गुज़र कर अगले कमरे में गए तो वहां एक देवी का बड़ा ही खूबसूरत बुत चबूतरे पर रखा था। पुरोहित ने बुत की तरफ इशारा किया और बुत के आगे फर्श पर लेट गया। मंदिर की दासियों भी आ गईं। ख़ालिद(र०) ने तलवार से इस हसीन देवी का बुत तोड़ डाला और अपने सवारों से कहा के बुत के टुकड़े बाहर बिखेर दें।

पुरोहित धहाड़ें मार मार कर रो रहा था और दासियां बीन कर रही थी।

ख़ालिद(र०) ने देवियों के बुत भी तोड़ डाले और गरज कर पुरोहित से कहा-क्या अब भी तुम इसे देवी मानते हो जो अपने आप को एक इन्सान से नहीं बचा सकी?"

पुरोहित धाड़ें मारता रहा। ख़ालिद(र०) फातेहाना अंदाज़ से अपने घोड़े पर सवार हुए और अपने सवारों को वापसी का हुक्म दिया। जब ख़ालिद(र०) अपने तीस सवारों के साथ मंदिर से दूर चले गए तो पुरोहित ने जो धहाड़ें मार रहा था, बड़ी ज़ोर से क़हक़हा लगाया। पुजारनें जो बीन कर रही थीं, वो भी हंसने लगीं।

"उज़्ज़ा की तौहीन कोई नहीं कर सकता"-पुरोहित ने कहा-"ख़ालिद(र०) जो खुद उज़्ज़ा का पुजारी हुआ करता था, बहुत खुश हो के गया है के उसने उज़्ज़ा का बुत तोड़ डाला है....उज़्ज़ा ज़िन्दा है ज़िन्दा रहेगी।

❁

"या रसूल अल्लाह(स०)!"-ख़ालिद(र०) ने हुज़ूरे अकरम(स०) को इत्तेला

दी-"मै उज़ा का बुत तोड़ आया हूं।"

"कहां था ये बुत?"-हुज़ूरे अकरम(स०) ने पूछा।

ख़ालिद(र०) ने वो मंदिर और इसका वो कमरा बताया जहां उन्होंने बुत देखा और तोड़ा था।

"तुम ने उज़ा का बुत नही तोड़ा ख़ालिद(र०)!"-रसूले करीम(स०) ने कहा-"वापस जाओ और असली बुत तोड़ कर आओ।"

मोअररिख़ लिखते है के उज़ा के दो बुत थे। एक असली जिसकी पूजा होती थी, दूसरा नक़ली था। ये ग़ालिबन मुसलमानों को धोका देने के लिए बनाया था।

ख़ालिद(र०) का खून खोलने लगा। उन्होंने अपने सवारों को साथ लिया और नख्ला को रवाना हो गए। मंदिर के पुरोहित ने दूर से घुड़ सवारों को आते देखा तो उसने मंदिर के मुहाफिज़ को बुलाया।

"वो फिर आ रहे हैं"-पुरोहित ने कहा-"उन्हें किसी ने बता दिया होगा के असली बुत अभी मंदिर में मौजूद है....क्या तुम उज़ा की इज़्ज़त की हिफाज़त करोगे? अगर करोगे तो उज़ा देवी तुम्हें मालामाल कर देगी।"

"कुछ सोच कर बात कर मुक़द्दस पेशवा!"-एक मुहाफिज़ ने कहा-"क्या हम दो तीन आदमी इतने ज़्यादा घुड़सवारों का मुक़ाबला कर सकते हैं?"

"अगर उज़ा देवी है तो ये अपने आप को ज़रूर बचा लेगी"-एक और मुहाफिज़ ने कहा। उसके लहजे में तंज़ थी। कहने लगा-"देवी देवता इन्सानों की हिफाज़त किया करते हैं, इन्सान देवताओं की हिफाज़त नही किया करते।"

"फिर उज़ा अपनी हिफाज़त खुद करेगी"-पुरोहित ने कहा।

ख़ालिद(र०) के घोड़े क़रीब आ गए थे। मुहाफिज़ मंदिर की पुजारनो के साथ भाग गए। पुरोहित को यक़ीन था के उसकी देवी अपने आप को मुसलमानों से बचा लेगी। उसने एक तलवार ली और उसे उज़ा के गले में लटका दिया। पुरोहित मंदिर के पिछले दरवाज़े से निकला और भाग गया।

ख़ालिद(र०) मंदिर मे आन पहुंचे और तमाम कमरों में उज़ा का बुत ढूंढने लगे। उन्हें एक बड़ा ही खुशनुमा कमरा नज़र आया। इस के दरवाज़े में खड़े हो कर देखा। उज़ा का बुत सामने चबूतरे पर रखा था। उसके गले से तलवार लटक रही थी। ये बुत वैसा ही था जैसा ख़ालिद(र०) पहले तोड़ गए थे। इस बुत के क़दमों में लोबान जल रहा था। कमरे की सजावट और खुश्बू से पता चलात था के ये इबादत का कमरा है।

ख़ालिद(र०) ने दहलीज़ से आगे क़दम रखा तो सांवले रंग की एक जवान औरत जो बिलकुल बरहना थी ख़ालिद(र०) के सामने आ रूकी। वो रो रही थी और

फरयादें करती थी के बुत को न तोड़ा जाए। मोअररिख़ लिखते है के ये औरत ख़ालिद(र०) के इरादे को मुताज़लज़ल करने के लिए बरहना हो के आई थी और उस के रोने का मक़सद ख़ालिद(र०) के जज़बात पर असर डालने के सिवा और क्या हो सकता था। ख़ालिद(र०) आगे बढ़े तो उस औरत ने बाज़ू फैला कर ख़ालिद(र०) का रास्ता रोक लिया। ख़ालिद(र०) ने नियाम से तलवार निकाली और उस औरत पर ऐसा ज़ोरदार वार किया के उसका नंगा जिस्म दो हिस्सो में कट गया। ख़ालिद(र०) ग़ुस्से से बिफरे हुए बुत तक गए और इसके कई टुकड़े कर दिये- ताक़त और खुशहाली की देवी अपने आप को एक इन्सान से न बचा सकी।

ख़ालिद(र०) मंदिर से निकल कर घोड़े पर सवार हुए और ऐड़ लगाई उनके सवार उनके पीछे जा रहे थे। मक्का पहुंच कर ख़ालिद(र०) रसूले अकरम(स०) के हुज़ूर में पहुंचे।

"या रसूल अल्लाह(स०)!"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"मैं उज़्ज़ा का बुत तोड़ आया हूं।"

"हां ख़ालिद!"-रसूल अल्लाह(स०) ने कहा-"अब तुम ने उज़्ज़ा का असली बुत तोड़ा है। अब इस ख़ित्ते में बुत परस्ती नहीं होगी।"

❁

क़ुरैश का मशहूर और जोशीला सालार अकरमा मक्का के रास्ते में ख़ालिद(र०) के खिलाफ आख़िरी मआरका लड़ कर रूपोश हो गया था। उसने और सफवान ने अपने क़बीले के सरदार की हुक्म अदूली की थी। उसे अपना अंजाम बहुत बुरा नज़र आ रहा था। उसे ये भी मालूम था के रसूले करीम(स०) भी उसकी ये ख़ता नहीं बख्शेंगे के उसने इस्लामी फौज के एक दस्ते पर हमला किया और इस दस्ते के दो आदमी शहीद कर दिये थे। अकरमा की बीवी मक्का में थी।

तारीख़ों में वाज़ेह इशारा मिलता है के रसूले करीम(स०) ने फतह-ए-मक्का के बाद कुरैश की चार औरतों और छ: आदमियों के क़त्ल का हुक्म दिया था। उन्होंने मुसलमानों को बहुत ज़्यादा तकलीफें पहुंचाई थीं और मुसलमानों के खिलाफ साज़िशें तैयार की थी। उन्हें मुर्तिद कहा गया था। उनमें हुन्द और अकरमा के नाम ख़ास तौर पर क़ाबिले ज़िक्र हैं। अबु सुफयान की बीवी हुन्द हर उस इन्सान के खून की पियासी हो जाती थी जो इस्लाम कुबूल कर लेता था।

अकरमा की बीवी मक्का में थी। फतह-ए-मक्का के दो तीन रोज़ बाद एक आदमी अकरमा के घर आया।

"मैं तुम्हारे लिए अजनबी हूं बहन!"-इस शख़्स ने अकरमा की बीवी से

कहा-"अकरमा मेरा दोस्त है। मैं क़बीला बनू बकर का आदमी हूं...तुम्हें मालूम होगा के अकरमा और सफवान ने मुसलमानों का रास्ता रोकने की कोशिश की थी लेकिन उसके साथ बहुत थोड़े आदमी थे। उसका मुक़ाबला ख़ालिद(र०) से था जो तजुर्बे कार जंगजू है और उसके साथ आदमी भी ज़्यादा थे।"

"मैं जानती हूं"-अकरमा की बीवी ने कहा-"मैं पहले सुन चुकी हूं...मेरे अजनबी भाई मुझे बताओ वो कहां है? वो ज़िन्दा तो है?"

"वो मुझे बता गया था के यमन जा रहा है"-अजनबी ने कहा-"वो कह गया है के तुझे वहां बुला लेगा। मुझे ये भी मालूम है वो किस के पास गया है। मैं तुझे यही बताने आया था। वो वापस नहीं आएगा।"

"उसे यहां आना भी नहीं चाहिए"-अकरमा की बीवी ने कहा-"वो आ गया तो उसे क़त्ल कर दिया जाएगा।"

"तू तैयार रहना"-अजनबी ने कहा-"उसका पैग़ाम आएगा तो मैं तुम्हें उसके पास पहुंचा दूंगा। तुम उसके पास पहुंच जाओगी तो वो तुम्हें साथ ले कर हबीश को चला जाएगा।"

अजनबी उसे अपनी बस्ती का और अपना नाम बता कर चला गया।

दो रोज़ बाद अकरमा की बीवी बनू बकर की बस्ती में गई और उस आदमी से मिली जिस ने उसे अकरमा का पैग़ाम दिया थे।

"क्या तू अकरमा के पास जाने को आई है?"-अकरमा के दोस्त ने पूछा।

"मैं उसे वापस लाने के लिए जा रही हूं"-अकरमा की बीवी ने कहा।

"क्या तू नहीं जानती के वो आया तो उसे क़त्ल कर दिया जाएगा?"

"उसे क़त्ल नहीं किया जाएगा"-अकरमा की बीवी ने कहा-"मैं ने इस्लाम क़ुबूल कर लिया है और रसूल अल्लाह(स०) ने मेरी फरियाद पर मेरे शौहर को माफ कर दिया है।"

"क्या तू ने मोहम्मद(स०) को अल्लाह का रसूल मान लिया है?"

"मान लिया है।"

"मोहम्मद(स०) ने तुमहारे साथ सौदा किया होगा"-अकरमा के दोस्त ने कहा-"उसने तेरे आगे ये शर्त रखी होगी के तुम और अकरमा इस्लाम क़ुबूल कर लो तो......"

"नहीं"-अकरमा की बीवी ने कहा-"मोहम्मद(स०) ने जो अल्लाह के भेजे हुए रसूल है, मेरे साथ ऐसा कोई सौदा नहीं किया....और मोहम्मद(स०) उनमें से नहीं जो सौदा कर के अपनी बात मनवाया करते हैं। मैं वहां अपने शौहर की जान बख्शी

की फरियाद ले कर गई थी। ये वही मोहम्मद(स०) है जिन्हें मैं बड़ी अच्छी तरह जानती थी लेकिन अब मैं ने आप(स०) को देखा तो मैं ने दिल से कहा के ये वो मोहम्मद(स०) नही जो कभी हम में से थे। ये मोहम्मद(स०) जिन के पास मैं अब फरयाद ले कर गई, आप(स०) की आंखों में मुझे कोई ऐसी चीज़ नज़र आई जो किसी और इन्सान में नहीं होती। मुझे डर था के मोहम्मद(स०) जो अल्लाह के रसूल है, कहेंगे के ये अकरमा की बीवी है, इसे यरग़माल बना कर रखो ताके अकरमा आ जाए और उसे क़त्ल कर दिया जाए लेकिन आप(स०) ने मुझे एक मजबूर औरत जान कर इज़्ज़त से बैठाया। मैं ने फरियाद की के फतह आप(स०) की है, मेरे बच्चों को यतीम न करें। मेरे शौहर की बद एहदी की सज़ा मुझे और मेरे बच्चों को न दें। आप(स०) ने कहा, मैं ने अकरमा को माफ किया....मैं ने मोहम्मद(स०) रसूलअल्लाह(स०) का हाथ चूम लिया और मालूम नहीं वो कौन सी ताक़त थी जिस ने मुझ से कहलवाया-, मैंने तस्लीम किया के मोहम्मद(स०) अल्लाह का रसूल है। अब मैं उस खुदा को मानती हूं जिस ने मोहम्मद(स०) को रिसालत दी है।"

"और तू मुसलमान हो गई-अकरमा के दोस्त ने कहा।

"हां"-अकरमा की बीवी ने कहा-"मैं मुसलमान हो गई....मुझे उस के पास ले चल मेरे शौहर के दोस्त! मैं उसे वापस लाऊंगी।"

मैं दोस्ती का हक़ अदा करूंगा"-अकरमा के दोस्त ने कहा-"चल, मैं तेरे साथ यमन चलता हूं।"

❁

काफी दिनों बाद अकरमा अपनी बीवी के साथ मक्का में दाखिल हुआ। अपने घर जाने की बजाए हुज़ूर अकरम(स०) के पास गया और उसने अपने किए की माफी मांग कर इस्लाम कुबूल कर लिया।

उसी रोज़ सफवान भी वापस आ गया। वो भाग कर जद्दा चला गया था। एक दोस्त उसके पीछे गया और उसे कहा के वो सालारी रूत्बे का जंगजू है और उसकी क़दर रसूले करीम ही जान सकते हैं। उसे ये भी कहा गया के क़बीला-ए-कुरैश खत्म हो चुका है....सफवान तलवार का धनी और नामूर सालार था। वो अपने दोस्त के साथ आ गया और उसने रसूले करीम(स०) के हुज़ूर पेश हो कर इस्लाम कुबूल कर लिया।

अबु सुफयान की बीवी हुन्द ऐसी औरत थी जिस के मुताल्लिक़ सोचा भी नहीं जा सकता था के इस्लाम कुबूल कर लेगी। रसूले करीम ने उसके क़त्ल का हुक्म दे रखा था और वो रूपोश थी। अबु सुफयान इस्लाम कुबूल कर चुका था। हुन्द को

जब पता चला के अकरमा(र०) और सफवान(र०) ने भी इस्लाम कुबूल कर लिया है तो वो सामने आ गई ये जानते हुए के उसे क़त्ल कर दिया जाएगा, वो रसूले अकरम(स०) के हुजूर में जा पहुंची। आप(स०) ने उसे माफ कर दिया और वो मुसलमान हो गई।

मक्का के इर्द गिर्द, दूर और नज़दीक, कुछ क़बायल थे। इन में बाज़ बुत परस्त थे और बाज़ तोहम्मात को अक़ीदे बनाए हुए थे। रसूले करीम ने उनकी तरफ पैग़ाम भेजे के वो अल्लाह का सच्चा दीन कुबूल कर लें। पैग़ाम ले जाने वाले फौजी थे लेकिन आप(स०) ने हुक्म दिया था के किसी पर तशद्दुद न किया जाए और जंगी कारर्वाई से गुरेज़ किया जाए।

मक्का के जुनूब में तहामा का इलाक़ा है जहां जंगजू क़बायल बिखरे हुए थे। इनके मुताल्लिक़ ख़दशा था के लड़ने पर उतर आऐंगे इस लिए इस इलाके में फौज का एक दस्ता भेजा गया और इस की कमान ख़ालिद(र०) को दी गई। तमाम का तमाम दस्ता घुड़ सवार था। इस में बनू सलीम के आदमी भी थे और मदीना के भी। ख़ालिद को मक्का से तक़रीबन पचास मील दूर मलमलीयम के मुक़ाम तक जाना था।

ख़ालिद(र०) अपने सवार दस्ते के साथ रवाना हो गए। उनकी मंज़िल पचास मील दूर थी लेकिन बमुश्किल पंद्रह मील दूर गए होंगे के एक मशहूर जंगजू क़बीले बनू जज़ीमा के आदमियों ने ख़ालिद(र०) के दस्ते का रास्ता रोक लिया। ख़ालिद(र०) ने अपने दस्ते को लड़ाई की तरतीब में कर लिया। बनू जज़ीमा बाक़ायदा लड़ाई के लिए निकल आए।

"हम लड़ने नहीं आए"-ख़ालिद(र०) ने ऐलान किया-"हम दावत देने आए है के इस्लाम कुबूल कर लो।"

"हम इस्लाम कुबूल कर चुके हैं"-बनू जज़ीमा की तरफ से जवाब आया-"हम नमाज़ें पढ़ते हैं"।

"हम धोका खाने नहीं आए"-ख़ालिद(र०) ने बुलंद आवाज़ से कहा-"अगर तुम मुसलमान हो चुके हो तो तलवारें और बरछियां फैंक दो।"

"ख़बरदार बनू जज़ीमा!"-बनू जज़ीमा की तरफ से किसी ने लल्कार कर कहा-"उसे मैं जानता हूं ये मक्का के वलीद का बेटा ख़ालिद(र०) है। इस पर ऐतबार न करना। हथियार डाल दोगे तो ये हम सब को क़त्ल करा देगा....हथियार न डालना।"

"खुदा की क़सम, मुझे रसूल अल्लाह(स०) का हुक्म न मिला होता के जंग न करना तो मैं देखता के तुम हथियार डालते हो या नहीं"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"हम

दोस्त बन कर आए है। हम तुम पर अल्लाह का दीन ज़बरदस्ती ठूंसने नही आए। हमें दोस्त समझो और हमारे साथ आजाओ।"

"अहल-ए-कुरैश की क्या ख़बर है?"-बनू जज़ीमा की तरफ से आवाज़ आई।

"मक्का चल कर देखो"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"अबु सुफयान, अकरमा(र०) और सफवान इस्लाम कुबूल कर चुके है।"

बनू जज़ीमा ने हथियार डाल दिये। ख़ालिद(र०) घोड़े से उतर कर आगे बढ़े और बनू जज़ीमा के सरदार से गले मिले। पूरे क़बीले ने इस्लाम कुबूल कर लिया।

मुसलमानों को मक्का एक मरकज़ की हैसियत से मिल गया। ये सूरज की मानिंद था जिसकी किरनें दूर दूर तक फैलने लगीं लेकिन इस्लाम की दुश्मन कुव्वतें यकजा हो रही थीं।"

तायफ एक मुक़ाम है जो मक्का-ए-मोअज़्ज़मा से चन्द मील दूर है। जनवरी 630 ई० (शिवाल 8 हीज्री) की एक रात वहां जशन का समां था। फिज़ा शराब की बू से बोझल और रात मख़मूर थी। रक़्स के लिए तायफ के इर्द गिर्द के इलाक़े की चुनी हुई नाचने वालियां आई हुई थीं। उनके रक़्स और हुस्न ने महमानों को मदहोश कर दिया था।

मेहमान मक्का के शुमाल मशरिक़ी इलाके के मशहूर जंगजू क़बीले हवाज़न के सरकर्दा अफराद थे। इन के मेज़बान तायफ और गर्दोनिवाह में फैले हुए क़बीले सक़ीफ के सरदार थे जिन्होंने अपने मेहमानों पर अपनी इमारत और फय्याज़ी और कुशादा ज़रफी का रौब जमाने के लिए इतनी शाहाना ज़ियाफत और इतने शानदार जशन का एहतमाम किया था।

दो लड़कियां रक़्स के कमाल दिखा रही थे के मेज़बान क़बीले का सरदार मालिक बिन औफ उठ खड़ा हुआ और उसने ताली बजाई। साज़ खामोश हो गए। नाचने वालियां बुत बन गईं और इन की नज़रें मालिक बिन औफ पर जम गईं। मेहमानों पर सन्नाटा तारी हो गया। ऐसे लगता था जैसे रात के गुज़रते लम्हों का क़ाफला रूक गया हो। हर कोई मालिक बिन औफ की तरफ देख रहा था।

मालिक बिन औफ की उम्र तीस साल थी। रक़्स और मे नोशी की महफिलों में वो अय्याश शहज़ादा था लेकिन मैदान-ए-जंग मे वो आग का बगोला था। वो सिर्फ तेग़ ज़नी तीरअंदाज़ी और घुड़सवारी में ही महारत नही रखता था बल्कि वो फन-ए-हर्ब व ज़र्ब का भी माहिर था। इन्ही औसाफ की बदोलत वो क़बीले का सालार था। जंग के मामले में वो इन्तेहा पसंद था। यू लगता था जैसे ठण्डे दिल से सोचना उसे आता ही नहीं। उसकी जंगी चालें उसके दुश्मन के लिए बड़ी ख़तरनाक होती थीं। कबीला-ए-कुरैश में जो हैसियत किसी वक़्त ख़ालिद (र०) बिन वलीद को

हासिल थी वैसा ही दबदबा मालिक बिन औफ का अपने क़बीले पर था।

"हम ने बहुत खा लिया है" -मालिक बिन औफ ने रक़्स रूकवा कर मेज़बानों और महमानों से खिताब किया- "हम शराब के मटके खाली कर चुके हैं। हम थिरकती हुई जवानियों से लुत्फ अंदोज़ हो चुके हैं। क्या हमारे मेहमानों ने ये नहीं सोचा के इस ज़ियाफत और इस जश्न की तक़रीब क्या है?....मैंने तुम्हें कोई खुशी मनाने के लिए इक्ठा नहीं किया। ऐ अहल-ए-हवाज़न ! मैंने तुम्हारी गै़रत को जगाने के लिए तुम्हें अपने हां बुलाया है।"

"हवाज़न की गै़रत सोई कब थी मालिक बिन औफ?" -क़बीले हवाज़न के एक सरदार ने कहा- "बता हमारी गै़रत को किस ने लल्कारा है?"

"मुसलमानों ने!" -मालिक बिन औफ ने कहा- "मोहम्म्द(स०) ने....... क्या तुम मोहम्मद(स०) को नहीं जानते? क्या तुम भूल गए हो उस मोहम्मद(स०) को जो अपने चन्द एक साथियों के साथ मक्का से भाग कर यसरब(मदीना) चला गया था?"

"जानते हैं" दो तीन आवाज़ें उठीं- "अच्छी तरह जानते हैं। वो अपने आप को खुदा का नबी कहता है।"

"हम उसे नबी नही मानते" -एक और आवाज़ उठी- "कोई नबी होता तो हम में से होता जो अहल-ए-सक़ीफ हैं। हवाज़न के क़बीले से होता।"

"वो नबी है या नहीं" -मालिक बिन औफ ने कहा- "मैं तुम्हें ये बताना चाहता हूं के जिस मक्का से मोहम्मद(स०) भागा था, उस मक्का का अब वो हाकिम है। मक्का में उसका हुक्म चलता है और उसकी जंगी ताक़त बढ़ती जा रही है। क़बीले कुरैश उसके आगे हथियार डाल चुका है और उसके मज़हब को कुबूल करता चला जा रहा है। अबु सुफयान, अकरमा और सफवान जैसे जाबिर जंगजू मोहम्मद(स०) का मज़हब कुबूल कर चुके हैं। ख़ालिद(र०) बिन वलीद ने पहले ही ये नया मज़हब कुबूल कर लिया था....मुसलमानों ने मक्का में तमाम बुत तोड़ डाले हैं।

"अहले कुरैश को अपनी गै़रत और अपने मज़हब का पास होता तो वो अपनी तलवारें अपने पेटों में घोंप लेते" -किसी और ने कहा।

"अब सितारों से भरा हुआ आसमान ये देखेगा के हवाज़न और सक़ीफ को अपनी गै़रत का कितना पास है" -मालिक बिन औफ ने कहा।

"क्या तू चाहता है के हम में से कोई मोहम्मद(स०) को क़त्ल कर दे?" -क़बीला हवाज़न के एक सरदार ने कहा- "अगर तू यही कहना चाहता है तो ये काम मेरे सुपुर्द कर।"

"अब मोहम्मद(स०) को क़त्ल कर देने से कुछ हासिल न होगा" -मालिक

बिन औफ ने कहा–"उसे क़त्ल कर दोगे तो उसके पैरूकार उसे अपने दिलों में ज़िन्दा रखेंगे। उनकी तादाद इतनी ज़्यादा हो गई है के इब एक आदमी के क़त्ल से वो उस रास्ते से नही हटेंगे जिस पर उन्हें डाल दिया गया है।"

"कहते हैं मोहम्मद(स०) के हाथ में कोई जादू आ गया है"–हवाज़न के एक सरदार ने कहा–"वो जिस पर निगाह डालता है वो उसका मतीअ हो जाता है।"

"जहां तलवार चलती है वहां कोई जादू नहीं चल सकता"–हवाज़न क़बीले के एक और सरदार ने अपनी तलवार के दस्ते पर हाथ रख कर कहा–"मालिक! आगे बोल तू क्या कहता है। हम तेरे साथ हैं।"

"मैं कहना ये चाहता हूं के हम ने मोहम्मद(स०) के इस्लाम को न रोका तो ये सैलाब की तरह बढ़ता हुआ हम सब को बहा ले जाएगा"–मालिक बिन औफ ने कहा–"न हवाज़न रहेंगे न सक़ीफ का वजूद होगा। क़बीले क़ुरैश को महकूम बनाने वालों को हम मक्का के अन्दर ही ख़त्म करेंगे.......क्या तुम महकूम बन जाने का मतलब समझते हो?"–मालिक बिन औफ ने सब की तरफ देखा और बोला–"अगर नहीं समझते तो मैं तुम्हें बताता हूं–उसने अपने पीछे देखा।

मालिक बिन औफ के पीछे महमानों में एक मोअम्मिर सफेद रेश बैठा था। उसका रंग दूसरों की निसबत साफ और सफेदी मायल था। वो ज़ईफ इतना था के उसका सर हिलता था और कमर में हल्का सा ख़म था। उसके हाथ में अपने क़द जितना लम्बा असा था। कंधों से टखनों तक चुग़ा बताता था के वो कोई आलिम या मज़हवी पेशवा है। मालिक बिन औफ के इशारे पर वो उठा और मालिक के पास आ गया।

"तुम पर उसकी रहमत हो जिस ने तुम्हें पैदा किया है"–बूढ़े ने कहा–"और वो देवता तुम्हारे बच्चों के मुहाफिज़ हों जिन की तुम पूजा करते हो। तुम महलूकी और गुलामी का मतलव नहीं समझते तो मुझ से पूछो। मेरी चार जवान बेटियां मुसलमानों की लोंडियां है और मेरे दो जवान बेटे मुसलमानों के गुलाम है। वो तेग़ ज़न और शहसवार थे लेकिन अब उन्हें तलवार हाथ में लेने की और घोड़े पर सवार होने की इजाज़त नही। हमें घरों से निकाल दिया गया है......

"क्या तुम्हें याद नहीं के कुरैश ने मदीने का मुहासरा किया था तो मुसलमानों ने शहर के इर्द गिर्द ख़ंदक खोद ली थी? कुरैश इस ख़ंदक़ को फलांग नहीं सके थे, फिर इस क़दर तुंद तेज़ तुफान आया के कुरैश जो पहले ही बद्दिल हो चुके थे, बिखर गए और मक्का वापस चले गए थे। जब मुसलमानों के सर से ख़तरा टल गया तो उन्होंने उन यहूदियों पर हल्ला बोल दिया जो उनके साथ मदीना में अमन से रहते थे। इन यहूदियों

को उन्होंने क़त्ल कर दिया और उनकी औरतों को और उनके बच्चों को आपस में बांट कर उन्हें लौंडियां और गुलाम बना लिया।"

"ऐ बुर्जुग!"–क़बीले सक़ीफ के एक सरकर्दा आदमी ने बुलंद आवाज़ से कहा–"अगर तू यहूदी है तो क्या हम ने ग़लत सुना था के तेरे क़बीले ने मुसलमानों को धोका दिया था?"

"तुम ने जो सुना दुरस्त सुना था"–बूढ़े ने कहा–"हमारा धोका कामयाब नहीं हुआ था। हम मुसलमानों की पीठ में ख़ंजर उतारना चाहते थे लेकिन कुरैश पीठ दिखा गए। मुसलमानों को धोका दे कर कमज़ोर करना हमारा फर्ज़ था लेकिन मुसलमानों की तलवारों ने हमें कमज़ोर कर दिया।"

"तू जो बनी इसराईल से है, क्या हमें उकसाने आया है के हम मुसलमानों से तेरे क़बीले के खून का इन्तेक़ाम लें?"–सक़ीफ के क़बीले के एक सरदार ने कहा–

एक और ज़ईफुल उम्र उठ खड़ा हुआ। उसका नाम दुरेद बिन उस्सामा था। इस का नाम तारीख़ में तो मिलता है लेकिन ये पता नहीं मिलता के वो क़बीला हवाज़न से था या क़बीला सक़ीफ से।

"खामोश रहो"–दुरेद बिन उस्सामा ने गरज कर कहा–"हम बनी इसराईल के खून का इन्तेक़ाम नहीं लेंगे। क्या तुम अभी तक शक में हो? क्या तुम अभी तक नहीं समझे के हम ने मुसलमानों पर हमला कर के इन का खून अपनी तलवारों के न पिलाया और उनके ज़ख्मियों को घोड़ों तले न रौंदा तो वो हमें भी क़त्ल कर के तुम्हारी बेटियों को तुम्हारी बहनों को और तुम्हारी बीवियों को अपनी लौंडियां और हमारे बच्चों को अपना गुलाम बना लेंगे?"

"इस से पहले के उनके घोड़े ताईफ की गलियों में हिनहिनाऐं। क्या ये अच्छा नहीं होगा के हमारे घोड़े उनकी लाशों को मक्का की गलियों में कुचलते फिरें?"–मालिक बिन औफ ने जोश से लरज़ती हुई आवाज़ में कहा–"बनी इसराईल का ये बर्जुग हमारी पनाह में आया है। उसने अपने क़बीले का जो अंजाम बताया है मैं तुम्हें उस अंजाम से बचाना चाहता हूं...उठो और लात के नाम पर हलफ उठाओ के हम मोहम्मद(स०) और उसके तमाम पैरूकारों को जिन्होंने मक्का के तमाम बुत तोड़ डाले हैं ख़त्म कर के अपनी औरतों को अपने मुंह दिखायेंगे।"

❁

उस ज़माने में जब इस्लाम की किरनें मक्का से फैल रही थी, अरब में बुत परस्ती आम थी। वो खुदा को भी मानते थे लेकिन खुदा तक रसाई हासिल करने के लिए वो बुतों के आगे हाथ फैलाते थे। उनका अक़ीदा था के बुतों को राज़ी किए बग़ैर खुदा को

राज़ी नहीं किया जा सकता। बुतों की खुशनूदी के लिए वो कुछ रस्में अदा करते थे। ताईफ के इलाक़े में जिस बुत को पूजा जाता था, इस का नाम लात था जो इन्सानी या हैवानी शक्ल का नहीं था। वो बहुत बड़ा पत्थर था जिसे चट्टान कहा जा सकता है। ये चट्टान बाक़ायदा मुरब्बा शक्ल की थी। बाज़ मोअरिख़ों ने लिखा है के ये मुरब्बा शक्ल का कुदरती तौर पर बना हुआ चबूतरा था जिस पर शायद किसी ज़माने में कोई बुत रखा गया हो लेकिन तुलू-ए-इस्लाम के दौर में ये सिर्फ चबूतरा था और ईर्द गिर्द के क़बायल इसी को पूजते थे।

जनवरी 630 ई० की उस रात जब क़बीला हवाज़न के सरदार क़बीला सक़ीफ की दावत पर ताईफ आए और मालिक बिन औफ और दुरेद बिन उस्सामा इन्हे मक्का पर हमले के लिए उकसा रहे थे, हवाज़न के एक सरदार ने मशवरा दिया के काहन को बुला कर फाल निकलवाई जाए के हमारा हमला कामयाब होगा या नहीं।

ये फाल तीरों के ज़रिये निकाली जाती थी जिसे अज़लाम कहते थे। बहुत से तीर इक्ळे रखे होते थे। किसी पर हां लिखा होता था, किसी पर नहीं। बुत का कोई मुजावर या काहन(मज़हबी पेशवा) इस तरकश से एक तीर निकालता और देखता था इस पर हां लिखा है या नहीं। ये फाल का जवाब होता था।

मुजाबिर की निसबत काहन को बेहतर समझा जाता था। काहन दानिशमंद होते थे। उनके पास पुरअस्र और दिल में उतर जाने वाले अल्फाज़ का ज़खीरा होता था और उनके बोलने का अंदाज़ तो हर किसी को मुतास्सिर कर लेता था। काहन फाल निकाले बग़ैर ग़ैब की ख़बरे दिया करते और लोग इन्हें सच माना करते थे।

अगली सुबह हवाज़न और सक़ीफ के सरदार एक काहन के सामने बैठे हुए थे। इन में से किसी ने अभी बात भी नहीं की थी के काहन बोल पड़ा।

"अगर मैं ग़ैब की ख़बर दे सकता हूं और आने वाले वक़्त में भी झांक सकता हूं के कैसा होगा और क्या मैं ये नहीं बता सकूंगा के तुम्हारे दिलों में क्या है?" उसने कहा-"तुम अपनी ज़बानों को साकिन रखो और मेरी ज़बान से सुनो के तुम क्या कहने आए हो.....तुम जिस दुश्मन पर हमला करने जा रहे हो वो यूं समझो के सोया हुआ है। उसने मक्का पर कब्ज़ा किया है और वहां के इन्तेज़ामात सीधे कर रहा है। वो अपनी बादशाही की बुनियादें पक्की कर रहा है। मक्का में उसके दुश्मन भी मौजूद हैं। हर किसी ने मोहम्मद(स०) का मज़हब कुबूल नहीं किया।"

मुक़द्दस काहन!"-दुरेद बिन उस्सामा ने कहा-"हमें ये बता के हम मोहम्मद(स०) को ख़बर होने से पहले उसको दबोच सकते हैं? क्या हमारा अचानक हमला मक्का के मुसलमानों को घुटनों बैठा सकेगा?"

काहन ने आसमान की तरफ देखा। कुछ बड़बड़ाया और बोला-"आने वाले वक्त के पर्दों को चाक कर के देखा है....तुम्हारा हमला अचानक होगा। मुसलमानों को उस वक्त पता चलेगा जब तुम्हारी तलवारें इन्हें काट रही होंगी। कौन है जो बरसती तलवारों में संभल कर अपने आप को बचाने की तरकीब कर सकता है?.... यही वक्त है। यही मौका है। मुसलमान अगर संभल गए तो तुम अपने इरादों में कामयाब नही हो सकोगे। फिर मुसलमान तुम्हारे घरों तक तुम्हारा पीछा करेंगे और तुम्हारे खज़ानों को और तुम्हारी औरतों को तुम्हारी लाशों के ऊपर से गुज़ार कर अपने साथ ले जाएंगे....अज़लाम की ज़रूरत नही। लात ने इशारा दे दिया है और पूछा है के मुझे पूजने वालों की तलवारें अभी तक नियामों में क्यों हैं?"

"कोई कुर्बानी?" एक सरदार ने पुछा।

"हाम"-काहन ने कहा-"एक हाम। अगर है तो दे दो। नहीं है तो अपने क़बीले से कहो के पीठ न दिखायें। अपने खून की और अपनी जानों की कुर्बानी दें.... हाम की तलाश में वक्त ज़ाए न करें.... जाओ। मैंने तुम्हें ख़बर दे दी है। मक्का में मुसलमान दूसरे कामों में मसरूफ है। वो लड़ने के लिए तैयार नहीं। ये वक्त फिर नहीं आएगा।"

हाम उस ऊंट को कहते थे जिस की चौथी नस्ल पैदा हो जाती है। उसे ये लोग अपने बुत के नाम पर खुला छोड़ देते थे। इस ऊंट को मुताबर्रिक समझ कर इस पर न कोई सवारी कर सकता था न इस से कोई और काम लिया जाता था। इस पर ख़ास निशान लगा दिया जाता था। इसे जो कोई देखता था, इस का अहतराम करता और इसे अपने खाने की चीज़ें खिला देता था।

जब हवाज़न और सक़ीफ के सरदार काहन का आर्शावाद ले कर चले गए तो काहन अंदरूनी कमरे में चला गया। वहां वो बूढ़ा यहूदी बैठा था जिसे गुज़िश्ता रात ज़यafत के दौरान मालिक बिन औफ ने इशारे से कहा था के वो सब को बताए के महकूमी और गुलामी क्या होती है।

"मैंने तुम्हारा काम कर दिया है"-काहन ने उसे कहा-"अब ये लोग मक्का की तरफ कूच में ताख़ीर नहीं करेंगे।"

"क्या इन्हें कामयाबी हासिल होगी?"-बूढ़े यहूदी ने पूछा।

"कामयाबी का इन्हेसार इन के लड़ने के जज़बे और अक्ल पर है"-काहन ने कहा-"अगर उन्होंने सिर्फ जोश और जज़बे से काम लिया और अक्ल को इस्तेमाल न किया तो मोहम्मद(स०) की असकरी क़ाबलियत उन्हें बहूत बुरी शिकस्त देगी.... मेरा इनाम?"

"तुम्हारा इनाम साथ लाया हूं" -बूढ़े ने कहा और आवाज़ दी।

दूसरे कमरे से एक हसीन लड़की आई। बूढ़े यहूदी ने अपने चुग़े के अन्दर हाथ डाल कर सोने के दो टुकड़े निकाले ओर काहन को दे दिये।

"मै कल सुबह इस लड़की को ले जाऊंगा" -बूढ़े ने कहा।

"मै तुम्हें एक बात बता देना चाहता हूं" -काहन ने कहा- "मैं ने तुम्हारे कहने पर इन लोगों को कहा है के फौरन हमला करें लेकिन इन सरदारों में समझ बूझ है। हालात को समझ लेते है। इन का बूढ़ा सरदार दुरेद बिन उस्सामा पहले से जानता था के मुसलमान मक्का में अभी जम के नही बैठ सके। उनके सामने और बहुत से मसले है। इन पर हमले के लिए यही वक्त मोज़ूं है। हवाज़न और सक़ीफ के सरदार अपने इरादे की तसदीक़ के लिए मेरे पास आए थे। अच्छा हुआ के इन से पहले तुम चोरी छुपे मेरे पास आ गए थे।"

"मेरा मक़सद सिर्फ ये है के मुसलमानों को ख़त्म किया जाए" -बूढ़े ने कहा।

मोअररि़ख़ लिखते हैं के हवाज़न और सक़ीफ दो ताक़तवर क़बीले थे। मुसलमानों ने मक्का फतह कर लिया तो इन दोनों क़बीलों को ये ख़तरा महसूस हुआ के दोनों के लोग अलग अलग बस्तियों में रहते हैं और बस्तियों की तादाद ज़्यादा है और ये एक दूसरे से दूर दूर भी हैं। मुसलमान हर बस्ती पर काबिज़ हो कर दोनों क़बीलों को टुकड़े टुकड़े कर देंगे। उन्हेंने सोचा के क़बीलों को मुत्ताहिद कर के मुसलमानों पर हल्ला बोल दिया जाए।

दोनो क़बीले लड़ने वाले आदमियों को साथ ले कर हुनेन के क़रीब ओतास के मुक़ाम पर ले गए। इन के सरदारों ने छोटे छोटे कई और क़बायल को इस क़िस्म के पैग़ाम भेज कर के मुसलमान उन की बस्तियों को तबाह व बरबाद करने के लिए आ रहे हैं, अपना इत्तेहादी बना लिया था। इस मुत्तेहदा लश्कर की तादाद बारह हज़ार हो गई। इस का सिपह सालार मालिक बिन औफ था। उसने लश्कर के हर आदमी को इजाज़त दे दी थी के वो अपने बीवी बच्चों और मवेशियों को साथ ले आंए। उसने इस इजाज़त का जवाज़ ये पेश किया था के मक्का का मुहासरा बहुत लम्बा भी हो सकता है। अगर ऐसा हुआ तो लश्करियों को अपने बीवी बच्चों और मवेशियों का ग़म होगा के मालूम नहीं कैसे हों, इस इजाज़त से तक़रीबन सब ने फायदा उठाया था। इस तरह जितना लश्कर लड़ने वालों का था, इस से कहीं ज़्यादा तादाद औरतों और बच्चों की थी। ऊंट भी बे शुमार थे।

दुरेद बिन उस्सामा बहुत बूढ़ा था। वो मैदान-ए-जंग में जाने के क़ाबिल नहीं था लेकिन लड़ने और लड़ाने का जो तजुर्बा उसे था वो और किसी को नहीं था। सिपह

सालार मालिक बिन औफ को बनाया गया था लेकिन इस में खूबी सिर्फ ये थी के वो बहुत जोशीला था। दुरेद को उसके तजुर्बे की वजह से बुलाया गया था।

दुरेद बिन उस्सामा उस वक्त लश्कर में शामिल हुआ जब लश्कर ओतास के मुकाम पर खेमा ज़न था। वो शाम के वक्त पहुंचा। उसे बच्चों के रोने की आवाज़ें सुनाई दीं। उसने बकरियों और गधों की आवाज़ें भी सुनी। उसने किसी से पूछा के लश्कर के साथ बच्चे, बकरियां और गधे कौन लाया है? उसे बताया गया के सिपह सालार ने बाल बच्चे और मवेशी साथ ले जाने की न सिफ इजाज़त दी है बल्कि उन्हें साथ लाने की हौसला अफज़ाई की है।

"मालिक!"-दुरेद बिन उस्सामा ने मालिक बिन औफ के खेमे में जाकर पूछा-"ये तूने क्या किया है? मैं ने ऐसा लश्कर पहली बार देखा है जो लड़ने वाले लश्कर की बजाए नक्ल मकानी करने वालों का काफला मालूम होता है।"

"मुझे तुम्हारी जंगी फहम व फरासत पर ज़रा सा भी शक नहीं मेरे बुर्जुग!"-मालिक बिन औफ ने कहा-"लेकिन मैं ने जो सोचा है वो तुम सारी उम्र नहीं सोच सके। मैंने लश्करियों से कहा तो ये है के मुहासरा लम्बा हो जाने की सूरत में उन्हें अपने अहल व अयाल और माल मवेशी के मुताल्लिक परेशानी पैदा हो जाएगी लेकिन मैं ने सोचा कुछ और है। मैं मक्का को मुहासरे में नहीं लूंगा बल्कि यल्गार करूंगा। मुसलमानों को हम बेख़बरी में जा लेंगे। तुम्हें मालूम है के लड़ने में मुसलमान कितने तेज़ और अक्लमंद हैं वो पैंतरे बदल बदल कर लड़ेंगे। हो सकता है हमारे आदमी उनकी बे जिगरी के आगे ठहर न सकें। वो जब देखेंगे के उनकी औरतें और जवान बेटियां और बच्चे और दूध देने वाले मवेशी भी साथ हैं तो वो इन्हें बचाने के लिए जान की बाज़ी लगा कर लड़ेंगे और ज़्यादा बहादुरी से लड़ेंगे। भागेंगे नहीं।"

"तर्जुबा उम्र से हासिल होता है मालिक!"-दुरेद ने कहा-"तेरे पास जज़बा है, ग़ैरत है, जुर्रत है लेकिन अक्ल तेरी अभी खाम है। लड़ाई में इन लोगों का ध्यान आगे नहीं पीछे होगा। ये यही देखते रहेंगे के दुश्मन पहलू या अकब से इन के बाल बच्चों तक तो नहीं आ गया। दुश्मन जब इन पर जवाबी हमला करेगा तो ये तेज़ी से अपने बीवी बच्चों तक पहुंचेंगे के ये दुश्मन से महफूज़ रहें....तू बहुत बड़ी कमज़ोरी अपने साथ ले आया है। मोहम्मद(स०) की जंगी कयादत को तू नहीं जानता मैं जानता हूं। उसके पास एक से एक बढ़कर काबिल सालार है। वो तेरी इसी कमज़ोर रग पर वार करेंगे। वो कोशिश करेंगे के तेरे लश्कर की औरतों और बच्चों को यरग़माल में ले लें। इन्हें दूर पीछे रहने दो और मक्का को कूच करो।"

"अहतराम के काबिल बुर्जुग!"-मालिक बिन औफ ने कहा-"तुम बहुत

पुरानी बातें कर रहे हो। तुम ने महसूस नही किया के इतनी लम्बी उम्र ने तुम्हें तजुर्बों से तो माल माल कर दिया है लेकिन उम्र ने तुम्हारी अक्ल कमज़ोर कर दी है। अगर मैं सिपह सालार हूं तो मेरा हुक्म चलेगा। मैं जहां ज़रूरत समझूंगा तुम से मशवरा ले लूंगा।"

मोअररि़खों ने लिखा है के दुरेद बिन उस्सामा ये सोच कर चुप हो गया के ये मौक़ा आपस में उलझने का नही था।

"तुम लश्कर से कुछ और कहना चाहते हो तो कह दो"-मालिक बिन औफ ने कहा।

"जो काम मुझे करना है वो मैं तुम्हें बताए बग़ैर करूंगा"-दुरेद ने कहा-"मुझ में लड़ने की ताक़त नहीं रही। लड़ा सकता हूं।

उस ने अपने खे़मे में जाकर क़बीलो के सरदारों को बुलाया और इतना ही कहा-"जब हमला करोगे तो तम्हारा इत्तेहाद न टूटे। तमाम लश्कर से कह दो के हमले से पहले तलवारों की नियामें तोड़ कर फैंक दें।"

अरबों में ये रसम थी के लड़ाई में जब कोई अपनी नियाम तोड़ देता था तो इसका मतलब ये होता था के ये शख्स लड़ता हुआ जान दे देगा।, पीछे नहीं हटेगा और शिकस्त नही खाएगा। नियाम तोड़ने को वो फतह या मौत का ऐलान समझते थे।

किसी भी तारीख़ में ऐसा इशारा नहीं मिलता के दुरेद बिन उस्समा ने क़बीलो के सरदारों से कहा हो के वो अपने अहल व अयाल को ओतास में ही रहने दें लेकिन दो मोअररि़खों ने लिखा है के लड़ाई के वक्त सिर्फ हवाज़न क़बीला था जिस ने अपनी औरतों बच्चों और बकरियों को अपने साथ रखा था।

❁

ये दूसरा मौका था के इतने ज़्यादा क़बीलों की मुत्तहदा फौज मुसलमानों को तहस नहस करने आ रही थी। इस से पहले जंग-ए-खंदक़ में इतने ज़्यादा क़बीले मुसलमानों के खि़लाफ मुत्तेहिद हुए थे। अब मालिक बिन औफ इस उम्मीद पर मुत्तेहदा फौज को ले जा रहा था के वो मक्का पर अचानक टूट पड़ेगा। इस लश्कर को अब ओतास से मक्का को कूच करना था और इस कूच की रफ्तार बहुत तेज़ रखनी थी। ओतास में लश्कर का क़याम इस लिए ज़्यादा हो गया था के दूसरे क़बीलों को वहां इक्ठ्ठे होना था।

अगर इस लश्कर में सिर्फ लड़ने वाले होते तो लश्कर फौरन मक्का की तरफ पेशक़दमी कर जाता। इस में औरतें और बच्चे भी थे और उनका सामान भी था, इस

लिए वहां से कूच में खासी ताखीर हो गई। इस दौरान मक्का की गलियों में एक लल्कार सुनाई दी।

"मुसलमानो! होशियार....तैयार हो जाओ"- वो एक शुतर सवार था जो रसूले अकरम(स०) के घर की तरफ जाते हुए ऐलान करता जा रहा था-"खुदा की क़सम, जो मैं देख आया हूं वो तुम में से किसी ने नहीं देखा।"

"क्या शोर मचाते जा रहे हो"-किसी ने उसे कहा-"रूको और बताओ क्या देख आए हो।"

"रसूल अल्लाह को बताऊंगा"-वो कहता जा रहा था-"तैयार हो जाओ... हवाज़न और सक़ीफ का लश्कर...."

रसूले करीम को इत्तेला मिल गई के हवाज़न और सक़ीफ के क़बीलों के साथ दूसरे कबीलों के हज़ारों लोग ओतास के क़रीब खेमा ज़न हैं और उनका इरादा मक्का पर हमला का है और वो कूच करने वाले हैं। तारीख़ों में उस शख्स का नाम नहीं मिलता जिस ने ओतास में इस मुत्तेहिद लश्कर को देखा और ये भी मालूम कर लिया था के लश्कर का इरादा क्या है। मोअररिख़ों ने इतना ही लिखा है के रसूल करीम को कब्ल अज़ वक़्त ग़ैर मुस्लिम क़बीलों के इजतेमा की खबर मिल गई।

इन मोअररिख़ों के मुताबिक(और बाद के मुबस्सिरों की तहरीरों के मुताबिक) रसूले अकरम की ख्वाहिश और कोशिश ये थी के जंग व जदल से गुरेज़ किया जाए और उन ग़ैर मुसलमानों को जो आप(स०) को और मुसलमानों को दुश्मन समझते और आप(स०) के खिलाफ साज़िशें तैयार करते रहते थे, उन्हें ख़ेर सगाली और भाई चारे के पैग़ाम दिये जाऐं।

इस ख्वाहिश और कोशिश के अलावा जनवरी 630 ई० में हुज़ूरे अकरम लड़ने की पोज़िशन में नही थे क्योंके आप(स०) ने मक्का को चन्द ही दिन पहले अपनी तहवील में लिया था और शहर के इन्तेज़ामात में मसरूफ थे। हुज़ूर(स०) को मशवरे दिये गए के शहरी इंतेज़ामात को मुल्तवी कर के दिफाई इंतेज़ामात की तरफ फौरी तवज्जह दी जाए और दुश्मन के हमले या मुहासरे का इंतेज़ाम किया जाए।

रसूल अल्लाह ने मशवरा देने वालों से ये कह कर उनका मशवरा मुसतरिद कर दिया के हम यहां दिफाई मोर्चे बना कर इन में बैठ जायें और जब दुश्मन को ख़बर मिले के हम बेदार हैं और क़िला बन्द हो गए हैं तो दुश्मन मक्का से कुछ दूर खेमा ज़न हो कर इस इन्तेज़ार में तैयार बैठ जाएगा के हम दिफाअ में ज़रा सी कोताही करें और वो शहर को मुहासरे में ले ले या सीधी यल्ग़ार कर दे तो ये दुश्मन की दावत देने वाली बात होगी के मुसलसल ख़तरा बन कर हमारे सरों पर बैठा रहे।

उस दौर की मुख़तलिफ तहरीरों से साफ पता चलता है के रसूले करीम ने ये उसूल बज़आ किया और मुसलमानों को ज़हन नशीन कराया था के दुश्मन अगर अपने घर बैठ कर ही लल्कारे तो उसकी लल्कार का जवाब ठोस तरीक़े यानी अमल तरीक़े से दो। दूसरा ये के दुश्मन की नीयत और उसके अज़ायम का इल्म हो जाए तो अपनी सरहदों के अंदर बैठ कर उनका इन्तेज़ार न करते रहो, उस पर हमला कर दो के वो तुम्हें लल्कारेगा या तुम्हारे लिए ख़तरा बनने की कोशिश करेगा तो तुम बिजली की तरह उस पर कोंदोगे।

❁

"नही ऐसा नहीं हो सकता"–मालिक बिन औफ अपने ख़ेमे में गुस्से से बार बार ज़मीन पर पांव मारता और कहता था–"वो इतनी जल्दी किस तरह यहां पहुंच सकते हैं? क्या हम अपने साथ गद्दारों को भी लाए थे जिन्होंने मोहम्मद(स०) को बहुत दिन पहले ख़बरदार कर दिया था के हम आ रहे हैं?"

"खुद जाकर देख ले मालिक!"–बूढ़े दुरेद बिन उस्सामा ने कहा–"अपनी आंखों से देख ले।"

"अगर मै झूट बोल रहा हूं तो अपने देवता लात को धोका दे रहा हूं"–उस आदमी ने कहा जो देख आया था के मुसलमानों का एक लश्कर जिस की तादाद कम व बेश दस हज़ार थी, हुनेन के क़रीब आकर पड़ाव किए हुए था। उसने कहा–"उन्होंने ख़ेमे नहीं गाड़े। वो तैयारी की हालत में है..... और ये भी झूट नहीं के इस लश्कर का सिपाह सालार मोहम्मद(स०) खुद है।

मालिक बिन औफ गुस्से से बावला हुआ जा रहा था। वो मुसलमानों पर अचानक टूट पड़ने चला था। उसने ओतास से मक्का की तरफ पेशक़दमी का हुक्म दे दिया था मगर उसे इत्तेला मिली के मुसलमान अपने रसूल अल्लाह(स०) की क़यादत में उस की जमीयत से थोड़ी ही दूर हुनेन के गर्दोनवाह में आ गए है और मुक़ाबले के लिए तैयार है।

"गुस्सा तेरी अक्ल को कमज़ोर कर रहा है मालिक!"–दुरेद ने उसे कहा–"अब मुहासरे और यल्ग़ार को दिमाग़ से निकाल और उस ज़मीन से फायदा उठा जिस पर मुसलमानों से तेरा मुक़ाबला होगा। तू अच्छी चालें सोच सकता है। तू दुश्मन को धोका दे सकता है। तुझ में जुर्रत है, फिर तू क्यों परेशान हो रहा है? मैं तेरे साथ हूं....मै तुझे एक बार फिर कहता हूं के हवाज़न के लोगों ने अपनी औरतों और अपने बच्चों और अपने मवेशियों को साथ ला के अच्छा नहीं किया....आ मेरे साथ, हुनेन की वादी को देखें।"

वो दोनो उस इलाके को देखने चल पड़े जहां लड़ाई मुतावके थी।

रसूले अकरम(स०) के साथ मुजाहेदीन की जो फौज थी, इस की तादाद बारह हज़ार थी। इस नफरी में मक्का के दो हज़ार अफराद ऐसे थे जिन्हें इस्लाम कुबूल किए अभी चन्द दिन ही हुए थे। बाज़ सहाबा इकराम इन नो मुसलमानों पर भरोसा करने पर अमादा नही थे लेकिन अल्लाह के रसूल(स०) को अपने अल्लाह पर भरोसा था। अबु सुफयान, अकरमा और सफवान भी नो मुस्लिम थे ये तीनों सरदारी और सालारी के रूत्बों के अफराद थे जिन का नौ मुस्लिम कुरैश पर असर व रसूख भी था लेकिन देखा गया के ये सब अपनी मर्ज़ी से इस लश्कर में शामिल हुए थे। एक मोअररिख़ ने लिखा है के इन तीनों ने मुजाहेदीन के लिए कम व बेश एक सौ ज़िरा बक्तर दिये थे।

ये लश्कर 27 जनवरी 630 ई०(6 शिवाल 8 हिज्री) की सुबह मक्का से रवाना हुआ और 31 जनवरी की शाम हुनेन के गर्दोनवाह में पहुंच गया था। कूच बर्क़ रफ्तार था। रसूले करीम को मालूम था के क़बीला हवाज़न और क़बीला सक़ीफ लड़ने वाले क़बीले हैं और इन के क़ायद दुरेद और मालिक जंगी फहम व फिरासत और चालों से बख़ूबी वाकिफ़ हैं, इस लिए आप(स०) ने हराविल में जिन सात सौ मुजाहेदीन को रखा वो बनू सलीम के थे और इन के कमांडर ख़ालिद(र०) बिन वलीद थे।

हुनेन एक वादी है जो मक्का से ग्यारह मील दूर है। बाज़ जगहों पर ये वादी सात मील चौड़ी है, कहीं इस की चौड़ाई इस से भी कम है और हुनेन के क़रीब जा कर वादी की चौड़ाई कम होते होते, बमुश्किल दो फरलांग रह जाती है। यहां से वादी की सतह ऊपर को उठती है यानी ये चढ़ाई है। आगे एक दुर्रा नुमा रास्ता है जो दायें बायें मुड़ता एक और वादी में दाख़िल होता है। इस वादी का नाम नख़लातलु यमानिया है। रास्ता ख़ासा तंग है।

मुसलमानों ने अपने जासूसों की आंखों से देखा के क़बीलों की मुत्तेहदा फौज अभी ओतास के क़रीब ख़ेमा ज़न है मगर जासूस रात की तारीकी में न झांक सके या उन्होंने ज़रूरत ही महसूस न की के रात को भी देख लेते के दुश्मन नक़्ल व हरकत तो नहीं कर रहा। दिन के दौरान मुत्तेहदा क़बीलों के कैम्प में कूच या पेशक़दमी की तैयारी के कोई आसार नज़र न आए। कैम्प पर मुर्दनी सी छाई हुई थी। कोई सरगर्मी नहीं थी।

यकुम फरवरी 630 ई०(11 शिवाल 8 हिज्री) की सहर मुजाहेदीन ने ओतास की तरफ पेशक़दमी की। इस्कीम ये थी के दुश्मन के कैम्प पर यल्ग़ार की जाएगी। उम्मीद यही थी के दुश्मन को बेखबरी में जा लेंगे। पेशक़दमी मुकम्मल तौर पर मुनज़्ज़म थी। हराविल में बनू सलीम के मुजाहेदीन थे जिन के क़ायद ख़ालिद(र०)

बिन वलीद थे। इस हैसियत में ख़ालिद(र०) सब से आगे थे।

इस्लामी फौज की नफरी तो बारह हज़ार थी लेकिन इस बाक़ायदा फौज के साथ एक बे क़ायदा फौज भी थी जिस की नफरी बीस हज़ार थी। ये मक्का और गर्दोनवाह के लोग थे जो फौज की मदद के लिए साथ आए थे।

एक वाक़ेया क़ाबिले ज़िक्र है। इतना ज़्यादा लश्कर देख कर बाज़ सहाबा इकराम ने बड़े फख़ से कहा-"कौन है जो हमें शिकस्त दे सकता है"-दो मोअररिख़ों ने लिखा है के इस फख़ में तकब्बुर की झलक भी थी।

ख़ालिद(र०) इस्लामी लश्कर के आगे थे। वो जब वादी-ए-हुनेन के तंग रास्ते में दाख़िल हुए तो सुबह तुलूअ हो रही थी। ख़ालिद(र०) ने अपने घोड़े को ऐड़ लगाई और रफ्तार तेज़ कर दी। ख़ालिद(र०) जोशिले जंगजू थे और जारहाना क़यादत में यक़ीन रखते थे। वो जब मुसलमान नहीं हुए थे तो क़बीला-ए-क़ुरैश के सरदार-ए-आला अबु सुफयान से उन्हें सब से बड़ी शिकायत ये थी के वो इन्हें खुल कर लड़ने नहीं देते थे। उनके क़ुबूल-ए-इस्लाम की एक वजह ये भी थी के उन्होंने रसूले करीम(स०) की असकरी क़यादत में वो जज़्बा देखा था जो इन्हें पसंद था। ख़ालिद(र०) ने क़ुबूल-ए-इस्लाम से पहले अकरमा से कहा भी था के मेरे असकरी जज़्बे और मैदान-ए-जंग में जारहाना अंदाज़ की क़दर सिर्फ मुसलमान कर सकते हैं।

रसूल अल्लाह(स०) ने ख़ालिद(र०) की असकरी अहलीयत और क़ाबलीयत की जो क़दर की थी इस का सुबूत ये था के वो इतने बड़े लश्कर के हराविल के कमांडर थे।

❁

सुबह तुलूअ हो रही थी जब ख़ालिद(र०) बिन वलीद का हराविल दस्ता घाटी वाले तंग रास्ते में दाख़िल हुआ। अचानक ज़मीन व आसमान जैसे फट पड़े हों। हवाज़न,सक़ीफ और दीगर क़बीलों की मुत्तेहदा फौज के नारे घटाओ की गरज और बिजलियों की कड़क की तरह बुलंद हुए और मूसला धार बारिश की तरह तीरों की बोछाड़ आने लगी। ये तीर दायें बायें की चट्टानों और टेकरियो से आ रहे थे।

ये दुशमन की घात थी। मालिक बिन औफ और दुरेद बिन उस्सामा ने दिन के वक्त अपने कैम्प में कोई सरगर्मी ज़ाहिर नहीं होने दी थी। ऐसे मालूम होता था जैसे ये जंगी कैम्प नहीं किसी क़ाफले का पड़ाव है। शाम के बाद मालिक बिन औफ अपनी फौज को हुनेन के तंग रास्ते पर ले गया और तीरअंदाजों को दोनो तरफ छुपा कर बैठा दिया था।

तीरों की बोछाड़ें अचानक भी थी और बहुत ज़्यादा भी। मुजाहेदीन के घोड़े तीर खा कर बेलगाम हो कर भागे। जो सवार तीरों से महफूज़ रहे, वो भी पीछे को भाग उठे। तीरों की बोछाड़ें और तेज़ तुंद हो गईं। घोड़े भी बे क़ाबू और सवार भी बे क़ाबू हो गए। भगदड़ मच गई।

۞

"मत भागो"-ख़ालिद(र०) बिन वलीद तीरों की बोछाड़ों में खड़े चिल्ला रहे थे-"पीठ न दिखाओ......मुक़ाबला करो। हम दुश्मन को...."घोड़ों और सवारों की भगदड़ ऐसी थी के ख़ालिद(र०) बिन वलीद की पुकार किसी के कानों तक पहुंचती ही नहीं थी। कोई ये देखने के लिए भी नहीं रूकता था के ख़ालिद(र०) के जिस्म में कितने तीर उतर गए है और वो पीछे हटने की बजाए वहीं खड़े अपने दस्ते को मुक़ाबले के लिए लल्कार रहें हैं। वो आख़िर भगदड़ के रैले की ज़द में आ गए और उनके धक्कों से यूं दूर पीछे आ गए जैसे सैलाब में बह गए हों।

जब भगदड़ का रैला गुज़र गया तो ख़ालिद(र०) इतने ज़ख्मी हो चुके थे के घोड़े से गिर पड़े और बे होश हो गए।

हरावल के पीछे इस्लामी फौज आ रही थी। इस के रज़ाकारों का बे क़ायदा लश्कर भी था। हरावल का दस्ता भागता दौड़ता पीछे को आया तो फौज में भी भगदड़ मच गई हरावल के बहुत से आदमियों के जिस्मों में तीर पेवस्त थे और उनके कपड़े खून से लाल थे। घोड़ों को भी तीर लगे हुए थे। मालिक बिन औफ की फौज के नारे जो पहले से ज़्यादा बुलंद हो गए थे, सुनाई दे रहे थे। ये हाल देख कर इस्लामी फौज बिखर कर पीछे को भागी।

बाज़ मोअररिख़ों ने लिखा है के वो कुरैश जो बे दिली से मुसलमान हुए थे और इस्लामी फौज के साथ आ गए थे, उन्होंने इस भगदड़ को यूं बढ़ाया जैसे जलती पर तेल डाला जाता है। वो न सिर्फ भागे बल्कि उन्होंने ख़ौफ व हिरास फैलाया। इन्हें एक खुशी तो ये थी के लड़ाई से बचे और दूसरी खुशी ये के मुसलमान भाग निकले है और इन्हें शिकस्त हुई।

मुसलमानों की कुछ नफरी वहीं जा पहुंची जहां से चली थी। उस जगह को फौजी अड्डा (बेस) बनाया गया था। ज़्यादा तादाद उन मुसलमानों की थी जिन्होंने पीछे हट का ऐसी जगहों में पनाह ले ली जहां छुपा जा सकता था लेकिन वो छुपने के लिए नहीं बल्कि छुप कर ये देखने के लिए वहां रूके थे के हुआ क्या है और वो दुश्मन कहां है जिससे डर कर पूरी फौज भाग उठी हैं। वहां तो हालत ये हो गई थी के भागते हुए ऊंट और घोड़े एक दूसरे से टकरा रहे थे और पियादे इन के दरमियान आकर

कुचले जाने से बचने के लिए हर तरफ भाग रहे थे।

❁

रसूले करीम(स०) ने अपनी फौज की ये हालत देखी तो आप(स०) सुन हो के रह गए। आप(स०) भागने वालों के रास्ते में खड़े हो गए। आप(स०) के साथ नौ सहाबा इकराम थे। इन में चार क़ाबीले ज़िक्र है-हज़रत उमर(र०) हज़रत अब्बास(र०), हज़रत अली(र०) और हज़रत अबु बकर(र०)।

"मुसलमानो!"-रसूले करीम(स०) ने बुलंद आवाज़ से लल्कारना शुरू कर दिया-"कहां जा रहे हो। मैं इधर खड़ा हूं....मैं जो अल्लाह का रसूल(स०) हूं....मुझे देखो। मैं मोहम्मद(स०) इब्ने अब्दुल्लाह यहां खड़ा हूं।"

मुसलमान हुजूर के क़रीब से भागते हुए गुज़रते जा रहे थे। आप(स०) की कोई नहीं सुन रहा था। ख़ालिद(र०) बिन वलीद कहीं नज़र नहीं आ रहे थे। वो आगे कहीं बेहोश पड़े थे। इतने में क़बीला हवाज़न के कई आदमी ऊंटों और घोड़ों पर सवार भागते हुए मुसलमानों के तआकुब में आए। इन के आगे एक शुतर सवार था जिन ने झण्डा उठा रखा था। हज़रत अली(र०) ने एक मुसलमान को साथ लिया और इस शुतर सवार अलम्बरदार के पीछे दौड़ पड़े। क़रीब जा कर हज़रत अली(र०) ने उसके ऊंट की पीछली टांग पर तलवार का वार कर के टांग काट दी। ऊंट गिरा तो सवार भी गिर पड़ा। हज़रत अली(र०) ने उसके उठते उठते उसकी गर्दन साफ काट दी।

हुजूर(स०) एक टेकरी पर जा खड़े हुए। दुश्मन के किसी आदमी की लल्कार सुनाई दी-"वो रहा मोहम्मद(स०)...क़त्ल कर दो"-तारीख़ में इन आदमियों को क़बीला सक़ीफ के लिखा गया है जो अपने आदमी की लल्कार पर उस टीकरी पर चढ़ने लगे जिस पर रसूल अल्लाह(स०) खड़े थे। सहाबा इकराम जो आप(स०) के साथ थे, इन आदमियों पर टूट पड़े। मुख़्तसिर से मआरके से वो सब भाग निकले। उनमें से कोई भी रसूले अकरम(स०) तक न पहुंच सका।

"मैं मालिक बिन औफ से शिकस्त नही खाऊंगा"-रसूल आल्लाह(स०) ने कहा-"वो इतनी आसानी से कैसे फतह हासिल कर सकता है!"

हुजूर(स०) ने अपनी फौज को बिखरते और भागते तो देख ही लिया था, आप(स०) दुश्मन को भी देख रहे थे, बल्कि दुश्मन को ज़्यादा देख रहे थे। आप(स०) की असकरी हिस ने महसूस कर लिया के मालिक बिन औफ अपने पहले भरपूर और कामयाब वार पर इस क़दर खुश हो गया है के उसे अगली चाल का ख्याल ही नही रहा। वो इस्लामी फौज की भगदड़ और अफरा तफरी की पस्पाई से फायदा नहीं उठा रहा था। हुजूर(स०) को तवक़्क़ो थी के मालिक बिन औफ की मुत्तेहदा फौज

मुसलमानों के तआकुब में आएगी लेकिन तआकुब में दुश्मन के जो आदमी आए थे वो तादाद में थोड़े और ग़ैर मुनज़्ज़म थे।

इस के अलावा हुज़ूरे अकरम(स०) ने अपने हराविल दस्ते को पीछे आते भी देखा था और आप(स०) ने मालूम भी किया था के हराविल के कितने आदमी शहीद और ज़ख़्मी हुए है। आप(स०) को बताया गया के कई एक मुजाहेदीन, घोड़े और ऊंट ज़ख़्मी हुए है, शहीद एक भी नहीं हुआ। इस से रसूले करीम(स०) ने ये राय क़ायम की के ये दुश्मन तीरअंदाज़ी में अनाड़ी है और जल्द बाज़ भी है। इतनी ज़्यादा तीरअंदाज़ी किसी को ज़िन्दा न रहने देती।

हुज़ूरे अकरम(स०) ने अपने पास खड़े सहावा-ए-इकराम(र०) पर नज़र डाली। आप(स०) की नज़र हज़रत अब्बास(र०) पर ठहर गईं। हज़रत अब्वास(र०) की आवाज़ ग़ैर मामूली तौर पर बुलंद थी जो बहुत दूर तक सुनाई देती थी। जिस्म के लिहाज़ से भी हज़रत अब्बास(र०) क़वी हैकल थे।

"अब्बास(र०)"-हुज़ूरे अकरम(स०) ने कहा-"तुम पर अल्लाह की रहमत हो। मुसलमानों को पुकारो। इन्हें यहां आने के लिए कहो।"

"ऐ अन्सार!"हज़रत अब्बास(र०) ने इन्तेहाई बुलंद आवाज़ में पुकारना शुरू किया-"ऐ अहल-ए-मदीना.....ऐ अहल-ए-मक्का...आओ...अपने रसूल(स०) के पास आओ"-हज़रत अब्बास(र०) क़बीलों के और आदमियों के नाम ले ले कर पुकारते रहे और कहते रहे के अपने रसूल(स०) के पास, अपने अल्ला के रसूल(स०) के पास आओ।

सब से पहले अन्सार आए। इन की तादाद मामूली थी लेकिन एक को देख कर दूसरा आता चला गया। मक्का के कुछ दूसरे क़बीलों के लोग भी आ गए। इन की तादाद एक सौ हो गई रसूल करीम ने देखा के क़बीला हवाज़न के बहुत से आदमी पस्पा होते मुसलमानों की तरफ दौड़े आ रहे थे। आप(स०) ने इन एक सौ मुजाहेदीन को दुश्मन के इन आदमियों पर हमला करने का हुक्म दिया।

मुजाहेदीन उन के अक़ब से उन पर टूट पड़े। हवाज़न के आदमी बोखला गए और मुकाबले के लिए संभलने लगे लेकिन मुजाहेदीन ने इन्हें संभलने की मोहलत न दी। उनमें से बहुत से भाग निकले। उनके ज़ख़्मी और हलाक होने वाले पीछे रह गए।

❁

वो तो अचानक ऐसे हालात पैदा हो गए थे के मुजाहेदीन में भगदड़ मच गई थी, वरना वो हमेशा अपने से कई गुनाह ज़्यादा दुश्मन से लड़े और फातेह और कामरान रहे थे। उन्हेंने देखा के अब्बास(र०) की पुकार पर मुसलमान रसूले अकरम(स०) के

हुज़ूर इक्लेे हो रहे है और दुश्मन मुसलमानों के छोटे से गिरोह के जवाबी हमले को भी बरदाश्त नही कर सका और उन्होंने ये भी देखा के हवाज़न और सक़ीफ उनके तआकुब में नही आ रहे तो कई हज़ार मुजाहेदीन वापस आ गए। रसूले अकरम ने उन्हें फौरन मुनज़्ज़म किया और दुश्मन पर हमले का हुक्म दे दिया।

ख़ालिद(र०) बिन वलीद ला पता थे। किसी को होश नहीं था के देखता कौन ला पता है और कौन कहां है।

वही तंग घाटी जहां मुजाहेदीन पर कहर टुटा था, अब मुत्तेहदा क़बायल के लिए मौत की घाटी बन गई क़बीला हवाज़न चुंके सब से ज़्यादा लड़ाका क़बीला था इस लिए इसी के आदमियों को आगे रखा गया था। ये लोग बिलाशुबाह माहिर लड़ाके थे लेकिन मुसलमानों ने जिस क़हर से हमला किया था, इस के आगे हवाज़न ठहर न सके। मुसलमान उस खिफ्फत को भी मिटाना चाहते थे जो उन्हें ग़लती से उठानी पड़ी थी।

ये दस्त बदस्त लड़ाई थी। मुजाहेदीन ने तेग़ ज़नी के वो जौहर दिखए के हवाज़न गिर रहे थे। आप(स०) ने लल्कार लल्कार कर कहा।

"ये झूट नहीं के मैं नबी हूं। में इब्ने अब्दुलमुत्तलिब हूं।"

हवाज़न पीछे हटते चले जा रहे थे। वो अब वार करते कम और वार रोकते ज़्यादा थे। उन का दम खम टूट रहा था। उनके पीछे क़बीला सक़ीफ के दस्ते तैयार खड़े थे। मालिक बिन औफ ने चिल्ला चिल्ला कर हवाज़न को पीछे हटा लिया। क़बीला सक़ीफ के ताज़ा दम लड़ाकों ने हवाज़न की जगह ले ली। मुसलमान थक चुके थे और सक़ीफ ताज़ा दम थे लेकिन मुसलमानों को अपने क़रीब अपने रसूल(स०) की मौजूदगी और लल्कार नया हौसला दे रही थी।

मुसलमानों की तलवारों और बरछियों की ज़र्बो में जो क़हर और ग़ज़ब था और उन के नारों और लल्कार में जो गरज और कड़क थी, उस ने सक़ीफ पर दहशत तारी कर दी। सक़ीफ के लड़ाके जो अरब में ख़ा. मशहूर थे, तेज़ी से पीछे हटने लगे फिर उनके ऊंटों और घोड़ों ने भगदड़ बपा कर दी। इस से दुश्मन में वही कैफीयत पैदा हो गई जो घाटी में सुबह के वक़्त मुसलमानों मे पैदा हो गई थी। हवाज़न बड़ी बुरी हालात में पीछे को भागते थे, अब सक़ीफ भी पस्पा हुए तो इन के इत्तेहादी क़बायल के हौसले लड़े बग़ैर ही टूट फूट गए। वो अफरा तफरी में भाग उठे।

❁

मालिक बिन औफ तंग रास्ते से दूर पीछे हवाज़न के भागे हुए दस्तों को यक्जा कर रहा था उसका अंदाज़ा बता रहा था के वो जारहाना कारर्वाई से मुंह मोड़ चुका है

और अपने दस्तों को दिफाई दीवार के तौर पर तरतीब दे रहा है।

रसूल अल्लाह(स०) ने ये तरतीब देखी तो आप(स०) अपने लश्कर की तरफ पलटे। आप(स०) ने देखा के जो मुजाहेदीन सुबह के वक्त भाग गए थे वो सब वापस आ गए हैं। हुज़ूर(स०) ने हुक्म दिया के घुड़ सवारों को आगे लाओ। ज़रा सी देर में सवार पियादों से अलग हो गए। आप(स०) ने सवारों को एक खास तरतीब में कर के हुक्म दिया के हवाज़न को संभलने और मुनज़्ज़म होने का मौक़ा न दो और बर्क़ रफ्तार हमला करो।

इन सवारों में बनू सलीम के वो सवार भी शामिल थे जिन पर सब से पहले तीरों की बौछाड़ें आईं थीं और मुसलमानों की जमीअत पारा पारा हो गई थी लेकिन बनू सलीम का कमांडर इन के साथ नहीं था। वो थे ख़ालिद बिन वलीद(र०) जो अभी तक कहीं बेहोश पड़े थे।

रसूल अकरम(स०) ने इस सवार दस्ते की क़यादत जुबैर बिन अल्वाम(र०) के सुपुर्द की और इन्हें हुक्म दिया के आगे जो दर्रा है, इस पर मालिक बिन औफ कब्ज़ा किए बैठा है, उसे दर्रे से बेदख़ल कर दो।

रसूले करीम(स०) ने जंग की कमान अपने दस्ते मुबारक में ले ली थी। आप(स०) के इशारे पर जुबैर बिन अल्वाम(र०) ने ऐसा बर्क़ रफ्तार और जचा तुला हल्ला बोला के हवाज़न जो अभी तक बौखलाए हुए थे, मुक़ाबले में जम न सके और दर्रे से निकल गए। दर्रा खासा लम्बा था। रसूले अकरम(स०) ने जुबैर(र०) के दस्ते को दर्रे में रहने दिया और हुक्म दिया के अब दर्रा जंगी अड्डा होगा।

आप(स०) ने दूसरा सवार दस्ता आगे किया जिस के कमांडर अबु आमिर(र०) थे। हुज़ूरे अकरम ने अबु आमिर(र०) के सुपुर्द ये काम किया के ओतास के क़रीब मुत्तेहदा क़बायल का जो कैम्प है इस पर हमला करो।

"ख़ालिद(र०)........ख़ालिद(र०) यहां है"-किसी ने बड़ी दूर से लल्कार कहा-"ये पड़ा है।"

रसूले अकरम(स०) दौड़े गए और ख़ालिद(र०) तक पहुंचे। ख़ालिद(र०) अभी तक बेहोश पड़े थे। आप(स०) ख़ालिद(र०) के पास बैठ गए। और उनके सर से पांव तक फूंक मारी। ख़ालिद(र०) ने आंखें खोल दी। रसूल अल्लाह(स०) ने ख़ालिद(र०) की आंखों में आंखें डालीं। ख़ालिद(र०) उठ खड़े हुए। उन्हें जो तीर लगे थे वो गहरे नहीं उतरे थे। तीर निकाल लिए गए और बड़ी तेज़ी से मरहम पट्टी कर दी गई।

"या रसूल अल्लाह(स०)!"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"मैं लड़ूंगा। मैं लड़ने के क़ाबिल हूं।"

रसूले खुदा ने ख़ालिद(र०) के जिस्म में और इन की रूह में सहर फूंक दिया था। आप(स०) ने ख़ालिद(र०) से कहा के जुबैर(र०) के दस्ते में शामिल हो जाओ। तुम अभी कमान नहीं ले सकोगे।

ख़ालिद(र०) एक घोड़े पर सवार हो गए। उनके कपड़े ख़ून से लाल थे। उन्होंने जुबैर(र०) से पूछा क्या हुक्म है। जुबैर(र०) ने उन्हें बताया के हवाज़न की ख़ेमागाह पर हमला करना है जो ओतास के क़रीब है लेकिन ये हमला अबु आमिर(र०) करेंगे।

ओतास वहां से कुछ दूर था। मालिक बिन औफ ने हवाज़न के दस्ते को वहां से हटा लिया और इस अपनी खेमा गाह के इर्द गिर्द फैला दिया था। ये दिफाई हिसार था जिसकी हवाज़न के कैम्प के गिर्द ज़रूरत इस लिए थी के वहां वो हज़ारों औरतें, बच्चे और मवेशी थे के हवाज़न अपनी औरतों और बच्चों को अपने साथ देख कर ज़्यादा ग़ैरतमंदी और बेजिगरी से लड़ेंगे, मगर अब ये सूरत पैदा हो गई थी के दूरेद बिन उस्सामा मालिक बिन औफ को बुरा भला कह रहा था के उसके मना करने के बावजूद मालिक औरतों को साथ ले आया था। इन के लिए अब अपने अहल व अयाल और मवेशियों को मुसलमानों से बचाना मुहाल दिखाई दे रहा था।

☸

अबु आमिर(र०) का सवार दस्ता ओतास की तरफ बढ़ा। क़रीब गए तो हवाज़न ने जम कर मुक़ाबला किया। अब वो जंग जीतने के लिए या मुसलमानों को तहस नहस कर के मक्का पर कब्ज़ा करने के लिए नहीं बल्कि मुसलमानों से अपने अहल व अयाल और मवेशियों को बचाने के लिए लड़ रहे थे। ये भी दस्त बदस्त मआरका था जिस में जंगी चालों के नहीं। ज़ाती शुजाअत का मुज़ाहेरा हो रहे थे। सवार और पियादे लड़ते हुए वादी में फैलते जा रहे थे।

अबु आमिर(र०) ने दुश्मन के नौ सवारों को हलाक कर दिया मगर दसवें हवाज़न को लल्कारा तो उस के हाथों खुद शहीद हो गए। रसूले अकरम(स०) ने पहले ही उनका जानशीन मुक़र्रर कर दिया था। वो थे उनके चचा ज़ाद भाई अबु मूसा(र०)। उन्होंने फौरन कमान संभाल ली और अपने सवारों को लल्कारने लगे।

हवाज़न ज़ख्मी हो हो कर गिर रहे थे। साफ नज़र आ रहा था के उन के पांव उखड़ रहे हैं। रसलू अकरम ने जुबैर(र०) बिन अल्वाम को जिन्हें आप(स०) ने दर्रे में रोक लिया था, हुक्म दिया के अपने दस्ते को अबु मूसा(र०) की मदद के लिए ले जायें। हुज़ूर(स०) ने ये इस लिए ज़रूरी समझा था के दानों दस्ते मिल कर हवाज़न का काम जल्दी तमाम कर सकेंगे।

जुबैर(र०) ने अपने सवारों को हमले का हुक्म दिया। जब घोड़े दौड़े उस वक्त खालिद बिन वलीद का घोड़ा दस्ते के आगे था।

हवाज़न पहले ही हिम्मत हार चुके थें मुसलमानों के दूसरे सवार दस्ते के हमले की वो ताब न ला सके। उन के ज़ख्मियों की तादाद मामूली नहीं थी। वो अपनी औरतों और बच्चों को छोड़ कर भाग निकले मुसलमानों ने कैम्प को घेरे में ले लिया।

छोटे छोटे क़बीलों के लड़ाकों ने जब हवाज़न और सकीफ जैसे ताक़तवर क़बीलों को भागते देखा तो वो वहां से बिल्कुल गायब हो गए और अपनी अपनी बस्तियों में जा पहुंचे। मालिक बिन औफ मैदाने जंग में कहीं नज़र नहीं आ रहा था। वो नज़र आ ही नहीं सकता था। उसे अपने शहर ताईफ की फिक्र पैदा हो गई थी। उसने अपने क़बीले के सरदारों से कहा के मुसलमान जिस रफ्तार और जिस जज़्बे से आ रहे हैं, उस से साफ पता चलता है के वो ताईफ तक पहुंचेंगे और इस बस्ती की ईंट से ईंट बजा देंगे। इस खतरे के पेश नज़र उस ने क़बीला सक़ीफ के तमाम दस्तों को लड़ाई से निकाला और ताईफ जा दम लिया।

पीछे हुनेन की वादी में कैफियत ये थी के हवाज़न की औरतों और बच्चे चीख व पुकार कर रहे थे। तमाम वसीअ व अरीज़ वादी मुजाहेदीन-ए-इस्लाम को तहवील में थी। मक्का के जो गै़र फौजी मुजाहेदीन के साथ आए थे वो ज़ख्मी मुजाहेदीन को उठा रहे थे। दुश्मन के ज़ख्मी कराह रहे थे, मर रहे थे। मरने वालों में बूढ़ा दुरेद बिन उस्सामा भी था। वो लड़ता हुआ मारा गया था।

मुसलमानों को दुश्मन के ज़ख्मियों और क़ैदियों से जो हथियार और घोड़े मिले, इन के अलावा छः हज़ार औरतें और बच्चे, चौबीस हज़ार ऊंट, चालिस हज़ार बकरियां और बे शुमार चांदी हाथ लगी।

मुसलमानों ने जंग जीत ली थी लेकिन रसूल अल्लाह(स०) ने फैसला किया के मालिक बिन औफ को मोहलत नहीं दी जाएगी के वो सुस्ता सके और अपनी फौज को मुनज़्ज़म कर सके। आप(स०) ने दरअसल सांप का सर कुचलने का फैसला कर लिया था। आप(स०) के हुक्म से माल-ए-गनीमत में आई हुई औरतों, बच्चों, मवेशियों और दीगर माल को एक दस्ते के साथ जाफराना भेज दिया गया अगले हुक्म तक उन्हें जाफराना में ही रहना था। दूसरे दिन रसूले अकरम(स०) के हुक्म से इस्लामी फौज ताईफ की तरफ पेशक़दमी कर गई जहां बड़ी खुंरेज़ जंग की तवक़्क़ो थी।

मआरका हुनेन का ज़िक्र कुरआने हकीम में सूरह तोबा में आया है। बाज़ सहाबा इकराम(र०) ने मआरका शुरू होने से पहले कहा था के हमें कौन शिकस्त दे

सकता है, इतनी बड़ी ताक़त का मुक़ाबला कौन कर सकता है। सूरेह तोबा में आया है।

"अल्लाह ने बहुत से मौक़ों पर तुम्हारी मदद की और हुनेन के दिन भी जब तुम को अपनी कसरत पर नाज़ था, हालांके वो तुम्हारे कुछ काम न आई और ज़मीन बावजूद अपनी वुसअत के तुम पर तंग हो गई और तुम पीठ फैर कर भागे, फिर अल्लाह ने अपने रसूल(स०) और मुसलमानों पर तसल्ली नाज़िल की और वो फौजें उतारीं जिन को तुम ने नहीं देखा और काफिरों को सज़ा दी और काफिरों का बदला यही है।"

ताईफ बड़ी खूबसूरत बस्ती हुआ करती थी। ये बाग़ों की बस्ती थी। फलों और फूलों की महक से हवायें मख़मूर रहती थीं। ताईफ में जाकर दुखी दिल खिल उठते थे। ये जंगजू सरदारों की बस्ती थी। ये सक़ीफ जैसे ताक़तवर क़बीले का मरकज़ था। इस बस्ती के क़रीब इस क़बीले की इबादत गाह थी जिस में सक़ीफ, हवाज़न और चन्द और क़बायल के देवता लात का बुत रखा था जो बुत नहीं एक चबूतरा था। ये क़बायल इस चबूतरे को देवता कहते और इस की पूजा करते थे।

इस इबादत गाह में उनका काहन रहता था जिसे खुदा का और देवता लात का ऐलची समझा जाता था। काहन फाल निकाल कर लोगों को आने वाले ख़तरे से आगाह कर दिया करता था। काहन किसी खुश नसीब को ही नज़र आया करता था। आम लोगों को काहन नहीं इबादत गाह के सिर्फ मुजाविर मिला करते थे। काहन को जो देख लेता वो ऐसे खुश होता था जैसे उसने खुदा को देख लिया हो। ताईफ चूंके इन के देवता का मसकन था इस लिए ये क़बायल का मुक़द्दस मुकाम था।

एक ही महीना पहले ताईफ में जश्न का समां था। यहां के सरदार-ए-आला मालिक बिन औफ ने अपने क़बीले जैसे एक ताक़तवर क़बीले हवाज़न और कुछ और क़बीलों के सरदारों को बहुत बड़ी ज़ियाफत में मदऊ किया था। इलाक़े की चुनी हुई खूबसूरत नाचने और गाने वालियां बुलाई गई थीं। इन के रक़्स ने तमाशाइयों पर वजद तारी कर दिया था। उस रात शराब के मटके खाली हो रहे थे।

उस रात अहल सक़ीफ और अहल हवाज़न ने अहद किया था के वो मक्का पर अचानक हमला कर के रसूले अकरम(स०) और मक्का के तमाम मुसलमानों को हमेशा के लिए ख़त्म कर देंगे। इन क़बायल के एक ज़ईफुल उम्र सरदार दुरेद बिन उस्सामा ने कहा था के उठो और लात के नाम पर हलफ उठाओ के हम मोहम्मद(स०) और उसके तमाम पैरूकारों को जिन्होंने मक्का को तमाम बुत तोड़ डाले है, ख़त्म कर

के अपनी औरतों के मुंह दिखायेंगे।

मालिक बिन औफ जिसकी उम्र अभी तीस साल थी, जोश से फटा जा रहा था। उसने कहा था के क़बायल का मुत्तेहदा लश्कर मक्का मे मुसलमानों को बे ख़बरी में जा दबोचेगा।

उस रात मालिक बिन ओफ, दुरेद बिन उस्सामा और दूसरे क़बीलों के सरदार काहन के पास गए थे। काहन से उन्होंने पूछा था के वो मक्का के मुसलमानों को बे ख़बरी में दबोच सकेंगे और क्या इन का अचानक और ग़ैर मुतावक़्क़े हमला मुसलमानों को घुटनों बैठा सकेगा?

काहन ने उन्हें यक़ीन दिलाया था के देवता लात ने उन्हें आर्शीवाद दे दिया है। काहन ने बड़े वसूक़ से कहा–"मुसलमानों को उस वक़्त पता चलेगा जब तुम्हारी तलवारें इन्हें काट रही होंगी।"

❁

अब एक ही माह बाद ताईफ का हुस्न उदास था। बस्ती के माहौल पर खौफ व हिरास तारी था। अपने देवता लात के आर्शीवाद से और काहन की यक़ीन दहानी से सक़ीफ़, हवाज़न ओर दीगर क़बीलों का जो लश्कर मक्का पर हमला करने गया था, वो मक्का से दूर हुनेन के मुक़ाम पर मुसलमानों के हाथों पिट कर और तित्तर बित्तर हो कर वापस आ रहा था। भाग के आने वालों में पेश पेश इस मुत्तेहदा लश्कर का सालार–ए–आला जवां साल और जोशीला सरदार मालिक बिन औफ था। वो सब से पहले इस लिए ताईफ पहुंचा था के शहर के दिफाअ को मज़बूत बना सके। मुसलमान रसूले अकरम की क़यादत में ताईफ की तरफ बढ़े आ रहे थे।

"ताईफ के लोगो!"–ताईफ की गलियों में घबराई घबराई सी अवाज़ें उठ रही थी–"मुसलमान आ रहे हैं.....शहर का मुहासरा होगा....तैयार हो जाओ....अनाज और खजूरें इक्ठी कर लो। पानी जमा कर लो।"

सब से ज़्यादा घबराहट मालिक बिन औफ पर तारी थी। उसे ताईफ हाथ से जाता नज़र आ रहा था। उसे शिकस्त और पस्पाई की चोट तो पड़ी ही थी, सब से बड़ी चोट उस पर ये पड़ी के वो जब शहर में दाख़िल हुआ तो औरतों ने उस की बहादुरी और फतह के गीत गाने की बजाए नफरत की निगाहों से देखा था और उस के लश्करियों को बाज़ औरतों ने ताने भी दिए थे।

"बीवियां और बेटियां कहां है हुनेन तो साथ ले गए थे?"–औरतें लश्करियों से तंज़िया लहजे में पूछ रही थीं।

"बच्चे भी मुसलमानों को दे आए हो?"–ये भी एक ताना था जो औरतें इन्हें दे

रही थी।

मालिक बिन औफ ने अपने सामने अपने नायब सालारों और कमांडरों को बैठा रखा था और इन्हें बड़ी तेज़ तेज़ बोलते हुए कह रहा था के दूसरे क़बीलों को भी शहर में ले आओ, मुसलमान आ रहे हैं....मालिक बिन औफ ने ज़रा सा भी आराम न किया। आते ही ताईफ का दिफाअ मज़बूत करने में लग गया। उसके नायब, कमांडर और क़ासिद पस्पा हो कर आने वालों को इक्ळा करने में लगे हुए थे।

आधी रात तक वो थक कर चूर हो चुका था। उसने अपनी सब से ज़्यादा हसीन और चहीती बीवी को अपने पास बुलाया। वो आ गई।

"क्या आप ने हलफ नहीं उठाया था के मोहम्मद(स०) और उसके तमाम पैरूकारों को जिन्होंने ने मक्का के बुत तोड़ डाले हैं, ख़त्म कर के अपनी औरतों को मुंह दिखाऐंगे- बीवी ने उसे कहा-"आप फतह की बजाए माथे पर शिकस्त का दाग़ ले आए हैं। आप के हलफ और अहद के मुताबिक मेरा वजूद आप पर हराम है।"

"तुम मेरी बीवी हो"-मालिक बिन औफ ने गुस्से से कहा-"मेरी हुक्म अदूली की जुर्रत न करो। मैं बहुत थका हुआ हूं और में बहुत परेशान हूं। मुझे इस वक़्त तुम्हारी ज़रूरत है। तुम मेरी सब से प्यारी बीवी हो।"

"आप को मेरी ज़रूरत है"-बीवी ने कहा-"लेकिन मुझे एक ग़ैरत मंद मर्द की ज़रूरत है। मुझे इस मालिक बिन औफ की ज़रूरत है जो यहां से अहद कर के निकला था के मुसलमानों को मक्का के अंदर ही ख़त्म कर के वापस आएगा...कहां है वो मालिक बिन औफ?....वो मेरे लिए मर गया है। इस मालिक बिन औफ को मैं नहीं जानती जो अपने क़बीले और अपने दोस्त क़बीलों की हज़ारों औरतों और हज़ारों बच्चे अपने दुश्मन के हवाले कर के अपनी ख्वाब गाह में आ बैठा है और एक औरत से कह रहा है के मुझे तुम्हारी ज़रूरत है।"- इस हसीन औरत की आवाज़ बुलंद हो कर जज़्बात की शिद्दत से कांपने लगी। वो मालिक बिन औफ के पलंग से उठ खड़ी हुई और कहने लगी-"आज रात तुम्हारी कोई बीवी तुम्हारे पास नही आएगी। आज रात तुम्हारी किसी बीवी को उन औरतों की आहें और फरयाद चैन से सोने नही देंगी जो मुसलमानों के कब्ज़े में है......ज़रा सोच...तसव्वुर में ला उन औरतों को। उन नोख़ेज़ लड़कियों को जिन्हें तू मुसलामनों के हवाले कर आया है। वो अब मुसलमानों के बच्चे पैदा करेंगी। बच्चे जो उनके कब्ज़े में है। वो मुसलमान हो जाऐंगे।"

मालिक बिन औफ तो ख़तरों में कूद जाने वाला खुद सर आदमी था। उसने अपने बुज़ुर्ग और मैदान-ए-जंग के मंझे हुए उस्ताद दुरेद बिन उस्सामा की इस पंद व नसीहत को ठुकरा दिया था के वो अक्ल होश से काम ले और जवानी के जोश व

खरोश पर काबू पाए। अब वही मालिक बिन औफ अपनी बीवी के सामने यूं सर झुकाए बैठा था जैसे दहकते हुए अंगारों पर किसी ने पानी छिड़क दिया हो। उसकी मर्दानगी ख़त्म हो चुकी थी।

"तुम मुसलमानों को ख़त्म करने गए थे मालिक!"- बीवी अब इस तरह बोलने लगी जैसे उसकी निगाहों में इतने जरी और बहादुर शौहर का अहतराम ख़त्म हो चुका हो। वो कह रही थी-"मुसलमानों को ख़त्म करते करते तुम मुसलमानों की तादाद में इज़ाफा कर आए हो।"

"काहन ने कहा था के....."

"कौन काहन?"-बीवी ने उसकी बात काटते हुए कहा-"वो जो मंदिर मै बैठा फ़ालें निकालता रहता है? तुम जैसे आदमी अपनी क़िस्मत अपने हाथ में रखा करते हैं और अपनी क़िस्मत अपने हाथों बनाया और बिगाड़ा करते हैं..... तुम ने काहन से पूछा नहीं के उसकी फाल ने झूट क्यों बोला है?"

मालिक बिन औफ उठ खड़ा हुआ। उसकी सांसें तेज़ी से चलने लगी। उसकी आंखों में खून उतरने लगा। उसने दीवार के साथ लटकती हुई तलवार उतारी और बीवी से कुछ कहे बग़ैर बाहर निकल गया।

ताईफ में रात तो आई थी लेकिन वहां की सरगर्मियां और भाग दौड़ देख कर दिन का गुमां होता था। बाहर से ख़बरें आ रही थीं के मुसलमान ताईफ की तरफ बड़ी तेज़ी से बढ़े चले आ रहे हैं। लोग दिफाई तैयारियों में मसरूफ थे। सब से बड़ा मसला खुराक और पानी का था। बहुत से लोग पानी जमा करने के लिए होज़ बना रहे थे।

मालिक बिन औफ इन सरगर्मियों के शौर व गुल में से गुज़रता चला जा रहा था। लोग इतने मसरूफ थे के किसी को पता ही न चला के उनके दरमियान से उनका सालारे आला गुज़र गया है।

❁

इबादत गाह में वो काहन जिस ने कहा था के सक़ीफ और हवाज़न मुसलमानों को मक्का में बे खबरी में जा लेंगे, गहरी नींद में सोया हुआ था। उसे जगाने की कोई जुर्रत नहीं कर सकता था। वो इबादत गाह के किसी अंदरूनी हिस्से में सोया हुआ था। इबादत गाह के मुजाविर किसी बेरूनी कमरे में सोए हुए थे। इन्हें किसी के क़दमों की आहट सुनाई दी। ये उनके फराईज़ में शामिल था के काहन के कमरे तक किसी को न पहुंचने दें। दो तीन मुजाविर उठ कर बाहर आ गए। एक के हाथ में मशाल थी।

"मालिक बिन औफ!"-एक मुजाविर ने मालिक के रास्ते में आ कर कहा-"काहन जो इस वक़्त तुम्हें सोया हुआ नज़र आएगा, वो लात के हुज़ूर में गया

हुआ है। इस हालत में उसके पास जाओगे तो...."

मालिक बिन औफ ऐसी ज़हनी कैफियत में था जिस ने उसके दिल से काहन का तकद्दुस और ख़ौफ निकाल दिया था। एक तो वो बहुत बुरी शिकस्त खा कर आया था। दूसरे उसकी उस बीवी ने उसे धुत्कार दिया था जिसे वो दिल व जान से चाहता था। उसने मुजाविर के हाथ में पकड़े हुए मशाल के डण्डे पर हाथ मारा और उसके हाथ से मशाल छीन कर काहन के कमरे की तरफ चला गया। मुजाविर उस के पीछे दौड़े लेकिन वो कहान के कमरे में दाख़िल हो गया।

काहन मुजाविर के शोर से जाग उठा था। अपने कमरे में मशाल की रौशनी देख कर उठ बैठा मालिक बिन औफ ने मशाल दीवार में उस जगह लगा दी जो इसी मक़सद के लिए दीवार में बनाई गई थी।

"मुक़द्दस काहन!"—मालिक बिन औफ ने कहा—"मैं पूछने आया हूं के...."

"के तुम्हारी शिकस्त का सबब क्या हुआ"—काहन ने उसकी बात पूरी करते हुए कहा—"क्या मैं ने कहा नहीं था के एक हाम की कुर्बानी दो?"

"और मुक़द्दस काहन!"—मालिक बिन औफ ने कहा—"तुम ने ये भी कहा था के हाम न मिले तो अपने क़बीले से कहो के अपने खून की और अपनी जानों की कुर्बानी दें। तुम ने कहा था के हाम की तलाश में वक्त ज़ाय न करना....तुम ने कहा था के मुसलमान लड़ने के लिए तैयार नहीं होंगे।"

"क्या तू अपने देवता से बाज़ पुर्स करने आया है के दुश्मन ने तुम्हें शिकस्त क्यों दी है?"—काहन ने पूछा—"मैंने कहा था के पीठ न दिखाना....क्या तेरे लश्कर ने पीठ नही दिखाई? तेरे लश्कर में तो इतनी सी भी ग़ैरत नहीं थी के अपनी औरतों और अपने बच्चों की हिफाज़त करता।"

"मैं पूछता हूं तुम ने क्या किया?"—मालिक बिन औफ ने पूछा—"अगर सब कुछ हमें ही करना था तो तुम ने क्या कमाल दिखाया? तुम ने क्यों कहा था के मुसलमानों को उस वक्त पता चलेगा जब तुम्हारी तलवारें इन्हें काट रही होंगी? क्या तुम ने हमें धोका नहीं दिया? क्या ये दुरस्त नहीं के मोहम्मद(स०) सच्चा है जिस ने तुम्हारी फाल को झुटला दिया है? अगर तुम काहन न होते तो मैं तुम्हें क़त्ल कर देता... .अब ताईफ पर बहुत बड़ा खतरा आ रहा है। क्या तुम अपने देवता की बस्ती को बचा सकते हो? क्या मुसलमानों पर क़हर नाज़िल कर सकते हो?"

"पहली बात ये सुन ले औफ के बेटे!"—काहन ने कहा—"काहन को दुनिया की कोई ताक़त क़त्ल नहीं कर सकती। काहन की जब उम्र ख़त्म होती है तो देवता लात के वुजूद में तहलील हो जाता है। तुम मुझ पर तलवार उठा कर देख लो....और

दूसरी बात ये है के मुसलमान ताईफ तक पहुंच सकते है, यहां से ज़िन्दा वापस नही जा सकते।"

❁

जिस वक्त मालिक औफ काहन के कमरे में दाख़िल हुआ था उस वक्त किसी इन्सान की शक्ल का एक साया इबादत गाह की अक़बी दीवार पर रेंग रहा था। वो जो कोई भी था, वो अपनी जान का खतरा मोल ले रहा था। ये मालिक बिन औफ ही था जो सरदारी के रौब में रात के वक्त काहन के कमरे तक पहुंच गया था। ये इबादत गाह सदियों पुरानी थी। अक़बी दीवार में छोटा सा शिगाफ था। वो इन्सान जिस का साया दीवार पर रेंग रहा था, इस शिगाफ में दाख़िल हो गया। आगे ऊंची घास और झाड़ियां थीं। वो इन्सान घास और झाड़ियों में से यूं गुज़रने लगा के उसके क़दमों की आहट या हल्की सी सरसराहट भी सुनाई नहीं देती थी।

वो घास और झाड़ियों में से गुज़र कर उस चबूतरे पर जा चढ़ा जिस पर इबादत गाह की इमारत खड़ी थी। उस तरफ के दरवाज़े के किवाड़ दीमक खूरदा थे। वो इन्सान दीमक खाए हुए इन किवाड़ों में से गुज़र कर इबादत गाह में दाख़िल हो गया। आगे तारीक गुलाम गर्दिश थी। उस इन्सान ने जूते उतार दिये और दबे पांव आगे बढ़ता गया।

इस गुप अंधेरे में वो यूं चला जा रहा था जैसे पहले भी यहां कभी आया हो। वो गुलाम गर्दिश की भूल भुल्लयों में से गुज़रता काहन के कमरे के क़रीब पहुंच गया। उसे काहन की और किसी और की बातें सुनाई दीं। वो मालिक बिन औफ था जो काहन के साथ बातें कर रहा था। ये इन्सान रूक गया। इसे काहन के कमरे से आती हुई मशाल की रौशनी नज़र आ रही थी।

मालिक बिन औफ काहन से इतना मरऊब हुआ के वो सर झुकाए हुए वहां से निकल गया। ये इन्सान जो क़रीब ही कहीं छुप गया था, आगे बढ़ा। काहन दरवाज़े की तरफ देख रहा था। उसकी आंखें हैरत से खुल गईं क्योंके उसके सामने एक जवान लड़की खड़ी थी। इस लड़की को वो पहचानता था। ये वही यहूदी लड़की थी जिसे एक ज़ईफुल उम्र यहूदी काहन के पास तोहफे के तौर पर लाया था और इस लड़की के साथ उसने सोने के दो टुकड़े काहन की नज़र किये थे। ये काहन का इनाम या मुआवज़ा था। काहन ने उसे यक़ीन दिलाया था के सकीफ और हवाज़न के क़बीले मुसलमानों को मक्का में हमेशा के लिए खत्म कर देंगे। उसने इस बुढ़े यहूदी से कहा था के देवता लात का इशारा कभी ग़लत नहीं हो सकता।

"मैं हैरान हूं के तुम जैसे जहांदीदा बुर्जुग ने धोका खाया"-लड़की ने उसे कहा

था। "मुझे इस मकरूह काहन के किसी एक लफ्ज़ पर यक़ीन नहीं आ रहा था। मैंने तुम्हारे हुक्म से अपनी असमत कुर्बान कर दी।"

"मेरे हुक्म से नहीं"-बूढ़े यहूदी ने कहा था-"खुदाए यहूदा के हुक्म से। तुम्हारी असमत की कुर्बानी रायगां नहीं जाएगी।"

यहूदियों में ये रिवाज आम था जो अभी तक चला आ रहा है के मैदान-ए-जंग में आने से गुरेज़ करते थे। वो ऐसी चालें चलते थे के अपने दुश्मनों को आपस में लड़ा दिया करते थे। इस के लिए वो दौलत के साथ साथ अपनी बेटियों की असमत भी एक कामयाब हर्बे के तौर पर इस्तेमाल करते थे। यहूदियों के मआशरे और मज़हब में असमत और आबरू की कोई क़द्र कीमत नहीं थी लेकिन ये लड़की अपनी क़ौम से बहुत ही मुख़्तलिफ साबित हुई। वो बूढ़े यहूदी पर टूट टूट पड़ती थी और कहती थी के मुसलमानों का क़िला क़मा हो जाता तो वो फख़्र से कहती के उसने इस मक़सद के लिए अपनी असमत की कुर्बानी दी है और वो ये भी कहती थी के काहन ने इन्हें धोका दिया है।

रात को जब बूढ़ा यहूदी गहरी नींद सोया हुआ था, ये लड़की उठी। उस ने ख़ंजर अपने तकिये के नीचे रखा हुआ था। उसने ख़ंजर निकाला और अपने कपड़ों के अंदर छुपा लिया। वो दबे पांव बाहर निकल गई।

उस रात उसे रोक कर ये पूछने वाला कोई नहीं था के वो कौन है और कहा जा रही है। उस रात ताईफ में हर कोई जाग रहा था, औरतें अपने शिकस्त खूरदा मर्दो को कोस रही थीं और जिन के मर्द वापस नहीं आए थे वो बीन कर रही थी। गलियों में लोग आ जा रहे थे। लड़की उन के दरमियान से गुज़रती लात के इबादत गाह तक पहुंच गई। उसकी आंखों में खून उतरा हुआ था। वो उस दौर की औरतों में से एक थी जिन में मर्दाना शुजाअत कूट कूट कर भरी हुई थी। वो इबादत गाह के पिछवाड़े की दीवार से अंदर चली गई।

"हम जानते थे के हमारा जादू तुम्हें एक बार फिर हमारे पास ले आएगा"-काहन उस लड़की से कह रहा था-"आओ, दरवाज़े में खड़ी क्या कर रही हो!"

लड़की आहिस्ता आहिस्ता आगे बढ़ी और काहन के क़रीब जा रूकी।

"जादू नहीं, इन्तेक़ाम कहो"-लड़की ने अपनी धीमी आवाज़ में कहा जिस में क़हर और ग़ज़ब छुपा हुआ था-"मुझे इन्तेक़ाम का जादू यहां तक ले आया है।"

"क्या कह रही हो लड़की!"-काहन ने हैरत ज़दा मुस्कुराहट से कहा-"क्या तुम मालिक बिन औफ से इन्तेक़ाम लेना चांहती हो?.....वो जा चुका है। वो मुझे

क़त्ल करने आया था। क्या कोई इन्सान इतनी जुर्रत कर सकता है। के लात के काहन को क़त्ल कर दे?"

"हां-लड़की ने कहा-"एक इन्सान है जो लात के काहन को क़त्ल कर सकता है। वो लात का पुजारी नही। वो मैं हूं खुदाए यहूदा की पुजारन!"

लड़की ने पलक झपकते कपड़ों के अंदर से ख़ंजर निकाला और काहन के दिल में उतार दिया। इस के साथ ही लड़की ने काहन के मुंह पर हाथ रख दिया के उसकी ऊंची आवाज़ न निकल सके। लड़की ने ख़ंजर निकाला और काहन की शह रग काट दी। वो बड़े इतमीनान से कहान के कमरे से निकल आई और उस रस्ते जिस रस्ते वो आई थी, इबादत गाह के अहाते से निकल गई।

मालिक बिन औफ अपनी ख्वाबगाह में सर झुकाए बैठा था। उसकी चहीती बीवी उसके पास बैठी थीं गुलाम ने इत्तेला दी के एक अजनबी जवान औरत आई है जिस के कपड़े खून से लाल हैं और उसके हाथ में खून आलूद ख़ंजर है। मालिक बिन औफ जो नीम मुर्दा नज़र आ रहा था, उछल पड़ा और बोला के उसे अंदर ले आओ। उसकी और उसकी बीवी की नज़रें दरवाज़े पर जम गईं।

वो जवान औरत दरवाज़े में आन खड़ी हुई और बोली-"जो काम तुम नहीं कर सके थे वो मैं कर आई हूं। मैंने काहन को क़त्ल कर दिया है।"

मालिक बिन औफ पर सन्नाटा तारी हो गया। उसके चेहरे पर ख़ौफ की परछाईयां नज़र आने लगीं। उसने लपक कर तलवार उठाई और नियाम परे फैंक कर लड़की की तरफ बढ़ा। उसकी बीवी रास्ते में आ गई।

"इस लड़की ने जो कुछ किया है ठीक किया है"-बीवी ने उसे कहा-"तुम्हें झूटे सहारे और झूटे इशारे देने वाला मर गया है। अच्छा हुआ है।"

"तुम नहीं जानतीं हम पर क्या क़हर नाज़िल होने वाला है"-मालिक बिन औफ ने कहा।

"तुम पर कोई क़हर नाज़िल नही होगा"-यहूदी लड़की ने कहा-"क्या कहान ने तुम्हें कहा नहीं था के काहन को कोई क़त्ल नहीं कर सकता और काहन की जब उम्र पूरी हो जाती है तो वो देवाता लात के वुजूद में तहलील हो जाता है?.....अगर तुम में जुर्रत है तो लात के मुजाविरों से कहो के अपने काहन की लाश लात के वुजूद में तहलील कर दें। उस की लाश को बाहर रख दो। फिर देखो उसे गिद्ध और कुत्ते किस तरह खाते हैं।"

मालिक बिन औफ की बीवी ने मालिक के हाथ से तलवार ले ली और पलंग पर फैंक दी।

"होश में आ औफ के बेटे!"-बीवी ने उसे कहा-"अपनी क़िस्मत उस शख़्स के हाथ में न दे जो एक लड़की के ख़ंजर से क़त्ल हो गया है"-उसने गुलाम को बुलाया और उसे कहा-"ये लड़की हमारी मेहमान है। इसके गुसल और आराम का इन्तेज़ाम करो।"

मालिक बिन औफ के चेहरे से ख़ौफ का तआस्सुर ढलने लगा। बीवी ने उसके ख्यालों में इंक़ेलाब बरपा कर दिया।

सुबह तुलू हो रही थी जब शिकस्त और ग़म के मारे हुए मालिक बिन औफ को दो इत्तेलाऐं मिलीं। एक ये के रात को काहन क़त्ल हो गया है और मुजाविर ये कह रहे हैं के रात मालिक बिन औफ के सिवा काहन के कमरे में और कोई नहीं गया था और न रात के वक़्त किसी को वहां तक जाने की जुर्रत हो सकती है। मुजाविरों ने ये मशहूर कर दिया था के काहन को मालिक बिन औफ ने खुद क़त्ल किया है या क़त्ल करवाया है।

मालिक बिन औफ को दूसरी ख़बर ये मिली के मुसलमान जो ताईफ की तरफ बढ़े चले आ रहे थे, मालूम नहीं किधर चले गए हैं। ये खबर ऐसी थी जिस ने मालिक बिन औफ के हौसले में कुछ जान पैदा कर दी। उसने तेज़ रफ्तार घोड़ों पर दो तीन क़ासिद उस रास्ते की तरफ दौड़ा दिये जो हुनेन से ताईफ की तरफ आता था। इसके बाद वो इबादत गाह में चला गया। उस ने लोगों को बड़ी मुश्किल से यक़ीन दिलाया के वो मुक़द्दस काहन का क़त्ल करने की जुर्रत नहीं कर सकता। लोग पूछते थे के फिर क़ातिल कौन है। मालिक बिन औफ ने कहा के वो क़ातिल का सुराग़ जल्द ही लगा लेगा। वो यहूदी लड़की को सामने नहीं लाना चाहता था। उसने लोगों की तवज्जह इधर से हटा कर मुसलमानों की तरफ कर दी जो ताईफ को मुहासरे में लेने के लिए बढ़े आ रहे थे वो इबादत गाह के अंदर चला गया। उसने मुजाविरों के साथ किसी तरह मुआमला तय कर लिया।

"लात के पुजारियो!"-एक बूढ़े मुजाविर ने बाहर आकर लोगों के हिरासां हुजूम से कहा-"हमारे मुक़द्दस काहन को किसी ने क़त्ल नहीं किया। वो देवता लात के वुजूद में घुल मिल गया है। देवता लात के हुक्म से अब मैं काहन हूं। जाओ, अपनी बस्ती को उस दुश्मन से बचाओ जो बढ़ा चला आ रहा है।"

मालिक बिन औफ जब अपने घर पहुंचा तो कुछ देर बाद उसके भेजे हुए क़ासिद वापस आ गए। उनहोंने बताया के उस रास्ते पर जो ताईफ की तरफ आता है, मुसलमानों का नाम व निशान भी नहीं।

मालिक बिन औफ ने अपने आप को धोके में न रखा। उसने अपने क़बीले के

सरदारों से कहा के मोहम्मद(स०) अपने दुश्मन को बख्शने वाला नहीं। वो किसी न किसी तरफ से जवाबी वार ज़रूर करेगा। उसने ऐलान किया के शहर के दिफाई इन्तेज़ामात में कोई कमी न रहने दी जाए।

❁

क़ासिदों ने मालिक बिन औफ को बिल्कुल सही इत्तेला दी थी के ताईफ के रास्ते पर मुसलमानों का नाम व निशान नज़र नहीं आता लेकिन मुसलमान सैलाब की तरह ताईफ की तरफ बढ़े चले आ रहे थे। उन्होंने रसूले अकरम(स०) के हुक्म से रास्ता बदल लिया था। बदला हुआ रास्ता बहुत लम्बा था लेकिन रसूले करीम(स०) ने इतना लम्बा रास्ता इख्तियार करने को फैसला इस लिए किया था के छोटा रास्ता पहाड़ियों और चट्टानों में से गुज़रता था। खड नाले भी थे। रसूले करीम(स०) ने अपने सालारों से कहा था के हुनेन के पहले तजुर्बे को न भूलो। मालिक बिन औफ बड़ा कांईया जंगजू है। आप(स०) ने फरमाया के ताईफ तक का तमाम इलाक़ा घात के लिए मोज़ूं है। मालिक बिन औफ वैसी ही घात लगा सकता है जैसी घात में उसने ख़ालिद(र०) बिन वलीद को तीरों से छलनी कर दिया था।

रसूले अकरम(स०) ने जो रास्ता ताईफ तक पहुंचने के लिए इख्तियार किया था वो वादी उलमलीह में से गुज़रता था और वादी उलक़र्न में दाखिल हो जाता था। आप(स०) अपने लश्कर को वादी उलक़र्न में से गुज़ारने की बजाए ताईफ के शुमाल मग़रिब में सात मील दूर निकल गए और नख़िब और सावीरा के इलाक़े में दाख़िल हो गए। ये इलाक़ा नशेब व फराज़ का था और इस में पहाड़ियों और चट्टानें न होने के बराबर थीं। मुजाहेदीन का लश्कर 5 फरवरी 630ई०(15 शिवाल 8 हिज्री) के रोज़ ताईफ के गर्दोनवाह में उस सिम्त से पहुंचा जो ताईफ वालों के वहम व गुमान में भी नहीं थी। मुजाहेदीने इस्लाम का कूच बड़ा ही तेज़ था। हराविल में बनू सलीम थे जिन के कमांडर ख़लिद(र०) बिन वलीद थे। तवक्क़ात के ऐन मुताबिक ताईफ तक दुश्मन कहीं भी नज़र न आया। इसकी वजह ये थी(जैसा के मोअररिख़ेन ने लिखा है) के मालिक बिन औफ अब खुले मैदान में लड़ने का ख़तरा मोल नहीं ले सकता था।

हुनेन के मआरके में ज़्यादा तर नुक़सान बनू हवाज़न का हुआ था। क़बीला सक़ीफ लड़ा था लेकिन जो टक्कर बनू हवाज़न ने ली थी वो बनू सक़ीफ को लेने का मौक़ा नहीं मिला था। फिर भी सक़ीफ पस्पा हो आए थे। रसूले करीम इस ख़तरे से बे ख़बर नहीं थे के अहल सक़ीफ ताज़ा दम है और वो अपने शहर के दिफाअ में लम्बे अर्से तक लड़ेंगे।

मालूम नहीं ये किस की ग़लती थी के मुसलमान शहर की दीवार के ख़तरनाक

हद तक क़रीब जा रूके। वहां वो पड़ाव करना चाहते थे। अचानक अहल-ए-सक़ीफ दीवारों पर नमूदार हुए और उन्होंने मुसलमानों पर तीरों का मीना बरसा दिया। बहुत से मुसलमान ज़ख्मी हुए और कुछ शहीद हो गए। मुसलमान पीछे हट आए। रसूले करीम ने हज़रत अबु बकर सिद्दीक़(र०) को मुहासरे का कमांडर मुक़र्रर किया। हज़रत अबु बकर सिद्दीक़(र०) ने बड़ी तेज़ी से शहर का मुहासरा मुकम्मल कर लिया। उन्होंने इन रास्तो पर ज़्यादा दस्ते रखें जिन रास्तों से दुश्मन का फ़रार मुमकिन था।

शहर का दिफाअ बड़ा मज़बूत था। क़बीला सक़ीफ पूरी तरह तैयार था। मुसलमान तीरअंदाज़ी के सिवा और कोई कारर्वाई नहीं कर सकते थे। मुजाहेदीन ने यहां तक बे ख़ौफी के मुज़ाहेरे किए के शहर की दीवार के क़रीब जा कर अहल-ए-सक़ीफ के उन तीरअंदाज़ों पर तीर फैंके जो दीवारों पर थे। मुसलमान तीरअंदाज़ों के हवीश आगे बढ़ते और पीछे हट आते। मुसलमानों के जख़्मियों में वड़ी तेज़ी से इज़ाफा हो रहा था। मुहासरे के कमांडर हज़रत अबु बकर(र०) के वेटे अब्दुल्लाह(र०) बनू सक़ीफ के तीरों से शहीद हो गए।

पांच दिन इसी तरह गुज़र गए। तारीखे़ इस्लाम की मशहूर व मारूफ शख़्सियत सलमान फारसी(र०) लश्कर के साथ थे। जंग-ए-ख़ंदक में मदीना के दिफाअ के लिए जो ख़ंदक़ खोदी गई थी, वो सलमान फारसी(र०) की जंगी दानिश का कमाल था। इससे पहले अरब ख़ंदक़ के तरीक़ा-ए-दिफाअ से ना वाक़िफ थे। अब सलमान फारसी(र०) ने देखा के मुहासरा कामयाब नहीं हो रहा तो उन्हेंने शहर पर पत्थर फैंकने के लिए एक मंजनीक़ तैयार करवाई लेकिन ये कामयाब न हो सकी।

सलमान फारसी(र०) ने एक दबाबा तैयार करवाई। ये लकड़ी या चमड़े की वहुत वड़ी ढाल होती थी जिसे चन्द आदमी पकड़ कर आगे आगे चलते थे। खुद इस की ओट में रहते थे और इसकी ओट में बहुत से आदमी किले के दरवाज़े तक चले जाते थे। सलमान फारसी(र०) ने जो दबाबा तैयार करवाई, वो गाय की खाल की बनी हुई थी। एक हवीश इस दबाबा की ओट, में शहर के बड़े दरवाज़े तक पहुंचा ऊपर से आने वाले तीरों की तमाम तर बोछाड़ें दबाबा में लगती रही लेकिन दबाबा जब अपनी ओट में हवीश को ले कर दरवाज़े के क़रीब पहुंची तो दुश्मन ने ऊपर से दहकते हुए अंगारे और लोहे के लाल सुर्ख टुकड़े दबाबा पर इतने फैंके के खाल की दबाबा तीर रोकने के क़ाबिल न रही क्योंके ये कई जगहो से जल गई थी। दबाबा चुंके अरबों के लिए नई चीज़ थी जो पहले ही इस्तेमाल में बेकार हो गई इस लिए वो इसे वहीं फैंक कर पीछे को दौड़े। अहल-ए-सक़ीफ ने इन पर तीर बरसाए जिन से कई एक

मुजाहेदीन ज़ख्मी हो गए।

दस दिन और गुज़र गए। मुहासरे और दिफाअ की सूरत यही रही के मुसलमान तीर बरसाते हुए आगे बढ़ते थे और तीर खा कर पीछे हट आते थे। बनू सक़ीफ पर इस का ये असर हुआ के उन पर मुसलमानों की बे जिगरी और बेख़ौफी की दहशत तारी हो गई। यही वजह थी के उन्होंने किसी तरफ से बाहर आ कर मुसलमानों पर हमला करने की कोशिश नहीं की। आख़िर एक रोज़ रसूले अकरम ने अपने सालारों को इक्ळा किया और उन्हें बताया के मुहासरे की कामयाबी की कोई सूरत नज़र नहीं आती। आप(स०) ने सालारों से मशवरा तलब किया के क्या किया जाए। हज़रत अबु बकर(र०) और हज़रत उमर(र०) ने कहा के मुहासरा उठा लिया जाए और मक्का को कूच का हुक्म दिया जाए। खुद रसूले करीम मुहासरा उठाने के हक़ में थे जिसकी वजह ये थी के मक्का के इन्तेज़ामात आप(स०) की तवज्जेह के मोहताज थे। मक्का चन्द ही दिन पहले फतह किया गया था। ख़तरा था के ताईफ का मुहासरा तूल पकड़ गया तो मक्का में दुशमन को सर उठाने का मौका मिल जाएगा।

23 फरवरी 630ई० (4 ज़ीकदा 8 हिजरी) के रोज़ मुहासरा उठा लिया गया। मुहासरा उठाने का असर अहल-ए-सक़ीफ पर कुछ और होना चाहिए था लेकिन उन पर इस क़िस्म का ख़ौफ तारी हो गया के मुसलमाना जो अब जा रहे है। मालूम नहीं किस वक़्त टूट आएं और शहर पर यलग़ार कर के शहर की ईंट से ईंट बजा दें। खुद मालिक बिन औफ की सोच में इंकेलाब आ चुका था। काहन की झूटी पेशन गोई और मआरका हुनेन में मुसलमानों की ज़र्ब कारी ने उसे अपने अक़ीदों पर नज़र सानी के लिए मजबूर कर दिया था।

मुसलमान 26 फरवरी के रोज़ जुअराना के मुकाम पर पहुंचे जहां रसूले करीम(स०) ने माले ग़नीमत इक्ळा करने का हुक्म दिया था। इस माले ग़नीमत में छ: हज़ार औरतें और बच्चे थे और हज़ारहा ऊंट और बकरियां भी थीं फौजी साज़ व सामान का अंबार था। रसूले करीम(स०) ने दुश्मन की औरतों, बच्चों और जानवरों को अपने लश्कर में तक़सीम कर दिया।

मुजाहेदीन का लश्कर जुअराना से अभी चला न था के कबीला हवाज़न के चन्द एक सरदार रसूले करीम(स०) के हुज़ूर पहुंचे और ये ऐलान किया के हवाज़न के तमाम तर क़बीले ने इस्लाम कुबूल कर लिया है। इस के साथ ही इन सरदारों ने रसूले अकरम(स०) से दरख्वास्त की के उनका माल-ए-ग़नीमत उन्हें वापस दे दिया जाए। रसूले करीम(स०) ने पूछा के उन्हें माले ग़नीमत में से कौन सी चीज़ ज़्यादा अज़ीज़ है, अहल व अयाल या अमवाल? सरदारों ने कहा के उनकी औरतें और बच्चे उन्हें वापस

दे दिये जाऐं और बाक़ी माले ग़नीमत मुसलमान अपने पास रख लें।

रसूले करीम(स०) ने मुजाहेदीन के लश्कर से कहा के बनू हवाज़न को उनकी औरतें और बच्चे वापस कर दिये जायें। तमाम लश्कर ने औरतें और बच्चे वापस कर दिये।

बनू हवाज़न को तवक़्क़ो नही थी के रसूले करीम(स०) इस क़दर फय्याज़ी का मुज़ाहेरा करेंगे या मुजाहेदीन का लश्कर अपने हिस्से में आया हुआ माले ग़नीमत वापस कर देगा। मुसलमानों की इस फय्याज़ी का असर ये हुआ के क़बीला हवाज़न ने इस्लाम को दिलो जान से कुबूल कर लिया। हवाज़न के सरदार अपने अहल व अयाल को साथ ले कर चले गए। मुसलमानों की फय्याज़ी के असरात ताईफ के अंदर तक पहुंच गए। मुसलमान अभी जुअराना में ही थे के एक रोज़ मालिक विन औफ मुसलमानों की ख़ेमा गाह में आया और रसूले करीम(स०) के हुज़ूर पहुंच कर इस्लाम कुबूल कर लिया।

देवता लात की खुदाई हमेशा के लिए ख़त्म हो गई।

इस्लाम अब उस दौर में दाख़िल हो चुका था जब अरब के इर्द गिर्द के मुमालिक और इन से भी दूर के मुमालिक में इस्लाम के दुश्मन पैदा हो गए थे। इस्लाम जिस तेज़ी से फैल रहा था इस से आलमे कुफ्र पर लरज़ा तारी हो गया था। मुसलमान एक अज़ीम जंगी ताक़त बन गए थे लेकिन इस्लाम का फरोग़ इस जंगी ताक़त की वजह से न था बल्कि इस्लाम में ऐसी कशिश थी के जो कोई भी अल्लाह का ये पैग़ाम सुनता था वो इस्लाम कुबूल कर लेता था

मुसलमानों ने अपने जासूस दूर दूर तक फैला रखे थे। 630 ई० में जासूसों ने मदीना आ कर रसूले अक़रम(स०) को इत्तेला दी के रोमी शाम में फौज का बहुत बड़ा इजतेमा कर रहे हैं जिस से ज़ाहिर होता है के वो मुसलमानों से टक्कर लेना चाहते हैं। इसके बाद ये इत्तेला मिली के रोमियों ने अपनी फौज के कुछ दस्ते उरदन भेज दिए हैं।

अक्तूबर 630 बड़ा ही गर्म महीना था। झुल्सा देने वाली लू हर वक़्त चलती थी और दिन के वक़्त धूप में ज़रा सी देर ठहरना भी मुहाल था। इस मौसम में रसूले करीम(स०) ने हुक्म दिया के पेश्तर इसके के रोमी हम पर यलग़ार करें, हम उनके कूच से पहले ही उनका रास्ता रोक लें।

रसूले करीम(स०) के इस हुक्म पर मदीने के इस्लाम दुश्मन अनासिर हरकत में आ गए। इन में वे मुसलमान भी शामिल थे जिन्होंने इस्लाम कुबूल तो कर लिया था लेकिन अंदर से वो काफिर थे। इन मुनाफेक़ीन ने दरपर्दा उन मुसलमानों को जो जंग की तैयारियों मे मसरूफ हो गए थे, वरग़लाना और डराना शुरू कर दिया के इस मौसम में उन्होंने कूच किया तो गर्मी की शिद्दत और पानी की क़िल्लत से वो रास्ते में ही मर जाएंगे। इन मुखाल्फाना सरगर्मियों में यहूदी पेश पेश थे। इस के बावुजूद मुसलमानों की अकसरीयत ने रसूले अकरम(स०) के हुक्म पर लब्बेक कही। रसूले

खुदा(स०) ने तैयारियों में ज़्यादा वक़्त ज़ाय न किया। अक्तूबर के आख़िर में जो फौज रसूले खुदा(स०) की क़यादत में कूच के लिए तैयार हुई इस की तादाद तीस हज़ार थी जिस में दस हज़ार सवार शामिल थे। मुजाहेदीन के इस लशकर में मदीना के अलावा मक्का के और उन क़बायल के अफराद भी शामिल थे जिन्होंने सच्चे दिल से इस्लाम कुबूल किया था। मुजाहेदीन का मुक़ाबला उस ज़माने के मशहूर जंगजू बाज़ नतीनी शहनशाह हरकुल के साथ था।

मुजाहेदीने इस्लाम का ये अज़ीम लश्कर अक्तूबर 630ई० के आख़िर हफ्ते में रसूले करीम(स०) की क़यादत में शाम की तरफ कूच कर गया। तमाज़ती आफताव का ये आलम जैसे ज़मीन शोले उगल रही थी। रेत इतनी गर्म के घोड़ों और ऊंटों के पांव जलते थे उस साल क़हत की कैफियत भी पैदा हो गई थी इस लिए मुजाहेदीन के पास खुराक की कमी थी। मुजाहेदीन इस झुल्सा देने वाली गर्मी में पानी नहीं पीते थे के मालूम नहीं आगे कितनी दूर जा कर पानी मिले। थोड़ी ही दूर जा कर मुजाहेदीन के होंट खुश्क हो गए और उनके हलक़ में कांटे से चुभने लगे लेकिन उनकी ज़बान पर अल्लाह का नाम था और वो ऐसे अज़्म से सरशार थे जिस का अजर खुदा के सिवा और कोई नहीं दे सकता। एक लगन थी, एक जज़बा था के मुजाहेदीन ज़मीन व आसमान के उगले हुए शोलो का मुंह चिड़ाते चले जा रहे थे।

तक़रीबन चौदह रोज़ बाद ये लश्कर शाम की सरहद के साथ तबूक पर पहुंच गया। मोअररि्खेन लिखते हैं के अच्छे और खुशगवार मौसम में मदीना से तबूक का सफर चौदह दिनों का था जिसे उस वक़्त के मुसाफिरों की ज़बान में चौदह मंज़िल कहा जाता था। बाज़ मोअररि्खेन ने चौदह मंज़िल को चौदह दिन कहा है। तबूक में एक जासूस ने इत्तेला दी के रोमियों के जो दस्ते उरदन में आए थे वो इस वक़्त दमिश्क़ में हैं।

❁

रसूले करीम(स०) ने लश्कर को तबूक में खेमा ज़न होने का हुक्म दिया और तमाम सालारों को सलाह मशवरे के लिए तलब किया। सब को यही तवक़्क़ो थी के तबूक से कूच का हुक्म मिलेगा और दमिश्क़ में या दमिश्क़ से कुछ इधर रोमियों के साथ फैसला कुन मआरका होगा। रसूले करीम ने अपने उसूल के मुताबिक़ सब से मशवरा तलब किए। हर सालार ने ये ज़हन में रख कर के रोमियों से जंग होगी, मशवरे दिए लेकिन रसूले करीम(स०) ने ये कह कर सब को हैरत में डाल दिया के तबूक से आगे कूच नहीं होगा।

मोअररि्खेन लिखते हैं के रसूले खुदा(स०) के इस फैसले में के आगे नहीं बढ़ा

जाएगा। बहुत बड़ी दानिश थी। आप(स०) ने मदीना में ही कह दिया था के रोमियों का रास्ता रोका जाएगा। आप(स०) मुसतकि़र से इतनी दूर और इतनी शदीद गर्मी में नहीं लड़ना चाहते थे। इस की बजाए आप(स०) हरकुल को इश्तेआल दिला रहे थे के वो अपने मुसकि़र से दूर तबूक में आकर लड़े। मुजाहेदीन लड़ने के लिए गए थे। उनके दिलों मे कोई वहम और कोई खौ़फ नही था लेकिन जंग में एक खास़ कि़स्म की अक्ल व दानिश की ज़रूरत होती है। रसूले करीम(स०) ने अक्ल व दानिश को इस्तेमाल किया और मदीने की तरफ रोमियों का रास्ता रोकने का ये अहतेमाम किया के उस इलाके में जो क़बायल रोमियों के ज़ेर असर थे उन्हें अपने असर में लाने की मुहिम्मात तैयार कीं। इन में चार मुक़ामात खुसूसी अहमीयत की हायल हैं जहां इन मुहिम्मात को भेजा जाना था। इन में एक तो अक़बा था जो उस दौर में ऐला कहलाता था। दूसरा मुक़ाम मुकन्ना, तीसरा अज़रूह और चौथा हर्बा था। रसूले करीम(स०) ने इन तमाम क़बायल के साथ जंग करने की बजाए दोस्ती के मुहाएदे की शर्त भेजी जिन में एक ये थी के इन क़बायल के जो लोग इस्लाम कुबूल नही करेंगे इन्हें इन की मर्ज़ी के खिलाफ जंग में नही ले जाया जाएगा। दूसरी शर्त ये थी के उन पर कोई भी हमला करेगा तो मुसलमान इन के दिफआ को अपनी ज़िम्मेदारी समझेंगे। इस के बदले में इस्लामी हुकूमत उनसे जज़िया वसूल करेगी।

सब से पहले ऐला के फरमांरवां यूहन्ना ने खुद आ कर रसूल करीम की दोस्ती की पेशकश कुबूल की और जज़िया की बाक़ायदा अदाएगी की शर्त भी कुबूल कर ली। इस के फौरन बाद दो और ताक़तवर कबीलों ने भी मुसलमानों के साथ दोस्ती का मुहाएदा कर लिया और जज़िया की शर्त भी मान ली।

अल्जोफ एक मुक़ाम है जो उस दौर में दोमतुल जंदल कहलाता था। ये बड़े ही खौ़फनाक सहरा में वाके़ था। उस ज़माने की तहरीरों से पता चलता के इस मुक़ाम के इर्द गिर्द ऐसे रेतीले टीले और नशेब थे के इन्हें ना क़ाबिले तसखी़र समझा जाता था। दोमतुल जंदल का हुकमरां उकेदर बिन मालिक था। चुंके उसकी बादशाही इन्तेहाई दुशवार गुज़ार इलाके़ में थी इस लिए वो अपने इलाके़ को नाक़ाबिले तसखी़र समझता था। रसूले करीम ने जो वफद उकेद बिन मालिक के पास भेजा था वो ये जवाब ले कर आया के उकेद ने न दोस्ती कुबूल की है न वो जज़िया देने पर आमादा हुआ है बल्कि उसने ऐलानिया कहा है के मुसलमानों को वो अपना दुश्मन समझता है और वो इस्लाम की बेख़ कनी में कोई कसर उठा नहीं रखेगा।

रसूले करीम(स०) ने ख़ालिद बिन वलीद को बुलाया और इन्हें कहा के वो चार सौ सवार अपने साथ लें और उकेद बिन मालिक को ज़िन्दा पकड़ लाएं।

उकेद बिन मालिक अपने दरबार में ऊंची मसनद पर बैठा था। उसके पीछे दो नीम बरहना लड़कियां खड़ी मोरछल हिला रही थी। उकेद बिन मालिक के चेहरे पर वही रऊनत थी जो रिवायती बादशाहों के चेहरों पर हुआ करती थी।

"ऐ इब्ने मालिक!"-उसके बूढ़े वज़ीर ने जो उसकी फौज का सालार भी था, उठ कर कहा-"तेरी बादशाही को कभी ज़वाल न आए, क्या तुझे पता नहीं चला के ऐला, जर्बा, अज़रूह और मक़्ना के कबीलों ने मदीने के मुसलमानों की दोस्ती कुबूल कर ली है? आज दोस्ती कुबूल की है तो कल क़बीला कुरैश के मोहम्म्द(स०) को भी कुबूल कर लेंगे।"

"क्या हमारा बुर्जुग वज़ीर हमें ये मशवरा देना चाहता है के हम भी मुसलमानों के आगे घुटने टेक दें?"-उकेद बिन मालिक ने कहा-"हम ऐसा कोई मशवरा कुबूल नहीं करेंगे।"

"नही इब्ने मालिक!"-बूढ़े वज़ीर ने कहा-"मेरी उम्र ने जो मुझे दिखाया है वो तूने अभी नहीं देखा। मैं जानता हूं के तू मुसलमानों का सब से बड़ा दुश्मन है लेकिन मैं देख रहा हूं के तू अपने दुश्मन को इतना हक़ीर समझ रहा है के तू ये भी नही सोच रहा के मुसलमानों ने हमला कर दिया तो हम तुम्हारी बादशाही को किस तरह बचाएंगे।"

"सलीबे मुक़द्दस की क़सम!"-उकेद बिन मालिक ने कहा-"हमारे इर्द गिर्द जो इलाक़ा है वो हमारी बादशाही को बचाएगा। मेरे खौफनाक सहरा की रेत मुसलमानों का खून चूस लेगी। रेत और मिट्टी के जो टीले दोमतुल जंदल के इर्द गिर्द खड़े हैं ये खुदा ने मेरे संतरी खड़े कर रखे हैं हम पर कोई फतेह नहीं पा सकता।"

उस वक्त ख़ालिद(र०) बिन वलीद अपने चार सौ सवारों के साथ आधा रास्ता तय कर चुके थे। अगले रोज़ वो उस सहरा में दाख़िल हो गए जिसे मोअरर्ख़ों ने भी नाक़ाबिले तसखीर लिखा है। मुजाहेदीन के चेहरे रेत की मानिंद खुश्क हो गए थे। घोड़ों की चाल बता रही थी के ये मुसाफत और प्यास उन की बर्दाश्त से बाहर हुई जा रही है लेकिन ख़ालिद बिन वलीद(र०) की क़यादत मुजाहेदीन के दिलों में नई रूह फूंक दी थी।

दोमतुल जंदल अच्छा ख़ासा शहर था। इसके इर्द गिर्द दीवार थी। ख़ालिद बिन वलीद इसके करीब पहुंच गए और अपने सवारों को एक वसी नशेब में छुपा दिया। मुजाहेदीन की जिस्मानी कैफियत ऐसी थी के उन्हें कम अज़ कम एक दिन और एक रात आराम करने की ज़रूरत थी लेकिन ख़ालिद बिन वलीद(र०) ने अपने सवारों को तैयारी की हालत में रखा।

सूरज गुरूब हो गया। फिर रात गहरी होने लगी। चांद पूरी आब व ताब से चमकने लगा। सहरा की चांदनी बड़ी शफ्फाफ हो गई। ख़ालिद बिन वलीद(र०) अपने एक आदमी को साथ ले कर शहर की दीवार की तरफ चल पड़े। वो जायज़ा लेना चाहते थे के शहर का मुहासरा किया जाए इसके के लिए चार सौ सवार काफी नहीं थे। ज़्यादा से ज़्यादा ये कहा जा सकता था के शहर की नाका बन्दी कर दी जाए। दूसरी सूरत यल्ग़ार की थी।

ख़ालिद(र०) दीवार के दरवाज़े से ख़ासा पीछे एक ओट में बैठ गए। चांदनी इतनी साफ थी के दीवार के ऊपर से ख़ालिद(र०) नज़र आ सकते थे।

शहर का बड़ा दरवाज़ा खुला। ख़ालिद(र०) समझे के उकेदर फौज ले कर बाहर आ रहा है और वो उन पर हमला करेगा लेकिन उक़ेदर के पीछे पीछे चन्द सवार बाहर निकले और दरवाज़ा बन्द हो गया। ख़ालिद(र०) को याद आया के तबूक से रवांगी के वक्त रसूले करीम(स०) ने उन्हें कहा था-"उकेदर तुम्हें शायद शिकार खेलता हुआ मिलेगा।"

उकेदर बिन मालिक के मुताल्लिक़ मशहूर था के वो जैसे शिकार के लिए ही पैदा हुआ था। सहरा में शिकार रात को मिलता था क्योंके दिन के वक्त जानवर दुबके छुपे रहते थे। पूरे चांद की रात बड़े शिकार के लिए मोज़ूं समझी जाती थी। ये रसूले अकरम(स०) की इंटेली जन्स का कमाल था के आप(स०) ने दुश्मन की आदत और खसलतों का भी पता चला लिया था और आप(स०) ने ख़ालिद(र०) को उकेदर के मुताल्लिक़ पूरी मालूमात दे दी थीं।

ख़ालिद(र०) ने जब देखा के उकेदर इब्ने मालिक चन्द एक सवारों के साथ बाहर आया है तो उन्होंने उसके अंदाज़ का पूरी तरह जायज़ा लिया। ख़ालिद(र०) समझ गए के उकेदर को मालूम ही नहीं हो सका के चार सौ मुसलमान सवार उसके शहर के क़रीब पहुंच गए हैं और वो शिकार खेलने जा रहा है। ख़ालिद(र०) अपने आदमी के साथ रेंगते सरकते पीछे आए जब उकेदर अपने सवारों के साथ नज़रों से ओझल हो गया तो ख़ालिद(र०) दौड़ कर अपने सवारों तक पहुंच गए। उन्होंने कुछ सवार मुंतख़िब किए। अपने तमाम सवारों को उन्होंने तैयारी की हालत में रखा हुआ था। वो सवारों के एक हबीश को अपनी क़यादत में उस तरफ ले गए जिधर उकेदर गया था। ख़ालिद(र०) ने ये ख्याल रखा के उकेदर शहर से इतना आगे चला जाए के जब उस पर हमला हो तो शहर तक उसकी आवाज़ भी न पहुंच सके।

रात के सन्नाटे में इतने ज़्यादा घोड़ों की आवाज़ को दबाया नहीं जा सकता था। उकेदर और उसके साथियों को पता चल गया था के उनके पीछे घुड़ सवार आ रहे हैं।

उकेदर का भाई हस्सान भी उसके साथ था। उसने कहा के वो जाके देखता है के ये कौन हैं। उसने अपना घोड़ा पीछे को मौड़ा ही था के ख़ालिद(र०) ने अपने सवारों को हल्ला बोलने का हुक्म दे दिया। उकेदर को ख़ालिद(र०) और उनके सवारों की लल्कार से पता चला के ये मुसलमान हैं। हस्सान ने बरछी से मुक़ाबला करने की कोशिश की लेकिन मारा गया।

उकेदर अपने सवारों से ज़रा अलग था। ख़ालिद(र०) ने अपने घोड़े को ऐड़ लगाई और रूख उकेदर की तरफ कर लिया। उकेदर ऐसा बौखलाया के ख़ालिद(र०) पर वार करने की बजाए उसने रास्ते से हटने की कोशिश की। ख़ालिद(र०) ने उस पर किसी हथियार से वार न किया न घोड़े की रफ्तार कम की। उन्होंने घोड़ा उकेदर के घोड़े के करीब से गुज़ारा और बाज़ू उकेदर की कमर में डाल कर उसे उस के घोड़े से उठा कर अपने साथ ही ले गए।

"उकेदर बिन मालिक के शिकारी साथियों और मुहाफिज़ों ने देखा के उनका फरमानरवां पकड़ा गया और उसका भाई मारा गया है तो उन्हेंने ख़ालिद(र०) के सवारों का मुक़ाबले करने की बजाए भाग निकलने का रास्ता देखा। वो ज़मीन ऐसी थी के छुप कर निकल जाने के लिए नशेब, खड और टीले बहुत थे। उनमें कुछ ज़ख्मी हुए लेकिन निकल गए। शहर में दाख़िल हो कर उन्होंने दरवाज़ा बन्द कर दिया।

❁

ख़ालिद बिन वलीद(र०) ने उकेदर को पकड़े रखा और कुछ दूर जाकर घोड़ा रोका। उकेदर से कहा के उसके भाग निकलने की कोई सूरत नहीं। उन्होंने उसे घोड़े से उतारा, खुद भी उतरे।

"क्या तुम अपने आप को नाक़ाबिले तसखीर समझते थे?"–ख़ालिद(र०) ने पूछा।

"हां मैं अपने आप को नाक़ाबिले तसख़ीर समझता था"–उकेदर बिन मालिक ने कहा–"लेकिन तू ने मुझे अपना नाम नहीं बताया।"

"ख़ालिद(र०)!"–ख़ालिद(र०) ने जवाब दिया–"ख़ालिद(र०) बिन वलीद!"

"हां!"–उकेदर ने कहा–"मैंने ये नाम सुना है.....यहां तक ख़ालिद(र०) ही पहुंच सकता था।"

"नहीं उकेदर!"–ख़ालिद(र०) ने कहा–"यहां तक हर वो इन्सान पहुंच सकता है जिस के दिल में अल्लाह का नाम है और वो मोहम्मद(स०) को अल्लाह का रसूल मानता है।"

"मेरे साथ क्या सुलूक होगा?"–उकेदर ने पूछा।

"तेरे साथ वो सुलूक नहीं होगा जो तूने हमारे रसूल(स०) के ऐलची के साथ किया था।"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"हम से अच्छे सुलूक की तवक्क़ो रख इब्ने मालिक! अगर हम रोमी होते और हरकुल के भेजे हुए होते तो हम कहते के अपना ख़ज़ाना और शहर की बहुत ही खूबसूरत लड़कियां और शराब के मटके हमारे हवाले कर दे। पहले हम ऐश व इशरत करते फिर हरकुल के हुक्म की तामील करते।"

"हां!"-उकेदर ने कहा-"रोमी होते तो ऐसा ही करते, और वो ऐसा कर रहे हैं। वो कौन सा तोहफा है जो मैं हरकुल को नहीं भेजता। वलीद के बेटे! मुझ पर लाज़िम है के रोमियों को खुश रखो।"

"कहां है रोमी?"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"क्या तू उन्हें मदद के लिए बुला सकता है? हम तेरी मदद को आयेंगे। मैं तुझे क़ैदी बना कर नहीं, मोअज़्ज़िज़ मेहमान बना कर अल्लाह के रसूल(स०) के पास ले जा रहा हूं। तुझ पर कोई ज़ुल्म नहीं होगा, जब्र नहीं होगा, हम दुश्मनी का नहीं दोस्ती का पैग़ाम ले कर आए हैं। हमारे रसूल(स०) के सामने जाकर तुझे महसूस होगा के जिस का तू दुश्मन रहा है वो तो दोस्ती के क़ाबिल है।"

उकेदर बिन मालिक की जैसे ज़बान गुंग हो गई हो। उसने कुछ भी न कहा। उसका घोड़ा वहीं कहीं आवारा फिर रहा था। ख़ालिद(र०) ने अपने सवारों से कहा के उकेदर के घोड़े को पकड़ लाएं। सवार घोड़े को पकड़ लाए। ख़ालिद(र०) उकेदर को घोड़े पर सवार किया और तबूक को वापसी का हुक्म दे दिया।

तबूक पहुंच कर ख़ालिद(र०) ने उकेदर बिन मालिक को रसूले खुदा के हुज़ूर पेश किया। आप(स०) ने उसके आगे अपनी शर्तें रखीं लेकिन ऐसी शर्त का इशारा तक न किया के वो इस्लाम कुबूल कर ले। उसके साथ मेहमानों जैसा सुलूक किया गया। उस पर कोई ख़ौफ तारी न किया गया। उसे यही एक शर्त बहुत अच्छी लगी के मुसलमान उसकी हिफाज़त करेंगे। उसने जज़िया देने की शर्त मान ली और दोस्ती का मुहाएदा कर लिया।

"बेशक सिर्फ मुसलमान हैं जो मेरी मदद को पहुंच सकते हैं"-मुहाएदा कर के उसने कहा था।

जब उकेदर बिन मालिक ने भी दोस्ती का मुहाएदा कर के मुसलमानों को जज़िया देना कुबूल कर लिया तो कई और छोटे छोटे क़बीलों के सरदार तबूक में रसूले करीम के पास आ गए और अताअत कुबूल कर ली। इस तरह दूर दूर तक के इलाक़े मुसलमानों के ज़ेर-ए-असर आ गए और तमाम क़बायली मुसलमानों के इत्तेहादी बन गए। इन में मुताद्दिद क़बायल ने इस्लाम कुबूल कर लिया।

अब रोमियों से जं. की ज़रूरत नहीं रही थी। इन की पेशक़दमी का रास्ता रूक गया था, बल्कि हरकुल के लिए ख़तरा पैदा हो गया था के वो मुसलमानों से टक्कर लेने को आगे बढ़ा तो रास्ते के तमाम क़बायल उसे अपने इलाक़े में ही ख़त्म कर देंगे।

रसूले अकरम(स०) ने मुजाहेदीन के लश्कर को मदीना को वापसी का हुक्म दे दिया।

ये लश्कर दिसम्बर 630ई० में मदीना पहुंच गया।

इस्लाम अक़ीदे के लिहाज़ से और असकरी लिहाज़ से भी एक ऐसी ताक़त बन चुका था के रसूले करीम(स०) के भेजे हुए ऐलची कहीं भी चले जाते, उन्हें शाही मेहमान समझा जाता और इनका पैग़ाम अहतराम से सुना जाता था। रसूले करीम(स०) ने दूर दराज़ के कबीलों और छोटी बड़ी हुकूमतों को कुबूले इस्लाम के दावत नामें भेजने शुरू कर दिये। इन में बाज़ सरदार सरकश, खुदसर और कम फहम थे। इनकी तरफ रसूले करीम का पैग़ाम इस क़िस्म का होता था के कुबूले इस्लाम की बजाए अगर वो अपनी जंगी ताक़त आज़माना चाहते हैं तो आज़मा लें और ये सोच लें के शिकस्त की सूरत में उन्हें मुसलमानों का मुकम्मिल तौर पर मतीअ होना पड़ेगा और उनकी कोई शर्त कुबूल नहीं की जाएगी।

रसूले करीम(स०) ने ऐसी एक मुहिम ख़ालिद(र०) बिन वलीद की ज़ेर-ए-कमान यमन के शुमाल में नजरान भेजी। वहां क़बीला बनू हारिस बिन काब आबाद था। इन लोगों ने रसूले करीम(स०) के पैग़ाम का मज़ाक उड़ाया था। ख़ालिद(र०) मुजाहेदीन के एक सवार दस्ते को जिस की तादाद चार सौ थी, साथ ले कर जूलाई 631ई० में यमन को रवाना हुए। मशहूर मोअर्रिख़ इब्ने हशाम ने लिखा है के रसूल अल्लाह(स०) ने ख़ालिद(र०) से कहा के इन्हें हमले के लिए नहीं भेजा जा रहा बल्कि वो पैग़ाम ले कर जा रहे हैं। चूंके बनू हारिस सरकश ज़हनीयत की वजह से किसी खुश फहमी में मुब्तेला हैं इस लिए ख़ालिद(र०) इन्हें तीन बार कहें के वो इस्लाम कुबूल कर लें। अगर वो सरकशी से बाज़ न आएं और खूंरेज़ी को पसंद करें तो इन्हें खूंरेज़ी के लिए लल्कारा जाए।

ख़ालिद(र०) जिस जारहाना अंदाज़ से वहां पहुंचे और जिस अंदाज़ से उन्होंने बनू हारिस बिन काब को कुबूले इस्लान की दावत दी, इसने मतलूबा असर दिखाया। इस क़बीले ने बिला हील व हुज्जत इस्लाम कुबूल कर लिया। ख़ालिद(र०) जिन्हें तारीख़ ने फन-ए-हर्ब व ज़र्ब का माहिर और सफ़े अव्वल का सालार तस्लीम किया है, नजरान में छः महीने मुबल्लिग़ बने रहे। उन्होंने जब देखा के इस्लाम इन लोगों के

दिलों में उतर गया है तो ख़ालिद(र०) जनवरी 632ई० में वापस आ गए। उनके साथ बनू हारिस के चन्द एक सरकर्दा अफराद थे जिन्होंने रसूले करीम(स०) के दस्ते मुबारक पर बैत की। रसूले खुदा(स०) ने इन में से एक को अमीर मुक़र्रर किया।

इस्लाम के दुश्मनों ने जब देखा के मुसलमानों को मैदान जंग में शिकस्त देना मुमकिन नहीं रहा और ये भी देखा के इस्लाम लोगों के दिलों में उतर गया है तो उन्होंने इस्लाम को नुक़सान पहुंचाने का एक और तरीक़ा इख्तियार किया- ये था रिसालत और नबुव्वत का दावा-मुताद्दिद अफराद ने नबुव्वत का दावा किया जिन में बनी असद का तलीहा, बनी हनीफा का मुसल्लीमा और यमन का असवद अंसी ख़ास तौर पर क़ाबिल-ए-ज़िक्र है।

उसका नाम अक़ीला बिन काब था। चूंके उसका रंग काला था इस लिए वो असवद के नाम से मशहूर हुआ। असवद अरबी में काले को कहते हैं। वो यमन के मग़रबी इलाक़े के एक क़बीले अंस का सरदार था इस लिए उसे असवद अंसी कहते थे। तारीख़ में इस का यही नाम आया है। वो इबादत गाह का काहन भी रह चुका था। बिल्कुल सियाह रंगत के बावजूद उस में ऐसी कशिश थी के लोग उस के हल्के से इशारे का भी असर कर लेते थे। उस में मक़नातीस जैसी कुव्वत थी के औरतें उसके काले चेहरे को ना पसंद करने की बजाए उसके करीब होने की कोशिश करती थीं। उसने ये पुरइस्राररीयत इबादत गाह में हासिल की थी। काहन को लोग देवताओं का मंज़ूरे नज़र और ऐलची समझते थे।

इस इलाके के ज़्यादा तर लोगों ने इस्लाम कुबूल कर लिया था। असवद के अपने क़बीले में इस्लाम दाख़िल हो चुका था लेकिन असवद ने इन के खिलाफ़ कभी कोई बात नहीं की थी जैसे इन लोगों के साथ उसका कोई ताल्लुक़ ही न हो। बाज़ मोअररिख़ेन ने लिखा है के वो खुद भी मुसलमान हो गया था।

उस वक्त यमन का हुक्मरान बाज़ान नाम का एक ईरानी था। ईरान का शहनशाह खुसरो परवेज़(किसरा)था। रसूले करीम(स०) ने दूर के मुल्कों के जिन बादशाहों को कुबूले इस्लाम के खुतूत लिखे थे, इन में शहनशाह ईरान भी था। उसे ख़त देने के लिए रसूल अल्लाह(स०) ने अब्दुल्लाह बिन हज़ाफा(र०) को भेजा था। अब्दुल्ला(र०) ने खुसरो परवेज़ के दरबार में उसे ख़त दिया। उसने ख़त किसी और को दे कर कहा के उसे इस का तर्जुमा सुनाया जाए।

उसे जब ख़त उसकी ज़बान में सुनाया गया तो वो आग बगूला हो गया। उसने गुस्से से बावला हो कर ख़त को बुरी तरह फाड़ कर उसके पुर्ज़े फैंक दिए और

अब्दुल्ला बिन हज़ाफा(र०) को दरबार से निकाल दिया। अब्दुल्ला(र०) इतनी दूर की मुसाफत से आए और रसूल अल्लाह(स०) के हुज़ूर बताया के शहंशाह ईरान ने ख़त फाड़ डाला है।

खुसरो परवेज़ का गुस्सा ख़त फाड़ने से ठण्डा नहीं हुआ था। यमन पर ईरान की हुक्मुरानी थी और बाज़ान वहां का गर्वनर था। शहनशाह-ए-ईरान ने अपने गर्वनर बाज़ान को ख़त भेजा के हिजाज़ में मोहम्मद(स०) नाम का कोई आदमी है जिस ने नबुव्वत का दावा कर रखा है। उसने लिखा के रसूले करीम को ज़िन्दा पकड़ कर या आप(स०) का सर काट कर उसके दरबार(ईरान) में पेश किया जाए।

बाज़ान ने ये ख़त अपने दो आदमियों को दे कर मदीना भेज दिया। मोअररिख़ों में इख़्तेलाफ पाया जाता है। बाज़ लिखते हैं के बाज़ान ने इन आदमियों को रसूल अल्लाह को पकड़ लाने या क़त्ल कर के आप(स०) का सर लाने के लिए भेजा था, और कुछ मोअररिख़ों ने लिखा है के बाज़ान ने इस्लामम तो कुबूल नहीं किया था लेकिन वो हुज़ूरे अकरम(स०) से इतना मुतास्सिर था के आप(स०) को अपने शहनशाह के इरादे से ख़बरदार करना चाहता था। बहर हाल मोअररिख़ इस वाक़ेया पर मुत्ताफिक़ हैं के बाज़ान के भेजे हुए दो आदमी रसूले खुदा(स०) के हां गए थे और खुसरो परवेज़ ने जो ख़त बाज़ान को लिखा था वो आप(स०) के हुज़ूर पेश किया था।

रसूले खुदा(स०) ने ख़त देखा और आप(स०) ने मुस्कुरा कर कहा के शहनशाह ईरान गुज़िश्ता रात अपने बेटे शेखया के हाथों क़त्ल हो गया है और आज सुबह से ईरान का शहनशाह शेखया है।

"गुज़िश्ता रात के क़त्ल की ख़बर मदीना में इतनी जल्दी कैसे पहुंच गई?"-बाज़ान के एक आदमी ने पूछा और कहने लगा-"क्या ये हमारे शहनशाह की तौहीन नहीं के ये ग़लत ख़बर फैली दी जाए के उसे उस के बेटे ने क़त्ल कर दिया है?"

"मुझे मेरे अल्लाह ने बताया है"-रसूले करीम ने कहा-"जाओ, बाज़ान को बता दो के उसका शहनशाह अब खुसरो नहीं शेखया है"-रसूले खुदा(स०) को ये खबर बज़रिया इल्हाम मिली थी।

बाज़ान के आदमी वापस गए और उसे बताया के रसूल अल्लाह(स०) ने क्या कहा है। तीन चार दिनों बाद बाज़ान को अपने नए शहनशाह शेखयान का ख़त मिला जिस में तहरीर था के खुसरो परवेज़ को फलां रात ख़त्म कर दिया गया है ये वही रात थी जो हुज़ूर ने बताई थी। कुछ दिनों बाद बाज़ान को रसूले करीम(स०) का ख़त मिला के वो इस्लाम कुबूल कर ले बाज़ान पहले ही आप(स०) से मुतास्सिर था। इल्हाम ने

उसे और ज़्यादा मुतास्सिर किया। रसूल अल्लाह(स०) ने उसे ये भी लिखा था के इस्लाम कुबूल कर लेने की सूरत में वो बदस्तूर यमन का हाकिम रहेगा और उसकी हुकमरानी का तहफ्फुज़ मुसलमानों की ज़िम्मदारी होगी।

बाज़ान ने इस्लाम कुबूल कर लिया और वो हाकिम-ए-यमन रहा। थोड़े ही अर्से बाद फौत हो गया। रसूले अकरम(स०) ने यमन को कई हिस्सों में तक़सीम कर दिया और हर हिस्से का अलग हाकिम मुक़र्रर किया। बाज़ान का बेटा जिस का नाम शहर था, रसूले करीम(स०) ने उसे सनआ और उसके गर्दोनवाह के इलाक़े का हाकिम बनाया।

❁

ये ख़बर उड़ी थी के असवद अंसी यमन के इलाक़े मज़हज में चला गया है और एक ग़ार में रहता है जिस का नाम खुब्बान है। अचानक ये खबर हवा की तरह सारे यमन में फैल गई के असवद ग़ार से निकल आया है और उसे ख़ुदा ने नबुव्वत अता की है और अब वो असवद अंसी नहीं" रहमानुल यमन" है। ख़बर सुनाने वाले किसी शक का इज़हार नहीं करते थे बल्कि वो मुसद्देक़ा खबर सुनाते थे के असवद को नबुव्वत मिल गई है। उन्होंने इसे नबी तस्लीम कर लिया था।

"जाकर देखो"-खबर सुनाने वाले कहते फिरते थे-"मज़हज जाकर देखो। रहमानुल यमन मुर्दों को ज़िन्दा करता है। आग के शौलों को फूल बना देता है....चलो लोगो, चलो। अपनी रूह की निजात के लिए चलो।"

जिन लोगों ने इस्लाम कुबूल कर लिया था, वो भी मज़हज को उठ दौड़े। असवद चूंके काहन रह चुका था इस लिए लोग पहले ही तस्लीम करते थे के देवताओं ने उसे कोई पुरइसरार ताक़त दे रखी है। अब उस ने नबुव्वत का दावा किया तो लोगों ने फौरन उस दावे को तस्लीम कर लिया।

ग़ार खुब्बान के सामने हर लम्हा लोगों का हुजूम रहने लगा। वो असवद की एक झलक देखने को बेताब रहते थे। वो दिन को थोड़े से वक़्त के लिए बाहर निकलता था और ग़ार के क़रीब एक ऊंची जगह खड़े हो कर लोगों को कुंआन की आयात की तर्ज़ के जुमले सुनाता और कहता था के उसके पास एक फरिश्ता आता है जो उसे हर रोज़ खुदा की तरफ से एक आयत और राज़ की एक दो बातें बता जाता है।

वो लोगों को अपने मोअजज़े भी दिखाया करता था, मसलन जलती हुई मशाल अपने मुंह में डाल लिया करता और जब मशाल उसके मुंह से निकलती तो वो जल रही होती थी। उसने एक लड़की को हवा में मोल्लिक़ कर के भी दिखाया। ऐसे

ही चन्द और शोब्दे थे जो वो लोगों को दिखाता था और लोग इन्हें मोअजज़े कहते थे। एक तो वो चर्ब ज़बान था, दूसरे वो खुश लहान था। उसके बोलने का अंदाज़ पुरकशिश था।

उस ने यमन वालो को ये नारा दे कर के यमन, यमन वालों का है, उन के दिल मोह लिए थे। यमनी बड़ी लम्बी मुद्दत से ईरानियों के ज़ेर-ए-नगीं चले आ रहे थे। ईरानी तसल्लुत बाज़ान के कुबूले इस्लाम के साथ ही ख़त्म हो गया तो हिजाज़ के मुसलमान आ गए, इस के अलावा वहां यहूदी, नुसरानी और मजूसी भी मौजूद थे। ये सब इस्लाम की बेख़ कनी चाहते थे। उन्होंने असवद अंसी की नबुव्वत के क़दम जमाने में दरपर्दा बहुत काम किया।

असवद अपनी नबुव्वत की सदाक़त एक गधे के ज़रिये साबित किया करता था। उसके सामने एक गधा लाया जाता। वो गधे को-कहता "बैठ जा" -गधा बैठ जाता। फिर कहता- "मेरे आगे सर झुका" -गधा सिजदे के अंदाज़ से सर झुका देता। गधे के लिए उसका तीसरा हुक्म होता- "मेरे आगे घुटने टेक दे" -गधा उसके आगे घुटने टेक देता।

देखते ही देखते असवद अंसी को यमन के लोगों ने नबी मान लिया। असवद ने इन लोगों को एक फौज की सूरत में मुनज़्ज़म कर लिया।

उसने सब से पहले नजरान का रूख किया। वहां रसूले करीम के मुक़र्रर किए हुए दो मुसलमान हाकिम थे-ख़ालिद बिन सईद और उमरो बिन हज़्म-असवद के साथ बहुत बड़ा लश्कर था जो नजरान में दाख़िल हुआ तो वहां के बाशिंदे भी उसके साथ मिल गए। दोनो मुसलमान हाकिमों के लिए भाग निकलने के सिवा कोई चारा न था। उन्होंने राह-ए-फरार इख़्तियार की।

असवद अंसी इस पहली फतह से सरशार हो गया और उसके लश्कर की तादाद भी ज़्यादा हो गई। उसने नजरान में अपनी हुकूमत क़ायम कर के सनआ की तरफ पेशक़दमी की। वहां बाज़ान का बेटा शहर हुकमरान था। उसके पास फौज थोड़ी थी फिर भी वो मुक़ाबले में डट गया। उसकी लल्कार ने अपनी फौज के क़दम उखड़ने न दिए लेकिन शहर बिन बाज़ान चूंके अपनी फौज का हौसला क़ायम रखने के लिए सिपाहियों की तरह लड़ रहा था इस लिए शहीद हो गया। इससे उस की फौज का हौसला टूट गया।

असवद के खिलाफ लड़ने वाले वो यमनी भी थे जिन्होंने इस्लाम कुबूल नहीं किया था लेकिन शिकस्त की सूरत में जान का ख़तरा मुसलमानों को था। इन्हें असवद के लश्कर के हाथों क़त्ल होना था। असवद किसी मुसलमान को नहीं

बख्शता था। चुनांचे मुसलमान जानें बचा कर निकल गए और मदीने जा पहुंचे।

असवद अंसी जो अब रहमानुल यमन कहलाता था, हिज़र मोत, बहरीन, अहसा और अदन तक के तमाम इलाक़ों पर भी कब्ज़ा कर के तमाम यमन का बादशाह बन गया था।

इस्लाम के लिए ये बहुत बड़ा चैलंज था। शुमाल की तरफ से रोमियों के हमले का ख़तरा हर वक़्त मौजूद रहता था। इस ख़तरे को ख़त्म करने के लिए रसूल-ए-खुदा(स०) ने एक लश्कर रोमियों पर हमले के लिए तैयार किया था जिस के सालार-ए-आला बाईस साल उम्र के एक नौजवान उसामा(र०) थे जो रसूले करीम(स०) के अज़ाद किए हुए गुलाम ज़ेद बिन हारसा(र०) के बेटे थे। ज़ेद(र०) भी सालार थे और वो मूता के मआरके मे शहीद हो गए थे। यमन को एक खुद साख्ता नबी से निजात दिलाने के लिए बहुत बड़े लश्कर की ज़रूरत थी लेकिन लश्कर रोमियों के खिलाफ लड़ने के लिए जा रहा था। अगर रोमियों पर हमला मुल्तवी कर के इस लश्कर को यमन भेज दिया जाता तो रोमी ये फायदा उठा सकते थे के मदीने पर हमला कर देते। ये ख़तरा मोल नहीं लिया जा सकता था। रसूले अकरम(स०) ने दूसरी सूरत ये सोची के यमन में जो मुसलमान मजबूरी के तहत रह गए हैं और जिन्होंने असवद अंसी की इताअत कुबूल कर ली है, इन्हे असवद का तख्ता उलटने के लिए इस्तेमाल किया जाए। इस तरीक़ा कार को हुज़ूर के तमाम सालारों ने पसंद किया। इस मक़सद के लिए चन्द ज़हीन क़िस्म के अफराद को यमन भेजा था।

रसूले अकरम(स०) की नज़र इन्तेख़ाब क़ैस बिन हुबीरा पर पड़ी। आप(स०) ने इन्हें बुला कर यमन जाने का मक़सद समझाया और पूरी तरह ज़हन नशीन कराया के इन्हें अपने आप को छुपा कर वहां के मुसलमानों से मिलना मिलाना है और एक ज़मीं दोज़ जमाअत तैयार करनी है जो इस झूटे नबी और ऐश व इशरत में डूबे हुए खुदसाख्ता बादशाह का तख्ता उलटे। आप(स०) ने क़ैस बिन हुबीरा से ये भी कहा के वो मदीना से अपनी रवांगी को भी खुफ़िया रखें और यमन तक इस तरह पहुंचे के इन्हें कोई देख न सके।

इस पुर ख़तर मुहिम को और ज़्यादा मुसतहकम करने के लिए रसूले अकरम ने वब्र बिन हनेस को एक ख़त दे कर ये कहा के यमन में कुछ मुसलमान सरदार मौजूद हैं जिन्होंने मजबूरी के तहत असवद की इताअत कुबूल कर ली है। ये ख़त इन्हें पढ़वा कर ज़ाए कर देना है और बाक़ी काम क़ैस बिन हुबीरा करेंगे।

❁

असवद अंसी ने जब सनआ पर हमला किया था तो वहां के हाकिम शहर बिन

बाज़ान ने मुक़ाबला किया लेकिन वो शहीद हो गया था। उसकी जवां साल बीवी जिसका नाम आज़ाद था, असवद के हाथ चढ़ गई। आज़ाद ग़ैर मामूली तौर पर हसीन ईरानी औरत थी। उसने असवद को कुबूल करने से इन्कार कर दिया लेकिन असवद ने उसे जबरन अपनी बीवी बना लिया था। आज़ाद अब इस शख़्स की असीर थी जिससे वो इन्तेहाई दर्जे की नफरत करती थी। अकेली औरत कर ही क्या सकती थी। उसकी खुश नसीबी सिर्फ इतनी थी के असवद औरतों का दिलदादा था। उसने अपने हरम में बीसियों औरतें रखी हुई थीं। उसे तोहफे में भी नौजवान लड़कियां मिला करती थीं। वो हर वक़्त औरत और शराब के नशे में बदमस्त रहता था।

रसूले अकरम(स०) के भेजे हुए क़ैस बिन हुबीरा चोरी छुपे सफर कर के और भेस बदल कर सनआ पहुंचे। असवद ने सनआ को अपना दारऊल हुकूमत बना लिया था। उधर वब्र बिन हनेस एक मुसलमान सरदार के हां ख़त ले कर पहुंच गए। इस मुसलमान सरदार ने ये यक़ीन तो दिलाया के वो ऐसे चन्द एक मुसलमान सरदारों को इक्ळा करेगा जिन्होंने दिल से असवद की इताअत कुबूल नहीं की लेकिन असवद का तख़्ता उलटना मुमकिन नज़र नहीं आता क्योंके वो सिर्फ बादशाह ही नहीं यमन के बाशिंदे उसे अपना नबी मानते हैं।

क़ैस बिन हुबीरा एक ऐसे ठिकाने पहुंच गए जहां रसूले करीम के शैदाई मुसलमान मौजूद थे इन मुसलमानों ने भी वही बात कही जो मुसलमान सरदार ने कही थी लेकिन इन मुसलमानों ने ऐसी कोई बात न की के वो इस ज़मीं दोज़ तहरीक में शामिल नहीं होंगे। उन्होंने पुर अज़्म लहजे में कहा के वो खुफिया तरीक़े से वफादार मुसलमानों को इक्ळा कर लेंगे।

"हम इस झूटे नबी को ख़त्म करने के लिए ज़्यादा इन्तेज़ार नहीं कर सकते"–एक मुसलमान ने कहा–"जूं जूं वक़्त गुज़रता जा रहा है इस की मक़बूलियत में इज़ाफा हो रहा है। क्या तुम लोग ये नहीं सोच सकते के इस शख़्स को क़त्ल कर दिया जाए?"

"क़त्ल कौन करेगा?"–एक और मुसलमान ने पूछा–"और इसे कहां क़त्ल किया जाएगा? वो महल से बाहर निकलता ही नहीं। ये भी मालूम हुआ है के महल के इर्द गिर्द मुहाफिज़ों का बड़ा सख़्त पेहरा होता है।"

"क्या हम में कोई ऐसा आदमी नहीं जो इस्लाम के नाम पर अपनी जान कुर्बान कर दे?" क़त्ल का मशवरा देने वाले मुसलमान ने पूछा।

"इस तरह जान देने से क्या हासिल के जिसे क़त्ल करना है उस तक पहुंच न सकें!"–उस मुसलमान ने कहा–"बहर हाल हमें खुफिया तरीक़े से ये तहरीक चलानी

है के कम अज़ कम मुसलमान बग़ावत के लिए तैयार हो जाएं।

❁

असवद अंसी ने यमन पर कब्ज़ा कर के पहला काम ये किया था के ईरान के शाही और दीगर आला ख़ानादानों के जो ईरानी उसके हाथ चढ़ गए थे उन्हें उसने मुख़्तलिफ तरीक़े से ज़लील व ख्वार कर के रख दिया था। उनकी हालत ज़र ख़रीद गुलामों से बदत्तर कर दी गई थी लेकिन असवद की हुकूमत में सब से बड़ी कमज़ोरी ये थी के उसके पास न कोई तर्जुबा कार सालार था न कोई कारोबारे हुकूमत चलाने वाला क़ाबिल आदमी था। ये ख़तरा तो वो हर लम्हा महसूस करता था के मुसलमान उस पर हमला करेंगे। वो खुद असकरी ज़हन नहीं रखता था इस कमी को पूरा करने के लिए उसने ईरानियों का ही तआवुन हासिल करना था।

उसके सामने तीन नाम आए। इन में एक ईरानी का नाम क़ैस बिन अब्द यगूस था जो बाज़ान के वक़्तो का माना हुआ सालार था। दूसरे दो हुकूमत चलाने में महारत रखते थे। एक था फिरोज़ और दूसरा दाजोया। फिरोज़ ने इस्लाम कुबूल कर लिया था और वो सही मानों में और सच्चे दिल से मुसलमान था। असवद ने क़ैस बिन अब्द यगूस को सालारे आला बना दिया और फिरोज़ और दोज़ाया को वज़ीर मुर्क़रर किया। तीनों ने असवद की वफादारी का हलफ उठाया और उसे यक़ीन दिलाया के वो हर हालत में उसके वफादार रहेंगे।

एक रोज़ फिरोज़ बाहर कहीं घूम फिर रहा था के एक गदागर ने उसका रास्ता रोक लिया और हाथ फैलाया।

"तू मुझे माजूर नज़र नहीं आता"–फिरोज़ ने उसे कहा–"अगर तू माजूर है तो तेरी माजूरी यही है के तुझ में ग़ैरत और खुद्दारी नहीं।"

"तूने ठीक पहचाना है"–गदागर ने अपना हाथ पीछे करते हुए कहा–"मेरी माजूरी यही है के मेरी ग़ैरत मुझ से छिन गई है....और मैं देख रहा हूं के तेरी भी यही माजूरी है। मैं ने भीख के लिए हाथ नहीं फैलाया। मैं अपनी ग़ैरत वापस मांग रहा हूं।"

"अगर तू पागल नही हो गया तो मुझे बता के तेरे दिल मे क्या है"–फिरोज़ ने गदागर से पूछा।

"मेरे दिल मे अल्लाह के उस रसूल का नाम है जिस का तू शैदाई है"–गदागर ने फिरोज़ की आंखों में आंखें डाल कर कहा–"अगर असवद अंसी की शराब तेरी रगों में चली नही गई तो मैं झूट नहीं कह रहा के तूने दिल पर पत्थर रख कर असवद की वज़ारत कुबूल की है।"

फिरोज़ ने इधर उधर देखा। वो समझ गया के ये मदीना का मुसलमान है

लेकिन उसे ये ख़तरा भी महसूस हुआ के ये असवद का कोई मुख़्बिर भी हो सकता है।

"मत घबरा फिरोज़!"-गदागर ने कहा-"मै तुझ पर ऐतबार करता हूं तू मुझ पर ऐतबार कर। मै तुझे अपना नाम बता देता हूं....क़ैस बिन हुबीरा....मुझे रसूल अल्लाह(स०) ने भेजा है।"

"क्या तू सही कहता है के रसूल अल्लाह(स०) ने तुझे मेरे पास भेजा है?"-फिरोज़ ने इश्तियाक़ से पूछा।

"नहीं"-क़ैस ने कहा-"रसूल अल्लाह(स०) ने ये कहा था के वहां चले जाओ। अल्लाह के सच्चे बंदे मिल जाएंगे।"

"तुझे किस ने बताया है के मैं सच्चा मुसलमान हूं?"-फिरोज़ ने पूछा।

"अपने रसूल का नाम सुन कर रिसालत के शैदायों की आंखों में जो चमक पैदा हो जाती है वो मैं ने तेरी आंखों में देखी है"-क़ैस ने कहा-"तेरी आंखों में चमक कुछ ज़्यादा ही आ गई है।"

फिरोज़ ने क़ैस से कहा के वो चला जाए। उसने क़ैस को एक और जगह बता कर कहा के कल सूरज गुरूब होने से कुछ देर पहले वो वहां बैठा गदागरी की सदा लगाता रहे।

❂

अगली शाम फिरोज़ उस जगह से गुज़रा जो उसने क़ैस बिन हुबीरा को बताई थी। फिरोज़ के इशारे पर क़ैस गदागरों के अंदाज़ से उठ कर फिरोज़ के पीछे पीछे हाथ फैला कर चल पड़ा।

"रसूले खुदा(स०) तक पैग़ाम पहुंचा देना के आप(स०) के नाम पर जान कुर्बान करने वाला एक आदमी असवद अंसी के साए में बैठा है"-फिरोज़ ने चलते चलते इधर उधर देखे बग़ैर धीमी सी आवाज़ में कहा-"और मैं हैरान हूं के इतनी जंगी ताक़त के बावुजूद रसूल अल्लाह(स०) ने यमन पर हमला क्यों नही किया।"

"हरकुल का लश्कर उर्दन में हमारे सर पर खड़ा है"-क़ैस ने कहा-"हमारा लश्कर रोमियों पर हमला करने जा रहा है। क्या हम दो आदमी पूरे लश्कर का काम नहीं कर सकेंगे?"

"क्या तूने ये सोचा है के दो आदमी क्या कर सकते हैं?"-फिरोज़ ने पूछा।

"क़त्ल"-क़ैस ने जवाब दिया और कहने लगा-"मुझ से ये न पूछना के असवद को किस तरह क़त्ल किया जा सकता है। क्या तूने अपने चचा की बेटी आज़ाद को दिल से उतार दिया है?"

फिरोज़ चलते चलते रूक गया। उसके चेहरे पर कुछ और ही तरह की रौनक़

आ गई जैसे खून अचानक उबल पड़ा हो

"तूने मुझे रौशनी दिखा दी है"–उस ने कहा–"क़त्ल के सिवा कोई और रास्ता नही। मेरी चचाज़ाद बहन का नाम ले कर तूने मेरा काम आसान कर दिया है। ये काम मैं करूंगा। तू अपना काम करता रह...जा क़ैस! ज़िन्दा रहे तो मिलेंगे।"

मोअररिख़ों ने लिखा है के फिरोज़ के दिल में असवद की जो नफरत दबी हुई थी वो उभर कर सामने आ गई। उसने असवद अंसी के ईरानी सालार क़ैस बिन अब्द यग़ूस और दाज़ोया को अपना हमराज़ बना लिया। असवद का क़त्ल एक वज़ीर के लिए भी आसान नहीं था जो उसके साथ रहता था। असवद के मुहाफिज़ उसे हर वक़्त अपने नर्ग़े में रखते थे। सोच सोच कर इन तीनों ईरानियों ने ये फैसला किया के आज़ाद को इस काम में शरीक किया जाए लेकिन क़त्ल आज़ाद के हाथों न कराया जाए।

आज़ाद तक रसाई आसान नही थी। असवद को शक हो गया था के तीनों ईरानी उसे दिल से पसंद नहीं करते। उसने उन पर भरोसा कम कर दिया था। आज़ाद और फिरोज़ की वैसे भी कभी मुलाक़ात नहीं होती थी।

आज़ाद तक पैग़ाम पहुंचाने के लिए औरत की ही ज़रूरत थी। एक वज़ीर के लिए ऐसी औरत का हुसूल मुश्किल न था। फिरोज़ ने महल की एक अधेड़ उम्र औरत को अपने पास बुलाया। वो भी मुसलमान थी। फिरोज़ ने उसे कहा के वो उसे अपने घर में रखना चाहता है। अगर वो पसंद करे तो वो उसे अपने हां ला सकता है। फिरोज़ ने उसे कुछ लालच दिया। एक ये था के उससे इतना ज़्यादा काम नहीं लिया जाएगा जितना अब लिया जाता है। वो औरत मान गई। फिरोज़ ने अगले रोज़ उसे अपने हां बुला लिया।

❁

एक रोज़ आज़ाद अकेली बैठी थी। वो हर वक़्त जलती और कुढ़ती रहती थी। उसे कोई राह–ए–फरार नज़र नहीं आती थी। इस कैफियत में फिरोज़ की वही ख़ादिमा उसके पास आई।

"मैं किसी काम के बहाने आई हूं"–ख़ादिमा ने कहा–"लेकिन मैं आई दरअसल तेरे पास हूं.....क्या तू अपने चचा ज़ाद भाई से कभी मिली है जो रहमानुल यमन का वज़ीर है?"

"क्या तू जासूसी करने आई है?"–आज़ाद ने गुसैली आवाज़ में कहा।

"नही"–ख़ादिमा ने कहा–"मुझ पर ये शक न कर के मैं इस झूटे नबी की मुख्बिर हूं। मेरे दिल में भी असवद की इतनी ही नफरत है जितनी तेरे दिल में है।"

"मै नही समझ सकी के तू मेरे पास क्यों आई है" –आज़ाद ने कहा।

"फिरोज़ वज़ीर ने भेजा है" –ख़ादिमा ने कहा।

"मै फिरोज़ का नाम भी नही सुनना चाहती" –आज़ाद ने कहा– "अगर उस में ग़ैरत होती तो वो उस शख़्स का वज़ीर न बनता जिस ने उसकी चचाज़ाद बहन को बेवा किया और उसे जबरन अपनी बीवी बना लिया है।"

आज़ाद शाही ख़ानदान की औरत थी। वो इन लोंडियों और बांदियों को अच्छी तरह समझती थी। उसने अंदाज़ा कर लिया के ये औरत मुख़्बिरी करने नहीं आई। उसने ख़दिमा से पूछा के फिरोज़ ने उसके लिए क्या पैग़ाम भेजा है। ख़ादिमा ने बताया के वो उसे सिर्फ मिलना चाहता है। आज़ाद ने उसे एक जगह बता कर कहा के फिरोज़ वहां रात को आजाए।

"लेकिन हमारे दरमियान एक दीवार हायल होगी" –आज़ाद ने कहा– "इस में एक जगह एक दरीचा है जिस में सलाख़ें लगी हुई हैं। फिरोज़ सलाख़ों के दूसरी तरफ खड़ा हो कर बात कर सकता है।"

ख़ादिमा ने आज़ाद का पैग़ाम फिरोज़ को दे दिया।

उसी रात फिरोज़ महल के इर्द गिर्द खड़ी दीवार के उस मुक़ाम तक पहुंच गया जहां सलाख़ों वाला छोटा सा दरीचा था। आज़ाद उस के इन्तेज़ार में खड़ी थी।

"तेरी ख़ादिमा पर मुझे ऐतबार आ गया है–" आज़ाद ने कहा– "तुझ पर मैं कैसे ऐतबार करूं? मैं नहीं मानूंगी के तू मुझे इस वहशी से आज़ाद कराने की सोच रहा है।"

"क्या तू इस वहशाी के साथ खुश है?" –फिरोज़ ने पूछा।

"उससे ज़्यादा क़ाबिले नफरत आदमी में ने कोई और नहीं देखा" –आज़ाद ने कहा– "तेरा यहां ज़्यादा देर खड़े रहना ठीक नही। फौरन बता तुझे इतने अर्से बाद मेरा क्यों ख्याल आया है?"

"क्या इस वक़्त असवद के इधर आ निकलने का ख़तरा है?" –फिरोज़ ने पूछा– "या अभी वो तुम्हें...."

"नहीं" –आज़ाद ने कहा– "पेहरादारों का ख़तरा है। असवद इस वक़्त शराब के नशे में बेसुद पड़ा है। उसके पास औरतों की कमी नहीं।"

"मैं सिर्फ तुझे नही, पूरे यमन को आज़ाद कराऊंगा" –फिरोज़ ने कहा– "लेकिन तेरी मदद के बग़ैर में कामयाब नहीं हो सकता।"

"मुझे बता फिरोज़!" –आज़ाद ने पूछा– "मैं क्या कर सकती हूं?"

"किसी रात मुझे असवद तक पहुंचा दे" –फिरोज़ ने कहा– "अगले रोज़ वहां से उसकी लाश उठाई जाएगी.....क्या तू ये काम कर सकती है?"

"कल रात इस वक्त के कुछ बाद इस दीवार के बाहर उस जगह आ जाना जो मै तुम्हें बताऊंगी" - आज़ाद ने कहा-"मेरा कमरा इस दीवार के बिल्कुल साथ है। तुम दीवार किसी और तरीके से फलांग नही सकोगे। कमंद फैंकनी पड़ेगी। रस्सा लेते आना। इसे दीवार के ऊपर अंदर को फैंकना। मै इसे कही बांध दूंगी। तुम रस्से से ऊपर आजाना।"

अगली रात फिरोज़ इस तरह छिपता छुपाता दीवार के साथ साथ जा रहा था के उसे पहरे दार के गुज़र जाने तक छुपना पड़ता था। वो उस जगह पहुंच गया जो उसे आज़ाद ने बताई थी। उसने दीवार पर रस्सा फैंका जिसका अगला सिरा दूसरी तरफ नीचे तक चला गया। आज़ाद मौजूद थी। उसने रस्सा पकड़ लिया और कहीं बांध दिया। फिरोज़ रस्से को पकड़ कर और पांव दीवर के साथ जमाता दीवार पर चढ़ गया। उसने रस्सा दीवार पर बांध दिया और इसकी मदद से नीचे उतर गया।

आज़ाद उसे अपने कमरे में ले गई और आधी रात के बाद तक उसे कमरे में ही रखा क्योंके असवद के बेदार होने का ख़तरा था।

"आधी रात के बाद वो बेहोश और बे सुद हो जाता है"-आज़ाद ने कहा-"ये शख्श इन्सानों के रूप में देव है। ऐसा देव जो शराब पीता और औरतों को खाता है.... तुम ने इस की जिसामत देखी है। इतना लम्बा और चौड़ा जिस्म तलवार के एक दो वार तो शराब की तरह पी जाएगा। इसे हलाक करना आसान नहीं होगा।"

"इसे हलाक करना है ख्वाह में खुद हलाक हो जाऊं"-फिरोज़ ने कहा।

आज़ाद ने कमरे का दरवाज़ा ज़रा सा खोला और बाहर देखा। इस गुलाम गर्दिश के अगले सिरे पर एक पहरेदार खड़ा रहता था। वो साए की तरह खड़ा नज़र आ रहा था। साफ पता चलता था के इस तरफ उसकी पीठ है। आज़ाद अपने कमरे से निकली और दबे पांव असवद के कमरे का दरवाज़ खोला। हल्की रौशनी वाला एक फानूस जल रहा था। असवद पीठ के बल बिस्तर पर पड़ा खर्राटे ले रहा था।

मोअरिख़ बिलाज़ी ने उस दौर की तहरीरों के दो हवाले दे कर लिखा है के आज़ाद जब असवद को देख कर वापस आई तो उसका अंदाज़ ऐसा था जैसे एक शौला आया हो। ये इन्तेकाम और नफरत का शौला था।

"आओ फिरोज़!"-उसने कांपती हुई आवाज़ में कहा-"वो बेहोश पड़ा है।"

फिरोज़ आज़ाद के साथ कमरे से निकल गया और दबे पांव आज़ाद के पीछे असवद के कमरे में दाख़िल हुआ। असवद जंगली सांड जैसा इन्सान था। कमरे में शराब और गुनाहों का तआफ्फुन था। न जाने ऐसे क्यों हुआ, असवद बेदार हो गया। अपने वज़ीर और अपनी हसीन ईरानी बीवी को देख कर वो उठ बैठा। मोअरिख़ों ने

लिखा है के आज़ाद को वो क़ाबिले ऐतमाद समझता था। फिरोज़ को देख कर उसे कुछ शक हुआ होगा।

"इस वक़्त क्या मुसीबत आ गई है?"-असवद ने नशे से लड़खड़ाती हुई आवाज़ में पूछा।

फिरोज़ ने एक लम्हा ज़ाए न किया। तलवार खींची और पूरी ताक़त से असवद की गर्दन पर वार किया। असवद ने गर्दन बचाली और तलवार उसके नंगे सर पर पड़ी। असवद के मुंह से चीख नुमा आवाज़ें निकलीं और बिस्तर से लुढ़क कर दूसरी तरफ गिरा।

गुलाम गर्दिश में दौड़ते क़दमों की धमक सुनाई दी। आज़ाद तेज़ी से वाहर निकली और दरवाज़ा बन्द कर दिया। पैहरे दार दौड़ा आ रहा था। आज़ाद ने तेज़ी से आगे बढ़ कर पैहरेदार को रोक लिया। कमरे से असवद की हल्की हल्की आवाज़ें आ रही थीं।

"वापस अपनी जगह चले जाओ"-आज़ाद ने पहरेदार को तहक्कुमाना लहजे में कहा-"रहमानुल यमन के पास फरिश्ता आया हुआ है। वही नाज़िल हो रही है..... जाओ इधर न आना।"

मोअररिख़ बलाज़ी ने लिखा है के पहरेदार ने ऐहतराम से सर झुका लिया और चला गया। आज़ाद अंदर आई तो देखा के असवद फर्श से उठ कर बिस्तर पर गिर रहा है और फिरोज़ दूसरे वार के लिए आगे बढ़ रहा है। असवद बिस्तर पर गिर पड़ा। उसका सर पलंग के बाज़ू पर था और सांडों की तरह डकार रहा था।

"तुम इसे मार नहीं सकोगे फिरोज़!"-आज़ाद ने आगे बढ़ कर कहा और असवद के वाल जो लम्बे थे, दोनों हाथों से पकड़ कर नीचे को खींचे और वो खुद फर्श पर बैठ गई-"अव फिरोज़........गर्दन काट दो।"

फिरोज़ ने एक ही वार से असवद की गर्दन को साफ काट कर सर जिस्म से अलग कर दिया। फिरोज़ के साथियों क़ैस अब्द यगूस और वाज़ोया को मालूम था के आज रात क्या होने वाला है। फिरोज़ ने असवद का सर उठाया और इन दोनों के हां जा पहुंचा। मुहाफिज़ों और पहरेदारों को रहमानुल यमन के क़त्ल की ख़बर मिली तो उन्होंने महल को मुहासरे में ले लिया। आज़ाद फिरोज़ के साथ रही। महल में भगदड़ मच गई हरम की औरतों का हुजूम चीख़ता चिल्लाता बाहर को भागा।

उधर रसूल अल्लाह(स०) के भेजे हुए क़ैस बिन हुबीरा और वब्र बिन हनेस सरकर्दा मुसलमानों को बग़ावत पर आमादा कर चुके थे और दिन रात ज़मी दोज़ सरगर्मियों से मुसलमानों के हौसले बहाल कर चुके थे।

अभी सुबह सादिक़ में कुछ वक़्त बाकी था। महल की छत से अज़ान की आवाज़ बुलंद हुई। लोग हैरान हुए के महल में आज़ान? लोग महल की तरफ दौड़े। असवद की फौज हुक्म की मुंतज़िर थी लेकिन हुक्म देने वाला कैस अब्द यगूस था। वही सिपह सालार था। उसने फौज को बाहर न आने दिया।

असवद का सर महल के बाहर लटका दिया गया। महल की छतों से लल्कार बुलंद हो रही थी-"हम गवाही देते हैं के मोहम्मद(स०) अल्लाह के रसूल और असवद अंसी कज़्ज़ाब है।"

असवद के पैरूकारों पर ख़ौफ तारी हो गया और मुसलमान मुसल्लेह हो कर निकल आए और उन्होंने यमनियों को क़त्ल करना शुरू कर दिया।

मिस्र के मशहूर सहाफी और साबिक वज़ीर मआरिफ मोहम्मद हुसैन हैकल ने अपनी किताब "अबु बकर(र०)-सिद्दीक़ अकबर में फिरोज़ की ज़बानी एक रिवायत पेश की है। फिरोज़ ने कहा था।

"असवद को क़त्ल कर के हम ने वहां का इन्तेज़ाम पहले की तरह रहने दिया, यानी जिस तरह असवद के तसल्लुत से पहले था। हम ने क़त्ल के बाद पहला काम ये किया के मआज़ बिन जब्ल को बुलाया के वो हमें बा जमाअत नामज़ पढ़ाएं...हम बे इन्तेहा खुश थे के हम ने इस्लाम के इतने बड़े दुश्मन को ख़त्म कर दिया है, लेकिन अचानक इत्तेला मिली के रसूले खुदा(स०) विसाल फरमा गए। इस ख़बर से यमन में अब्तरी सी फैल गई।"

फिरोज़ को मुसलमानों ने सनआ का हाकिम मुक़र्रर कर दिया।

ये वाकेया मई 632ई० का है। कैस बिन हुबीरा और वब्र बिन हनेस जून 632ई० के दूसरे हफ्ते में ये खुशखबरी ले कर मदीना पहुंचे के झूटा नबी अपने अंजाम को पहुंच गया है और यमन पर इस्लामी पर्चम लहरा दिया गया है लेकिन मदीना सोगवार था-5 जून 632ई० (12 रबी अव्वल 11 हिज्री) रसूले खुदा(स०) विसाल फरमा गए।

रसूल अल्लाह(स०) के विसाल की ख़बर जूं जूं फैलती गई ये जंगल की आग ही साबित हुई जहां पहुंची वहां शौले उठने लगे। ये शोले बग़ावत के थे। एक तो इस्लाम के दुश्मन थे जिन्होंने अपनी तख्रीबी सरगर्मियां तेज़ कर दीं, दूसरे वो क़बीले थे जिन्होंने सिर्फ इस्लाम कुबूल किया था के उनके सरदार मुसलमान हो गए थे। ऐसे क़बीले इतने ज़्यादा नही थे जिन्होंने सच्चे दिल से इस्लाम कुबूल किया था। बाक़ी तमाम क़बीले इस्लाम से न सिर्फ मुन्हरिफ हो गए बल्कि उन्होंने मदीना के खिलाफ अल्मे बग़ावत बुलंद कर दिया और मदीना पर हमला की बातें करने लगे।

ख़लीफा अव्वल हज़रत अबु बकर सिद्दीक़(र०) ने बाग़ी क़बीलों को पैग़ाम भेजे के वो इस्लाम को न छोड़े। क़ासिद जहां भी गए वहां से इन्हें जवाब मिला के हमारा कुबूल इस्लाम सिर्फ एक शख्स(रसूले करीम) के साथ मुहाएदा था। वो शख्स(स०) नही रहा तो मुहाएदा भी नहीं रहा। अब हम आज़ाद हैं और अपना रास्ता इख्तियार करेंगे।

तीसरा और सब से ज्यादा ख़तरनाक फ़ितना मुर्तदीन का था। रसूले करीम की ज़िन्दगी में ही नबुव्वत के झूटे दावेदार पैदा हो गए थे। इन की पुश्त पनाही रोमी, ईरानी और यहूदी कर रहे थे। इन झूटे नबियों में एक खूबी मुश्तरक थी। वो शोब्देबाज़ और जादूगर थे। शोब्देबाज़ी और जादूगरी में यहूदी माहिर थे। असवद अंसी का ज़िक्र हो चुका है। वो भी शोब्दे बाज़ था।

नबुव्वत के दूसरे दो दावेदार तलीहा और मुसलीमा थे। मुसलीमा खास तौर पर शोब्देबाज़ी में महारत रखता था। ऐसे शोब्दे पहले कोई न दिखा सका था। मसलन वो परिन्दे के पर उसके जिस्म से अलग कर के दिखाता फिर परिन्दे और परों को इक्ठ्ठे हाथों में ले कर ऊपर फैंकता तो परिन्दे के साथ होते और परिन्दा उड़ जाता था।

मुसलीमा बदसूरत इन्सान था। उसके चेहरे पर ऐसा तास्सुर था जैसे ये इन्सान

का नही हैवान का चेहरा हो। खदो ख़ाल भी हैवानों जैसे थे। उसका क़द छोटा था। चेहरे का रंग ज़र्द था लेकिन उसके जिस्म में ग़ैर मामूली ताक़त थी। उसकी आंखें ग़ैर कुदतरती तौर पर छोटी और नाक चपटी थी। ये एक भद्दे आदमी की तस्वीर है जिसे कोई बदसूरत इन्सान भी पसंद नही कर सकता मगर जो औरत ख्वाह वो कितनी ही हसीन और सरकश क्यों न होती, उसके क़रीब जाती तो उसकी गुरवीदा हो जाती और उसके इशारों पर नाचने लगती थी।

मुसलीमा ने रसूले करीम(स०) की ज़िन्दगी में ही नबुव्वत का दावा किया था और दो क़ासिदों के हाथ एक ख़त इन अल्फाज़ में लिखा था:

"मुसलीमा रसूल अल्लाह की जानिब से, मोहम्मद(स०) रसूल अल्लाह के नाम। आप(स०) पर सलामती हो। बादा, वाज़ेह हो के मैं रिसालत में आप(स०) का शरीक बनाया गया हूं। लिहाज़ा निस्फ ज़मीन मेरी है और निस्फ कुरैश की मगर कुरैश इन्साफ नहीं कर रहे।"

रसूले अकरम(स०) ने ख़त पढ़ा और क़ासिदों से पूछा के मुसलीमा के इस अजीब व ग़रीब पैग़ाम के मुताल्लिक़ उसकी क्या राय है।

"हम वही कहते हैं जो ख़त में लिखा है"-एक क़ासिद ने जवाब दिया।

"खुदा की क़सम!"-रसूल अल्लाह ने कहा-"अगर कासिदों के क़त्ल को मैं रवा समझता तो तुम दोनों के सर तन से जुदा कर देता।"

आप(स०) ने मुसलीमा को उस के ख़त के जवाब में लिखवाया:

"बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम। मोहम्मद(स०) रसूल अल्लाह की जानिब से, मुसलीमा कज़्ज़ाब के नाम। ज़मीन अल्लाह की है। वो अपने मुत्तक़ी बंदों में से जिसे चाहता है इसका वारिस बना देता है।"

इस के बाद मुसलीमा को सब कज़्ज़ाब कहने लगे और इस्लाम की तारीख़ ने भी इसे मुसलीमा कज़्ज़ाब ही कहा है।

रसूले खुदा(स०) उन दिनों बिस्तर-ए-अलालत पर थे। आप(स०) ने ज़रूरी समझा के जिस शख्स ने ये जसारत की है के रसूले करीम(स०) से ज़मीन का मुताल्बा कर दिया है, उसकी सरगर्मियों और लोगों पर उसके असरात को फौरन ख़त्म किया जाए। आप(स०) की निगाह एक शख्स नहारूल रजाल पर पड़ी। इस शख्स ने इस्लाम कुबूल कर के दीन की तालीम हासिल की थी। कुरआन की आयात पर उसे उबूर हासिल था और वो आलिम व फाज़िल कहलाने के क़ाबिल था।

रसूले मक़बूल(स०) ने इस शख्स को बुला कर हिदायात दी के वो यमामा जाए और लोगों को इस्लामी तालीम दे। आप(स०) ने रजाल को अच्छी तरह समझाया के

मुसलीमा के असरात ज़ायल करने हैं। ताके खून ख़राबे के बग़ैर ही ये शख़्स गुमनाम और इस का दावा बे असर हो जाए। रसूल अल्लाह(स०) के हुक्म की तामील में रजाल रवाना हो गया।

❁

मुसलीमा बिन हबीब जो मुसलीमा कज़्ज़ाब के नाम से मशहूर हुआ था, रात को अपने दरबार में बैठा था। शराब का दौर चल रहा था। दरबार में उसके क़बीले के सरकर्दा अफराद बैठे हुए थे। वो सब उसे अल्लाह का रसूल मानते थे। उसने अपने मज़हब को इस्लाम ही कहा था लेकिन कुछ पाबंदियां हटा दी थीं मसलन उसने अपनी एक आयत घड़ कर अपने पैरूकारों को सुनाई और कहा के उस पर वही नाज़िल हुई है के शराब हलाल है। दीगर ऐश व ईशरत को भी उसने हलाल क़रार दे दिया था।

उस का दरबार जन्नत का मंज़र पैश कर रहा था। निहायत हसीन और जवान लड़कियां उसके दायें बायें बैठी थीं और दो उसके पीछे खड़ी थीं। मुसलीमा किसी लड़की के बालों पर हाथ फैर कर और किसी के गालों को थपक कर और किसी के ज़ानों पर हाथ रख कर बात करता था।

एक आदमी दरबार में आया। वो बैठा नहीं, खड़ा रहा। सब ने उसकी तरफ देखा। मुसलीमा ने जैसे उसकी तरफ तवज्जेह देने की ज़रूरत ही न समझी हो। उसे मालूम था के वो किसी के कहे बग़ैर बैठ जाएगा मगर वो खड़ा रहा।

"क्या तू हम पर पहरा देने आया है?"–मुसलीमा ने उसे कहा–"या तू अल्लाह के रसूल के हुक्म के बग़ैर बैठ जाना बद तहज़ीबी समझता है?"

"अल्लाह के रसूल!"–इस आदमी ने कहा–"एक खबर लाया हूं.....मदीने से एक आदमी आया है। वो बहुत दिनों से यहां है और वो इन लोगों को जिन्होंने कभी इस्लाम कुबूल किया था। बताता फिर रहा है के सच्चा रसूल मोहम्मद(स०) है ओर बाक़ी सब कज़्ज़ाब हैं। मैंने खुद उसकी बातें सुनी हैं उसका नाम नहारन रजाल है।"

"नहारूल रजाल?"–दरबार में बैठे हुए दो आदमी बैक वक़्त बोले फिर एक ने कहा–"वो मुसलमानों के रसूल(स०) का मंज़ूरे नज़र है। मैं उसे जानता हूं। उसके पास इल्म है।"

"एस शख़्स को ज़िन्दा न छोड़ें"–दरबार में बैठे हुए एक आदमी ने गरज कर कहा।

"ऐ खुदा के रसूल!"–एक और आदमी ने उठ कर कहा–"क्या तू मुझे इजाज़त नहीं देगा के मैं उस बदबख़्त का सर काट कर तेरे क़दमों में रख दूं?"

"नहीं"–मुसलीमा कज़्ज़ाब ने कहा–"अगर वो आलिम है और उसने

मोहम्मद(स०) के कुआन की तालीम हासिल की है तो मै उसे कहूंगा के मेरे दरबार में आए और मुझे झूटा साबित करे। मै उसे क़त्ल नही होने दूंगा....उसे कल रात मेरे पास ले आना। उसे यक़ीन दिलाना के उसे क़त्ल नही किया जाएगा।"

❁

रजाल को मुसलीमा के एक आदमी ने कहा के उसे "अल्लाह के रसूल मुसलीमा बिन हबीब ने अपने हां मदऊ किया है

"क्या वो मेरे क़त्ल का इन्तेज़ाम यहीं नही कर सकता था?"-रजाल ने कहा-"मै उसे अल्लाह का रसूल नही मानता। मुझ पर ये लाज़िम नहीं के मैं उसका हुक्म मानू।"

"वो जहां चाहे तुम्हें क़त्ल करा सकता है"-मुसलीमा के ऐलची ने कहा-"उसमें ये ताक़त भी है के फूंक मार दे तो तेरा जिस्म मुर्दा हो जाए लेकिन वो तुझे ज़िन्दा देखना और रूख्सत करना चाहता है।"

मुसलमानों ने रजाल से कहा के वो इस कज़्ज़ाब के हां न जाए।

"ये मेरी ज़िन्दगी और मौत का सवाल नहीं"-रजाल ने कहा-"ये सदाक़त और क़ज़्ब का सवाल है। अगर एक कज़्ज़ाब को सिदक़ से बहरावर करने में मेरी जान चली जाती है तो ये सौदा महंगा नहीं।"

"मै आऊंगा"-रजाल ने कहा-"आज ही रात आऊंगा। मुसलीमा से कहना के तू अगर सच्चा नबी है तो अपने वादे से फिर न जाना।"

ऐलची ने मुसलीमा कज़्ज़ाब को रजाल का जवाब बताया। मुसलीमा यमामा के क़िले में रहता था। मशहूर मोअररिख़ तिबरी ने लिखा है के मुसलीमा अपने ख़ास महमानों के लिए बड़ा खुशनुमा खेमा नस्ब कराया करता था जिसकी साख्त मकान जैसी होती थी। ये खेमा अन्दर से बड़े दिलफरेब तरिकों और कपड़ों से सजाया जाता था। सहरा की रातें सर्द होती थीं। इस लिए मुसलीमा खेमें में बड़ा खूबसूरत आतिश दान रखवा दिया करता था। इस आतिशदान में वो कोई चीज़ या जड़ी बूटी रख दिया करता था जिसकी खुश्बू इतर की तरह होती थी लेकिन ये खुशबू हवास पर ऐसा असर करती थी जैसे इस खेमें में सोने वाले को हिप्नोटाईज़ कर लिया गया हो। मुसलीमा का शिकार बेहोश या बेखबर नहीं होता था, बल्कि वो मुसलीमा के इशारों पर नाचने लगता था। खुद मुसलीमा पर इस का ये असर नहीं होता था।

मुसलीमा कज़्ज़ाब को जब इत्तेला मिली के रजाल आ रहा है तो उसने अपना मखसूस खेमा नस्ब कराया और इस में वो तमाम इन्तेज़ात करा दिये जो वो कराया करता था। उसने रात के लिए आतिश दान भी रखवा दिया।

रजाल आया तो मुसलीमा ने बाहर आकर उसका इस्तक़बाल किया।

"तुम एक रसूल के भेजे हुए आदमी हो"-मुसलीमा ने कहा-"और मैं भी रसूल हूं, इस लिए तुम्हारा एहतराम मेरा फर्ज़ है।"

मैं सिर्फ उसे रसूल मानता हूं जिसने मुझे यहां भेजा है"-रजाल ने कहा-"और मैं तुम्हें ये कहते हुए नही डरूंगा के तुम कज़्ज़ाब हो।"

मसलीमा मुस्कुराया और रजाल को खेमे में ले गया।

तारीख़ में इस सवाल का जवाब नही मिलता के खेमे में मुसलीमा और रजाल के दरमियान क्या बातें हुईं कैसी सौदेबाज़ी या ये कैसा शोब्दा या जादू था के रजाल जब अगली सुबह खेमे से निकला तो उसके मुंह से पहली बात ये निकली के इस में कोई शुबह नही के मुसलीमा अल्लाह का सच्चा रसूल है और इस पर वही नाज़िल होती है। उसने ये भी कहा-"मैं ने मोहम्मद(स०) को भी ये कहते सुना है के मुसलीमा सच्चा नबी है।"

रजाल की हैसियत सहाबी की सी थी इस लिए मुसलमानों ने उस पर ऐतबार किया। रजाल बनू हनीफा से ताल्लुक़ रखता था। रजाल का ऐलान सुन कर बनू हनीफा के लोग जोक़ दर जोक़ मुसलीमा को अल्लाह का रसूल मान कर उसकी बैत को आ गए।

मोअररिख़ लिखते हैं के मुसलीमा ने ये सोच कर रजाल को क़त्ल नहीं कराया था के वो आलिम है और सहाबी का दर्जा रखता है। अगर इसे हाथ में ले लिया जाए तो बैत करने वालों की तादाद में इज़ाफा हो जाएगा। चुनांचे इस शख्स को हाथ में लेने के लिए आतिश दान का और अपनी ज़बान का जादू चलाया और रजाल को अपना दस्ते रास्त बना लिया।

रजाल ने मुसलीमा की झूटी नबुव्वत में रूह फूंक दी। अकसर मां बाप अपने नौज़ायद बच्चों को रसूले करीम(स०) के पास लाया करते थे और आप(स०) बच्चे के सर पर हाथ फैरा करते थे। रजाल ने मुसलीमा कज़्ज़ाब को मशवरा दिया के वो भी नौज़ायद बच्चों के सरों पर हाथ फैरा करे। मुसलीमा को ये बात अच्छी लगी। उसने कई नौज़ायद बच्चों और बच्चियों के सरों पर हाथ फैरा। मोअररिख़ों ने लिखा है के ये बच्चे जब हुस्न बलूग़त में दाख़िल हुए तो उनके सरों के बाल इस तरह झड़ गए के किसी मर्द या औरत के सर पर एक भी बाल न रहा। उस वक्त तक मुसलीमा को मरे हुए ज़माना ग़ुज़र गया था।

❁

इस दौरान एक औरत ने भी नबुव्वत का दावा किया। इस का नाम सज्जाह

था। वो हारिस की बेटी थी। उसे उम्मे सादरा भी कहा जाता था। उसकी मां ईराक़ के एक क़बीले से थी और बाप बनू यरबू से ताल्लुक़ रखता था। हारिस अपने क़बीले का सरदार था। सज्जाह बचपन से खुद सर और आज़ाद ख्याल थी। वो चूंके सरदारों के ख़ानदान में जनी पली थी इस लिए दूसरों पर हुक्म चलाना उसकी सरिश्त में शामिल था। वो ग़ैर मामूली तौर पर ज़हीन और अक़्लमंद निकली। एक दो मोअररिख़ों ने लिखा है के वो ग़ैबदां भी थी और वो आने वाले हालात को क़ब्ल अज़वक़्त जान लेती थी। इस के मुताल्लिक़ इख़्तेलाफ राय भी पाया जाता है लेकिन ये बात सब ने मुताफक्के तौर पर कही है के सज्जाह कुदरती तौर पर शायरा थी। हर बात मंज़ूम करती थी। उसकी ज़बान में चाश्नी थी। उसकी मां का क़बीला ईसाई था इस लिए सज्जाह ने भी ईसाइयत को ही पसंद किया।

सज्जाह के कानों में ये खबरें पड़ी के तलीहा और मुसलीमा ने नबुव्वत का दावा किया है और लोग उनकी बैत कर रहे हैं तो उसने भी नबुव्वत का दावा कर दिया। वो जवान हो चुकी थी। खुदाए यहूदा ने उसे दीगर औसाफ के अलावा हुस्न भी दिया था। उसके सरापा में और चेहरे पर ऐसा तास्सुर था के लोग मसहूर हो कर उसे नबी मान लेते थे। बहुत से लोग उसकी शायरी से मुतास्सिर हुए।

वो सिर्फ नबी बन के कहीं बैठना नहीं चाहती थी। उसने अपने पैरूकारों की एक फौज तैयार कर ली और बनी तमीम के हां जा पहुंची। इन क़बायल के जो सरदार थे, वो रसूले अकरम(स०) के मुक़र्रर किए हुए थे। ये थे ज़बरक़ान बिन बद्र, क़ैस बिन आसिम, वकी बिन मालिक और मालिक बिन नवेरा। सज्जाह ने मालिक बिन नवेरा को अपने पास बुलाया और कहा के वो मदीना को तहे तेग़ करने आई है और बनी तमीम उसका साथ दें।

मालिक बिन नवेरा ने उसे बताया के कई क़बीले उसे पसंद नहीं करते। पहले इन्हें ज़ेर करना ज़रूरी है। सज्जाह ज़ेर करने का मतलब कुछ और समझी थी। उसके पास अच्छा ख़ासा लश्कर था। मालिक ने उसमें अपनी फौज शामिल कर दी और क़बीलों की बस्तियों पर हमलावर हुए। क़बीले इन के आगे हथियार डालते चले गए। लेकिन सज्जाह ने इन्हें ये कहने की बजाए के उसे नबी मानें, उनके घर लूट लिए और उनके मवेशी छीन लिए। इस माले ग़नीमत से उसका लश्कर बहुत खुश हुआ।

उसकी लूटमार की शौहरत दूर दूर तक फैल गई सज्जाह एक मुक़ाम नबाज पहुंची और इस इलाक़े की बस्तियों में लूट मार शुरू कर दी लेकिन ये क़बीले मुत्तहिद हो गए और सज्जाह को शिकस्त हुई। वो एक और हल्ला करना चाहती थी लेकिन उसे एक मजबूरी का सामना था। उसके लश्कर के कई सरदारों को नबाज के क़बीलों

ने पकड़ कर कैद में डाल दिया था। सज्जाह ने अपना ऐलची इन कैदियों की रिहाई के लिए भेजा।

"पहले इस इलाके से कूच करो"-कबीलों के सरदारो ने ऐलची से कहा-"तुम्हें तुम्हारे कैदी मिल जाऐंगे।"

सज्जाह ने ये शर्त कुबूल कर ली और अपने सरदारों को अज़ाद करा के उस इलाके से निकल गई। उसके सरदारों ने उससे पूछा के अब किधर का इरादा है।

"यमामा"-सज्जाह ने कहा-" वहां मुसलीमा बिन हबीब कोई शख्स है जिस ने नबुव्वत का दावा कर रखा है। उसे तलवर की नोक पर रखना ज़रूरी है।"

"लकिन यमामा के लोग जंग व जदाल में बहुत सख्त है"-एक सरदार ने उसे कहा-"और मुसलीमा बड़ा ताकतवार है।"

सज्जाह ने कुछ अशआर पढ़े जिन में उसने अपने लश्कर से कहा था के हमारी मंज़िल यमामा है।

❁

मुसलीमा कज़्ज़ाब ने अपने जासूसों को दूर दूर तक फैलाया हुआ था। उसे इत्तेला दी गई के लए लश्कर यमामा की तरफ बढ़ा आ रहा है। मुसलीमा ने मालूम किया के ये सज्जाह का लश्कर है। उस ने रजाल को बुलाया।

"क्या तुम ने सुना है के सज्जाह का लश्कर आ रहा है रजाल?"-मुसलीमा ने कहा-"लेकिन मैं इस से लड़ना नहीं चाहता। तुम जानते हो के इस इलाके में मुसलमानों की फौज मौजूद है जिस का सिपह सालार अकरमा है। क्या हमारे लिए ये वहतर नहीं होगा के सज्जाह और अकरमा की टक्कर हो जाए और जब दोनों लश्कर आपस में उलझे हुए हों, उस वक्त हम उस पर हमला कर दें?"

"अगर उनकी टक्कर नही हुई तो तुम क्या करोगे?"-रजाल ने कहा।

"फिर मैं सज्जाह के साथ दोस्ती का मुहाएदा करूंगा"-मुसलीमा ने कहा।

सूरत वही हो गई। सज्जाह और अकरमा की फौजें एक दूसरे से बे खबर रही और सज्जाह यमामा के बिल्कुल करीब आ गई मुसलीमा ने अपना एक ऐलची सज्जाह के पास इस पैग़ाम के साथ भेजा के सज्जाह उसे मिलने उसके पास आए ताके दोस्ती का मुहाएदा किया जा सके। सज्जाह ने जवाब भेजा के वो आ रही है लेकिन मुसलीमा को कब्ल अज़ वक्त इत्तेला मिल गई के सज्जाह अपने लश्कर को साथ ले कर आ रही है। उस ने सज्जाह को पैग़ाम भेजा के लश्कर को साथ लाने से मैं ये समझूंगा के तुम दोस्ती की नीयत से नहीं आ रहीं। ज़्यादा से ज़्यादा ये कर सकती हो के अपने चन्द एक मुहाफिज़ों को साथ ले आओ।

"या रसूल!"-मुसलीमा के एक दरबारी ने उसे कहा- सुना है सज्जाह का लश्कर इतना बड़ा है के यमामा की वो ईंट से ईंट बजा देगा।"

"और ये भी सुना है"-एक और ने कहा-"के वो क़त्ल व ग़ारत और लूट मार कर के आगे चली जाती है उससे वही महफूज़ है जो उसकी नबुव्वत को तसलीम कर लेता है।"

"क्या तुम मुझे डरा रहे हो?"-मुसलीमा ने पूछा-"क्या तुम ये मशवारा देना चाहते हो के मैं अपनी नबुव्वत से दस्तबरदार हो कर उसकी नबुव्वत को तस्लीम कर लूं?"

"नही अल्लाह के रसूल!"-उसे जवाब मिला-"हमारा मतलब एहतियात हैं वो कोई अपना हाथ न दिखा जाए।"

मुसलीमा ने क़हक़हा लगाया और बोला-"तुम शायद मेरी सूरत देख कर ये मशवरा दे रहे हो। क्या तुम मुझे कोई ऐसी औरत दिखा सकते हो जो मेरे पास आई हो और मेरी गुर्वीदा न हो गई हो?.....सज्जाह को आने दो। वो आएगी, जाएगी नहीं और वो ज़िन्दा भी रहेगी।"

❁

वो आ गई और वो लश्कर के बग़ैर आई। यमामा के लोगों ने उसे देखा और आवाज़ें सुनाई दीं-"इतनी खूबसूरत और इतनी तरहदार औरत पहले कभी नहीं देखी थी....अगर नबुव्वत हुस्न पर मिलती है तो इस औरत को नबुव्वत मिल सकती है।"

उसके साथ चालीस मुहाफिज़ थे जो आला नस्ल के घोड़ों पर सवार थे। एक से एक खूबसूरत जवान था। कमर से तलवारें लटक रही थीं और उनके हाथों में बरछियां थीं।

सज्जाह जब क़िले के दरवाज़े पर पहुंची तो दरवाज़ा बन्द था। उसे देख कर भी किसी ने दरवाज़ा न खोला।

"क्या ऐसा आदमी खुदा का रसूल हो सकता है जो मेहमान को बुला कर दरवाज़ा बन्द रखता है?"-सज्जाह ने बुलन्द आवाज़ से कहा-"क्या वो नहीं जानता के वो उस औरत की तौहीन कर रहा है जिसे खुदा ने नबुव्वत अता की है?"

"मुअज़्ज़िज़ मेहमान!"-क़िले के ऊपर से आवाज़ आई-"तुम पर सलामती हो। हमारे रसूल ने कहा है के मुहाफिज़ बाहर रहें और मेहमान अन्दर आ जाए।"

"दरवाज़ा खोल दो"-सज्जाह ने दिलेरी से कहा और अपने मुहाफिज़ों से कहा-"तुम सब क़िले से दूर चले जाओ।"

"लेकिन हम एक अजनबी पर कैसे एतबार कर सकते है?"-मुहाफिज़ दस्ते

के सरदार ने कहा।

"अगर सूरज गुरूब होने तक मैं वापस न आई तो इस किले को मलबे का ढेर बना देना"–सज्जाह ने कहा–"और इस शहर के एक बच्चे को भी ज़िन्दा न छोड़ना। मेरी लाश को मुसलीमा और इस के ख़ानदान के खून से नहला कर यहीं दफन कर देना.....लेकिन मुझे यकीन है के मैं किले से कुछ ले कर निकलूंगी।"

मुहाफिज़ चले गए और दरवाज़ा खुल गया मगर उसके इस्तक़बाल के लिए मुसलीमा मौजूद नहीं था। उसके हुक्म के मुताबिक दरवाज़े पर खड़े दो घुड़ सवार उसे किले के सहन में ले गए जहां एक चौकोर खेमा नस्ब था। इस के इर्द गिर्द दरख्त और पौधे थे और नीचे घास थी। सज्जाह को खेमे मे दाख़िल कर दिया गया। अन्दर की सजावट ने उसे मसहूर कर दिया मगर मुसलीमा वहां नहीं था। वो बैठ गई।

थोड़ी देर बाद मुसलीमा खेमे में दाख़िल हुआ। सज्जाह ने उसे देखा तो उसके होंटों पर मुस्कुराहट आ गई। इस मुस्कुराहट में तमुसख़र था। सज्जाह ने इतना बद सूरत आदमी कभी नहीं देखा था। इतने छोटे क़द का आदमी शाज़ो नादर ही कभी नज़र आता था।

"क्या तुम ने नबुव्वत का दावा किया है?"–सज्जाह ने उस से तंज़िया लहजे में पूछा।

"दावा करना कुछ और बात है!"–मुसलीमा ने सज्जाह की आखों में आंखें डाल कर कहा–"ये सच है के में खुदा का भेजा हुआ रसूल हूं। मैं मोहम्मद(स०) को रसूल नहीं मानता लेकिन उसने अपनी रिसालत मनवा ली है। लोग इस लिए मान गए है के क़बीले कुरैश की तादाद और ताक़त बहुत ज़्यादा है। उन्होंने अब दूसरों के इलाक़ों पर कब्ज़ा करना शुरू कर दिया है।"

तिवरी ने एक चन्द एक हवालों से लिखा है के मुसलीमा ने सज्जाह की आंखों में आंखें डाल दी। उसके होंटों पर दिलफरेब मुस्कुराहट थी। बहुत अर्से बाद सज्जाह ने किसी मौक़े पर कहा था के उसने इतनी छोटी छोटी आंखें मेरी आंखों में डाली तो मुझे ऐसे महसूस हुआ जैसे ठिंगना सा बदसूरत आदमी पुरइसरार सा एक असर बन कर आंखों के रास्ते मेरे वुजूद में उतर रहा है। मुझे इतमीनान सा होने लगा के ये शख़्स मुझे क़त्ल नहीं करेगा। कुछ वक्त और गुज़रा तो इस अहसास ने मुझे बेबस कर दिया के मैं इस के वुजूद में समा जाऊंगी और मेरा वुजूद ख़त्म हो जाएगा।

"अगर तुम नबी हो तो कोई इल्हामी बात करो"–सज्जाह ने उसे कहा।

"तुम ने कभी सोचा है तुम किस तरह पैदा हुई थीं?"–मुसलीमा ने ऐसे अंदाज़ से कहा जैसे शेर पढ़ रहा हो–"तुम ने शायद ये भी नहीं सोचा के जिस तरह तुम पैदा

हुई थी इसी तरह तुम भी इन्सानों को पैदा करोगी मगर तन्हा नही....मुझे खुदा ने बताया है"-उसने कुर्आन की आयात की तर्ज़ के अल्फाज़ बोले-"वो एक जिन्दा वुजूद से ज़िन्दा वुजूद पैदा करता है। पेट से, अंतड़ियों से। खुदा ने मुझे बाताया है के औरत मानिंद ज़रूफ के है जिस में कुछ डाल कर निकाला जाता है वरना ज़रूफ बेकार है।"

सज्जाह मसहूर होती चली गई। मुसलीमा शायरों के लब व लहजे में बातें करता रहा। सज्जाह ने महसूस ही न किया के मुसलीमा उसके जज़बात को मुश्तअल कर रहा है और वो ये भी महसूस न कर सकी के सूरज गुरूब हो चुका है।

"मुझे यक़ीन है के तुम आज रात यहीं रहना चाहोगी"-मुसलीमा ने कहा-"अगर चेहरे देखने हैं तो तुम दिन हो और मैं रात हूं मगर तुम ने इस पर भी ग़ौर नहीं किया होगा के दिन पर रात क्यों ग़ालिब आ जाती है और दिन अपना सूरज की चमक दमक को खा नहीं जाती। बड़े प्यार से उसे जगा कर दूसरे उफक़ पर रख देती है।"

"हां मुसलीमा!"-सज्जाह ने कहा-"मेरा जी चाहता है के मैं मान लूं के तुम सच्चे नबी हो। इतना बदसूरत आदमी इतनी खूबसूरत बातें नहीं कर सकता। कोई ग़ैबी ताक़त है जो तुम से इतनी अच्छी बातें करा रही है"-वो चौंक पड़ी और बोली-"सूरज गुरूब हो गया है। अगर मैं ने क़िले की दीवार पर खड़े है कर अपने मुहाफिज़ों को नहीं बताया के मैं ज़िन्दा हूं तो तुम्हारी बस्ती की गलियों में खून बहने लगेगा।"

मुसलीमा ने उसे अपने दो मुहाफिज़ों के साथ क़िले की दीवार पर भेज दिया और ख़ेमे में रखा हुआ आतिश दान जलाने का हुक्म दिया। फानूस भी रोशन हो गए। मुसलीमा ने आतिश दान में छोटी सी कोई चीज़ रख दी। कमरे में खुश्बू फैलने लगी।

सज्जाह वापस ख़ेमे में आई तो उस पर खुमार सा तारी हो गया। वो आमसी औरतों की तरह रोमान अंगेज़ बातें करने लगी।

"क्या ये अच्छा नहीं होगा के हम मियां बीवी बन जाएं?"-मुसलीमा ने उसकी आंखों में आंखें डाल कर पूछा।

"इससे अच्छी और कोई बात नहीं हो सकती।"-सज्जाह ने मख्मूर सी आवाज़ में जवाब दिया।

सुबह तुलू हुई तो सज्जाह इस अंदाज़ से बाहर निकली जैसे दुल्हन अपनी पसंद के दुल्हा के साथ अज़दवाजी ज़िन्दगी की पहली रात गुज़ार के निकली हो। क़िले में शादयाने बजने लगे। सज्जाह के लश्कर तक ये खबर पहुंची के सज्जाह ने मुसलीमा के साथ शादी कर ली है।

ये शादी इस्लाम के लिए बहुत बड़ा खतरा बन गई। अरतदाद के दो लश्कर मुत्तेहिद हो गए, लेकिन ये इत्तेहाद जल्दी बिखर गया क्योंके मुसलीमा ने सज्जाह को धोका दिया और वो दिल बर्दाश्ता हो कर ईराक़ अपने क़बीले में चली गई। मुसलीमा ने अपने लिए एक बहुत बड़े ख़तरे को ख़त्म कर दिया था। सज्जाह को इतना सदमा हुआ के वो नबुव्वत के दावे से दस्तबरदार हो गई। बाद में वो मुसलमान हो गई और कूफा चली गई थी। उसने बड़ी लम्बी उम्र पाई और मुत्तक़ी और पारसा मुसलमान की हैसियत से मशहूर रही।

❁

रसूले अकरम के विसाल के साथ ही हर ताफ बग़ावत और अहद शिकनी का तूफान खड़ा हुआ। एक तूफान सहाबा इकराम(र०) के अपने हां उठा ये खलीफा अव्वल के इंतेख़ाब का मसला था। खिलाफत के उम्मीदवारों ने अपना अपना हक़ जताया और खिचाव सा भी पैदा हो गया। अबु बकर(र०) ने आख़िर ये फैसला हज़रत उमर(र०) और अबु उबेदा(र०) पर छोड़ा और कहा के ये दानों जिसे पसंद करें उसे सब ख़लीफा मान लें।

"आप मुहाजरीन में सब से अफज़ल हैं-उमर(र०) और अबु उबेदा(र०) ने आपस में बात कर के फैसला अबु बकर(र०) के हक़ में दिया और उनसे कहा-"ग़ार में आप रसूल अल्लाह(स०) के रफीक़ और नमाज़ पढ़ाने में इन के क़ायम मुक़ाम रहे हैं। दीन के एहकाम में नमाज़ सब से अफज़ल है। हमें ऐसा कोई शख़्स नज़र नहीं आता जो आप से बरतर हो। बिलाशक आप खिलाफत के हक़दार हैं।"

सब से पहले उमर(र०) ने आगे बढ़ कर अबु बकर(र०) के हाथ पर बैत की। इसके बाद अबु उबेदा(र०) और इन के बाद बशीर बिन साद(र०) ने बैत की। जब ऐलाने आम हुआ के खलीफा अव्वल अबु बकर(र०) होंगे तो लोग बैत के लिए दौड़े आए।

मस्जिद नबवी में बैत आम हुई। अबु बकर(र०) ने पहला खुत्बा-ए-ख़िलाफत दिया।

> "लोगो! खुदा की क़सम, मैं ने ख़िलाफत की ख्वाहिश कभी नहीं की थी, न कभी दिल में न कभी ज़ाहिरी तौर पर इस लिए अल्लाह से दुआ की थी, लेकिन इस डर से ये बोझ अपने नातवां कंधों पर उठा लिया के इख़्तेलाफ झगड़े की सूरत इख़्तियार न कर जाए, वरना ख़िलाफत और इमामत में मुझे काई राहत नज़र

नहीं आई एक बोझ मुझ पर डाल दिया गया है जिसे उठाने की ताक़त मुझ में कम है। अल्लाह की मदद के बग़ैर मैं इस बोझ को उठा नहीं सकूंगा। मुझे तुम ने अपना अमीर बनाया है। मैं तुम से बहतर और बरतर तो न था। अगर मैं कोई अच्छा काम करूं तो मेरी मदद करो। कोई ग़ल्ती कर गुज़रूं तो मुझे रोक दो। तुम में से जो कमज़ोर है, मैं इसे ताक़तवर समझता हूं। मैं उसे उसका हक़ दिलाऊंगा। तुम में से जो ताकतवर है, उसे में कमज़ोर समझूंगा और उसे उस हक़ से महरूम करूंगा जिस का वो हक़दार नहीं। मैं जब तक अल्लाह और रसूल(स०) की इताअत करूं तुम मेरी इताअत करो। अगर मैं इन्हेराफ करूं तो मेरा साथ छोड़ देना।"

❁

ख़लीफा-ए-अव्वल अबु बकर(र०) ने सब से पहला ये हुक्म दे कर के उसामा(र०) का लश्कर रोमियों के ख़िलाफ जाएगा, सब को चौंका दिया। ये मौक़ा किसी जंगी मुहिम के लिए मोज़ूं न था। रोमियों पर हमला बहुत बड़ी जंग थी जिस में मुसलमानों की पूरी जंगी ताक़त की ज़रूरत थी लेकिन दूसरी ये सूरत पैदा हो गई थी के बेश्तर क़बीलों ने न सिर्फ बग़ावत कर दी थी बल्कि बाज़ ने मदीना पर हमले के लिए मुत्तेहिद होना शुरू कर दिया था। यहूदी और नुसरानी ख़ास तौर पर मदीना के खिलाफ सरगर्म हो गए। इस के अलावा झूटे पैग़म्बरों ने अलग महाज़ बना लिए थे। तलीहा और खुसूसन मुसलीमा तो जंगी ताक़त बन गए थे। इस्लाम बहत बड़े खतरे में आ गया था।

अबु बकर(र०) के हुक्म का पस-ए-मंज़र ये था के तबूक और मूता के मआरको के बाद रसूले अकरम(स०) ने ये ज़रूरी समझा था के रोमियों पर हमला कर के उनका दम ख़म तोड़ा जाए। तबूक और मूता के मआरकों में तो ये कामयाबी हासिल की गई थी के उन क़बीलों को मतीअ कर लिया गया था जिन का ख़तरा था के वो रोमियों के साथ इत्तेहाद कर लेंगे। अब रोमियों को ख़त्म करना ज़रूरी था। ये फैसला मुल्क गीरी की ख़ातिर नहीं बल्कि नज़रयाती दिफ़ाअ के लिए किया गया था। यहूदी और नुसरानी इस्लाम के खिलाफ रोमियों के कैम्प में चले गए थे।

रसूल अल्लाह(स०) ने रोमियों पर हमले के लिए एक लश्कर तैयार किया था

जिस में मुहाजरीन और अन्सार के सरकर्दा अफराद भी शामिल थे। इस लश्कर के सिपाह सालार ज़ेद बिन हारिस के बेटे उसामा(र०) थे। उनकी उम्र बमुश्किल बीस साल थी। मोअररिख़ों ने लिखा है के उसामा(र०) को रसूले करीम ने इस लिए सिपह सालार मुक़र्रर किया था के नौजवानों में क़यादत का शौक पैदा हो और वो अपने आप में उसामा(र०) जैसी सलाहियतें पैदा करने की कोशिश करें।

उसामा(र०) को रसूल करीम वैसे भी बहुत चाहते थे। उसामा(र०) के वालिद ज़ेद बिन हारिसा(र०) जंगे मूता में शहीद हो गए थे। उसामा(र०) में लड़कपन में ही असकरी सलाहियतें और शुजाअत पैदा हो गई थी। जंगे ओहद के वक़्त उसामा(र०) बच्चे थे इस लिए उस जंग में शरीक न हो सके लेकिन इस्लामी लश्कर मदीने से रवाना हुआ तो उसामा(र०) रास्ते में कहीं छुप कर बैठ गए। जब लश्कर इन के क़रीब से गुज़रा तो वो लश्कर में शामिल हो गए । उनकी मुराद फिर भी पूरी न हुई इन्हें मैदान-ए-जंग में देख लिया गया और वापस भेज दिया गया। अल्बत्ता हुनेन की जंग में उन्होंने सब को दिखा दिया के शुजाअत क्या होती है।

जब रसूले मक़बूल(स०) ने उसामा(र०) को रोमियों पर हमला करने वाले लश्कर की सिपह सालारी सौंपी थी तो बाज़ लोगों ने एतराज़ किया था के जिस लश्कर में अबु बकर(र०) और उमर(र०) जैसे आला हैसियत और तजुर्बे के बुज़ुर्ग शामिल हैं, उस लश्कर की सिपाह सलारी कल के बच्चे को देना मुनासिब नहीं।

ये एतराज़ रसूल अल्लाह(स०) तक उस वक़्त पहुंचा जब आप(स०) ज़िन्दगी के आख़िरी बुखार में मुब्तेला थे। आप(स०) में बोलने की भी सकत नहीं थी। आप(स०) ने बुखार से ज़रा निजात हासिल करने के लिए अपनी अज़्वाज से कहा के आप(स०) को गुसल कराऐं। आप(स०) पर पानी के सात मशकीज़े डाले गए। इस से बुख़ार ख़ासा कम हो गया। नक़ाहत ज़्यादा थी, फिर भी आप(स०) मस्जिद में चले गए जहां बहुत से लोग मौजूद थे जिन में एतराज़ करने वाले सरकर्दा अफराद भी थे।

"ऐ लोगो!"-रसूल अल्लाह(स०) ने फरमाया-"उसामा(र०) के लश्कर को कूच करने दो। तुम ने उसकी सिपह सालारी पर ऐतराज़ किया है। तुम ने इस के बाप की सिपह सालारी पर भी ऐतराज़ किया था। मै उसामा(र०) को इस मनसब के क़ाबिल समझता हूं इस के बाप को भी मैं ने इस मनसब के क़ाबिल समझा था, और तुम ने देखा के मैं ने सिपह सालारी उसे सौंप कर ग़ल्ती नहीं की थी।"

ऐतराज़ खत्म हो गया और रोमियों के ख़िलाफ लश्कर कूच कर गया लेकिन जर्फ के मुक़ाम पर पहुंचा तो इत्तेला मिली के रसूले करीम(स०) की बीमारी तशवीशनाक सूरत इख़्तियार कर गई है। उसामा(र०) में नौजवानी में ही बुर्ज़ुगों जैसी

दूर अंदेशी पैदा हो गई थी। उन्होंने लश्कर को जर्फ के मुक़ाम पर रोक लिया और खुद रसूल अल्लाह(स०) को देखने मदीना आए। एक तहरीर में उसामा(र०) का बयान इन अल्फाज़ में मिलता है।

"इत्तेला मिली के रसूल अल्लाह(स०) की हालत बिगड़ गई है तो मैं अपने चन्द एक साथियों के साथ मदीना आया। हम सीधे रसूले अल्लाह(स०) के हुज़ूर गए। आप(स०) पर नक़ाहत तारी थी, इतनी के बोल भी न सकते थे। आप ने दो तीन बार हाथ उठा कर आसमान की तरफ किए और हर बार हाथ मेरे ऊपर रख दिये। मैं समझ गया के हुज़ूर(स०) मेरे लिए दुआ कर रहे हैं।"

दूसरे रोज़ उसामा(र०) फिर आप(स०) के हुज़ूर गए और कहा-"या रसूल अल्लाह(स०)! लश्कर जर्फ में मेरा मुंतज़िर है इजाज़त फरमायें।"

रसूल अल्लाह(स०) ने हाथ ऊपर उठाए मगर हाथ ज़्यादा न उठ सके। ज़ोफ बहुत ज़्यादा बढ़ गया था। उसामा(र०) दिल पर ग़म का बोझ और आंखों में आंसू ले कर रवाना हो गए। थोड़ी ही देर बाद रसूले करीम(स०) विसाल फरमा गए। क़ासिद उसामा(र०) के पीछे दौड़ा और रास्ते में जा लिया। उसामा(र०) ने हुज़ूर के विसाल की ख़बर सुनी। घोड़ा सरपट दौड़ाया। अपने लश्कर तक पहुंचे। हुज़ूर(स०) के विसाल की खबर ने लश्कर में कोहराम बपा कर दिया। उसामा(र०) लश्कर को मदीने ले आए।

❁

ख़लीफा अव्वल की बैत हो चुकी थी। उन्होंने उसामा(र०) को बुला कर पूछा के रसूल अल्लाह(स०) ने इन्हें क्या हुक्म दिया था।

"ये हुक्म तो आप को भी मालूम है"-उसामा ने जवाब दिया-"मुझ से ही सुनना है तो सुन लें। रसूल अल्लाह(स०) ने हुक्म दिया था के मैं फिलिस्तीन में बलक़ा और दव्वाम की सरहद से आगे जा कर रोमियों पर हमला करूं लेकिन वहां तक लश्कर इस तरह पहुंचे के दुश्मन को हमले तक लश्कर की आमद की ख़बर तक न हो सके।"

"जाओ उसामा(र०)!"-अबु बकर(र०) ने कहा-"अपना लश्कर ले जाओ और रसूल अल्लाह(स०) के हुक्म की तामील करो।"

लश्कर को जब ये हुक्म मिला तो अबु बकर(र०) पर एतराज़ होने लगे। सब कहते थे के जब हर तरफ से ख़तरों के तूफान ने घेर लिया है, इतनी बड़ी जंग, और वो भी इतनी दूर, शुरू नहीं करनी चाहिए। इस लश्कर की उन फितनों की सरकोबी के लिए ज़रूरत है जो बड़ी तेज़ी से उठ रहे हैं।

"क़सम है उस अल्लाह की जिस के हाथ में मेरी जान है"-अबु बकर(र०) ने कहा-"अगर मुझे जंगल के दरिन्दे चीरने फाड़ने के लिए आ जाए तो भी मैं उसामा(र०) के लश्कर को नहीं रोकूंगा। मैं उस हुक्म की खिलाफ वर्ज़ी किस तरह कर सकता हूं। जो रसूल अल्लाह(स०) ने अपनी ज़िन्दगी में दिया था। मैं अगर मदीना में अकेला रह गया तो भी मैं इस लश्कर को नहीं रोकूंगा।"

"तुम पर सलामती हो अबु बकर(र०)!"-उमर(र०) ने कहा-"एतराज़ करने वाले ये भी कहते हैं के लश्कर को भेजना ही है तो सिपह सालारी उसामा(र०) की बजाए किसी तजुर्बेकार आदमी को दें।"

"ऐ इब्ने खत्ताब!"-अबु बकर(र०) ने जवाब दिया-"क्या तुम भूल गए हो के उसामा(र०) को रसूल अल्लाह(स०) ने सिपह सालार मुर्क़रर किया था? तुम जुर्रत करोगे के रसूल अल्लाह(स०) के हुक्म को मंसूख कर दो?"

"मैं ऐसी जुर्रत नहीं करूंगा"-उमर(र०) ने कहा-"मुझ में इतनी जुर्रत नहीं।"

"मेरी सुन इब्ने खत्ताब!"-अबु बकर(र०) ने कहा-"अपनी क़ौम को देख। पूरी क़ौम ग़म से निढाल है। ग़म के साथ साथ एक ख़ौफ है जो हर किसी के दिल में उतरता जा रहा है। ये ख़ौफ उन बग़ावतों का है जो हमारे इर्द गिर्द उठ रही हैं। हर रोज़ एक खबर आती है के आज फलां क़बीला बाग़ी हो गया है बाज़ क़बीले इस्लाम से मुंहरिफ हो गए हैं। इस्लाम भी ख़तरे में आ गया है मदीना भी। यहूदियों और नुसरानियों ने बड़ी ख़ौफनाक अफवाहें फैलानी शुरू कर दी हैं। इन से और ज़्यादा ख़ौफ फैल रहा है। अगर हम ने रोमियों पर हमला रोक लिया तो दो नुक़सान होंगे। एक ये के क़ौम समझेगी के हम कमज़ोर हो गए हैं। दूसरा नुक़सान ये के रोमी और मजूसी हमें कमजोर समझ कर हम पर चढ़ दौड़ेंगे। मैं क़ौम को ये बताना चाहता हूं के हम कमज़ोर नहीं हो गए। रसूल अल्लाह(स०) की रूहे मुक़द्दस हमारे साथ है। हमारा अल्लाह हमारे साथ है। मैं क़ौम के हौसले और जज़्बे पहले की तरह मज़बूत रखना चाहता हूं। रसूल अल्लाह(स०) के नक़्शे क़दम पर चलना मेरा फर्ज़ है।"

उमर(र०) को इस इस्तदलाल ने मुतमईन कर दिया। अबु बकर(र०) ने कूच का हुक्म दिया।

❁

उसामा(र०) का लश्कर रवाना हुआ तो अबु बकर(र०) कुछ दूर तक पैदल ही साथ चल पड़े। उसामा(र०) घोड़े पर सवार थे। मोअररिख़ेन ने लिखा है के एक सिपाह सालार और वो भी नौजवान, घोड़े पर सवार था और खलीफा उस के साथ साथ पैदल जा रहे थे। उसकी वजह ये थी के खलीफा हर किसी को दिखाना चाहते थे

के सिपाह सालार उसामा(र०) ताज़ीम व तकरीम के क़ाबिल है।

"ऐ खलीफा-ए-रसूल(स०)!-उसामा(र०) ने कहा-"मैं रूहानी तसकीन महसूस कर रहा हूं के अल्लाह की राह की गर्द मेरे पांव पर भी पड़ रही है।"

उमर(र०) भी लश्कर में शामिल थे। अबु बकर(र०)को महसूस हुआ के उन्हें मदीने में उमर(र०) की ज़रूरत होगी।

"उसामा!"-खलीफा ने सिपाह सालार से कहा-"अगर तुम इजाज़त दो तो मैं उमर(र०) को मदीना में रख लूं। मुझे इस की मदद की ज़रूरत होगी।"

उसामा ने उमर(र०) को लश्कर से निकाल कर वापस जाने की इजाज़त दे दी। अबु बकर(र०) बहुत बूढ़े थे। एक जगह रूक गए। उसामा(र०) ने लश्कर को रोक लिया। अबु बकर(र०) ने ज़रा बुलंद जगह खड़े हो कर ख़िताब किया।

> "इस्लाम के मुजाहेदों! मैं तुम्हें दस नसीहयतें करता हूं। इन्हें याद रखना। ख्यानत न करना, बदएहदी न करना, चोरी न करना, दुश्मन की लाशों से आज़ा न काटना, बच्चों और औरतों को कत्ल न करना, तुम्हें दूसरे मज़ाहिब की इबादत गाहें नज़र आयेंगी जिन में तारिक-उद-दुनिया लोग बैठे होंगे। इन्हें परेशान न करना। किसी बस्ती के लोग बर्तनों में तुम्हारे लिए खाना लायेंगे। ये खाना अल्लाह का नाम ले कर खाना। तुम्हें ऐसे लोग भी मिलेंगे जिन्होंने अपने सरों में शैतान के घोंसले बना रखे हैं। इन के सरों के दरमियान का हिस्सा मुंढा हुआ होगा और बाकी बाल बहुत लम्बे लम्बे होंगे। इन्हें क़त्ल कर देना। अपनी हिफाज़त अल्लाह के नाम से करना। खुदा हाफिज़ मुजाहिदों! अल्लाह तुम्हें शिकस्त और वबा से महफूज़ रखे।"

लश्कर की मदीना से रवांगी की तारीख़ 24 जून 632ई०(यक्म रबीउस्सानी 11हिज्री) थी।

❁

ये कहानी चूंके "शमशीर-ए-बे नियाम" की है इस लिए हम वो वाक़ेआत बयान करेंगे जिन का ताल्लुक़ ख़ालिद(र०) बिन वलीद से है। रसूल अल्लाह ने ख़ालिद(र०) को "अल्लाह की तलवार" कहा था

उसामा(र०) के लश्कर के मुताल्लिक़ इतना ही कह देना काफी है के उन्होंने सिर्फ चालीस दिनों में रोमियों के ख़िलाफ वो कामयाबी हासिल कर ली जो रसूले करीम(स०) हासिल करना चाहते थे। उसामा(र०) सिपाह सालारी के हर पहलू पर पूरे

उतरे और जब वो फतहयाब हो कर मदीना में आए तो उन सब ने इन्हें गले लगाया जिन्होंने उनकी सिपह सालारी पर ऐतराज़ किए थे।

दूसरी बड़ी जंग मुर्तेदीन के खिलाफ थी। अबु बकर(र०) ने अपनी फौज को कई हिस्सो में तक़सीम कर के हर हिस्से के सालार मुक़र्रर किए और उनके लिए मुहाज़ मुक़र्रर कर दिये यनी हर सालार को एक एक इलाक़ा बता दिया गया जहां इन्हें हमला करना था। इस तक़सीम में अबु बकर(र०) ने खास तौर पर ख्याल रखा था के हर दुश्मन की ताक़त और लड़ने वाली नफरी देख कर इस के मुताबिक़ सालार मुक़र्रर किए जायें। सब से ज़्यादा ताक़तवर और मक्कार दो मुर्तिद थे। एक तलीहा और मुसलीमा। उन दोनों ने नबुव्वत का दावा कर के हज़ारहा पैरूकार पैदा कर लिए थे। ख़ालिद(र०) बिन वलीद को अबु बकर(र०) ने हुक्म दिया के वो तलीहा की बस्तियों पर हमला करें और उस से फारिग़ हो कर बताह का रूख करें जहां बनी तमीम के सरदार मालिक बिन नवेरा ने बग़ावत कर दी थी।

तमाम सालार अपने अपने मुहाज़ों और मुहिमों को रवाना हो गए। ख़ालिद(र०) अपनी मुहिम के इलाक़े में हस्बे आदत इतनी तेज़ी से पहुंचे के दुश्मन को ख़बर तक न हुई उन्होंने कुछ बस्तियों को घेरे में लिया तो ख़ालिद(र०) के पास कुछ आदमी आए और इन्हें बताया के बाज़ क़बीले तलीहा के फरेब का शिकार हैं। इनकी खूंरेज़ी मुनासिब नहीं होगी। अगर ख़ालिद(र०) ज़रा इन्तेज़ार करें तो क़बीला तई के कम व बेश पांच सौ आदमी ख़ालिद(र०) के दस्ते में शामिल हो जाऐंगे

ख़ालिद ने इन्तेज़ार किया और ये आदमी क़बीला तई के पांच सौ आदमी ले आए जो तलीहा के क़बीले और इस के ज़ेर असर क़बीलों के खिलाफ लड़ने पर आमादा थे। वो मुसल्लह हो कर आए थे। इसी तरह क़बीला जदीला भी ख़ालिद(र०)के साथ मिल गया। तलीहा को पता चला तो बहुत घबराया लेकिन एक शख़्स उय्येना उस के साथ था। वो बनी फराज़ा का सरदार था।उसके दिल मे मदीना वालों के खिलाफ इतना अनाद भरा हुआ था के उसने ऐलान कर दिया था के वो मदीना वालों की हुकूमत को किसी क़ीमत पर तस्लीम नहीं कर सकता। ग़ज़वा अहज़ाव में जिन तीन लश्करों ने मदीना पर हमला करने का मंसूबा बनाया था, इन में से एक लश्कर का सालार यही शख़्स उय्येना बिन हसन था। रसूले करीम(स०) ने अपने इस उसूल के मुताबिक़ के दुश्मन को तैयारी की हालत में पकड़ो, मदीना से निकल कर इन तीनों लश्करों पर हमला कर दिया था। सब से ज़्यादा नुक़सान उय्येना के लश्कर को उठाना पड़ा था। उसने मजबूर हो कर इस्लाम क़ुबूल कर लिया था लेकिन इस्लाम के खिलाफ सरगर्म रहा।

ख़ालिद(र०) को पता चला.के तलीहा के साथ उय्येना है तो उन्होंने अहद किया के इन दोनों को नही बख्शेंगे।

❁

ख़ालिद(र०) ने पेश क़दमी से पहले अपने दो आदमियों-अकाशा बिन मोहसिन और साबित बिन इक़रम अंसारी-को लश्कर से आगे भेज दिया के वो दुश्मन की नक्ल व हरकत या कोई और बात देखें जो लश्कर की पेशकदमी के काम आ सके तो पीछे इत्तेला दें। दोनों चले गए और ख़ालिद(र०) अपने दस्तों के साथ बढ़ते गए। बहुत दूर जा कर इन दोनों में से कोई भी वापस आता न दिखाई दिया।

कुछ और आगे गए तो तीन लाशें पड़ी मिली जो खून में नहाई हुई थी। दो लाशें इन्हीं दो आदमियों-अकाशा और साबित- की थीं जिन्हें ख़ालिद(र०) ने आगे भेजा था। तीसरी लाश किसी अजनबी की थी। बाद में जो इन्केशाफ हुआ(तिबरी और क़ामूस के मुताबिक़) के ये दोनो आगे जा रहे थे। रास्ते में इन्हें एक शख्स हवाल मिल गया एक मोअररिख़ कामिल इब्ने असीर लिखता है के हवाल तलीहा का भाई था लेकिन तिबरी और क़ामूस उसे तलीहा का भतीजा लिखते है। अकशा और साबित ने उसे लल्कार कर क़त्ल कर दिया।

इस की इत्तेला तलीहा को मिल गई। वो अपने भाई सलमा को साथ ले कर आ गया। अकाशा और साबित अभी और आगे जा रहे थे। तलीहा और सलमा ने घात लगाई और दोनो को मुक़ाबले की मोहलत दिये बग़ैर क़त्ल कर दिया।

ख़ालिद(र०) आग बगूला हो गए और तलीहा की बस्ती पर जा धम्के। उय्येना तलीहा की फौज की कामन कर रहा था। और तलीहा एक खे़मे में नबी बना बैठा था। उय्येना ने मुसलमानों का क़हर और ग़ज़ब देखा तो अपने लश्कर को लड़ता छोड़ कर तलीहा के पास गया। वो तलीहा को सच्चा नबी मानता था।

"या नबी!"-उय्येना ने तलीहा से पूछा-"मुश्किल का वक्त आन पड़ा है। जिबराईल कोई वही लाए है?"

"अभी नही"-तलीहा ने कहा-"तुम लड़ाई जारी रखो।"

उय्येना दौड़ता गया और लड़ाई में शामिल हो गया। मुसलमानों का क़हर और बढ़ गया था। ख़ालिद(र०) की चालें झूटे नबी के लश्कर के पांव उखाड़ रही थीं उय्येना एक बार फिर तलीहा के पास गया।

"या नबी!"-उसने तलीहा से पूछा-"कोई वही नाज़िल हुई?"

"अभी नहीं"-तलीहा ने कहा-"तुम लड़ाई जारी रखो।"

"वही कब नाज़िल होगी?"-उय्येना ने झुंझला कर पूछा-"तुम कहा करते हो

के मुश्किल के वक्त वही नाज़िल होती है।"

"खुदा तक मेरी दुआ पहुंच गई है"-तलीहा ने कहा-"वही का इन्तेज़ार है।"

उय्येना अपने लश्कर में चला गया मगर अब उसका लश्कर खालिद(र०) के घेरे में आ गया था। उय्येना घबराहट के आलम में एक बार फिर तलीहा के पास गया और उसे अपने लश्कर की कैफियत बता कर पूछा के वही नाज़िल हुई है या नहीं।

"हां"-तलीहा ने जवाब दिया-"वही नाज़िल हो चुकी है।"

"क्या?"

ये के-तलीहा ने जवाब दिया "मुसलमान भी जंग लड़ रहे हैं, तुम भी जंग लड़ रहे हो। तुम इस वक्त को कभी न भूल सकोगे।

उय्येना को कुछ और तवक्क़ो थी लेकिन तलीहा ने उसे मायूस कर दिया। उसे ये भी पता चल गया के तलीहा झूट बोल रहा है।

"अब ऐसे ही होगा"-उय्येना गुस्से से कहा-"वो वक्त जल्दी आ रहा है जिसे तुम सारी उम्र नहीं भूल सकोगे।"

उय्येना दौड़ता बाहर गया और चिल्ला चिल्ला कर अपने क़बीले से कहने लगा-"ऐ बनू फराज़ा! तलीहा कज़्ज़ाब है। झूटे नबी के पीछे जानें मत गंवाओ। भागो। अपनी जानें बचाओ।"

बनू फराज़ा तो भाग उठे, तलीहा के अपने क़बीले के लड़ने वाले लोग तलीहा के खेमे के इर्द गिर्द जमा हो गए। खालिद(र०) तमाशा देखने लगे। तलीहा के खेमे के साथ एक घोड़ा और एक ऊंट तैयार खड़े थे। क़बीला तलीहा से पूछ रहा था के अब क्या हुक्म है। तलीहा की बीवी जिस का नाम नवार था, इस के साथ थी। तलीहा घोड़े पर सवार हो गया और उसकी बीवी ऊंट पर चढ़ बैठी

"लोगो!"-तलीहा ने अपने क़बीले से कहा-"मेरी तरह जिस के पास भागने का इन्तेज़ाम है वो अपने बीवी बच्चों को ले कर भाग जाए।"

इस तरह इस कज़्ज़ाब का फित्ना खत्म हो गया। उमर(र०) के दौर-ए-खिलाफत में तलीहा ने इन के हाथ पर बैत की और मुसलमान हो गया था।

❁

खालिद(र०) ने और कई क़बीलों को मतीअ किया और इन्हे अरतदाद की कड़ी सज़ा दी। इन पर अपनी शर्तें आयद कीं। इस्लाम से जो मुनहरिफ हो गए थे, इन्हें दोबारा हल्का बगोश इस्लाम किया। तलीहा की नबुव्वत को भी खालिद(र०) ने खत्म कर दिया और उय्येना जो यहूदियों से बढ़ कर मुसलमानों का दुश्मन था। ऐसा भागा के उसने ईराक़ जा दम लिया मगर उस का ज़हर अभी पीछी रह गया था। ये

ज़हर औरत की शक्ल में था जो सलमा कहलाती थी। उसका पूरा नाम उम्मे ज़म्ल सलमा बिन्ते मालिक था।

सलमा बनू फराज़ा के सरदारों के ख़ानदानों की एक मशहूर औरत उम्मे कुर्फा की बेटी थी। रसूले करीम(स०) की ज़िन्दगी का वाक़ेया है के जैद बिन हारिस (उसामा(र०) के वालिद) बनी फराज़ा के इलाके में जा निकले। ये क़बीला मुसलमानों का जानी दुश्मन था। वादी कुरा में ज़ैद का सामना बनी फराज़ा के चन्द आदमियों से हो गया। ज़ैद के साथ बहुत थोड़े आदमी थे। बनी फराज़ा के इन आदमियों ने इन सब को क़त्ल कर दिया और ज़ेद को गहरे ज़ख्म आए। वो गिरते पड़ते मदीना पहुंच गए। जब इन के ज़ख्म ठीक हो गए तो रसूले अकरम(स०) ने इन्हें बाक़ायदा फौजी दस्ते दे कर बनी फराज़ा पर हमले के लिए भेजा था।

मुसलमानो ने बनी फराज़ा के बहुत से आदमियों को हलाक और कुछ को क़ैद कर लिया। झड़प बड़ी खूंरेज़ थी। इन क़ैदियों में उम्मे कुर्फा फातिमा बिन्त बदर थी। इस औरत की शोहरत ये थी के अपने क़बीले के अलावा दूसरे क़बीलों को भी मुसलमानों के खिलाफ भड़काती रहती थी। उसे मदीना ला कर सज़ाए मौत दे दी गई इस के साथ इस की कमसिन बेटी उम्मे ज़म्ल सलमा भी थी। रसूले करीम(स०) ने ये लड़की उम्मुल मोमेनीन आएशा(र०) सिद्दीक़ा के हवाले कर दी। उसे प्यार से रखा गया मगर वो हर वक़्त उदास रहती थी। आएशा सिद्दीक़ा ने उस पर रहम करते हुए उसे आज़ाद कर दिया।

बजाए इस के सलमा मुसलमानों की शुक्रगुज़ार होती के उसे लोंडी न रहने दिया गया और आज़ाद कर के उसे उस की ऊंची हैसियत में वापस भेज दिया गया है, इस ने अपने दिल में अपनी मां के क़त्ल का इन्तेक़ाम रख लिया और जंगी तरबियत हासिल करने लगी। वो सरदारों के ख़ानदान की लड़की थी। उस में क़यादत के जौहर भी पैदा हो गए। उसने मुसलमानों के खिलाफ एक लश्कर तैयार कर लिया और मदीना पर हमले के लिए पर तोलने लगी, मगर मुसलमान एक जंगी कुव्वत बन चुके थे इस लिए सलमा मदीना के क़रीब आने की जुर्रत न कर सकी।

अब तलीहा और उय्येना को शिकस्त हुई तो सलमा मैदान में आ गई। उसकी मां उय्येना की चचाज़ाद बहन थी। जिन क़बीलों ने ख़ालिद(र०) से टक्कर ली थी, उन्हें ये लड़ाई बड़ी महंगी पड़ी थी। जो बच गए थे वो इधर उधर भाग गए थे। इन में ग़तफान, तई, बनू सलीम और हवाज़न के बाज़ सरकर्दा वो लोग सलमा के हां जा पहुंचे और एहद किया के सलमा अगर उनका साथ दे तो वो मुसलमानो से इन्तेक़ाम लेने के लिए जानें कुर्बान कर देंगे। सलमा तो मौक़े की तलाश में थी। वो तैयार हो गई

और चन्द दिनों में अपना लश्कर तैयार कर के रवाना हो गई।

۞

उस वक़्त ख़ालिद(र०) बज़ाख़ा में थे जहां उन्होंने तलीहा को शिकस्त दी थी। इन्हें इत्तेला मिली के बनू फराज़ा का लश्कर आ रहा है। ख़ालिद(र०) ने अपने दस्तो को तैयार कर लिया।

जिस तरह समला की मां अपने जंगी ऊंट पर सवार हो कर लश्कर के आगे आगे चला करती थी, इसी तरह सलमा भी अपने लश्कर के आगे आगे थी उसके इर्द गिर्द एक सौ शतुर सवारों का घेरा था जो तलवारों और बरछियों से मुसल्लेह थे। ये लश्कर जोश व खरोश बल्कि क़हर और ग़ज़ब के नारे लगाता आ रहा था।

ख़ालिद(र०) ने इन्तेज़ार न किया के दुश्मन और क़रीब आए। उनके साथ नफरी थोड़ी थी। वो दुश्मन को इतनी मोहलत नहीं देना चाहते थे के वो हमले की तरतीब या क़लील तादाद मुसलमानों को नफरी की इफरात के बल बूते पर घेरे में लेने की पोज़िशन में आए। ख़ालिद(र०) ने हल्ला बोलने के अन्दाज़ से हमला कर दिया। इन्हें मालूम था के दुश्मन का लश्कर सफर का थका हुआ है। ख़ालिद(र०) ने दुश्मन की इस जिस्मानी कैफियत से भी फायदा उठाया।

सलमा जो एक सौ जांबाज़ शुतर सवरों के हिफाज़ती नरग़े में थी, इश्तआल अंगेज़ अल्फाज़ से अपने लश्कर के जोश व खरोश में जान डाल रही थी। मोअररि़ख लिखते हैं के बनू फराज़ा ने ख़ालिद(र०) को बड़ा ही सख्त मुक़ाबला दिया नफरी थोड़ी होने की वजह से ख़ालिद(र०) मजबूर से होते जा रहे थे और दुश्मन के हौसले बढ़ते जा रहे थे। सलमा की लल्कार और अल्फाज़ जलती पर तेल का काम कर रहे थे।

ख़ालिद(र०) ने सोचा के सिर्फ ये औरत मारी जाए तो बनू फराज़ा के क़दम उखड़ जाऐंगे। उन्होंने अपने चन्द एक मुंतखिब जांबाज़ों से कहा के वो सलमा का हिफाज़ती हिसार तोड़ कर उसे ऊंट से गिरा दें।

सलमा के मुहाफिज़ भी जांबाज़ ही थे। वो ख़ालिद(र०) के जांबाज़ों को करीब नहीं आने देते थे। इन जांबाज़ों ने ये तरीक़ा इख्तियार किया के एक एक मुहाफिज़ शतुर सवार को दूसरों से अलग कर के मारना शुरू कर दिया इस तरह जांबाज़ों ने घेरा तोड़ दिया लेकिन कोई जांबाज़ सलमा तक नहीं पहुंच सकता था। ज़ख्मी हो कर पीछे आ जाता था।

आख़िर पूरे एक सौ मुहफिज़ मारे गए लेकिन ख़ालिद(र०) को इस की बहुत क़ीमत देनी पड़ी। जांबाज़ों ने तलवारो से सलमा के कचावे की रस्सियां काट दी।

कचावा सलमा समेत नीचे आ पड़ा। जांबाज़ों ने ख़ालिद(र०) की तरफ देखा के क्या हुक्म है। कैदी बनाना है या ख़त्म करना है। ख़ालिद(र०) ने हाथ से इशारा किया। एक जांबाज़ ने तलवार के एक ही वार से सलमा का सर तन से जुदा कर दिया।

बनू फराज़ा ने ये मंज़र देखा तो उनमें भगदड़ मच गई और वो अपनी लाशों को छोड़ कर भाग गए।

मदीना से तक़रीबन दो सौ पिछत्तर मील शुमाल मशिरक़ में बत्ताह नाम का एक छोटा सा गांव है जिस में बुद्दओं के चन्द एक कुंबे आबाद थे। इस गांव को कोई अहमीयत, क़ोई हैसियत हासिल नहीं। अगर वहां इधर उधर से देखें तो ऐसे आसार मिलते हैं जैसे यहां कभी शहर आबाद रहा है।

चौदह सदियां गुज़री, यहां एक शहर आबाद था। इसका नाम बत्ताह था जो आज तक ज़िन्दा है मगर शहर सुकड़ सिमट कर छोटा सा गांव रह गया है। इस शहर मे खूबसूरत लोग आबाद थे। वो बहादुर थे, निडर थे और बातें ऐसे अंदाज़ से करते थे जैसे कोई नज़्म सुना रहे हों। औरतें हसीन थी। और मर्द वजीह थे। ये एक ताक़तवर कबीला था जिसे बनू तमीम कहते थे।

बनूयरबू भी एक कबीला था लेकिन अलग अलग नही बल्कि बनू तमीम का सब से बड़ा हिस्सा था। इस का सरदार मालिक बिन नवेरा था। बनू तमीम का मज़हब मुशतरक नही था। इन में आतिश परस्त भी थे। क़ब्र परस्त भी लेकिन अकसरियत बुत परस्त थी। बाज़ ईसाई हो गए थे। ये लोग सख़ावत, मेहमान नवाज़ी और शुजाअत में मशहूर थे। रसूले अकरम(स०) ने हर तरफ कुबूले इस्लाम के पैग़ाम जिन क़बीलों को भेजे थे उनमें बनू तमीम ख़ास तौर पर शामिल थे। इस्लाम के फरोग़ और इस्तेहकाम के लिए बनू तमीम जैसे ताक़तवर और बा असर क़बीले को साथ मिलाना ज़रूरी था।

ये एक अलग कहानी है इस क़बीले ने इस्लाम किस तरह कुबूल किया था। मुख़तसिर ये के बनू तमीम की ग़ालिब अकसरयित ने इस्लाम कुबूल कर लिया। मलिक बिन नवेरा मुनफरिद शख्सियत और हैसियत का हामिल था। वो आसानी से अपने अक़ीदे बदलने वाला आदमी नहीं था, लेकिन उसने देखा के बनू तमीम के बेशतर क़बायल मुसलमान हो गए है तो उसने अपनी मक़बूलियत और अपनी सरदारी

को क़ायम रखने के लिए इस्लाम कुबूल कर लिया। चूंके यही शख़्स ज़्यादा बारौब और असर व रसूख वाला था इस लिए रसूल करीम ने इसे बत्ताह का अमीर मुक़र्रर कर दिया। ज़कात, अश्र, दीगर महसूल और वाजबात वुसूल कर के मदीना भिजवाना उसकी ज़िम्मेदारी थी।

मशहूर मोअर्रिख़ बिलाज़ी और मोहम्मद हुसेन हैकल लिखते हैं के मालिक बिन नवेरा बड़ा वजीह और खूबसूरत आदमी था। उसके कद काठी में अजीब सी कशिश थी। उसके सर के बाल लम्बे और खूबसूरत थे शहसवार ऐसा के कोई उसके मुक़ाबले में ठहर नहीं सकता था। अच्छा खासा शायर था। आवाज़ में मिठास और तरन्नुम था और उसमें सब से बड़ी खूबी ये थी के हंस मुख था। ग़म के मारे हुओं को हंसा देता था। उसमें खराबी ये थी के उसमें गुरूर और तकब्बुर बहुत था। इसकी एक वजह तो उसकी वो हैसियत थी जो इसे बनू तमीम में और खुसूसन अपने क़बीले में हासिल थी। दूसरी वजह उसका मर्दाना हुस्न और दीगर मर्दाना औसाफ थे जो एक तिलिस्म की तरह दूसरों पर तारी हो जाते थे।

उसका ताल्लुक मुत्तादि्द औरतों के साथ था। क़बीले की जवान लड़कियां उसका कुर्ब हासिल करने की ख्वाहां और कोशां रहती थीं लेकिन वो वक़्ती ताल्लुक़ रखता और किसी को बीवी नहीं बनाता था। कहता था के इस तरह एक औरत उसके हम पल्ला हो जाएगी, हालांके उस वक़्त बीवियों को ये मुक़ाम हासिल नहीं था। वो क़बीले की औरतों के दिलों में बस्ता था।

अल्मन्हाल बनू तमीम का मामूली सा एक आदमी था जिसे लोग सिर्फ नाम से जानते पहचानते थे। उसे कोई रूत्बा और कोई ऊंचा मुक़ाम हासिल नहीं था। उसकी बेटी लैला जवान हुई तो लोग अल्मन्हाल का नाम इस तरह लेने लगे जैसे उसे ऊंचा रूत्बा मिल गया हो। जवानी की दहलीज़ पर उसकी बेटी लैला का हुस्न निखर आया तो क़बीले के जवान आदमी उसे रूक रूक कर देखने लगे और उसे करीब से देखने के लिए उसके रास्ते में खड़े दिखाई देने लगे।

असफाहाई ने मुख़्तलिफ मोअर्रिख़ों और उस दौर की दीगर तहरीरों के हवाले से लिखा है के लैला को खुदा ने बड़ी फय्याज़ी से हुस्न दिया था लेकिन उसकी आंखें इतनी दिलफरेब थीं के वो जिस की तरफ देखती थी वो मसहूर हो जाता था। वो लिबास ऐसा पहनती थी के घुटनों तक उसकी टांगें उरयां रहती थीं। मोअर्रिख़ कहते हैं के उसकी टांगों की साख़्त में ग़ैर मामूली तौर पर जाज़बियत थी। ऐसे ही उसके बाज़ू थे। गोल और लम्बे। वो अपने बालों को खुला रखती थी। बालों का रंग और इनकी चमक ऐसी के इन में तिलिस्माती तआस्सुर था।

उसे अगर कोई तवज्जे से नहीं देखता था तो वो मालिक बिन नवेरा था। कई बार ऐसे हुआ के वो मालिक के क़रीब से गुज़री। न मालिक ने उसकी तरफ न लैला ने मालिक की तरफ देखा।

❁

एक रोज़ लैला अपनी ऊंटनी को पानी पिला कर ला रही थी। रास्ते में उसे एक औरत मिल गई। लैला उसे जानती थी वो मालिक बिन नवेरा की खास मुलाज़िमा थी। उसने लैला को रोक लिया।

"लैला!"-मुलाज़मा ने उसे कहा-"तू उससे ज़्यादा गुरूर कर सकती है। क़बीले में कौन है जो तेरे पांव के नाख्नों को चूमने के लिए तैयार न हो।"

"क्या तेरे आक़ा ने तुझे काई शेर याद करा के नहीं भेजा?"-लैला ने मुस्कुरा कर कहा-"मालिक बिन नवेरा शायर है ना! क्या मैं झूट कह रही हूं के तुझे तेरे आक़ा ने मेरे लिए कोई पैग़ाम दे कर भेजा है? मैं मर्दों की आंखों में उनके दिलों के पैग़ाम पढ़ लिया करती हूं।"

"खुदा की क़सम!"-अधेड़ उम्र मुलाज़मा ने कहा-"तू इसी उम्र में दानाई की बातें करने लगी है। अगर तूने मेरी आंखों में मेरे आक़ा का पैग़ाम पढ़ लिया है तो तेरा क्या जवाब होगा? वो तो तेरे लिए बेक़रार है।"

"इस बस्ती में मुझे कोई ऐसा आदमी दिखा सकती हो जो मेरे लिए बे क़रार नहीं?"-लैला ने बावक़ार लहजे में कहा।

"लेकिन मेरे आक़ा की बात कुछ और है"-मुलाज़मा ने कहा।

"सिर्फ इतनी बात और है के वो दूसरों आदमियों की तरह मेरी तरफ देखता नहीं"-लैला ने कहा-"और मैं जानती हूं के वो मेरी तरफ क्यों नहीं देखता। वो चाहता है के मैं उसकी तरफ देखूं। वो सरदार है ना! अपने आप को बहुत खूबसूरत समझता है। उसे कहना लैला तुम्हारी तरफ कभी नहीं देखेगी।"

"क्या वो इस जवाब से मायूस नहीं होगा?"-मुलाज़मा ने कहा-"और क्या तू खुश नसीब नहीं के मालिक बिन नवेरा जैसा मर्द तुझे चाहता है? वो तेरे क़दमों में सोने के टुकड़ रख देगा।"

"उसे कहो मेरे क़दमों में सर रखे"-लैला ने कहा-"क्या तू जानती नहीं के उसने इतनी दिलेरी से मुझे ये पैग़ाम क्यों भेजा है?....क्योंके वो सरदार है। मेरा बाप उसके मुक़ाबले में कुछ भी नहीं। उसने मेरी तौहीन की है।"

"तो क्या तू किसी और को चाहती है?"-मुलाज़मा ने पूछा।

लैला ने क़हक़हा लगाया और जवाब में कुछ भी न कहा।

"फिर मैं उसे क्या कहूं?"—मुलाज़मा ने पूछा।

"मैं ने जो कहना था कह दिया है"—लैला ने कहा—"और उसे कहना के मैं सिर्फ़ एक रात जलने वाली शमा नहीं हूं। मैं उसके पास जाऊंगी जो मुझे उम्र भर की रौशनी समझेगा।"

जब मालिक बिन नवेरा को ये जवाब मिला तो उस के तकब्बुर और ग़रूर का बुत टूट गया।

"आक़ा!"—मुलाज़मा ने कहा—"लैला क्या है?....क़बीले की एक लड़की है। शहज़ादी नहीं। उसकी शादी का फैसला उसका बाप करेगा। उसके बाप को कहें...."

"मुझे जिस्म नहीं लैला का दिल चाहिए"—मालिक बिन नवेरा ने कहा।

और एक रोज़ मालिक लैला से मोहब्बत की भीख मांग रहा था।

"मैं ने तुम्हें धुत्कारा नहीं था।—लैला ने उसे कहा—"मैं ने ये बताया था के मैं वो नहीं हूं जो तुम समझे थे।"

लैला ने मालिक बिन नवेरा का तकब्बुर और ग़रूर अपने पांव तले मसल डाला और उनकी शादी हो गई। बनू तमीम ने लैला को उम्मे तमीम का ख़िताब दे दिया।

❁

रसूल करीम(स०) के विसाल की खबर मिलते ही मालिक बिन नवेरा ने मदीना वालों से नज़रें फैर ली और ज़ाहिर कर दिया के उसने इस्लाम कुबूल किया था ईमान नहीं। उसने ज़कात और महसूलात वुसूल कर के अपने घर में रखे हुए थे। चन्द दिनों तक उसने ये माल मदीना को भेजना था। उसने क़बीले के लोगों को इक्ळा कर के उन्हें ज़कात और महसूलात वापस कर दिए।

"अब तुम आज़ाद हो"—मालिक ने कहा—"मैं ने मदीना की ज़ंजीर तोड़ डाली है। अब जो कुछ तुम कमाओगे, वो सब तुम्हारा होगा।"

लोगों ने दाद व तहसीन के नारे बुलन्द किये।

मालिक बहुत खुश था के मदीना से ताल्लुक़ ताड़ कर वो अपने कबीले का फिर खुदमुख्तार सरदार बन गया है मगर उसकी खुशी ज़्यादा देर तक क़ायम न रह सकी। दो तीन क़बीलों के सरकर्दा आदमियों ने मालिक से कहा के उसने मदीना से ताल्लुक़ तोड़ कर अच्छा नहीं किया।

मालिक ने इन्हें मदीना के खिलाफ करने की बहुत कोशिश की लेकिन उसकी ज़बान का जादू न चल सका।

ज़कात और महसुलात की अदाएगी के मसअले पर बनू तमीम तीन हिस्सों में बट गए। एक वो थे जो ज़कात वग़ैरा की अदाएगी करना चाहते थे। दूसरे वो जो मदीना वालों के साथ कोई ताल्लुक़ नही रखना चाहते थे। और तीसरे वो थे जिन के लिए फैसला करना मुश्किल हो गया था के क्या करें।

इन सब के इख़्तेलाफ इतने बढ़ गए के क़बीलों के आपस में खूँरेज़ लड़ाईयां शुरू हो गईं। इतने में सज्जाह अपना लश्कर ले कर आ गई सज्जाह का ज़िक्र पहले आ चुका है। उसने नबुव्वत का दावा किया था। हारिस की बेटी सज्जाह अपने लश्कर के साथ मालिक बिन नवेरा के क़बीले बनू यरबू के इलाक़े में जा खेमा ज़न हुई। उसने मालिक बिन नवेरा को बुला कर कहा के वो मदीना पर हमला करना चाहती है।

"अगर तुम अपने क़बीले को मेरे लश्कर में शामिल कर दो तो हम मुसलमानों को हमेशा के लिए ख़त्म कर सकते हैं"-सज्जाह ने कहा-"तुम्हें मालूम होगा के मैं बनू यरबू में से हूं।"

"खुदा की क़सम!"-मालिक बिन नवेरा ने कहा-"मैं तुम्हारा दस्त-ए-रास्त बन जाऊंगा लेकिन एक शर्त है जो दरअसल हमारी ज़रूरत है....तुम देख रही हो के बनू तमीम के क़बीलों में दुश्मनी पैदा हो चुकी है। इन सब को मसालेहत की दावत दे कर इन्हें मदीना पर हमले के लिए तैयार करेंगे। अगर ये मसालेहत पर आमादा न हुए तो इन्हें हम तबाह कर देंगे। अगर तुम ने इन्हें ख़त्म न किया तो ये सब मिल कर तुम्हारे ख़िलाफ हो जाएंगे। इन में मदीने के वफादार भी हैं। उन्होंने सच्चे दिल से इस्लाम कुबूल कर लिया है।"

मालिक बिन नवेरा की ख्वाहिश ये थी के सज्जाह के लश्कर को साथ मिला कर बनू तमीम के मुसलमानों को और अपने दीगर मुख़ालफीन को ख़त्म किया जाए। मोअररिख़ लिखते हैं के सज्जाह मालिक बिन नवेरा के मर्दाना हुस्न और जलाल से मुतास्सिर हो गई थी। उसने मालिक की बात फौरन मान ली। दोनों ने तमाम क़बीलो के सरदारों को मसालेहत के पैग़ाम भेजे। पैग़ाम में ये भी शामिल था के मदीना पर हमला किया जाएगा।

सिर्फ एक क़बीले का सरदार वक़ीअ बिन मालिक था जिसने इन से मसालेहत कुबूल कर ली। बाक़ी तमाम क़बीलों ने इन्कार कर दिया। इस के नतीजे में सज्जाह, मालिक और वक़ीअ के मुत्तेहदा लश्कर ने दूसरे क़बीलों पर हमला कर दिया। बड़ी खूँरेज़ लड़ाईयां लड़ी जाने लगी। बनू तमीम जो सख़ावत, मेहमान नवाज़ी और ज़बान की चाश्नी के लिए मशहूर थे, एक दूसरे के लिए वहशी और दरिंदे बन गए। बस्तियां

उजड़ गई। खून बह गया, लाशें बिखर गईं।

❁

लैला को अपने दरवाज़े पर औरतों की आह व बका सुनाई दी। कुछ औरतों बिन कर रही थी।

"क्या मैं बेवा हो गई हूं?"-लैला नंगे पांव बाहर को दौड़ी। वो कह रही थी-"मालिक बन नवेरा की लाश लाए हैं?"

उसने दरवाज़ा खोला तो बाहर दस बारह औरतें खड़ी बीन कर रही थीं। लैला को देख कर उनकी आवाज़ और ज़्यादा बुलंद हो गई। तीन औरतों ने अपने बाज़ुओं पर नन्हें नन्हे बच्चों की लाशें उठा रखी थी। लाशों पर जो कपड़े थे वो खून से लाल थे।

"लैला! क्या तू औरत है?"-एक औरत अपने बच्चे की खून आलूद लाश लैला के आगे करते हुए चिल्लाई-"तू औरत होती तो अपने खाविंद का हाथ रोकती के बच्चों का खून न कर।"

"ये देख"-एक और बच्चे की लाश लैला के आगे आ गई।

"ये देख मेरे बच्चे!"-एक औरत ने अपने दो बच्चे लैला के सामने खड़े कर के कहा-"ये यतीम हो गए हैं"

लैला को चक्कर आने लगा। औरतों ने उसे घेर लिया और चीखने चिल्लाने लगीं।

"तू डायन है।"

"तेरा ख़ाविंद जल्लाद है।"

"सज्जाह को नबुव्वत किस ने दी है?"

"सज्जाह तेरे खाविंद की दाश्ता है।"

"सज्जाह तेरी सोकन है"

"तेरे घर में हमारे घरों का लूटा हुआ माल आ रहा है।"

"मालिक बिन नवेरा तुझे हमारे बच्चों का खून पिला रहा है।"

"हमारे तमाम बच्चों को काट कर फैंक दे हम सज्जाह की नबुव्वत नहीं मानेंगी।"

"हमारे नबी मोहम्मद(स०) हैं। मोहम्मद(स०) अल्लाह के रसूल हैं"

बस्ती के लोग इक्ळे हो गए। इन में औरतें ज़्यादा थीं लैला ने अपना हसीन चेहरा अपने हाथो में छुपा लिया। उसका जिस्म डोलने लगा। दो औरतों ने उसे थाम लिया। उसने अपने सर को ज़ोर ज़ोर से झटका और वो संभल गई उस ने औरतों की तरफ देखा।

"मैं तुम्हारे बच्चो के खून की कीमत नहीं दे सकती"-लैला ने कहा-"मेरा बच्चा ले जाओ इसे काट कर टुकड़े टुकड़े कर दो।"

"हम चुड़ेलें नही"-एक शोर उठा-"हम डायनें नही। लड़ाई बन्द कराओ। लूट मार और क़त्ल व ग़ारत बन्द कराओ। तुम्हारा खाविंद और वकी़ बिन मालिक सज्जाह के साथ मिल कर लूट मार कर रहा है।"

"लड़ाई बन्द हो जाएगी"-लैला ने कहा-"बच्चों की लाशें अन्दर ले आओ।"

मायें अपने बच्चों की लाशें अन्दर ले गईं। लैला ने तीनों लाशें एक पलंग पर रख दीं जिस पर वो और मालिक बिन नवेरा सोया करते थे।

❁

मालिक बिन नवेरा लैला का पुजारी था। उस पर लैला का हुस्न जादू की तरह सवार था। उस ज़माने में सरदार लड़ाइयों में अपनी बीवियों को साथ रखते थे लेकिन ये लड़ाई इस क़िस्म की थी के मालिक लैला को अपने साथ नहीं रख सकता था। लैला से वो ज़्यादा देर तक दूर भी नहीं रह सकता था। अगर कहीं क़रीब होता तो रात को लैला के पास आजाया करता था। वो उस रात आ गया। लैला को देख कर उस पर बड़ी तेज़ शराब जैसा नशा तारी हो गया।

"क्या इस पलंग पर कोई सोया हुआ है?"-मालिक बिन नवेरा ने पूछा।

"नहीं"-लैला ने कहा-"तुम्हारे लिए एक तोहफा ढांप कर रखा हुआ है.... तीन फूल हैं लेकिन मुर्झा गए हैं।"

मालिक ने लपक कर चादर हटाई और यूं पीछे हट आया जैसे पलंग पर सांप कुंडली मारे बैठा हो। उसने लैला की तरफ देखा।

"खून पीने वाले दरिंदे के लिए इस से अच्छा तोहफा और कोई नही हो सकता"-लैला ने कहा और उसे सुनाया के इन की मांयें किस तरह आई थीं और क्या कुछ कह गईं हैं। उसने अपना दूध पीता बच्चा मालिक के आगे कर के कहा-"जा, ले जा इसे और इसका भी खून पी ले"-लैला ने कहा-"क्या तू वो मालिक बिन नवेरा है जिसे लोग हंस मुख कहते हैं? क्या ये है तेरी सख़ावत और शुजाअत के तू एक औरत के जाल में आकर लूट मार करता फिर रहा है? अगर तू बहादुर है तो मदीना पर चढ़ाई कर। यहां निहत्थे मुसलमानों को क़त्ल करता फिर रहा है।"

मालिक बिन नवेरा मामूली आदमी नहीं था। उसकी शख्सियत में इन्फरादियत थी जो दूसरों पर तआस्सुर पैदा करती थी। इस ने ताने कभी नहीं सुने थे। उसका सर कभी नही झुका था।

"क्या ये है तेरा गुरूर?"–लैला ने उसे खामोश खड़ा देख कर कहा–"क्या तू इन मासूम बच्चों की लाशों पर तकब्बुर करेगा?....एक औरत की ख़ातिर...एक औरत ने तेरा ग़रूर और तकब्बुर तोड़ कर तुझे क़ातिल और डाकू बना दिया है। मैं अपने बच्चे को तेरे पास छोड़ कर जा रही हूं पीछे से एक तीर मेरी पीठ में भी उतार देना।"

"लैला!"–मालिक बिन नवेरा गरज कर बोला मगर बुझ के रह गया और मुजरिम सी आवाज़ में कहने लगा–"मैं किसी औरत के जाल में नहीं आया।"

"झूट न बोल मालिक!"– लैला ने कहा–"मैं जा रही हूं। सज्जाह को ले आ यहां....ये याद रख ले। तेरी सरदारी, तेरी खूबसूरती, तेरी शायरी और तेरी खुंखारी तुझे उन मरे हुए बच्चों की मांओं की आहों और फरयादों से बचा नहीं सकेंगी.....ये तो सिर्फ तीन लाशें हैं। बस्तियों को लूटते मालूम नहीं कितने बच्चे तेरे घोड़ों के क़दमों तले कुचले गए होंगे। तू सज़ा से बच नहीं सकेगा। तेरा भी खून बहेगा और मैं किसी और की बीवी होंगी।"

मालिक बिन नवेरा ने यूं चौंक कर लैला की तरफ देखा जैसे उसने उसकी पीठ में खंजर घोंप दिया हो। वो आहिस्ता आहिस्ता चलता बाहर निकल गया।

❁

मालिक रात भर वापस न आया। सुबह तुलू हुई बत्ताह जो बारौनक़ बस्ती थी, एक ऐसे मरीज़ की तरह दिखाई दे रही थी। जो कभी ख़ूबरू जवान हुआ करता था। उसका चेहरा बे नूर और आंखों में मौत का ख़ौफ रचा हुआ था। बत्ताह की औरतों के चेहरों पर मुर्दनी छाई हुई थी। ये इस मारधाड़ का नतीजा था। जो बनू तमीम में हो रही थी। सूरज की पहली किरनें आयीं तो बत्ताह की गलियों में डरी डरी सी दाख़िल हुईं।

उस वक़्त सूरज कुछ और ऊपर उठ आया था जब बत्ताह में हड़बोंग मच गई। बाज़ औरतें बच्चों को उठा कर घरों को दौड़ गईं और अंदर से दरवाज़ा बन्द कर लिए। कुछ औरतें अपनी जवान बेटियों को साथ लिए बस्ती से निकल गईं। वो कहीं छुप जाने को जा रही थीं। बुढ़े आदमी कमानें और तरकश उठाए छतों पर चढ़ गए। बुढ़ों के अलावा जो आदमी बस्ती में था उन्होंने बरछियां और तलवारें निकाल लीं-किसी ने बड़ी बुलंद आवाज़ से कह दिया था के दुश्मन का लश्कर आ रहा है।

दूर ज़मीन से जो गर्द उठ रही थी वो किसी लश्कर की हो सकती थी। बत्ताह में जवान आदमी कम ही रह गए थे। सब मालिक बिन नवेरा के साथ दूसरे क़बीलों से लड़ाई में चले गए थे। बत्ताह में जो रह गए थे, उन पर ख़ौफ व हिरास तारी हो गया था।

लैला के घर में पलंग पर तीन बच्चों की लाशें पड़ी थीं और वो अपने बच्चों को सीने से लगाए अपने क़िला नुमा मकान की छत पर खड़ी थी। वो बार बार अपने बच्चे को देखती और उसे चूमती थी। वो शायद सोच रही थी के बच्चों के खून का इन्तेक़ाम उसके बच्चे से लिया जाएगा

ज़मीन से उठती हुई गर्द अब बहुत करीब आ गई थी और उस में घोड़े और ऊंट ज़रा ज़रा दिखाई दे देने लगे थे।

"होशियार बनू यरबू खबरदार!"-बत्ताह में किसी की आवाज़ सुनाई दी-"जानें लड़ा दो। डरना नही।" लश्कर गर्द से निकल आया और क़रीब आ गया। बस्ती के कई एक आदमी घोड़ों पर सवार, हाथों में बरछियां और तलवारें लिए आगे चले गए। उनका अंजाम ज़ाहिर था लेकिन इन्हें अपनी तरफ आते देख कर लश्कर की तरतीब में कोई फर्क़ न आया। आगे जाकर वो लश्कर का हिस्स बन गए।

"अपने हैं"-उन्होंने ने नारे लगाए-"अपने है। मालिक बिन नवेरा है....लड़ाई ख़त्म हो गई है।"

बत्ताह में से भी नारे गरजने लगे। लोगों ने आगे बढ़ कर अपने लश्कर का इस्तक़बाल किया मालिक बिन नवेरा कहीं भी न रूका। वो सीधा अपने घर के दरवाज़े पर आया और घोड़े से कूद कर अंदर चला गया। उसे लैला सहन में खड़ी मिली। उसके दिल्कश चेहरे पर उदासी थी और उसकी वो आंखें बुझी बुझी सी थीं जिन पर क़बीले के ज़वान जानें क़ुर्बान करने को तैयार रहते थे।

"मैं ने तेरा हुक्म माना है लैला!"-मालिक ने दौड़ कर लैला को अपने बाज़ूओं में समेटते हुए कहा-"लड़ाई ख़त्म कर दी है। हम एक दूसरे के क़ैदी वापस कर देंगे। मैं ने सज्जाह से ताल्लुक़ तोड़ लिया है। इस फूल से चेहरे से उदासी धो डालो।"

लैला का जिस्म बे जान सा था। उसमें वो तपिश पैदा न हुई जो मालिक को देख कर पैदा हुआ करती थी। मालिक ने उसे बहलाने की बहुत कोशिश की लेकिन लैला का चेहरा बुझा ही रहा।

"मेरे दिल पर एक ख़ौफ बैठ गया है।"-लैला ने कहा।

"कैसा ख़ौफ?"-मालिक ने पूछा-"किस का ख़ौफ?"

"सज़ा का"-लैला ने कहा-"इन्तेक़ाम का"

❁

सज्जाह अकेली रह गई। वकीअ बिन मालिक ने भी उसका साथ छोड़ दिया था। मालिक बिन नवेरा ने वकीअ से कहा था के वो एक औरत के झांसे में आकर अपने ही क़बीले पर टूट पड़े थे। सज्जाह अपने लश्कर को साथ लिए नबाज की

तरफ चली गई। पहले सुनाया जा चुका है के वो यमामा पर हमला करने गई थी लेकिन मुसलीमा के जाल में आ गई और मुसलीमा ने उसे अपनी बीवी बना लिया।

मालिक बिन नवेरा के गुनाहों की सज़ा शुरू हो चुकी थी। वक़ीअ बिन मालिक जो उसका दस्त रास्त था उसका साथ छोड़ गया और मुसलमानों से जा मिला। मालिक बिन नवेरा ने उसे रोका था।

"अगर हम दानों अलग हो गए तो मुसलमान हमें कुचल के रख देंगे"-मालिक ने वक़ीअ से कहा था-"हम दानों मिल कर उनका मुक़ाबला कर सकते हैं।"

"हमें ज़िन्दा रहना है मालिक!"-वक़ीअ ने कहा था-"मदीना की फौज का मुक़ाबला किस ने किया है? ग़तफान हार गए, तई हार गए। बनू सलीम, बनू असद, हवाज़न, कोई भी मुसलमानों के आगे ठहर न सका। फिर सब इक्ळे हुए और उम्मे जुम्ल सलमा को भी साथ मिला लिया। क्या तुम नहीं जानते मालिक, वलीद के बेटे ख़ालिद(र०) ने उन्हें किस तरह भगा दिया है? सलमा क़त्ल कर दी गई है। मुसलमान हमें मुसलमानों का खून माफ नहीं करेंगे। तमाम क़बीलों को शिकस्त देने वाला ख़ालिद(र०) वापस मदीना नहीं चला गया। वो बज़ाखा में है। दूसरी तरफ मुसलमानों का माना हुआ सिपाह सलार उसामा(र०) है। इन दोनों मे से कोई भी किसी भी वक़्त इधर का रूख कर सकता है। इन से खून माफ कराने का तरीक़ा एक ही है के मैं उनकी अताअत कुबूल कर के इन्हें अपने क़बीले का ज़कात और महसूल अदा करता रहूं।"

मालिक बिन नवेरा कोई फैसला न कर सका।

ख़ालिद बिन वलीद(र०) तक इत्तेला पहुंची चुकी थी के मालिक बिन नवेरा को रसूल अल्लाह(स०) ने अमीर मुक़र्रर किया था मगर उसने ज़कात वग़ैरा वसूल कर के मदीना न भेजी और लोगों को वापस कर दी है। जासूसों ने ख़ालिद(र०) को मालिक बिन नवेरा का एक शेर भी सुनाया। इसमें उसने रसूले अकरम(स०) के विसाल के बाद अपने क़बीले से कहा था के अपने माल को अपने पास रखो और मत डरों के न जाने क्या हो जाए। अगर इस्लामी हुकूमत की तरफ से हम पर कोई मुसीबत आएगी तो हम कहेंगे के हम ने मोहम्मद(स०) के दीन को कुबूल किया था, अबुबकर(र०) के दीन को नहीं।

मालिक बिन नवेरा ने सज्जाह के साथ मिल कर मुसलमानों का जो क़त्ले आम किया था, इसकी भी इत्तेला ख़ालिद(र०) को मिल गई थी। ख़ालिद(र०) ने अपने दस्तों को बत्ताह की तरफ तेज़ कूच कर हुक्म दिया। उनके दस्तों में अन्सारे मदीना भी थे। उन्हेंने बत्ताह की तरफ पेशकदमी की मुख़ालफत की।

"ख़ुदा की क़सम!" ख़ालिद(र०) ने कहा-"मैं अपनी सिपाह में पहले आदमी देख रहा हूं जो अपने अमीर और सालार की हुक्म अदूली कर रहे हैं।"

"उसे हुक्म अदूली समझे या जो कुछ भी समझें"-अनसार की नमाईंदगी करने वाले ने कहा-ख़लिफातुल मुस्लेमीन का हुक्म ये था के तलीहा को मतीअ कर के इस इलाक़े में रसूल अल्ला(स०) की क़ायम की हुई अलमदारी को बहाल करें और जो जंग पर उतर आए उसके साथ जंग करें और बज़ाखा में अगले हुक्म का इन्तेज़ार करें। हम जानते हैं के मदीना से ऐसा कोई हुक्म नही आया के हम बत्ताह पर हमले के लिए जाऐं।"

"क्या तुम में कोई है जिसे ये मालूम न हो के मैं तुम्हारा अमीर और सिपह सालार

हूं?"-ख़ालिद(र०) बिन वलीद ने पूछा और सब की तरफ देखने लगे। इन्हें कोई जवाब न मिला तो उन्होंने कहा-"मैं नहीं जानता के ख़लिफातुल मुस्लेमीन के साथ तुम क्या मुहाएदा कर के आए हो। मैं ये जानता हूं के ख़लीफा ने मुझे हुक्म दिया था के जहां भी इस्लाम से इन्हेराफ की खबर मिले और जहां भी मदीना के साथ किए गए मुहाएदों की खिलाफ वर्ज़ी नज़र आए, वहां तक जाओ और इस्लाम का तहफ्फुज़ करो। मैं सिपाह सालार हूं अपनी ज़िम्मेदारयिां पूरी करने के लिए अगर मुझे कोई ऐसी कारर्वाई करनी पड़ेगी जो खलीफा के अहकाम में शामिल नहीं होगी तो मैं वो कारर्वाई ज़रूर करूंगा....खिलाफत के अहकाम मेरे पास आते है, तुम्हारे पास नहीं।"

"हम ने कोई क़ासिद आता नही देखा"-अन्सार में से किसी ने कहा।

"मैं इस का जवाब देना ज़रूरी नहीं समझता"-ख़ालिद(र०) ने झुंझला कर कहा-"और मैं किसी ऐसे आदमी को अपनी सिपाह में नही देखना चाहता जिसके दिल में ज़रा सा भी शक और शुबहा हो। मुंझे अल्लाह की खुशनूदी चाहिए। मुझे रसूल(स०) की मुक़द्दस रूह की खुशनूदी चाहिए। अगर तुम्हें अपनी ज़ात की खुशनूदी चाहिए तो जाओ। अपने आप को खुश करो। मेरे लिए मुहाजरीन काफी हैं और मेरे साथ जो नौ मुस्लिम हैं, मैं इन्हें भी काफी समझता हूं।"

मशहूर मोअररिख़ तिबरी ने लिखा है के अबु बकर(र०) ने अपने एहकाम में ये शामिल किया था बनी असद के सरदार तलीहा की सरकोबी के बाद ख़ालिद(र०) के दस्ते बत्ताह तक जाऐंगे जहां के अमीर मालिक बिन नवेरा ने ज़कात और महसूलात की अदाएगी नहीं की और वो इस्लाम से मुनहरिफ हो कर इस्लाम का दुश्मन बन गया है।

तिबरी और दीगर मोअररिख़ों ने भी लिखा है के अन्सार बज़ाखा में रह गए और ख़ालिद(र०) अपने मुजाहेदीन को इन के बग़ैर बत्ताह ले गए। जब ये लश्कर बज़ाखा से चला तो अन्सार ने बाहम सलाह मशवरा किया । वो महसूस करने लगे थे के इतनी दूर से इक्ळे आए थे। इक्ळे लड़ाईयां लड़ी और अब हम में फूट पड़ गई है। हमें पीछे नही रहना चाहिए था।

"और इस लिए भी हमें पीछे नही रहना चाहिए था"-अन्सार में से एक ने कहा-"के मुहाजरीन और नौ मुसलमानों ने फतह हासिल कर ली तो इस में हमारा नाम नहीं होगा। हमें मदीना जा कर शर्मसारी होगी"

और इस लिए भी"-एक और ने कहा-"के ख़ालिद(र०) बिन वलीद को कहीं शिकस्त हुई तो मदीना में लोग हम पर लानत भेजेंगे के हम ने मदीना से इतनी दूर मुहाज़ पर जा कर ख़ालिद(र०) को और अपने साथियों को धोका दिया। हम मलाऊन कहलाऐंगे।"

ख़ालिद(र०) के दस्ते बज़ाखा से दूर निकल गए। एक तेज़ रफ्तार घुड़ सवार पीछे से आन मिला और ख़ालिद के पास जा घोड़ा रोका।

"क्या तुम अन्सार में से नही हो जो पीछे रह गए है?"-ख़ालिद(र०) ने पूछा।

"हां अमीरे लश्कर!"-सवार ने कहा-"मैं इन्ही में से हूं। उन्होंने भेजा है के मैं आप से कहूं के उन का इन्तेज़ार करें। वो आ रहे हैं।"

ख़ालिद(र०) बिन वलीद ने अपने दस्तों को रोक लिया। कुछ देर बाद तमाम अन्सार आ गए और दस्ते बत्ताह की तरफ रवाना हो गए

❁

"लैला"-बत्ताह में मालिक बिन नवेरा अपनी बीवी से कह रहा था-"तू ने मुझे मोहब्वत दी है। तेरे हुस्न ने और तेरी नशीली आंखों ने मेरे शेरों में नई रूह डाली है। अव मुझे हौसला दो लैला! मेरे दिल में खौफ़ ने आशयाना बना लिया है।"

"मैं ने तुझे पहले दिन कहा था गुरूर और तकब्बुर छोड़ दे मालिक !"-लैला ने कहा-"लेकिन तुम इतनी दूर निकल गए के इन्सानों को च्योंटियां समझ कर मसल डाला।"

"मत याद दिला मुझे मेरे गुनाह लैला!"-मालिक बिन नवेरा ने कहा-"गुनाहों ने मेरी वहादुरी को डस लिया है।"

"आज क्या बात हो गई के तुम पर इतना खौफ तारी हो गया है।"

"बात पूछती हो लैला?"-मालिक बिन नवेरा ने कहा"-ये मौत की बात है। मेरा दिल गवाही दे रहा हे के मेरा तेरा साथ खत्म हो रहा है....मैं ने अपने जासूस बड़ी

तिबरी और दीगर मोअररिख़ों ने भी लिखा है के अन्सार बज़ाखा में रह गए और ख़ालिद(र०) अपने मुजाहेदीन को इन के बग़ैर बत्ताह ले गए। जब ये लश्कर बज़ाखा से चला तो अन्सार ने बाहम सलाह मशवरा किया । वो महसूस करने लगे थे के इतनी दूर से इक्ळे आए थे। इक्ळे लड़ाईयां लड़ी और अब हम में फूट पड़ गई है। हमें पीछे नही रहना चाहिए था।

"और इस लिए भी हमें पीछे नही रहना चाहिए था"-अन्सार में से एक ने कहा-"के मुहाजरीन और नौ मुसलमानों ने फतह हासिल कर ली तो इस में हमारा नाम नही होगा। हमें मदीना जा कर शर्मसारी होगी"

और इस लिए भी"-एक और ने कहा-"के ख़ालिद(र०) बिन वलीद को कहीं शिकस्त हुई तो मदीना में लोग हम पर लानत भेजेंगे के हम ने मदीना से इतनी दूर मुहाज़ पर जा कर ख़ालिद(र०) को और अपने साथियों को धोका दिया। हम मलाऊन कहलाऐंगे।"

ख़ालिद(र०) के दस्ते बज़ाखा से दूर निकल गए। एक तेज़ रफ्तार घुड़ सवार पीछे से आन मिला और ख़ालिद के पास जा घोड़ा रोका।

"क्या तुम अन्सार में से नही हो जो पीछे रह गए है?"-ख़ालिद(र०) ने पूछा।

"हां अमीरे लश्कर!"-सवार ने कहा-"मैं इन्हीं में से हूं। उन्होंने भेजा है के मैं आप से कहूं के उन का इन्तेज़ार करें। वो आ रहे है।"

ख़ालिद(र०) बिन वलीद ने अपने दस्तों को रोक लिया। कुछ देर बाद तमाम अन्सार आ गए और दस्ते बत्ताह की तरफ रवाना हो गए

❁

"लैला"-बत्ताह में मालिक बिन नवेरा अपनी बीवी से कह रहा था-"तू ने मुझे मोहब्बत दी है। तेरे हुस्न ने और तेरी नशीली आंखों ने मेरे शेरों में नई रूह डाली है। अब मुझे हौसला दो लैला! मेरे दिल में खौफ़ ने आशयाना बना लिया है।"

"मैं ने तुझे पहले दिन कहा था गुरूर और तकब्बुर छोड़ दे मालिक !"-लैला ने कहा-"लेकिन तुम इतनी दूर निकल गए के इन्सानों को च्योंटियां समझ कर मसल डाला।"

"मत याद दिला मुझे मेरे गुनाह लैला!"-मालिक बिन नवेरा ने कहा-"गुनाहों ने मेरी बहादुरी को डस लिया है।"

"आज क्या बात हो गई के तुम पर इतना खौफ तारी हो गया है।"

"बात पूछती हो लैला?"-मालिक बिन नवेरा ने कहा"-ये मौत की बात है। मेरा दिल गवाही दे रहा हे के मेरा तेरा साथ ख़त्म हो रहा है....मैं ने अपने जासूस बड़ी

दूर दूर तक भेज रखे हैं आज एक जासूस आया है। उसने बताया है के मुसलमान का लश्कर बड़ी तेज़ी से इधर आ आ रहा है। अगर लश्कर की रफ्तार यही रही तो परसो शाम तक यहां पहुंच जाएगा।"

"फिर तैयारी करो" -लैला ने कहा- "क़बीलों को इक्ठ्ठा करो।"

"कोई मेरा साथ नही देगा" -मालिक ने डरे हुए लहजे में कहा- "मैं ने वक़ीअ और सज्जाह के साथ मिल कर अपने क़बीलों का खून बहाया है वो कोई नहीं बख्शेगा। इन से मसालेहत तो कर ली थी लेकिन दिल फटे हुए हैं। मेरे क़बीले की मदद को कोई नहीं आएगा।"

"फिर आगे बढ़ो और मुसलमानों के सिपाह सालार से कहो के तुम ने इस्लाम तर्क नही किया" -लैला ने कहा- "शायद वो तुम्हें बख्श दें"

"नही बख्शेंगे" -मालिक ने कहा- "नही बख्शेंगे। उन्होंने किसी को नहीं बख्शा।"

मालिक बिन नवेरा पर खौ़फ तारी होता चला गया। उसे खबरें मिल रही थीं के ख़ालिद(र०) का लश्कर क़रीब आ रहा है। उसने अपने क़बीले को इक्ठ्ठा किया।

"ऐ बनू यरबू!" - उसने क़बीले से कहा- "हम से ग़लती हुई के हम ने मदीना की हुकमरानी को तस्लीम किया और उनसे मुनहरिफ हुए। उन्हेंने हमें अपना मज़हब दिया जो हम ने कुबूल क़िया फ़िर नाफरमान हो गए। वो आ रहे हैं। सब अपने घरों को चले जाओ और दरवाज़े बन्द कर लो। ये निशनी है के तुम उनके खिलाफ हथियार नहीं उठाओगे। उनके बुलाने पर उनके सामने निहत्थे जाओ। कुछ फायदा न होगा मुक़ाबले में....जाओ, अपने घरों को चले जाओ।"

लोग सर झुकाए हुए अपने घरों को चले गए।

❁

नवम्बर 632ई० (शाबान 11 हिज्री) के पहले हफ्ते मे ख़ालिद(र०) बत्ताह पहुंच गए। उन्हेंने अपने लश्कर को मुहासरे की तरतीब में किया मगर ऐसे लगता था जैसे बत्ताह उजड़ गया हो। शहर का दिफाअ करने वाले तो नज़र ही नहीं आते थे, कोई दूसरा भी दिखाई न दिया। किसी मकान की छत पर एक भी सर नज़र नहीं आता था।

"क्या मालिक बिन नवेरा अपने आप को इतना चालाक समझता है के मुझे घरे में ले लेगा?" -ख़ालिद(र०) ने अपने नायब सालारों से कहा- "मुहासरे की तरतीब बदल दो और अपने अक़ब का ख्याल रखो। मैं इस बस्ती को आग लगा दूंगा। वो यहां से निकल गए हैं। अक़ब से हमला करेंगे।"

ख़ालिद(र०) बिन वलीद ज़िन्दा दिल, बे खौ़फ और मुहिम जू थे। इन के

अहकाम बड़े सख्त हुआ करते थे। उन्होंने अपने दस्तों को इस तरतीब में कर दिया के अक़ब से हमला हो तो रोक लें और अगर इस के साथ ही शहर से भी हमला हो जाए तो दोनो तरफ लड़ा जाए। मुसलमानों को इस दुशवारी का सामना था के उनकी नफरी थोड़ी थी और वो अपने मुसतक़िर(मदीने) से बहुत दूर थे। उन्होंने जिन क़बीलों को मतीअ किया था, उनकी बस्तियों को अड्डे बना लिया था लेकिन अभी वहां के लोगों पर पूरी तरह भरोसा नहीं किया जा सकता था। ये ख़ालिद(र०) की पुर जोश और माहीराना क़यादत थी जो मुजाहेदीन की क़लील तादाद में बिजलियों जैसा क़हर पैदा किए रखती थी।

ख़ालिद(र०) ने बस्ती में एक दस्ता दाख़िल किया तो उस पर एक भी तीर न आया। हर मकान का दरवाज़ा बन्द था। ख़लिद(र०) ने ये ख़ामोशी देखी तो वो खुद बस्ती में दाखिल हुए।

"मालिक बिन नवेरा!"-ख़ालिद(र०) ने कई बार मालिक को पुकारा और कहा-"बाहर आजाओ। नही आओगे तो हम बस्ती को आग लगा देंगे।"

"तुझ पर खुदा की सलामती हो"-एक छत से एक आदमी की आवाज़ आई-"मत जला हमारे घरों को। जिसे तू बुला रहा है, यहां नही है यहां कोई नही लड़ेगा।"

"वलीद के बेटे!"-एक और छत से आवाज़ आई-"क्या तू देख नहीं रहा के हम अपने कानों के बन्द दरवाज़ों के पीछे बैठे हैं? क्या मदीना में ये रिवाज नहीं के बन्द दरवाज़े एक इशारा है के आजाओ, हम तुम्हारे खिलाफ हथियार नहीं उठाऐंगे।?"

"वेशक में ये इशारा समझता हूं"-ख़ालिद(र०) ने कहा"मकानों के दरवाज़े खोल दो और बाहर आजाओ। औरतों और बच्चों पर जबर नहीं उनकी मर्ज़ी है, बाहर आऐं या न आऐं।"

लोगों को रस्म व रवाज मालूम था। वो हथियारों के बग़ैर बाहर आ गए। औरतें और बच्चे भी निकल आए। ख़ालिद(र०) ने अपने दस्तों को हुक्म दिया के हर घर के अन्दर जा कर देखें। कोई आदमी अन्दर न रहे। ख़ालिद(र०) ने खास तौर पर हुक्म दिया के किसी घर में किसी चीज़ को हाथ न लगाया जाए न किसी पर हल्का सा भी तशद्दुद न किया जाए।

मालिक बिन नवेरा के क़िले नुमा मकान में ख़ालिद(र०) खुद गए। वहां सामान पड़ा था ऐसे लगता था जैसे यहां के रहने वाले कुछ ही देर पहले यहां से निकले हों। बस्ती से ख़ालिद(र०) को इतना ही पता चला के मालिक बिन नवेरा अपने क़बीले को ये कह कर के वो मुसलमानों के खिलाफ हथियार न उठाऐं, लैला को साथ ले कर

बस्ती से निकल गया था। जिन्होंने उसे जाते देखा था, उन्होंने सिम्त बातई जिधर वो गया था। मालिक घोड़े पर और लैला ऊंट पर सवार थी।

ख़ालिद(र०) ने इर्द गिर्द की बस्तियों को अपने आदमी भेज दिए और कुछ आदमी उस सिम्त रवाना किए जिधर बताया गया था के मालिक गया है। वो सहरा था। ऊंट और घोड़ों के क़दमों के निशन बड़े साफ थे ये ख़ालिद(र०) के आदमियों को एक बस्ती में ले गए। ये बनू तमीम की एक बस्ती थी।

"ऐ बनू तमीम!"-ख़ालिद(र०) के आदमियों में से एक ने बुलंद आवाज़ से कहा-" मालिक बिन नवेरा को और बात्ताह का कोई आदमी जो यहां छुपा हुआ हो, उसे हमारे हवाले कर दें। अगर वो हमारी तलाश पर मिले तो इस बस्ती को आग लगा दी जाएगी।"

ज़रा ही देर बाद मालिक बिन नवेरा लैला के साथ बाहर आया और अपने आप को ख़ालिद के आदमियों के हवाले कर दिया। बनू यरबू के चन्द और सरकर्दा आदमी थे जो यहां आकर छुप गए थे, बाहर आ गए। इन सब को मालिक बिन नवेरा के साथ बत्ताह ले आए। लैला भी साथ थी।

❂

"मालिक बिन नवेरा!"-ख़ालिद(र०) ने मालिक को अपने सामने बुला कर पूछा-"क्या ये ग़लत है के तुम ने ज़कात और महसूल मदीना को भेजने की वजाए लोगों को वापस कर दिए थे?"

"मैं अपने क़बीले को ये कह कर निकला था के मुसलमानों का मुक़ावला न करना"-मालिक बिन नवेरा ने जवाब दिया-"मैं ने उन्हें ये भी कहा था के मुसलमान हो जाओ और ज़कात अदा करो।"

"और तुम खुद इस लिए रूपोश हो गए थे के इस्लाम से मुनहरिफ हो गए थे"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"और तुम मुनहरिफ ही रहना चाहते हो....तुम ने अपने शेरों में लोगो से कहा था के वो ज़कात और महसूल अदा न करें और तुम ने इन्हें कहा था के इस्लामी हुकूमत के एहकाम की तुम खिलाफ वर्ज़ी करोगे जो तुम ने की।"

"हां वलीद के बेटे!"-मालिक ने कहा-"मैं ने खिलाफ वर्ज़ी की लेकिन मैं अपने क़बीले से कह रहा हूं के अब वो खिलाफवर्ज़ी न करें।"

"और तुम ने सज्जाह की झूटी नबुव्वत को तसलीम किया"-ख़ालिद ने कहा-" और उसके साथ मिल कर लोगों को क़त्ल किया और इन्हें लूटा और तुम ने उन लोगों का क़त्ले आम किया जिन्होंने इस्लाम कुबूल कर लिया था।"

मालिक ने सर हिला कर इस जुर्म का इक़रार किया।

"क्या तू मुझे बात सकता है के मै तुम्हें क़त्ल क्यों न करूं?"-ख़ालिद(र०) ने कहा।

"मै जानता हूं के तुम्हारे खलीफा ने तुम्हें मेरे क़त्ल का हुक्म नहीं दिया"-मालिक बिन नवेरा ने कहा।

"खुदा की क़सम!"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"मै तुझे ज़िन्दा रहने का हक़ नहीं दे सकता।"

ख़ालिद(र०) ने वो उजड़ी हुई बस्तियां देखी जो मालिक बिन नवेरा और सज्जाह ने उजाड़ी थीं। ख़ालिद(र०) ने मालिक बिन नवेरा की बस्ती पर बिला वजह चढ़ाई नहीं की थी। इन्हें तमाम रिपोर्टें मिलती रही थी के इस शख्स ने इस इलाक़े में मुलसमानों को किस तरह तबाह व बरबाद किया था।

"ले जाओ इसे और इस के साथियों को जो इस के साथ रूपोश थे और इन्हें क़त्ल कर दो"-ख़ालिद(र०) बिन वलीद ने हुक्म दिया।

इन्हें जब ले गए तो ख़ालिद(र०) को इत्तेला दी गई के एक बड़ी ही हसीन औरत जिस का नाम लैला है और जो मालिक बिन नवेरा की बीवी है, अपने खाविंद की ज़िन्दगी की इल्तेजा ले के आई है। ख़ालिद(र०) ने कहा के उसे आने दो।

ख़ालिद(र०) एक सरदार के फरज़न्द थे। उन्होंने अमीराना घराने में परवरिश पाई थी इस लिए उनके दिल व दिमाग़ में वुसअत थी। वो खुश ज़ौक, खुश तबआ और ज़िन्दा मिज़ाज थे। लैला जब उनके सामने आई तो ख़ालिद(र०) कुछ देर उसे देखते ही रहे। वो अभी जवान थी।

"क्या तू अपने खाविंद को मौत से बचाने आई है?"-ख़ालिद ने पूछा।

"इस के सिवा मेरा और मक़सद हो ही क्या सकता है?"-लैला ने कहा

"अगर तू उस वक़्त उसे इन जराईम से रोक देती जब वो समझता था के हर वस्ती पर उसकी हुकमरानी है तो आज तू बेवा न होती"-ख़ालिद ने कहा-"क्या इसने तुझे वताया नहीं था के उसकी तलवार ने कितनी औरतों को बेवा किया है? इसे मालूम नहीं था के इस की ज़िन्दगी में एक दिन इन्साफ का भी आएगा।"

"मैं उसका हाथ नहीं रोक सकी"-लैला ने कहा।

"और तू मेरा हाथ भी नहीं रोक सकती"-ख़ालिद ने कहा-"ये मेरा नहीं मेरे अल्लाह का हुक्म है।"

ख़ालिद(र०) ने लैला की इल्तेजा कुबूल न की। लैला अभी ख़ालिद(र०) के पास ही थी के इत्तेला आई के मालिक बिन नवेरा और उसके साथियों को क़त्ल कर दिया गया है।

फिर एक ऐसा वक़ेआ हो गया जिस ने ख़ालिद(र०) के दस्तों में और मदीना में हलचल मचा दी-हुआ यूं के बत्ताह में ही ख़ालिद(र०) ने लैला के साथ शादी कर ली।

अन्सारे मदीना इस शादी पर बहुत बरहम हुए। अबु क़तादा(र०) अन्सारी ने क़सम खाई के वो आईंदा ख़ालिद(र०) की क़यादत में कभी किसी लड़ाई में शरीक नहीं होंगे। ऐतराज़ करने वाले कहते थे के ख़ालिद(र०) ने लैला की खूबसूरती से मुतास्सिर हो कर उसके ख़ाविंद मालिक बिन नवेरा को इस लिए क़त्ल किया है के लैला के साथ खुद शादी कर लें।

इस सिलसिले में जो रिवायात मशहूर हुईं। इन में ये भी है के लैला अपने ख़ाविंद की जान बख्शी के लिए ख़ालिद(र०) के पास आई और उसने बैठ कर ख़ालिद(र०) के पांव पकड़ लिए। लैला सर से नंगी रहती और बाल खुले रखती थी। ख़ालिद(र०) के पांव पर वो झुकी तो उसके बाल उसके कंधों पर बिखर गए। ख़ालिद(र०) को ये बाल इतने अच्छे लगे के उन्होंने कहा-"अब तो मैं तेरे ख़ाविंद को ज़रूर क़त्ल करूंगा।"

ये कहा जा सकता है के ख़ालिद(र०) जो खुश ज़ौक और ज़िन्दा मिज़ाज थे, लैला के हुस्न से मुतास्सिर हुए होंगे लेकिन ख़ालिद(र०) वो शख्सियत थी जिस ने बिस्तर-ए-मर्ग पर कहा था के मेरे जिस्म पर काई जगह ऐसी नहीं है जिस पर जिहाद का ज़ख्म न आया हो? इन का किरदार इतना कमज़ोर नहीं हो सकता था के वो एक औरत की ख़ातिर अपने रूत्बे का नाजायज़ फायदा उठाते।

ख़ालिद(र०) के हक़ में बात करने वालों ने कहा है के ख़ालिद ने मालिक बिन नवेरा और उसके साथियों को क़ैद में डाल दिया था और इन्हें मदीना भेजना था। रात वहुत सर्द थी। ख़ालिद(र०) को ख्याल आया के क़ैदी सर्दी से ठिठर रहे होंगे। उन्होंने हुक्म दिया-"दाफऊ असराकुम"-इस का तर्जुमा है-"क़ैदियों को गर्मी पहुंचाओ"-कनाना की ज़बान में मदाफात का लफ्ज़ क़त्ल के मानों में इस्तेमाल होता है। वद क़िस्मती से ये क़ैदी जिन आदमियों के पहरे में थे वो कनाना के रहने वाले थे। इन्हें ये भी मालूम था के मालिक बिन नवेरा और उसके साथियों के जराईम कितने संगीन हैं। चुनांचे उन्होंने "गर्मी पहुंचाओ" को क़त्ल के मानों में लिया और मालिक और उसके साथियों को क़त्ल कर दिया। ख़ालिद(र०) को पता चला तो उन्होंने कहा-"अल्लाह जो काम करना चाहता है वो हो के रहता है।"

इन दो के अलावा और भी रिवायात मुख़तलिफ तारीख़ों में आई है जो एक

दूसरे की तरदीद करती हैं। इन में बाज़ ख़ालिद(र०) के हक़ में जाती हैं। बाज़ खिलाफ। मुखाल्फाना रिवायात के मुसन्निफों के मज़हबी फिरक़ों को देखो तो साफ पता चलता है के उनके एक एक लफ्ज़ में तआस्सुब भरा हुआ है और वो ख़ालिद(र०) बिन वलीद को रूसवा कर रहे हैं।

तारीख़ में मुताज़ाद कहानियां मिलती है लेकिन किसी भी मोअररिख़ ने ये नहीं लिखा के इस शादी पर लैला का रद्दे अमल क्या था। क्या लैला ने ख़ालिद(र०) को मजबूर हो कर कुबूल किया था या वो खुश थी के एक अज़ीम सिपह सालार की बीवी बन गई है। जिस की फतूहात के चर्चे सरज़मीन अरब के गोशे गोशे तक पहुंच गए हैं।

उस वक्त के जंगी रिवाज के मुताबिक लैला माले ग़नीमत थी। ख़ालिद(र०) उसे लोंडी बना कर अपने पास रख सकते थे। तारीख़ में एक इशारा ऐसा मिलता है जो ख़ालिद(र०) के हक़ में जाता है। वो यूं है के ख़ालिद(र०) ने उसे किसी की या अपनी लोंडी बनने से बचा लिया था। वो इतनी हसीन थी के शहज़ादी लगती थी। ख़ालिद(र०) जानते थे के लोंडियों की ज़िन्दगी क्या होती है। ख़ालिद(र०) ने ये भी देख लिया था के लैला जितनी खूबसूरत है इतनी ही ज़हीन और दाना थी। उन्होंने इस औरत की सलाहियतों को तबाही से बचा लिया था।

❁

ये खबर मदीना भी पहुंच गई के ख़ालिद(र०) ने मालिक बिन नवेरा को क़त्ल कर के उसकी बीवी के साथ शादी कर ली है। खबर पहुंची भी सीधी ख़लिफातुल मुस्लेमीन अबुबकर(र०) के पास, और खबर पहुंचाने वाले अबु क़तादा अन्सारी थे जो इस शादी पर नाराज़ हो कर मदीना चले गए थे। अबुबकर(र०) ने इस खबर को ज़्यादा अहमीयत न दी। उन्होंने कहा के ख़ालिद(र०) को रसूले करीम(स०) ने सैफुल्ला का खिताब दिया था। इन के खिलाफ वो कोई कारर्वाई नहीं करेंगे। ख़ालिद(र०) ने किसी ज़िन्दा आदमी की बीवी को वरग़ला कर अपनी बीवी नहीं बनाया।

अबु क़तादा अन्सारी ख़लीफा अबुबकर(र०) के जवाब से मुतमईन न हुए। वो उमर(र०) के पास चले गए और उन्हें ऐसे अंदाज़ से लैला की ख़ालिद(र०) के साथ शादी की खबर सुनाई जैसे ख़ालिद(र०) अय्याश इन्सान हों और उनकी ऐश परस्ती उनके फराइज़ पर असर अंदाज़ हो रही हो। उमर(र०) गुस्से में आ गए और अबु क़तादा को साथ ले कर अबुबकर(र०) के पास गए।

"खलिफातुल मुस्लेमीन!"-उमर(र०) ने अबु बकर(र०) से कहा-"ख़ालिद(र०) का जुर्म मामूली नहीं। वो कैसे साबित कर सकता है के बनू यरबू

के सरदार मालिक बिन नवेरा का क़त्ल जायज़ था।"

"मगर तुम चाहते क्या हो उमर(र०)?"-अबुबकर(र०) ने पूछा।

"ख़ालिद(र०) की माज़ूली!"- उमर(र०) ने कहा-"सिर्फ माज़ूली नही। ख़ालिद(र०) को गिरफ्तार कर के यहां लाया जाए और उसे सज़ा दी जाए।"

"उमर(र०)!"-अबुबकर(र०) ने कहा-"मै इतना मान लेता हूं के ख़ालिद(र०) से ग़लती हुई है लेकिन ये ग़लती इतनी संगीन नही के उसे माज़ूल भी किया जाए और सज़ा भी दी जाए।"

उमर(र०) अबुबकर(र०) के पीछे पड़े रहे। दरअसल उमर(र०) इन्तेहा दर्जे के इन्साफ पसंद और डिसीपिलीन की पाबंदी में बहुत सख्त थे वो नहीं चाहते थे के सालारों में कोई ग़लत हरक़त रिवाज पा जाए।

"नही उमर(र०)" !-अबुबकर(र०) ने कहा-"मैं उस शमशीर को नियाम में नही डाल सकता जिसे अल्लाह ने काफिरों पर मुसल्लत किया हो।"

उमर(र०) मुतमइन न हुए। अबुबकर(र०) उमर(र०) को भी नाराज़ नही करना चाहते थे। उन्होंने ख़ालिद(र०) को मदीना बुलवा लिया।

ख़ालिद(र०) बड़ी मुसाफत तय कर के बहुत दिनों बाद मदीना पहुंचे और सब से पहले मस्जिद-ए-नबव्वी में गए। उन्हेंने अपने अमामे में एक तीर उड़स रखा था। उमर(र०) मस्जिद में मौजूद थे। ख़ालिद(र०) को देख कर उमर(र०) तैश में आ गए। वो उठे, ख़ालिद(र०) के अमामे से तीर खींच कर निकाला और इसे तोड़ कर फैंक दिया।

"तुम ने एक मुसलमान को क़त्ल किया है"-उमर(र०) ने गुस्से से कहा-"और उसकी वेवा को अपनी बीवी बना लिया है। तुम संगसार कर देने के क़ाबिल हो।"

ख़ालिद(र०) डिसीपिलीन के पाबंद थे। वो चुप रहे। उन्होंने उमर(र०) के गुस्से को कुबूल कर लिया। वो ख़ामोशी से मस्जिद से निकल आए और खलिफातुल मुस्लेमीन अवुवकर(र०) के हां चले गए। उन्हें अबु बकर(र०) ने ही जवाब तल्बी के लिए बुलाया था। अबु बकर(र०) के कहने पर ख़ालिद(र०) ने मालिक बिन नवेरा के तमाम जराईम सुनाए और साबित किया के वो मुसलमान नहीं बल्कि मुसमलमानों का दुश्मन था।

अवुवकर(र०) ख़ालिद(र०) से बहुत खफा हुए और इन्हें तंबीह की के आईंदा वो ऐसी कोई हरकत न करें जो दूसरे सालारों में ग़लत रिवाज का बाअस बने। अवुवकर(र०) ने, तिवरी और हैकल के मुताबिक़, फैसला सुनाया के मंकूहा क़बीले की किसी औरत के साथ शादी कर लेना और इद्दत का अर्सा पूरा न करना अरबों के

रिवाज के ऐन मुताबिक है। इस औरत को आख़िर लोंडी बनना था ये उस के आक़ा की मर्ज़ी है के उसे लोंडी बनाए रखे या उसे निकाह में ले ले।

अबु बकर(र०) ने अपने फैसले में कहा के इस वक़्त मुसलमान हर तरफ से ख़तरों में घिरे हुए हैं। क़बीले बाग़ी होते जा रहे हैं। अपने पास नफरी बहुत थोड़ी है इन हालात में अगर कोई सालार दुश्मन के किसी सरदार को ग़लती से क़त्ल कर देता है तो ये संगीन जुर्म नहीं।

उमर(र०) को ख़लिफातुल मुस्लेमीन अबु बकर(र०) ने ये कह कर ठण्डा किया के इस्लाम का एक बड़ा दुश्मन मुसलीमा बिन हनीफा जिस ने नबुव्वत का दावा कर रखा है, जंगी ताक़त बन गया है। उस के पास कम व बेश चालिस हज़ार नफरी का लश्कर है और अकरमा(र०) बिन अबुजहल उससे शिकस्त खा चुके हैं अब सब की नज़रें ख़ालिद(र०) की तरफ उठ रही हैं। अगर मुसलीमा को शिकस्त न दी गई तो इस्लाम मदीना में ही रह जाएगा। इस कामयाबी के लिए सिर्फ ख़ालिद(र०) मोज़ूं हैं।

उमर(र०) खामोश रहे। इन्हें भी इन ख़तरों का अहसास था। अबु बकर(र०) ने ख़ालिद(र०) को हुक्म दिया के फौरन बत्ताह जायें और वहां से यमामा पर चढ़ाई कर के इस फितने को ख़त्म करें।

ख़ालिद(र०) एक बड़ी ही ख़तरनाक जंग लड़ने के लिए रवाना हो गए।

दिसम्बर 632ई० (शवाल 11 हिज्री) के तीसरे हफ्ते में ख़ालिद(र०) बिन वलीद ने तेरह हज़ार मुजाहेदीन से मुर्तदीन के चालिस हज़ार से ज़्यादा लश्कर के ख़िलाफ यमामा के मुक़ाम पर वो जंग लड़ी जिसे इस्लाम की पहली खूंरेज़ जंग कहा जाता है। इस जंग का आख़िरी मआरका एक वसीअ बाग़ हदीक़ातुल रहमान में लड़ा गया था। वहां दोनों तरफ इस क़दर जानी नुक़सान हुआ था के हदीक़ातुल रहमान को लोग हदीक़ातुल मौत (मौत का बाग़) कहने लगे। आज तक उसे हदीक़ातुल मौत कहा जाता है

उस वक्त ख़ालिद(र०) मदीना में थे। उन्हें खलिफातुल मुस्लेमीन अबुबकर(र०) ने उमर(र०) की इस शिकायत पर जवाब तल्बी के लिए मदीना बुलाया था के उन्होंने मालिक बिन नवेरा को क़त्ल करवा के उसकी बीवी लैला के साथ शादी कर ली थी। अबु बकर(र०) ने उन हालात को देखते हुए जिन में इस्लाम घिर गया था, ख़ालिद(र०) के हक़ में फैसला दिया और ख़ालिद(र०) को वापस बत्ताह जाने और यमामा के मुसलीमा कज़्ज़ाब के फितने को खत्म करने का हुक्म दिया था।

मुसलीमा कज़्ज़ाब के मुताल्लिक़ बताया जा चुका है के उसने नबुव्वत का दावा कर रखा था। उसके पैरूकारों की तादाद इतनी ज़्यादा हो गई थी के उसका लश्कर मुसलमानों के लिए ख़तरा बन गया था। उस वक़्त तक मुसलमान एक ताक़त बन चुके थे लेकिन मुसलीमा की ताक़त बढ़ती जा रही थी। ये मदीना के लिए भी ख़तरा था और इस्लम के लिए भी। मदीना सल्तनत -ए-इस्लामिया का मरकज़ था।

ख़ालिद(र०) का लश्कर बत्ताह में था। वही उन्होंने मालिक बिन नवेरा को सज़ाए मौत दी और उसकी इन्तेहाई हसीन बीवी लैला के साथ शादी की थी। लैला वहीं थी। ख़ालिद(र०) बत्ताह को रवाना हो गए। इन्हें मालूम था के उनके पुराने साथी सालार अकरमा(र०) उसी इलाक़े में अपने लश्कर के साथ मौजूद है और मुसलीमा के

खिलाफ मदद को पहुंचेंगे।

अकरमा(र०) बिन अबु जहल उन ग्यारह सालारों में से थे जिन्हें खलिफातुल मुस्लेमीन ने मुख़्तलिफ इलाक़ों में मुर्तिद और बाग़ी क़बायल की सरकोबी के लिए भेजा था। दूसरे क़बीले इतने ताक़तवर नहीं थे जितना मुसलीमा का क़बीला बनू हनीफा था, इस लिए इस इलाक़े में अकरमा(र०) को भेजा गया था। इन के पीछे पीछे एक और सालार शरजील बिन हसना को भेज दिया गया। खलीफा अबु बकर(र०) ने सालार शरजील को ये हुक्म दिया था के वो अकरमा(र०) को मदद देंगे।

अकरमा(र०) यमामा की तरफ जा रहे थे। ये दो अढ़ाई महीने पहले की बात है। उस वक़्त ख़ालिद(र०) तलीहा से नबर्द आज़मा थे। उन्होंने तलीहा को बहुत बुरी शिकस्त दी थी। ये खबर अकरमा(र०) तक पहुंची तो वो जोश में आ गए। उन्होंने अभी किसी क़बीले के खिलाफ जंगी कारर्वाई नहीं की थी। कुछ दिनों बाद अकरमा(र०) को ख़बर मिली के ख़ालिद(र०) ने सलमा के ताक़तवर लश्कर को शिकस्त दी है।

मोअररिख़ लिखते है अकरमा(र०) पर इन्सानी फितरत की एक कमज़ोरी ग़ालिब आ गई उन्होंने अपने साथी सालारों से कहा के ख़ालिद(र०) फतह पे फतह हासिल करते जा रहे हैं और इन्हे अभी लड़ने का भी मौक़ा नहीं मिला। ख़ालिद(र०) और अकरमा(र०) इस्लाम कुबूल करने से पहले के साथी और एक जैसे जंगजू और मैदाने जंग के एक जैसे क़ायद थे।

"क्यों न हम एक ऐसी फतह हासिल करें जिस के सामने ख़ालिद(र०) की तमाम फतूहात की अहमीयत ख़त्म हो जाए"-अकरमा(र०) ने अपने मातहत सालारो से कहा-"मुझे इत्तेला मिल चुकी है के शरजील बिन हसना हमारी मदद को आ रहा है। मालूम नहीं वो कब पहुंचे। मैं ज़्यादा इन्तेज़ार नहीं कर सकता। मै मुसलीमा पर हमला करूंगा।"

मुसलीमा मामूली अक़्ल व ज़हानत का आदमी नहीं था। उसे मालूम था के मुसलमान उसकी नबुव्वत को बर्दाश्त नहीं कर रहे और किसी भी रोज़ इस्लामी लश्कर उस पर हमला कर देगा। उसने अपने इलाक़े के दिफाअ का बंदोबस्त कर रखा था जिस में देख भाल और जासूसी का इन्तेज़ाम भी शामिल था। अकरमा(र०) सोचे समझे बग़ैर बढ़ते गए और यमामा के करीब पहुंच गए। वो चूंके जज़बात से मग़लूब हो कर जा रहे थे इस लिए एहतीयात न कर सके के दुश्मन देख रहा होगा। इन्हें दुश्मन के जासूसों ने देख लिया और मुसलीमा को इत्तेला दी।

एक इलाक़े मे जहां ऊंचे टीले और टेकरियां थीं, अकरमा(र०) को मुसलीमा के

कुछ आदमी दिखाई दिये अकरमा(र०) ने उन पर हमला कर दिया मगर ये मुसलीमा का बिछाया हुआ जाल था। मुसलीमा ने वहां खासा लश्कर छुपा रखा था जिस ने दायें बायें से अकरमा(र०) के लश्कर पर हमला कर दिया। अकरमा(र०) इस ग़ैर मुतावक़्क़े सूरते हाल में संभल न सके। मुसलीमा के लश्कर ने इन्हें संभलने दिया ही नहीं। अकरमा(र०) के साथ नामी गिरामी और तजुर्बेकार सालार और कमांडर थे लेकिन मैदान दुश्मन के हाथ था। उसने मुसलमानों की कोई चाल कामयाब न होने दी। अकरमा(र०) को नुक़सान उठा कर पस्पा होना पड़ा।

❁

अकरमा(र०) अपनी इस शिकस्त को छुपा नहीं सकते थे। छुपा लेते तो लश्कर में से कोई मदीना इत्तेला भेज देता। चुनांचे अकरमा(र०) ने ख़लिफातुल मुस्लेमीन को लिख भेजा के उन पर क्या गुज़री है। ख़लीफा अबु बकर(र०) को सख्त गुस्सा आया। उन्होंने अकरमा(र०) को वाज़ेह हुक्म दिया था के शरजील का इन्तेज़ार करें और अकेले मुसलीमा के सामने न जाएं मगर अकरमा(र०) ने जल्द बाज़ी से काम लिया था। अबु बकर(र०) ने अकरमा(र०) को जो तहरीरी पैग़ाम भेजा, इस में गुस्से का इज़हार इस तरह किया के अकरमा(र०) को इब्ने अबु जहल लिखने की बजाए इब्ने उम्मे अकरमा(र०)(अकरमा(र०) की मां के बेटे) लिखा। ये अरबों में रिवाज था के किसी की तौहीन मक़सूद होती तो उसके बाप के नाम के बजाए उसे उसकी मां से मंसूब करते थे। इस से ये ज़ाहिर किया जाता था के तुम्हारी वलदीयत मशकूक है या के तुम अपने बाप के बेटे नहीं हो। खलिफातुल मुस्लेमीन ने लिखा:

"ऐ इब्ने उम्मे अकरमा! मैं तुम्हारी सूरत देखना नहीं चाहता। मैं ये भी नहीं चाहता के मदीना आओ। तुम आए तो यहां के लोगों में मायूसी फैलाओगे। मदीना से दूर रहो। तुम अब यमामा का इलाक़ा छोड़ दो और खदीफा के साथ जा मिलो और अहले उम्मान से लड़ो। वहां से फारिग़ हो कर अरफजा की मदद के लिए मोहरा चले जाना। इस के बाद यमन जा कर मुहाजिर बिन अबी उमय्या से जा मिलना। जब तक तुम सालारी के मैयार पर पूरे नहीं उतरते मुझे अपनी सूरत न दिखाना। मैं तुम से बात तक नहीं करूंगा।"

ख़लिफातुल मुस्लेमीन अबुबकर(र०) ने शरजील को पैग़ाम भेजा के वो जहां है वहीं रहें और जब ख़ालिद(र०) आएं तो अपना लश्कर उन के साथ कर के खुद उनके मातहत हो जाएं।

ख़ालिद(र०) को बताया दिया गया था के शरजील का लश्कर भी इन्हें मिल रहा है। वो खुश हुए के अब वो मुसलीमा का मुक़ाबला बेहतर तरीके से कर सकेंगे।

इन्हें तवक्क़ो थी के शरजील का लश्कर ताज़ा दम होगा मगर ये लश्कर ख़ालिद(र०) को मिला तो वो ताज़ा दम नहीं था। इस में कई मुजाहेदीन ज़ख़्मी थे।

"क्या हुआ शरजील?"-ख़ालिद(र०) ने पूछा।

"निदामत के सिवा मेरे पास कोई जवाब नही"-शरजील ने कहा-"मैं ने ख़लिफ़ातुल मुस्लेमीन की हुक्म अदूली की है। मेरे लिए हुक्म था के अकरमा(र०) को मदद दूं मगर मेरे पहुंचने से पहले अकरमा(र०) मुसलीमा के लश्कर से टक्कर ले कर पस्पा हो चुका था। ये एक ख़ब्त था जिस ने मुझ पर भी ग़ल्बा पा लिया के....."

"के एक फ़तह तुम्हारे हिसाब में लिखी जाए"-बारीक बीन और दूर अंदेश ख़लिद(र०) ने तंज़िया लहजे में शरजील का जवाब पूरा करते हुए कहा-"अकेले पत्थर की कोई ताक़त नहीं होती शरजील! पत्थर मिल कर चट्टान बना करते हैं, फिर इस चट्टान से जो टकराता है वो दूसरी बार टकराने के लिए ज़िन्दा नही रहता। खुद ग़रज़ी और ज़ाती मुफाद का अंजाम देख लिया तुम ने? अकरमा(र०) जैसा तर्जुबा कार सालार पिट कर ज़लील हो चुका है। मैं तुम पर करम करता हूं के ख़लीफा को तुम्हारी हिमाक़त की ख़बर नहीं होने दूंगा।"

शरजील बिन हसना ने अकरमा(र०) जैसी ग़लत हरकत की थी। उसने भी ख़ालिद(र०) से बाज़ी ले जाने के लिए रास्ते में मुसलीमा के लश्कर से टक्कर ले ली ओर पस्पा होना पड़ा था।

☸

मुसलीमा कज़्ज़ाब दरबार लगाए बैठा था। ठिंगने क़द वाला ये बदसूरत इन्सान मुकम्मिल नबी बन चुका था। उस का क़बीला बनू हनीफा तो उसे नबी मान ही चुका था, दूसरे क़बीलों के लोग जौक़ दर जौक़ उसकी बैत के लिए आते और उसकी एक झलक देखने को बेताब रहते थे। लोगों ने उसकी कुव्वत और करामात देख ली थी। अब उसके पैरूकारों ने दो मोअज्ज़े और देख लिए थे। उन्होंने मुसलमानों के दो नामूर सालारों को ज़रा ज़रा सी देर में मैदान से भगा दिया था।

मज़हबी और नज़रयाती लिहाज़ से तो मुसलमान रैशम की तरह नर्म थे लेकिन मैदाने जंग में वो फौलाद से ज़्यादा सख्त और बिजलियों की तरह क़हर बन जाते थे। जंगी लिहाज़ से मुसलमान दहशत बन गए थे। अकरमा(र०) और शरजील ने अपनी ग़लती और कज फहमी से शिकस्त खाई थी लेकिन बनू हनीफा ने इन्हें अपने कज़्ज़ाब नबी के मोअजज़ों और करामात के खाते में लिख दिया। वो कहते थे के मुसलमानों को मुसलीमा के सिवा कौन शिकस्त दे सकता है।

"नहार रजाल!"-मुसलीमा ने अपने पास बैठे हुए अपने दस्ते रास्त नहार

रजाल से कहा-"अब हमें मदीने की तरफ कूच की तैयारी करनी चाहिए। मुसलमानों में अब दम खम नही रहा।"

पहले ब्यान हो चुका है के नहार रजाल बिन अन्फोह वो शख्स था जिस ने रसूले करीम(स०) के साए में बैठ कर कुर्आन पढ़ा और मज़हब पर उबूर हासिल किया था और उसे मुबल्लिग़ बना कर मुसलीमा के इलाक़े में भेजा गया था मगर उस पर मुसलीमा का जादू चल गेया। उसने मुसलीमा की नबुव्वत का प्रचार शुरू कर दिया। आयात-ए-कुर्आनी को मोड़ तोड़ कर उसने उन लोगों को भी मुसलीमा का पैरूकार बना दिया जो इस्लाम कुबूल कर चुके थे। मुसलीमा ने उसे अपना मौतमिद-ए-ख़ास बना लिया था। ये शराब और निस्वानी हुस्न का जादू था। खुद मुसलीमा जिस की शक्ल व सूरत मकरूह सी थी और क़द मज़हका ख़ेज़ हद ता ठिंगना था, औरतों में ज़्यादा मक़बूल था। मोअररिख़ लिखते हैं के औरतों के लिए उसमें एक मख़सूस कशिश थी। सज्जाह जैसी औरत जो कुलूपितरा की तरह जंगी कुव्वत ले कर मुसलीमा को तहे तेग़ करने आई, सिर्फ एक मुलाक़ात में उसकी बीवी बन गई थी।

ये मुसलीमा की जिस्मानी ताक़त और मकनातीसियत थी। अब तो वो बहुत बड़ी ताक़त बन गया था। अकरमा(र०) और शरजील को पस्पा कर के उसके अपने और उसके लश्कर के हौसले बढ़ गए थे। वो अब मदीना पर चढ़ाई की बातें कर रहा था। वो दरबार मे बैठा नहार रजाल से कह रहा था के मदीने की तरफ कूच की तैयारी करनी चाहिए। नहार रजाल कुछ कहने भी न पाया था के मुसलीमा को इत्तेलाअ दी गई के एक जासूस आया है। मुसलीमा ने उसे फौरन बुला लिया।

"मुसलमानों का लश्कर आ रहा है" - जासूस ने कहा-"तादाद दस और पंद्रह हज़ार के दरमियान है।"

"तुम ने जब देखा, ये लश्कर कहां था?" -मुसलीमा ने पूछा।

"वादी हनीफा से कुछ दूर था।" -जासूस ने जवाब दिया-"अब और आगे आ चुका होगा।"

उन बद बख्तों की मौत उन्हें वादी हनीफा में ले आई है" -मुसलीमा ने रऊनत से कहा-"इन्हें मालूम नहीं के इन का दस पंद्रह हज़ार का लश्कर मेरे चालिस हज़ार शेरों के हाथों चीरा फाड़ा जाएगा।"

वो उठ खड़ा हुआ। तमाम दरबारी एहतराम के लिए उठे। वो नहार रजाल को साथ ले कर दरबार से निकल गया। उसने अपना घोड़ा तैयार कराया, नहार रजाल को साथ लिया और दोनो के घोड़े इन्हें यमामा से दूर ले गए वो वादी-ए-हनीफा की तरफ जा रहे थे।

"इस वादी से वो जिन्दा नही निकल सकेंगे"-रास्ते में मुसलीमा ने नहार रजाल से कहा-"मेरे इस फंदे से वो वाकिफ नही।"

नहार रजाल ने क़हक़हा लगाया और बोला-"आज मोहम्मद(स०) का इस्लाम वादीऐ हनीफा में दफन हो जाएगा।"

वो आधा रास्ता तय कर चुके थे के आगे से एक घुड़ सवार घोड़ा सरपट दौड़ाता आ रहा था। मुसलीमा को देख कर वो रूक गया।

"या नबी!"-घुड़ सवार ने हांपती हुई आवाज़ में कहा-"मुजाआ बिन मरारा को मुसलमानों ने क़ैद कर लिया है।"

"मुजाआ को?"-मुसलीमा ने हैरत से कहा।

"मुजाआ को मुसलमानों ने..."नहार रजाल ने डरी हुई सी आवाज़ में कहा।

"मुजाआ की टक्कर का हमारे पास और कोई सालार नहीं"-मुसलीमा ने कहा-"मुजाआ का क़ैद हो जाना हमारे लिए अच्छा शगुन नही।"

❁

मुजाआ बिन मरारा मुसलीमा का बड़ा ही क़ाबिल और दिलेर सलार था। वो ख़ालिद(र०) से मिलता जुलता था। मोअर्रिख़ों ने लिखा है के ख़ालिद(र०) के मुक़ाबले में लड़ने और जंगी चालें चलने की अहलीयत सिर्फ मुजाआ में थी। मुजाआ मुसलमानों के हाथ इस तरह चढ़ गया था के उसके किसी क़रीबी रिश्तेदार को बनी आमिर और बनी तमीम के कुछ लोगों ने क़त्ल कर दिया था। मुजाआ ने मुसलीमा से इजाज़त ली थी के वो लश्कर के चालीस सवार साथ ले जा कर अपने रिश्तेदार के क़त्ल का इन्तेक़ाम ले ले। मुसलीमा अपने इतने क़ाबिल सालार को मायूस नही कर सकता था। उसने उसे इजाज़त दे दी।

मुजाआ अपने दुश्मनों की बस्ती में गया और इन्तेक़ाम ले कर वापस आ रहा था। उसे मालूम नहीं था के जिस इलाक़े को वो महफूज़ समझता था, वो अब महफूज़ नहीं। उसने अपने सवारों को एक जगह आराम के लिए रोक लिया। वो सब अपना फर्ज़ कामयाबी से पूरा कर आए थे। घोड़ों की ज़ीनें उतार कर वो लेट गए और गहरी नींद सो गए।

ख़ालिद(र०) का लश्कर इसी तरफ आ रहा था। अलल सुबह इस लश्कर का हराविल दस्ता वहां पहुंचा जहां मुजाआ अपने चालिस सवारों के साथ गहरी नींद सोया हुआ था। इन सब को मुजाहेदीन ने जगाया। इन से हथियार और घोड़े ले लिए और इन्हें हिरासत में ले कर पीछे ख़ालिद(र०) के पास ले गए। ख़ालिद(र०) को मालूम नही था के मुजाआ मुसलीमा का बड़ा क़ीमती सालार है। ख़ालिद(र०) उसे भी

महज़ सवार या सिपाही समझ रहे थे। उन्होंने दरअसल बड़ा मोटा शिकार पकड़ा था।

उन्होंने ये तो बता दिया के वो मुसलीमा की फौज के आदमी हैं लेकिन मुजाआ का रूत्बा ज़ाहिर न होने दिया।

"क्या तुम हमारे मुक़ाबले के लिए आए थे?" -ख़ालिद(र०) ने इन से पूछा।

"नहीं" -एक ने जवाब दिया- "हमें तो मालूम ही न था के मुसलमानों का लश्कर आ रहा है। हम बनी आमिर और बनी तमीम से अपने एक खून का बदला लेने गए थे।"

"मैं ने मान लिया" -ख़ालिद(र०) ने कहा- "मैं तुम्हारी जान बख्शी कर सकता हूं। अब मेरे इस सवाल का जवाब दो के तुम किसे अल्लाह का सच्चा रसूल मानते हो और किस पर ईमान रखते हो?"

"बेशक मुसलीमां अल्लाह का सच्चा रसूल है" -एक सवार ने जवाब दिया।

"खुदा की क़सम!" -ख़ालिद(र०) ने कहा- "तुम मेरी तौहीन कर देते तो मैं तुम्हें बख्श देता, अपने रसूल(स०) की तौहीन को मैं किस तरह बर्दाश्त कर सकता हूं।"

"तुम अपने रसूल(स०) को मानो, हम अपने नबी को मानते हैं" -मुजाआ ने कहा- "असल बात भी यही है के मुसलीमा रिसालत में मोहम्मद(स०) का बराबर का हिस्सेदार है।"

"हम सब का अक़ीदा यही है" -सवारों ने कहा- "एक नबी तुम में से है एक हम में से है।"

ख़ालिद(र०) ने तलवार खींची और एक ही वार से एक सवार का सर उड़ा दिया और हुक्म दिया के सब को क़त्ल कर डालो ख़ालिद(र०) के आदमी आगे बढ़े और मुजाआ को पकड़ कर उसका सर काटने के लिए झुका दिया। उसे क़त्ल करने वाले की तलवार हवा में बुलंद हुई

"हाथ रोक लो" -क़ैदी सवारों में से एक जिस का नाम सारिया बिन आमिर था, चिल्लाया- "इस आदमी को ज़िन्दा रहने दो। ये तुम्हारे काम आ सकता है।"

तब इन्केशाफ हुआ के मुजाआ बनू हनीफा के सरदारों में से है लेकिन ये फिर भी न बताया गया के ये सालार भी है। ख़ालिद(र०) दूरअंदेश थे। किसी का सरदार बड़ा क़ीमती यरग़माल होता है। उसे किसी न किसी मौक़े पर इस्तेमाल किया जा सकता था। ख़ालिद(र०) ने मुजाआ के पांव में बेड़ियां डलवा कर उसे अपने ख़ेमे में ले गए और अपनी बीवी लैला के हवाले कर दिया। बाक़ी सब को क़त्ल कर दिया।

मुसलीमा के लिए मुजाआ की गिरफ्तारी मामूली नुक़सान नही था लेकिन वादी-ए-हनीफा वो फंदा था जो इस नुक़सान को पूरा कर सकता था। इस के अलावा मुसलीमा के लश्कर की तादाद चालीस हज़ार थी और मुसलमानों की तेरह हज़ार थी। मुसलीमा के पास घुड़ सवार और शुतर सवार दस्ते ज़्यादा थे। बाज़ मोअररिख़ों ने मुसलीमा के लश्कर की तादाद सत्तर हज़ार लिखी है। बहरहाल तादाद चालीस हज़ार से ज़्यादा थी, कम न थी। ख़ालिद(र०) की एक कमज़ोरी तो ये थी के लश्कर की तादाद ख़तरनाक हद तक कम थी, दूसरी कमज़ोरी ये के वो अपने मुसतक़िर से बहुत दूर थे जहां कुमक और रसद का पहुंचना मुमकिन नहीं था। इन्हें सिर्फ एक सहूलत हासिल थी। उस इलाक़े में पानी और जानवरों के लिए हरे चारे की कमी नहीं थी। वो ज़रखेज़ खेतों और बाग़ों का इलाक़ा था।

मुसलीमा को हरे भरे खेतों और बाग़ों का ग़म खा रहा था। उसने नहार रजाल से कहा के वो ऐसे अंदाज़ से लड़ना चाहता है के मदीना का लश्कर बस्तियों को, खेतों और बाग़ों को न उजाड़ सके। तारीख़ों में लिखा है के मुसलीमा किसी क़िस्म के तज़बज़ब, इज़तेराब या परेशानी में मुंबतला न था। वो इस तरह बात करता था जैसे उसे अपनी फतह का यक़ीन हो। वो बड़ी मोज़ूं बुनियादों पर खड़ा बात कर रहा था। उसका चालीस हज़ार का लश्कर बरतर भी था और ये सब मुसलीमा के नाम पर जानें कुर्बान करने वाले लोग थे। मुसलीमा की नबुव्वत का तहफ्फुज़ उनके लिए जुनून बन चुका था।

ख़ालिद(र०) फंदे में आने वाले सालार नहीं थे। मूता में वो फंदे में आ चुके थे। यमामा के इलाक़ों से वो वाक़िफ नहीं थे। उन्होंने देख भाल और आगे की ज़मीन का जाएज़ा लेने के लिए एक पार्टी भेज दी थी। रात को इस पार्टी ने जो रिर्पोट दी, इसके मुताबिक़ ख़ालिद(र०) ने अपना रास्ता बदल दिया ताके हनीफा की वादी के अन्दर से न गुज़रना पड़े। वो ज़रा दूर का चक्कर काट कर आगे निकल गए।

मुसलीमा ने भी देख भाल का इन्तेज़ाम कर रखा था। उसे इत्तेला मिली के मदीने वाले आगे निकल गए हैं तो उस ने अपना लश्कर बड़ी तेज़ी से अक़रबा के मैदान में मुंतक़िल कर दिया। ख़ालिद(र०) की नज़र इसी मैदान पर थी। लेकिन दुश्मन पहले पहुंच गया था। ख़ालिद(र०) ने एक जगह देख ली जो मैदान से बुलन्द थी। उन्होंने वहीं अपना लश्कर रोक लिया। वहां से वो मुसलीमा के पड़ाव को अच्छी तरह देख सकते थे।

मुसलीमा ने इसी मैदान को बेहतर और मोज़ूं समझा था। एक तो उसने अपने

लश्कर का तमाम तर साज़ो सामान और माल व असबाब अपनी खेमा गाह से पीछे रखा था, दूसरे ये के खेत और बाग़ात भी लश्कर के पीछे थे। इन सब की वो बड़ी अच्छी तरह हिफाज़त कर सकता था। उसने ये भी देख लिया था के ख़ालिद(र०) यहां से आगे यमामा को बढ़े तो वो उन पर अक़ब से हमला कर देगा। ख़ालिद(र०) भी इस सूरत को भांप चुके थे के वो यहां से आगे बढ़े तो मारे जाएंगे।

मुसलीमा ने अपने लश्कर को तीन हिस्सों में तक़सीम कर दिया। उसने दायें हिस्से की क़यादत नहार रजाल को दी। बायें हिस्से का सालार मोहकम बिन तुफ़ैल था। और दरमियान में यानी क़ल्ब में खुद रहा उसने अपने बेटे को जिस का नाम शरजील था कहा के वो लश्कर से ख़िताब करे। एक शरजील बिन हस्ना ख़ालिद(र०) के लश्कर का सालार था। मुसलीमा के बेटे का नाम भी शरजील था। शरजील घोड़े पर सवार हुआ और अपने लश्कर के तीनों हिस्सों के सामने बारी बारी जा कर कहा:

"ऐ बनू हनीफा! आज अपनी आन और अपनी आबरू पर मर मिटने का वक़्त आ गया है। खुदा ने तुम्हारे क़बीले को नबुव्वत दी हैं आज अपनी आबरू और नबुव्वत की ख़ातिर इस तरह लड़ो के मुसलमानों को फिर कभी तुम्हारे सामने आने की जुर्रत न हो। अगर तुम ने पीठ दिखाई तो दुश्मन तुम्हारी बीवियों, तुम्हारी बहनों और तुम्हारी बेटियों को लोंडियां बना लेगा और इस ज़मीन पर ही जो तुम्हारी ज़मीन है, उनकी आबरू लूटेगा। क्या तुम ये मंज़र बर्दाश्त कर लोगे?"

मुसलीमा के लश्कर को जैसे आग लग गई हो। वो मुसलीमा के नाम के नारे लगाने लगे। घोड़े खुर मार मार कर हिनहिनाने लगे। ख़ालिद(र०) इस सूरते हाल का मुक़ाबला करने के लिए तैयार थे के मुसलीमा का लश्कर उन पर फौरन हमला कर देगा। नफरी की इफरात के ज़ोर पर मुसलीमा को हमला कर देना चाहिए था लेकिन मोअररिख़ लिखते हैं के वो जंग के फन में महारत रखता था। उसने हमले में पहल न की। उसका ख्याल था के पहले ख़ालिद(र०) हमला करे और दिफाअ में लड़ा जाए और जब मुसलमान थक जाएं तो दायें बायें से हमले कर के इन्हें ख़त्म कर दिया जाए।

उस दौर की तहरीरें बताती हैं के ख़ालिद(र०) मुसलीमा की चाल न समझ सके। उन्होंने अपने सालारों से कहा के मुर्तदीन से आमने सामने की जंग इस तरह लड़ी जाए के उसे अपने दस्तों को इधर उधर करने की मोहलत न मिले और वो दिफाई लड़ाई लड़ता रहे। ख़ालिद(र०) को तवक़्क़ो थी के तेरह हज़ार से चालीस हज़ार को शिकस्त इसी तरीक़े से दी जा सकती है के उसे कोई चाल चलने का मौक़ा न दिया जाए।

उस वक्त के रिवाज के मुताबिक ख़ालिद(र०) को भी ज़रूरत महसूस हुई के अपने लश्कर का हौसला बढ़ाऐं। खलिफातुल मुस्लेमीन ने ख़ालिद(र०) की मदद के लिए जो दस्ते भेजे थे, इन में कुर्आन के हाफिज़ और खुशलहान क़ारी भी ख़ासी तादाद में थे। उस दौर के हाफिज़े कुर्आन और क़ारी माहिर तेग़ज़न और लड़ने वाले भी होते थे वो मस्जिदों में बैठे रहने वाले लोग नही थे।

इस के अलावा ख़ालिद(र०) के साथ वो लोग भी थे जिन्होंने हर मैदान में अपने से कई गुनाह ताक़तवर दुश्मन को शिकस्तें दी थीं। ख़ालिद(र०) के लश्कर में उमर(र०) के भाई ज़ेद बिन खत्ताब और इन के बेटे अब्दुल्लाह भी थे। इस के अलावा अबु दुजाना(र०) भी थे जो जंगे ओहद में उन तीरों के सामने खड़े हो गए थे जो रसूले करीम पर आ रहे थे। उन्होंने अपने जिस्म को आप(स०) की ढाल बना दिया था।। ख़लिफातुल मुस्लेमीन के बेटे अब्दुर्रहमान भी थे और एक ख़ातून उम्मे अम्मारा(र०) अपने बेटे के साथ गई थी। उम्मे अम्मारा(र०) जंगे ओहद में बाक़ायदा लड़ी थी।

इन के अलावा वहशी नाम का हबशी भी ख़ालिद(र०) के साथ था जिस की फैंकी हुई बरछी निशाने से बाल बराबर इधर उधर नहीं होती थी। कुबूले इस्लाम से पहले जंग ओहद में इसी वहशी ने हमज़ा(र०) को बरछी फैंक कर शहीद किया था।

मुजाहेदीन का लश्कर तादाद में तो कम था लेकिन जोश जिहाद और जज़बे के लिहाज़ से कमतर न था। ख़ालिद(र०) ने खुद भी अपने लश्कर का हौसला बढ़ाया और कुर्आन के हाफिज़ों और क़ारियों से कहा के वो मुजाहेदीन मदीना को आयात कुर्आनी सुना कर बताऐं के वो घरों से इतनी दूर किस मक़सद के लिए लड़ने आए हैं।

क़ारी अपनी पुर असर आवाज़ों में लश्कर को वो आयात सुनाने लगे जिन में मुसलमानों के लिए जिहाद फर्ज़ करार दिया गया है। ये सिलसिला रात भर चलता रहा। अल्लाह के सिवा और कौन था जो इन क़लील तादाद मुजाहेदीने इस्लाम की मदद करता। मोअररिख़ेन के मुताबिक़ मुजाहेदीन के इस लश्कर ने रात इबादत और दुआओं में गुज़ार दी।

दिसम्बर 632ई० के तीसरे हफ्ते की एक सुबह तुलू हुई तो ख़ालिद(र०) ने मुसलीमा के लश्कर पर हमले का हुक्म दे दिया। ख़ालिद(र०) ने भी अपने लश्कर को तीन हिस्सों में तक़सीम कर रखा था। क़ल्ब की क़यादत उन्होंने अपने पास रखी थी। एक तरफ अबु हज़ीफा(र०) और दूसरी तरफ ज़ेद बिन खत्ताब(र०) थे। मुसलमान जिस क़हर व ग़ज़ब से हमलाआवर हुए और जिस बे जिगरी से लड़े वो देख कर ख़ालिद(र०) को उम्मीद बन्ध गई के वो मुर्तेदीन के लश्कर को उखाड़ फैंकेंगे। खुद ख़ालिद(र०) सिपाहियों की तरह लड़ रहे थे लेकिन ख़ासा वक्त गुज़र

जाने के बाद भी मुसलीमा का लश्कर जहां था वहीं रहा। बहुत से मुजाहेदीन पहले हल्ले में ही शहीद हो गए।

दिन गुज़रता जा रहा था। मैदाने जंग का क़हर बढ़ता जा रहा था। एक शोर था, चीख व पुकार थी, कर्बनाक आह बका थी जो ज़मीन व आसमान को हिला रही थी। मुसलीमा का लश्कर घूम फिर कर लड़ रहा था। इस की कोशिश ये थी के मुसलमानों को घेरे में ले ले और मुसलमानों का अज़्म ये था के मुर्तेदीन के इस लश्कर के क़दम उखाड़ने हैं और यमामा पर कब्ज़ा करना है। दोनों लश्कर अपनी अपनी कोशिशों में नाकाम हो रहे थे। अगर कामयाब था तो वो मुसलीमा का लश्कर था।

मुसलिमा बहुत चालाक और होशियार जंगी क़ायद था। वो ये जाएज़ा लेता रहा के मुसलमान किस वक़्त थक कर चूर होते हैं। आधा दिन गुज़र गया। ज़मीन खून से लाल होती जा रही थी। ज़ख्मी इन्सान भागते दौड़ते घोड़ों तले कुचले जा रहे थे। मुसलमान इस क़द्र बे जिगरी से लड़ने की वजह से कुछ जल्दी थक गए। मुसलीमा ने भांप लिया। उसने अपने लश्कर के एक ताज़ा दम हिस्से को मुसलमानों पर हमले का हुक्म दे दिया। उस के लश्कर का ये हिस्सा तूफानी मौज की तरह आया। मुसलीमा ने सब को यक़ीन दिला रखा था के जो उसकी नबुव्वत की ख़ातिर लड़ता हुआ मरेगा वो सीधा जन्नत में जाएगा।

ख़ालिद(र०) ने थोड़ी ही देर बाद महसूस कर लिया के उसके लश्कर पर दबाव बहुत तेज़ हो गया है। ख़ालिद(र०) कोई चाल सोच ही रहे थे के मुसलमानों ने पीछे हटना शुरू कर दिया। आगे वाले दस्ते तेज़ी से पीछे हटे। पीछे वाले उनसे ज़्यादा तेज़ी से पस्पा हुए। सालारों ने बहुत शौर मचाया। लश्कर को पुकारा। नारे लगाए लेकिन मुर्तेदीन का दबाव ऐसे क़हर की सूरत इख़्तियार कर गया था जिसे मुसलमान बर्दाश्त न कर सके और उनमें बद नज़मी फैल गई। देखा देखी मुसलमान ऐसी बुरी तरह भागे के अपनी खेमा गाह में भी न रूके और दूर पीछे चले गए।

मुसलीमा के लश्कर ने उनका तआकुब किया। ओहद के मैदान में भी मुसलमानों ने अपने लिए ऐसी ही सूरते हाल पैदा कर ली थी और हज़ीमत उठाई थी। ये उनकी दूसरी पस्पाई थी जो भगदड़ की सूरत इख़्तियार कर गई थी।

❁

मुसलीमा का लश्कर जब मुसलमानों की खेमा गाह तक पहुंचा तो उसने वहां लूट मार शुरू कर दी। वहां इन्हें रोकने वाला कोई न था। ख़ालिद(र०) और उनके तमाम सालार दौड़ दौड़ कर अपने लश्कर को रोकने के लिए चीख चिल्ला रहे थे लेकिन मुसलमान अपनी खेमा गाह से काफी दूर जा रूके मुसलीमा के लश्कर के

कुछ आदमियों को ख़ालिद(र०) का ख़ेमा मिल गया। वो उसमें जा घुसे। वहां उन्हें ज़्यादा माल व दौलत मिलने की तवक़्क़ो थी लेकिन इस ख़ेमे में इन्हें दो इतने क़ीमती इन्सान मिल गए जिन की इन्हें तवक़्क़ो नहीं थी। एक तो उनका अपना सरदार और सालार मुजाआ था जो बेड़ियों में जकड़ा हुआ था और उसके साथ ख़ालिद(र०) की नई बीवी लैला उम्मे तमीम थी जिसके हुस्न के चर्चे उन्होंने सुन रखे थे लेकिन उसे देखा कभी नहीं था। मुजाआ को तो उन्होंने पहचान लिया। लैला के मुताल्लिक़ इन्हें मुजाआ ने बताया के ये कौन है। बैक वक़्त दो तीन आदमी लैला की तरफ लपके। वो उसे क़त्ल करना या अपने साथ ले जाना चाहते थे।

"रूक जाओ"- उनके क़ैदी सरदार मुजाआ ने हुक्म दिया-"दुश्मन के आदमियों के पीछे जाओ। अभी औरतों के पीछे पड़ने का वक़्त नहीं। मैं अब इसका नहीं बल्कि ये मेरी क़ैदी है।"

उनके सरदार का हुक्म इतना सख़्त था के वो बड़ी तेज़ी से ख़ेमे से निकल गए। उन्हें इतना भी होश न रहा के अपने सरदार की बेड़ियां ही तोड़ जाते।

"तुम ने मुझे इन आदमियों से क्यों बचाया है?"-लैला ने मुजाआ से पूछा"क्या तुम मुझे अपना माले ग़नीमत समझते हो? अगर तुम्हारी नीयत यही है तो क्या तुम्हें ये अहसास नहीं के मैं तुम्हें क़त्ल कर सकती हूं?"

"तुम ने मेरे साथ जो अच्छा सुलूक क़ैद के दौरान किया है मैं इस के सिले में अपनी जान दे सकता हूं।"-मुजाआ ने कहा-"ख़ुदा की क़सम! मेरी बेड़ियां टूट कर तुम्हारे पांव में पड़ जाएं तो भी मैं तुम्हें माले ग़नीमत या अपनी लोंडी नहीं समझूंगा। तुम ने मुझे क़ैदी नहीं मेहमान बना कर रखा है।"

"मैं ने तुम पर कोई अहसान नहीं किया"-लैला ने कहा-"ये मुसमलानों की रिवायत है के दुश्मन उनके घर चला जाए तो उसे वो मोअज़्ज़िज़ मेहमान समझते हैं। अगर तुम मेरे घर में होते तो मैं तुम्हें और ज़्यादा आराम पहुंचा सकती थी।"

"लैला"-मुजाआ ने कहा-"क्या तुझे अभी अहसास नहीं हुआ के तुम्हारा खाविंद शिकस्त खा कर भाग गया है और तुम मेरे क़बीले के कब्ज़े में हो?"

"फतह और शिकस्त का फैसला ख़ुदा करेगा"-लैला ने जवाब दिया-"मेरा ख़ाविंद इस से ज़्यादा सख़्त चोटें बर्दाश्त कर सकता है।"

"कम फहम खातून!"-मुजाआ ने फातेहाना मुस्कुराहट से कहा-"क्या तुझे अभी तक अहसास नहीं हुआ के खुदा मुसलीमा के साथ है जो उसका सच्चा नबी है? मोहम्मद(स०) की रिसालत सच्ची होती...."

"मुजाआ!"-लैला ने गरज कर उसकी बात वहीं ख़त्म कर दी और

बोली-"अगर तूने मोहम्मद(स०) की रिसालत के खिलाफ कोई बात की तो मुझ पर तेरा क़त्ल फर्ज़ हो जाएगा। मैं देख रही हूं के हमारा लश्कर मुझे इस खेमा गाह में अकेला छोड़ कर भाग गया है जहां मेरे दीन के दुश्मन लूट मार कर रहे हैं लेकिन मेरे दिल पर ज़रा सा भी खौफ नही। खौफ इस लिए नही के मुझे मोहम्मद(स०) की रूहे मुक़द्दस पर पूरा भरोसा है।"

मुजाआ खामोश रहा और वो कुछ देर नज़रें लैला के चेहरे पर गाड़ रहा। बाहर फातेह लश्कर का फातेहाना गुल ग़पाड़ा था। वो मुसलमानों के खेमों को फाड़ फाड़ कर इन के टुकड़े बिखेर रहे थे। मुजाआ और लैला को तवक़्क़ो थी के अभी मुसलीमा के आदमी आऐंगे और दोनो को साथ ले जाऐंगे लेकिन अचानक बाहर का गुल ग़पाड़ा ख़त्म हो गया और लूट मार करने वाले तमाम लोग भागते दौड़ते खेमा गाह से निकल गए। इसकी वजह ये थी के मुसलीमा की तरफ से हुक्म आया था के फौरन वापस मैदान-ए-अक़रबा में पहुंचो क्योंके मुसलीमा ने देख लिया था के मुसलमान बड़ी तेज़ी से इक्ठे हो कर मुनज़्ज़म हो रहे थे। मुसलीमा कोई ख़तरा मोल नहीं लेना चाहता था। वो मुसलमानों की शुजाअत और उन के जज़्बे से मरऊब था।

मुजाआ और लैला खेमे में अकेले रह गए। मुजाआ के चेहरे पर जो रौनक़ आई थी वो फिर बुझ गई।

❋

ख़ालिद(र०) इतनी जल्दी हार मानने वाले नहीं थे। ज़ाए करने के लिए उनके लिए उनके पास एक लम्हः भी नहीं था। उन्होंने अपने सालारों और कमांडरो को इक्ठा किया और इन्हें इस पस्पाई पर शर्म दिलाई, इतने में एक घोड़ा सरपट दौड़ता आया और सालारों वग़ैरा के इस इजतेमा में आ रूका। वो उमर(र०) के भाई ज़ेद(र०) बिन खत्ताब थे।

"खुदा की क़सम इब्ने वलीद!"-ज़ेद बिन खत्ताब(र०) ने घोड़े से कूद कर उतरते हुए जोशीली आवाज़ में कहा-"मैं ने मुसलीमा का दायां हाथ काट दिया है..... मैं ने नहार रजाल को अपने हाथों क़त्ल किया है। ये अल्लाह का इशारा है के फतह हमारी होगी।"

नहार रजाल का हलाक हो जाना मुसलीमा के लिए मामूली नुक़सान नहीं था। बताया जा चुका है के वो मुसलीमा का मोअतमिद खास, वज़ीर मुशीर और सही मानों में दस्ते रास्त था। ख़ालिद(र०) और इनके सालारों ने ये खबर सुनी तो उनके चेहरों पर ताज़ा हौसलों की सुर्खी आ गई।

"क्या तुम जानते हो हमें किस जुर्म की सज़ा मिली है?"-ख़ालिद(र०) ने

गुसेली आवाज़ में कहा- "मुझे बताया गया है हमारे लश्कर में दिल फट गए थे। लड़ाई से पहले ही हमारे लश्कर के मुहाजिर कहने लगे थे के बहादुरी में अन्सार और बद्दु उनका मुक़ाबला नहीं कर सकते। अन्सार कहते थे के मुसलमानों में उन जैसा बहादुर कोई नही और बुदुओ ने कहा के मक्का और मदीना के लोग तो ये भी नही जानते के जंग होती क्या है....तुम जानते हो के हम में मक्का के मुहाजिर भी है, मदीने के अन्सार भी हैं और इर्द गिर्द के इलाक़ो से आए हुए बद्दु भी हमारे साथ हैं। इन लोगों ने एक दूसरे पर ताना ज़नी शुरू कर दी थी।"

"इस का हमारे पास कोई इलाज नहीं" -एक सालार ने कहा।

"मेरे पास इस का इलाज है" -ख़ालिद(र०) ने कहा- "हम ने लश्कर में इन सब को इक्ट्ठा रखा हुआ है। मज़ीद वक़्त ज़ाय किए बग़ैर तुम सब जाओ और मुहाजिरों को अलग, अन्सार को अलग और बद्दुओं को अलग कर लो।"

थोड़े से वक़्त में ख़ालिद(र०) के हुक्म की तामील हो गई। लश्कर तीन हिस्सों में तक़सीम हो चुका था। एक हिस्सा मुहाजिरों का, दूसरा अन्सार का और तीसरा बद्दुओ का था। ख़ालिद(र०) घोड़े पर सवार उनके सामने जा खड़े हुए।

"अल्लाह के सिपाहियों!" -ख़ालिद(र०) ने बड़ी ही बुलंद आवाज़ में कहा- "हम ने मैदान में पीठ दिखा कर दुश्मन के लिए हंसी और ताना ज़नी का मौक़ा पैदा कर दिया है। कौन कह सकता है के तुम में से कौन बहादुरी से लड़ा और कौन सब से पहले भाग उठा.....मुहाजेरीन? अन्सार या बद्दु? -अब मैं ने तुम्हें इस लिए अलग कर दिया है के दुश्मन पर फौरन जवाबी हमला करना है। अब देखेंगे के तुम में से कौन कितना बहादुर है। बहादुरी और बुज़दिली का फैसला ताना ज़नी से नहीं किया जा सकता। मैदान में कुछ कर के दिखाओ लेकिन इत्तेहाद को हाथ से न जाने देना। रसूल अल्लाह(स०) ने तुम्हें जिस बाहमी प्यार का सबक़ दिया था वो भूल न जाना। तुम में से कोई गिरोह दुश्मन के दबाव को बर्दाश्त न करते हुए पीछे हटे तो दूसरा गिरोह उसकी मदद को पहुंचे। हमें दुश्मन पर साबित करना है के मुसलीमा झूटा नबी है। अगर हम शिकस्त खा गए तो ये झूटी नबुव्वत हम पर मुसल्लत हो जाएगी और हम मुसलीमा के गुलाम और हमारी औरतें मुर्तेदीन की लौंडियां बन जाएंगी।"

ख़ालिद(र०) के ये अल्फाज़ उन तीरों की तरह कारगर साबित हुए जो अपने निशाने से इधर उधर नही जाया करते। लश्कर में नया जोश और नया वलवला पैदा हो गया। उधर मुर्तेदीन मुजाहेदीन की ख़ेमागाह लूट कर और तबाह कर के जा चुके थे। इधर से मुसलमान इशारा मिलते ही मुसलीमा के लश्कर की तरफ चल पड़े।

मुसलीमा ने अपने लश्कर को फिर हमला रोकने की तरतीब में कर लिया था। जब मुजाहेदीने इस्लाम का लश्कर मुक़ाबले में पहुंचा तो अन्सार के एक सरदार साबित बिन क़ैस घोड़े को ऐड़ लगा कर लश्कर के सामने आ गए।

"ऐ अहले मदीना!"–उन्होंने बुलंद आवाज़ से कहा–"तुम एक शर्मनाक मुज़ाहेरा कर चुके हो"–साबित बिन क़ैस ने दुश्मन की तरफ इशारा कर के कहा–"ऐ मेरे अल्लाह! जिस किसी की ये लोग इबादत करते हैं उस पर लानत भेजता हूं"–उन्होंने मुजाहेदीन की तरफ मुंह कर के कहा–"ऐ अल्लाह! जो बुरी मिसाल इस लश्कर ने क़ायम की है मैं इस पर भी लानत भेजता हूं।"

इतना कह कर साबित बिन क़ैस ने नियाम से तलवार खींची और घोड़े का रूख दुश्मन की तरफ कर के ऐड़ लगा दी। उनके आख़िरी अल्फाज़ ये थे–"देखो, मेरी तलवार दुश्मन को मज़ा चखाएगी और तुम्हें हिम्मत और इसतक़लाल का नमूना दिखाएगी।"

साबित बिन क़ैस ने घोड़े को ऐड़ लगाई और ख़ालिद(र०) ने हमले का हुक्म दे दिया। मोररिख़ लिखते हैं के साबित बिन क़ैस की तलवार ऐसी शिद्दत और ऐसी महारत से चल रही थी के जो उनके सामने आया वो फिर अपने पांव पर खड़ा नज़र न अया। उनके जिस्म का शायद ही कोई हिस्सा रह गया होगा जहां दुश्मन की कोई बरछी या तलवार न लगी हो। दुश्मन की सफों के दूर अंदर जा कर साबित बिन क़ैस गिरे और शहीद हो गए। अपने लश्कर के लिए वो वाक़ेई हिम्मत व इसतक़लाल का बे मिसाल नमूना पेश कर गए।

मोहम्मद हुसैन हैकल ने बाज़ मोअररिख़ों के हवाले दे कर लिखा है के ख़ालिद(र०) के लश्कर ने क़समें खाई थीं के अब उनकी लाशें ही उठाई जाएंगी, वो ज़िन्दा नहीं निकलेंगे। एक मोअररिख़ ने लिखा है के उन्होंने क़सम खाई के हाथ में हथियार न रहा, तरकश मे तीर न रहा तो दांतों से लड़ेंगे।

ख़ालिद(र०) ने ये मिसाल क़ायम की के चन्द एक जांबाज़ चुन कर अपने साथ इस अज़्म से कर लिए के जहां लड़ाई ज़्यादा ख़तरनाक होगी वहां वो इन जांबाज़ों के साथ जा कूदेंगे। उन्होंने अपने जांबाज़ों से कहा–"तुम सब मेरे पीछे रहना"–आगे वो खुद रहना चाहते थे।

❁

दोबारा लड़ाई शुरू हुई तो एक नई मुसीबत आन पड़ी आंधी आ गई जिस का रूख मुजाहेदीने इस्लाम की तरफ था। कुछ मोअररिख़ लिखते हैं के ये सहराई आंधी नहीं थी बल्कि तेज़ हवा थी। मैदान-ए-जंग में घोड़ों और पियादों की उड़ती हुई गर्द

ज़मीन से उठते बादलों की मानिंद थी। तेज़ व तुंद हवा का रूख मुजाहेदीन की तरफ था इस लिए मट्टी और रेत मुसमलानों की आंखों में पड़ती थी। बदर में कुफ्फ़ार के साथ ऐसे ही हुआ था। हवा तेज़ हुई जा रही थी।

कुछ मुजाहेदीन ने ज़ेद बिन खत्ताब(र०) से पूछा के ऐसी आंधी में वो क्या करें।

"खुदा की क़सम!"-ज़ेद बन खत्ताब(र०) ने गरजदार आवाज़ में कहा-" मैं अपने अल्लाह से दुआ करता हूं के मुझे दुश्मन को शिकस्त देने तक ज़िन्दा रखे...... ऐ अहले मक्का व मदीना! आंधी से मत डरों। सरों को ज़रा झुका के रखो। इस तरह रेत और मट्टी तुम्हारी आंखों में नहीं पड़ेगी। पीछे न हट जाना। हिम्मत से काम लो। इसतक़लाल को हाथ से न जाने दो। आंधी और तूफान तुम्हारा कुछ नही बिगाड़ सकते।"

ज़ेद बिन खत्ताब(र०) सालार थे। उन्होंने मुजाहेदीन के लिए ये मिसाल क़ायम की के तलवार लहराते हुए दुश्मन पर टूट पड़े। उनके दस्ते उनके पीछे गए। ज़ेद बिन खत्ताब(र०) तलवार चलाते दूर तक निकल गए और शहीद हो गए।

एक और सालार अबु हज़ीफा ने भी यही मिसाल क़ायम की। वो ये नारा लगा कर दुश्मन पर टूट पड़े-"ऐ अहले कुर्आन! अपने आमाल से कुर्आने हकीम की नामूस को बचाओ"-वो भी मुक़ाबले में आने वाले हर मुर्तिद को काटते गए, ज़ख्म खाते गए और शहीद हो गए।

इन सालारों ने जानें दे कर मुजाहेदीन के अज़्म में जान डाल दी और वो आसमानी बिजलियों की तरह दुश्मन पर टूट टूट पड़ने लगे। इस के बावजूद मुसलीमा का लश्कर क़ायम व दायम था। ख़ालिद(र०) ने मैदाने जंग का जाएज़ा लिया। ये ऐसी जंग थी जिस में चालें चलने की ज़रा सी भी गुंजाईश नही थी। ये आमने सामने की टक्कर थी। इस में सिर्फ ज़ाती शुजाअत ही काम आ सकती थी।

ख़ालिद(र०) ने मैदाने जंग का जाएज़ा लेते हुए देखा के मुसलीमा के मुहाफिज़ उसकी हिफाज़त के लिए जानें कुर्बान कर रहे हैं। ख़ालिद(र०) को फतह का यही एक तरीक़ा नज़र आया के मुसलीमा को मार दिया जाए। ये काम इतना सहल नहीं था। जितनी आसानी से दिमाग़ में आया था, लेकिन ख़ालिद(र०) ना मुमकिन को मुमकिन कर दिखाने के लिए इस तरह मुसलीमा की तरफ बढ़े के उनके जांबाज़ों ने उनके गिर्द घेरा डाल रखा था। जब करीब गए तो मुसलीमा के मुहाफिज़ों ने उन पर हल्ला बोल दिया। ख़ालिद(र०) के क़रीब जो आया वो ज़िन्दा न रहा मगर मुसलीमा तक पहुंचना मुमकिन नज़र नहीं आता था।

ख़ालिद(र०) के जांबाज़ों ने अपनी तरतीब बिखरने न दी। एक मोज़ूं मौक़ा देख

कर ख़ालिद(र०) ने अपने जांबाज़ों को मिल कर हल्ला बोलने का हुक्म दे दिया। ख़ालिद(र०) खुद भी हल्ले में शरीक हो गए कुछ मुहाफिज़ पहले ही मर चुके थे या ज़ख्मी हो कर ज़मीन पर तड़प रहे थे। ख़ालिद(र०) के जांबाज़ों का हल्ला इतना शदीद था के मुसलीमा के मुहाफिज़ बौखला गए। मैदाने जंग की सूरते हाल ये हो गई थी के मुजाहेदीन जो फतह या मौत की क़समें खा चुके थे वो मुर्तदीन पर एक ख़ौफ बन कर छा रहे थे। मुसलीमा को अपनी हिफाज़त के लिए कोई और मुहाफिज़ नही मिल सकता था।

मुसलमानों ने नारों के साथ आंधी की चीखें मैदाने जंग में होलनाकी में इज़ाफा कर रही थीं। मुसलीमा के बचे कुछे मुहाफिज़ घबराने लगे। ख़ालिद(र०) के जांबाज़ों ने उनका हल्क़ा तोड़ दिया।

"या नबी!"-किसी मुहाफिज़ ने कहा-"अपना मोअजज़ा दिखा।"

"अपना वादा पूरा कर हमारे नबी!"-एक और मुहाफिज़ ने कहा-"तेरा वादा फतह का था।" मुसलीमा ने मौत को अपनी तरफ तेज़ी से बढ़ते देखा तो उसने बुलंद आवाज़ से अपने मुहाफिज़ों से कहा-"अपने हस्बो नसब और अपनी नामूस की ख़ातिर लड़ो"-और वो भाग उठा।

☸

दुश्मन का क़ल्ब टूट गया। पर्चम ग़ायब हो गया तो मुर्तदीन में शौर उठा-"नबी मैदान छोड़ गया है....रसूल भाग गया है।"-इस पुकार ने मुर्तदीन के हौसले तोड़ डाले और वो मैदान से निकलने लगे।

थोड़ी सी देर में मुर्तदीन मैदान छोड़ गए, लेकिन मैदाने जंग की कैफियत ये थी के खून नदी की तरह एक तरफ को बहने लगा। जहां ये मआरका लड़ा गया वो तंग सी घाटी थी। इसका कोई नाम न था। इस मआरके ने इसे एक नाम दे दिया। ये था शुअैबुदाम जिसके मानी हैं खूनी घाटी। दोनो लश्करों का जानी नुक़सान इतना ज़्यादा हुआ के मैदीन में लाशों के ऊपर लाशें पड़ी थी। ज़ख्मी तो हज़ारों की तादाद में थे। मुसलीमा के लश्कर का जानी नुक़सान उस की तादाद की ज़्यादती की वजह से ज़्यादा था। मुसलमानों का जानी नुक़सान भी कुछ कम न था। कई ज़ख्मी घोड़े बे लगाम हो कर लाशों और ज़ख्मियों को रौंद रहे थे। उन्होंने कई अच्छे भले आदमियों को कुचल डाला।

मुसलीमा का लश्कर जब बद्दिल हो कर भागा तो मुजाहेदीन उनके तआक्कुब में गए। मुसलिमा का एक सालार मोहकम बिन तुफैल अपने लश्कर को पुकार रहा था-"बनू हनीफा! बाग़ के अन्दर चले जाओ।"

इन्हें अब बाग़ में ही पनाह मिल सकती थी। इस बाग़ का नाम हदीक़ार्तुरहमान था जो वसी व अरीज़ था। इस के ईर्द गिर्द दीवार थी। मुसलीमा इस बाग़ में चला गया था। बाग़ मैदाने जंग के बिल्कुल क़रीब था। मुसलीमा के लश्कर के बचे कुछे आदमी भी बाग़ में दाख़िल हो गए। जब मुजाहेदीन बाग़ के करीब पहुंचे तो बाग़ के दरवाज़े बन्द हो चुके थे। मोअरऱ्ख़िन के मुताबिक़ बाग़ में पनाह लेने वाले मुर्तदीन की तादाद सात हज़ार थी।

ख़ालिद(र०) घोड़ा दौड़ाते बाग़ के ईर्द गिर्द घूम गए। इन्हें अन्दर जाने का कोई रास्ता नज़र न आया। अन्दर जाना ज़रूरी था। मुसलीमा को क़त्ल करना था ताके ये फितना हमेशा के लिए ख़त्म हो जाए।

अल्लाह के एक मुजाहिद बराअ(र०) बिन मालिक आगे बढ़े और बोले-"मुझे उठा कर दीवार के अन्दर फैंक दो। खुदा की क़सम, दरवाज़ा खोल दूंगा।"

बराअ(र०) सहाबा इकराम में खुसूसी दर्जा रखते थे। किसी ने भी गवारा न किया के इन्हें बाग़ के अन्दर फैंक दिया जाए लेकिन उन्होंने इतना ज़्यादा इसरार किया के दो तीन मुजाहेदीन ने इन्हें अपने कंधों पर खड़ा कर दिया और वो दीवार पर जा कर बाग़ में कूद गए। बाग़ में दुश्मन के सात हज़ार आदमी थे और बराअ(र०) अकेले।

सात हज़ार कुफ्फार में एक मुसलमान का कूद जाना ऐसे ही था जैसे कोई आतिश फिशां पहाड़ के दहाने के अन्दर कूद गया हो। बराअ बिन मालिक सरापा इश्क थे जो आतिशे नमरूद में कूद गए थे। उन्होंने बाग़ का दरवाज़ा अन्दर से खोलने का बे हद ख़तरनाक काम किसी के हुक्म के बग़ैर अपने ज़िम्मे ले लिया था। उन्होंने दरवाज़े के क़रीब से दीवार फांदी थी। सात हज़ार बनू हनीफा ज़ो बाग़ के अन्दर चले गए और जिन्होंने दरवाज़ा बन्द कर लिया था। अभी अफरा तफरी के आलम में थे। इन्हें मालूम था के मुसलमान उनके तआक्कुब में आ गए है। आर उन्होंने बाग़ को मुहासरे में ले लिया है। लेकिन वो सोच भी नहीं सकते थे के कोई मुसलमान अकेला दीवार फांद कर अंदर आने की जुर्रत कर सकता है।

"वो कौन है?"–किसी ने बड़ी बुलंद आवाज़ में कहा–"वो दरवाज़ा खोल रहा है।"

बराअ बिन मालिक को किसी ने देख लिया और एक ने पहचान कर नारा लगाया–"मुसलमान है।"

"काट दो इसे"–कोई मुर्तिद लल्कारा।

"गर्दन मार दो"–एक और लल्कारा।

"पकड़ लो....मार डालो"–एक शौर उठा।

बे शुमार मुर्तिद तलवारें और बरछियां ताने बराअ बिन मालिक की तरफ दौड़े। बराअ अभी दरवाज़ा खोल नही सके थे। उन्होंने तलवार निकाली और बनू हनीफा का जो आदमी सब से पहले उन तक पहुंचा था, उसे बराअ की तलवार के भर पूर वार ने वहीं रोक दिया। वो लड़खड़ाता हुआ पीछे हटा। बराअ ने एक बार फिर दरवाज़ा खोलने की कोशिश की। वो बरवक़्त पीछे को घूमे। बेक वक़्त दो आदमियों ने उन पर बरछियों के वार किए थे। बराअ फुर्ती से एक तरफ हो गए। दोनो बरछियों की

अन्नियां जो बराअ के जिस्म में उतरने के लिए आई थी, दरवाज़े में उतर गईं। बराअ ने बड़ी तेज़ी से तलवार चलाई और इन दोनों आदमियों को उस वक़्त घायल कर दिया जब वो दरवाज़े में से बरछियां निकाल रहे थे।

कई मुर्तिद बराअ बिन मालिक पर मिल मिल कर हमला करते थे और बराअ दरवाज़े के साथ पीठ लगाए बड़ी तेज़ी से तलवार चला रहे थे। उनकी ज़बान से दो ही नारे गरजते थे- "अल्लाह अकबर....मोहम्मदुर्रसूलअल्लाह"--वो वार रोकते, वार करते और दरवाज़ा खोलने की कोशिश करते थे।

तारीख़ में लिखा है के बराअ बिन मालिक ने बनू हनीफा के बहुत से आदमियों को हलाक और ज़ख्मी किया और दरवाज़ा खोल दिया। बाज़ मोअररिख़ों ने ये भी लिखा है के बराअ बिन मालिक के पीछे चन्द और मुसलमान दीवार फांद कर अन्दर चले गए थे जिन्होंने तीरों से मुर्तेदेन को दूर रखा और बराअ बिन मालिक ने दरवाज़ा खोल दिया। इस पर तमाम मोअररिख़ मुत्ताफिक हैं के सब से पहले बराअ बिन मालिक दीवार फांद कर अंदर गए थे।

दरवाज़े खुलते ही मुसलमान इस तरह दरवाज़े में से अंदर जाने लगे जैसे नहर का किनारा कहीं से टूट गया हो। बहुत से मुसलमान ख़ालिद(र०) के कहने पर दीवार पर चढ़ गए। ये सब तीरअंदाज़ थे। उन्होंने बनू हनीफा पर तीरों का मीना बरसा दिया। मुसलमान जो अंदर चले गए थे, वो बनू हनीफा पर क़हर की मानिंद टूटे। मुर्तेदीन का क़त्ले आम होने लगा। उनके भाग निकलने के रास्ते मसदूद हो चुके थे। वो अब ज़िन्दा रहने के लिए लड़ रहे थे। उनका नबी, ख्वाह झूटा ही था, उनके साथ था। उस की लल्कार सुनाई दे रही थी और वो बड़ी बे जिगरी से लड़ रहे थे।

मुर्तेदीन की तादाद बहुत ज़्यादा थी जो बड़ी तेज़ी से कम होती जा रही थी। बाग़ खून से सेराब हो रहा था। ख़ालिद(र०) के ज़हन में यही एक ईरादा था के मुसलीमा को क़त्ल किया जाए, वरना लड़ाई ख़त्म नहीं होगी लेकिन मुसलीमा कहीं नज़र नहीं आ रहा था।

मुसलीमा कज़्ज़ाब ख़ालिद(र०) को तो नज़र नहीं आ रहा था, एक और इन्सान था जिस की अक़ाबी निगाहों ने मुसलीमा को देख लिया था। वो हबशी गुलाम वहशी बिन हर्ब थे। बरछी निशाने पर फैंकने में वहशी का मुक़ाबला करने वाला कोई न था। उसने एक बार बरछी का कमाल सब को दिखाया था। एक रक़्क़ासा के सर पर एक कढ़ा जो कांच के औसत साईज़ का था, उसके बालों के साथ इस तरह बांध दिया गया था के कढ़ा उसके सर पर खड़ा था। वो नाचने लगी और वहशी बरछी ले कर चन्द क़दम दूर खड़ा हो गया।

उसने बरछी हाथ पर उठा कर तोली। रक़ासा रक़्स कर रही थी। जूं ही रक़ासा मोज़ूं ज़ाविये पर आई, वहशी ने ताक कर बरछी फैंकी। बरछी रक़ासा के सर पर खड़े कड़े में से गुज़र गई।

जंगे ओहद में वहशी बिन हर्ब ने रसूले करीम(स०) के चचा हम्ज़ा(र०) बिन अब्दुलमुत्तलिब को इसी तरह बरछी फैंक कर शहीद किया और अबु सुफयान की बीवी हुन्द से इनाम वसूल किया था। उस वक़्त वहशी मुसलमान नही हुआ था। फतह-ए-मक्का के बाद उसने इस्लाम कुबूल कर लिया था।

अब मुसलीमा कज़्ज़ाब के खिलाफ जंग में वहशी मुसलमानों के लश्कर में था। बाग़ के खूंरेज़ मआरके में उसने मुसलीमा को देख लिया। उसने ख़ालिद(र०) की ज़बान से सुन लिया था के मुसलीमा को ख़त्म किए बग़ैर लड़ाई ख़त्म नही होगी। वहशी मुसलीमा की तलाश में दुश्मन की तलवारों और बरछियों से और अपने साथियों के तीरों से बचता लाशों और तड़पते हुए ज़ख्मियों से ठोकरें खाता सारे बाग़ में घूम गया और उसे मुसलीमा नज़र आ गया। मुसलीमा अपने मुहाफिज़ों के नर्ग़े में था जो इस क़द्र जांबाज़ी का मुज़ाहेरा कर रहे थे के किसी मुसलमान को क़रीब नहीं आने देते थे।

वहशी को क़रीब जाने की ज़रूरत नहीं थी। मुसलमान मुसलीमा के मुहाफिज़ों के साथ लड़ रहे थे और इन के इर्द गिर्द वहशी घूम रहा था के मुसलीमा पर बरछी फैंकने का मोज़ूं मौक़ा और सही ज़ाविया मिला जाए। उसे एक मौक़ा मिल गया लेकिन उस के रास्ते में एक ख़ातून उम्मे अम्मारा आ गईं। वो भी मुसलीमा तक पहुंचने की सओ कर रही थीं। वो अपने बेटे के साथ थीं। वो मुसलीमा के मुहाफिज़ों का हिसार तोड़ने के लिए आगे बढ़ें तो एक मुर्तिद की तलवार ने इन्हें रोक लिया। उम्मे अम्मारा(र०) ने अपनी तलवार से उसे गिराने की बहुत कोशिश की लेकिन मुर्तिद के एक वार ने उम्मे अम्मारा(र०) का एक हाथ साफ काट दिया। उनके बेटे ने तलवार के एक ही वार से इस मुर्तिद को मार गिराया और ये मुजाहिद अपनी मां को साथ ले गया।

वहशी को मौक़ा और ज़विया मिल गया। उसने बरछी को हाथ में तोला और ताक कर पूरी ताक़त से बरछी मुसलीमा पर फैंकी। बरछी मुसलीमा के पेट में उतर गई। उसके हाथों ने बरछी को पकड़ लिया लेकिन बरछी अपना काम कर चुकी थी। मुसलीमा के हाथों में बरछी को पेट से निकालने की सकत नहीं रही थी। मुसलीमा गिरा। उसे मरना ही था लेकिन अबु दुजाना(र०) ने उसे तड़प तड़प कर मरने की अज़ीयत से इस तरह बचा लिया के उसका सर तलवार के एक ज़ोरदार वार से उसके

धड़ से अलग कर दिया।

अबु दुजाना(र०) मुसलीमा की सर कटी लाश अभी देख ही रहे थे के मुसलीमा के एक मुहाफिज़ ने पीछे से इतना सख्त वार किया के अबु दुजाना(र०) गिरे फिर उठ न सके और शहीद हो गए।

"बनू हनीफा!"-एक मुर्तद गला फाड़ कर चिल्लाया-"हमारे नबी को एक सियाह फाम हबशी ने मार डाला है।" मशहूर मोअररि़ख़ इब्ने हशाम ने लिखा है के बाग़ के अन्दर मआरके की खूंरेज़ी में आवाज़ें सुनाई देने लगीं-"नबी मारा गया..... मुसलीमा क़त्ल हो गया है।"

❁

मुसलीमा कज़्ज़ाब के क़त्ल का सहरा बिला शक व शुबह वहशी बिन हर्ब के सर है। वहशी की ज़िन्दगी अजीब गुज़री है। बताया जा चुका है के उसने बिल्कुल इसी तरह जिस तरह उसने मुसलीमा को बरछी फैंक कर क़त्ल किया था, हमज़ा(र०) को जंगे ओहद में शहीद किया था। जब मुसलमानों ने मक्का फतह कर लिया तो रसूल अल्लाह ने मक्का के चन्द लोगों को जंगी मुजरिम क़रार दिया था। इन में वहशी का नाम भी था। उसे किसी तरह पता चल गया था के उसे मुसलमान ज़िन्दा नहीं रहने देंगे। वो मक्का से निकल गया और ताईफ में क़बीला सक़ीफ के हां जा पनाह ली थी। क़बीला सक़ीफ को मुसलमानों ने जिस तरह शिकस्त दी थी, वो बयान हो चुका है। इस क़बीले ने इस्लाम कुबूल किया तो वहशी ने भी इस्लाम कुबूल कर लिया और बैत के लिए और अपनी जान बख्शी के लिए रसूले करीम(स०) के हुजूर में गया। आप(स०) ने उसे कई बरस पहले देखा था। शायद हुज़ूर(र०) उसे अच्छी तरह पहचान न सके।

"क्या तुम वो वहशी हो?"-रसूले अकरम(र०) ने उस से पूछा।

"वही वहशी हूं"-वहशी ने जवाब दिया-" और अब आप(स०) को अल्लाह का रसूल मानता हूं।"

"ओ वहशी!"-हुज़ूर(स०) ने पूछा-" बता तूने हमज़ा(र०) को किस तरह क़त्ल किया था?"

मोअररि़ख़ लिखते हैं के वहशी ने ऐसे लबो व लहजे में सारा वाक़ेया सुनाया जैसे वो सुनने वालों पर अपनी बहादुरी और असकरी महारत का रौब गांठ रहा हो। रसूले करीम(स०) ने इस की जां बख्शी कर दी लेकिन (इब्ने हशाम के मुताबिक़) आप(स०) ने उसे कहा के वो आप(स०) के सामने न आया करे। हमज़ा(र०) रसूल अल्लाह(स०) के सिर्फ चचा ही नहीं थे बल्कि उम्मते मोहम्मदीया(स०) में उन का

मुक़ाम बहुत बुलंद था और उस वक़्त के इस्लामी मआशरे में इन्हे खुसूसी हैसियत हासिल थी। ये रसूले करीम(स०) की अज़मत थी के आप(स०) ने हमज़ा(र०) जैसी शख़्शिसीयत का क़त्ल एक सियाह फाम गुलाम को बख्श दिया था लेकिन आप(स०) के दिल में क़ल्ख़ मौजूद रहा।

आंहुज़ूर(स०) ने वहशी बिन हर्ब के लिए जिस ना पसंदीदगी का इज़हार फरमाया था वैसी ही नापसंदीदगी का इज़हार उन्होंने हुन्द के लिए भी किया था जिसकी ईमा पर वहशी ने हज़रत हमज़ा(र०) को शहीद किया था। इस के बाद सय्यदुलशोहदा की लाश की जिस तरह बे हुर्मती की गई उसका बयान पहले हो चुका है। आंहुज़ूर(स०) ने इन दोनो से इस लिए इज़हार-ए-पसंदीदगी नहीं किया के उन्होंने आप(स०) के चचा को शहीद किया था बल्कि इस लिए कि उन्होंने एक जलीलुल क़द्र सहाबी की बेहुमर्ती की थी। वर्ना ज़ाती दुश्मनी दिल में रखना आप की शान के शायां नहीं था। आप(स०) ने हुन्द और वहशी से कहा था के जब तुम मेरी नज़रों के सामने आते हो तो मुझे हमज़ा(र०) की लाश याद आजाती है। बहर हाल आप(स०) ने वहशी और हुन्द को माफ फरमा दिया था।

वहशी बिन हर्ब रसूले करीम का गुरवीदा हो चुका था गर हुज़ूर अकरम(स०) ने उसे अच्छा नहीं समझा था जिस का वहशी को बहुत दुख था। वो मक्का से चला गया और उसने दो साल ताईफ के इलाक़े में कभी यहां कभी वहां गुज़ारे। उस पर खामोशी तारी रहती और वो सोचों में गुम रहता था। उसने इस्लाम को दिल से कुबूल कर लिया था। वो सच्चा मुसलमान रहा।

दो साल बाद अपने बैचेन ज़मीर को मुतमईन करने के लिए वो इस्लामी लश्कर में शामिल हो गया और उस ने ख़ालिद(र०) के दस्तों में रहना पसंद किया। यमामा की जंग में उसे पता चल गया था के ख़ालिद(र०) मुसलीमा को हलाक करने की कोशिश में है। ये फर्ज़ उस ने अपने ज़िम्मे ले लिया और फर्ज़ पूरा कर दिया।

इस के बाद वहशी ख़ालिद(र०) के दस्तों में रहा और कई लड़ाईयों में उसने बहादूरी के जौहर दिखाए। शाम की फतह के बाद वो इस्लामी लश्कर से अलग हो कर हमस में गोशा नशीन हो गया। मोअररिख़ों ने लिखा है के ऐसे मालूम होता था जैसे हमज़ा(र०) का क़त्ल बड़ा गुनाह बन कर उसके ज़मीर पर सवार हो गया हो। उसने शराब नोशी शुरू कर दी जो अय्याशी नहीं थी बल्कि अपने आप को फरामोश कर के अलग पड़ा रहता था। हज़रत उमर(र०) ने अपने दौरे ख़िलाफत में उसे शराब नोशी के जुर्म में अस्सी कोड़ों की सज़ा दी थी जिस का इस पर कुछ असर नहीं हुआ था। वो शराब पीता रहा।

ज़िन्दगी के आख़िरी दिनों में उसे ऐसी शोहरत मिली के लोग उसे अक़ीदत से मिलते थे मगर वो होश में कम ही होता था। जब कभी होश में होता तो लोगों को हमज़ा(र०) और मुसलीमा के क़त्ल के वाक़ेआत सुनाता था। लोग इस से यही वाक़ेआत सुनने के लिए जाते थे। उसने कई बार अपनी बरछी हाथ में ले कर कहा-"मै जब मुसलमान नही था तो इस बरछी से मै ने एक बड़े ही अच्छे आदमी को क़त्ल किया था और मै मुसलमान हुआ तो इस बरछी से एक बहुत ही बुरे आदमी को क़त्ल किया।"

❁

उम्मे अम्मारा(र०) एक अज़ीम ख़ातून थीं। जंगे ओहद में वो उन मुसलमान औरतों के साथ थीं जो ज़ख्मियों की मरहम पट्टी और देखभाल के लिए अपने लश्कर के साथ गईं थीं। इस लड़ाई में ऐसी सूरत पैदा हो गई के मैदान पर कुरैश छा गए। उन्होने रसूल करीम(स०) पर हल्ले बोलने शुरू कर दिए। सहाबा इकराम ने रसूल अल्लाह(स०) के गिर्द घेरा डाल रखा था मगर दुश्मन के हल्ले इतने शदीद थे के आप(स०) के मुहाफिज़ों का घेरा टूट गया। कुरैश का एक आदमी इब्ने कुमा रसूले करीम(स०) तक पहुंच गया।

रसूले करीम के दांये मसअब(र०) बिन उमेर थे और उस वक़्त उम्मे अम्मारा(र०) भी क़रीब ही थीं। उन्होंने जब रसूले करीम(र०) को ख़तरे में देखा तो ज़ख्मियों को पानी पिलाने और उठाने का काम छोड़ कर रसूले अकरम(स०) की तरफ दौड़ी। उन्होने एक लाश या शदीद ज़ख्मी की तलवार ले ली।

इब्ने कुमा हुज़ूर(स०) पर हमला करने की बजाए आप(स०) के मुहाफिज़ की तरफ गया। मसअब(र०) ने उसके साथ मुक़ाबला किया। उम्मे अम्मारा(र०) ने इब्ने कुमा पर तलवार का वार किया जो उसके कंधे पर पड़ा मगर इब्ने कुमा ने ज़िरा वख्तर पहन रखी थी इस लिए तलवार इस का कुछ न बिगाड़ सकी। इब्ने कुमा ने घूम कर उम्मे अम्मारा पर जवाबी वार किया जो इस ख़ातून के कंधे पर पड़ा और इतना गहरा ज़ख्म आया के वो गिर पड़ी। इब्ने कुमा ने दूसरा वार न किया क्योंके वो रसूले अकरम(स०) पर हमला करना चाहता था।

अब जंगे यमामा में उम्मे अम्मारा(र०) अपने बेटे के साथ आई थीं। यहां उनकी दिलेरी का ये आलम के मुसलीमा को क़त्ल करने का ख़तरा मोल लिया मगर इन का एक हाथ कट गया।

❁

वो दिसम्बर 632ई० के आख़िरी दिनों में से एक दिन था। हदीक़तुररहमान सर

सब्ज़ और हरा भरा बाग़ हुआ करता था जो लोगों को फल दिया करता था। वहां थके मांदे मुसाफिर आ कर सुस्ताया करते थे। वहां फूलों की महक थी मगर अब वो हदीक़तुलमौत बन चुका था। उसका हुस्न खून में डूब गया था। उसकी रानाईयां लाशों के नीचे दब गई थी। जहां परिंदे चहचहाते थे वहां ज़ख्मियों की चीख़ व पुकार थी। ज़ख्मी घोड़े बे लगाम भाग दौड़ रहे थे। उनके टाप यूं सुनाई दे रहे थे जैसे मौत बे हंगम क़हक़हे लगा रही हो।

जब शौर उठा तो मुसलीमा मारा गया है तो मुर्तदीन निकल भागने का रास्ता देखने लगे। वो तो पहले ही भागे हुए इस बाग़ में आए थे। इन पर पहले ही मुसलमान दहशत बन कर तारी हो चुके थे। बाग़ में वो हज़ारों की तादाद में मारे गए थे। वो ऐसी जंग लड़ रहे थे जो पहले ही हार चुके थे। अब इन के कानों में ये सदायें पड़ीं के उनका नबी मारा गया है तो उनकी रही सही सकत भी ख़त्म हो गई। उनमें जो अभी तक लड़ रहे थे, वो बाग़ से निकल भागने की कोशिश में थे। शिकस्त इन के ज़हनों पर मुसल्लत हो चुकी थी।

वहां से कुछ दूर मुसलमानों की लूटी हुई और तबाह हाल खेमा गाह में सिर्फ एक खेमा सही सलामत खड़ा था। ये ख़ालिद(र०) का खेमा था। बनू हनीफा बाक़ी तमाम खेमा फाड़ कर पुर्ज़े कर गए थे। वो ख़ालिद(र०) के खेमे में भी गए थे लेकिन वहां उनका अपना सरदार मुजाआ बिन मरारा ज़ंजीरों मे जकड़ा बैठा था। वो लैला को क़त्ल करना या अपने साथ ले जाना चाहते थे लेकिन मुजाआ ने इन्हें ये कह कर रोक दिया था के पहले मर्दो की तरफ जाओ, अभी औरतों को पकड़ने का वक़्त नहीं। वो सब अपने सरदार के हुक्म से चले गए थे। इस तरह ख़ालिद(र०) का खेमा महफूज़ रहा था।

ख़ालिद(र०) की बीवी लैला खेमे से बाहर एक ऊंट पर बैठी थी। उसे कहीं जाना नहीं था। वो ऊंची हो कर मैदाने जंग को देख रही थी। मैदान ख़ाली हो चुका था। उसे बाग़ की दीवार और दरख्तों के बालाई हिस्से नज़र आ रहे थे लेकिन ये नज़र नहीं आ रहा था के अन्दर क्या हो रहा है। वो ऊंट से कूद आई और खेमे में चली गई।

"इब्ने मरारा!"–लैला ने मुजाआ से कहा–"तुम्हारा नबी मैदान ख़ाली कर गया है। खुदा की क़सम, बनू हनीफा भाग गए हैं।"

"मैं ने कभी नहीं सुना के तेराह हज़ार ने चालीस हज़ार को शिकस्त दी है।"–मुजाआ ने कहा–"मैदान छोड़ जाना मुसलीमा की चाल हो सकती है पस्पाई नहीं।"

"सब बाग़ के अन्दर हैं"–लैला ने कहा।

"अगर सब बाग़ में है तो वहां से ज़िन्दा सिर्फ बनू हनीफा निकलेंगे" -मुजाआ बिन मरारा ने कहा- "अगर मुसलमान बाग़ में मेरे क़बीले के पीछे चले गए हैं तो समझ लो इन्हें मौत बाग़ में ले गई है। बनू हनीफा ना क़ाबिले तसख़ीर है।"

"आज फैसला हो जाएगा" -लैला ने कहा- "ठहरो मुझे घोड़े की टाप सुनाई दे रहे हैं मेरे ख़ाविंद का क़ासिद होगा" -वो ख़ेमा से निकल कर खड़ी हो गई और बोली- "वो फतह की खबर लाया होगा....वो आ रहा है।"

❁

घोड़ा जो सरपट दौड़ता आ रहा था, लैला के क़रीब आ रूका और सवार घोड़े से कूद आया-वो ख़ालिद(र०) थे लैला इन्हें अकेला देख कर घबराई सालार के अकेले आने का मतलब यही हो सकता था के उसकी सिपह तित्तर बित्तर हो गई है।

"मैदाने जंग की क्या ख़बर है?" -लैला ने पूछा- "आप अकले क्यों आए है?"

"खुदा की क़सम मैंने बनू हनीफा को काट दिया है।" -ख़ालिद(र०) ने जोशीली आवाज़ में कहा- "मुसलीमा कज़्ज़ब मारा गया है....और वो क़ैदी कहां है?"

लैला ने दोनो हाथ उठा कर आसमान की तरफ देखा और सुकून की आह भर कर वोली- "मुजाआ कहता है के बनू हनीफा ना क़ाबिले तसख़ीर है।

"मै पूछता हूं वो कहां है?" -ख़ालिद(र०) ने हांपती हुई आवाज़ में पूछा- "क्या वो उसे छुड़ा कर ले गए हैं?"

"मैं यहीं हूं वलीद के बेटे!" -ख़ेमे के अंन्दर से मुजाआ की आवाज़ आई- "मैं तेरी इस वात को सच नहीं मानूंगा के मुसलीमा मारा गया है।"

"मेरे साथ चल मुजाआ!" -ख़ालिद(र०) ने ख़ेमे के अन्दर जा कर कहा- "हो सकता है तेरी वात सच हो। में मुसलीमा को नहीं पहचानता। तेरा क़बीला ये शोर मचाता भाग गया है के मुसलीमा मारा गया है। मेरे साथ आ और लाशों में उसकी लाश देख कर वता के ये है उसकी लाश।"

"फिर क्या होगा?" -मुजाआ ने पूछा- "मुझे आज़ाद कर दोगे?"

"खुदा की क़सम!" -ख़ालिद(र०) ने कहा- "मैं इस क़बीले के एक सरदार को आज़ाद नहीं करूंगा जो मेरे दीन का दुश्मन है। रिसालत(स०) में शिरकत का दावा करने वाले और इस दावे को मानने वालों को मैं कैसे वख्श दूं? अल्लाह के सिवा तुझे कोई नहीं वख्श सकता।"

"ओ वलीद के बेटे!" -मुजाआ बिन मरारा ने कहा- "मैं ने उसे कब नबी माना

था। वो चर्ब ज़बानी और शौब्दे बाज़ियों से नबी बन गया था और तूने देख लिया है के कितना बड़ा लश्कर उसका मुरीद हो गया था। अगर मैं उसे नबी न मानता तो वो मेरे सारे ख़ानदान को ज़िन्दा जला देता, और ये वजह भी थी के मैं अपने क़बीले से अपने आप को काट नहीं सकता था। अगर तू मेरे क़त्ल का हुक्म देगा तो ये एक बेगुनाह का क़त्ल होगा।"

"इस ने मुझे अपने उन लोगों से बचाया है जो हमारी ख़ेमा-गाह को लूटने और तबाह व बर्बाद करने आए थे"-लैला ने ख़ालिद(र०) से कहा-"इस ने इन्हें कहा था के औरतों के पीछे मत पड़ो, पहले आदमियों के पीछे जाओ....वो चले गए। इस ने इन्हें ये भी न कहा के वो इस की बेड़ियां खोल दें।"

"तूने इस औरत पर रहम क्यों किया है मुजाआ"-ख़ालिद(र०) ने पूछा।

"क्योंके इस ने मुझे क़ैद में भी वही इज़्ज़त दी है जो मुझे अपने क़बीले में मिला करती है"-मुजाआ ने कहा-"मैं ने इसे इस सुलूक का सिला दिया है जो इस ने मेरे साथ किया.....क्या मैं ऐसा नहीं कर सकता था के अपने आदमियों से कहता के मेरी बेड़ियां काट दें, फिर मैं तेरी इतनी हसीन बीवी को अपनी लौंडी बना लेता?"

"बेशक तू इज़्ज़त के लायक़ है मुजाआ!"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"मैं तेरी बेड़ियां अपने हाथों काटता हूं, फिर मेरे साथ चलना और बताना के मुसलीमा की लाश कौन सी है।"

❁

मुजाआ बिन मरारा ख़ालिद(र०) के साथ ख़ेमे से निकला तो इस के पांव में बेड़ियां नहीं थीं। बाहर ख़ालिद(र०) के दो मुहाफिज़ खड़े थे। ख़ालिद(र०) अकेले इधर आए थे। इन के मुहाफिज़ दस्ते को पता चला के सिपह सालार किसी और तरफ निकल गए हैं। तो दो मुहाफिज़ इन की तलाश में इधर उधर घूम फिर कर उनके ख़ेमे तक जा पहुंचे। वो इन्हें तन्हा नहीं छोड़ सकते थे।

मुजाआ ने अपनी आंखों से मैदाने जंग की हालत देखी। इसे अपने क़बीले की लाशों के सिवा कुछ नज़र नहीं आता था।

"मुझे यक़ीन नहीं आ रहा"-मुजाआ ने कहा-"देख कर भी यक़ीन नहीं आ रहा.....क्या इतने थोड़े मुसलमान इतने बड़े लश्कर को शिकस्त दे सकते है?"

"ये फतह इन्सानों ने नहीं पाई"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"ये सच्चे अक़ीदे और अल्लाह के सच्चे रसूल(स०) की फतह है। बनू हनीफा बातिल अक़ीदे के लिए मैदान में उतरे थे। हमारी तलवारों ने इस अक़ीदे को काट दिया और इतना बड़ा लश्कर मैदान छोड़ कर भाग गया।"

वो लाशों और तड़पते ज़ख्मियों में से गुज़रते बाग़ तक चले गए। अन्दर गए तो वहां लाशों पर लाशें पड़ी थी। मुसलमान लाशों के हथियार इक्ळे कर रहे थे। बनू हनीफा में से जो ज़िन्दा थे, वो इधर उधर भाग रहे थे।

ख़ालिद(र०) ने वहशी बिन हर्ब को बुलाया और इस से पूछा के उस शख्स की लाश कहां है जिसे उसने मुसलीमा समझ कर हलाक किया है। वहशी ख़ालिद(र०) को वहां ले गया जहां मुसलीमा की लाश पड़ी थी। उसने लाश की तरफ इशारा किया।

"नहीं"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"ये ठिंगना और बदसूरत आदमी मुसलीमा नही हो सकता। इस के चेहरे पर कराहियत है।"

"यही है"-मुजाआ ने कहा-"ये मुसलीमा की लाश है।"

"ये उस शख्स की लाश है जिस ने हज़ारों लोगों को गुमराह कर दिया था।"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"ये शख्स एक फितना था।"

"इब्ने वलीद!"-मुजाआ ने ख़ालिद(र०) से कहा-"फतह पर खुश न हो। तेरे लिए असल मुक़ाबला तो अभी बाक़ी है।"

"किस के साथ?"

"बनू हनीफा के साथ"-मुजाआ ने जवाब दिया-"ये तो वो लश्कर था जो मैदान में आ कर लड़ा था। ये तो छोटा सा एक हिस्सा था। इस से भी बड़ा लश्कर यमामा में क़िले के अन्दर तैयार खड़ा है। अपने जानी नुक़सान को देख और सोच के तेरी ये सिपाह जो वहुत कम हो गई है।, इतने बड़े ताज़ा दम लश्कर का मुक़ाबला कर सकेगी? तेरे सिपाही थक कर चूर हो चुके है।"

ख़ालिद(र०) ने लाशों से अटे हुए बाग़ में निगाह दौड़ाई। उनका लश्कर वाक़ेई लड़ने के क़ाविल नहीं रहा था। जानी नुक़सान बर्दाश्त के क़ाबिल नहीं था। ज़ख्मियों की तादाद भी ज़्यादा थी। बाक़ी लश्कर की जिस्मानी कैफियत ये हो चुकी थी के अल्लाह के सिपाही इतने थक गए थे के जहां देखते वहां लेट जाते और सो जाते थे। वो अपने से तीन गुनाह ज़्यादा लश्कर से लड़े थे। इन्हें आराम की ज़रूरत थी।

"अगर तू मेरी एक तजवीज़ मान ले तो मैं क़िले में जा कर सुलेह की बात करता हूं"-मुजाआ ने कहा-"मेरा क़बीला मेरी बात मान लेगा।"

ख़ालिद(र०) बड़े क़ाबिल सिपह सालार थे। जंगी क़यादत में अपनी मिसाल आप थे। रसूल अल्लाह(स०) के सच्चे आशिक थे लेकिन खुद सर थे और ज़िन्दा दिल भी। वो दुश्मन को सिर्फ शिकस्त दे कर इसे फतह नहीं समझते थे बल्कि अपनी फतह को उस वक़्त मुकम्मिल समझते थे जब भागते हुए दुश्मन का तआक़ुब कर के

उसकी बस्तियों को अपने कब्ज़े में ले लेते थे। उनका उसूल था के दुश्मन को सांप समझो और उसका सर कुचल कर भी देखो के इस में ज़रा सी भी हरकत बाक़ी न रह जाए।

खुदसरी को ख़ालिद(र०) खूबी समझते थे। उनमें डिसीपलीन बड़ा ही सख्त था। इसके बावुजूद जहां सूरते हाल पेचीदा हो जाती, ख़ालिद(र०) अपने नायब सालारों से मशवरे और तजावीज़ लेते थे। अब मुजाआ बिन मरारा ने सुलह की बात की तो ख़ालिद(र०) ने ये जानते हुए के दुश्मन पस्पा हो चुका है, इस हक़ीक़त को भी सामने रखा के इन के मुजाहेदीन लड़ने के क़ाबिल नहीं रहे। ख़ालिद(र०) ने अपने नायब सालारों को बुलाया और इन्हें बताया के बनू हनीफा का एक सरदार मुजाआ बिन मरारा सुलह की पैशकश कर रहा है।

"असल फितना तो खत्म हो चुका है"- अब्दुल्लाह बिन उमर(र०) ने कहा-"मुसलीमा कज़्ज़ाब के मर जाने से बनू हनीफा का दम खम टूट चुका है। मैं तो ये बेहतर समझता हूं के यमामा का मुहासरा फौरन कर लिया जाए और दुश्मन को सुस्ताने की मोहलत न दी जाए।"

"सिर्फ यमामा नहीं"-अब्दुर्रहमान(र०) बिन अबी बकर ने कहा-"बनू हनीफा मैदान जंग से भाग कर ऐसी जगहों में छुप गए हैं जो छोटे छोटे क़िले हैं। पहले इन्हें पकड़ना ज़रूरी है। इस के बाद सुलह की बात हो सकती है।"

"सुलह की शरायत हमारी होंगी"-अब्दुर्रहमान बिन उमर(र०) ने कहा।

"क्या तुम्हारी नज़र अपने लश्कर की जिस्मानी हालत पर भी है?"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"अभी शहीदों और ज़ख्मियों की गिनती हो रही है। खुदा की क़सम, किसी जंग ने हमारा इतना खून नहीं पिया जितना ये जंग पी गई है और शायद हमें और भी खून देना पड़ेगा....क्या तुम बेहतर समझोगे के दुश्मन के जो आदमी इधर उधर छुप गए है। इन्हें पकड़ा जाए ताके ये यमामा के क़िले में जा कर हमारे मुक़ाबले में न आ सकें?"

"हम यक़ीनन इसी को बेहतर समझते हैं"-अब्दुर्रहमान(र०) ने कहा-"अगर हम इन्हें पकड़ लें तो सुलह की क्या ज़रूरत रह जाएगी?"

"मुजाआ ने बताया है के इन के जिस लश्कर से हम लड़ चुके हैं इस से कुछ ज़्यादा लश्कर यमामा के अन्दर मौजूद है"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"तुम मेरी इस राय को सही मानोगे के हमारी सिपाह लड़ने के क़ाबिल नहीं रही। तुम देख रहे हो के हमारे मुजाहेदीन थकन से बेहाल हो कर जहां बैठते हैं वहां सो जाते हैं। हमारे लिए कुमुक भी नहीं रही। अगर कुमुक मंगवाई भी जाए तो बहुत दिन लग जाएंगे। इतने दिनों में

दुश्मन मुनज़्ज़म हो जाएगा और उस पर हमारी जो दहशत ग़ालिब आई हुई है वो उतर जाएगी।"

"इब्ने वलीद!"-अब्दुल्लाह(र०) ने कहा-"तुम ने खुद भी तो कुछ सोचा होगा।"

"हां इब्ने उमर(र०)!"-ख़ालिद(र०) ने जवाब दिया-"मैं ने सोचा है के इधर उधर बिखरे हुए दुश्मन को पकड़ा जाए, फिर यमामा का मुहासरा कर लिया जाए और इस दौरान मुजाआ यमामा में जा कर अपने सरदारों के साथ सुलह की बात करे। सुलह के लिए हम ये शर्त ज़रूर रखेंगे के बनू हनीफा शिकस्त तस्लीम कर के हथियार डाल दें।"

"यही बेहतर है"-अर्ब्दुरहमान(र०) ने कहा।

"मैं भी इसी को बेहतर समझता हूं"-अब्दुल्लाह(र०) ने कहा।

"फिर ये काम अभी शुरू कर दो"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"दस्तों को मुख़तलिफ सिम्तो को रवाना कर दो और इन्हें कहो के बनू हनीफा का कोई आदमी, औरत या बच्चा कहीं नज़र आ जाए उसे पकड़ कर ले आओ।"

दस्तों को रवाना कर दिया गया और ख़ालिद(र०) ने मुजाआ को अपने पास बैठा लिया।

"इब्ने मरारा!"-ख़ालिद(र०) ने मुजाआ से कहा-"मुझे तुझ पर ऐतमाद है और मैं तुझे इस ऐतमाद के क़ाबिल समझता हूं। जा और अपने सरदारों से कह के हम सुलह के लिए तैयार हैं लेकिन शर्त ये होगी के तुम्हारे हथियार हमारे सामने ज़मीन पर पड़े हुए होंगे।"

"मैं इसी शर्त पर सुलह कराने की कोशिश करूंगा।"-मुजाआ ने कहा-"लेकिन इब्ने वलीद अपनी फौज की हालत देख ले।"

"मैं मज़ीद खून ख़राबे से हाथ रोकना चाहता हूं"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"क्या तू नहीं चाहेगा के तुम्हारे और हमारे जो आदमी ज़िन्दा हैं वे ज़िन्दा ही रहें? अपने क़बीले में जा कर देख। आज कितने हज़ार औरतें बेवा और कितने हज़ार बच्चे यतीम हो चुके हैं, और ये भी सोच के बनू हनीफा की कितनी ही औरतें हमारी लोंडियां बन जाएंगी।"

उस वक़्त की तहरीरों से पता चलता है के ख़ालिद(र०) की ये बात सुनकर मुजाआ के होंटों पर ऐसी मुस्कुराहट आ गई जिस में तमसख़ुर या तंज़ की झलक थी। वो उठ खड़ा हुआ।

"मैं जानता हूं"-मुजाआ ने कहा-"इब्ने वलीद! तेरी ख्वाहिश पूरी करने की मैं

पूरी कोशिश करूंगा।"

ख़ालिद(र०) अपने ख़ेमे की तरफ चल पड़े। वो लाशों और ज़ख्मियों के देखते चले जा रहे थे। लैला ने ख़ालिद(र०) को दूर से देखा और दौड़ी आई।

"क्या तुम ने उसे छोड़ दिया है?"-लैला ने ख़ालिद(र०) से पूछा।

ख़ालिद(र०) ने उसे बताया के उन्होंने मुजाआ को किस मक़सद के लिए छोड़ा है।

"इब्ने वलीद!"-लैला ने कहा-"इतने इन्सानों का खून किस की गरदन पर होगा? मैं ने इतनी ज़्यादा लाशें कभी नहीं देखी थीं।"

"जब तक इन्सानों में इन्सानों को अपनी ख्वाहिशात का गुलाम बनाने की ज़हनियत मौजूद रहेगी, इन्सानों का खून बहता रहेगा"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"मैं ने भी इतनी लाशें कभी नहीं देखी थी। आने वाला ज़माना इस से ज़्यादा लाशें देखेगा। हक़ और बातिल आपस में टकराते रहेंगे...मैं इसी लिए सुलह की कोशिश कर रहा हूं के और खून न बहे.....इससे आगे न जाना। तुम जो देखोगी इसे तुम बर्दाश्त नहीं कर सकोगी।"

आसमान से गिद्ध उतरने लगे थे और उन्होंने लाशों को नोचना शुरू कर दिया था। कुछ मुसलमान लाशों के दरमियान अपने ज़ख्मी साथियों को तलाश करते फिर रहे थे। इन्हे उठा उठा कर ख़ेमागाह की तरफ ला रहे थे। बाक़ी सिपेह बनू हनीफा के छुपे हुए आदमियों को पकड़ने के लिए चली गई थी।

❁

रात को ख़ालिद(र०) को इत्तेलाऐं मिलने लगी सिपाही के बनू हनीफा के आदमियों को ला रहे हैं। बाज़ के साथ औरतें और बच्चे भी थे। ख़ालिद(र०) ने हुक्म दिया के औरतों और बच्चों को सर्दी और भूक से बचाया जाए लेकिन ख़ेमा गाह लूट चुकी थी। खुराक की क़िल्लत थी। ख़ालिद(र०) ने कहा के खुद भूके रहो, क़ैदी औरतों और बच्चों के पेट भरो।

इस का हल ये निकाला गया के मुसलमान मुजाहेदीन लाशों से खजूरों वग़ैरा की थैलियां खोल कर ले आए। हर सिपाही अपने साथ खाने पीने का कुछ सामान रखता था। ये औरतों और बच्चों को दिया गया।

अलल सुबह मुजाआ यमामा से वापस आया और ख़ालिद(र०) के ख़ेमे में गया।

"क्या ख़बर लाए हो इब्ने मरारा?"-ख़ालिद(र०) ने पूछा।

"ख़बर बुरी नहीं"-मुजाआ ने जवाब दिया-"लेकिन तुम इसे अच्छा नहीं

समझोगे...बनू हनीफा तुम्हारी शर्त पर सुलह करने को तैयार नही। वो तुम्हारी गुलामी कुबूल नहीं करेंगे।"

"खुदा की क़सम, मै इन्हें अपना गुलाम नही बनाना चाहता"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"हम सब अल्लाह के रसूल के गुलाम है। में इन्हें इस सच्चे रसूल(स०) के अक़ीदे का गुलाम बनाऊंगा।"

"वो इस शर्त को भी नही मानेंगे"-मुजाआ ने कहा-"और ये भी देख के तेरे पास रह क्या गया है इब्ने वलीद! मै ने यमामा के अन्दर जा कर देखा है। एक लश्कर है जो ज़िरा पहने तेरी इस छोटी सी फौज को लहू लहान कर देने के लिए तैयार है। कभी ये हिमाक़त न कर बैठना के यमामा को आ के मुहासरे में ले ले। तू कुचला जाएगा इब्ने वलीद! जोश को छोड़ और होश की बात कर। अपनी शर्त को नर्म कर। मै ने बनू हनीफा को ठण्डा कर लिया है। उस लश्कर की आंखों में खून उतरा हुआ है।"

ख़ालिद(र०) गहरी सोच में खो गए। मुजाआ ने इन्हें कोई नई बात नही बताई थी। ये तो ख़ालिद(र०) देख ही चुके थे के उनके पास जो सिपाह रह गई है वो लड़ने के क़ाबिल नहीं रही। इस सिपाह को आराम की ज़रूरत थी लेकिन वो रात भर दुश्मन के छुपे हुए आदमियों को तलाश और गिरफ्तार करती रही थी। अब तो इन मुजाहेदीन के सर डोल रहे थे।

"इब्ने मरारा!"-ख़ालिद(र०) ने गहरी सोच से निकल कर कहा- "तुझे शायद मालूम न हो, अपने इन सरदारों से पूछ लेना जो इस जंग में शरीक थे के हमारे पास बनू हनीफा का कितना माल और साज़ो सामान है और कितने बाग़ और कितने क़ैदी हमारे कब्ज़े में है। वापस जा और अपने सरदारों से कह के मुसलमान आधा माले ग़नीमत आधे बाग़ और आधे क़ैदी वापस कर देंगे। इन्हें समझा के यमामा और इसकी आबादी को तबाही मे न डालें।"

इब्ने मरारा चला गया।। इस दौरान मज़ीद क़ैदी लाए गए।

मुजाआ शाम से कुछ पहले वापस आया और उसने बताया के बनू हनीफा का कोई सरदार इस शर्त को मानने के लिए तैयार नही। मुजाआ ने ये भी कहा के बनू हनीफा अपनी शिकस्त और अपने हज़ारों मक़तूलीन के खून का इन्तेक़ाम लेंगे।"

"मेरी बात कान खोल कर सुन इब्ने मरारा!"-ख़ालिद(र०) ने झुंझला कर कहा-"अगर बनू हनीफा ये समझते है के हम क़लील तादाद होने की वजह से डर जाएंगे तो इन्हें जा कर कह दे के मुसलमान कट मरेंगे तुम्हें इन्तेक़ाम की मोहलत नहीं देंगे।"

"गुस्से मे न आ वलीद के बेटे!"-मुजाआ ने मुस्कुरा कर कहा-"हमारा जो माले ग़नीमत, बाग़ और कै़दी तुम्हारे पास हैं उनका चौथाई हिस्सा अपने पास रख ले बाक़ी हमें दे दे और आ सुलह कर लें। सुलेह नामा तहरीर होगा।"

ख़ालिद(र०) एक बार फिर सोच में खो गए।

"मैं तुझे एक बार ख़बरदार करता हूं वलीद के बेटे!"-मुजाआ ने कहा-"ये मेरा कमाल है के मैं ने बनू हनीफा को सुलह पर राज़ी भी कर लिया है। मैंने उनकी लानत मलामत बर्दाश्त की है। उन्होंने मुझे ग़द्दार भी कहा है। वो कहते हैं के तुम मुसलमानों से ईनाम ले कर हमें उनका गुलाम बनाना चाहते हो। वो कहते हैं के हमारी तादाद अगर कम भी होती तो भी हम सुलह न करते। हमारे पास न साज़ो सामान की कमी है न खुराक की। इन चीज़ों की कमी है तो मुसलमानों को होगी। वो कहते हैं के इतनी सख्त सर्दी में मुसलमान कब तक मुहासरे में बैठे रहेंगे। रातों की सर्दी को वो खुले आसमान तले बर्दाश्त नहीं कर सकेंगे। वो ये भी जानते हैं के तेरी इस छोटी सी फौज के पास ख़ेमे भी नहीं रहे....सोच ले इब्ने वलीद! अच्छी तरह सोच ले। अगर तुझे शक है तो ज़रा आगे जा कर यमामा की दीवारों पर एक नज़र डाल और देख के एक दीवार तो कि़ले की है और इसके ऊपर एक दीवार इन्सानी जिस्मों की है।"

ख़ालिद(र०) बेशक़ अपनी कमज़ोरियों से आगाह थे लेकिन वो दुश्मन की हर शर्त मानने के तैयार नहीं हो सकते थे। वो अपने ख़ेमे से बाहर निकल गए। इनके नायब सालार खड़े थे। सालारों ने बेताबी से ख़ालिद(र०) से पूछा के सुलह की बात कहां तक पहुंची है।

"मेरे साथ आओ"-ख़ालिद(र०) ने उनसे कहा।

नायब सालार ख़ालिद(र०) के साथ चल पड़े। ख़ालिद(र०) इन्हें बताते गए के मुजाआ सुलह नामे की क्या शर्त लाया है। वो चलते गए और ऐसी जगह जा रूके जहां से यमामा शहर की दीवार नज़र आती थी। उन्होंने देखा के दीवार पर आदमी ही आदमी थे। मुजाआ ने ठीक कहा था के शहर की दीवार के ऊपर इन्सानी जिस्मों की दीवार खड़ी है। इस से साफ ज़ाहिर होता है के शहर में बहुत बड़ा लश्कर मौजूद है।

"मेरा ख्याल है के हम ने मुहासरा किया तो हम नुक़सान उठाएंगे"-ख़ालिद(र०) ने अपने नायब सालारों से कहा-"दीवार पर जो मख़लूक़ खड़ी है इस के तीर हमें दीवार के क़रीब नहीं जाने देंगे। हमारे पास मरवाने के लिए इतने ज़्यादा आदमी नहीं।"

"मैं तो सुलह की राय दूंगा"-एक नायब सालार ने कहा।

"जिस फितने को हम ख़त्म करना चाहते थे वो ख़त्म हो चुका है"--एक और

नायब सालार ने कहा-"अब हम सुलेह कर लें तो हम पर कौन उंगली उठा सकता है?"

ख़ालिद(र०) वापस अपने खेमे में आए और मुजाआ को बताया के वो सुलह के लिए तैयार है। उसी वक़्त सुलह नामा तहरीर हुआ जिस पर ख़ालिद(र०) ने ख़िलाफत की तरफ से और मुजाआ बिन मरारा ने बनू हनीफा की तरफ से दस्तखत किये। इस में एक शर्त ये थी के मुसलमान यमामा के किसी आदमी को जंगी मुजरिम क़रार दे कर क़त्ल नहीं करेंगे।

मुजाआ वापस चला गया। उसी रोज़ उस ने यमामा के दरवाज़े खोल दिये और ख़ालिद(र०) को शहर में मदूअ किया।

❁

ख़ालिद(र०) अपने सालारों और कमांडरों के साथ यमामा शहर के दरवाज़े तक पहुंचे। उन्होंने ऊपर देखा। दीवारों पर अब एक भी आदमी नही खड़ा था। बुर्ज भी खाली थे। ख़ालिद(र०) को तवक़्क़ो थी के क़िले के अन्दर इन्हें बनू हनीफा का वो लश्कर नज़र आएगा जिस के मुताल्लिक़ मुजाआ ने इन्हें बताया था के मुसलमानों को कुचल डालेगा मगर वहां किसी लश्कर का नाम व निशान न था। वहां औरतें थीं, बच्चे और बुढ़े थे। जवान आदमी एक भी नज़र नहीं आता था। औरतें अपने घरों के सामने खड़ी थीं बाज़ मुंडेरों पर बैठी थीं। इन में ज़्यादा तर औरतें रो रही थीं। इन के खाविंद, बाप, भाई या बेटे जंग में मारे गए थे।

"इब्ने मरारा!"-ख़ालिद(र०) ने मुजाआ से पूछा-"वो लश्कर कहां है?"

"देख नही रहे हो। इब्ने वलीद!"-मुजाआ ने दरवाज़ों के सामने और छतों पर खड़ी औरतों की तरफ इशारा कर के कहा-"ये है वो लश्कर जो शहर की दीवार पर तीर व कमान और बरछियां उठाए खड़ा था।"

"ये औरतें?"-ख़लिद(र०) ने हैरान सा हो के पूछा।

"हां वलीद के बेटे!"-मुजाआ ने कहा-"शहर में कोई लश्कर नही। यहां सिर्फ बुढ़े आदमी है जो लड़ने के क़ाबिल नहीं। औरतें है और बच्चे है।"

"क्या ये हमारे हमले रोक सकते थे?"-ख़ालिद(र०) ने पूछा-"क्या औरतें मुक़ाबले मे आई थीं?"

"नही इब्ने वलीद!"-मुजाआ ने कहा-"ये मेरी एक चाल थी। शहर से तमाम आदमी लड़ने के लिए चले गए है। शहर में कोई जवान आदमी नहीं रहा था। मैं अपने क़बीले को तबाही से बचाना चाहता था। मै ने तमाम औरतों बूढ़ों और कमसिन लड़कों को ज़िरा और सरों पर खुदें पहनाईं और इन के हाथों में तीर व कमान और

बरछियां दे कर दीवार पर खड़ा कर दिया। मैं ने खुद बाहर जा कर देखा। पता नहीं चलता था के ये औरतें, बूढ़े और कमसिन लड़के हैं। मैंने तुझे मौक़ा दिया के दीवार पर एक नज़र डाल ले ताके तू इस झांसे में आ जाए के यमामा में बहुत बड़ा लश्कर मौजूद है...और तू मेरे झांसे में आ गया।"

ख़ालिद(र०) खशमगी हुए। वो मुजाआ को इस धोके की सज़ा दे सकते थे लेकिन उस एहद नामें की खिलाफ वर्ज़ी इन्हें गवारा नहीं थी जिस पर वो दस्तख़त कर चुके थे।

"खुदा की क़सम!"-ख़ालिद(र०) ने मुजाआ से कहा-"तूने मुझे धोका दिया है।"

"मैं तुझे धोका दे सकता हूं"-मुजाआ ने कहा-"अपने क़बीले की औरतों और बच्चों से ग़द्दारी नही कर सकता। मैं इन्हें तेरी तलवारों से बचाना चाहता था। मैं ने इन्हें बचा लिया है।"

"तू खुश क़िसमत है के मैं मुसलमान हूं"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"इस्लाम मुहाएदा तोड़ने की इजाज़त नहीं देता। मैं सुलह नामे पर दस्तख़त कर चुका हूं, वरना मैं तुम्हारी इन तमाम औरतों को लोंडियां बना लेता।"

"मुझे मालूम था तू ऐसे नहीं करेगा"-मुजाआ ने कहा।

"लेकिन एक बात सुन ले इब्ने मरारा!"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"मैं ने मुहाएदा सिर्फ यमामा शहर के लिए किया है। इस में इर्द गिर्द के इलाक़े शामिल नहीं। मैं पाबंद हूं के यमामा के अन्दर किसी जंगी मुजरिम को क़त्ल न करूं। यमामा के बाहर में जिसे समझूंगा के इसे क़त्ल होना चाहिए, उस के क़त्ल से मैं गुरेज़ नहीं करूंगा।"

☸

अरतदाद का सब से बड़ा मरकज़ यमामा था जो ख़ालिद(र०) ने उखाड़ फैंका और झूटे नबी को हलाक कर के उसकी लाश की नुमाईश की गई। इस के पैरूकारों से कहा गया के मुसलीमा के पास मोअजज़ों की ताक़त होती तो तुम्हारे चालीस हज़ार से ज़्यादा लश्कर का ये हश्र तेरह हज़ार आदमियों के हाथों न होता।

"बनू हनीफा!"-मुसलमान यमामा की गलियों में ऐलान करते फिरते थे-"औरतें मत डरें। किसी को लौंडी नहीं बनाया जाएगा। शहर के अन्दर किसी मर्द, बच्चे या औरत पर हाथ नहीं उठाया जाएगा। मुसलीमा फरेब कार था। उसने तुम सब को धोका दे कर तुम्हारे घर उजाड़ दिए हैं"

यमामा पर ख़ौफ व हिरास और मौत की वीरानी तारी थी। औरतें शहर से बाहर निकलने से डरती थीं। इन्हें मुसलमानों से कोई डर और खदशा नहीं रहा था। वो

अपने आदमियों की लाशें देखने से डरती थी। वो शहर की दीवार पर जा कर बाहर का मंज़र देखती थी। इन्हें गिद्धों, गीदड़ों और भेड़ियों की ख़ौफनामक आवाज़ें सुनाई देती थी। ये सब लाशें खा रहे थे।

यमामा और गर्दोनवाह के लोगों ने इतनी क़त्ल व ग़ारत कभी देखी न सुनी थी। ये तो क़हर नाज़िल हुआ था। घर घर मातम हो रहा था। इस भयानक सूरते हाल में लोग इस ग़ैबी कुव्वत के आगे सिजदे करना चाहते थे जिस ने इन पर क़हर नाज़िल किया था। मुसलमानों की फौज में कुर्आन के हाफिज़ और क़ारी भी थे। उन्होंने लोगों को आयाते कुर्आनी सुना कर बताना शुरू कर दिया के इन्हें तबाह करने वाली ग़ैबी ताक़त क्या है।

मोअरिख़ लिखते हैं के बनू हनीफा के जो आदमी भाग गए थे, इन की तादाद कम व बेश बीस हज़ार थी। वो यूं ला पता हुए के इधर उधर छुप गए थे। मुसलमान इन्हें ढूंड कर ला रहे थे। वो भी ख़ौफज़दा थे। वो नादिम भी थे के उन्होंने एक झूटे नबी के हाथ पर बैत की जिस ने इन्हें कहा था के उसे खुदा ने ऐसी ताक़त दी है के फतह बनू हनीफा की ही होगी और मुसलमान तबाह हो जाऐंगे। इन्हें तबलीग़ की और इस्लाम के तफसीली तआरूफ की ज़रूरत नहीं थी। इन में बेशतर ने अज़ख़ुद इस्लाम कुबूल कर लिया।

मुजाआ बिन मरारा बनू हनीफा की सरदारी में मुसलीमा कज़्ज़ाब का जा नशीन था। उसने देखा उसका क़बीला धड़ा धड़ इस्लाम कुबूल करता जा रहा है तो इस से उसे ये इतमेनान हुआ के ख़ालिद(र०) के दिल में उसके खिलाफ जो ख़फगी थी वो निकल गई है।

बनू हनीफा के लोग ज़ौक दर ज़ौक ख़ालिद के पास बैत के लिए आ रहे थे। ख़ालिद(र०) ने इन में से चन्द एक सरकर्दा अफराद का एक वफद तैयार किया और इन्हें ख़लिफातुल मुस्लेमीन के हाथ पर बैत के लिए मदीना भेज दिया।

☸

ख़ालिद(र०) को ये जंग बहुत महंगी पड़ी थी। क़दीम तहरीरों और दीगर ज़राए से पता चलता है के ख़ालिद(र०) को इतने बड़े लश्कर पर फतह हासिल करने की तवक़्क़ो कम ही थी। उन्होंने ये अल्लाह के भरोसे और अपनी जंगी क़ाबलियत के बल बूते पर लड़ी थी। उनके आसाब थक कर चूर हो चुके थे।

इस जंग की खूंरेज़ी का अंदाज़ा ये है के बनू हनीफा के इक्कीस हज़ार आदमी मारे गए। ज़ख्मियों की तादाद अलग है। इस के मुक़ाबले में शहीद होने वाले मुसलमानों की तादाद एक हज़ार दो सौ थी। इन में तीन सौ शहीद कुर्आन के

हाफिज़ थे।

यहां ये अमर क़ाबिले ज़िक्र है के जब ख़लीफा अबुबकर(र०) को इत्तेला मिली के शहीदों में तीन सौ हाफिज़े कुर्आन थे तो उन्होंने ये सोच कर के जंगों में कुर्आन के तमाम हाफिज़ शहीद हो सकते है, हुक्म दिया के कुर्आन एक जगह तहरीर में जमा कर लिया जाए। चुनांचे पहली बार कुर्आन को इस शक्ल में मुरत्तिब किया गया जो आज हमारे सामने है।

जंग यमामा के बाद ख़ालिद(र०) की कैफियत ये थी के जिस्मानी और ज़हनी लिहाज़ से शल हो चुके थे। लैला इन के थके मांदे आसाब सहलाती थी। मोअररिख़ों ने लिखा है के किसी भी जंग में मुसलमानों का इतना जानी नुक़सान नहीं हुआ था। अब एक ही बार एक हज़ार दो सौ मुजाहेदीन शहीद हो गए तो बाक़ी मुजाहेदीन पर जैसे ग़म के पहाड़ आ पड़े हों। ख़ालिद(र०) दुख और ग़म को कुबूल करने वाले नहीं थे। अगर वो मरने वालों का मातम करने बैठ जाते या दिल पर ग़म तारी कर लेते तो सिपह सालारी न कर सकते। इन्हें आगे चल ईराक़ और शाम फतह करना था। इन्हें अरतदाद को कुचल कर इस्लाम का दूर दूर तक फैलाना था, इस लिए वो अपने आप को रंज व आलम से आज़ाद रखते थे।

"वलीद के बेटे!"–लैला ने ख़ालिद(र०) से कहा–"मैं तुम्हें इस अज़ीम फतह पर एक तोहफा देना चाहती हूं।"

"क्या अल्लाह की खुशनूदी काफी नहीं"–ख़ालिद(र०) ने कहा।

"वो तो तुम्हें मिल ही गई है"–लैला ने कहा–"तुम अल्लाह की तलवार हो। मैं इस दुनिया की बात रही हूं। तुम बहुत थक गए हो।"

"तोहफा क्या है?"–ख़ालिद(र०) ने पूछा।

"मुजाआ बिन मरारा की बेटी"–लैला ने कहा–"तुम ने उसे नहीं देखा। मैं उसके घर गई थी। बहुत खूबसूरत लड़की है। यमामा का हीरा है वो तुम्हें चाहती भी है। कहती है के ख़ालिद(र०) अज़ीम इन्सान है जिसने हम पर फतह पा कर भी ऐलान किया है के किसी औरत को लौंडी नहीं बनाया जाएगा, हालांके उसे यमामा की औरतों ने धोका दिया था।"

उस दौर में अरबों के हां सोकन का तसव्वुर नहीं था। ख़ालिद(र०) ने मुजाआ बिन मरारा से कहा के वो उसकी बेटी के साथ शादी करना चाहते हैं। मोअररिख़ों ने लिखा है के मुजाआ इतना हैरान हुआ जैसे उसने ग़लत सुना हो।

"क्या कहा तू ने वलीद के बेटे?"–मुजाआ ने पूछा।

"मैं तुम्हारी बेटी के साथ शादी करना चाहता हूं"–ख़ालिद(र०) ने अपनी बात

दोहराई।

"क्या ख़लीफा अबुबकर हम दोनों से ख़फा नही होंगे?"-मुजाआ ने कहा। (मुजाआ के सही अल्फाज़ ये थे-"क्या खलीफा हम दानों की कमर न तोड़ डालेंगे?")

ख़ालिद(र०) इसी पर इसरार करते रहे के वो मुजाआ की बेटी के साथ शादी करेंगे। आख़िर उन्होंने इस हसीन और जवान लड़की को अपने अक़्द में ले लिया। ये खबर मदीना पहुंची तो खलिफातुल मुस्लेमीन अबु अबुबकर(र०) ने ख़ालिद(र०) को ख़त लिखा:

"ओ वलीद के बेटे! तुम्हें क्या हो गया है? शादियां करते फिरते हो। तुम्हारे ख़ेमे के बाहर बारह सौ मुसलमानों का खून बह गया है। तुम ने शहीदों का खून भी खुश्क नही होने दिया।"

"ये उमर(र०) बिन खत्ताब की कारस्तानी है"-ख़ालिद(र०) ने ख़त पढ़ कर ज़ेरे लब कहा।

ये मामला सरज़निश के ख़त पर ही ख़त्म हो गया। ख़लीफा अबुबकर(र०) ने ख़ालिद(र०) को ये पैग़ाम भी भेजा था के वो यमामा के इलाक़े में रहें और अगले हुक्म का इन्तेज़ार करें। ख़ालिद(र०) मुजाआ की बेटी और लैला को साथ ले कर यमामा के क़रीब वादी विब्र में जा खेमाज़न हुए। दो माह बाद इन्हें अगला हुक्म मिला।

फरवरी 633ई० के पहले हफ्ते(ज़ीक़दा11 हिज्री के आख़िरी हफ्ते) के एक दिन ख़लीफा अबुबकर(र०) से मिलने एक शख़्स आया जिसने अपना नाम मिस्ना बिन हारिसा शैबानी बताया। ख़लीफा के लिए और अहले मदीना के लिए वो एक गैर अहम बल्कि गुमनाम आदमी था। अगर ऐसा शख़्स किसी बादशाह के दरबार में जाता तो उसे वहां से निकाल दिया जाता लेकिन अबु बकर(र०) किसी अक़लीम के बादशाह नही बल्कि शहंशाहे दो जहां के ख़लीफा थे जिन के दरवाज़े हर किसी के लिए खुले रहते थे।

ये शख़्स जब ख़लीफा अबुबक़र(र०) के पास आया, उस वक़्त उसके चेहरे पर थकन और शब बेदारी की गहरी परछाईयां थी। कपड़ों पर गर्द थी और वो कुदरती रवानी से बोल भी नहीं सकता था।

"क्या मुझे कोई बता सकता है ये अजनबी मेहमान कौन है?"-अमीरूल मोमेनीन अबु बकर(र०) ने पूछा।

"ये शख़्स जिस ने अपना नाम मिस्ना बिन हारिसा बताया है, ये मामूली आदमी नहीं"-क़ैस बिन आसिम मुनकरा ने जवाब दिया-"अमीरूल मोमेनीन इस के यहां आने में कोई फरैब नहीं। शौहरत और इज़्ज़त जो इस ने पाई है वो अल्लाह हर किसी को अता करे। हरमज़ जो ईराक़ में फारस का सालार है और जिस की फौज की धाक बैठी हुई है, मिस्ना बिन हारिसा का नाम सुन कर सोच में पड़ जाता है।"

"अमीरूल मोमेनीन!"--किसी और ने कहा--"आप का अजनबी मेहमान बहरीन के क़बीला बकर बिन वायल का मोअज़्ज़िज़ फर्द है। ये इस्लाम कुबूल करने वाले उन लोगों में से है जिन्होंने कुफ्र और अरतेदाद की आंधियों में इस्लाम की शमा रौशन रखी है और इस ने हमारे सालार आला बिन हज़रमी के साथ मिल कर ईराक़ की सरहद के इलाक़ों में मुर्तेदीन के खिलाफ लड़ाईयां लड़ी है।"

अमीरूल मोमेनीन अबु बकर(र०) का चेहरा चमक उठा। अब उन्होंने मिस्ना बिन हारिसा को बदली हुई निगाहों से देखा। उनके ज़हन में अरबी मुसलमानों के वो

क़बायल आ गए जो ईरानियों के महकूम थे। ये ईराक़ के इलाक़े में अबाद थे। ये थे बनू लख्म, तग़लब, अयाद, नम्बरा बनू शैबान। एक रिवायत के मुताबिक़ ये वो अरबी बाशिंदे थे जिन्हें पहली जंगों में ईरानी जंगी क़ैदी बना कर ले गए और इन्हें दजला और फरात के डेल्टा के दलदली इलाक़े में आबाद कर दिया था।

इन क़बायल ने ईरानियों का गुलाम होते हुए भी अपने अक़ीदों को अपने वतन के साथ वाबस्ता रखा। अरब में इस्लाम को फरोग़ मिला तो उन्होंने भी इस्लाम को कुबूल कर लिया। ईराक़ से सज्जाह जैसे चन्द अफराद ने नबुव्वत के दावे किये तो इन महकूम अरबों ने इस अरतेदाद के खिलाफ मुहाज़ बना लिया।

इधर मुसलमान एक ऐसी जंगी ताक़त बन चुके थे जिन के सामने मुर्तेदीन और कुफ्फार के मुत्तेहदा लश्कर भी न जम सके। मैदाने जंग से हट कर मुसलमान जो अक़ीदा पेश करते थे वो दिलों में उतर जाता था। इस तरह मुसलमान असकरी और नज़रयाती लिहाज़ से छाते चले जा रहे थे लेकिन अभी वो आतिश परस्त ईरानियों के ख़िलाफ टक्कर लेने के क़ाबिल नही हुए थे। ईरान उस वक़्त की बड़ी ताक़तवर बादशाही थी जिस के तूल व अर्ज़ का हिसाब न था। उस बादशाही की फौज तादाद और हथियारों के लिहाज़ से बहुत ताक़तवर थी। सिर्फ रोमी थे जिन्होंने इन से जंगे लड़ी और इन्हें कमज़ोर कर दिया था।

इस के बावजूद खलीफा अबु बकर(र०) ईरान की बादशाही में रसूल अल्लाह(स०) का पैग़ाम पहुंचाने का तहिय्या किए हुए थे। ईरानी न सिर्फ ये के इस्लाम को कुबूल करने पर तैयार न थे बल्कि वो इस्लाम का मज़ाक उड़ाते थे। अगर मुसलमानों का कोई ऐल्ची उनके किसी इलाक़े के अमीर के दरबार में चला जाता तो वो उस की बे इज्ज़ती करते और बाज़ को क़ैद में डाल दिया करते थे।

हुकूमतों ओर हुकमरानों के अंदाज़ और ख्यालात अपने ही होते हैं। उनके सोचने के अंदाज़ भी मसलेहत और हालात के ताबे होते हैं लेकिन अवाम की सोचें इन के जज़्बों के ज़ेरे असर होती हैं और मुल्क व मिल्लत की ख़ातिर अवाम आग उगलते पहाड़ों के ख़िलाफ भी सीना सिपर हो जाते हैं।

❁

उस दौर में ईराक़ ईरान की बादशाही का एक सूबा था। उसका अमीर या हाकिम हरमज़ था जो उस दौर में माना हुआ जंगजू और निडर जंगी क़ायद था। ज़ालिम और बदतीनत इतना के उसके इलाक़े के लोग किसी के खिलाफ बात करते तो कहते थे-"वो तो हरमज़ से बढ़ कर कमीना और फितरती है।"

उस के जुल्म व सितम का ज़्यादा तर शिकार मुसलमान थे जो दजला और

फरात के संगम के इलाके में रहते थे। इन के खिलाफ हरमज़ को यही एक दुश्मनी थी के वो इसलाम के पैरूकार हैं। किसी ईरानी के हाथों किसी मुसलमान का क़त्ल हो जाना और किसी मुसलमान औरत का अग़वा कोई जुर्म नही था। ईसाईयों की तरह ईरानी मुसलमानों को तकलीफ पहुंचा कर, किसी बहाने उनके घरों को लूट कर और जला कर खुशी महसूस करते थे। मुसलमान खौफ व हिरास में ज़िन्दगी गुज़ार रहे थे।

मुसलमान जिस इलाके में आबाद थे, उस की ज़मीन सोना उगलती थी। अनाज और फलों की पैदावार के लिए ये इलाका बड़ा ही ज़रखैज़ था। ये इलाक़ा कम व बेश तीन सौ मील लम्बा था, ज़रखैज़ी और शादावी के अलावा कुदरती मनाज़िर की वजह से हसीन खित्ता था। हाकिम ऐश व इशरत के लिए इसी इलाके में आते और कुछ दिन गुज़ार जाते थे। इस ज़रखेज़ और शादाब इलाके में मुसलमानों को आबाद करने का मक़सद ये नहीं था के वो खेती बाड़ी करें और खुशहाल रहें, बल्कि इन्हें यहां मज़ारों की हैसियत से रखा गया था। वो ज़मीन का सीना चीर कर शबाना रोज़ मेहनत और मुशक्कत से अनाज और फल उगाते मगर इस में से इन्हें इतना ही हिस्सा मिलता जो उन्हें ज़िन्दा रखने के लिए काफी होता था। ज़मीन की उगली हुई तमाम दौलत हाकिमों के घरों में और ईरानी फौज के पास चली जाती थी। मुसलमान मज़ारों के लिए गुर्बत और ईरानियों की नफरत रह जाती थी।

मुसलमान अपनी जवान बेटियों को घरो में छुपा कर रखते थे। किसी ईरानी फौजी को कोई मुसलमान लड़की अच्छी लगती तो वो किसी न किसी बहाने या उसके घर वालों पर कोई इल्ज़ाम आयद कर के उसे अपने साथ ले जाता था। ईरानी फौजी किसी बहाने के बग़ैर भी मुसलमान लड़कियों को अपने साथ ज़बरदस्ती ले जा सकते थे लेकिन गुलामी और मज़लूमियत के बावुजूद मुसलमानों में ग़ैरत का जज़्बा मौजूद था। पहले पहल ज़बरदस्ती अग़वा की वारदातें हुईं तो मुसलमानों ने दो तीन फौजियों को क़त्ल कर दिया था। मुसलमानों को इस की सज़ा तो बड़ी ज़ालेमाना मिली थी और इन्हें अपनी लड़कियों को बचाने की क़ीमत भी बहुत देनी पड़ी थी लेकिन ज़बरदस्ती अग़वा का सिलसिला रूक गया था।

आतिश परस्त ईरानी अपने फौजियों को सांडों की तरह पालते थे। हर सिपाही इस क़िस्म की ज़िरह पहनता था के सर पर आहनी ज़ंजीरों की खुद और बाज़ुओं पर धात के खोल इस तरह चढ़े होते थे के बाज़ू की हरकत में रूकावट नहीं होती थी। इन की टांगों को भी बड़े सख्त चमड़े या किसी धात से महफूज़ किया होता था।

असलहा इतना के हर सिपाही के पास एक तलवार, एक बरछी और एक गुजर होता था। गुज़र पर ईरानी सिपाही ख़ास तौर पर फख्र किया करते थे। इन

हथियारों के अलावा हर सिपाही के पास एक कमान और तर्कश में तीस तीर होते थे। इन्हें ऐश व ईशरत, खाने पीने और लूट मार की खुली इजाज़त थी। वो जुर्रत और असकरी महारत में क़ाबिले तारीफ थे। उनकी कमज़ोरी सिर्फ ये थी के वो सिर्फ आमने सामने की लड़ाई लड़ सकते और लड़ते भी बे जिगरी से थे लेकिन इतना असलाह उठा कर वो फुर्ती से नक़ल व हरकत नही सकते थे। किसी दस्ते या हविश को फौरन एक जगह से दूरी जगह जाना पड़ता तो वो मतलूबा वक़्त में नहीं पहुंच सकते थे। इतने ज़्यादा हथियारों का बोझ इन्हें जल्दी थका देता था। अल्बत्ता उनकी तादाद इतनी ज़्यादा थी जो उनकी सुस्त रफ्तारी की कमज़ोरी को छुपा लेती थी।

❁

दजला और फरात के संगम के इलाक़े के जुनूब में उबला एक मुक़ाम था जो ईराक़ और अरब की सरहद पर था। उस ज़माने में उबला एक शहर था। इस के इर्द गिर्द इलाक़े शादाब और सर सब्ज़ था। वहां बड़े खूबसूरत जंगल और हरी भरी पहाड़ियां थी। ये तारीख़ी अहमीयत का इलाक़ा था। आज भी वहां खंडरात बिखरे हुए हैं जो बज़बाने खामोशी तारीख़ी कहानियां सुनाते हैं। हर कहानी इबरत नाक है।

इस खित्ते में उन क़ौमों की तबाही और बरबादी के आसार भी मौजूद हैं जिन्होंने ऐश व इशरत को ज़िन्दगी का मक़सद बना लिया था और रियाआ को वो इन्सानियत का दर्जा नहीं देते थे। खुदा ने उन्हें राहे मुस्तक़ीम दिखाने के लिए पैग़म्बर भेजे तो इन लोगों ने पैग़म्बरों का मज़ाक उड़ाया और कहा के तुम तो हम में से हो और दुनिया में तुम्हारी हैसियत और तुम्हारा रूत्बा भी कोई नहीं, फिर तुम खुदा के भेजे हुए पैग़म्बर किस तरह हो सकते हो?

आख़िर खुदा ने उन्हें ऐसा तबाह व बर्बाद किया के उनके महलात और उनकी बस्तियों को खंडरात बना दिया। खुदा ने उनका तफसीली ज़िक्र कुर्आन में किया और फरमाया है-"क्या तुम ने ज़मीन पर घूम फिर कर नहीं देखा के जो अपनी बादशाही पर इतराते और खुदा की सरकशी करते थे और जो ऊंचे पहाड़ों पर अपनी यादगारें बनाते थे के उनके नाम हमेशा ज़िन्दा रहें। वो अब कहां है?"-अब ज़मीन के नीचे से उन के महलात और उनकी यादगारों के खंडरात निकल रहे हैं।

इन के बाद भी पुर शकवा शहंशाह आए और एक के बाद एक अपने खंडरात छोड़ता गया। बाबल के खंडर भी आज तक मौजूद है। इस ख़ित्ते में इशोरी आए। सासानी आए और अब जब मदीना में अबु बकर(र०) सिद्दीक़ अमीरूल मामेनीन थे, दजला और फरात के इस हसीन और इबरत अंगेज़ खित्ते में ईरानियों का तूती बोल रहा थी और ये आतिश परस्त क़ौम पहली क़ौमों की तरह यही समझती रही के इसे तो

ज़वाल आ ही नहीं सकता। वो महकूमों के खुदा बने हुए थे।

❁

"बिन्ते सऊद!"--एक नौजवान मुसलमान लड़की अपनी सहेली से पूछ रही थी-"खुद्दाम नहीं आया?"

ज़ोहरा बिन्ते सऊद की आंखों में आंसू आ गए और उस ने आह भर कर मुंह फैर लिया।

"तुम कहती थी वो तुम्हें धोका नहीं देगा"-सहेली ने ज़ोहरा से कहा-"खुदा न करे, वो उस बदबख्त ईरानी के हाथ चढ़ गया हो।"

"खुदा न करे"-ज़ोहरा बिन्ते सऊद ने कहा-"वो आएगा....चार दिन गुज़र गए हैं....मैं इस ईरानी के साथ नहीं जाऊंगी। मौत कुबूल कर लूंगी। उसे कुबूल नहीं करूंगी। खुद्दाम मुझे धोका नहीं देगा।"

"ज़ोहरा!"-सहेली ने उसे कहा-"क्या ये बेहतर नहीं होगा के तुम उस ईरानी कमांडर को कुबूल कर लो? तुम्हारे ख़ानदान के लिए भी यही बेहतर होगा। यही है ना के तुम्हें अपना अक़ीदा बदलना पड़ेगा। सारी उम्र ऐश तो करोगी!"

"मैं ने जिस खुदा को देख लिया है उसी की इबादत करूंगी"-ज़ोहरा ने कहा-"आग खुदा ने पैदा की है, आग खुदा नहीं हो सकती। मैं खुदा की मौजूदगी में किसी और की परसतिश क्यों करूं?"

"सोच लो ज़ोहरा!"-सहेली ने कहा-"तुम उसे कुबूल नहीं करोगी तो वो तुम्हें ज़बरदस्ती अपने साथ ले जा सकता है। उसे कौन रोक सकता है? वो शाही फौज का कमांडर है। वो तुम्हारे घर के बच्चे बच्चे को क़ैद खाने में बन्द कर सकता है। हूं तो मैं भी मुसलमान की बेटी। मैं अल्लाह की इबादत करती हूं और अल्ला ही की क़सम खाती हूं। लेकिन अल्लाह ने हमारी क्या मदद की है? क्या तुम्हें यक़ीन है के अल्लाह तुम्हारी मदद करेगा?"

"अगर अल्लाह ने मेरी मदद न की तो अपनी जान ले लूंगी"-ज़ोहरा ने कहा-"और अल्लाह से कहूंगी के ये ले, अगर मेरे वुजूद में जान तूने डाली थी तो वापस ले ले"-और उसके आंसू बहने लगे।

ज़ोहरा अपने जैसे एक खूबसूरत जवान खुद्दाम बिन असद को चाहती थी और खुद्दाम उस पर जान निसार करता था। उनकी शादी हो सकती थी लेकिन शिमर ईरानी फौज का एक कमांडर था जिस की नज़र ज़ोहरा बिनते सऊद पर पड़ गई थी। उसने इस लड़की के बाप से कहा था के वो उसकी बेटी को बड़ी आसानी से घर से ले जा सकता है लेकिन ऐसा नहीं करेगा।

"मैं तुम्हारी बेटी को माले ग़नीमत समझ कर नहीं ले जाऊंगा" -शिमर ने कहा था- "उसे दो घोड़ों वाली उस बग्गी पर ले जाऊंगा जिस पर दुल्हे अपनी दुल्हनों को ले जाया करते है। तुम लोगों को फख्र से बताया करोगे के तुम्हारी बेटी एक ईरानी कमांडर की बीवी है।"

"लेकिन ईरानी कमांडर!" -ज़ोहरा के बाप ने कहा था- "तुम्हारा ऐहतराम हम पर लाज़िम है। अगर लड़की तुम्हारी दुल्हन बनना चाहेगी तो हम उसे नहीं रोकेंगे।"

"तुम ग़लीज़ अरबी!" -ईरानी कमांडर ने उस नफरत से जिस से वो हर मुसलमान से बात किया करता था, कहा- "तू बेटियों को ज़िन्दा दफ्न कर देने वाली क़ौम में से है और कहता है के अपनी शादी का फैसला तेरी बेटी खुद करेगी। ज़रतुश्त की क़सम, अगर तेरी बेटी ने अपना हाथ मेरे हाथ में न दिया तो तुझे और तेरी बेटी को उन कोठरियों में बन्द करूंगा जिनमें कोढ़ी बन्द हैं...बहुत थोड़ी मोहलत दूंगा बूढ़े!"

उसके साथ उस के तीन घुड़ सवार थे। उन्होंने बड़ी ज़ोर से क़हक़हा लगाया था।

"मदीना बहुत दूर है बद बख्त बूढ़े!" -एक सिपाही ने उसे धक्का दे कर कहा था- "तेरा अमीरूल मोमेनीन तेरी मदद को नहीं आएगा।"

ज़ोहरा के बाप को और उसके भाईयों को मालूम था के वो ईरान के एक सिपाही की भी हुक्म अदूली नहीं कर सकते, ये तो कमांडर था। इन्हें ये भी मालूम था के शिमर उन की बेटी को उठवा भी सकता है और वो कुछ नहीं कर सकते लेकिन इस खित्ते के मुसलमानों के दिलों में आग के पुजारियों की जो नफरत थी, वो इन्हें मजबूर कर रही थी के वा इन के गुलाम होते हुए भी इन की गुलामी न करें और इस का अंजाम कितना ही भयानक क्यों न हो, इसे बर्दाश्त करें। इन्हें अपने अल्लाह पर भरोसा था।

ज़ोहरा और खुद्दाम को मिलने से कोई नहीं रोक सकता था। वो फलों के बाग़ात में काम करते थे जिस रोज़ शिमर ज़ोहरा के घर आया था उससे अगले रोज़ ज़ोहरा, खुद्दाम से मिली और खौफ ज़दा लहजे में उस ने खुद्दाम को बताया के ईरानी कमांडर क्या धमकी दे गया है।

"हम यहां से भाग न चलें?" -ज़ोहरा ने पूछा।

"नहीं" -खुद्दाम ने जवाब दिया- "अगर हम भाग गए तो ये बदबख्त तुम्हारे और मेरे ख़ानदान के बच्चे बच्चे को क़त्ल कर देंगे।"

"फिर क्या होगा?" -ज़ोहरा ने पूछा।

"जो खुदा को मंज़ूर होगा" -खुद्दाम ने कहा।

"खुदा, खुदा, खुदा"–ज़ोहरा ने झुंझलाए हुए लहजे में कहा–"जो खुदा हमारी मदद नही कर सकता...."

"जोहरा!"खुद्दाम ने उसे टोकते हुए कहा–"खुदा अपने बन्दों को इम्तेहान में डाला करता है। बन्दे खुदा का इम्तेहान नही ले सकते"–खुद्दाम गहरी सोच में खो गया।

"ये तो हो नही सकता के इस आतिश परस्त शिमर का मुक़ाबला करोगे"–ज़ोहरा ने कहा।

"खुद्दाम गहरी सोच में खोया रहा।

"सोचते क्या हो?"–ज़ोहरा ने कहा–"तुम इस शख्स को क़त्ल तो नहीं कर सकते। हमारे सामने एक ही रास्ता है।"

"खुदा निजात का रास्ता भी दिखा देगा–खुद्दाम ने कहा।

"तुम्हें एक और रास्ता मैं दिखा सकती हूं"–ज़ोहरा ने कहा–"मुझे अपनी तलवार से क़त्ल कर दो और तुम ज़िन्दा रहो।"

"थोड़ी सी कुर्बानी दो"–खुद्दाम ने कहा–"मैं उस नफरत का अंदाज़ा कर सकता हूं जो शिमर के खिलाफ तुम्हारे दिल में भरी हुई है लेकिन उस पर ये ज़ाहिर करो के तुम उसे पसंद करती हो। उसे धोके में रखो। में कुछ दिनों के लिए ग़ायब हो जाऊंगा।

"कहां जाओगे?"–ज़ोहरा ने पूछा–"क्या करने जाओगे?"

"मुझ से हर बात न पूछो ज़ोहरा!"–खुद्दाम ने कहा–"मैं खुदाई मदद हासिल करने जा रहा हूं।"

"खुदा की क़सम, खुद्दाम!"–ज़ोहरा ने उसके कंधे पर हाथ रख कर कहा–"अगर तुम ने मुझे धोका दिया तो मेरी बदरूह तुम्हें चैन से जीने नही देगी। मैं एक दिन के लिए भी उस काफिर की बीवी बन के नही रह सकूंगी। उसकी बीवी बनने का मतलब ये है के मुझ से तुम ही नहीं मेरा मज़हब भी छिन जाएगा।"

"अगर तुम मज़हब की इतनी पक्की हो तो खुदा हमारी मदद को आएगा"–खुद्दाम ने कहा।

"खुद्दाम!"–ज़ोहरा ने मायूसी के लहजे में कहा–"मैं मज़हब की तो पक्की हूं लेकिन खुदा पर मेरा अक़ीदा मुताज़लज़ल होता जा रहा है।"

❁

खुद्दाम कुछ और कहने ही लगा था के बाग़ में काम करते हुए लोगों में हड़बोंग सी मच गई। तीन चार आदमियों ने खुद्दाम को पुकारा। ज़ोहरा उठी और वही से पौदों में

ग़ायब हो गई खुद्दाम ने उठ कर देखा। कुछ दूर परे ईरानी कमांडर शिमर अपने घोड़े पर सवार था। उस ने दूर से ही कहा के खुद्दाम को उसके पास भेजा जाए। खुद्दाम आहिस्ता आहिस्ता चलता शिमर के तरफ गया।

"तेज़ चलो!"-शिमर ने घोड़ा रोक कर दूर से कहा।

खुद्दाम ने अपनी चाल न बदली। शिमर ने एक बार फिर गरज कर उसे तेज़ चलने को कहा। खुद्दाम अपनी ही रफ्तार में चलता रहा। शिमर घोड़े से कूद कर उतरा और कुल्हों पर हाथ रख कर खड़ा हो गया। बाग़ में काम करते हुए मुसलमान दम बखुद देखते रहे। उन्हें मालूम था के शिमर खुद्दाम की हड्डी पस्ली एक कर देगा लेकिन खुद्दाम जब इसके सामने जा रूका तो शिमर ने हाथ भी न उठाया।

"देख कमीने इन्सान!"-शिमर ने खुद्दाम से हिक़ारत के लहजे में कहा-"मैं तुम्हारे बाप पर और तुम्हारी जवानी पर रहम करता हूं। आज के बाद में तुम्हें इस लड़की के साथ न देखूं।"

"अगर तुम ने मुझे इस लड़की के साथ देख लिया तो क्या होगा?"-खुद्दाम ने पूछा।

"फिर मैं तुम्हारे मुंह पर एक दो थप्पड़ नहीं मारूंगा"-शिमर ने पूछा-"तुम्हें दरख्त के साथ उल्टा लटका दूंगा। जाओ मेरी नज़रों से दूर हो जाओ।"

शिमर घोड़े पर सवार हुआ और चला गया। खुद्दाम वहीं खड़ा उसे देखता रहा।

"खुद्दाम!"-उसे किसी ने बुलाया और कहा-"इधर आजाओ"-फिर उसे तीन चार आदमियों की आवाज़ें सुनाई दीं-"आजाओ खुद्दाम, आजाओ।"

वो पीछे मुड़ा और लोगों के पास जा रूका। सब उससे पूछने लगे के शिमर ने क्या कहा था। खुद्दाम ने उन्हें बताया। सब जानते थे के खुद्दाम का जुर्म क्या है। अगर ये मुसलमान अज़ाद होते। उनकी अपनी हुकूमत होती और ये मआशरा उनका अपना होता तो वो खुद्दाम को बुरा भला कहते के वो किसी की नौजवान बेटी को अपने पास बैठाए हुए था लेकिन वहां सूरत मुख़तलिफ थी। इन्हें ये भी मालूम था के खुद्दाम बुरे चाल चलन का नौजवान नहीं। इस मज़लूमियत में भी मुसलमान मुत्तेहिद थे, लेकिन बाग़ में काम करने वालों मे से एक ने कहा के ये आतिश परस्त इधर क्या लेने आया था।

"उसे इधर लाया गया था"-एक ने कहा-"और लाने वाला कोई हम में से ही था।"

"मालूम करो वो कौन हो सकता है"-एक बूढ़े ने कहा-"यहां सवाल एक

लड़की और लड़के का नहीं"ये ज़ालिम और मज़लूम का मआमला है। ये हमारी आज़ादी और खुद्दारी का मआमला है। आज अगर उस शख्स ने इस ज़रा सी बात पर मुख़बरी की है तो वो बहुत बड़ी ग़द्दारी कर सकता है।"

सब पर खामोशी तारी हो गई एक अधेड़ उम्र औरत जो इन आदमियों के पीछे खड़ी थी बोल पड़ी।

"मैं बताती हूं वो कौन है"-उस औरत ने कहा और आदमियों में बैठे हुए एक आदमी की तरफ देखने लगी। औरत ने हाथ लम्बा कर के उंगली से उसकी तरफ इशारा किया और पूछा-"अबु नुस्र! तुम वहां उस टेकरी के पीछे खड़े क्या कर रहे थे?"

अबु नुस्र के होंट हिले लेकिन वो कुछ कह न सका। इसी से सब समझ गए के ये शख्स आतिश परस्तों का मुख्बिर है उसने आख़िर इस इल्ज़ाम को तस्लीम न किया।

"मैं तुम्हें देख रही थी"-इस औरत ने कहा-"तुम टेकरी के पीछे ग़ायब हो गए और वहां से शिमर निकला।"

"देख अबु नुस्र!"-एक बूढ़े ने कहा-"हमें कोई डर नहीं के अब तुम शिमर को ये भी जा कर बताओगे के हम ने तुम्हें मुख्बिर और गद्दार कहा है। ये सोच लो के आतिश परस्त तुम्हें गले नहीं लगाऐंगे। वो क़हते होंगे तुम उनके गुलाम हो और अपनी क़ौम के ख़िलाफ मुख्बिरी और गद्दारी तुम्हारा फर्ज़ है।"

अबु नुस्र ने सर झुका लिया। उस पर तानों और गालियों के तीर बरसने लगे जिस के मुंह में जो आया उसने कहा। आख़िर अबु नुस्र ने सर उठाया। उसका चेहरा आंसुओं से धुला हुआ था और आंसू बहे चले जा रहे थे। निदामत के ये आंसू देख कर सब खामोश हो गए।

"तुम्हें आख़िर कितना ईनाम मिलता होगा?"-इन के एक बुजुर्ग ने पूछा।

"कुछ भी नहीं"-अबु नुस्र ने सिस्की लेने के अंदाज़ में कहा-"मैं ने ये पहली मुख्बिरी की है। अगर तुम लोग मुझे मौत की सज़ा देना चाहो तो मुझे क़ुबूल है।"

"हम पूछते हैं क्यों?"-एक ने कहा-"आखिर तुम ने ये हरकत क्यों की?"

"मेरी मजबूरी"-अबु नुस्र ने जवाब दिया-"परसों की बात है। इस कमांडर ने मुझे रास्ते में रोक कर कहा था के मैं ज़ोहरा के घर पर नज़र रखूं। इस का मतलब ये था के मैं देखता रहूं के ज़ोहरा घर से भाग न जाए और उसे किसी जवान आदमी के साथ अलग थलग खड़ा देखूं तो उसे इत्तेला दूं....मैं ने उसे कहा के मैं इस लड़की पर नज़र रखूंगा, लेकिन मेरी दो बेटियों पर कौन नज़र रखेगा। मैं ने कहा के शाही फौज के

कमांडर और सिपाही हमारी बेटियों को बुरी नज़र से देखते रहते हैं....

"शिमर मेरी बात समझ गया। उसने कहा के तुम्हारी बेटियों को कोई शाही फौजी आंख उठा कर भी नही देखेगा। उस ने मेरे साथ पक्का वादा किया के वो मेरी बेटियों की इज़्ज़त की हिफाज़त का पक्का इन्तेज़ाम करेगा।....ये मेरे लिए वहुत वड़ा ईनाम था।"

"खुदा की क़सम!"-बूढ़े ने कहा-"तुम इस क़ाबिल नही हो के तुम्हें मुसलमान कहा जाए। तुम ने अपनी बेटियों की इज़्ज़त बचाने के लिए अपने भाई की बेटी की इज़्ज़त का ख्याल न किया।

"तुझ पर खुदा की लानत हो अबु नुस्र!"-एक और बोला-"तू जानता है के इन आतिश परस्तों के वादे कितने झूटे होते हैं। इन में तुम्हें एक भी नही मिलेगा जो किसी मुसलमान से वफा करेगा।"

"अपनी बेटियों की इज़्ज़त की हिफाज़त के लिए हम खुद मौजूद हैं"-एक और ने कहा-"तुम्हारी बेटियां हमारी बेटियां हैं।"

"मैं इसे माफ करता हूं"-ज़ोहरा के बाप सऊद ने कहा।

"और मैं भी इसे माफ करता हूं"-खुद्दाम बोला-"खुदा की क़सम! मैं शिमर से इन्तेक़ाम लूंगा।"

"जोश में मत आ लड़के"-बुजुर्ग अरब ने कहा-"कुछ करना है तो कर के दिखा, और ये भी याद रख के जोश में आ कर मत बोल। दिमाग़ को ठण्डा कर के सोच।"

दूसरी सुवह जब ये मुसलमान खेतो और बाग़ों में काम करने के लिए गए तो इन में खुद्दाम नही था। हर किसी ने खुद्दाम के बाप से पूछा के वो कहां है। बाप परेशान था। उसे सुवह पता चला था के खुद्दाम ग़ायब है।

"ज़रतुश्त के ये पुजारी मेरे बेटे को खा गए हैं"-खुद्दाम के बाप ने रोते हुए कहा-"उसे उन्होंने किसी तरह धोके से बुलाया होगा और क़त्ल कर के लाश दरिया में वहा दी होगी।"

सब का यही ख्याल था। सिर्फ ज़ोहरा थी जिसे उम्मीद थी के खुद्दाम खुद कहीं चला गया होगा। उसने ज़ोहरा को बताया था के वो कुछ दिनों के लिए ग़ायब हो जाएगा। ज़ोहरा ने ये वात किसी को न बताई बल्कि उसने भी यही कहा के खुद्दाम को ईरानियों ने ग़ायब कर दिया है। ज़ोहरा ने अपनी सहेलियों से कहा के वो दो तीन रोज़ ही खुद्दाम का इंतेज़ार करेगी। वो न आया तो वो दरिया में डूब मरेगी।

❁

तीन चार रोज़ बाद रात को शिमर की एक चौकी में बैठा दो नौ उम्र लड़कों का रक्स देख रहा था। ईरान के शाही दरबारों में ऐसे लड़कों का रक्स मक़बूल था जिन के जिस्म लड़कियों की तरह दिलकश, गुदाज़ और लचकदार होते थे। इन्हें ऐसा लिबास पहनाया जाता था जिस में वो नीम उरियां रहते थे।

शिमर शाही खानदान का फर्द था। उस रात ये दो लड़के उसने अपने सिपाहियों के लिए बुलवाए थे। शराब का दौर चल रहा था। सिपाही चीख़ चीख़ कर दादें दे रहे थे। शराब में बदमस्त हो कर दो तीन सिपाहियों ने भी लड़कों के साथ नाचना शुरू कर दिया। शिमर के हुक्म पर इन सिपाहियों को दूसरे सिपाही उठा कर चौकी से बाहर फैंक आए।

ये चौकी छोटा सा एक क़िला था लेकिन इस के दरवाज़े रात को भी खुले रहते थे। ईरानियों को किसी दुश्मन के हमले का ख़तरा नहीं था। वो अपने आप को ना क़ाबिले तसख़ीर समझते थे। रक्स जब उरूज को पहुंचा और शराब का नशा शिमर और उसके सिपाहियों के दिमाग़ों को माऊफ करने लगा तो सनसनाता हुआ एक तीर आया जो शिमर की गर्दन में एक तरफ से लगा और उसकी नोक दूसरी तरफ से बाहर निकल गई। शिमर दोनो हाथ रख कर उठा। सिपाहियों मे बड़बोंग मच गई। वो सब शिमर के इर्द गिर्द इक्ळे हो गए। तीन चार और तीर आए। तीन चार चीखें सुनाई दीं। फिर इन ईरानियों पर जैसे क़यामत टूट पड़ी। इन्हें संभलने का मौक़ा ही न मिला और वो कटने लगे। इन में से जो भाग कर दरवाज़ों की तरफ गए वो दरवाज़ों में कट गए।

चौकी वालों को कहीं से भी मदद नहीं मिल सकती थी। किसी भी दरवाज़े से कोई बाहर नही निकल सकता था। इन्हें हथियार उठाने की मोहलत ही नही मिली थी। इस हमले में जो बच गए वो ज़मीन पर लेट गए।

ये एक तूफान था ये बगोला जो ग़ैर मुतावक़्क़ तौर पर आया और जब गुज़र गया तो अपने साथ वो तमाम माल और दौलत जो इस चौकी में था, ले गया पीछे लाशें रह गई या तड़पते हुए ज़ख्मी या वो अच्छे भले ईरानी सिपाही जो जान बचाने के लिए लाशों और ज़ख्मियों में लेट गए थे।

❀

सुबह हुई। मुसलमान खेतों और बाग़ों में काम करने के लिए घरों से निकल रहे थे के घुड़ सवार ईरानी फौज ने उनकी बस्ती को घेरे में ले लिया। दूसरी चौकी को उस वक़्त इस चौकी पर हमले की इत्तेला मिली थी जब हमला आवर अपना काम कर के बहुत दूर निकल गए थे। मुसलमानों को काम पर जाने से रोक लिया गया। ईरानी फौजियों ने मर्दो को अलग इक्ळा कर के खड़ा कर दिया और इन के घरों से औरतों

को बाहर निकाल कर मर्दों से दूर खड़ा रहने का हुक्म दिया। फौजी उन के घरों में घुस गए और इस तरह तलाशी ली जैसे उनके मकानों के फर्श भी खोद कर देखें हो।

इन्हें किसी घर से कोई ऐसी चीज़ न मिली जो शक पैदा करती। अल्बत्ता सिपाहियों को अपने काम की जो चीजें नज़र आईं वो उन्होंने उठा ली। फिर उन्होंने औरतों ओर मर्दों को इक्ठ्ठा खड़ा कर के इन्हें धमकियों दीं। मुसलमानों के साथ ये सुलूक उनके लिए नया नही था। किसी न किसी बहानें उनके घरों की तलाशी होती ही रहती थी। इस के जाद इन्हें इसी तरह धमकियां मिलती थीं लेकिन अब ईरानियों को माकूल बहाना मिला था।

"रात उबला की एक मुज़ाफाती फौजी चौकी पर बहुत से आदमियों ने शब खून मारा है" -एक ईरानी कमांडर ने मुसलमानों से कहा- "हमारा एक कमांडर और साठ सिपाही मारे गए और बहुत से ज़ख्मी हुए हैं। अगर तुम में कोई मर्द या औरत इस गिरोह के किसी एक आदमी को भी पकड़वाएगा। उसे ईनाम मिलगा। नक़द ईनाम के अलावा उसे इस फस्ल का आधा हिस्सा मिलेगा" -इस ने सब पर निगाह दौड़ाई और पूछा- "एक दूसरे को देख कर बताओ के तुम में कौन ग़ैर हाज़िर है।"

सब ने इधर उधर देखा लेकिन वो ये नही देख रहे थे के कौन ग़ैर हाज़िर है। उनकी निगाहें खुद्दाम को ढूंड रही थीं। वो तीन चार दिनों से बस्ती से ग़ायब था-सब ने देखा खुद्दाम वहां मौजूद था। सब ने सुकून की सांस ली। फिर बहुत सी आवाज़ें उठीं के कोई भी ग़ैर हाज़िर नहीं।

ईरानी फौजियों के जाने के बाद जिन्हें मालूम था के खुद्दाम तीन चार रोज़ ग़ायब रहा है। वो बारी बारी उस से पूछने लगे के वो कहां चला गया था।

"मैं शिमर के डर से भाग गया था" -खुद्दाम ने हर किसी को यही एक जवाब दिया।

उस के बाप ने सब को बताया के खुद्दाम गुज़िश्ता रात के पिछले पहर आया था।

उस रोज़ बाग़ में काम करते हुए ज़ोहरा और खुद्दाम काम से खिसक गए और उस जगह जा बैठे जहां इन्हें कोई नही देख सकता था। ज़ोहरा खुशी से पागल हुई जा रही थी और वो रह रह कर खुद्दाम की बलाऐं लेती थी।

"ये कैसे हुआ खुद्दाम!" -उसने खुशी से लड़खड़ाती हुई ज़बान से पूछा- "ये हुआ कैसे?"

"इसे अल्लाह की मदद कहते हैं ज़ोहरा!" -खुद्दाम ने कहा- "अब न कहना के खुदा मदद नहीं करता।"

"खुद्दाम!"-ज़ोहरा संजीदा हो गई जैसे उसके होंटों पर कभी मुस्कुराहट आई ही न हो। खुद्दाम के चेहरे पर नज़रें गाड़ कर क़दरे परेशान से लहजे में बोली-"सच कहो खुद्दाम! शिमर के क़ातिल तुम ही तो नहीं?...कहते है। रात सहराई डाकूओं के बहुत बड़े गिरोह ने शिमर की चौकी पर उस वक़्त शब खून मारा था जब वो शराब और रक़्स में बदमस्त थे। ऐसा तो नही के तुम इन डाकुओं से जा......"

खुद्दाम ने क़हक़हे में एक राज़ छुपा लिया था और ज़ोहरा पर जज़्बात का आसेब तारी कर के ये राज़ उसकी आंखों के आगे से हटा लिया था। ज़ोहरा को ये ख़तरा नज़र आया था के खुद्दाम ग़ैर मामूली तौर पर दिलेर, ग़ैरत मंद और जिस्मानी लिहाज़ से ताक़तवर और फुर्तिला है, कही ऐसा तो नही हुआ के वो शिमर को क़त्ल करने के लिए डाकूओं के गिरोह से जा मिला हो। उस ज़माने में सहराई डाकूओं के गिरोह फौजी दस्तों की तरह अपनी काररवाई करते थे। वो मुसाफिरों के काफलों को लूटते और अगर फौज के मुक़ाबले में आ जाते तो डट कर मुक़ाबला करते और लड़ते लड़ते यूं ग़ायब हो जाते हैं जैसे इन्हें सहरा की रेत और रेतीले टीलों ने निगल लिया हो।

ज़ोहरा ने कई बार देखा था के दो तीन अजनबी मुसाफिर आए और ये बता कर के वो बहुत दूर जा रहे है, किसी मुसलमान के घर ठहरे और सुबह होते ही चले गए। वो जब भी आते थे, खुद्दाम और उस जैसे तीन चार नौजवान ज़्यादा वक़्त उनके साथ गुज़ारते और उनके जाने के बाद ये नौजवान पुरइसरार सी सरगर्मियों में मसरूफ हो जाते थे।

ज़ोहरा ने ये भी देखा थे के अजनबी मुसाफिरों के जाने के बाद मुसलमान क़बीलों के बुज़ुर्ग सर जोड़ के बैठ जाते और सरगोशियों में बाते करते थे। फिर मुसलमान खेती बाड़ी, बाग़बानी और दीगर कामों में मसरूफ होते तो ये बुज़ुर्ग इन के दरमियान घूमते फिरते और इन के साथ ऐसी बातें करते थे जैसे वाज़ कर रहे हों।

"अपने मज़हब को न छोड़ना"-बुज़ुर्ग इस क़िस्म की बातें करते थे-"जिस खुदा के भेजे हुए रसूल(स०) को मानते हो, उस खुदा की मदद आ रही है....आतिश परस्त ताक़तवर हैं। बहुत ताक़तवर हैं लेकिन वो अल्लाह से ज़्यादा ताक़तवर नहीं... .साबित क़दम रहो.....ज़ालिम का हाथ कटने वाला है.....अल्लाह मज़लूमीन के साथ हैं।"

"कब?....आख़िर कब?"-एक रोज़ एक आदमी ने झुंझला कर इन बुज़ुर्ग से पूछा-"खुदा की क़सम, तुम ये कह रहे हो के हम ज़ुल्म व सितम सहते चले जाएं और चुप रहें और तुम्हारे वाज़ सुनते रहें। अगर आज हम कह दें के हम मुसलमान नहीं और इस्लाम के साथ हमारा कोई ताल्लुक नही तो गुलामी की ज़ंजीरें टूट जाऐं....खुदा की

मदद आ रही है....कब आ रही है?"

"इसे बाताओ" -एक बुजुर्ग ने इस आदमी के साथ काम करने वाले आदमी से कहा- "इसे अच्छी तरह समझाओ....इसे बताओ के इस इलाके में ये सदियों पुराने जो खंडर खड़े है, खुदा का हाथ इन में से उठेगा और ज़ालिम का हाथ कट जाएगा।"

☸

इन बुजुर्गों के सीने में भी वही राज़ था जो खुद्दाम ने ज़ोहरा बिनते सऊद से छुपा लिया था।

ईरानी कमांडर शिमर की चौकी पर जो इतना ज़बरदस्त शब खून मारा गया था। वो पहला शब खून नहीं था। अबला के इलाके में ये पहला था। ये चौकी चूंके आबादी के क़रीब थी इस लिए इन मुसलमानों को पता चल गया था। अगर इन के घरों की तलाशी न ली होती शायद इन्हें न ही पता चलता। ईराक़ के सरहदी इलाके में दूसरी तीसरी रात ईरानियों की किसी न किसी चौकी पर ऐसा ही शब खून पड़ता और शब खून मारने वाले चौकी में क़त्ल व ग़ारत कर के वहां से जो माल और सामान हाथ लगता ले कर ग़ायब हो जाते।

दौ बार ईरानी फौज ने ये जवाबी कारर्वाई की के कसीर तादाद घुड़ सवार दस्ता शब खून मारने वालों की तलाश में गया। इस सरसब्ज़ और शादाब इलाके से निकलते ही सहरा शुरू हो जाता था जो ना हमवार सहरा था। वहां रेत की गोल गोल और ऊंची ऊंची टेकरियां थी। आगे वसी नशीब थे जिन में अजीब व ग़रीब शक्लों के टीले खड़े थे। रेत की पहाड़ियां थी जिन से शोले से निकलते महसूस होते थे। इस खौफनाक इलाके में जो मील हा मील फैला हुआ था, सहरा के भेदी ही जा सकते थे, किसी अजनबी का वहां जाना ही मुहाल था और वहां जा कर ज़िन्दा निकल आना तो ना मुमकिन था।

दोनो बार ईरानी फौज के घुड़ सवार दस्ते का ये अंजाम हुआ के उसे घोड़ों और इन्सानों के नकूश पा मिलते रहे जो साफ बताते थे के ये एक गिरोह है और शब खून मारने वाला यही गिरोह हो सकता है मगर ये नकूश इन्हें सीधे मौत के मुंह में ले गए। ईरानी जूं ही पहले नशेब में दाख़िल हुए और पूरा दस्ता नशेब में उतर गया तो उन पर तीरों की बोछाड़ें आने लगीं। पहली बोछाड़ में कई सवार घोड़े घायल हो गए। ज़ख्मी घोड़े बे लगाम हो कर इधर उधर भागे। सारे दस्ते में भगदड़ मच गई। उन पर तीर बरसते रहे मगर बिखर जाने की वजह से तीर ख़ता होने लगे।

भूल भूल्लियां जैसे इस नशेब में से चन्द एक घुड़ सवार निकले। उनके हाथों में बरछियां थी उनके कुर्ते बड़े लम्बे और सरों पर सियाह कपड़े इस तरह लिपटे हुए थे के

उनके चेहरे और गर्दनें भी ढकी हुई थीं। उनकी सिर्फ आंखें नज़र आती थी। उन घोड़ों के क़दमों में और इन के सवारों के बाज़ूओं में ऐसी फूर्ती थी के ईरानी सवार जो पहले ही हिरासां थे, बरछियों से ज़ख्मी हो कर गिरने लगे। इन में से कई भाग निकले। वो टीलों और घाटियों वाले नशीब से निबल गए लेकिन रेत की गोल गोल टेकरियों में दाख़िल हुए तो वो घूमने लगे। इन सैकड़ों टेकरियों में जो एक दूसरे के साथ साथ खड़ी तीन चार मील की वुसअत में फैली हुई थी, यही ख़तरा होता है के कोई अजनबी इन के अन्दर चला जाए तो वो अन्दर ही अन्दर चलता रहता है, निकल नही सकता। आख़िर थक कर बैठ जाता है। पियास से हलक़ में कांटे चुभने लगते हैं और रेगिस्तान के ये गोल गोल भूत उसे बड़ी अज़ीयत नाक मौत मारते हैं।

दूसरी बार ईरानियों के सवार दस्ते पर किसी और जगह ऐसा ही हमला हुआ था और सवार बिखर कर भाग रहे थे तो इन्हें एक लल्कार सुनाई देने लगी-"ज़रतुश्त के पुजारियो! मैं मिस्ना बिन हारिसा हूं....ज़रतुश्त को साथ लाओ....मिस्ना बिन हारिसा ने कहा....हरमज़ को ये नाम बता देना....मिस्ना बिन हारिसा"-इस ईरानी दस्ते के जो सवार ज़िन्दा वापस गए वो नीम मुर्दा थे। उन्होंने अपने कमांडरों को बताया के इन्हें सहराई लल्कार सुनाई दी थी।

इस के बाद ईरानियों की सरहदी चौकियों पर छापे पड़ते रहे लेकिन उन्होंने छापा मारों के तआक़्क़ुब की और उनको तलाश करने की जुर्रत न की बाज़ छापों के बाद भी ये लल्कार सुनाई देती-"मिस्ना बिन हारिसा-आतिश परस्तों! मैं मिस्ना बिन हारिसा हूं।"

फिर मिस्ना बिन हारिसा दहशत का, किसी जिन का, भूत का, किसी बदरूह का एक नाम बन गया। ईरानी फौजी इस नाम से डरने लगे। उन्होंने मिस्ना बिन हारिसा या उसके गिरोह के किसी एक आदमी को पकड़ने के बहुत अहतमाम किये लेकिन जब कहीं शब खून पड़ता था तो ईरानी फौजी जिन की जुर्रत और बे जिगरी मशहूर थी, दहशत से दुबक जाते थे।

❁

ये था वो मिस्ना बिन हारिसा जो फरवरी 633ई० के एक रोज़ मदीना में खलिफातुल मुस्लेमीन अबुबकर(र०) के सामने एक गुमनाम अजनबी की हैसियत से बैठा था। वो जुनूबी ईराक़ का रहने वाला और अपने क़बीले बनू बकर का सरदार था। तारीख़ में ऐसा ईशारा कहीं भी नही मिलता के उस ने कब और किस तरह इस्लाम कुबूल किया था। ये उसी की काविश का नतीजा था के न सिर्फ उस के अपने क़बीले ने बल्कि उन इलाक़ों में रहने वाले कई और क़बीलों ने इस्लाम कुबूल कर

लिया था।

जब जंग यमामा ख़त्म हुई और अरतदाद के फितने का सर कुचल दिया गया तो मिस्ना बिन हारिसा ने ईराक़ के जुनूबी इलाक़े में ईरानियों के खिलाफ जिहाद शुरू कर दिया। उन्होंने उन मुसलमानों में से जो ईरानी बादशाही की रिआया थे, एक गिरोह बना लिया और ईरानी फौज की सरहदी चौकियों पर शबखून मारने शुरू कर दिये। उन के शबखून इस क़दर अचानक और तेज़ होते थे के चौकी वालों को संभलने का मौक़ा ही नही मिलता था और मिस्ना का गिरोह सफाया कर के ग़ायब हो जाता था।

उन्होंने बड़े ही दुशवार गुज़ार सहरा में अपना अड्डा बना लिया था जिसे उन्होंने माले ग़नीमत से भर दिया था। फिर उन्होंने उन बस्तियों पर भी शबखून मारने शुरू कर दिये जहां सिर्फ ईरानी रहते थे। मिस्ना ने सरहद पर ईरानी फौज को बे बस और मजबूर कर दिया। ईरानी फौज के कई सीनियर कमांडर मिस्ना के हाथों मारे गए थे।

मिस्ना बिन हारिसा ने दूसरा काम ये किया के ईराक़ के जुनूबी इलाक़े में जो मुसलमान जुल्म व सितम में ज़िन्दगी गुज़ार रहे थे, इन्हें इस ने अपने ज़मी दोज़ असर में ले कर मुत्तहदा रखा हुआ था। उनका एक गिरोह तो शबखून मारने का काम करता था और एक गिरोह बस्तियों में रह कर मुसलमानों को इत्तेहाद की लड़ी में पिरोए रखता और इन्हें बताता रहता था के बाहर क्या हो रहा है। मुसलमान अपने छापा मारों की कामयाबियां देख रहे थे और वो मुतमईन थे- ये थी वो खुदाई मदद जिस के इन्तेज़ार में वो ईरानियों का जुल्म व सितम सह रहे थे और अपना मज़हब नहीं छोड़ रहे थे, वरना मुज़ालिम से बचने का उनके सामने बड़ा सहल तरीक़ा था के इस्लाम से मुनहरिफ हो कर आतिश परस्त हो जाते।

खुद्दाम ने ज़ोहरा से कहा था के वो तीन चार दिनों के लिए ग़ायब हो जाएगा। वो ग़ायब हो कर छापा मारों के अड्डे पर चला गया था और इन्हें ईरानी कमांडरों शिमर के मुताल्लिक़ बताया था। उसकी चौकी तक छापा मारों की रहनुमाई उसी ने की थी। चौकी पर हमला पूरी तरह कामयाब रहा। उस के फौरन बाद खुद्दाम अपने घर आ गया था।

मिस्ना बिन हारिसा ने अमीरूलमोमेनीन अबु बकर(र०) को तफसील से बताया के उन्होंने ख़लीज फारस के साहिल के साथ साथ और ईराक़ के जुनूबी इलाके में किस तरह अरबी मुसलमानों के क़बीलों को अपने असर में लिया और इन्हें इस्लाम पर क़ायम रख कर इन्हें ज़मीं दौज़ मुहाज़ पर जमा किया है।

"तुझ पर अल्लाह की रहमत हो इब्ने हारिसा!"–खलीफा ने कहा–"तू अगर ये मशवरा देने आया है के मैं ईरानियों पर फौज कशी करूं तो मुझे सोचना पड़ेगा। क्या तूने देखा नहीं के ईरानियों की फौज की तादाद कितनी ज़्यादा है और उन के वसायल और ज़राये कितने वसी और ला महदूद हैं? हम अपने मुसतकिर से इतनी दूर क़लील तादाद और बग़ैर वसायल कसीर तादाद और ताक़वर फौज के मुक़ाबले के क़ाबिल नही हुए लेकिन मैं ने सल्तनते फारस को नज़र अंदाज़ भी नहीं किया।"

"अमीरूलमोमेनीन!"–मिस्ना ने अपने सीने पर हाथ रख कर कहा–"अगर एक आदमी इतने बड़े मुल्क की फौज के साथ टक्कर ले सकता है और उन पर मुसलमानों के असकरी जज़्बे की धाक बैठा सकता है तो मैं अपने अल्लाह के भरोसे पर कहता हूं के एक मुनज़्ज़म फौज बहुत कुछ कर सकती है। मैं उस आतिश परस्त सल्तनत की अंदूरूनी कैफियत देख आया हूं। शाही ख़ानदान तख्त व ताज की ख़ातिर आपस में दस्तो गिरेबां हो रहा है। आप जानते हैं के शहंशाह हरकुल फारसियों कोनीनो और दस्तजरद में बहुत बुरी शिकस्त दे चुका है। उसकी फौजें आतिश परस्त फारसियों के दारूल हुकूमत मदाइन के दरवाज़ों तक पहुंच गई थीं। इस के बाद फारसी(ईरानी) संभल नहीं सके। अगर उनकी ऐश परस्ती को देखा जाए तो वो संभले हुए लगते हैं लेकिन उन में अब बादशाही के ताज पर रस्सा कशी हो रही है। यमन उन के हाथ से निकल गया है और वहां के हाकिम बाज़ान ने इस्लाम कुबूल कर लिया है। उन की रिआया उन की ज़ंजीरों को तोड़ना चाहती है। उनकी महकूमी में उनके जुनूबी इलाक़ों के मुसलमान मेरे इशारे के और मदीना की फौज के मुंतज़िर हैं।"

"तुझ पर रहमत ही रहमत हो मिस्ना!"-अमीरूलमोमेनीन ने कहा-"लाख तेरी बातें मेरे दिल में उतर रही है। मेरा अगला क़दम वही पड़ेगा जहां तू कहता है। क्या ये बहतर नहीं होगा के मैं सालारों की मजलिस से बात करूं?"

"या अमीरूलमोमेनीन!"-मिस्ना ने कहा-"फैसला वही बेहतर होता है जो सलाह मशवरे के बाद किया जाता है लेकिन मैं अमीरूलमोमेनीन से इजाज़त चाहूंगा के मैं जो कहना चाहता हूं वो कह लूं और आप मेरी बातें सालारों के सामने ज़रूर रखें.. ..दजला और फरात जहां मिलते है, वहां के बड़े वसी इलाक़े में अरबी क़बीले आबाद है जो सब के सब मुसलमान है। चूंके वो मुसलमान हैं इस लिए वो आग के पुजारी बादशाहों के जोर व सितम का निशाना बने हुए है। मस्जिदों पर भी उन का हक़ तस्लीम नही किया जाता। फारसियों के हाथों उनकी जान महफ़ूज़ नहीं, उनकी इज़्ज़त महफ़ूज़ नहीं.....

"वो मुसलमान फसल उगाते हैं जो पक जाती है तो आतिश परस्त ज़मींदार और फौजी उठा कर ले जाते हैं। वहां मुसलमान मज़ारे हैं। और इन्हें धुत्कारी हुई मख़्लूक़ समझा जाता है। वो मुसलसल ख़ौफ व हिरास में रहते हैं। उन के खिलाफ इल्ज़ाम सिर्फ ये है के वो मुसलमान हैं और कुफ्र के तूफान में भी वो इस्लाम की शमा रौशन रखे हुए है। वो मदीना को रौशनी का मीनार समझते है.....

"अमीरूलमोमेनीन! अगर आप बैठे ये सोचते रहे के दुश्मन बहुत ताक़वर है तो वो रोज़ बरोज़ ताक़तवर होता जाएगा और मुसलमान मायूस हो कर अपनी भलाई का कोई ऐसा तरीक़ा सोच लेंगे जो इस्लाम के मनाफी होगा मेरे छापामारों ने जो कामयाबियों हासिल की हैं और आप की फौज के लिए जो ज़मीन हमवार की है, वो दुश्मन के हक़ में चली जाएगी....क्या रसूल अल्लाह(स०) मज़लूम मुसलमानों की मदद को नही पहुंचा करते थे?"

"खुदा की क़सम, मैं उनकी मदद को पहुंचूंगा"-खलीफा अबु बकर(र०) ने कहा और अपने पास बैठे हुए एक सालार से पूछा"वलीद का बेटा ख़ालिद कहां है?"

"यमामा में आप के अगले हुक्म का इंतेज़ार कर रहा है अमीरूलमोमेनीन!"-इन्हें जवाब मिला।

"कोई तेज़ रफ्तार क़ासिद भेजो और उसे पैग़ाम भेजो के जल्दी मदीना पहुंचे-खलीफा अबुबकर(र०) ने कहा-"फारस की बादशाही से हम अल्लाह की तलवार के बग़ैर टक्कर नही ले सकते"-ख़लीफा मिस्ना से मुख़ातिब हुए-"और तुम मिस्ना वापसा जाओ और अरब क़बीलों के जिस क़दर लड़ने वाले आदमी इक्ळे कर सकते हो कर लो। अब तुम्हें खुली जंग लड़नी पड़ेगी जो तुम शबखून और छापों के

अंदाज़ से लड़ सकते हो लेकिन अपने फैसलों में तुम आज़ाद नही होगे। ख़ालिद(र०) सालारे आला होगा। तुम उसके फैसलों के पाबंद होगे।"

"तस्लीम अमीरूलमोमेनीन!"-मिस्ना बिन हारिसा ने कहा-"एक अर्ज़ और है...उस इलाके में जो अरब क़बीले है, वो सब के सब मुसलमान नही। इन में ईसाई भी है और दूसरे अक़ीदों के लोग भी। वो सब आतिश परस्तों के ख़िलाफ है। फारस के आतिश परस्त उनके साथ भी वही सुलूक करते है जो मुसलमानों के साथ कर रहे है। अगर अल्लाह तआला ने हमें फतह अता फरमाई तो ग़ैर मुसलिम अरबों के साथ ऐसा ही सुलूक होना चाहिए जैसा वहां के अरब मुसलमानों के साथ होगा।"

"ऐसे ही होगा"-अमीरूलमोमेनीन ने कहा-"जिन्होंने इस्लाम के खिलाफ कुछ नही किया, इस्लाम उनकी परेशानी का बाअस नहीं बनेगा....तू आज ही रवाना हो जा।"

❁

ख़ालिद(र०) उस वक़्त यमामा में थे। उनकी दोनो नई बीवियां लैला उम्मे तमीम और बिन्त मुजाआ उनके साथ थीं। अमीरूलमोमेनीन का पैग़ाम मिलते ही ख़ालिद(र०) यमामा से रवाना हुए और मदीना पहुंच गए।

"क्या मिस्ना बिन हारिसा का नाम तुम ने कभी सुना है?"-ख़लीफा अबुबकर(र०) ने ख़ालिद(र०) से पूछा।

"सुना है"-ख़ालिद(र०) ने जवाब दिया-"और ये भी सुना है के फारसियों के ख़िलाफ उन ने ज़ाती क़िस्म की जंग शुरू कर रखी है, लेकिन मुझे ये मालूम नही के उसकी ज़ाती जंग ज़ाती मुफाद के लिए है या वो इस्लाम की ख़ातिर लड़ रहा है।"

"वो यहां आया था"-अमीरूलमोमेनीन ने कहा-"जिहाद जो उसने शुरू कर रखा है इस में उसका कोई ज़ाती मुफाद नही। मै ने इस लिए तुम्हें बुलाया है के तुम से मशवरा करूं के मिस्ना हम से जो मदद मांगता है वो उसे दी जाए या उस वक़्त का इंतेज़ार किया जाए जब हम फारसियों की इतनी बड़ी कुव्वत के खिलाफ लड़ने के क़ाबिल हो जाएं।"

"वो किस क़िस्म की जंग लड़ रहा है?"-ख़ालिद(र०) ने पूछा।

अमीरूलमोमेनीन अबुबकर(र०) ने ख़ालिद(र०) को पूरी तफसील से बताया के मिस्ना शबखून की नोइय्यत की जंग लड़ रहा है और इस वक़्त तक वो कितनी कामयाबी हासिल कर चुका है।

"उसकी सब से बड़ी कामयाबी तो ये है ख़ालिद(र०)!"-ख़लीफा ने कहा-"के उस ने ज़रतुश्तों के ज़ुल्म व सितम में अपने सीनों में इस्लाम को ज़िंदा रखा

हुआ है। उबला और ईराक़ के दूसरे इलाक़ों में जहां मुसलमान आबाद हैं, वो फारसियों के ग़ैर इन्सानी तशद्दुद का निशाना बने हुए हैं। इन हालात में अपने अक़ीदों को सीनों से लगाए रखना बे मानी सा बन जाता है। वो मुसलमान सिर्फ इतना कह दें के इस्लाम और मदीना के साथ इन का कोई ताल्लुक नही तो उन के सारे मसायब ख़त्म हो जाएंगे। ये मिस्ना और उस के चन्द एक साथियों का कमाल है के उन्होंने इन हालात में भी वहां के मुसलमानों को इस्लाम से मुंहरिफ नही होने दिया। इस के अलावा उन्हें अपने अक़ीदे का इतना पक्का बना रखा है के वो ज़रतुश्तों के खिलाफ ज़मीन दोज़ कारर्वाईयों में मसरूफ रहते हैं।"

"अमीरूलमोमेनीन!" --ख़ालिद(र०) ने कहा-"मिस्ना ने कुछ किया है या नहीं किया, मुसलमान की हैसियत से हम पर ये फर्ज़ आयद होता है के जो मुसलमान ग़ैर मुसलिमों के जब्र व सितम का निशाना बने हुए हों उनकी मदद को पहुंचें।"

"क्या तुम ये मशवरा देते हो के हमें ईरानियों से टक्कर ले लेनी चाहिए?" -ख़लीफा ने पूछा।

"हां अमीरूलमोमेनी!" --ख़ालिद(र०) ने कहा-"टक्कर क्यों न ली जाए?.... यहां तो सूरत हाल कुछ और है। जैसा के आप ने बताया है के मिस्ना ने वहां कुछ कामयाबियां हासिल कर ली हैं और उसने हमारे हमले के लिए राह हमवार कर दी है। शबखून और छापे मारने वाले इतना ही कर सकते हैं जितना मिस्ना ने किया है। वो किसी इलाक़े पर क़ब्ज़ा नहीं कर सकते। कब्ज़ा करना मुनज़्ज़म लश्कर का काम है। ये काम हमें हर क़ीमत पर करना चाहिए। अगर हम ने मिस्ना की कामयाबियों को आगे न बढ़ाया तो उसके दो नुक़सान होंगे, एक ये के ये कामयाबियां ज़ाए हो जाएंगी और दूसरा ये के ज़रतुश्त मिस्ना और तमाम मुसलमानों से बहुत बुरा इंतेक़ाम लेंगे। इस के अलावा फारसी दिलेर हो जाएंगे....

"जैसा के मिस्ना ने आप को बताया है के उस ने ईरानियों को इस क़दर नुक़सान पहुंचाया है के उनके हौसले मजरूह हो गए हैं। अगर उन्हें दम लेने का मौक़ा दे दिया गया तो वो महकूम मुसलमानों को क़त्ल करेंगे और इस ख़तरे को ख़त्म कर के वो इस सरहदी इलाक़े को पहले से ज़्यादा मज़बूत कर लेंगे। अपने इलाक़ों को महफूज़ करने के लिए वो अपनी सरहद के बाहर के इलाक़ों पर भी क़ाबिज़ हो सकते हैं। इस ख़तरे से महफूज़ रहने की यही एक सूरत है के हम मिस्ना की मदद को पहुंचें और पेशतर इस के के ज़रतुश्त हमारी तरफ बढ़ें हम उन्हें उनके अपने इलाक़े से भी पीछे हटने पर मजबूर कर दें।"

ख़लीफा अबुबकर(र०) ने ख़ालिद(र०) को ये हिदायत दे कर रूख़्सत कर

दिया के वो अपने लश्कर को साथ ले कर ईराक़ की तरफ पेश कदमी करें।

"ख़ालिद(र०)!"-ख़लीफा अबु बकर(र०) ने कहा-"तुम्हारे लश्कर में ज़्यादा तादाद उन लोगों की है जो बड़े लम्बे अर्से से घरों से दूर लड़ रहें हैं। उन्हें फारसियों जैसे ताक़तवर दुश्मन के खिलाफ लड़ाना मुझे अच्छा नही लगता। फारसियों के खिलाफ वही लोग जम कर लड़ सकेंगे जिन्हें अहसास होगा के वो अल्लाह की राह में लड़ रहे हैं। मैं किसी को मजबूर नही करूंगा। बेहतर सूरत ये होगी के तुम रज़ाकारों की एक फौज बनाओ। इस में ऐसे आदमियों को रखो जो मुर्तदीन के ख़िलाफ लड़ चुके है। तुम्हारे साथ कुछ ऐसे आदमी भी होंगे जो मुर्तदीन के साथ थे। शिकस्त खाकर उन्होंने अपनी ख़ैरियत इस में समझी के वो इस्लामी लश्कर में शामिल हो जाएं। ऐसे किसी आदमी को अपने लश्कर में न रखना। हम बड़े ताक़तवर दुश्मन को लल्कारने जा रहे हैं। इस लिए मैं कोई ख़तरा मोल नहीं लेना चाहता।"

"अमीरूलमोमेनीन!"-ख़ालिद(र०) ने पूछा-"क्या आप मुझे ये इजाज़त दे रहे है के इन लोगों को अपने लश्कर से निकाल दूं?"

"निकाल देना और बात है वलीद के बेटे!"-खलीफा अबुबकर(र०) ने कहा-"तुम अपने लश्कर से ये कहना के जो आदमी अपने घर को जाना चाहता है उसे जाने की इजाज़त है। फिर देखना तुम्हारे साथ कौन रहता है। अगर तुम्हारा लश्कर बहुत कम रह गया तो खिलाफत इस कमी को किसी तरह पूरा करेगी.... जाओ वलीद के बेटे, अल्लाह तुम्हारे साथ है।"

ख़लीफा अबु बकर(र०) अज़्म और ईमान के पक्के थे। उन्होंने ईराक़ पर हमले का जो फैलना कर लिया था इस पर वो हर हाल में और हर क़ीमत पर पूरा अमल करना चाहते थे। ख़ालिद(र०) तो चाहते ही यही थे के इन्हें लड़ने को मौक़ा मिलता रहे। उन्होंने ख़लीफा के ईरादे को और ज़्यादा पुख़्ता कर दिया।

❁

ईराक़ के उस इलाक़े में जहां दजला और फरात मिलते हैं, मुसलमानों की बस्तियां थीं। ये मुसलमान मज़लूमियत और मजबूरी की ज़िन्दगी गुज़ार रहे थे। अब वहां की सूरते हाल ये हो गई के वो पहले की तरह मज़लूम और महकूम रहे जैसे वो चलती फिरती लाशें हों लेकिन उन के घरों में ऐसी सरगर्मी शुरू हो गई के वो छुप छुप कर बरछियां और तीर कमान बनाने लगे। उन्हें मिस्ना बिन हारिसा की तरफ से जो हुक्म मिलता था वो सरगोशियों में घर घर पहुंच जाता था। मिस्ना के छापा मारों ने ईराक़ के सरहद से दूर एक दुश्वार गुज़ार इलाक़े में अपना अड्डा बना रखा था। बरछियां और तीर कमान जो घरों में चोरी छुपे तैयार होते थे, रात की तारीकी में उस

अड्डे तक पहुंच जाते थे। बस्तियों से जवान आदमी भी ग़ायब होने लगे। ईरानियों की सरहदी चौकियों पर और उनके फौजी क़ाफलों पर मुसलमानों के शबखून पहले से ज़्यादा हो गए-ये मुसलमान दरपर्दा एक फौज की सूरत में मुनज़्ज़म हो रहे थे और इस फौज की नफरी बढ़ती जा रही थी।

यमामा में ख़ालिद(र०) की फौज में सूरते हाल इस के उलट हो गई। ख़ालिद(र०) ने जब अपनी फौज में जा कर ये ऐलान किया के जो कोई अपने घर को वापस जाना चाहता है वो जा सकता है, तो उस के दस हज़ार नफरी के लश्कर में सिर्फ दो हज़ार आदमी रह गए। आठ हज़ार आदमी मदीना को रवाना हो गए। ख़ालिद(र०) ने खलीफा के नाम पैग़ाम लिखा जिस में उन्होंने लिखा के उन के पास सिर्फ दो हज़ार नफरी रह गई है। ख़ालिद(र०) ने ज़ोर दे कर लिखा के उन्हें फौरी तौर पर कुमक की ज़रूरत है।

अमीरूलमोमेनीन अबु बकर(र०) अपनी मजलिस में बैठे थे। ख़ालिद(र०) के क़ासिद ने उन्हें ख़ालिद(र०) का तहरीरी पैग़ाम दिया। ख़लीफा ने ये ख़त बुलंद आवाज़ में पढ़ना शुरू कर दिया। इस से उन का मक़सद ये था के मजलिस में उन के जो मुशीर और दीगर अफराद बैठे हैं वो सुन लें ताके कोई मशवरा दे सकें।

"अमीरूलमोमेनीन!"-एक मुशीर ने कहा-"ख़ालिद(र०) के लिए कुमक बहुत जल्द चली जानी चाहिए। दो हज़ार नफरी से ज़रतुश्तों के ख़िलाफ लड़ाई की सोची भी नहीं जा सकती।"

"क़ाअक़ा बिन उमरो को बुलाओ"-अमीरूलमोमेनीन ने हुक्म दिया।

थोड़ी देर बाद गठे हुए जिस्म का एक क़दआवर नौजवान ख़लीफा के सामने आन खड़ा हुआ।

"क़ाअक़ा!"-अमीरूलमोमेनीन ने इस नौजवान से कहा-"ख़ालिद(र०) को कुमक की ज़रूरत है। तैयारी करो और फौरन यमामा पहुंचो और उसे कहो के मैं हूं तुम्हारी कुमक।"

"या अमीरूलमोमेनीन!"-एक मुशीर ने हैरान हो कर कहा-"खुदा की क़सम, आप मज़ाक नहीं कर रहे लेकिन उस सालार को जिस की आठ हज़ार फौज उसका साथ छोड़ गई हो सिर्फ एक आदमी की कुमक देना मज़ाक लगता है।"

अमीरूलमोमेनीन अबु बकर(र०) ज़रूरत से ज़्यादा संजीदा थे। उन्होंने काअक़ा बिन उमरो को सर से पांव तक देखा और सुकून की आह ले कर बोले-"मुजाहेदीन के जिस लश्कर में क़ाअक़ा जैसा जवान होगा वो लश्कर शिकस्त नहीं खाएगा।"

क़ाअक़ा उसी वक़्त घोड़े पर सवार हुआ और मदीना से निकल गया। मशहूर

मोअररिख़ तिबरी, इब्ने इस्हाक़, वाक़दी और सैफ बिन उमर ने ये वाक़ेया बयान करते हुए लिखा है के इस से पहले भी ऐसा वाक़ेया हो चुका था। एक सालार अयाज़ बिन ग़नम ने मुहाज़ से मदीना में कासिद भेजा था के कुमक की ज़रूरत है। खलीफा अबु बकर(र०) ने सिर्फ़ एक आदमी अब्द बिन औफ अलहमीरी को कुमक के तौर पर भेजा था। उस वक़्त भी अहले मजलिस ने हैरत का इज़हार किया और अमीरूलमोमेनीन ने यही जवाब दिया था जो क़ाअक़ा को ख़ालिद(र०) के पास भेजने पर दिया।

हकीक़त ये थी के ख़लीफा अबुबकर(र०) ख़ालिद(र०) को मायूस नही करना चाहते थे लेकिन मदीना मे कुमक नही थी। सिर्फ यही एक मुहाज़ नही था, उस वक़्त के तमाम मशहूर सालार मुख्तलिफ मुहाज़ों पर लड़ रहे थे और ये सारी जंग अरतदाद के खिलाफ लड़ी जा रही थी। इस्लाम के दुश्मन देख चुके थे के मुसलमानों को मैदाने जंग में शिकस्त देना बड़ा महंगा सौदा है, चुनांचे इस्लाम क़ो कमज़ोर कर के ख़त्म करने का उन्होंने ये तरीक़ा इख्तियार किया के कई अफराद ने नबुव्वत का दावा कर दिया और अपने अपने तरीक़ों से पैरूकार बना लिए। मुतादि्द ऐसे क़बीले जो इस्लाम कुबूल कर चुके थे, इस्लाम से मुनहरिफ हो गए और इनहेराफ का ये सिलसिला तेज़ होता जा रहा था। अरतदाद के फितने के पीछे यहूदियों का हाथ था।

खलीफा अबु बकर(र०) की खिलाफत इसी फितने से बरसर-ए-पैकार रही। इस फितने को वाज़ों और तबलीग़ी लेक्चरों से नही दबाया जा सकता था। इस के लिए मुसल्लेह जिहाद की ज़रूरत थी। ये जंगी पैमाने की मुहिम थी जिसे सर करने के लिए मदीना फौज से खाली हो गया था। कमज़ोर मुहाज़ों को कुमक देने के लिए दूसरे मुहाज़ों से फौज भेजी जाती थी।

अमीरूलमोमेनीन ने ख़ालिद(र०) को सिर्फ एक आदमी देने पर इक्तेफा न की, उन्होंने दो ताक़तवर कबीलों -मुज़र और रबीआ- के सरदारों को पैग़ाम भेजे के ख़ालिद(र०) को ज़्यादा से ज़्यादा आदमी दें।

❁

"सिर्फ एक आदमी?"-क़ाअक़ा बिन उमरो जब ख़ालिद(र०) के पास पहुंचा तो ख़ालिद(र०) ने अपने ख़ेमे में गुस्से से टहलते हुए कहा-सिर्फ एक आदमी?.... क्या मैं ने अमीरूमोमेनीन को बताया नही के मेरे पास सिर्फ दो हज़ार लड़ने वाले रह गए हैं? और ख़िलाफत मुझ से तवक़्क़ो रखती है के मै फारस की उस फौज से टक्कर लूं जो ज़िरा में डूबी हुई है।"

"मेरे सालार!"-क़ाअक़ा ने कहा-"मैं आठ हज़ार की कमी पूरी नहीं कर

सकता। खुदा की क़सम, कोई कमी रहने भी नही दूंगा। वक्त आने दें। जिस रसूल(स०) का कलमा पढ़ता हूं, उस की रूहे मुक़द्दस के आगे तुम्हें शर्मसार नही होने दूंगा।"

"आफरी अरब के बेटे!"-हसीन व जमील लैला उम्मे तमीम ने क़ाअक़ा के कंधे पर बड़ी ज़ोर से थपकी दे कर कहा-"जिस दीन के तुम परस्तार हो। उसे तुम जैसे नौजवान क़यामत तक जिन्दा रखेंगे।"

"खुदा की क़सम!"-ख़ालिद(र०) की दूसरी बीवी बिन्त मुजाआ ने पुरजोश लहजे में कहा-"ये नौजवान आठ हज़ार की कमी पूरी कर सकता है।"

"मैं यमामा में बैठा नही रहुंगा"-ख़ालिद(र०) ने ऐसे कहा जैसे अपने आप से बात कर रहे हों-"मिस्ना मेरा इन्तेज़ार कर रहा होगा। मैं उसे अकेला नहीं छोड़ूंगा, लेकिन....."ख़ालिद(र०) खामोश हो गए। उन्होंने ऊपर देखा और सरगोशी में कहा-"खुदाए उज़्ज़ोजल! मैं ने तेरे नाम की क़सम खाई है, अपने नाम की ख़ातिर मेरी मदद कर, मुझे हिम्मत और इस्तक़लाल अता फरमा के मैं इस आग में कूद कर इसे ठण्डा कर दूं जिस की ज़रतुश्त इबादत करते है। मैं गवाही देता हूं के तेरे सिवा इबादत के लायक़ कोई नही और मोहम्मद(स०) तेरे रसूल हैं।"

"क्या तू हिम्मत हार रहा है वलीद के बेटे?"-लैला ने कहा-"क्या तूने नहीं कहा था के अल्लाह की राह में लड़ने वालों की मदद अल्लाह करता?"

"मैं हिम्मत नहीं हारूंगा"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"लेकिन मैं शिकस्त का आदी नहीं....अल्लाह मदद करेगा। खुदा की क़सम, मैं जाहो व जलाल का तलबगार नहीं। मुझे फारस के बादशाह का तख्त नही चाहिए। मुझे वो ज़मीन चाहिए जो अल्लाह की है और इस पर बसने वाले अल्लाह और उस के रसूल(स०) के नाम लेवा होंगे।"

❁

वो दो हज़ार मुजाहेदीन जो ख़ालिद(र०) के साथ रह गए थे, यमामा के एक मैदान में ख़ालिद(र०) के सामने खड़े थे। ख़ालिद(र०) घोड़े पर सवार थे।

"मुजाहेदीने इस्लाम!"-ख़ालिद(र०) अपनी इस क़लील फौज से बड़ी बुलंद आवाज़ में मुख़ातिब हुए-"अल्लाह तआला ने हमें इस्लाम का नाम दूर दूर तक पहुंचाने के लिए चुना है। वो जिन्हें अपने घर और अपने माल व अयाल अज़ीज़ थे वो चले गए है। हमें उन से गिला नही। उन्होंने ख़ाक व खून के रास्तों पर हमारा साथ दिया था। बड़े लम्बे अर्से तक वो हमारे हमसफर रहे। अल्लाह इन्हें जिहाद का सिला अता फरमाए....तुम ने मेरा साथ नहीं छोड़ा। इस का अजर मैं नही अल्लाह देगा। हम बहुत

ही ताक़तवर दुश्मन पर हमला करने जा रहे है। मत देखो हमारी तादाद कितनी है। बदर के मैदान में तुम कितने और कुरैश कितने थे! ओहद में भी मुसलमान थोड़े थे। मैं उस वक़्त मुसलमानों के दुश्मन क़बीले का फर्द था। तुम में भी ऐसे मौजूद है जो कुबूले इस्लम से पहले बदर के मैदान में मुसलमानों के खिलाफ लड़े थे? क्या हम ने कहा नही था के इन थोड़े से मुसलमानों को हम घोड़ों तले कुचल डालेंगे? क्या तुम्हें याद नही के हम जो तादाद में बहुत ज़्यादा था। उन के हाथों पस्पा हुए थे जो तादाद में बहुत थोड़े थे?...क्यों....ऐसा क्यों हुआ था?....... इस लिए के मुसलमान हक़ पर थे और अल्लाह हक़ परस्तों के साथ होता है। आज तुम हक़ परस्त हो।"

ख़ालिद(र०) के हाथ में एक कागज़ था जो उन्होंने खोल कर सामने किया।

"अमीरूलमोमेनीन ने हमारे नाम एक पैग़ाम भेजा है। उन्हेंने लिखा है-"मैं ख़ालिद(र०) बिन वलीद को फारसियों के खिलाफ जंग लड़ने के लिए भेज रहा हूं। तुम सब ख़ालिद(र०) की क़यादत में उस वक़्त तक जंग जारी रखोगे जब तक तुम्हें ख़िलाफत की तरफ से हुक्म नही मिलता। ख़ालिद(र०) का साथ न छोड़ना और दुश्मन कितना ही ताक़तवर क्यों न हो, बुज़दिली न दिखाना। तुम उन में से हो जिन्होंने इस इजाज़त के बावजूद के जो घरों को जाना चाहते हैं जा सकते है, अल्लाह की तलवार का साथ नहीं छोड़ा। तुम ने अपने लिए वो रास्ता मुंतख़िब किया है जो अल्लाह की राह कहलाता है। तसव्वुर में लाओ सवाबे अज़ीम को जो अल्लाह की राह पर चलने वालों को मिलता है। अल्लाह तुम्हारा हामी और नासिर हो। तुम्हारी कमी वही पूरी करेगा। उसी की रज़ा और खुश्नूदी के तलबगार हो।"

एक मोअररिख़ अज़ी ने इस ख़त का पूरा मतन अपनी तारीख़ में दिया है। मालूम नही इब्ने खुलदून और इब्ने असीर ने जिन की तहरीरें मुसतनद मानी जाती है, इस ख़त का ज़िक्र क्यों नही किया।

इन दो हज़ार मुजाहेदीन को किसी वाज़ की या इश्तेआल अंगेज़ी की ज़रूरत नही थी। ये तो रज़ाकाराना तौर पर ख़ालिद(र०) के साथ रह गए थे। इन में बेशतर ऐसे थे जिन्होंने रसूले करीम(स०) के दस्ते मुबारक पर बैत की और इस्लम कुबूल किया और आप(स०) की क़यादत मे लड़ाईयां लड़ी थीं। हुजूर अकरम(स०) के विसाल के बाद वो यूं महसूस करते जैसे आप(स०) की रूहे मुक़द्दस उनकी क़यादत कर रही हो।

रसूल अल्लाह(र०) के इन शैदाइयों ने ख़ालिद(र०) की इजाज़त से एक काम ये भी किया के घोड़ों पर सवार हो कर यमामा के गर्दोनवाह में निकल गए और बस्ती बस्ती जा कर लोगों को घुड़सवारी के मुख़्तलिफ करतब दिखाने लगे। मसलन दौड़ते घोड़ों से उतरना और सवार होना, सरपट दौड़ते घोड़ों से निशाने पर तीर चलाना,

नेज़ाबाज़ी और घोड़ों को दौड़ाते हुए तेग़ ज़नी के कमालात-- वो जवानों को फौज में भरती हो जाने पर उकसाते और उन्हें बताते थे के जंग में जा कर उन्हें क्या क्या फायदे हासिल होंगे।

इस के अलावा वो इन लोगों को ये भी बताते थे के वो फौज में भरती न हुए तो ईरानी आकर इन्हें अपना गुलाम बना लेंगे जो उन से बेगार लेंगे, इन्हें देंगे कुछ भी नही और उनकी जवान बहनों, बीवियों और बेटियों को भी अपने कब्ज़े में कर लिया करेंगे। इस खित्ते ने ईरानियों का दौर हुकूमत देखा था, फिर उन्होंने झूटे पैग़म्बरों की शौब्देबाज़ियां देखी थीं और अब वो मुसलमानों की हुकूमत देख रहे थे। मुसलमानों ने इन्हें गुलाम बनाने की कोशिश नहीं की थी। इन के अंदाज़ तौर तरीके़ और रहन सहन बादशाहों जैसे या हुकमरानों जैसे नही थे। वो आम लोगों की तरह रहते, आम लोगों के साथ बातें करते और उनकी सुनते थे। उनकी औरतों की इज़्ज़त महफूज़ थी।

इन लोगों में वो भी थे जिन्होंने इस्लाम कुबूल कर लिया था लेकिन मुसलीमा जेसे शौब्दाबाज़ ने इन्हें गुमराह किया और इस्लाम के रास्ते से हटा लिया था। उन्होंने मुसलीमा की नबुव्वत को मुसलमानों के हाथों बे नक़ाब होते देखा और मुसलीमा की जंगी कुव्वत को मुसलमानों की क़लील नफरी की बे जिगरी के आगे रेज़ा रेज़ा होते देखा था और वो महसूस कर रहे थे के सच्चा अक़ीदा और नज़रया ये इस्लाम ही है जो झूट की ताक़तों को कुचल देता है ओर वो ग़ैबी ताक़त जो सच्चे को झूटे पर हक़ को बातिल पर फतह देती है वो इस्लाम में मुज़मिर है। चुनांचे ये लोग ख़ालिद(र०) की फौज में शामिल होने लगे। ये ख़ालिद(र०) के मुजाहेदीन की कोशिशों का हासिल था।

❁

यमामा में शौर उठा। कुछ लोग दौड़ते हुए बस्ती से बाहर चले गए। औरतें छतों पर जा चढ़ीं। उफक़ से गर्द की घटाऐं उठ रही थीं और यमामा की तरफ बढ़ी आ रही थीं।

"आंधी आ रही है।"

"लश्कर है...किसी का लश्कर आ रहा है।"

"होशियार....ख़बरदार....तैयार हो जाओ।"

ख़ालिद(र०) एक क़िला नुमा मकान पर जा चढ़े। ये आंधी नही, किसी की फौज थी। मुर्तदीन के सिवा और किस की फौज हो सकती थी। ख़ालिद(र०) को अफसोस होने लगा के किस बुरे वक्त उन्होंने अपनी फौज से कहा था के जो घरों को जाना चाहते है चले जाऐं। गर्द के जो बाद उठते आ रहे थे ये बहुत बड़े लश्कर की गर्द

थी। ख़ालिद(र०) के पास सिर्फ दो हज़ार नफरी थी। या वो नफरी थी जो अभी अभी फौज में शामिल हुई थी। इस पर अभी भरोसा नहीं किया जा सकता था लेकिन और हो भी क्या सकता था। यमामा की आबादी थी। इस में लड़ने वाले आदमी मौजूद थे लेकिन ये ख़तरा भी था के ये लोग दुश्मन से मिल जाएंगे। और ये ख़तरा भी के ये पीठ पर वार करेंगे।

"मुजाहेदीने इस्लाम!"–ख़ालिद(र०) ने क़िले नुमा मकान की छत से लल्कार कर कहा–"बहुत बड़े इम्तेहान का वक़्त आ गया है। अल्लाह के सिवा तुम्हारा मददगार कोई नहीं"–ख़ालिद(र०) चुप हो गए क्योंके उन्हें दफों और ढोलों की धमक सुनाई देने लगी थी।

हमलाआवर दफ बजाते नहीं आया करते। धमक बुलंद होती जा रही थी। ख़ालिद(र०) ने उधर देखा। गर्द बहुत करीब आ गई थी और इस में छुपे हुए ऊंट और घोड़े नज़र आने लगे थे। गर्द के दबीज़ पर्दे में आने वाला लश्कर नारे लगाने लगा।

"इस्लाम के पासबानो!"–ख़ालिद(र०) ने ऊपर से चिल्ला कर कहा–"अल्लाह की मदद आ रही है...आगे बढ़ो। इस्तक़्बाल करो। देखो ये कौन है।"

ख़ालिद(र०) दौड़ते नीचे उतरे। अपने घोड़े पर कूद कर सवार हुए और घोड़े को ऐड़ लगा कर बस्ती से निकल गए। आने वाला लश्कर बस्ती से कुछ दूर रूक गया और दो घुड़सवार आगे बढ़े। ख़ालिद(र०) उन तक पहुंचे और घोड़े से उतरे। वो दोनो सवार भी उतरे आए। वो मुज़िर और राबिया क़बीलों के सरदार थे।

"मदीना से इत्तेला आई थी के तुम्हें मदद की ज़रूरत है"–एक सरदार ने कहा–"मैं चार हज़ार आदमी साथ लाया हूं। इन में शतुरसवार हैं, घुड़ सवार भी हैं और पियादे भी।"

"और चार हज़ार की तादाद मेरे क़बीले की है"–दूसरे सरदार ने कहा।

ख़ालिद(र०) ने फर्ते मुसर्रत से दोनों को अपने बाजुओं में ले लिया और खुशी से कांपती हुई आवाज़ में बोले–"अल्लाह की क़सम, अल्लाह ने मुझे कभी मायूस नहीं किया।"

❁

ख़ालिद(र०) के पास अब दस हज़ार नफरी का लश्कर जमा हो गया था। उन्होंने मुज़िर और राबिया के सरदारों को अच्छी तरह समझा दिया के इन्हें कहा जाना है और दुश्मन कितना ताक़तवर है।

"हम तुम्हारी मदद को आए है वलीद के बेटे!"–एक सरदार ने कहा–"हमारी

मंज़िल वही है जो तुम्हारी है।"

"मदीने से हमें इत्तेला मिली है के मीरे लश्कर तुम हो"-दूसरे सरदार ने कहा-"जहां कहोगे चलेंगे, दुश्मन जैसा भी होगा लड़ेंगे।"

ख़ालिद(र०) ने ईरानी सल्तनत के एक हाकिम हरमज़ के नाम पैग़ाम लिखवाया। उस वक़्त ईराक़ ईरान की शहंशाही का एक सूबा था। उस का हाकिम या अमीर हरमज़ था जिस की हैसियत आज कल के गवर्नर जैसी थी। उसका ज़िक्र पीछे आ चुका है। वो बड़ा ही बदतीनत, झूटा और फरेबकार था। कमीनगी में उसका नाम ज़र्बुलमिस्ल के तौर पर इस्तेमाल होता था।

ख़ालिद(र०) ने उस के नाम ख़त लिखवाया:

"तुम इस्लाम कुबूल कर लोगे तो तुम्हारे लिए अमन होगा। अगर नहीं तो अपना इलाक़ा सल्तनत इस्लमिया में शामिल कर दो। इस के हाकिम तुम ही रहोगे और मदीना की खिलाफत को जज़िया अदा करते रहोगे। इस के इवज़ तुम्हारी और तुम्हारे लोगों की सलामती और दिफाअ के ज़िम्मेदार हम होंगे। अगर ये भी मंजूर नहीं तो अपनी सलामती के ज़िम्मेदार तुम खुद होगे। अल्लाह ही जानता है के तुम्हारा अंजाम क्या होगा। फतह व शिकस्त अल्लाह के इख्तियार में है, लेकिन मैं तुम्हें ख़बरदार करना अपना फर्ज़ समझता हूं के हम वो कौम हैं जो मौत की इतनी ही आशिक़ है जितनी तुम्हें ज़िंदगी अज़ीज़ है.....मैं ने अल्लाह का पैग़ाम तुम तक पहुंचा दिया है।"

ख़ालिद(र०) ने ये ख़त एक ऐलची को दे कर कहा के वो दो मुहाफिज़ अपने साथ ले जाए और जिस क़दर तेज़ जा सकता है। ये पैग़ाम हरमज़ तक पहुंचाए और जवाब लाए।

"तुम्हारी वापसी तक मैं यमामा में नहीं होंगा"-ख़ालिद(र०) ने ऐलची से कहा-"मुझे ईराक़ की सरहद पर कहीं ढूंढ लेना। अबला को याद रखना। वहां से तुम्हें पता चल जाएगा के मैं कहा हूं।"

ऐलची की रवांगी के फौरन बाद ख़ालिद(र०) ने दस हज़ार के लश्कर को कूच का हुक्म दे दिया।

❁

ख़ालिद(र०) को मालूम नहीं था के अल्लाह की अभी और मदद उसकी मुंतज़िर है। अमीरूलमोमेनीन अबु बकर(र०) ने शुमाल मशिरक़ अरब के इलाक़ों में आबाद तीन क़बीलों के सरदारों- मज़ऊर बिन ऐदी, हरमला और सुलमा- को पैग़ाम भेजे थे के अपने अपने ज़्यादा से ज़्यादा ऐसे आदमी मिस्ना बिन हारिसा के पास ले जाएं

जिन्हें जंग का तर्जुबा हो और जो पीठ दिखाने वाले न हों। उन्हें ये भी लिखा गया था के ख़ालिद(र०) अपनी फौज ले कर आ रहा है और वो उनका और अपने लश्कर का सालारे आला होगा।

उवला और दीगर ऐसे इलाक़ों में जहां अरवी मुसलमान ईरानियों के महकूम थे, सूरत हाल कुछ और ही हो चुकी थी पहले मिस्ना बिन हारिसा ने इन बस्तियों के चन्द एक जोशीले जवानों को ईरानियों की फौजी चौकियों और फौजी काफलों पर शवखून मारने के लिए अपने साथ रखा हुआ था, लेकिन अब इस महकूम आवादी में से एक फौज तैयार करनी थी। कुछ फौज तो उसने अपने क़बीले बकर बिन वायल से तैयार कर ली थी। जो मदीना के एक सालार अला बिन हज़रमी के दोश बदोश ईराक़ की सरहद के इलाक़ों में मुर्तदीन के ख़िलाफ लड़ी भी थी। मिस्ना ने ईरानियों के महकूम मुसलमानों को इत्तेला भेज दी थी के जिस क़दर जवान आदमी वहां से निकल कर वाहर आ सकें, आजाएं।

मुसलमानों का वहां से निकलना ख़तरे से खाली नहीं था क्योंके ज़रतुश्तों की फौज मुसलमानों की बस्तियों पर कड़ी नज़र रखें थी। उन्हें मालूम था के उन पर शवखून मारने वाले यही मुसलमान है। अव ईरान की फौज को नए अहकाम मिले थे। ये अहकाम जारी करने वाला ईराक़ी सूबे का हाकिम हरमज़ था। चन्द ही दिन पहले का वाक़ेया था के ख़ालिद(र०) का ऐलची आया तो हरमज़ ने चेहरे पर नफरत और रऊनत के आसार पैदा कर लिए थे।

"मैं किसी मुसलमान की सूरत नहीं देखना चाहता"-उस ने कहा था-"लेकिन मैं देखना चाहता हूं के वो क्यों आया है।"

"ज़रतुश्त की क़सम!"-एक दरबारी ने उठ कर हरमज़ से कहा-"ख़ालिद(र०) का ऐलची कोई पैग़ाम लाया होगा जो उसकी अपनी मौत का पैग़ाम साबित होगा।"

"ले आओ उसे अन्दर"-हरमज़ ने कहा।

ख़ालिद(र०) का ऐलची दो मुहाफिज़ों के साथ बड़े तेज़ क़दम उठाता हरमज़ के दरवार में दाख़िल हुआ और सीधा हरमज़ की तरफ गया। दो बरछी बरदारों ने सामने आ कर रोका, लेकिन वो दोनों के दरमियान से गुज़र कर हरमज़ के सामने जा खड़ा हुआ।

"अस्सलाम अलेकुम"-ऐलची ने कहा-"हरमज़ आतिश परस्त को ख़ालिद(र०) सालारे मदीना का सलाम पहुंचे जिन का एक पैग़ाम लाया हूं।"

"हम उस सालार का सलाम कुबूल नहीं करेंगे जिस के ऐलची में इतनी भी

तमीज़ नही के हमारे जाहो जलाल को पहचान सके"-हरमज़ ने हिकारत से कहा-"क्या मदीना में जंगली और गंवार आबाद है? क्या तुम्हें बताया नही गया के तुम एक शाही दरबार में जा रहे हो? तुम्हें दरबार के अदाब भी नही सिखाए गए।"

"मुसलमान सिर्फ अल्लाह के दरबार के आदाब से आगाह होता है-ऐलची ने जुर्रत से सर कुछ और ऊंचा कर के कहा-"उस इन्सान को इस्लाम कोई हैसियत नही देता जो अल्लाह के बंदों पर अपने दरबार का रौब गांठता है। मैं तुम्हारा दरबारी नही, उस सालार का ऐलची हूं जिसे अल्लाह के रसूल(स॰) ने अल्लाह की तलवार कहा है।"

"हरमज़ के सामने वो तलवार कुंद हो जाएगी"-हरमज़ ने फिरऔनों के से लहजे में कहा और हाथ बढ़ा कर तोहकुमाना लहजे में बोला-"लाओ तुम्हारे अल्लाह की तलवार ने क्या पैग़ाम भेजा है।"

ऐलची ने पैग़ाम उस के हाथ में दे दिया जो वो इस तरह पढ़ने लगा जैसे अज़राहे मज़ाक उस ने एक कागज़ हाथ में ले लिया हो। पैग़ाम पढ़ कर उस ने उसे मुठ्ठी में इस तरह चिड़ मुड़ कर दिया जैसे ये एक रद्दी का टुकड़ा हो जिसे वो फैंक देगा।

"क्या कीड़े मकोड़े ये ख्वाब देख रहे हैं के वो एक चट्टान से टक्कर ले सकेंगे?"-हरमज़ ने कहा-"क्या मदीना वालों को किसी ने बताया नहीं के हरकुल भी इस चट्टान से टकरा कर अपना सर फौड़ चुका है? क्या हम तुम्हें अपनी फौज की एक झलक दिखाऐं ताके तुम अपने सालार को और अपने बूढ़े ख़लीफा को बता सको के ईराक़ की सरहदों की तरफ देखने की भी जुर्रत न करें?"

"मुझे सलारे आला ने सिर्फ ये हुक्म दिया था के ये पैग़ाम हरमज़ तक पहुंचा कर इस का जवाब लाऊं"-ऐलची ने कहा-"मैं तुम्हारी किसी बात का जवाब नहीं दे सकता क्योंके मुझे ऐसा कोई हुक्म नही मिला।"

"तुम जैसे ऐलची के साथ हम ये सुलूक किया करते हैं के उसे कैद खाने में फैंक देते हैं"-हरमज़ ने कहा-"अगर हम रहम करें तो उसे कैद खाने की अज़ीयत से बचाने के लिए जल्लाद के हवाले कर देते है।"

"मेरी जान मेरे अल्लाह के हाथ में है"-ऐलची ने पहले से ज्यादा जुर्रत से कहा-"अगर तुम मुसलमान होते तो तुम्हें इल्म होता के मेहमान के साथ क्या सुलूक किया जाता है, लेकिन अल्लाह के मुनकिर और आग के पुजारी से इससे बेहतर सुलूक की तवक्क़ो नही रखी जा सकती। मुझे जल्लाद के हवाले कर दो, लेकिन ये सोच लो के मुसलमान मेरे और मेरे मुहाफिज़ों के खून के एक एक कतरे का इन्तेक़ाम लेंगे।"

हरमज़ बिदक कर सीधा हो बैठा। गुस्से से उसकी आंखें लाल सुर्ख़ हो गईं। वैसी ही सुर्ख़ी उस के चेहरे पर आ गई जैसे वो ख़ालिद(र०) के इस ऐलची को कच्चा चबा जाएगा।

"निकाल दो इसे हमारे दरबार से" -हरमज़ ने गरज कर कहा।

चार पांच दरबारी जिन के हाथों में बरछियों थीं, तेज़ी से आगे बढ़े। ऐलची के दोनों मुहफिज़ों ने तलवारें निकाल लीं। पहले वो दोनों ऐलची के पीछे खड़े थे, अब वो ऐलची के पहलूओं में इस तरह खड़े हो गए के उन की पीठें ऐलची की तरफ थीं।

"हरमज़!" -ऐलची ने बारौब आवाज़ में कहा- "जंगजू मैदाने जंग में लड़ा करते हैं। अपनी ताक़त का घमंड अपने दरबार में न दिखा। मुझे अपने सालार के पैग़ाम का जवाब मिल गया है। तुझे हमारी कोई शर्त कुबूल नहीं..... क्या यही है तेरा जवाब?"

"निकल जाओ इस दरबार से" -हरमज़ ने गुस्से से कांपती हुई बुलंद आवाज़ में कहा- "अपने सालार से कहना के मेरी ताक़त को मैदाने जंग में आज़मा ले।"

हरमज़ के बरछी बरदार दरबारी उस के इशारे पर रूक गए थे। ऐलची के मुहाफिज़ों ने तलवारें नियामों में डाल लीं। ऐलची पीछे को मुड़ा और तेज़ क़दम दरबार से निकल गया। दोनों मुजहाफिज़ उसके पीछे पीछे जा रहे थे।

हरमज़ ने मुळी खोली जिस में ख़ालिद(र०) का पैग़ाम चुड़ मुड़ किया हुआ था। चुंके ये पैग़ाम बारीक खाल पर लिखा हुआ था इसलिए ये मुळी खुलते ही सीधा हो गया। हरमज़ ने ये पैग़ाम फारस के शहंशाह उर्द शहर की तरफ इस इत्तेला के साथ भेज दिया के वो मुसलमानों के मुक़ाबले लिए फौरी तौर पर सरहद की तरफ कूच कर रहा है और वो मुसलमानों को सरहद से दूर ही ख़त्म कर देगा।

"हरमज़ का इक़बाल बुलंद हो" -उस के एक दरबारी ने कहा- "जिस दुश्मन को आप सरहद से दूर ख़त्म करना चाहते हैं वो पहले ही सरहद के अंदर मौजूद है।"

हरमज़ ने सवालिया निगाहों से उस की तरफ देखा।

ये वो अरबी मुसलमान हैं" - उस दरबारी ने कहा- "जो दजला और फरात के उस इलाक़े में आबाद हैं जहां ये दोनों दरिया मिलते हैं। ये इलाक़ा उबला तक चला जाता है। उन्होंने कभी की सल्तनते ईरान के खिलाफ जंग शुरू कर रखी है। मदीना वालों ने हम पर हमला किया तो ये मुसलमान उन से मिल जाएंगे।"

"मैं एक अर्ज़ करने की जुर्रत करता हूं" -एक फौजी मुशीर ने कहा- "कई दिनों से इत्तेलाएं मिल रही हैं के मुसलमान जो लड़ने के क़ाबिल हैं यानी जवान हैं वो अपनी बस्तियों से ग़ायब होते जा रहे हैं। वो यक़ीनन मिस्ना बिन हारिसा तक पहुंच रहे हैं।

इस में कोई शक नही के वो फौज की सूरत मे मुनज़्ज़म हो रहे हैं।"

"क्या तुम ने फरार का ये सिलसिला रोकने के लिए कोई कारर्वाई की है?"-हरमज़ ने पूछा।

"फौजी दस्ते बाक़ायदा निगरानी कर रहे हैं"-हरमज़ ने गुस्से और तंज़ से कहा-"सरहदी चौकियों को अभी हुक्म भेजो के मुसलमानों की बस्तियों पर छापे मारते रहें। हर बस्ती की तमाम आबादी को बाहर निकाल कर देखें के कितने आदमी ग़ायब हैं और वो कब से ग़ायब हैं। जिस घर का आदमी ग़ायब हो उस घर को आग लगा दो। कोई मुसलमान सरहद की तरफ जाता नज़र आए तो उसे पकड़ कर कत्ल कर दो या दूर से उस पर तीर चला दो।"

❁

उस इलाके में मुसलमानों की एक बस्ती थी जो सरहद के बिल्कुल क़रीब थी। ईरानी फौज की थोड़ी सी नफरी ने इस बस्ती में जा कर ऐलान किया के बच्चे से बूढ़े तक बाहर निकल आऐं। सिपाहियों ने घरों में घुस घुस कर लोगों को बाहर निकालना शुरू कर दिया। औरतों और मर्दो को अलग खड़ा कर लिया गया। सिपाहियों का अंदाज़ बड़ा ही ज़ालेमाना था। वो गालियों की ज़बान में बात करते और हर किसी को धक्के दे दे कर इधर से उधर करते थे। उन्होंने ऐलान किया के उन आदमियों के नाम बताते जाऐं और उन के घर दिखाऐ जाऐं जो बस्ती में नहीं है।

तमाम अबादी शामोश रही।"

"जवाब दो"-ईरानी कमांडर ने गुस्से से चिल्लाते हुए कहा।

उसे कोई जवाब न मिला। कमांडर ने आगे बढ़ कर एक बुढ़े आदमी को गिरेबान से पकड़ कर अपनी तरफ घसीटा और उस से पूछा के इस हुजूम में कौन कौन नहीं है।

"मुझे मालूम नहीं"-बूढ़े ने जवाब दिया।

कमांडर ने नियाम से तलवार निकाल कर बुढ़े के पेट में घोंप दी और तलवार ज़ोर से बाहर को खींची। बुढ़ा दोनों हाथ पेट पर रख कर गिर पड़ा। कमांडर एक बार फिर लोगों की तरफ मुतवज्जा हुआ। अचानक एक तरफ से आठ दस घोड़े सरपट दौड़ते आए। उन के सवारों के हाथें में बरछियों थी। ईरानी फौजी देखने भी न पाए थे के ये कौन है उन में से कई एक के जिस्मों में बरछियां उतर चुकी थीं और घोड़े जिस तरह आए थे, उसी तरह सरपट दौड़ते बस्ती से निकल गए। ईरानी फौजियों की तादाद चालिस पचास थी। उन में भगदड़ मच गई। उन में से आठ दस ज़मीन पर पड़े तड़प रहे थे।

घोड़ों के क़दमों की धमक सुनाई दे रही थी जो हटती गई और अब फिर क़रीब आने लगी थी। अब फौजियों ने भी बरछियां और तलवारें तान ली और उस तरफ देखने लगे जिधर घोड़ों की आवाज़ें आ रही थी। पीछे से बस्ती की आबादी उन पर टूट पड़ी। इन सिपाहियों में से वही ज़िन्दा रहे जो किसी तरफ भाग निकले थे। जब सवार बस्ती में पहुंचे तो उन्हें घोड़े रोकने पड़े क्योंके उन के रास्ते में बस्ती के लोग हायल थे जो ईरानी फौजियों का कुश्त व खून कर रहे थे।

इस से पहले मुसलमानों ने यूं खुले बंदों ईरानी फौजी पर हमले करने की जुर्रत कभी नही की थी। एक ईरानी सिपाही पर हाथ उठाने की सज़ा ये थी के हाथ उठाने वाले के पूरे ख़ानदान को ख़त्म कर दिया जाता था। अब यहां के मुसलमान इस लिए दिलेर हो गए थे के उन्हें इत्तेला मिल चुकी थी के मदीने की फौज आ गई है। जिन सवारों ने ईरानी फौजियों पर हमला किया था वो कुछ इस बस्ती के रहने वाले जवान थे कुछ दूसरी बस्तियों के थे। ये महज़ इत्तेफाक़ था के वो मिस्ना बिन हारिसा की तरफ जाते हुए इस बस्ती के क़रीब से गुज़र रहे थे। उन्होंने इस बस्ती की आबादी को बाहर खड़े देखा और ईरानी फौजियों को भी देखा। वो छुप कर आगे निकल सकते थे लेकिन ईरानी कमांडर ने बूढ़े के पेट में तलवार घोंपी तो सब ने आपस में सलाह मावरा किए बग़ैर घोड़ों के रूख इस तरफ कर लिए। ईरानी फौजियों ने तो उन्हें जाते हुए देखा ही नहीं था। ये अल्लाह की मदद थी जो इस मज़लूम बस्ती को बरवक़्त मिल गई।

ये बस्ती तो खुश क़िस्मत थी के इसे मदद मिल गई और ईरानियों की भयानक सज़ा से बच गई। मुसलमानों की दूसरी बस्तियों पर तो जैसे क़यामत टूट पड़ी थी। हर बस्ती के हर घर की तलाशी हो रही थी। ये देखा जा रहा था के कितने आदमी ग़ायब हो चुके थे। हर बस्ती में ईरानी कई आदमियों को क़त्ल कर रहे थे। बाज़ मकानों को उन्होंने नज़रे आतिश भी कर दिया।

❁

तीन चार रोज़ ये सिलसिला चला। इस के बाद ईरानी फौजी को बस्तियों की तरफ तवज्जेह देने की मोहलत न मिली। हरमज़ अपनी फौज ले कर आ गया। सरहदी फौज को भी उस ने अपने साथ ले लिया और सरहद से निकल गया। उस का इरादा ये था के ख़ालिद(र०)को वो सरहद से दूर रोक लेगा। हरमज़ की पेश क़दमी बहुत तेज़ थी।

हरमज़ अपनी फौज के साथ अपनी सरहद से बहुत दूर काज़मा के मुक़ाम पर पहुंच गया और फौज को वही खेमा ज़न कर दिया। ये मुक़ाम यमामा और उबला के

रास्ते पड़ता था। हरमज़ को मालूम नहीं था के उसकी पेशक़दमी को देखने वाले मौजूद है। ख़ालिद(र०) अभी काज़मा से दूर थे के उन्हें ईराक़ की सिम्त से आते हुए दो शुतर सवार मिले। उन्होंने ख़ालिद(र०) को बताया के ज़रतुश्तों की फौज काज़मा में ख़ेमा ज़न है। ख़ालिद(र०) ने वहीं से रास्ता बदल दिया। ये शुतर सवार मिस्ना के भेजे हुए थे। उन्होंने ख़ालिद(र०) को ये भी बताया के वो हजीर के मुक़ाम तक इस तरह पहुंच जांए के ज़रतुश्तों की फौज के साथ उसकी टक्कर न हो। शतुर सवारों ने ख़ालिद(र०) को एक खुशखबरी ये सुनाई के उन के लिए आठ हज़ार नफरी की फौज तैयार है। ये फौज इस तरह तैयार हुई थी के मिस्ना बिन हारिसा, मज़ऊर बिन ऐदी, हरमला और सुलमा ने दो दो हज़ार लड़ने वाले जवान इक्ळे कर लिए थे। इस तरह ख़ालिद(र०) की फौज की तादाद अळारह हज़ार हो गई।

ख़ालिद(र०) ने अपनी पेशकदमी का रास्ता इस तरह बदल दिया के काज़मा के दूर से गुज़र कर हजीर तक पहुंच सकें, लेकिन हरमज़ के जासूस भी सहरा में मौजूद थे। उन्होंने ख़ालिद(र०) के लश्कर को दूर के रास्ते से जाते देख लिया। आगे वो रास्ता था जो हजीर से नब्बाज की तरफ जाता था। हरमज़ ने अपनी फौज को ख़ेमें उखाड़ने और बहुत थोड़े वक्त में हजीर की जानिब कूच काने का हुक्म दिया। हजीर के इर्द गिर्द पानी के कुऐं मौजूद थे। हरमज़ ने वहां ख़ालिद(र०) से पहले पहुंच कर ख़ेमें गाड़ दिये। इस तरह पानी ईरानियों के कब्ज़े में चला गया।

"ख़ालिद(र०) अभी हजीर से कुछ दूर थे के एक बार फिर दोनों शुतर सवार उन के रास्ते में आ गए और ख़ालिद(र०) को इत्तेला दी के दुश्मन हजीर के मुक़ाम पर पानी के कुओं पर काबिज़ हो चुका है। ख़ालिद(र०) ने कुछ और आगे जा कर ऐसी जगह पड़ाव का हुक्म दे दिया जहां दूर दूर तक पानी की एक बुंद नहीं मिल सकती थी। फौज ने वहां पड़ाव डाल तो दिया लेकिन ख़ालिद(र०) को बताया गया के फौज में बे इतमेनानी पाई जाती है के पड़ाव ऐसी जगह किया गया है। जहां दूर दूर तक पानी का नाम व निशान नहीं।

"मै ने कुछ सोच कर यहां पड़ाव किया है"-ख़ालिद(र०) ने कहा- "तमाम लश्कर से कहो के दुश्मन अगर पानी पर क़ाबिज़ है तो परेशान न हो। हमारी पेहली लड़ाई पानी के लिए होगी। पानी उसी को मिलेगा जो जान की बाज़ी लगा कर लड़ेगा। तुम ने दुश्मन को पानी से महरूम कर दिया तो समझो के तुम ने जंग जीत ली।"

सालारे आला का ये पैग़ाम सारे लश्कर को सुना दिया गया और सब एक खूंरेज़ जंग लड़ने के लिए तैयार हो गए।

अब लश्कर की नफरी अठ्ठारह हज़ार हो गई थी। मिस्ना बिन हारिसा, मज़ऊर बिन ऐदी, हरमला और सुलमा दो दो हज़ार आदमी साथ लिए ख़ालिद(र०) से आ मिले थे। ख़ालिद(र०) ने जो ऐलची हरमज़ के पास भेजा था, वो भी इसी पड़ाव में ख़ालिद(र०) के पास आया और बताया के हरमज़ ने उस के साथ कैसा तौहीन आमेज़ सुलूक किया है।

"उस की एक लाख दरहम की टोपी ने उसका दिमाग़ खराब कर रखा है"-मिस्ना बिन हारिसा ने जो पास ही बैठा हुआ था, कहा-"खुदा ये नहीं देखता के किसी इन्सान के सर पर क्या रखा है, खुदा तो देखता है के उस के सर के अंदर क्या है। उस के अज़ायम क्या है और उस की नीयत क्या है और वो सोचता क्या है।"

"एक लाख दरहम की टोपी?"-ख़ालिद(र०) ने हैरान हो कर पूछा-"क्या हरमज़ इतनी क़ीमती टोपी पहनता है?"

"फारस की शहंशाही का एक दस्तूर है"-मिस्ना बिन हारिसा ने जवाब दिया-"इन के हां हस्ब व नसब और हैसियत को देख कर इस के मुताबिक़ टोपी पहनाई जाती है जो इन के शंहशाह की तरफ से अता होती है ज़्यादा क़ीमती टोपी सिर्फ वो अफराद पहनते हैं जो आला हस्ब व नसब के हों और जिन्हों ने रिआया में भी और शाही दरबार में भी तौक़ीर और वजाहत हासिल कर रखी हो। इस वक्त हरमज़ सब से ज़्यादा क़ीमती टोपी पहनता है। कोई और एक लाख दरहम की टोपी नहीं पहन सकता। इस टोपी में बेश क़ीमत हीरे लगे हुए हैं और इस की कल्ग़ी भी बहुत क़ीमती है।"

"फिरऔनों ने अपने सरों पर खुदाई टोपियां सजा ली थीं"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"कहां है वो? कहां है उन की टोपियां!....मुझे किसी की बेश क़ीमत टोपी मरऊब नहीं कर सकती न किसी की टोपी तलवार के वार को रोक सकती है। मुझे ये बताओ के आतिश परस्तों की फौज लड़ने में कैसी है और मैदाने जंग में कितनी तेज़ी से नक़्ल व हरकत करती है।"

"फारस के सिपाही की ज़िरा और हथियार देख कर खौफ सा आता है"-मिस्ना बिन हारिसा ने ख़ालिद(र०) को बताया-"सर पर लोहे की ज़ंजीरों की खुद, बाजुओं पर किसी और धात के खोल और टांगें आगे की तरफ से मोटे चमड़े या धात से महफूज़ की हुईं, हथियार इतने के हर सिपाही के पास एक बरछी, एक तलवार, एक वज़नी गुर्ज़, एक कमान और एक तर्कश होती है जिसमें हर सिपाही तीस तीर रखता है।"

"और लड़ने में कैसे हैं?"

"जुर्रत और अक्ल से लड़ते हैं" -मिस्ना बिन हारिसा ने जवाब दिया- "इन की दिलेरी मशहूर है।

"मिस्ना!" -खालिद ने कहा- "क्या तुम ने महसूस नही किया के आतिश परस्तों के सिपाही कितने कमज़ोर हैं और उनकी जुर्रत की हद क्या है?....उनकी जुर्रत की हद आहनी खुद और बाजुओं और टांगों पर चढ़ाए हुए खोलों तक है। वो नही जानते के जज़बा लोहे को काट देता करता है। लोहे की तलवार और बरछी की अन्नी जज़बे को नहीं काट सकती। ज़िरा और धात या चमड़े के खोल हिफाज़त के छोटे ज़रिये हैं। एक खोल कट गया तो सिपाही अपने आप को गै़र महफूज़ समझने लगता है, फिर उस में इतनी सी जुर्रत रह जाती है के वो अपने आप को बचाने की और भागने की कोशिश करता है। अल्लाह के सिपाही की ज़िरा इस का अकीदा और ईमान है... ..मै तुम्हें फारसियों की एक और कमज़ोरी दिखाऊं?" -खालिद ने कासिद से कहा- "सालारों और कमांडरों को फौरन बलाओ।"

❁

"फौरी तौर पर काज़मा की तरफ कूच करो" -खालिद ने हुक्म दिया- "और कूच बहुत तेज़ हो।"

हरमज़ हज़ीरा के इलाके में पड़ाव किए हुआ था। वो काज़मा से अपनी फौज को यहां लाया था क्योंके खालिद का लश्कर हज़ीरा की तरफ आ गया था। अब ये लश्कर फिर काज़मा की तरफ जा रहा था। दोनों फौजों के चन्द एक घुड़सवर एक दूसरे की खे़मा गाह को देखते रहते थे। हरमज़ को इत्तेला मिली के मुसलमानो का लश्कर काज़मा की तरफ कूच कर गया है तो हरमज़ ने अपनी फौज को काज़मा की तरफ कूच का हुक्म दे दिया।

हरमज़ को उबला का बहुत फिक्र था। ये ईरानियों की बादशाही का बहुत अहम शहर था। ये तिजारती मरकज़ था। हिन्दुस्तान के ताजिरों के काफले यहीं से जाया करते थे और हिन्दुस्तान खसूसन सिन्ध का माल इसी मुकाम पर आया करता था। ये ईरानियों का फौजी मरकज़ भी था। इस इलाके में रहने वाले मुसलमानों को दबाए रखने के लिए उबला में फौज रखी गई थी। हरमज़ की कोशिश ये थी के खालिद का लश्कर उबला तक न पहुंच सके। हरमज़ को उबला पहले से ज़्यादा खतरे मे नज़र आने लगा क्योंके मुसलमान उबला के जुनूब में काज़मा की तरफ जा रहे थे।

मुसलमानों के लिए कूच इतना मुश्किल नहीं था जितना ईरानियों के लिए दुश्वार था। मुसलमानो के पास ऊंट और घोड़े खासे ज़्यादा थे। सिपाही हल्के फुल्के

थे। वो असानी से तेज़ चल सकते थे। इन के मुक़ाबले में ईरानी सिपाही ज़िरा और हथियारों से लदे हुए थे इस लिए वो तेज़ नही चल सकते थे। एक दो दिन ही पहले वो काज़मा से हज़ीरा आए थे। इस कूच की थकन अभी बाक़ी थी के उन्हें एक बार फिर कूच करना पड़ा और वो भी बहुत तेज़ ताके मुसलमानों से पहले काज़मा के इलाक़े में पहुंच जाएं। इस कूच ने रास्ते में ही इन्हें थका दिया।

हरमज़ की फौज जब काज़मा में मुसलमानों के बिलमुक़ाबिल पहुंची तो निढाल हो चुकी थी। मुसलमान सिपाही सहराई लड़ाईयों और सहरा में नक़ल व हरकत के आदी थे। ख़ालिद ने हरमज़ को ये तास्सुर देने के लिए के वो अपने लश्कर को आराम नही करने देगा, लश्कर को तीन हिस्सो में तक़सीम कर दिया। खुद क़ल्ब में रहे। दायें और दायें बायें पहलूंओं की कमान आसिम बिन उमरो और ऐदी बिन हातिम के पास थी। आसिम बिन उमरो क़ाअक़ा बिन उमरो के भाई थे और ऐदी बिन हातिम क़बीले तेय के सरदार थे जो दराज़क़द, मज़बूत ज़िस्म वाले बड़े बहादुर जंगजू थे।

ख़ालिद(र०) को अपनी फौज को लड़ाई की तरतीब में करते देख कर हरमज़ ने भी अपनी फौज को तीन हिस्सों में तक़सीम कर दिया। क़ल्ब में वो खुद रहा और दोनों पहलूओं की कमान शाही ख़ानदान के दो अफराद, क़बाज़ और अनुशजान, को दी। हरमज़ देख रहा था के उसकी फौज पसीने में नहा रही है और सिपाहियो की सांसें फूली हुई हैं। उन्हें आराम की ज़रूरत थी लेकिन मुसलमान जंगी तरतीब में आ चुके थे। हरमज़ ने अपनी फौज की तरतीब ऐसी रखी के काज़मा शहर उसकी फौज के पीछे आ गया। उन के सामने रैगिस्तानी मैदान था और एक तरफ बे आब व गया टीला नुमा पहाड़ियों का सिलसिला था।

ख़ालिद(र०) ने अपनी फौज को इस तरह आगे बढ़ाया के ये पहाड़ी सिलसिला उन की पुश्त की तरफ हो गया।

अप्रैल 633ई० के पहले हफ्ते का एक दिन था जब मुसलमान पहली बार आतिश परस्त ईरानियों के मुक़ाबिल आए।

"अगर ख़ालिद(र०) बिन वलीद मारा जाए तो ये मआरका बग़ैर लड़े ख़त्म हो सकता है"-हरमज़ के एक सालार ने उसे कहा-"मुसलमान जो इतनी दूर से आए हैं, अपने सालार की मौत के बाद हमारे मुक़ाबले में ठहर नहीं सकेंगे।"

"फौज से कहो ज़ंजीरें बांध लें"-हरमज़ ने सालार से कहा-"मै इन के सालार का बंदोबस्त करता हूं। सब से पहले यही मरेगा"-उस ने सालार को भेज का अपने मुहाफिज़ों को बुलाया और उन्हें कुछ बताया।

ज़ंजीरें बांध लेने का मतलब ये था के ईरानी फौजी के सिपाही अपने आप को इस तरह ज़ंजीरों से बांध लेते थे के पांच से दस सिपाही एक लम्बी ज़जीर में बंध जाते थे। इन के दरमियान इतना फासला होता था के वो आसानी से लड़ सकते थे। ज़ंजीरें बांध कर लड़ने से एक फायदा ये होता था के कोई सिपाही भाग नही सकता था। दूसरा फायदा ये के उनके दुश्मन के घुड़सवार जब उन पर हल्ला बोलते थे तो सिपाही ज़ंजीरें सीधी कर देते। ज़ंजीरे घोड़ों की टांगों के आगे आजाती और घोड़े गिर पड़ते थे, लेकिन ज़ंजीरों का बहुत बड़ा नुक़सान ये था के एक ज़ंजीर बंधे हुए सिपाही में से एक दो ज़ख्मी या हलाक हो जाते तो बाक़ी बे बस हो जाते और दुश्मन का आसान शिकार बनते थे।

इस जंग को जो हरमज़ और ख़ालिद(र०) के दरमियान लड़ी गई, जंगे सलासल यानी ज़ंजीरों की जंग कहते है।

मुसलमानों ने जब देखा के ईरानी अपने आप को ज़ंजीरों से बांध रहे हैं तो वो हैरान हाने लगे। किसी ने बुलंद आवाज़ से कहा-"वो देखो फारसी अपने आप को हमारे लिए बांध रहे हैं।"

"फतह हमारी है"-ख़ालिद(र०) ने बुलंद आवाज़ से कहा-"अल्लाह ने इन के दिमाग़ों पर मोहर लगा दी है।"

ख़ालिद(र०) ने जो कुछ सोच कर काज़मा से हज़ीर और और हज़ीर से काज़मा को कूच किया था, वो फायदा इन्हें नज़र आ गया था। हरमज़ की फौज जो ज़िरा और हथियारों से लदी हुई थी, लड़ाई शुरू होने से पहले ही थक गई थी। ख़ालिद(र०) ने ईरानियों को आराम की मोहलत नही दी-थी। अब ईरानियों ने अपने आप को ज़ंजीरों में बांध लिया था। ख़ालिद(र०) ने सोच लिया के वो क्या चाल चलेंगे और ईरानियों को किस तरह लड़ाएंगे।

हरमज़ ने अपने घोड़े को ऐड़ लगाई और दोनों फौजों के दरमियान ऐसी जगह आ कर रूक गया जहां ज़मीन कटी फटी और कहीं कही टीले थे। उस के मुहाफिज़ उस से कुछ दूर आ कर रूक गए।

"कहां है ख़ालिद(र०)!"-हरमज़ ने लल्कार कर कहा-"आ, पहले मेरा और तेरा मुक़ाबला हो जाए।"

ये उस ज़माने का दस्तूर था के जंग शुरू करने से पहले दोनों फौजों के सालार ज़ाती मुक़ाबलों के लिए एक दूसरे को लल्कारते थे। दोनों फौजों के आदमी इन्फरादी तौर पर आगे जा कर तलवारों से भी लड़ते थे और कुश्ती भी करते थे। नतीजा दोनों में से एक की मौत होता था। जंगे सलासल में हरमज़ ने खुद आगे आकर ख़ालिद को

इन्फरादी मुकाबले के लिए लल्कारा। हरमज़ माना हुआ जंगजू और बहादुर आदमी था। तेग़ ज़नी की महारत के अलावा उस के जिस्म में बहुत ताक़त थी।

ख़ालिद(र०) की उम्र अड़तालिस साल हो चुकी थी। वो जंगी चालों के माहिर थे। उनके जिस्म में अच्छी खासी ताक़त थी लेकिन हरमज़ ज़्यादा ताक़तवर था। उसकी लल्कार पर ख़ालिद(र०) ने घोड़े को ऐड़ लगाई और हरमज़ के सामने जा रूके। हरमज़ घोड़े से उतरा और ख़ालिद(र०) को घोड़े से उतरने का इशारा किया। दोनों ने तलवारें निकाल ली।

दोनों ने एक दूसरे पर बढ़ बढ़ कर वार किए, पैंतरे बदले, घूम घूम कर एक दूसरे पर आए मगर तलवारें आपस में ही टकराती रहीं। फिर ख़ालिद(र०) के हाथों और पैंतरों में फुर्ती आ गई। दोनों फौजें शौर व गुल बपा कर रही थी। हरमज़ महसूस करने लगा के वो ख़ालिद(र०) की तलवार से बच नही सकेगा। वो तेज़ी से पीछे हट गया और उस ने तलवार फैंक दी।

"तलवारें फैसला नहीं कर सकेंगी"-हरमज़ ने कहा-"आ ख़ालिद(र०)! हथियार के बग़ैर आ और कुश्ती लड़।"

ख़ालिद(र०) तलवार फैंक कर कुश्ती के लिए आगे बढ़े और दोनों गुथ्थम गुथ्था हो गए। कुश्ती में हरमज़ का पल्ला भारी नज़र आता था। मगर मोअररिख़ लिखते हैं के हरमज़ की चाल कुछ और थी। उसने अपने मुहाफिज़ों को पहले से बता रखा था के वो जब ख़ालिद(र०) को इतनी मज़बूती से पकड़ ले के ख़ालिद(र०) हिलने के क़ाबिल न रहें तो मुहाफिज़ दोनों को इस तरह घेरे में ले लें के उनकी नीयत और इरादे पर शक न हो यानी वो तमाशाई बने रहें और इन में से एक मुहाफिज़ ख़ंजर निकाल कर ख़ालिद(र०) का पेट चाक कर दे। जंगजू इस तरह धोका नहीं दिया करते थे लेकिन हरमज़ कमीगी की वजह से मशहूर था।

हरमज़ के मुहाफिज़ आगे बढ़ आए और अपनी फौज की तरह नारे लगाते नरग़े की तरतीब में होते गए। वो घोड़ों पर सवार नही थे। वो घेरा तंग करते गए, हत्ता के दोनों के क़रीब चले गए। ख़ालिद(र०) की तवज्जह बट गई। हरमज़ ने फुर्ती से ख़ालिद(र०) के दोनों बाज़ू इस तरह जकड़ लिए के उस के बाज़ू ख़ालिद(र०) के बग़लों में थे। मुहाफिज़ करीब आ गए।

हरमज़ नें अपनी ज़बान में मुहाफिज़ों से कुछ कहा। ख़ालिद(र०) उसकी ज़बान तो न समझ सके, इशारा समझ गए। उन्होंने ख़तरे को भांप लिया और जिस्म की तमाम तर ताक़त सर्फ कर के इतनी ज़ोर से घुमे के हरमज़ को भी अपने साथ घुमा लिया, फिर ख़ालिद(र०) एक जगह खड़े घूमते रहे। हरमज़ के पांव ज़मीन से उठ

गए। ख़ालिद(र०) ने हरमज़ के बाज़ू अपनी बग़लों में जकड़ लिए थे और अपने हाथ हरमज़ की बग़लों में ले जा कर उसे घुमाते रहे। इस तरह मुहाफिज़ों का दायरा खुलता गया और उनमें से किसी को आगे बढ़ कर ख़ालिद(र०) पर वार करने का मौक़ा न मिला, लेकिन ख़ालिद का ये दांव ज़्यादा देर तक नही चल सकता था। वो थक चुके थे।

अचानक एक तरफ से एक घोड़ा सरपट दौड़ाता आया जिसे हरमज़ के मुहाफिज़ों के दायरे को काटता गुज़र गया और तीन मुहाफिज़ ज़मीन पर तड़पने लगे। इन में से एक को घोड़े ने कुचल डाला था और दो को घुड़सवार की तलवार ने काट दिया था। घोड़ा आगे जा कर मुड़ा और फिर हरमज़ के मुहाफिज़ों की तरफ आया। मुहाफिज़ों ने अब उससे बचने की कोशिश की फिर भी तीन मुहाफिज़ गिरे और तड़पने लगे। बाकी भाग गए। और सवार अपनी फौज से जा मिला।

ये सवार नौजवान क़ाअक़ा बिन उमरो(र०) था जिसे खलीफा अबु वकर(र०) ने कुमक के तौर ख़ालिद(र०) की तरफ भेजा और कहा था-"जिस लश्कर में क़ाअक़ा(र०) जैसा जवान होगा वो लश्कर शिकस्त नही खाएगा।"

इस सवार से नज़रें हटा कर सब ने हरमज़ और ख़ालिद(र०) को देखा। हरमज़ पीठ के बल ज़मीन पर पड़ा था और ख़ालिद(र०) उस के पेट पर बैठे उस के सीने से अपना खंजर निकाल रहे थे। खंजर से हरमज़ का खून टपक रहा था। क़ाअक़ा(र०) ने हरमज़ के मुहाफिज़ों की नीयत भांप ली थी और किसी के हुक्म के बग़ैर घोड़े को ऐड़ लगा कर मुहाफिज़ों पर जा हल्ला बोला और ख़ालिद(र०) को बचा लिया था।

❁

ख़ालिद(र०) हरमज़ की लाश से उठे। हरमज़ की लाख दरहम की टोपी ख़ालिद(र०) के हाथ में थी। टोपी और उस के खून में लिथड़ा हुआ खंजर बुलंद कर के ख़ालिद(र०) ने अपनी फौज को खुले हमले का हुक्म दे दिया। उन के प्रहले से दिये हुए अहकाम के मुताविक़ मुसलमान लश्कर के दोनों पहलू खुल गए और इस ने दायें और बायें से ईरानियों पर हमला किय। ईरानी अपने हरमज़ जैसे सालार की मौत से बद्दिल हो गए थे लेकिन अपनी रिवायती शुजाअत से वो दस्तबरदार न हुए। उन की तादाद मुसलमानों की निस्बत खासी ज़्यादा थी। हथियारों और घोड़ों के लिहाज़ से भी इन्हें बरतरी हासिल थी। वो मुसलमानों के मुक़ाबले में जम गए। नज़र यही आ रहा था के ईरानियों को शिकस्त नहीं दी जा सकेगी। या ये के उन्हें शिकस्त देने के लिए बे शुमार जानें कुर्बान करनी पड़ेंगी।

ईरानी सिपाही पांच पांच, सात सात, दस दस एक एक ज़ंजीर से बंधे हुए थे

और हर तरफ से आने वाले हमले रोक रहे थे। ख़ालिद(र०) ने उन्हें थकाने के लिए घुड़सवारों का इस्तेमाल किया। घुड़ सवारों ने पियादों पर इस तरह हमले शुरू कर दिये के पियादों को दायें बायें दौड़ना पड़ता। अपने पियादों को भी ख़ालिद(र०) ने इसी तरह इस्तेमाल किया। ईरानी पियादों को भागना दौड़ना पड़ा। इन के मुक़ाबले में मुसलमान तेज़ी से हरकत कर सकते थे।

आख़िर ईरानियों में सुस्ती और थकन के आसार नज़र आने लगे। उन्होंने अपनी रिवायत के मुताबिक़ जो ज़ंजीरें बांध रखी थीं वो उन के पांव की बेड़ियां बन गई। हथियारों की बरतरी वबाल जान बन गई। ईरानियों की तंज़ीम और तरतीब बिखरने लगी। इन के क़ल्ब की कमान तो हरमज़ के मरते ही ख़त्म हो गई थी इन के पहलुओं के सालारों, क़बाज़ और अनुशुजान, ने शिकस्त यक़ीनी देखी तो पस्पाई का हुक्म दे दिया। पस्पा वही हो सके जो ज़ंजीरों में बंधे हुए नहीं थे। इन में ज़्यादा घुड़ सवार थे। कबाज़ और अनु शजान पहलुओं से अपनी फौज की बहुत सी नफरी बचा कर ले गए लेकिन क़ल्ब के हज़ारों सिपाही मुसलमानों के हाथों कट गए। ये तो आतिश परस्तों का क़त्ले आम था जो सूरज गुरूब होने के बाद तक जारी रहा। शाम तारीक हो गई तो ये खूनी सिलसिला रूका।

मुसलमानों ने एक बड़े ही ताक़तवर दुश्मन को बहुत बुरी शिकस्त दे कर साबित कर दिया के नफरी की इफरात और हथियारों की बरतरी से फतह हासिल नहीं की जा सकती, जज़्बा लड़ा करता है।

अगले रोज़ माले ग़नीमत इक्ळा किया गया। ख़ालिद(र०) ने इसे पांच हिस्सों में तक़सीम किया। चार हिस्से अपने लश्कर में तक़सीम कर दिये और एक हिस्सा मदीना खलीफ़ा अबु बकर(र०) को भेज दिया। हरमज़ की एक लाख दरहम की टोपी भी ख़ालिद(र०) ने खलीफा को भेज दी। खलीफा ने ये टोपी ख़ालिद(र०) को वापस भेज दी क्योंके ज़ाती मुक़ाबलों में मारे जाने वाले को माले ग़नीमत जीतने वाले का हक़ होता है। ये टोपी ख़ालिद(र०) की मिल्कियत थी।

"ये देखो....बाहर आओ....देखो ये क्या हैं!"

मदीना की गलियों में कई आवाज़ें बुलंद हुईं। लोग दौड़ते घरों से बाहर आने लगे।

"जानवर है।"

"नही......खुदा की क़सम, हम ने ऐसा जानवर कभी नहीं देखा।"

"ये जानवर नही....खुदा की अजीब मख़लूक है।"

औरते ओर बच्चे भी बाहर निकल आए। सब के चेहरों पर हैरत थी। बच्चे डर कर पीछे हट गए। जिन्होंने खुदा की इस अजीब मखलूक़ को पकड़ रखा था, वो हंस रहे थे और वो आदमी भी हंस रहा था जो अजीब मखलूक़ की गर्दन पर बैठा था।

"ये क्या है?"–लोग पूछ रहे थे–"इसे क्या कहते हैं।"

"इसे हाथी कहते हैं"–हाथी के साथ साथ चलने वाले एक आदमी ने बुलंद आवाज़ से कहा–"ये जंगी जानवर है। ये हम ने फारस वालों से छीना है।"

जंगे सलासल में जब ईरानी ज़रतुश्त भागे थे तो ये हाथी मुसलमानों के हाथ आया था। तक़रीबन तमाम मोअररिख़ेन ने ये वाक़ेया लिखा है के ख़ालिद(र०) ने माले ग़नीमत का जो पांचवां हिस्सा ख़लिफातुल मुस्लिमीन अबुबकर(र०) को भेजा था, इस में एक हाथी भी था। मदीना वालों ने हाथी कभी नही देखा था। इस हाथी को मदीना शहर में घुमाया फिराया गया तो लोग हैरान हो गए और बाज़ डर भी गए। वो इसे जानवर नहीं, खुदा की अजीब मखलूक़ कहते थे। हाथी के साथ इस का ईरानी महावत भी था।

इस हाथी को चन्द दिन मदीना में रखा गया। खाने के सिवा इस का और कोई काम न था। मदीना वाले इस से काम लेना जानते भी नहीं थे। इस के अलावा सिर्फ एक हाथी से वो करते भी क्या! अमीरूलमोमेनीन ने इस के महावत को हाथी समेत

आज़ाद कर दिया। किसी भी तारीख़ में ये नही लिखा के ये हाथी मदीना से कहां चला गया था।

✲

दजला और फरात आज भी बह रहे हैं। एक हज़ार तीन सौ बावन साल पहले भी बह रहे थे मगर उस रवानी में और आज की रवानी में बहुत फर्क़ है। साढ़े तेरा सदियां पहले दजला और फरात की लहरों मे इस्लाम के अव्वलीन मुजाहेदीन के जोशीले और पुरअज़्म नारों का वलवला था। इन दरियाओं के पानियों में शहीदों का खून शामिल था। शमा-ए-रिसालत के शैदाई इस्लाम को दजला और फरात के किनारे किनारे दूर आगे ले जा रहे थे। ज़रतुश्त की आग के शोले लपक लपक कर मुसलमानों का रास्ता रोकते थे। मुसलमान बढ़ते ही चले जा रहे थे।

उन का बढ़ना सहल नहीं था। वो फारसियों की शहंशाही में दाख़िल हो चुके थे। उनकी नफरी और जिस्मों की ताज़गी कम होती जा रही थी और दुश्मन की जंगी कुव्वत हैबत नाक थी। कभी यूं लगता था जैसे आतिश परस्त फारसियों की जंगी ताक़त मुसलमानों के क़लील लश्कर को अपने पेट मे खींच रही हो।

अप्रैल 633ई० का तीसरा और सफर 12 हिज्री का पहला हफ्ता था। ख़ालिद(र०) काज़मा के मुक़ाम पर आतिश परस्त ईरानियों को शिकस्त दे कर आगे एक मुक़ाम पर पहुंच गए थे। उन्होंने दो ही हफ्ते पहले ईरानियों को शिकस्त दी थी। ये पहला मौक़ा था के मुसलमानों ने इतनी बड़ी शहंशाही से टक्कर ली थी जिस की जंगी कुव्वत से ज़मीन कांपती थी। अमीरूलमोमेनीन अबु बकरम(र०) ने कहा था के अभी हम इतनी बड़ी ताक़त से टक्कर लेने के क़ाबिल नहीं लेकिन उन्होंने ये भी महसूस कर लिया था के टक्कर लेना नागुरेज़ हो गया है, वरना ज़रतुश्त मदीना पर चढ़ दौड़ेंगे। उन के अज़ाइम ऐसे ही थे। वो मुसलमानों से नफरत करने वाले लोग थे। और अपनी बादशाही में मुसलमानों पर बहुत जुल्म करते थे। अमीरूमोमेनीन ने ख़ालिद(र०) को यमामा से बुला कर ज़रतुश्तों के खिलाफ भेजा था।

ख़ालिद(र०) को रसूले करीम(स०) ने सैफुल्लाह का ख़िताब अता फरमाया था। अब ख़लीफा अव्वल अबुबकर(र०) ने भी कहा था-"अल्लाह की तलवार के बग़ैर हम फारस की बादशाही से टक्कर नहीं ले सकते।"

ख़ालिद(र०) ने ये साबित कर दिया था के वो अल्लाह की तलवार हैं।

फारस की शहंशाही की गद्दी मदाइन में थी। फारस का शहंशाह उर्द शहर मदाइन में शहंशाहों की तरह तख्त पर बैठा था। उसकी गर्दन उन शहंशाहों की तरह अकड़ी हुई थी जो अपने आप को ना क़ाबिल तसख़ीर समझते थे। उस के तख्त के

दायें बायें ईरान का हुस्न मचल रहा था। वो तख़्त से उठने ही लगा था के उसे इत्तेला दी गई के उबला के मुहाज़ से क़ासिद आया है।

"फौरन बुलाओ"-उर्द ने शाहाना रऊनत से कहा-"इस के सिवा वो और क्या ख़बर लाया होगा के हरमज़ ने मुसलमानों को कुचल डाला है....क्या हैसियत है अरब के इन बद्दुओं की जिन्होंने खुजूर और जो के सिवा खाने की कभी कोई चीज़ नही देखी!"

क़ासिद दरबार में दाख़िल हुआ तो उस को चेहरा और उस की चाल बता रही थी के वो अच्छी ख़बर नही लाया। उस ने एक बाज़ू सीधा ऊपर किया और झुक गया।

"सीधे हो जाओ"-उर्द शहर ने फातेहाना लेहजे में कहा-"हम अच्छी खबर सुनने के लिए इतना इन्तेज़ार नहीं कर सकते....क्या मुसलमानों की औरतों को भी पकड़ा गया है?.....बोलो....तुम खामोश क्यों हो?"

"ज़रतुशत की हज़ार रहमत तख्ते फारस पर"-क़ासिद ने दरबार के आदाब के ऐन मुताबिक़ कहा-"शहंशाह उर्द शहर की शहंशाही...."

"खबर क्या लाए हो?"-उर्दशहर ने गरज कर पूछा।

"आली मुक़ाम हरमज़ ने कुमक मांगी है"-क़ासिद ने कहा

"हरमज़ ने?"-उर्द शहर चौंक कर आगे को झुका और उस ने हैरान हो कर पूछा-"कुमक मांगी है?....क्या वो मुसलमानों के खिलाफ लड़ रहा है? क्या वो पस्पा हो रहा है?....हम ने सुना था के मुसलमान लूटेरों के एक गिरोह की मानिंद है। क्या हो गया है हरमज़ को? क्या उसने सिपह को ज़ंजीरों से नहीं बांधा था?... बोलो!"

दरबार पर सन्नाटा तारी हो गया जैसे वहां कोई भी न हो और दरो दीवार चुप चाप हों।

"शहंशाहे फारस की शहंशाही उफक़ तक पहंचे"-क़ासिद ने कहा-"ज़ंजीरें बांधी मगर मुसलमानों ने ऐसी चालें चलीं के यही ज़ंजीरें हमारी सिपाह के पांव की बेड़ियां बन गईं।"

"मदीने वालों की तादाद कितनी है?"

"बहुत थोड़ी शहंशाहे फारस!"-क़ासिद ने जवाब दिया-"हमारे मुक़ाबले में उनकी तादाद कुछ भी नहीं थी लेकिन...."

"दूर हो जा हमारी नज़रों से"-शहंशाह उर्द शहर गरजा और ज़रा सोच कर बोला-"क़ारन को बुलाओ।"

क़ारन बिन क़रयान्स ईरानी फौज का बड़ा ही क़ाबिल और दिलेर सिपह सालार था। वो भी हरमज़ की तरह लाख दरहम का आदमी था और हरमज़ की टोपी की तरह टोपी पहनता था। इत्तेला मिलते ही दौड़ा आया।

"क़ारन!"–उर्द शहर ने कहा–"क्या तुम इस ख़बर को सच मान सकते हो के हरमज़ ने मुसलमानों के खिलाफ लड़ते हुए कुमक मांगी है?"–उर्द शहर ने दरबारियों पर निगाह दौड़ाई तो तमाम दरबारी उठ खड़े हुए। सब ताज़ीम को झुके और बाहर निकल गए। उर्द शहर क़ारन के साथ तन्हाई में बात करना चाहता था–"क्या ये क़ासिद मुसलमानों का आदमी तो नही जो हमें धोका देने आया हो?"

"मुसलमान इतनी जुर्रत नहीं कर सकते"–क़ारन ने कहा–"मैदाने जंग में ज़रा सी ग़लती पांसा पलट दिया करती है। अगर हरमज़ ने कुमक मांगी है तो इस का मतलब ये है के उसे कुमक की ज़रूरत है और उस से कोई ग़लती सरज़द हो गई है।"

"क्या मुसलमानों में इतनी हिम्मत है के वो हमारी फौज को पस्पा कर सकें?"–उर्द शहर ने पूछा।

"इन में हिम्मत ही नही बेपनाह जुर्रत भी है"–क़ारन ने कहा–"वो अपने अक़ीदे की जंग लड़ते है। उबला के इलाक़े में हम ने मुसलमानों को इस क़दर ज़लील कर के रखा हुआ है के वो कीड़े मकोड़ों की सी ज़िन्दगी बसर करते है लेकिन उन्होंने ज़मीन दोज़ हमले कर के और शबखून मार मार कर उस इलाक़े की कई चौकियां साफ कर दी है....आज तक उन्होंने जितनी जंगें लड़ी है उन में उन्होंने किसी एक में भी शिकस्त नही खाई। हर जंग में उनकी सिपाह की तादाद खासी थाड़ी रही है। इन के पास घोड़ो की भी कमी थी।"

"वो लड़ने वाले ही ऐसे थे"–शहंशाह उर्द शहर ने कहा–"उनमें कोई भी हमारी फौज का मुक़ाबला नही कर सकता।"

"लेकिन मुसलमानों ने मुक़ाबला कर लिया है"–क़ारन ने कहा–"और हमारा इतना ज़बरदस्त सालार हरमज़ कुमक मांगने पर मजबूर हो गया है...शहंशाहे फारस! दुश्मन को इतना हक़ीर नही जानना चाहिए। हमें अपने गिरेबान में दियानत दारी से झांकना होगा। फारस की शहंशाही का तूती बोलता था लेकिन हमें इस हक़ीक़त को नज़र अंदाज़ नही करना चाहिए के रोमी हम पर ग़ालिब आ गए थे और हमें ये हक़ीक़त भी फरामोश नही करनी चाहिए के हम रोमियों का सामना करने से हिचकिचाते है। इस नई सूरतेहाल का जाएज़ा दियानत दारी से लें शहंशाह फारस! हरमज़ ने अगर कुमक मांगी है तो इस का मतलब ये है के मुसलमान उस के लश्कर पर ग़ालिब आ गए है।"

"मै ने तुम्हें इसी लिए बुलाया है के तुम ही हरमज़ की मदद को पहुंचो"-उर्द शहर ने कहा-"अगर हरमज़ घबरा गया है तो उस की मदद के लिए अगर उस से बेहतर सालार न जाए तो उसी जैसे सालार को जाना चाहिए। तुम ऐसा लश्कर तैयार करो जैसे देखते ही मुसलमान सोच में पड़ जाएं के लड़ें या मदीना को भाग जाएं...... फौरन क़ारन! फौरन।"

क़ारन ने उसे सलाम किया और लम्बे लम्बे डग भरता चल पड़ा।

❁

ईरानियों का सालार क़ारन बिन क़रयान्स ताज़ा दम लश्कर ले कर उबला की तरफ रवाना हो गया। वो पूरी उम्मीद ले कर जा रहा था के मसुलमानों को तवाह व बर्बाद कर के लौटेगा। वो अपने लश्कर को दजला के बायें किनारे के साथ साथ ले जा रहा था। उस की रफ्तार खासी तेज़ थी। उस ने मज़ार के मुक़ाम पर लश्कर को दरयाए दजला पार कराया और जुनूब में दरयाऐ माअकल तक पहुंच गया। जव वो दरयाऐ माअकल के पार गया तो उसे हरमज़ के लश्कर की टोलियां आती दिखाई दी। सिपाही बड़ी बुरी हालत में थे।

"तुम पर ज़रतुश्त की लानत हो"-क़ारन ने पहली टोली को रोक कर और उनकी हालत देख कर कहा-"क्या तुम मुसलमानों के डर से भागे आ रहे हो?"

"सिपह सालार हरमज़ मारा गया है"-टोली में से एक सिपाही ने कहा-"दोनों पहलूओं के सालार क़बाज़ और अनु शजान भी भाग आए है। वो शायद पीछे आ रहे हों।"

क़ारन बिन क़रयान्स हरमज़ की मौत की खबर सुन कर सुन हो के रह गया। उस ने ये पूछने की भी जुर्रत न की के हरमज़ किस तरह मारा गया है। क़ारन का सर झुक गया था। उ स ने जब सर उठाया तो देखा के फारस के फौजियों की क़तारें चली आ रही थी अपने ताज़ा दम लश्कर को देख कर भागे हुए ये फौजी वही रूकने लगे। इतने में हरमज़ की फौज के दूसरे सालार क़बाज़ और अनु शजान भी आ पहुंचे। उन्हें दूर से आता देख कर क़ारन ने अपने घोड़े की लगाम को झटका दिया। घोड़ा चल पड़ा। क़ारन ने अपने शिकस्त खूरदा सालारों के सामने जा घोड़ा रोका।

"मै सुन चुका हूं हरमज़ मारा गया है"-क़ारन ने कहा-"लेकिन मुझे यक़ीन नही आता के तुम दोनों भाग आए हो। क्या तुम गंवार और उजड अरबो से शिकस्त खा कर आए हो? मै इस के सिवा कुछ नही कहना चाहता के तुम बुज़दिल हो और तुम इस रूत्बे और ओहदे के अहल नही हो....क्या तुम नही चाहते के मुसलमानों को तबाह व बर्बाद कर दिया जाए?"

"क्यों नही चाहते!"-क़बाज़ ने कहा-"हम कहीं छुपने के लिए पीछे नही आए। हमें हरमज़ की शेखियों ने मरवाया है। मै तस्लीम करता हूं के इस्लामी फौज के पास बड़े ही क़ाबिल और जुर्रत वाले सालार हैं, लेकिन वो इतने क़ाबिल भी नही के हमारी फौज को यूं भगा देते।"

"तुम ने उन में क्या खूबी देखी है जो हम में नहीं?"-क़ारन ने पूछा।

"ये पूछो के हम में क्या ख़ामी है जो उन में नहीं"-अनु शजान ने कहा-"हम अपने दस दस बारह बारह सिपाहियों को एक एक ज़ंजीर से बांध देते हैं के वो जम कर लड़ें और भागे नही, इसी लिए हम आमने सामने की जंग लड़ते हैं। मुसलमानों ने जब हमारी सिपाह को पाबंदे सलासल देखा तो उन्होंने दायें बायें की चालें चलनी शुरू कर दीं। हमारी सिपाह घूम फिर कर लड़ने से क़ासिर थी। ये थी वजह के हमारा इतना ताक़तवर लश्कर शिकस्त खा गया।"

"हमारे पास बातों का वक़्त नहीं"-क़बाज़ ने कहा-"मुसलमान हमारे तआक़ुब में आ रहे हैं।"

उनके तआक़ुब में मिस्ना बिन हारिसा दो हज़ार नफरी की फौज के साथ आ रहा था। मुस्ना बिन हारिसा इस्लाम का वो शैदाई था जिस ने ईरानियों के खिलाफ ज़मीन दोज़ कारर्वाईयां शुरू कर रखी थी। उसकी तरग़ीब पर अमीरूलमोमेनीन अबुबकर(र०) ने ख़ालिद(र०) को बुला कर ईरानियों के खिलाफ भेजा था। ईरानियों के तआक़ुब में जाना ग़ैर मामूली तौर पर दिलेराना इक़दाम था। तआक़ुब का मतलब ये था के मुसलमान अपने मुसतक़िर से दूर हटते हटते ईरानियों के क़ल्ब में जा रहे थे जहां उनका घेरे में आ जाना यक़ीनी था, लेकिन ये ख़ालिद(र०) का हुक्म था के ईरानियों का तआक़ुब किया जाए। इस हुक्म के पीछे ईरानियों के खिलाफ वो नफरत भी थी जो मिस्ना बिन हारिसा के दिल में भरी हुई थी।

जंगे सलासल ख़त्म हो गई और ईरानी भाग उठे तो ख़ालिद(र०) ने देखा के उनका लश्कर थक गया है। उन्होंने मिस्ना बिन हारिसा को बुलाया।

"इब्ने हारिसा!"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"अगर ये भागते हुए फारसी ज़िन्दा चले जाएं तो क्या तुम अपनी फतह को मुकम्मल समझोगे?"

"खुदा की क़सम वलीद के बेटे!"-मिस्ना बिन हारसिा ने पुर जोश लेहजे में कहा-"मुझे सिर्फ हुक्म की ज़रूरत है। ये मेरा शिकार हैं।"

"तो जाओ"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"दो हज़ार सवार अपने साथ लो और ज़्यादा से ज़्यादा ईरानियों को पकड़ लाओ और जो मुक़ाबला करे उसे क़त्ल कर दो.... .मै जानता हूं मेरे जांबाज़ थक गए है लेकिन मै शहंशाहे फारस को यक़ीन दिलाना

चाहता हूं के हम ज़मीन के दूसरे सिरे तक उनका तआक्कुब करेंगे।"

मिस्ना बिन हारिसा ने दो हज़ार सवार लिए और भागते हुए ईरानियों के पीछे चला गया। ईरानियों ने दूर से देख लिया के उनका तआक्कुब हो रहा है तो वो बिखर गए। उन्होंने अपना बोझ हल्का करने के लिए गुरज़ और हथियार फैंक दिये थे। मिस्ना के लिए तआक्कुब करना और ईरानियों को पकड़ना दुश्वार हो गया था क्योंके ईरानी टोली टोली हो कर बिखरे फिर वो अकेले अकेले हो कर भागने लगे। इस के मुताबिक़ मिस्ना के सवार भी बिखर गए।

मिस्ना बिन हारिसा को आगे जा कर अपने सवारों को इकठ्ठा करना पड़ा क्योंके आगे एक क़िला आ गया था। ये क़िला हसन मुरात के नाम से मशहूर था। ये एक औरत का क़िला था इसी लिए इस का नाम हसन मरात मशहूर हो गया था यानी औरत का क़िला। मिस्ना ने इस क़िले का मुहासरा कर लिया क्योंके ख्याल ये था के ईरानी इस क़िले में चले गए होंगे। क़िले से मज़ाहमत के आसान नज़र आ रहे थे। दो दिन मुहासरे में गुज़र गए तो मिस्ना को अहसास हुआ के वो जिस काम के लिए आया है वो तो रह गया है। मिस्ना का एक भाई मोअन्ना उसके साथ था।

"मोअन्ना!"–मिस्ना बिन हारिसा ने उसे कहा–"क्या तुम देख नहीं रहे के मैं ईरानियों के तआक्कुब में आया था और मुझे इस क़िले ने रोक लिया है?"

"मिस्ना भाई!"–मोअन्ना ने कहा–"मैं सब कुछ देख रहा हूं और मैं ये भी देख रहा हूं के तुम्हें मुझ पर भरोसा नही। अगर ऐसा होता तो तुम मुझे कहते के इस क़िले को तुम मुहासरे में रखो और मैं ईरानियों के पीछे जाता हूं।"

"हां मोअन्ना!"–मिस्ना ने कहा–"मुझे तुम पर भरोसा नही। ये क़िला एक जवान औरत का है और तुम जवान आदमी हो। खुदा की क़सम, मैं ने क़िले सर करने वालों को एक औरत की तीखी नज़रों और अदाओं से सर होते देखा है।"

"मेरे बाप के बेटे!"–मोअन्ना ने कहा–"मुझ पर भरोसा कर और आगे निकल जा। मुझे थोड़े से सवार दे जा फिर देख कौन सर होता है...क़िला या मैं!.....अगर तू यहीं बंधा रहा तो भागते हुए फारसी बहुत दूर निकल जाएंगे।"

"अगर मेरा दिमाग़ ठीक काम करता है तो मैं कुछ और सोच कर इधर आया हूं"–मिस्ना बिन हारिसा ने कहा–"मैं उस अल्लाह का शुक्र अदा करता हूं जिस के सिवा कोई माबूद नही और मोहम्मद(स०) जिस के नबी है के उस ने हमें ख़ालिद(र०) बिन वलीद जैसा सिपह सालार दिया है। मदीना की ख़िलाफत से उसे जो हुक्म मिला था वो उस ने पूरा कर दिया है। लेकिन वो इस पर मुतमइन नहीं। वो फारस की शहंशाही की जड़ें उखाड़ फैंकने पर तुला हुआ है। वो मदाइन की ईंट से ईंट बजाने का

अज़्म किए हुए है।"

"अज़्म और चीज़ है मेरे भाई!"-मोअन्ना ने कहा-"अज़्म को पूरा करना बिलकुल मुख़तलिफ चीज़ है। क्या तुम ने देखा नही के वलीद का बेटा तीर की तेज़ी से आगे बढ़ रहा है?....मेरे बाप के बेटे! तीर ख़ता भी हो सकता है ज़रा सी रूकावट इसे रोक भी सकती है।"

"क्या तुम ये कहना चाहते हो के ख़ालिद(र०) को वहीं रूक जाना चाहिए जहां उस ने फारसियों को शिकस्त दी है?"-मिस्ना ने कहा-"खुदा की क़सम !तुम एक बात भूल रहे हो। शहंशाहे फारस को अपनी शहंशाही का ग़म है और हमें अपने अल्लाह की नाराज़गी का डर है। उर्द शहर अपने तख्त व ताज को बचाना चाहता है लेकिन हम शाहे दो जहान(स०) की आन की ख़ातिर लड़ रहे हैं....समझने की कोशिश करो मेरे भाई! ये बादशाहों की नही अक़ीदों की जंग है। हमारे लिए ये अल्लाह का हुक्म है के हम उस के रसूल(स०) का पैग़ाम दुनिया के आख़िरी कोने तक पहुंचाऐं। हमारा बिछोना ये रेत है और ये पत्थर हैं। हम तख्त के तलबगार नहीं।"

"मैं समझ गया हूं"-मोअन्ना ने कहा।

"नहीं"-मिस्ना बोला-"तुम अभी पूरी बात नही समझे। तुम भूल रहे हो के हमें उन मुसलमानों के खून के एक एक क़तरे का इन्तेक़ाम लेना है जो फारसियों के ज़ेरे नगीं थे और जिन पर फारसियों ने जुल्म व तशद्दुद किया था। ख़ालिद(र०) फारसियों का ये गुनाह कभी नहीं बख्शेंगा। वो मज़लूम मुसलमान मदीना की तरफ देख रहे थे.....मैं तुम्हें कह रहा था के मैं फारसियों के तआक़ुब में नहीं आया। मैं फारस के उस लश्कर की तलाश में आया हूं जो हरमज़ की शिकस्त खूरदा फौज की मदद के लिए आ रहा होगा। मुझे पूरी उम्मीद है के इन की कुमक आ रही होगी। मैं उसे रास्ते में रोकूंगा।"

"फिर इतनी बातें न करो मिस्ना !"-मोअन्ना ने कहा-"मुझे कुछ सवार दे दो और तुम आगे निकल जाओ....ये ख्याल रखना के फारसी अगर आए तो उन की तादाद और ताक़त ज़्यादा होगी। आमने समने की टक्कर न लेना। जा मेरे भाई मैं तुझे अल्लाह के सुपुर्द करता हूं।"

❁

किसी भी मोअररिख़ ने सवारों की सही तादाद नहीं लिखी जो मिस्ना अपने भाई को दे कर चला था। बाज़ मोअररिख़ों की तहरीरों से पता चलता है के सवारों की तादाद सौ से कम और और चार सौ से ज़्यादा नहीं थी। मोअन्ना ने इतने से सवारों से ही क़िले का मुहासरा कर लिया और क़िले के दरवाज़े के इतना क़रीब चला गया जहां

वो तीरों की बड़ी आसान ज़द में था। दरवाज़े के ऊपर जो बुर्ज था उस में एक खूबसूरत औरत नमूदार हुई।

"तुम कौन हो और यहां क्या लेने आए हो?"-औरत ने बुलंद आवाज़ में मोअन्ना से पूछा।

"हम मुसलमान हैं"-मोअन्ना ने उस से ज़्यादा बुलंद आवाज़ में जवाब दिया-"हम मैदाने जंग से भागे हुए फारसियों के तआक्कुब में आए हैं। अगर तुम ने क़िले में उन्हें पनाह दी है तो उन्हें हमारे हवाले कर दो हम चले जाएंगे।"

"ये मेरा क़िला है"--औरत ने कहा-"भागे हुए फारसियों की पनाह गाह नही। यहां कोई फारसी सिपाही नहीं।"

"ख़ातून!"-मोअन्ना ने कहा-"हम पर तेरा अहतराम लाज़िम है। हम मुसलमान हैं। औरत पर हाथ उठाना हम पर हराम है ख्वाह वो क़िलेदार ही हो। अगर तुम फारसियों की जंगी ताक़त के डर उस के सिपाही हमारे हवाले नही करना चाहती तो सोच लो के हम वो हैं जिन्होंने फारस की इस हैबत नाक जंगी ताक़त को शिकस्त दी है। ऐसा न हो के तुम पर हमारे हाथों ज़्यादती हो जाए। हम इस्लाम के उस लश्कर का हरावल हैं जो पीछे आ रहा है।"

"मैं ने मुसलमानों का क्या बिगाड़ा है?"-औरत ने कहा-"मेरा क़िला तुम्हारे लश्कर के रास्ते में रूकावट नहीं बन सकता।"

"तुम्हारा क़िला महफूज़ रहेगा"-मोअन्ना ने कहा-"शर्त ये है के क़िले का दरवाज़ा खोल दो। हम अंदर आ कर देखेंगे। तुम्हारे किसी आदमी और किसी चीज़ को हाथ नहीं लगाएंगे। हम अपनी तसल्ली कर के चले जाएंगे। अगर ये शर्त पूरी नही करोगी तो तुम्हारी और तुम्हारी फौज की लाशें इस के मल्बे के नीचे गल सड़ जाएंगी।"

"क़िले का दरवाज़ा खोल दो"-औरत की तहकुमाना आवाज़ सुनाई दी।

इस आवाज़ के साथ ही क़िले का दरवाज़ा खुल गया। मोअन्ना ने अपने सवारो को इशारा किया। तीन चार सौ घोड़े सरपट दौड़ते आए। मोअन्ना ने उन्हें सिर्फ इतना कहा के क़िले की सिर्फ तलाशी होगी; किसी चीज़ और किसी इन्सान को हाथ तक नहीं लगाया जाएगा। मोअन्ना का घोड़ा क़िले में दाख़िल हो गया। उस के तमाम सवार उस के पीछे पीछे क़िले में गए। मोअन्ना ने एक जगह रूक कर क़िले की दीवारों पर नज़र दौड़ाई। हर तरफ तीअंदाज़ खड़े थे। नीचे उसे कहीं भी कोई सिपाही नज़र नहीं आया। मोअन्ना के सवार क़िले में फैल गए थे।

"तुम ने ठीक कहा था"-औरत ने मोअन्ना से कहा-"मैं फारसियों से डरती हूं।

इस किले में कोई भी ताक़तवर लश्कर आएगा तो मै उस के रहम व करम पर होंगी... .मुसलमानों को मै पहली बार देख रही हूं।"

"और तुम उन्हें सारी उम्र याद रखोगी"-मोअन्ना ने कहा-"खुदा की क़सम, तुम बाक़ी उम्र इन के इन्तेज़ार में गुज़ार दोगी.....मसुलमानों के लिए हुक्म है के क़िलों को नहीं दिलों को सर करो लेकिन क़िलों वालों के दिल क़िले की दीवारों जैसे सख्त हो जांऐ तो फिर हमारे लिए कुछ और हुक्म है। हम जब इस हुक्म की तामील करते है तो फारस की ताक़त भी हमारे आगे नहीं ठहर सकती। क्या तुम ने उन्हें भागते देखा नहीं? क्या वो इधर से नही गुज़रे?"

"गुज़रे थे"-क़िले दार औरत ने जवाब दिया-"ज़रा सी देर के लिए यहां रूके भी थे। उन्होंने बताया था के वो मुसलमानों से भाग कर आ रहे हैं वो दस बारह आदमी थे। मैं हैरान थी के इतने हट्टे कट्टे सिपाही खौफ से मरे जा रहे हैं। तुम ने जब कहा के तुम हो वो लोग जिन्होंने फारसियों को शिकस्त दी है तो मेरी हिम्मत जवाब दे गई। मैं ने क़िले का दरवाज़ा खौफ के आलम में खोला था। मैं तुम से और तुम्हारे सवारों से अच्छे सुलूक की तवक्क़ो रख ही नहीं सकती थी। मुझे अभी तक यक़ीन नहीं आया के तुम अपने मुताल्लिक़ जो कह रहे हो वो सच कह रहे हो।"

ये ख़ातून मोअन्ना को उस इमारत में ले गई जहां वो रहती थी। वो तो शीश महल था। उस के इशारे पर दो गुलामों ने शराब और भुना हुआ गोश्त मोअन्ना के सामने ला रखा। मोअन्ना ने इन चीज़ों को परे कर दिया।

"हम शराब नहीं पीते"-मोअन्ना ने कहा-"और मैं ये खाना इस लिए नहीं खाऊंगा के तुम ने मुझे एक ताक़तवर फौज का आदमी समझ कर खौफ से मुझे खाना पेश किया है मैं इसे भी हराम समझता हूं।"

"क्या तुम मुझे भी हराम समझते हो?-इस खूबसूरत और जवान औरत ने ऐसी मुस्कुराहट से कहा जिस में दावत का तास्सुर था।

"हां"-मोअन्ना ने जवाब दिया-"मफतूहा औरत को हम शराब की तरह हराम समझते हैं। वो उस वक़्त तक हम पर हराम रहती है जब तक के वो अपनी मर्ज़ी से हमारे अक़्द में न आजाए।"

मोअन्ना को इत्तेला दी गई के उस के सवार क़िले की तलाशी ले कर आ गए हैं मोअन्ना तेज़ी से उठा और उसी तेज़ी से बाहर निकल गया।

❁

सवारों के कमांडरों ने मोअन्ना को तफसील से बताया के उन्होंने तलाशी किस तरह ली है और क्या कुछ देखा है। कहीं भी इन्हें कोई ईरानी सिपाही नज़र नहीं आया

था। इस औरत का अपना क़बीला था जिस के आदमी तीरों, तलवारों और बरछियों वग़ैरा से मुसल्लह थे। इन में मोअन्ना के सवारो के खिलाफ लड़ने की हिम्मत नही थी। क़िले की मालकिन ने इन्हें लड़ने की इजाज़त भी नही दी थी। इस क़िले को अपनी अताअत में लेना ज़रूरी था क्योंके ये किसी भी मौक़े पर ईरानियों के काम आ सकता था। मोअन्ना ने इधर उधर देखा। वो औरत उसे नज़र न आई। मोअन्ना अंदर चला गया।

"कुछ मिला मेरे क़िले से?"–औरत ने पूछा

"नहीं"–मोअन्ना ने जवाब दिया–"मेरे लिए शक रफा करना ज़रूरी था और अब ये पूछना ज़रूरी समझता हूं के मेरे किसी सवार ने तुम्हारे किसी आदमी या औरत को या मैं ने तुम्हें कोई तकलीफ तो नही दी?"

"नहीं"–औरत ने कहा और ज़रा सोच कर बोली–"लेकिन तुम चले जाओगे तो मुझे बहुत तकलीफ होगी।"

"क्या तुम ईरानियों का ख़तरा महसूस कर रही हो?"–मोअन्ना ने पूछा–"या तुम्हारे दिल में मुसलमानों का डर है?"

"दोनो में से किसी का भी नहीं"–औरत ने जवाब दिया–"मुझे तन्हाई का डर है। तुम चले जाओगे तो मुझे तन्हाई का अहसास होगा जो तुम्हारे आने से पहले नहीं था।"

मोअन्ना ने उसे सवालिया निगाहों से देखा।

"तुम अपने फर्ज़ में इतने उल्झे हुए हो के तुम्हें ये भी अहसास नहीं रहा के तुम एक जवान आदमी भी हो"–औरत ने कहा–"फातेह सब से पहले मुझ जैसी औरत को अपना खिलौना बनाते हैं। मैं ने तुम जैसा आदमी कभी नही देखा। अब देखा है तो दिल चाहता है के देखती ही रहूं....क्या मैं तुम्हें अच्छी नहीं लगी?"

मोअन्ना ने उसे ग़ौर से देखा। सर से पांव तक फिर पांव से सर तक देखा। उसे एक आवाज़ सुाई दी–"खुदा की क़सम, मैं ने क़िले सर करने वालों को एक औरत की तीखी नज़रों और अदाओं से सर होते देखा है।"

"क्या तुम होश में नहीं हो?"–औरत ने पूछा।

"मैं शायद ज़रूरत से ज़्यादा होश में हूं"–मोअन्ना ने कहा–"तुम मुझे अच्छी लगती हो या नहीं, ये बाद की बात है। इस वक़्त मुझे तुम्हारा क़िला अच्छा लग रहा है।"

"क्या मेरा ये तोहफा कुबूल करोगे?"–औरत ने कहा–"ताक़त से क़िला सर करने की बजाए मुझ से ये क़िला मोहब्बत के तोहफे के तौर पर ले लो तो क्या ये

अच्छा नही रहेगा?"

"मोहब्बत!"-मोअन्ना ने ज़ेर लब कहा फिर सर झटक कर जैसे बेदार हो गया हो। कहने लगा-"मोहब्बत का वक्त नही। मै तुम्हारे साथ शादी कर सकता हूं। अगर तुम रज़ामंद हो तो पहले अपने सारे के सारे क़बीले समीत इस्लाम कुबूल करो।"

"मै ने कुबूल किया"-औरत ने कहा-"मै उस मज़हब पर जान भी दे दूंगी जिस के तुम पैरूकार हो।"

दो मोअरर्ख़ों तिबरी और रूस्तम ने इस खा़तून का ज़िक्र ज़रा तफसील से किया है लेकिन दोनों की तहरीरों में इस खा़तून का नाम नही मिलता।

❁

शहंशाह फारस उर्दशहर आग बगूला हुआ जा रहा था। उसे हरमज़ पर गुस्सा आ रहा था जिस ने कुमक मांगी थी। कुमक भेजने के बाद उसे अभी कोई इत्तेला नहीं मिली थी के मैदाने जंग की सूरते हाल क्या है। वो दरबार में बैठता तो मुजस्सम अताब बना होता। महल में वो कहीं भी होता तो इस कैफियत में होता के बैठे बैठे उठ खड़ा होता। तेज़ तेज़ टहलने लगता और बिला वजह किसी न किसी पर गुस्सा झाड़ने लगता। उस रोज़ वो बाग़ में टहल रहा था। जब उसे इत्तेला मिली के क़ारन का क़ासिद आया है। बजाए इस के, के वो क़ासिद को बुलाता, वो क़ासिद की तरफ बड़ी तेज़ी से चल पड़ा।

"क्या क़ारन ने उन सहराई गीदड़ों को कुचल डाला है?"-उर्दशहर ने पूछा।

"शहंशाहे फारस!"-क़ासिद ने कहा-"जान बख्शी हो। शहंशाह का गुलाम अच्छी खबर नही लाया।"

"क्या क़ारन ने भी कुमक मांगी है?"-उर्दशहर ने पूछा।

"नही शहंशाहे फारस!-क़ासिद ने कहा-"सालार हरमज़ मुसलमानों के हाथों मारा गया है।"

"मारा गया है?"-उर्दशहर ने हैरत से कहा-"क्या हरमज़ को भी मारा जा सकता है!....नहीं। नहीं। ये ग़लत है। ये झूट है"-उस ने गरज कर क़ासिद से पूछा-"तुम्हें ये पैग़ाम किस ने दिया है?"

"सालार क़ारन बिन कुरयान्स ने-क़ासिद ने कहा-"हमारे दो सालार क़बाज़ और अनु शजान पस्पा हो कर आ रहे थे। बाक़ी सिपाह भी जो ज़िन्दा थी, एक एक दो दो कर के उन के पीछे आ रही थी। दरयाए मोअत्तल के किनारे वो आते हुए मिले। उन्होंने बताया के सालार हरमज़ ने मुसलमानों को इंफेरादी मुक़ाबले के लिए लल्कारा

तो उनका सालार ख़ालिद बिन वलीद(र०) हमारे सालार के मुक़ाबले में आया। सालार हरमज़ ने अपने मुहाफिज़ों को एक तरफ छुपा दिया था। उन्होंने मुसलमानों के सालार को घेरे में ले कर क़त्ल करना था। उन्होंने उसे घेरे में ले भी लिया था लेकिन किसी तरफ से एक मुसलमान सवार सरपट घोड़ा दौड़ाता आया। उस के एक हाथ में बरछी और दूसरे में तलवार थी। देखते ही देखते उस ने सालार हरमज़ के छः सात मुहाफिज़ों को ख़त्म कर दिया। ऐन उस वक़्त मुसलमानों के सालार ने सालार हरमज़ को गिरा लिया और खंजर से उन्हें ख़त्म कर दिया।"

उर्दशहर का सर झुक गया और वो आहिस्ता आहिस्ता महल की तरफ चल पड़ा। जब वो महल में पहुंचा तो उस ने यूं दीवार का सहारा ले लिया जैसे उसे ठोकर लगी हो और गिरने से बचने के लिए उस ने दीवार का सहारा ले लिया हो। वो अपने कमरे तक दीवार के सहारे पहंचा। कुछ देर बाद महल में हड़बोंग सी मच गई। तबीब दौड़े आए। उर्दशहर पर किसी मर्ज़ का अचानक हमला हो गया था। ये सदमे का असर था। फारस की शहंशाही शिकस्त से ना आशना रही थी। इसे पहली ज़र्ब रोमियों के हाथों पड़ी थी और फारस की शहंशाही कुछ हिस्से से महरूम हो गई थी। अब इस शहंशाही को उस क़ौम के हाथों चोट पड़ी थी जिसे उर्दशहर क़ौम समझता ही नहीं था। उर्दशहर के लिए ये सदमा मामूली नही था।

❁

क़ारन बिन कुरयान्स अभी दरिया मोअत्तल के किनारे पर खेमा ज़न था। उसने वहां इतने दिन इस लिए क़याम किया था के हरमज़ की फौज के भागे हुए कमांडर और सिपाही अभी तक चले आ रहे थे। क़ारन इन्हें अपने लश्कर में शामिल करता जा रहा था। हरमज़ के दोनों सालार, क़बाज़ और अनु शजान उस के साथ ही थे। वो अपनी शिकस्त का इन्तेक़ाम लेने का अहद किए हुए थे। उन के कहने पर क़ारन पेशक़दमी में मोहतात हो गया था।

क़याम के दौरान उस के जासूस उसे इत्तेलाऐं देते रहे थे के मुसलमानों की सरगर्मी और अज़ाइम क्या हैं। इन इत्तेलाओं से उसे यक़ीन हो गया था के मुसलमान वापस नही जाऐंगे बल्कि आगे आ रहे हैं।

ख़ालिद(र०) ने जंगे सलासल जीतने के बाद काज़मा और छोटी छोटी आवादियों के इन्तेज़ामी उमूर अपने हाथ में ले लिए थे जब वो इन आबादियों में गया तो वहां के मुसलमानों ने चिल्ला चिल्ला कर ख़ालिद(र०) ज़िन्दा बाद....इस्लाम ज़िन्दा बाद...ख़िलाफत-ए-मदीना ज़िन्दा बाद के नारे लगाए। वो सरसब्ज़ और शादाब इलाक़ा था। औरतों ने ख़ालिद(र०) और उनके मुहाफिज़ों के रास्ते में फूल फैंके।

इस इलाक़े के मुसलमानों को बड़ी लम्बी मुद्दत के बाद ईरानी जोर व इस्तबदाद से निजात मिली थी।

"ख़ालिद(र०), क्या तू हमारी अस्मतों का इन्तेक़ाम लेगा?"-ख़लिद(र०) को कई औरतों की आवाज़ें सुनाई दी।

"हमारे जवान बेटों के खून का इन्तेकाम...इन्तेक़ाम.....ख़ालिद(र०) इन्तेक़ाम-ये एक शोर था, लल्कार थी और ख़ालिद(र०) इस शोर से गुज़रते जा रहे थे।

"हम वापस जाने के लिए नही आए"-ख़ालिद(र०) ने वहां के मुसलमानो से कहा-"हम इन्तेक़ाम लेने आए हैं।"

मुसलमानों के एक वफद ने ख़ालिद(र०) को बताया के इस इलाक़े के ग़ैर मुसलिमों पर वो भरोसा न करे।

"ये सब फारसियों के मददगार हैं"-वफद ने ख़ालिद(र०) को बताया-"मजूसियों ने हमेशा हमारे खिलाफ मुख्बिरी की है। हमारे बेटे जब फारसियों की किसी चौकी पर शबखून मारते थे तो मजूसी मुख्बिरी कर के हमारे बेटों को गिरफ्तार करा देते थे।"

"तमाम ईसाइयों और यहूदियों को गिरफ्तार कर लो"-ख़ालिद(र०) ने हुक्म दिया-"और मुसलमानों में से जो इस्लामी लश्कर में आना चाहते हैं आजाएं।"

"वो पहले ही मिस्ना बिन हारिसा के साथ चले गए हैं"-ख़ालिद(र०) को जवाब मिला।

फौरन ही मजूसियों और दीगर ग़ैर मुस्लिमों की पकड़ धकड़ शुरू हो गई इन में से सिर्फ उन्हें जंगी क़ैदी बनाया गया जिन के मुताल्लिक़ मुसद्दिक़ा शहादत मिल गई के उन्होंने मुसलमानों के खिलाफ जंगी कारर्वाईयां की थी या मुख्बिरी की थी।

नज़्म व नस्क़ के लिए अपने कुछ आदमी काज़मा में छोड़ कर ख़ालिद(र०) आगे बढ़ गए। अब उन की पेशक़दमी की रफ्तार तेज़ नही थी क्योंके किसी भी मुक़ाम पर ईरानियों से लड़ाई का इम्कान था। ख़ालिद(र०) ने अपने जासूस जो उस इलाक़े के मुसलमान थे, आगे और दायें बायें भेज दिये थे।

❁

मिस्ना बिन हारिसा आगे ही आगे बढ़ता जा रहा था। वो दरयाए मोअत्तल उबूर करना चाहता था लेकिन दूर से उसे ईरानियों की ख़ेमागाह नज़र आई। वो बहुत बड़ा लश्कर था। मिस्ना के पास डेढ़ हज़ार से कुछ ज़्यादा सवार थे। इतनी थोड़ी तादाद से मिस्ना ईरानी लश्कर से टक्कर नही ले सकता था।

"हमें यही से पीछे हट आना चाहिए"-मिस्ना के एक साथी ने कहा-"ये लश्कर हमें घेरे में ले कर ख़त्म कर सकता है।"

"समझने की कोशिश करो"-मिस्ना ने कहा-"अगर हम पीछे हटे तो फारसियों के हौसले बढ़ जाऐंगे। हमारे सिपह सालार ख़ालिद(र०) ने कहा था के पेश्तर इस के के फारसियों के दिलों से हमारी दहशत ख़त्म हो जाए हम उन पर हमले करते रहेंगे। हमें अपनी दहशत बरक़रार रखनी है। मैं आग के इन पुजारियों की फौज को ये तास्सुर दूंगा के हम अपने लश्कर का हराविल दस्ता हैं। हम लड़ने के लिए तैयार रहेंगे। अगर लड़ना पड़ा तो हम इन से वही जंग लड़ेंगे जो एक मुद्दत से लड़ रहें है....ज़र्ब लगाओ और भागो......क्या तुम ऐसी जंग नही लड़ सकते?-मिस्ना ने एक सवार को बुलाया और उसे कहा-"घोड़े को ऐड़ लगाओ। सिपह सालार ख़ालिद(र०) बिन वलीद काज़मा या उबला में होंगे। इन्हें बताओ के मोअत्तल के किनारे फारस का एक लश्कर पड़ाव डाले हुए है। उन्हें कहना के मैं लश्कर को आगे नहीं बढ़ने दूंगा और आप का जल्दी पहुंचना ज़रूरी है।"

ख़ालिद(र०) पहले ही काज़मा से चल पड़े थे। इन्हें घोड़ों और बारबरदार ऊंटों के लिए चारे और लश्कर के लिए खाने के सामान की कमी नहीं थी। उस इलाक़े के मुसलमानों ने हर चीज़ का बंदोबस्त कर दिया था। ख़ालिद(र०) का रास्ता कोई और था। वो उबला से कुछ दूर खंडरों के क़रीब से गुज़र रहे थे। सामने घुड़ सवार बड़ी तेज़ रफ्तार से आ रहा था। ख़ालिद(र०) ने अपने दो मुहाफिज़ों से कहा के वो आगे जा कर देखें ये कौन है।

मुहाफिज़ों ने घोड़ों को ऐड़ लगाई और आने वाले सवार को रास्ते में जा लिया। उस सवार ने घोड़ा रोका नहीं। दोनों मुहाफिज़ों ने अपने घोड़े उस के पहलूओं पर कर लिए और उस के साथ आए।

"मिस्ना बिन हारिसा का पैग़ाम लाया है"-दूर से एक मुहाफिज़ ने कहा।

"फारस का एक ताज़ा दम लश्कर दरयाए मोअत्तल के किनारे पड़ाव किए हुए है"-मिस्ना के क़ासिद ने ख़ालिद(र०) के क़रीब आ कर रूकते हुए कहा-"तादाद का अंदाज़ा नहीं। आप के और मिस्ना के लश्कर की तादाद से उस लश्कर की तादाद सात आठ गुना है। फारस के भागे हुए सिपाही भी उस लश्कर में शामिल हो गए हैं।"

"मिस्ना कहां है?"-ख़ालिद(र०) ने पूछा।

"फारसियों के सामने!"-क़ासिद ने कहा-"मिस्ना ने हुक्म दिया है के कोई असकरी पीछे नही हटेगा और हम फारसियों को ये तास्सुर देंगे के हम अपने लश्कर

का हराविल है.....मिस्ना ने पैग़ाम दिया है के जल्दी पहुंचें।"

ख़ालिद(र०) ने अपनी फौज की रफ्तार तेज़ कर दी और रूख उधर कर लिया जिधर मिस्ना बिन हारिसा था।

❁

ख़ालिद(र०) की फौज मिस्ना के सवारों से जा मिली। ख़ालिद(र०) ने सब से पहले दुश्मन का जाएज़ा लिया। वो मिस्ना के साथ एक ऊंची जगह खड़े थे। दुश्मन जंग की तैयारी मुकम्मिल कर चुका था।

"फारसी हमें आमने सामने की लड़ाई लड़ाना चाहते हैं"-ख़ालिद(र०) ने मिस्ना से कहा-"देख रहो हो इब्ने हारिसा?....उन्होंने दरिया को अपने पीछे रखा है।"

"ये फारसी सिर्फ आमने सामने की लड़ाई लड़ सकते हैं"-मिस्ना ने कहा-"मुझे इन के एक कैदी से पता चला है के इन के दो सालार जिन के खिलाफ हम लड़े हैं, ज़िन्दा पीछे आ गए हैं। एक का नाम क़बाज़ और दूसरे का अनु शजान। उन्होंने अपने सिपह सालार को बताया होगा के हमारे लड़ने के अंदाज़ कैसे हैं। इसी लिए उन्होंने अपने अक़ब को हम से इस तरह महफूज़ कर लिया है के अपने पीछे दरिया को रखा है... ज़्यादा न सोच वलीद के बेटे! मैं इन के खिलाफ ज़मीन के नीचे से लड़ता रहा हूं।"

"अल्लाह तुझे अपनी रहमत में रखे इब्ने हारिसा!"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"मुझे उम्मीद है हम इन के सफें इस तरह दरहम बरहम कर देंगे के हमें इन के पहलुओ से आगे निकलने और पीछे से इन पर आने का मौक़ा मिल जाएगा। मेरे सवार टिक कर लड़ने वाले नहीं। ये घूम फिर कर लड़ने वाले हैं। इन्हें आगे धकेलने की ज़रूरत नहीं मुश्किल ये पेश आएगी के इन्हें पीछे किस तरह लाया जाए। फारसियों को देख कर तो ये शोले बन जाते हैं। उन्होंने फारसियों के हाथो बहुत ज़ख्म खाए हैं। इब्ने वलीद! तुम जानते हो उन्होंने किस क़िस्म की गुलामी देखी है। फारस के इन आतिश परस्तों ने इस इलाक़े के मुसलमानों को इन्सानों की तरह ज़िन्दा रहने के हक़ से महरूम कर रखा था।"

"हम ज़रतुश्त की उस आग को सर्द कर देंगे इब्ने हारिसा जिस की ये इबादत करते हैं"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"ये खुद मानेंगे के इबादत के लायक़ एक अल्लाह है जिस की राह में हम अपनी जानें कुर्बान करने आए हैं......आओ, मैं ज़्यादा इन्तेज़ार नहीं करना चाहता। ये जिस तरह रूके हुए है, इस से पता चलता है के मोहतात हैं और इन पर हमारी धाक बैठी हुई है....तुम अपने सवारों के साथ क़ल्ब में रहो।"

मोअर्रिख़ों ने लिखा है के ख़ालिद(र०) ने बहुत सोचा के किसी तरह इन्हें चालें

चलने का मौक़ा मिल जाए लेकिन ईरानियों का सालार क़ारन बिन कुरयान्स दानिशमंद आदमी था। उसे पता चल गया था के ख़ालिद किस तरह लड़ता है। क़ारन ने अपने शिकस्त खूरदा सालारों, क़बाज़ और अनु शजान, को पहुलूओं पर रखा और अपने लश्कर को आगे ले आया। इस लश्कर की अपनी ही शान थी पता चलता था किसी शहंशाह की फौज है। इन के क़दमों के नीचे ज़मीन हिलती थी।

इधर यसरब के सरफरोश थे। ज़ाहरी तौर पर इन की कोई शान नहीं थी। ईरानियों के मुक़ाबले में मुसलमानों के हथियार भी कमतर थे। लिबास भी यूंही से थे और इन की तादाद ईरारिनयों के मुक़ाबले में बहुत थोड़ी थी। ख़ालिद(र०) ने अपनी फौज को आगे बढ़ने का हुक्म दिया तो हज़ारों क़दमों की धमक सुनी और घोड़ों के टापों के साथ कलमा-ए-तय्यबा का विर्द कोई और ही तास्सुर कर रहा था। ये फौज थकी हुई थी। ज़रतुश्त ताज़ा दम थे।

दोनों फौजों के दरमियान थोड़ा सा फासला रह गया तो ख़ालिद(र०) ने अपनी फौज को रोक लिया। मिस्ना बिन हारिसा अपने सवार दस्ते के साथ ख़लिद(र०) के पीछे था। दायें और बायें पहलुओं पर ख़ालिद के मुक़र्रर किए हुए दो सालार आसिम बिन उमरो और ऐदी बिन हातिम थे।

❁

उस दौर की जंगों के दस्तूर के मुताबिक़ ज़रतुश्त का सिपह सालार क़ारन आगे आया और उस ने मुसलमानों को इंफरादी मुक़ाबले के लिए लल्कारा।

"मदीना का कोई शुतर बान मेरे मुक़ाबले में आ सकता है?"-उस ने दोनों फौजों के दरमियान आ कर और लल्कार कर कहा-"मेरे मुक़ाबले में आने वाला ये सोच कर आए के मैं शहंशाहे फारस का सिपह सालार हूं।"

"मैं हूं तेरे मुक़ाबले में आने वाला!"-ख़ालिद(र०) ने अपना घोड़ा आगे बढ़ाया और लल्कारे-"क़ारन....आ और अपने सालार हरमज़ के क़त्ल का इन्तेक़ाम ले। मैं हूं उस का क़ातिल।"

ख़ालिद(र०) अभी क़ारन से कुछ दूर ही थे के ख़ालिद(र०) के अक़ब से एक घोड़ा तेज़ी से आया और ख़ालिद(र०) के क़रीब से गुज़र गया।

"पीछे रह इब्ने वलीद!"-ये घुड़ सवार लल्कारा-"आतिश परस्तों का ये सालार मेरा शिकार है।"

ख़ालिद(र०) ने देखा। वो ऐ मुसलमान सवार मोक़ल बिन आशी था। वो पहलवानी और तेग़ ज़नी में महारत और शौहरत रखता था। ये डिसीपिलीन के खिलाफ था के कोई सिपाही या सवार अपने सालार पर बरतरी हासिल करने की

कोशिश करता लेकिन वो वक़्त ऐसा था के बन्दा व साहब और मोहताज व ग़नी एक हो गए थे। सिपाही और सवार जंग का मक़सद समझते थे। जो जज़्बा सिपाहियों में था। वही सलारों में था। मोक़ल बिन आशी ये बर्दाश्त न कर सका के उस का सालार एक आतिश परस्त के हाथों घायल हो।

ख़ालिद(र०) अपनी सिपाह के जज़्बे को समझते थे। वो रूक गए। उन्होंने अपने इस सवार के जज़्बे को मारने की कोशिश न की।

मोक़ल के घोड़े की रफ्तार तेज़ थी। घोड़ा ईरानियों के सालार क़ारन बिन क़रयान्स से आगे निकल गया। मोक़ल ने आगे जा कर घोड़े को मोड़ा और क़ारन को लल्कारा क़ारन ने पहले ही तलवार अपने हाथ में ले रखी थी। उस के सर पर ज़ंजीरों वालना ख़ुद था और उस का ऊपर का धड़ ज़िरा में था। उस की टांगों पर मोटे चमड़े के खोल चढ़े हुए थे। उस के चेहरे पर इन्तेक़ाम के तास्सुरात की बजाए तकब्बुर था जैसे लोहे और मोटे चमड़े का ये लिबास उसे मुसलमान की तलवार से बचा लेगा।

क़ारन ने अपने घोड़े की बाग़ को झटका दिया। दोनों के घोड़े एक दूसरे के ग़िर्द गिर्द एक दो चक्कर लगा कर आमने सामने आ गए।

"ऐ आग के पूजने वाले!"–मोक़ल ने बड़ी बुलंद आवाज़ से कहा–"मैं सिपाही हूं, सालार नहीं हूं।"

क़ारन बिन करयान्स के चहरे पर रऊनत के आसार और ज़्यादा नुमाया हो गए। दोनों घोड़े एक दूसरे की तरफ बढ़े। इन के सवारों की तलवारें बुलंद हुईं। पहले वार में तलवारें एक दूसरी से टकराईं और दोनों सवार पीछे हट गए। घोड़े एक बार फिर एक दूसरे की तरफ आए। तलवारें एक बार फिर हवा में टकराईं। इस के बाद घोड़े पीछे हट हट और घूम घूम कर एक दूसरे की तरफ आए। दोनो सवार एक दूसरे पर वार करते रहे। आखिरी बार क़ारन ने तलवार बुलंद की। मोक़ल ने वो वार रोकने की बजाए उस की बग़ल को नंगा देखा तो तलवार बरछि की तरह उस की बग़ल मे इतनी ज़ोर से मारी के तलवार क़ारन के जिस्म में दूर तक उतर गई। कारन के इसी हाथ में तलवार थी जो उस के हाथ से छुट गई। क़ारन घोड़े पर एक तरफ झुका। मोक़ल ने अब उसकी गर्दन देख ली जिस से क़ारन के आहनी खुद की ज़ंजीरें हट कर नीचे को लटक आई थीं। मोक़ल ने पूरी ताक़त से गर्दन पर ऐसा वार किया के तकब्बुर और रऊनत से अकड़ी हुई गर्दन साफ कट गई। मुसलमानों के लश्कर से दाद व तहसीन और अल्लाहो अकबर के नारे रोअद की तरह कड़कने लगे।

क़ारन बिन क़रयान्स का सर ज़मीन पर पड़ा था। उस के ज़ंजीरों वाले खुद के नीचे उस की हैसियत के मुताबिक एक लाख दरहम क़े हीरों वाली टोपी थी। ऐसी ही

टोपी हरमज़ के सर पर भी थी। क़ारन का बाकी धड़ घोड़े से लुढ़क गया लेकिन उसका एक पांव रकाब में फंस गया। मोक़ल ने क़ारन के घोड़े को टुड मारा। घोड़ा क़ारन के जिस्म को घसीटता दोनों फौजों के दरमियान बे लगाम दौड़ने लगा। ईरानियों के लश्कर पर मौत का सन्नाटा तारी था।

❁

आतिश परस्तों की सफों से दो घोड़े आगे आए।

"कौन है हमारे मुक़ाबले में आने वाला!"-इन दो में से एक घुड़ सवार लल्कारा-"हम अपने सिपह सालार के खून का इन्तेक़ाम लेंगे।"

"मैं अकेला दोनों के लिए काफी हूं"-ख़ालिद(र०) ने दुश्मन की लल्कार का जवाब दिया और ऐड़ लगाई।

इन्हें लल्कारने वाले दोनों ईरानी सालार क़बाज़ और अनु शजान थे।

अचानक ख़ालिद के अक़ब से दो घोड़े आए जो उस के दायें बायें से आगे किल गए। ख़ालिद(र०) को एक लल्कार सुनाई दी-"पीछे रहो वलीद के बेटे! इन दोनों सालारों ने हमारे हाथ देखे हुए हैं।"

"अब हम इन्हें भाग निकलने की मोहलत नहीं देंगे"-ख़ालिद(र०) के लश्कर के दूसरे सवार ने कहा।

ख़ालिद(र०) ने देखा। ये दोनों सवार जो उस के क़रीब से गुज़र कर दुश्मन के मुक़ाबले में चले गए थे, उस के लश्कर के दायें और बायें पहलूओं के सालार आसिम बिन उमरो और ऐदी बिन हातिम थे। इन दोनों ने कपड़े का लिबास ज़ेब तन कर रखा था और वो जिन के मुक़ाबले में गए थे वो सर से पांव तक लोहे में डूबे हुए थे। मुसलमान सालारों को अपने अल्लाह पर भरोसा था और आतिश परस्त उस ज़िरा पर यक़ीन रखते थे जो उन्होंने पहन रखी थी। उन्हें मालूम न था के तलवार के वार को आहन नहीं अक़ीदा रोका करता है।

दोनों तरफ तजुर्बेकार सालार थे जो तेग़ ज़नी की महारत रखते थे। उनकी तलवारें टकराने लगीं। मुसलमानों की तलवारें आतिश परस्तों की ज़िरा को काटने से क़ासिर थीं इस लिए वो मोहतात हो कर वार करते थे ताके तलवारों की धार को नुक़सान न पहुंचे। आसिम और ऐदी इस ताक में थे के दुश्मन का कोई नाजुक और ग़ैर महफ़ूज़ जिस्म का हिस्सा सामने आए तो वो मोक़ल की तरह वार करें। आख़िर उन दोनों ने बारी बारी मोक़ल की तरह अपने अपने दुश्मन के क़रीब जा कर इन्हें मौक़ा दिया के वो ऊपर से तलवार का वार करें आतिश परस्तों के दोनों सलारों ने वही ग़लती की जो क़ारन ने की थी। उन्होंने बाज़ू ऊपर किए और तलवारें उन की बग़लों में

दाखि़ल हो गईं और दोनों की तलवारें गिर पड़ीं।

ख़ालिद(र०) ने जब देखा के ज़रतुश्तों का सिपाह सालार मारा गया और इस के बाद उस के वो दोनों सालार भी जिन्हें अपने लश्कर को मुनज़्ज़म तरीके से लड़ाना था, मारे गए है तो ख़ालिद(र०) ने अपने लश्कर को हमले का हुक्म दे दिया।

ईरानियों के लश्कर में वो सिपाही भी शामिल थे जो अपने दिलों पर मुसलमानों की दहशत लिए हुए जंगे सलासल से भागे थें। अब उन्होंने अपने तीन सालारों को मरते देखा तो उन की दहशत में इज़ाफा हो गया। उन्होंने ये दहशत अपने सारे लश्कर पर तारी कर दी। लश्कर का हौसला तो पहले ही मजरूह हो चुका था। ये लश्कर मुक़ाबले के लिए बहर हाल तैयार हो गया। ईरानियों को ये फायदा हासिल था के उन के पीछे दरिया था जिस ने उन के अक़ब को महफूज़ रखा हुआ था। इस दरिया का दूसरा फायदा उन्हें ये नज़र आ रहा था के उस में बड़ी कश्तियां बंधी थी जो लश्कर के साथ आई थी। पस्पा होने के लिए इन कश्तियों ने उनके काम आना था। उन्हें ये डर भी न था के मुसलमान तआक्कुब में आ सकेंगे।

❁

ख़ालिद(र०) के हमले का अंदाज़ हल्ला बोलने वाला या अंधाधुंद टूट पड़ने वाला नहीं था। उन्होंने एक ही बार अपने तमाम दस्ते जंग में न झोंक दिये। उन्होंने क़ल्ब के दस्तों को बारी बारी आगे भेजा और इन्हें हिदात ये दी के वो दुश्मन की सफ़ों के अंदर न जाऐं बल्कि दुश्मन को अपने साथ आगे लेने की कोशिश करें।

इस के साथ साथ ख़ालिद(र०) पहलुओं को इस तरह फैलाते चले गए के वो दुश्मन पर पहलुओं से हमला कर सकें। दुश्मन के सिपाह सालार और दो सालारों की लाशें घोड़ों के सुमों तले कुचल मसली गईं थी। ये फ़ारस की शहंशाही का गुरूर था जो मुसलमानों के घोड़ों तले कुचला जा रहा था। इस सूरते हाल में आतिश परस्तों के हौसले मर सकते थे, बेदार नहीं हो सकते थे। मुसलमानों के नारे और उन की लल्कार उन के पांव उखाड़ रही थी।

"ज़रतुश्त के पुजारियों! अल्लाह को मानो।"

"हम हैं मोहम्मद(स०) के शैदाई।"

और अल्लाह अकबर के नारों से फिज़ा कांप रही थी।

जोश खरोश तो मिस्ना बिन हारिसा के सवारों का था। उनकी लल्कार अलग थलग थी।

"अपने गुलामों की ज़र्ब देखो।"

"आज ज़ालिमों से खून का हिसाब लेंगे।"

"बुलाओ उर्दशहर को।"

"ज़रतुश्त को आवाज़ दो।"

ईरानी सिपाह के हौसले जवाब देने लगे। उन की दूसरी कमज़ोरी ने उन के जिस्म तोड़ दिए। ये कमज़ोरी उन के हथियारों का और ज़िरा का बोझ था। वो थकन महसूस करने लगे। ख़ालिद(र०) ने जो अपनी सिपाह के साथ सिपाहियों की तरह लड़ रहे थे, भांप लिया के आतिश परस्त ढीले पड़ते जा रहे हैं। उन्होंने जिस शिद्दत से मुक़ाबले और जवाबी हमलों का आग़ाज़ किया था, इस शिद्दत में नुमायां कमी नज़र आने लगी। ख़ालिद(र०) ने अपने क़ासिद पहलुओं के सालारों आसिम और ऐदी की तरफ इस हुक्म के साथ दौड़ दिए के अपने अपने पहलुओं को और बाहर ले जा कर बैकवक़्त दुश्मन के पहलुओं पर हमला करें।

इस के साथ ही ख़ालिद(र०) ने क़ल्ब के पीछे रखे हुए महफ़ूज़ के दस्ते को दुश्मन के क़ल्ब पर हमले का हुक्म दे दिया। उन दस्तों को जो पहले मौज दर मौज के अंदाज़ से हमले कर रहे थे, ख़ालिद(र०) ने पीछे हटा लिया ताके वे जोश व खरोश में ऐसी थकन महसूस न करने लगें जो उन की बर्दाश्त से बाहर हो जाए।

ईरानी लश्कर मुसलमानों के नए हमलों की ताब न ला सका। उनका जानी नुक़सान बहुत हो चुका था। अब वो बिखरने लगे। मुसलमानों ने देखा के पीछे जो ईरानी सिपाही थे वो दरिया की तरफ भागे जा रहे थे। उस वक़्त मुसलमानों को वो कश्तियां दिखाई दीं जो सैंकड़ों की तादाद में दरिया के किनारे बंधी थीं।

"कश्तियां तोड़ दो"-एक मुसलमान की लल्कार सुनाई दी।

"दुश्मन भागने के लिए कश्तियां साथ लाया है"-एक और लल्कार सुनाई दी।

जब ये लल्कार ख़ालिद(र०) तक पहुंची तो उन्होंने दायें बायें क़ासिद इस हुक्म के साथ दौड़ा दिए के दुश्मन के अक़ब में जाने की कोशिश करो और उस की कश्तियां तोड़ दो या इन पर कब्ज़ा कर लो। कब्ज़ा कर लेने की सूरत में ये कश्तियां ख़ालिद(र०) के लश्कर के काम आ सकती थीं। इन्हें भी दरिया पार करना था।

जब ये हुक्म सालारों तक और सालारों से सिपाहियों तक पहुंचा तो यही एक लल्कार बुलंद होने लगी-"कश्तियों तक पहुंचो.....कश्तियां बेकार कर दो.... कश्तियां पकड़ लो।"

इस लल्कार ने आतिश परस्तों का रहा सहा दम ख़म भी तोड़ दिया। ज़िन्दा भाग निकलने का ज़रिया यही कश्तियां थीं जो मुसलमानों ने देख ली थीं ईरानियों ने लड़ाई से मुंह मोड़ कर कश्तियों का रूख किया। वो एक दूसरे से पहले कश्तियों में

सवार होने के लिए धक्कम पेल करने लगे। उनकी हालत डरी हुई भेड़ों की मानिंद हो गई जो एक दूसरी की आड़ में छुपने की कोशिश किया करती हैं। ईरानी सिपाहियों ने कश्तियों पर सवार होने के लिए घोड़े छोड़ दिए, हालांके कश्तियां इतनी बड़ी थी के इन पर घोड़े भी ले जाए जा सकते थे।

ये था वो मौक़ा जब मुजाहेदीने इस्लाम के हाथों आतिश परस्तों का क़त्ले आम शुरू हो गया। वो कश्तियों में सवार हाने की कोशिश में कट रहे थे। इन में से जो कश्तियों में सवार हो गए और रस्से खोल कर कश्तियां किनारे से हटा ले गए, इन में ज़्याद तर मुसलमानों के तीरों का निशाना बन गए। फिर भी कुछ खुश नसीब थे जो बच कर निकल गए।

तक़रीबन तमाम मोअरिख़ों ने लिखा है के इस मआरके में तीस हज़ार ईरानी फौजी मारे गए। ज़ख्मियों की तादाद किसी ने नहीं लिखी। तसव्वुर किया जा सकता है के जहां इतनी अमवात हुई वहां ज़ख्मियों की तादाद अमवात के ही लगभग होगी। इस का मतलब ये था के शहंशाहे फारस की उस जंगी कुव्वत का बुत टूट गया था जिसे ना क़ाबिले तसख़ीर समझा जाता था।

अल्लाह की तलवार ने किसरा की ताक़त और ग़रूर पर ज़र्ब कारी लगाई थी जिस ने मदाइन में किसरा के ऐवानों को हिला डाला था।

दरयाऐ मोअत्तल के किनारे खून में डूब गए थे। मैदाने जंग का मंज़र बड़ा ही भयानक था। दूर दूर तक लाशें और तड़पते ज़ख्मी बिखरे नज़र आते थे। ज़ख्मी घोड़े दौड़ते फिरते और ज़ख्मियों को रौंदते फिर रहे थे। मुजाहेदीने इस्लाम अपने ज़ख्मी साथियों को और शहीदों की लाशें को उठा रहे थे। मैदान खून से लाल हो गया था।

ख़ालिद(र०) एक बुलंद जगह पर खड़े मैदाने जंग को देख रहे थे। एक तरफ से एक घुड़ सवार घोड़े को सरपट दौड़ाता आया। उस ने ख़ालिद(र०) के क़रीब आ कर घोड़ा रोका। वो मिस्ना बिन हारिसा था। घोड़ा ख़ालिद(र०) के पहलू के साथ कर के मिस्ना घोड़े पर ही ख़ालिद(र०) से बुग़लगीर हो गया।

"इब्ने वलीद!"—मिस्ना ने जज़बात से लरज़ती हुई आवाज़ में कहा—"मै ने आज मज़लूम मुसलमानों के खून का इन्तेक़ाम ले लिया है।"

"अभी नही इब्ने हारिसा!"—ख़ालिद ने बड़े संजीदा लहजे में कहा – "अभी तो इब्तेदा है। हमारे लिए असल ख़तरा अब शुरू हुआ है। क्या तुम ने इन कश्तियों की तादाद नही देखी? क्या तुम ने नही देखा के ये कश्तियां कितनी बड़ी और कितनी मज़बूत थीं? और तुम ने ये भी देखा होगा के फारसियों के पास साज़ो सामान किस क़दर ज़्यादा है। इन के वसायल बड़े वसीअ है।। हम अपने वतन से बहुत दूर आ गए

है। हमें अब इन से हथियार और रसद छीन कर अपनी ज़रूरत पूरी करनी है। ये काम आसान नहीं अब्ने हारिसा! और मेरे लिए ये भी आसान नही के मैं इन दुश्वारियों और महरूमियों से घबरा कर यहीं से वापस चला जाऊं।"

"हम वापस नहीं जाऐंगे इब्ने वलीद!"-मिस्ना ने पुरअज़्म लहजे में कहा-"हमें किसरा के ऐवानों की ईंट से ईंट बजानी है। हमें इन आतिश परस्तों पर ये साबित करना है के झूटे 'खुदा' किसी की दस्तगीरी नहीं कर सकते।"

❁

ख़ालिद(र०) ने अपने सालारों को बुलाया। इस से पहले वो माले ग़नीमत इक्ठा करने का हुक्म दे चुके थे।

"हमारी मुश्किलात अब शुरू हुई हैं"-ख़ालिद(र०) ने अपने सालारों से कहा-"हम इस वक़्त दुश्मन की सरज़मीन पर खड़े हैं। यहां के दरख़्त और यहां के पत्थर और मट्टी का ज़र्रा ज़र्रा हमारा दुश्मन है। यहां के लोग हमारे लिए अजनवी हैं। इन लोगों पर फारस की शहंशाही की दहशत तारी है। ये लोग उर्दशहर को फिरऔन समझते हैं। ये बड़ी मुश्किल से मानेंगे के कोई ऐसी ताक़त भी है जिस ने फारस की शहंशाही का बुत तोड़ डाला है....

"मेरे रफीको! यहां के लोगों को अपने साथ मिलाए बग़ैर हम यहां एक क़दम भी नहीं चल सकते। हम किसी से तआवुन की भीक नहीं मागेंगे। हम मोहब्बत से इन के दिल मोह लेने की कोशिश करेंगे और जिस पर हमें ज़रा सा भी शक होगा के वो हमें ज़ाहिरी तौर पर या दरपर्दा नुक़सान पहुंचाने की कोशिश कर रहा है उसे हम ज़िन्दा रहने के हक़ से महरूम कर देंगे। हम इन लोगों को गुलाम बनाने नही आए। हम इन्हें गुलामी से और बातिल के अक़ीदों से निजात दिलाने आए हैं। जो इलाक़े हम ने ले लिए हैं इन के इन्तज़ामी उमूर की तरफ फौरी तवज्जह देनी है। यहां मुसलमान भी आवाद हैं। वो यक़ीनन हमारा साथ देंगे, लेकिन मेरे दोस्तो! किसी पर सिर्फ इस लिए ऐतमाद न कर लेना के वो मुसलमान है। गुलामी इतनी बुरी चीज़ है के इन्सानों की फितरत वदल डालती है....

"यहां के मुसलमानों को ऐतमाद में ले कर इन से मालूम करना है के शहंशाहे फारस के हामी कौन कौन हैं। इन की छान बीन कर के उनके दर्जे मुक़र्रर करने है। जिस पर ज़रा सा भी शक हुआ उसे गिरफ्तार कर लो और जो गैर मुसिलम स[illegible] दिल से हमारे साथ तआवुन करना चाहता है उसे इस्लाम की दावत दो....मैं मुख़तलिफ शौबे क़ायम कर रहा हूं।"

ख़ालिद(र०) ने मफतूहा इलाक़ों के बाशिंदों पर सब से ज़्यादा तवज्जह दी।

उन्होंने ऐलान किया के जो ग़ैर मुस्लिम बाशिंदे मुसलमानों की इताअत कुबूल कर लेंगे उन से जज़िया वसूल किया जाएगा और मुसलमान उन्हें अपनी पनाह में समझेंगे। उनकी ज़रूरयात और उन के जान व माल का तहफ्फुज़ मुसलमानों की ज़िम्मदारी होगी।

इस ऐलान के साथ ही बेश्तर बाशिंदे मुसलमानों की पनाह में आ गए। ख़ालिद(र०) ने इस इलाक़े से जज़िया और महसूलात वग़ैरा जमा करने के लिए शौआ क़ायम कर दिया जिस का निगरां सवेद बिन मुक़रन को मुक़र्रर किया गया। दूसरा शौआ जिस की सब से ज़्यादा ज़रूरत थी वो जासूसी का शौआ था। अब बाक़ायदा और माहिराना जासूसी की ज़रूरत थी। ख़ालिद(र०) ने उसी वक़्त अपने जासूस जो उसी इलाक़े के रहने वाले मुसलमान थे, दरयाऐ फरात के पार भेज दिये।

जब माले ग़नीमत जमा हो गया तो देखा के ये जंगे सलासल की निस्बत खासा ज़्यादा था। ख़ालिद(र०) ने उस के पांच हिस्से किए। चार अपनी सिपाह में तक़सीम कर के पांचवां हिस्सा मदीना भेज दिया।

मोअर्रिख़ लिखते हैं के इस से पहले ख़ालिद(र०) को इतना संजीदा और इतना मुताफक्किर कभी नहीं देखा गया था जितना वो अब थे।

मई 633ई० के पहले हफ्ते में जो माह सफर 12 हिज्री का तीसरा हफ्ता था ज़रतुश्त के पुजारियों के लिए दरयाए फरात का सर सब्ज़ व शादाब खित्ता जहन्नुम बन गया था।

किस क़दर नाज़ था इन्हें अपनी जंगी ताक़त पर, अपनी शान व शौकत पर, अपने घोड़ों और हाथियों पर। वो तो फिरऔन के हम पल्ला होने का दावा करने लगे थे और किसरा दहशत की अलामत बनता जा रहा था। दजला और फरात के संगम के वसी इलाक़े में ख़ालिद ने जिन्हें रसूले अकरम ने अल्लाह की तलवार का खिताब दिया था, फारस के ज़रतुश्तों को बहुत बुरी शिकस्तें दी थीं और उन के हरमज़, क़ारन विन कुरयान्स, अनु शजान और क़बाज़ जैसे सालारों को मौत के घाट उतार दिया था लेकिन किसरा उर्दशहर ने अभी शिकस्त तस्लीम नहीं की थी। उस के पास अभी बे पनाह फौज मौजूद थी और मदीना के मुजाहेदीन को वो अब भी बद्दु और सहराई लुटेरे कहता था।

उस ने शिकस्त तस्लीम तो नहीं की थी लेकिन शिकस्त और अपने नामूर सालारों की मुसलमानों के हाथों मौत का जो उसे सदमा हुआ था, उसे वो छुपा नहीं सका था। हरमज़ की मौत की इत्त्सेला पर वो अपने दिल पर हाथ रख कर दोहरा हो गया था। उसने संभलने की बहुत कोशिश की थी लेकिन ऐसे मर्ज़ का आग़ाज़ हो चुका था जिस ने उसे बिस्तर पर गिरा दिया था। मोअररिख़ों ने इस मर्ज़ को सदमे का असर लिखा है।

"क्या मेरे लिए शिकस्त और पस्पाई के सिवा कोई खबर नहीं रह गई?"–उस ने विस्तर में उठ कर बैठते हुए गरज कर कहा–"क्या मदीना के मुसलमान जिन्नात हैं? क्या वो किसी को नज़र नहीं आते और वार कर जाते हैं?"

तबीब, उर्द शहर की मंज़ूरे नज़र दो जवां साल बीवियां और उस का वज़ीर हैरान और परेशान खड़े उस क़ासिद को घूर रहे थे जो ईरानियों की फौज की एक और शिकस्त और पस्पाई की खबर लाया था। उस के आने की जब इत्तेला अंदर आई तो तबीब ने बाहर जा कर क़ासिद से पूछा था के वो क्या ख़बर लाया है। क़ासिद ने खबर सुनाई तो तबीब ने उसे कहा था के वो किसरा को अभी ऐसी बुरी खबर न सुनाए क्योंके उस की तबीयत इस की मोहतमल नहीं हो सकेगी लेकिन ये क़ासिद कोई मामूली सिपाही नहीं था के वो तबीब का कहा मान जाता। वो पुराना कमांडर था। इस का ओहदा सालारी से दो ही दर्जे कम था। उसे किसी सालार ने नहीं भेजा था। उसे

भेजने के लिए कोई सालार ज़िन्दा नही रहा था।

तबीब के रोकने से वो न रूका। उस ने कहा के उसे किसरा की सहत का नही फारस की शहंशाही और ज़रतुश्त की अज़मत का ग़म है। अगर शहंशाहे उर्द शहर को उस ने दजला और फरात की जंगी कैफियत की पूरी इत्तेला न दी तो मुसलमान मदाइन के दरवाज़ पर आ धमकेंगे। उस ने तबीब की और कोई बात न सुनी। अंदर चला गया और उर्द शहर को बताया के मुसलमानों ने फारस की फौज को बहुत बुरी शिकस्त दी है। उर्दशहर लेटा हुआ था, उठ बैठा। गुस्से से उस के होंट और उस के हाथ कांप रहे थे।

"शहंशाहे फारस!"–कमांडर ने कहा–"मदीना वाले जिन्नात नहीं। वो सब को नज़र आते हैं लेकिन...."

"क्या क़ारन मर गया था?"–उर्द शहर ने गुस्से से पूछा।

"हां शहंशाह!"–कमांडर ने जवाब दिया–"वो ज़ाती मुक़ाबले में मारा गया था। उस ने दोनों फौजो की लड़ाई तो देखी ही नहीं।"

"मुझे इत्तेला दी गई थी के क़बाज़ और अनु शजान भी उस के साथ थे।"

"वो भी क़ारन के अंजाम को पहुंच गए थे"–कमांडर ने कहा–"वो क़ारन के क़त्ल का इन्तेक़ाम लेना चाहते थे। दोनों ने इक्ळे आगे बढ़ कर मदीना के सालारों को लल्कारा और दोनो मारे गए.....शहंशाहे फारस! क्या फारिस की इस अज़ीम शहंशाही को इस अंजाम तक पहुंचना है?...नहीं .....नहीं........गुस्ताख़ी की मआफी चाहता हूं। अगर किसरा ने सदमे से अपने आप को यूं रोग लगा लिया तो क्या हम ज़रतुश्त की अज़मत को मदीना के बद्दुओं से बचा सकेंगे?"

"तुम कौन हो?"–उर्द शहर ने पूछा।

"मैं कमांडर हूं"–कमांडर ने जवाब दिया–"मैं किसी का भेजा हुआ क़ासिद नहीं मैं ज़रतुश्त का जां निसार हूं।"

"दरबान को बुलाओ"–उर्दशहर ने हुक्म दिया–"तुम ने मुझे नया हौसला दिया है....मुझे ये बताओ, क्या मुसलमानों की नफरी ज़्यादा है? क्या उन के पास घोड़े ज़्यादा हैं? क्या है उन के पास?"

दरबान अंदर आया और हुक्म के इन्तेज़ार में झुक कर दोहरा हो गया।

"सालार अंदरज़ग़र को फौरन बुलाओ"–उर्दशहर ने दरबान से कहा और कमांडर से पूछ–"क्या है उन के पास?.....बैठ जाओ और मुझे बताओ।"

"हमारे मुक़ाबले में उन के पास कुछ भी नहीं"–कमांडर ने जवाब दिया–"उन में लड़ने का जज़्बा है। मैं ने उन के नारे सुने हैं। वो नारों में अपने खुदा और रसूल(स०) को पुकारते हैं। मैं ने उन में अपने मज़हब का जुनून देखा है। वो अपने अक़ीदे के बहुत

पक्के हैं और यही उन की ताक़त है। हर मैदान में उनकी तादाद थोड़ी है।"

"ठहर जाओ"-उर्दशीर ने कहा-"अंदरज़गर आ रहा है। मुझे अपने इस सालार पर भरोसा है। इसे बताओ के हमारी फौज में क्या कमज़ोरी है के इतनी ज़्यादा तादाद में होते हुए भाग आती है।"

۞

"अंदरज़गर!"-उर्दशहर बिस्तर पर नीम दराज़ था। अपने एक और नामूर सालार से कहने लगा-"क्या तुम ने सुना नहीं के क़ारन बिन क़रयान्स भी मारा गया है? क़बाज़ भी मारा गया और अनु शजान भी मारा गया है?"

अंदरज़गर की आंखें ठहर गईं जैसे हैरत ने उस पर सकता तारी कर दिया हो।

"इसे बताओ कमंडर!"-उर्दशहर ने कमांडर से कहा-"क्या मैं इन हालात में ज़िन्दा रह सकूंगा?"

कमांडर ने सालार अंदरज़गर को तफसील से बताया के मुसलमानों ने इन्हें दरयाए मोक़ल के किनारे किस तरह शिकस्त दी है और ये भी तफसील से बताओ के मदाइन की फौज किस तरह भागी है।

"अंदरज़गर!"-उर्दशहर ने कहा-" हम अब एक और शिकस्त का ख़तरा मोल नहीं ले सकते। मुसलमानों से शिकस्त का सिर्फ इन्तेक़ाम नहीं लेना, उन की लाशें फरात में बहा देनी हैं ये उसी सूरत में मुमकिन है के तुम ज़्यादा से ज़्यादा फौज ले कर जाओ। तुम उस इलाक़े से वाक़िफ हो। तुम बेहतर समझते हो के मुसलमानों को कहां घसीट कर लड़ाना चाहिए।"

"वो रेगिस्तान के रहने वाले हैं"-अंदरज़गर ने कहा-"और वो रेगिस्तान में ही लड़ सकते हैं। मैं इन्हें सर सब्ज़ और दलदली इलाक़े में आने दूंगा और इन पर हमला करूंगा। मेरी नज़र में वल्जा मोज़ूं इलाक़ा है"-उस के सवार दस्ते ही उन की असल ताक़त हैं"-कमांडर ने कहा-"उन के सवार बहुत तेज़ और होशियार हैं। दौड़ते घोड़ों से उन के चलाए हुए तीर खता नहीं जाते। उन के सवारों का हमला बहुत ही तेज़ होता है। वो जम कर नहीं लड़ते। एक हल्ला बोल कर इधर उधर हो जाते हैं।"

"यही वो राज़ है जो हमारे सालार नहीं समझ सके"-अंदरज़गर ने अपनी रान पर हाथ मार कर कहा-"मुसलमान आमने सामने की जंग लड़ नहीं सकते। हम उन से कई गुनाह ज़्यादा फौज ले जाएंगे। मैं इन्हें अपनी फौज के नीम दायरे में ले कर मजबूर करूंगा के वो अपी जान बचाने के लिए आमने सामने की लड़ाई लड़ें।"

"अंदरज़गर!"-उर्दशहर ने कहा-"यहां बैठ कर मंसूबा बना लेना आसान है लेकिन दुश्मन के सामने जा कर इस मंसूबे पर इस के मुताबिक़ अम्ल करना बहुत मुश्किल हो जाता है। इस कमांडर ने एक बात बताई है। इस पर ग़ौर करो। ये कहता

है के मुसलमान अपने मज़हब और अपने अक़ीदे के वफादार है और वो अपने खुदा और अपने रसूल(स०) का नाम ले कर लड़ते हैं। क्या हमारी फौज में अपने मज़हब की वफादारी है?......इतनी नही जितनी मुसलमानों में है....और इस पर भी ग़ौर करो अंदरज़ग़र! मुसलमान अपने इलाक़े से बहुत दूर आ गए है। ये उनकी कमज़ोरी है। यहां के लोग उन के खिलाफ होंगे।"

"नही शहंशाह!"-कमांडर ने कहा-"फारस के जिन इलाक़ों पर मुसलमानों ने कब्ज़ा कर लिया है, वहां के लोग उन के साथ हो गएं हैं। उन का सुलूक ऐसा है के लोग इन्हें पसंद करने लगते हैं। वो क़त्ल सिर्फ उन्हें करते है। जिन पर इन्हें कुछ शक होता है।"

"यहां के वो अरबी लोग उन के साथ नहीं हो सकते जो ईसाइ हैं"-अंदरज़ग़र ने कहा-"मेरे दिल में इन लोगों की जो मोहब्बत है इसे वो अच्छी तरह जानते हैं। मैं इन्हें अपनी फौज में शमिल करूंगा। हम यहां के मुसलमानों पर भरोसा नही कर सकते। ये हमेशा बाग़ी रहे हैं। इन पर हमें कड़ी नज़र रखनी पड़ेगी। इन की वफादारियां मदीना वालों के साथ हैं।"

"इन मुसलमानों के साथ पहले से ज़्यादा बुरा सुलूक करो"-उर्दशहर ने कहा-"इन्हें उठने के क़ाबिल न छोड़ो।"

"हम ने इन्हें मवेशियों का दर्जा दे रखा है"-अंदरज़ग़र ने कहा-"इन्हें भूका रखा है। इन की खेतियों से हम फसल उठा कर ले आते हैं ओर इन्हें सिर्फ इतना देते हैं जिस पर वो सिर्फ़ ज़िन्दा रह सकते हैं लेकिन वो इस्लाम का नाम लने से बाज़ नहीं आते। भूके मर जाना पसंद करते हैं लेकिन अपना मज़हब नहीं छोड़ते।"

"यही इन की कुव्वत है"-कमांडर ने कहा-"वरना एक आदमी दस का मुक़ाबला नही कर सकता। कपड़ों में मलबूस आदमी ज़िरा पोश को क़त्ल नही कर सकता। मुसलमानों ने ये कर के दिखा दिया है।"

"मैं इस कुव्वत को कुचल डालूंगा"-कमांडर ने कहा-"उर्दशहर ने बुलंद आवाज़ से कहा-"अंदरज़ग़र! अभी मुसलमानों का न छेड़ना जो हमारी रिआया हैं। इन्हें धोका दो के हम इन्हें चाहते हैं। पहले उन का सफाया करो जिन्होंने हमारी शहंशाही में क़दम रखने की जुर्रत की है। इस के बाद हम इन का सफाया करेंगे जो हमारे साए में सांपों की तरह पल रहे हैं।"

❁

उसी रोज़ उर्दशहर ने अपने वज़ीर, अंदरज़ग़र और उस के मातहत सालारों को बुलाया और इन्हें कहा के होना ये चाहिए था के हम मदीना पर हमला करते और इस्लाम का वही खात्मा कर देते लेकिन हमला उन्होंने कर दिया है और हमारी फौज

इन के आगे भागी भागी फिर रही है।

"सिर्फ दो मआरकों मे हमारे चार सालार मारे गए है"–उर्दशहर ने कहा–"इन चारों को मै अपनी जंगी ताक़त के सुतून समझता था, लेकिन इन के मर जाने से किसरा की ताक़त नही मर गई। सब कान खोल कर सुन लो। जो सालार या नायब सलार शिकस्त खा कर वापस आएगा, उसे मै जल्लाद के हवाले कर दूंगा। उस के लिए यही बेहतर होगा के वो अपने आप को खुद ही ख़त्म कर ले या सिकी और तरफ निकल जाए, फारस की सरहद में क़दम न रखे....

"अंदरज़ग़र! तुम मदाइन और इर्द गिर्द से जिस क़दर फौज साथ ले जाना चाहो ले जाओ। सालार बहमन को मै ने पैग़ाम भेज दिया है के वो अपनी तमाम तर फौज के साथ फरात के किनारे वल्जा के मुक़ाम पर पहुंच जाए। तुम उस से जल्दी वल्जा पहुंच जाओगे। वहां खेमा ज़न हो कर बहमन का इन्तेज़ार करना। जू ही वो आ जाए दोनों मिल कर मुसलमानों को घेरे में लेने की कोशिश करना। उन का कोई आदमी और कोई एक जानवर भी ज़िन्दा न रहे। उन की तादाद तुम्हारे मुक़ाबले में कुछ भी नहीं। मैं कोई मुसलमान क़ैदी नही देखना चाहता मैं उन की लाशें देखना चाहता हूं। मैं देखने आऊंगा के उन के घोड़ों और ऊंटों के मुरदार उन की लाशों के दरमियान पड़े हैं। तुम्हें ज़रतुश्त के नाम पर हलफ उठाना होगा के फतह हासिल करोगे या मौत.....

"अंदरज़ग़र दोनों फौजों का सिपह सालार होगा....अंदरज़ग़र! तुम्हारे ज़हन में कोई शक और वसवसा नहीं होना चाहिए। ये भी सोच लो के मुसलमान और आगे बढ़ आए और हमें एक और शिकस्त हुई तो रोमी भी हम पर चढ़ दौड़ेंगे।"

"शहंशाहे फारस अब शिकस्त की आवाज़ नहीं सुनेंगे"–सालार अंदरज़ग़र ने कहा–"मुझे इजाज़त दें के मैं ईसायों को अपने साथ ले लूं। इस से मेरी फौज में बेशुमार इज़ाफा हो सकता है।"

"तुम जो बेहतर समझते करो"–उर्दशहर ने कहा–"लेकिन मैं वक्त ज़ाय करने की इजाज़त नही दूंगा। अगर ईसाइ तुम्हारे साथ वफा करते है तो इन्हें साथ ले लो।"

❁

ये ईराक़ का इलाक़ा था जहां ईसायों का एक बहुत बड़ा क़बीला बकर बिन वायल आवाद था। ये लोग अरब के रहने वाले थे। इस्लाम फैलता चला गया और ये ईसाइ जो इस्लाम कुबूल करने पर आमादा नही थे, ईराक़ के इस इलाके में इक्ठ्ठे होते रहे और यहीं आवाद हो गए थे। इन में वो भी थे जो किसी वक्त ईरानियों के खिलाफ लड़े और जंगी क़ैदी हो गए थे। ईरानियों ने इन्हें इस इलाक़े में आबाद होने के लिए अज़ाद कर दिया था। इन में कुछ ऐसे भी थे जिन्होंने इस्लाम कुबूल कर लिया था। इन्हें मिस्ना बिन हारिसा जैसा क़ायद मिल गया था जिस ने इन्हें पक्का मुसलमान

बना दिया था। मुसलमानों पर तो ईरानी बे पनाह ज़ुल्म व तशद्दुद करते थे लेकिन ईसायों के साथ इन का रवैय्या कुछ बेहतर था। मोअररि़खों ने लिखा है ज़र्तश्ती सालार अंदरज़ग़र हरमज़ की तरह ज़ालिम नही था। मुसलमानों पर अगर वो ज़ुल्म नहीं करता था तो इन्हें अच्छा भी नही समझता था, ईसायों के साथ इस का सुलूक बहुत अच्छा था। उसे अब ईसायों की मदद की ज़रूरत महसूस हुई। उस ने इन के क़बीले बकर बिन वायल के बड़ों को बुलाया। वो इत्तेला मिलते ही दौड़ आए।

"अगर तुम में से किसी को मेरे खिलाफ शिकायत है तो मुझे बताओ"-अंदरज़ग़र ने कहा-"मैं उस का इज़ाला करूंगा।"

"क्या ये बहतर नही होगा के सालार हमें फौरन बता दे के हमें क्यों बुलाया गया है?"-एक बूढ़े ने कहा-"हम आप की रिआया हैं। हमें शिकायत हुई भी तो नहीं करेंगे।"

"हमें कोई शिकायत नहीं"-एक और ने कहा-"आप ने जो कहना है वो कहें।"

"मुसलमान बढ़े चले आ रहे हैं"-अंदरज़ग़र ने कहा-"शहंशाहे फारस की फौज इन्हें फरात में डुबो दे गी लेकिन हमें तुम्हारी ज़रूरत है। हमें तुम्हारे जवान बेटों की ज़रूरत है।"

"अगर शहंशाहे फारस की फौज इस्लामी फौज को फरात में डुबो देगी तो आप को हमारे बेटों की क्या ज़रूरत पैश आ गई है?"-वफद के बड़ों में से एक ने पूछा-"हम सुन चुके हैं के फारस की फौज के चार सालार मारे गए हैं। आप हम से पूछते क्यों हैं? हम आप की रिआया हैं। हमें हुक्म दें। हम सरकशी की जुर्रत नहीं कर सकते।"

"मैं किसी को अपने हुक्म का पाबंद कर के मैदान-ए-जंग में नहीं ले जाना चाहता"-अंदरज़ग़र ने कहा-"मैं तुम्हें तुम्हारे मज़हब के नाम पर फौज में शामिल करना चाहता हूं। हमें ज़मीन के किसी खित्ते के लिए नहीं अपने मज़हब और अपने अक़ीदों के तहफ्फुज़ के लिए लड़ना हैं मुसलमान सिर्फ इस लिए फतह पे फतेह हासिल करते चले आ रहे हैं के वो अपने मज़हब की ख़ातिर लड़ रहे हैं। वो जिस इलाक़े को फतह करते हैं, वहां के लोगों को इस्लाम कुबूल करने को कहते हैं। जो लोग इसलम कुबूल नहीं करते, उन से मुसलमान जज़िया वसूल करते हैं....

"क्या ये ग़लत है के तुम में वो भी हैं जो इस लिए अपने घरों से भागे थे के वो इस्लाम कुबूल नही करना चाहते थे? क्या तुम पसंद करोगे के मुसलमान आ जाएं और तुम्हारी इबादत गाहों के दरवाज़े बंद हो जाएं? क्या तुम बर्दाशत कर लोगे के मुसलमान तुम्हारी बेटियों को लोंडियां बना कर अपने साथ ले जाएं?.....ज़रा ग़ौर करो

तो समझोगे के हमें तुम्हारी नहीं बल्कि तुम्हें हमारी मदद की ज़रूरत है। हम तुम्हें एक फौज दे रहे है। इसे और ज़्यादा ताक़तवर बनाओ और अपने मज़हब को एक बे बुनियाद मज़हब से बचाओ।"

अंदरज़गर ने ईसायों को मुसलमानों के खिलाफ ऐसा मुशतईल किया के वो उसी वक्त वापस गए और (मोअर्रिख़ों की तहरीर के मुताबिक) अपने क़बीले की हर बस्ती में जा कर ऐलान करने लगे के मुसलमानों का बहुत बड़ा लश्कर क़त्ल व ग़ारत और लूट मार करता चला आ रहा है। वो सिर्फ उसे बख़्शते है। जो उनका मज़हब कुबूल कर लेता है। वो जवान और कमसिन लड़यिों को अपने साथ ले जाऐंगे।

"अपनी लड़कियों को छुपा लो।"

"माल दौलत ज़मीन में दबा दो।"

"औरतें बच्चों को ले कर जंगलों में चली जाऐं।"

"जवान आदमी हथियार, घोड़े और ऊंट ले कर हमारे साथ आ जाएं।"

"शहंशाहे फारस की फौज हमारे साथ है।"

"यसू मसीह की क़सम, हम अपनी इज़्ज़त पर कट मरेंगे।"

"अपना मज़हब नहीं छोड़ेंगे।"

एक शोर था, लल्कार थी जो आंधी की तरह दश्त व जबल को, जिन्न व इन्स को लपेट में लेती आ रही थी। कोई भी किसी से नहीं पूछता था के ये सब क्या है? किस ने बताया है के मुसलमानों का लश्कर आ रहा है? किधर से आ रहा है? जोश व खरोश था। ईसाइ मायें अपने जवान बेटों को रूख्सत कर रही थी। बीवियां खाविंदो को, बहनें भाईयों को अलविदा कह रही थी। एक फौज तैयार होती जा रही थी जिस की नफरी तेज़ी से बढ़ती जा रही थी। किसरा की फौज के कमांडर वग़ैरा आ गए थे। वो इन लोगों को एक जगह इक्ठा करते जा रहे थे जो किसरा की फौज में शामिल हो कर मुसलमानों के खिलाफ लड़ने के लिए आ रहे थे।

एक बस्ती में लड़ने वाले ईसाइ जमा हो रहे थे। सूरज कभी का गुरूब हो चुका था। बस्ती में मशअलें घूम फिर रही थीं और शौर था। बस्ती दिन की तरह बैदार और सरगर्म थी। दो आदमी जो इस बस्ती वालों के लिए अजनबी थे, बस्ती में दाख़िल हुए और लोगों में शामिल हो गए।

"हम एक लल्कार सुन कर आए है"-इन में से एक ने कहा-"हम रोज़गार की तलाश में बड़ी दूर से आए हैं और शायद मदाइन तक चले जाऐं। ये क्या हो रहा है?"

"तुम हो कौन?"-किसी ने उन से पूछा-"मज़हब क्या है तुम्हारा?"

दोनों ने अपनी अपनी शहादत की उंगलियां बारी बारी अपने दोनों कंधों से

लगाई फिर अपने अपने सीने पर उंगलियां ऊपर नीचे कर के सलीब का निशान बनाया और दोनों ने बैक ज़बान कहा के वो ईसाइ हैं।

"फिर तुम मदाइन जा कर क्या करोगे!"–इन्हें एक बूढ़े ने कहा–"तुम तनुमंद हो। तुम्हारे जिस्मों में ताक़त है। क्या तुम अपने आप को कुंवारी मरियम की आबरू पर कुर्बान होने के क़ाबिल नहीं समझते? क्या तुम्हारे लिए तुम्हारे पेट मुक़द्दस हैं?"

"नहीं"–इन में से एक ने कहा–"हमें कुछ बताओ और तुम में जो सब से ज़्यादा सियाना है हमें उस से मिलाओ हम कुछ बताना चाहते हैं।"

वहां फारस की फौज का एक पुराना कमांडर मौजूद था। इन दोनों को उस के पास ले गए।

"सुना है तुम कुछ बताना चाहते हो"–कमांडर ने कहा।

"हां!"–एक ने कहा–"हम अपना रास्ता छोड़ कर इधर आए हैं। सुना था के मसुलमानों के खिलाफ एक फौज तैयार हो रही है।"

"हां, हो रही है"–कमांडर ने कहा–"क्या तुम इस फौज में शामिल होने आए हो?"

"ईसाइ हो कर हम कैसे कह सकते हैं के हम इस फौज में शामिल नहीं होंगे।"–इन में से एक ने कहा–"हम काज़मा से थोड़ी दूर की एक बस्ती के रहने वाले अरब हैं। हम मुसलमानों के डर से भाग कर इधर आए हैं। अब आगे नहीं जाएंगे। तुम्हारे साथ रहेंगे....हम बताना ये चाहते हैं के मुसलमानों की तादाद बहुत ज़्यादा है लेकिन सामने वो बहुत थोड़ी तादाद को लाते हैं। यही वजह है के तुम्हारी फौज उन से शिकस्त खा जाती है।"

"इसे ज़मीन पर लकीरें डाल कर समझाओ"–उस के दूसरे साथी ने उसे कहा फिर ईरानी कमांडर से कहा"हमें मामूली दिमाग़ के आदमी न समझना। हम तुम्हें अच्छी तरह समझा देंगे के मुसलमानों के लड़ने का तरीक़ा क्या है और वो इस वक़्त कहां हैं और तुम लोग इन्हें कहां ला कर लड़ाओ तो इन्हें शिकस्त दे सकते हो। हम जो कुछ बताएं ये अपने सालार को बता देना।"

एक मशअल ला कर इस का डण्डा ज़मीन में गाड़ दिया गया। ये दोनों आदमी ज़मीन पर बैठ कर उंगलियों से लकीरें डालने लगे। उन्होंने जंगी इस्तेलाहों में ऐसा नक़शा पैश किया के कमांडर बहुत मुतास्सिर हुआ।

"अगर हमें पता चल जाए के मदाइन की फौज किसी तरफ से आ रही है तो हम तुम्हें बेहतर मशवरा दे सकते हैं"–इन में से एक ने कहा–"और कुछ ख़तरों से भी ख़बरदार कर सकते हैं।"

"दो फौजें मुसलमानों को कुचलने के लिए आ रही हैं"–कमांडर ने

कहा--"मुसलमान इन के आगे नही ठहर सकेंगे।"

"बशर्ते ये के दोनों फौजें मुख़तलिफ सिम्तों से आऐं"-एक अजनबी ईसाइ ने कहा।

"वो मुख़तलिफ सिम्तों से आ रही हैं"-कमांडर ने कहा-"एक फौज मदाइन से हमारे बड़े ही दिलैर और क़ाबिल सालर अंदरज़ग़र की ज़ेर-ए-कमान आ रही है और दूसरी फौज ऐसे ही एक और नामूर सालार बहमन जाज़विया ला रहा है। दोनो वल्जा के मुक़ाम पर इक्ळी होंगी। इस के साथ बकर बिन वायल का पूरा क़बीला होगा। चन्द छोटे छोटे क़बीलों ने भी अपने आदमी दिए हैं।"

"तो फिर तुम्हारे सालारो को जंगी चालें चलने की ज़रूरत नहीं"-दूसरे ने कहा-"तुम्हारी फौज तो सैलाब की मानिंद है। मुसलमान तिन्कों की तरह बह जाऐंगे. ....क्या तुम हम दोनों को अपने साथ रख सकते हो? हम ने तुम में खास क़िस्म की ज़हानत देखी है। तुम सालार नही तो नायब सालारी के ओहदे के क़ाबिल ज़रूर हो।"

"तुम मेरे साथ रह सकते हो"-कमांडर ने कहा।

"हम अपने घोड़े ले आऐं"-दोनों में से एक ने कहा-"हम तम्हें सुबह यहीं मिलेंगे।"

"सुबह कूच हो रहा है"-कमांडर ने कहा-"इन तमाम लोगों को जो लड़ने के लिए तैयार जा रहे हैं एक जगह जमा किया जा रहा है। तुम इन के साथ आ जाना, मैं तुम्हें मिल जाऊंगा।"

दोनों बस्ती से निकल गए। उन्हेंने अपने घोड़े बस्ती से कुछ दूर एक दरख्त के साथ बांध दिए और बस्ती में पैदल गए थे। बस्ती से निकलते ही वो दौड़ पड़े और अपने घोड़ों पर जा सवार हुए।

"क्या हम सुबह तक पहुंच सकेंगे बिन आसिफ!"-एक ने दूसरे से पूछा।

"खुदा की क़सम, हमें पहुंचना पड़ेगा, ख्वाह उड़ कर पहुंचें"-बिन आसिफ ने कहा-"ये खबर इब्ने वलीद(र०) तक बरवक्त न पहुंची तो हमारी शिकस्त लाज़मी है। घोड़े थके हुए नहीं। अल्लाह का नाम लो और ऐड़ लगाओ।

दोनों ने ऐड़ लगाई और घोड़े दौड़ पड़े।

"अशअर!"-बिन आसिफ ने बुलंद आवाज़ से अपने साथी से कहा-"ये तूफान है। अब आतिश परस्तों को शिकस्त देना आसान नही होगा। सिर्फ बकर बिन वायल की तादाद देख लो। कई हज़ार होगी।"

"मैं ने अपने सालार इब्ने वलीद(र०) को परेशानी की हालत में देखा था"-अशअर ने कहा।

"क्या तुम उस की परेशनी को नही समझे अशअर?"-बिन आसिफ ने

कहा–"हम इतने ताक़तवर दुश्मन के पेट में आगए है।"

"अल्लाह हमारे साथ है"–अशअर ने कहा–"आतिश परस्त इस ज़मीन के लिए लड़ रहे हैं जो वो समझते हैं के उन की है और हम अल्लाह की राह में लड़ रहे हैं जिस की ये ज़मीन है।"

ये दोनों घुड़ सवार ख़ालिद(र०) के उस जासूसी निज़ाम के बड़े ज़हीन आदमी थे जो ख़ालिद(र०) ने फारस की सरहद के अंदर आ कर क़ायम किया था। उन्हें अहसास था के वो मदीना से बहुत दूर अजनबी ज़मीन पर आ गए हैं जहां अल्लाह के सिवा उन की मदद करने वाला कोई नहीं। ख़ालिद(र०) ने दुश्मन की नक़ल व हरकत पर नज़र रखने के लिए हर तरफ अपने जासूस भेज दिए थे।

❁

ख़ालिद(र०) फजर की नमाज़ से फारिग़ हुए ही थे के उन के खेमे के क़रीव दो घोड़े आ रूके। सवार कूद कर उतरे। ख़ालिद(र०) नमाज़ बा जमाअत पढ़ कर आ रहे थे। इन सवारों को देख कर उन के क़रीब जा रूके। घोड़ों का पसीना इस तरह फूट रहा था जैसे दरिया मे से गुज़र कर आए हों। उन की सांसें धुंकनी की तरह चल रही थीं। सवारों की हालत घोड़ों से भी बुरी थी।

"अशअर!"–ख़ालिद(र०) ने कहा–"बिन आसिफ!...क्या ख़बर लाए हो?.. ..अंदर चलो। ज़रा दम ले लो।"

"दम लेने का वक़्त नहीं सालार!"–बिन आसिफ ने ख़ालिद(र०) के पीछे उन के ख़ेमे में दाख़िल होते हुए कहा–"आतिश परस्तों का सैलाब आ रहा है। हम ने ये खबर ईसायों की एक बस्ती से ली है। बकर बिन वायल की अलग फौज तैयार हो गई है। ये मदाइन की फौज के साथ अंदरज़ग़र नाम के एक सालार की ज़ेरे कमान आ रही है। दूसरी फौज बहमन जाज़विया की ज़ेर कमान दूसरी तरफ से आ रही है।"

"क्या ये फौजें हम पर मुख़तलिफ सिम्तों से हमला करेंगी?"–ख़ालिद(र०) ने पूछा।

"नही"–अशअ़र ने जवाब दिया–"दोनों फौजें वल्जा में इक्ळी होंगी।"

"और तुम कहते हो के सैलाब की तरह आगे बढ़ेंगी"–ख़ालिद(र०) ने कहा।

"कमांडर ने यही बताया है"–बिन आसिफ बोला।

इन दोनों की रिपोर्ट अभी मुकम्मिल हुई ही थी के एक शुतर सवार ख़ेमे के बाहर आ रूका और ऊंट से उतर कर बग़ैर इत्तेला ख़ेमे में आ गया। उस ने ख़ालिद(र०) को बताया के फलां सिम्त से ईरानियों की एक फौज बहमन जाज़विया की क़यादत में आ रही है। ये भी एक जासूस था जो किसी भेस में उस तरफ निकल गया था जिधर से बहमन की फौज आ रही थी।

तारीख़ बताती है के अंदरज़गर और बहमन जाज़विया को इस तरह कूच करना था के दोनों की फौजें बैक वक़्त या थोड़े से वक़्फे से वल्जा पहुंचती मगर हुआ यूं के अंदरज़गर पहले रवाना हो गया। इस की वजह शायद ये थी के वो किसरा उर्दशहर के क़रीब था इस लिए उर्दशहर उस के सर पर सवार था। बहमन दूर था। उसे कूच का हुक्म क़ासिद की ज़बानी पहुंचा था। वो दो दिन बाद रवाना हुआ।

किसी भी मोअररिख़ ने उस फौज की तादाद नही लिखी जो अंदरज़गर के साथ थी बहमन की फौज की तादाद भी तारीख़ में नही मिलती। सिर्फ ये एक बड़ा वाज़ेह इशारा मिलता है के आतिश परस्तों की फौज जो मसुलमानों के खिलाफ आ रही थी वो वाक़ई सैलाब की मानिंद थी। उर्दशहर ने कहा था के वो एक और शिकस्त का ख़तरा मोल नहीं लेगा, चुनांचे उसने इतनी ज़्यादा फौज भेजी थी जितनी इक्ळी हो सकती थी।

अंदरज़गर की फौज का तो शुमार हो भी नही सकता था। अपनी बाक़ायदा फौज के अलावा उस ने बकर बिन वायल के मालूम नहीं कितने हज़ार ईसाइ अपनी फौज में शामिल कर लिए थे। इन में पियादा थे और सवार भी। इस फौज में मज़ीद इज़ाफा कूच के दौरान इस तरह हुआ के जंग दरिया में आतिश परस्तों के जो फौजी मुसलमानों से शिकस्त खा कर भागे थे, वो अभी तक क़दम घसीटते मदाइन को जा रहे थे। वो सिर्फ थकन के मारे हुए नहीं थे, उन पर मुसलमानों की दहशत भी तारी थी। पस्पाई के वक़्त मुसलमानों के हाथों उन की फौज का क़त्ले आम हुआ था। उन्होंने कश्तियों में सवार हो कर भागने की कोशिश की थी इस लिए वो ख़ालिद(र०) के मुजाहेदीन के लिए बड़ा आसान शिकार हुए थे।

इस भगदड़ में जो कश्तियों में सवार हो गए थे, उन पर मुजाहेदीन ने तीरों का मीना बरसा दिया था। ऐसी कश्तियों में जो सिपाही ज़िन्दा रहे थे, उन की ज़हनी हालत बहुत बुरी थी। उन की कश्तियों में उन के साथी जिस्मों में तीर लिए तड़प तड़प कर मर रहे थे। इस तरह ज़िन्दा सिपाहियों ने लाशों और तड़प तड़प कर मरते साथियों के सथ सफर किया था। कश्तियां खून से भर गई थीं। ज़िन्दा सिपाहियों को कश्तियां खेने की भी होश नहीं थी। कश्तियां दरिया के बहाव के साथ खुद ही बहती कहीं से कहीं जा पहुंची थीं और दूर दूर किनारे से लगी थीं और ज़रतुश्त के ये पुजारी बहुत बुरी जिस्मानी और ज़हनी हालत में मदाइन की तरफ चल पड़े थे।

वो दो दो चार चार और इस से भी ज़्यादा की टोलियें में जा रहे थे। पुरानी तहरीरों से पता चलता है के इन में कई एक ने जब अंदरज़गर की फौज को आते देखा तो भाग उठे। वो तेज़ दौड़ नही सकते थे। इन्हें पकड़ लिया गया और फौज में शामिल कर लिया गया। कुछ तादाद ऐसे सिपाहियों की मिली जो दिमाग़ी तवाज़ुन खो बैठे थे।

इन में कुछ ऐसे थे जो बोलते ही नहीं थे। इन से बात करते थे तो वो ख़ाली ख़ाली निगाहों और बे तास्सुर चेहरों से हर किसी को देखते थे। बाज़ बोलने की बजाए चीखें मारते और दौड़ पड़ते थे।

"पेश्तर इस के के सारी फौज के लिए ख़ौफ व हिरास का सबब बन जाऐं इन्हें फौज से दूर ले जा कर ख़त्म कर दो"–उन के सालार अंदरज़ग़र ने हुक्म दिया।

इस हुक्म की तामील की गई।

मदाइन की ये फौज ताज़ा दम थी। उस ने अभी मुसलमानों के हाथ नहीं देखे थे लेकिन दरिया के मआरके से बचे हुए सिपाही जो रास्ते में इस ताज़ा दम फौज में शामिल हुए तो हल्के से ख़ौफ की एक लहर सारी फौज में फैल गई। शिकस्त खुर्दा सिपाहियों ने अपने आप को बे कुसूर साबित करने और ये ज़ाहिर करने के लिए के वो बे जिगरी से लड़े हैं, मुसलमानों के मुताल्लिक़ अपनी फौज को ऐसी बातें सुनाईं जैसे मुसलमानों में कोई माफ़ूकुल फितरत ताक़त हो और वो जिन भूत हों।

ख़ालिद(र०) की जंगी क़यादत की ये खूबी थी के वो दुश्मन को जिस्मानी शिकस्त ऐसी देते थे के दुश्मन पर नफसियाती असर भी पड़ता था जो एक अर्से तक दुश्मन के सिपाहियों पर बाकी रहता और इसी दुश्मन के साथ जब एक मआरका लड़ा जाता तो ये नफसियाती असर ख़ालिद(र०) को बहुत फायदा देता था। ये असर पैदा करने के लिए ख़ालिद(र०) दुश्मन को पुस्पा करने पर ही मुतमइन नहीं हो जाते थे बल्कि दुश्मन का तआक्कुब करते और उसे ज़्यादा से ज़्यादा जानी नुक़सान पहुंचाते थे।

❁

ख़ालिद(र०) के जासूसों ने ये इत्तेला भी इन्हें दी के पिछले मआरके के भागे हुए सिपाही भी मदाइन से आने वाली फौज मे शामिल हो रहे हैं। ख़ालिद(र०) ने अपने सालारों को बुलाया और उन्हे नई सूरते हाल से आगाह किया।

"मेरे अज़ीज़ साथियों !"–ख़ालिद(र०) ने इन्हें कहा–"हम यहां सिर्फ अल्लाह के भरोसे पर लड़ने के लिए आए हैं। जंगी नुक्ता-ए-निगाह से देखा जाए तो हम फारस की फौज से टक्कर लेने के क़ाबिल नहीं। अपने वतन से हम बहुत दूर निकल आए हैं। हमें कुमक भी नहीं मिल सकती। हम वापस भी नहीं जाऐंगे। हम फारसियों को और किसरा को नहीं, आग के 'खुदाओं' को शिकस्त देने का अज़्म किए हुए हैं.....

"मैं तुम सब के चेहरों पर थकन के आसार देख रहा हूं। तुम्हारी आंखें भी थकी थकी सी हैं और तुम्हारी बातों में भी थकन है लेकिन रब्बे काबा की क़सम, हमारी रूहें थकी हुई नहीं। हमें अब रूह की ताक़त से लड़ना है।"

"ऐसी बातें जुबान पर न ला इब्ने वलीद(र०) !–एक सालार आसिम बिन उमरों

ने कहा-"हमारे चेहरों पर थकन के आसार है, मायूसी के नही।"

"हमारे इरादों में कोई थकन नही इब्ने वलीद!(र०)"-दूसरे सालार ऐदी बिन हातिम ने कहा-"हम ने आराम कर लिया है। सिपाह ने भी आराम कर लिया है।"

"मै इसी लिए यहां खेमा ज़न हो गया था के अल्लाह के सिपाही आराम कर लें"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"तुम्हारे इरादे थके हुए नही तो मुझे कुछ कहने की ज़रूरत नहीं। मै दूसरी बातें करना चाहता हूं जो ज़्यादा ज़रूरी है.....तुम ने देखा है के हम ने फारसियों को पहले मआरके में शिकस्त दी तो वो फिर हमारे सामने आ गए। इन के साथ उन के वो सिपाही भी आ गए जो पहले मआरके से भागे थे। अब मुझे फिर इत्तेला मिली है के दूसरे मआरके से भागे हुए सिपाही मदाइन से आने वाली फौज के साथ रास्ते में मिलते जा रहे हैं। अब तुम्हें ये कोशिश करनी है के अगले मआरके में आतिश परस्तों का कोई सिपाही ज़िन्दा न जा सके। हलाक करो या पकड़ लो। मैं किसरा की फौज का नाम व निशान मिटा देना चाहता हूं।"

"हमारा अल्लाह यूं ही करेगा"-तीन चार आवाज़ें सुनाई दी।

"सब अल्लाह के इख्तियार में है"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"हम उसी की खुशनूदी के लिए घरों से इतनी दूर आ गए है.... अब जो सूरत हमारे सामने है, इस पर संजीदगी से ग़ौर करो। ये फैसले जज़बात से नहीं किए जा सकते हैं इस हकीक़त को हम नज़र अंदाज़ नहीं कर सकते के फारसियों की जंगी ताक़त और तादाद जो अब आ रही है, हम इस का मुक़ाबला करने के क़ाबिल नहीं लेकिन पस्पाई को दिल से निकाल दो। ताज़ा इत्तेलाओं के मुताबिक़ मदाइन की फौज दजला उबूर कर आई है। आज रात फरात को भी उबूर करेगी फिर वो वल्जा पहुंच जाएगी। इन की दूसरी फौज भी आ रही है। हमारे जासूस उसका कूच देख रहे हैं और मुझे इत्तेलाऐं दे रहे हैं...

"ख़ुदाए ज़ुल जलाल हमारी मदद कर रहा है। ये उसी की ज़ाते बारी का करम है के फारस की ये दूसरी फौज जो एक सालार बहमन जाज़विया की ज़ेरे कमान आ रही है, उस की रफ्तार तेज़ नहीं। वो पड़ाव ज़्यादा कर रही है। हम अपनी क़लील नफरी से इन दोनों फौजों से टक्कर ले सकते हैं। मेरी अक्ल अगर सही काम कर रही है तो मैं एक तरीक़ा बेहतर समझता हूं के मदाइन की फौज जो सालार अंदरज़ग़र के साथ आ रही हे वो वल्जा तक जल्दी पहुंच जाएगी। पेश्तर इस के के बहमन की फौज भी इस से आ मिले, हम अंदरज़ग़र पर हमला कर देंगे। क्या मैं ने बेहतर सोचा है?"

"इस से बेहतर और कोई फैसला नहीं हो सकता"-सालार आसिम ने कहा-"मुझे मदाइन की इस फौज में एक कमज़ोरी नज़र आ रही है। इस फौज में ईसाइयों के क़बीलों के लोग भी है जो लड़ना तो जानते होंगे लेकिन इन्हें जंग और

बाकायदा मआरके का तर्जुबा नही। मै इन्हें एक मुसल्लेह हुजूम कहुंगा। दुश्मन की दूसरी कमज़ोरी वो सिपाह है जो पिछले मआरके से भागे हुए मदाइन की फौज को रास्ते में मिले थे। मुझे यकीन है के वो डरे हुए होंगे। उन्होंने अपने हज़ारों साथियों को तलवारों, तीरों और बरछियों का शिकार होते देखा है। पस्पाई की सूरत में वो सब से पहले भागेंगे।"

"खुदा की क़सम बिन उमरो!"-ख़ालिद(र०) ने पुर जोश आवाज़ में कहा-"तुझ में वो अक्ल है जो हर बात समझ लेती है"-ख़ालिद(र०) ने इन सब पर निगाह दौड़ाई जो वहां मौजूद थे। उन्होंने कहा-"तुम में कोई एक भी ऐसा नही जो इस बात को न समझ सका हो, लेकिन दुश्मन के इस पहलू को न भूलना के उस के पास साज़ो सामान रसद और कुमक की कमी नही। सिर्फ अंदरज़गर की फौज हमारी तादाद से छः गुाह ज़्यादा है। मैं ने जो तरीका सोचा है ये मोज़ूं और मोअस्सर ज़रूर होगा लेकिन आसान नही। लड़ना सिपाह ने है। वो समझते हैं के हम यहां क्यों आए है, फिर भी इन्हें अच्छी तरह समझा दो के हम वापस जाने के लिए नही आए और हम मदाइन में होंगे या खुदाए बुर्जुग व बरतर के हुज़ूर पहुंच जाएंगे।"

❁

दो मोअरिख़ों, तिबरी और याकूत ने लिखा है के ये फहम व फिरासत की जंग थी। अगर तादाद और साज़ो सामान और दीगर जंगी अहवाल व कवाईफ को देखा जाता तो आतिश परस्तों और मुसलमानों का कोई मुकाबला ही न था। ख़ालिद(र०) का चेहरा उतरा हुआ था। उन की रातें गहरी सोच में गुज़र रही थीं। ख़ेमा गाह में वो चलते चलते रूक जाते और गहरी सोच में खो जाते। इन्हें ज़मीन पर बैठ कर उंगली से मिट्टी पर लकीरों को डालते हुए देखा गया। ख़ालिद(र०) के सामने सब से बड़ा मसला ये था के वो आतिश परस्तों से फैसला कुन मआरके लड़े बग़ैर वापस न जाने का अहद कर चुके थे।

उन्होंने अपनी फौज को हस्बे मामूल तीन हिस्सों में तक़सीम किया। पहले की तरह दायें और बायें पहलुओं पर सालार आसिम बिन उमरो और सालार ऐदी बिन हातिम को रखा। अपने साथ उन्होंने सिर्फ डेढ़ हज़ार नफरी रखी जिन में पियादे थे और घुड़ सवार भी। इस तक़सीम के बाद उन्होंने कूच का हुक्म दिया। ये हुक्म उन्होंने जासूसों की इस इत्तेला के मुताबिक़ दिया के अंदरज़गर की फौज दरियाए फरात उबूर कर रही है। ख़ालिद(र०) ने अपनी रफ्तार ऐसी रखी के आतिश परस्त वल्जा में जूंही पहुंचें, वो उस के सामने हों। ये जंगी फहम व फिरासत का ग़ैर मामूली मुज़ाहेरा था।

ऐसे ही हुआ जैसे उन्होंने सोचा था। अंदरज़गर की फौज वल्जा पहुंची तो उसे

ख़ेमे गाड़ने का हुकम मिला क्योंके उसे बहमन की फौज का इन्तेज़ार करना था। फौज इतने लम्बे सफर की थकी हुई ख़ेमे गाड़ने लगी और इस के साथ ही शोर बरपा हो गया के बहमन जाज़विया की फौज आ रही है। तमाम सिपह उस के इस्तक़बाल में खुशी का शोर गुल मचाने लगी लेकिन ये शोर अचानक खामोश हो गया।

"ये मदीना की फौज है"-किसी ने बुलंद आवाज़ से कहा और इस के साथ कई आवाज़ें सुनाई दी-"दुश्मन आ गया है.....तैयार....होशियार।"

अंदरज़गर घोड़े पर सवार आगे गया और अच्छी तरह देखा। ये ख़ालिद(र०) की फौज थी और जंगी तरतीब में रह कर पड़ाव डाल रही थी। ये फौज ख़ेमे नहीं गाड़ रही थी जिस का मतलब ये था के मुसलमान लड़ाई के लिए तैयार है।

"सालारे आला!"-अंदरज़गर को एक सालार ने कहा-"हमारी दूसरी फौज नहीं पहुंची। मालूम हुआ है के वो अभी दूर है वरना हम इन मुसलमानों को अभी कुचल डालते। ये तैयार हैं और हमारी सिपाह थकी हुई है।"

"क्या तुम देख नहीं रहे के इन की तादाद कितनी थोड़ी है?"-अंदरज़गर ने कहा-"खुला मैदान है। जो कुछ है साफ नज़र आ रहा है।"

"मालूम होता है हमारे सालार और कमांडरों को एक एक के छः छः नज़र आते रहे हैं"-अंदरज़गर ने कहा-"शिकस्त खा कर भागने वालों ने मदाइन में बताया था के मुसलमानों का रिसाला बड़ा ज़र्बदस्त है और इस के सवार लड़ने के इतने माहिर हैं के किसी के हाथ नहीं आते...मुझे तो इन का रिसाला कहीं नज़र नहीं आ रहा।"

"हमें झूटी इत्तेलाऐं दी गईं हैं"-सालार ने कहा-"हम बहमन का इन्तेज़ार नही करेंगे। उस के आने तक हम इन मसुलमानों को ख़त्म कर चुके होंगे।"

❁

मोअररिख़ों ने लिखा है के मसुलमानों के घुड़सवार वहां नहीं थे। वही थोड़े से सवार थे जो पियादों के साथ थे या ख़ालिद(र०) के साथ कुछ घुड़ सवार मुहाफिज़ थे। आतिश परस्तों के हौसले बढ़ गए। अंदरज़गर के लिए ये फतह बड़ी आसान थी। ख़ालिद(र०) ने इतनी थोड़ी नफरी के साथ इतने बड़े लश्कर के सामने आकर ग़ल्ती की थी।

जिस मैदान में दोनों फौजें आमने सामने खड़ी थी वो हमवार मैदान था। इस के दायें और बायें दो बुलंद टेकरियों थीं। एक टैकरी आगे जा कर मुड़ गई थी। इस के पीछे एक और टेकरी थी। ख़ालिद(र०) ने अपनी फौज को जंगी तरतीब में कर रखा था। उधर आतिश परस्त भी जंगी तरतीब में हो गए और दोनों फौजों के सालार एक दूसरे का जायज़ा लेने लगे।

ख़ालिद(र०) ने देखा के आतिश परस्तों के पीछे दरिया था लेकिन अंदरज़गर ने अपनी फौज को दरिया से तक़रीबन एक मील दूर रखा था। आतिश परस्तों के पहले सालारों ने अपना अक़ब दरिया के बहुत करीब रखा था ताके अकब महफूज़ रहे लेकिन अंदरज़गर ने अपने अक़ब को इतनी अहतियात न दी। उसे यक़ीन था के ये मुळी भर मुसलमान उस के अक़ब में आने की जुर्रत नहीं करेंगे।

"ज़रतुश्त के पुजारियो!"-अंदरज़गर ने अपनी सिपाह से खिताब किया-"ये हैं वो मुसलमान जिन से हमारे साथियों ने शिकस्त खाई है। इन्हें अपनी आंखों देख लो। क्या इन से शिकस्त खा कर तुम डूब नही मरोगे? क्या तुम्हें इन्हें फौज कहोगे? ये डाकूओं और लूटेरों का गिरोह है। इन में से कोई एक भी ज़िन्दा न जाए।"

वो दिन यू ही गुज़र गया। सालार एक दूसरे की फौज को देखते और अपनी अपनी फ़ौज की तरतीब सीधी करते रहे। अगले रोज़ ख़ालिद(र०) ने अपनी फौज को हमले का हुक्म दे दिया। फारस की फौज तह दर तह खड़ी थीं। मुसलमानों का हमला तेज़ और शदीद था लेकिन दुश्मन की तादाद इतनी ज़्यादा थी मुसलमानों को पीछे हट आना पड़ा दुश्मन ने अपनी अगली सफ को पीछे कर के ताज़ा दम सिपाहियों का आगे कर दिया।

❁

ख़ालिद(र०) ने एक और हमले के लिए अपने चन्द एक दस्तों को आगे भेजा। घमसान का मआरका हुआ लेकिन मुसलमानों को पीछे हटना पड़ा। आतिश परस्तों की तादाद भी ज़्यादा थी और वो नीम ज़िरा पोश भी थे। मुसलमानों को यूं महसूस हुआ जैसे वो एक दीवार से टकरा कर वापस आ गए हों।

ख़ालिद(र०) ने कुछ देर और हमले जारी रखे मगर मुजाहेदीन थकन से महसूस करने लगे। मुताद्दिद मुजाहेदीन ज़ख्मी हो कर बेकार हो गए। ख़ालिद(र०) ने इस ख्याल से के उन की फौज हौसला न हार बैठे, खुद हमले के लिए सिपाहियों के साथ जाने लगे। इस से मुसलमानों का जज़्बा तो क़ायम रहा लेकिन उन के जिस्म शल हो गए। आतिश परस्त उन पर क़हक़हे लगा रहे थे।

उस वक़्त तक मुसलमानों ने ख़ालिद(र०) की ज़ेर-ए-कमान जितनी लड़ाईयां लड़ी थीं उन में ये पहली लड़ाई थी जिस में मुसमलमानों ने अपने सालार के खिलाफ ऐहतजाज किया। ऐहतजाज दबा दबा सा था लेकिन फौज में बे इतमेनानी सी साफ नज़र आने लगी। ख़ालिद(र०) जैसे अज़ीम सालार के ख़िलाफ सिपाहियों की बे इतमेनानी अजीब सी बात थी। वो पूछते थे के अपना सवार दस्ता कहां है। वो महसूस कर रहे थे के ख़ालिद(र०) अपने मख़सूस अंदाज़ से नही लड़ रहे। ख़ालिद(र०) सिपाहियों की तरह हर हमले में आगे जाते थे, फिर भी उन के सिपाहियों को किसी

कमी का अहसास हो रहा था। दुश्मन की इतनी ज़्यादा नफरी देख कर भी मुसलमानों के हौसले टूटते जा रहे थे। इन्हें शिकस्त नज़र आने लगी थी।

अतिश परस्तों ने अभी एक भी हल्ला नहीं बोला था। अंदरज़गर मुसलमानों को थका कर हमला करना चाहता था। मसुलमान थक चुके थे। ख़ालिद(र०) अपनी फ़ौज की ये कैफियत देख रहे थे। इसी लिए उन्होंने हमले रोक दिये थे। वो सोच ही रहे थे के अब क्या चाल चलें के आतिश परस्तों की तरफ से एक देव हैकल आदमी आगे आया और उस ने मुसलमानों को लल्कार कर कहा के जिस में मेरे मुक़ाबले की हिम्मत है, आगे आजाए।

ये हज़ार मर्द पहलवान और तेज़ ज़न था। फारस में हज़ार मर्द का लक़ब उस जंगजू पहलवान को दिया जाता था जिसे कोई शिकस्त नहीं दे सकता था। "हज़ार मर्द" का मतलब था के ये एक आदमी एक हज़ार के बराबर है।

अंदरज़गर इस देव को आगे कर के मुसलमानों का तमाशा देखना चाहता था। मुसलमानों में उस के मुक़ाबले में उतरने वाला कोई न था। ख़ालिद(र०) घोड़े से कूद कर उतर, तलवार निकाली और "हज़ार मर्द" के सामने जा पहुंचे। कुछ देर दोनों की तलवारें टकराती रहीं और दोनों पैंतरे बदलते रहे। आतिश परस्त पहलवान मस्त भैंसा लगता था। उस में इतनी ताक़त थी के उस का एक वार इन्सान को दो हिस्सों में काट देता। ख़ालिद(र०) ने ये तरीक़ा इख्तियार किया के वार कम कर दिये और उसे वार करने का मौक़ा देते रहे ताके वो थक जाए। उस पर उन्होंने ये ज़ाहिर किया जैसे वो खुद थक कर चूर हो गए हों।

ईरानी पहलवान ख़ालिद(र०) को कमज़ोर और थका हुआ आदमी समझ कर उन के साथ खेलने लगा। कभी तलवार घुमा कर, कभी ऊपर से नीचे को वार करता और कभी वार करता और हाथ रोक लेता। वो तंज़िया कलामी भी कर रहा था। वो अपनी ताक़त के घमंड में लापरवाह सा हो गया। एक बार उस ने तलवार यूं घुमाई जैसे ख़ालिद(र०) की गर्दन काट देगा। ख़ालिद(र०) ये वार अपनी तलवार पर रोकने की बजाए तेज़ी से पीछे हट गए। पहलवान का वार खाली गया तो वो घूम गया। इस का पहलू ख़ालिद(र०) के आगे हो गया। ख़ालिद(र०) इसी के इन्तेज़ार में थे। उन्होंने नोक की तरफ से पहलवान के पहलू में तलवार का इस तरह वार किया के बरछी की तरह तलवार उस के पहलू में उतार दी। वो गिरने लगा तो ख़ालिद(र०) ने उस के पहलू से तलवार खींच कर ऐसा ही एक और वार किया और तलवार उस के पहलू में दूर अंदर तक ले गए।

तिबरी और अबु यूसूफ ने लिखा है के पहलवार गिरा और मर गया। ख़ालिद(र०) उस के सीने पर बैठ गए और हुक्म दिया के उन्हें खाना दिया जाए। उन्हें

खाना दिया गया जो उन्होंने "हज़ार मर्द" की लाश पर बैठ कर खाया। इस इंफेरादी मआरके ने मुसलमानों के हौसले में जान डाल दी।

۞

आतिश परस्त सालार अंदरज़ग़र ने भांप लिया था के मसुलमान थक गए हैं। चुनांचे इस ने हमले का हुक्म दे दिया इसे बजा तौर पर अपनी फतह की पूरी उम्मीद थी। आतिश परस्त समुंदर की मौजों की तरह आए। मुसलमानों को अब कुचले जाना था। उन्होंने अपनी जानें बचाने के लिए बे जिगरी से मुक़ाबला किया। एक एक मुसलमान का मुक़ाबला दस दस बारह बारह आतिश परस्तों से था। अब हर मुसलमान ज़ाती जंग लड़ रहा था। इस के बावजूद उन्होंने डीसिपिलीन का दामन न छोड़ा और भगदड़ न मचने दी।

इस मौक़े पर भी सिपाहियों को ख्याल आया के ख़ालिद(र०) अपने पहलूओं को उस तरीक़े से क्यों इस्तेमाल नहीं करते जो उन का मख़सूस तरीक़ा था। ख़ालिद(र०) खुद सिपाहियों की तरह लड़ रहे थे और उन के कपड़ों पर खून था जो उन के किसी ज़ख्म से निकल रहा था।

चूंके ईरानियों की नफरी ज़्यादा थी इस लिए जानी नुक़सान उन्हीं का ज़्यादा हो रहा था। अंदरज़ग़र ने अपने दस्तों को पीछे हटा लिया और ताज़ा दम दस्तो से दूसरा हमला किया। ये हमला ज़्यादा नफरी का था। मुसलमान उन में नज़र ही नहीं आते थे। अंदरज़ग़र का ये अहद पूरा हो रहा था के एक भी मुसलमान को ज़िन्दा नहीं जाने देंगे। अंदरज़ग़र ने मुसलमानों का काम जल्दी तमाम करने के लिए मज़ीद दस्तों को हल्ला बोलने का हुक्म दे दिया। अब तो मुसलमानों के लिए भाग निकलना भी मुमकिन न रहा। वो अब ज़ख्मी शेरों की तरह लड़ रहे थे।

ख़ालिद(र०) इस मआरके से निकल गए थे। उन का अलम बरदार उन के साथ था। उन्होंने अलम अपने हाथ में ले कर ऊपर किया और एक बार दायें और एक बार बायें किया फिर अलम, अलम बरदार को दे दिया। ये एक इशारा था। इस के साथ ही मैदाने जंग के पहलूओं में जो टेकरियों थी, उन में से दो हज़ार घुड़सवार निकले। उन के हाथों में बरछियां थीं जो उन्होंने आगे कर ली। घोड़े सरपट दौड़े आ रहे थे। वो एक तरतीब में हो कर आतिश परस्तों के अक़ब में आ गए। जंग के शोर व गुल में आतिश परस्तों को उस वक्त पता चला के उन पर अक़ब से हमला हो गया है जब मुसलमानों के घुड़सवार उन के सर पर आ गए थे।

ये थे मुसलमानों के वो सवार दस्ते जिन्हें अंदरज़ग़र ढूंड रहा था। खुद ख़ालिद(र०) की सिपाह पूछ रही थी के अपने सवार दस्ते कहां हैं। ख़ालिद(र०) ने अपनी नफरी की कमी और दुश्मन की नफरी की इफरात देख कर ये तरीक़ा इख्तियार

किया था के रात को तमाम घुड़ सवारों को टेकरी के अक़ब में इस हिदायत के साथ भेज दिया था के अपनी फौज को भी पता न चल सके। उन के लिए अलम के दायें बायें हिलने का इशारा मुक़र्रर किया था। घोड़ों को ऐसी जगह छुपाया गया था जो दुश्मन से डेढ़ मील के लगभग दूर थी। वहां से घोड़ों के हिनहिनाने की आवाज़ दुश्मन तक नहीं पहुंच सकती थी। एक रिवायत ये भी है के रात को घोड़ों के मुंह बांध दिये गए थे। इन दो हज़ार घुड़सवारों के कमांडर बुसर बिन अबी रहम और सईद बिन मर्रा थे। जब सुबह लड़ाई शुरू हुई थी तो इन दोनों कमांडरों ने घुड़ सवारों को पाबारकाब कर दिया और खुद एक टेकरी पर खड़े हो कर इशारे का इन्तेज़ार करते रहे थे।

आतिश परस्तों पर अक़ब से क़यामत टूटी तो ख़ालिद(र०) ने अगली चाल चली जो पहले से तय की हुई थी। पहलुओं के सालारों आसिम बिन उमरों और ऐदी बिन हातिम ने लड़ते हुए भी अपने आप को बचा कर रखा हुआ था। इन्हें मालूम था के क्या करना है। जब घुड़ सवारों ने अक़ब से दुश्मन पर हल्ला बोल दिया तो पहलुओं के इन दोनों सालारों ने अपने अपने पहलू फैला कर आतिश परस्तों को घेरे में ले लिया। दुश्मन को धोका देने के लिए ख़ालिद(र०) ने अपना महफूज़ भी मआरके में पहले ही झोंक दिया था।

आतिश परस्तों के फतह के नारे आह व बका में तबदील हो गए। मुसलमान घुड़सवारो की बरछियां इन्हें काटती और गिराती जा रही थीं। दुश्मन में भगदड़ तो उन हज़ारों ईसाइयों ने मचाई जिन्हें जंग का तर्जुबा नहीं था, और इस भगदड़ में इज़ाफा दुश्मन के उन सिपाहियों ने किया जो पहले मआरके से भागे हुए थे। वो जानते थे के मुसलमान किसी को ज़िन्दा नहीं छोड़ेंगे।

अब मुसलमानों के नारे गरज रहे थे। जंग का पांसा ऐसा पल्टा के ज़रतश्त की आग सर्द हो गई। बाज़ मोअर्रिख़ों ने वल्जा के मआरके को वल्जा का जहन्नुम लिखा है। आतिश परस्तों के लिए ये मआरका जहन्नुम से कम न था। इतना बड़ा लश्कर डरी हुई भेड़ बकरियों की सूरत इख़्तियार कर गया। वो भाग रहे थे कट रहे थे। घोड़ों तले रौंदे जा रहे थे।

मोअर्रिख़ों ने लिखा है के अंदरज़ग़र ज़िन्दा भाग गया लेकिन मदाइन की तरफ जाने की बजाए उस ने सहरा का रूख कर लिया। उसे मालूम था के वो वापस गया तो उर्दशहर उसे जल्लाद के हवाले कर देगा। वो सहरा में भटकता रहा और भटक भटक कर मर गया।

दूसरे आतिश परस्त सालार बहमन जाज़विया की फौज अभी तक वल्जा नहीं पहुंची थी। मुसलमानों को ऐसा ही एक और मआरका लड़ना था।

आतिश परस्तों के दूसरे सालार बहमन जाज़विया को भी वल्जा पहुंचना था और किसरा उर्दशहर के हुक्म के मुताबिक़ उस के लश्कर को अपने साथी सालार अंदरज़ग़र के लश्कर के साथ मिल कर ख़ालिद(र०) के लश्कर पर हमला करना था मगर वो वल्जा से कई मील दूर था और उसे यक़ीन था के वो और अंदरज़ग़र मुसलमानों को तो कुचल ही देंगे, जल्दी क्या है। उस का लश्कर आखिरी पड़ाव चलने लगा तो चार पांच सिपाही पड़ाव में दाख़िल हुए। इन में दो ज़ख्मी थे और जो ज़ख्मी नहीं थे, उन की सांसे फूली हुई थीं। थकन इतनी के वो क़दम घसीट रहे थे। चेहरों पर ख़ौफ और शब बेदारी के तास्सुरात थे और इन तास्सुरात पर धूल की तह चढ़ी हुई थी।

"कौन हो तुम?"–उन से पूछा गया–"कहां से आ रहे हो?"

"हम सालार अंदरज़ग़र के लश्कर के सिपाही है"–इन में से एक ने थकन और खौफ से कांपती हुई आवाज़ में कहा।

"सब मारे गए है"–दूसरे ने कहा।

"वो इन्सान नहीं है"–एक और कराहते हुए बोला–"तुम नहीं मानोगे...तुम यक़ीन नही करोगे दोस्तो!"

"ये झूट बोलते हैं"–जाज़विया के लश्कर के एक कमांडर ने कहा–"ये भगोड़े है। और सब को डरा कर बे कुसूर बन रहे है। इन्हें सालार के पास ले चलो। हम इन के सर क़लम कर देंगे। ये बुज़दिल हैं।"

इन्हें सालार बहमन जाज़विया के सामने ले गए।

"तुम कौन सी लड़ाई लड़ कर आ रहे हो?"–जाज़विया ने कहा–"लड़ाई तो अभी शुरू ही नहीं हुई। मेरा लश्कर तो अभी...."

मोहतरम सालार!"–एक ने कहा–"जिस लड़ाई में आप ने शामिल होना था वो ख़त्म हो चुकी है। सालार अंदरज़ग़र लापता है। हमारा तेग़ज़न पहलवान हज़ार मर्द मुसलमानों के सालार के हाथों मारा गया है.... हम जीत रहे थे। मुसलमानों के पास घुड़सवार दस्ते थे ही नहीं। हमें हुक्म मिला के अरब के इन बद्दुओं को काट दो।

उन की तादाद बहुत थोड़ी थी। हम इन के जिस्मों की बोटियों बिखेरने के लिए नारे लगाते और खुशी की चीखें बुलंद करते आगे बढ़े। जब हम उन से उलझ गए तो हमारे पीछे से न जाने कितने हज़ार घुड़सवार हम पर आ पड़े, फिर हम में से किसी को अपनी होश न रही।"

"सालारे आली मुक़ाम!"–ज़ख्मी सिपाही ने हांपते हुए कहा–"सब से पहले हमारा झण्डा गिरा। कोई हुक्म देने वला न रहा। हर तरफ नफसा नफसी और भगदड़ थी। मुझे अपनों की सिर्फ लाशें नज़र आती थीं।"

"मैं किस तरह यक़ीन कर लूं के इतने बड़े लश्कर को इतने छोटे लश्कर ने शिकस्त दी है?"–जाज़विया ने कहा।

इतने में उसे इत्तेला दी गई के चन्द और सिपाही आए हैं। उन्हें भी उस के सामने खड़ा कर दिया गया। ये तेरह चौदह सिपाही थे। उन की हालत इतनी बुरी थी के तीन चार गिर पड़ने के अंदाज़ से बैठ गए।

"तुम मुझे इन में सब से ज़्यादा पुराने सिपाही नज़र आते हो"–जाज़विया ने एक अधेड़ उम्र सिपही से जिस का जिस्म तवाना था, कहा–"क्या तुम मुझे बता सकते हो के मैं ने जो सुना है ये कहा तक सच है?....तुम ये भी जानते होगे के बुज़दिली की, मैदाने जंग से भाग आने की और झूट बोलने की सज़ा क्या है?"

"अगर आप ने ये सुना है के सालार अंदरज़ग़र की फौज मदीना की फौज के हाथों कट गई है तो ऐसे ही सच है जैसे आप सालार हैं और मैं सिपाही हूं"–इस पुराने सिपाही ने कहा–"और ये ऐसे ही सच है जैसे वो आसमान पर सूरज है और हम सब ज़मीन पर खड़े हैं....मैं ने मुसलमानों के खिलाफ ये तीसरी लड़ाई लड़ी है। इन की नफरी तीनों लड़ाईयों में कम थी.....ज़रतुश्त की क़सम! मैं झूट बोलू तो ये आग मुझे जला दे जिस की में पूजा करता हूं। उन के पास कोई ऐसी ताक़त है जो नज़र नहीं आती। उन की ये ताक़त उस वक़्त हम पर हमला करती है जब इन्हें शिकस्त होने लगती है।

"मुझे इस लड़ाई का बताओ"–सालार बहमन जाज़विया ने कहा–"तुम्हारे लश्कर को शिकस्त किस तरह हुई?"

इस सिपाही ने पूरी तफसील से सुनाया के किस तरह मुसलमान अचानक सामने आ गए और उन्होंने हमला कर दिया और इस के बाद ये मआरका किस तरह लड़ा गया।

"उन की वो जो ताक़त है जिस का मैं ने ज़िक्र किया है"–सिपाही ने कहा–"घुड़सवार दस्ते की सूरत में सामने आई। इस दस्ते में हज़ारों घोड़े थे। इन के हमले से पहले ये घोड़े कहीं नज़र नही आए थे। इतने हज़ार घोड़ों को कहीं छुपाया

नही जा सकता। हमारे पीछे दरिया था। घोड़े दरिया की तरफ से आए और हमें उस वक्त पता चला जब मुसलमानों के सवारों ने हमें काटना और घोड़ों तले रौंदना शुरू कर दिया था....आली मुक़ाम! ये है वो ताक़त जिस की मैं बात कर रहा हूं।"

"तुम मैं ईमान की ताक़त है"-ख़ालिद(र०) अपने लश्कर से खिताब कर रहे थे-"ये खुदाए वाहदहू लाशरीक का फरमान है के तुम में सिर्फ बीस ईमान वाले हुए तो वो दो सौ कुफ्फार पर ग़ालिब आऐंगे।"

आतिश परस्तों का लश्कर और उन के साथी इसाई भाग कर दूर निकल गए थे। मैदाने जंग में लाशें बिखरी हुई थीं और एक तरफ माले ग़नीमत का अंबार लगा हुआ था। ख़ालिद(र०) इस अंबार के करीब अपने घोड़े पर सवार अपनी फौज से खिताब कर रहे थे।

"खुदा की क़सम!"-ख़ालिद(र०) कह रहे थे-"कुर्आन का फरमान तुम सब ने अमली सूरत में देख लिया है। क्या तुम आतिश परस्तों के लश्कर को देख कर घबरा नहीं गए थे? आने वाली नसलें कहेंगी के ये कमाल ख़ालिद(र०) बिन वलीद का था के उस ने अपने सवारों को छुपा कर रखा हुआ था और इन्हें उस वक्त इस्तेमाल किया जब दुश्मन मुसलमानों को काटने और कुचलने के लिए आगे बढ़ आया था.....लेकिन मैं कहता हूं के ये करिश्मा ईमान की कुव्वत का था। खुदा उन के साथ होता है जो उस के रसूल(स०) की ज़ात पर ईमान लाते हैं। मेरे दोस्तों! हमें और आगे जाना है। ये आतिश परस्तों की नहीं, अल्लाह की सरज़मीन है और हमें ज़मीन के आखिरी सिरे तक अल्लाह का पैग़ाम पहुंचाना है।"

मैदाने जंग फतह व नुसरत के नारों से गुंज रहा था।

इस के बाद ख़ालिद(र०) ने अपनी सिपाह में माले ग़नीमत तक़सीम किया। मालूम हुआ के अब के माले ग़नीमत पहली दोनों जंगों की निस्बत कहीं ज़्यादा है। ख़ालिद(र०) ने हस्बे मामूल माले ग़नीमत का पांचवां हिस्सा बैतुल माल के लिए मदीना भिजवा दिया।

उस वक्त तक आतिश परस्तों के सालार बहमन जाज़विया को पूरी तरह यक़ीन आ गया था के अंदरज़ग़र का लश्कर मुसलमानों के हाथों कट गया है और अंदर्ज़ग़र ऐसा भागा है के लापता हो गया है। बहमन जाज़विया ने अपने एक सालार जाबान को बुलाया।

"तुम अंदरज़ग़र का अंजाम सुन चुके हो"-जाज़विया ने कहा-"हमारे लिए किसरा का हुक्म ये था के हम वल्जा में अंदरज़ग़र के लश्कर से जा मिलें। अब वो सूरत ख़त्म हो गई है। क्या तुम ने सोचा है के अब हमें क्या करना चाहिए?"

"हम और जो कुछ भी करें"-जाबान ने कहा-"हमें भागना नहीं चाहिए।"

"लेकिन जाबान!"-जाज़विया ने कहा-"हमें अब कोई कारर्वाई अंधा धुंध भी नही करनी चाहिए। मुसलमान हमें तीसरी बार शिकस्त दे चुके है। क्या तुम ने महसूस नही किया के वो वक्त गुज़र गया है जब हम मदीना के लश्कर को सहराई लुटेरे और बद्दु कहा करते थे? अब हमें सोच समझ कर आगे बढ़ना होगा।"

"हमारी इन तीनों शिकस्तों की वजह सिर्फ ये मालूम होती है के हमारा जो भी सालार मदीने वालों से टक्कर लेने गया। वो इस अंदाज़ से चला गया जैसे वो चन्द एक सहराई क़ज़ाकों की सरकोबी के लिए जा रहा हो"-जाबान ने कहा-"जो भी गया वो दुश्मन को हक़ीर और कमज़ोर जान कर गया। हमारी आंखें पहली शिकस्त में ही खुल जानी चाहिए थीं लेकिन ऐसा न हुआ....आप ने भी तो कुछ सोचा होगा।"

"सब से पहली सोच तो मुझे ये परेशान कर रही है"-जाज़विया ने कहा-"के किसरा उर्दशहर बीमार पड़ा है। मैं जानता हूं उसे पहली दो शिकस्तों के सदमें ने बिस्तर पर डाल दिया है। एक और शिकस्त की खबर उसे ले डूबेगी। ये भी हो सकता है के इस शिकस्त की खबर पहुंचाने वाले को वो क़त्ल ही करा दे।"

"लेकिन जाज़विया!"-जाबान ने कहा-"हम किसरा की खुशनूदी के लिए नही लड़ रहे। हमें ज़र्तशत की अज़मत और आन की ख़ातिर लड़ना है।"

"मैं तुम से एक मशवरा लेना चाहता हूं जाबान!"-जाज़विया ने कहा-"तुम देख रहे हो के किसरा ने हमें जो हुक्म दिया था वो बे मक़सद हो चुका है। मैं मदाइन चला जाता हूं। किसरा से नया हुक्म लूंगा। मैं उस के साथ कुछ और बातें भी करना चाहता हूं। उसे भी ये कहने की आदत हो गई है के जाओ और मुसलमानों को कुचल डालो। उसे अभी तक किसी ने बताया नहीं के जंगी ताक़त सिर्फ हमारे पास नहीं। मै ने मान लिया है के लड़ने की जितनी अहलियत और जितना जज़्बा मुसलमानों में है वो हमारे हां नापैद है....जाबान! ताक़त के घमंड से किसी को शिकस्त नहीं दी जा सकती।"

"मैं भी इसी को बेहतर समझूंगा"-जाबान ने कहा-"आप कूच को रोक दें और मदाइन चले जाएं।"

"कूच रोक दो"-जाज़विया ने हुक्म के लहजे में कहा-"लश्कर को यहीं खेमा ज़न कर दो। मेरी वापसी तक तुम लश्कर के सालार होगे।"

"अगर आप की ग़ैर हाज़री में मुसलमान यहां तक पहुंच गए या उन से आमना सामना हो गया तो मेरे लिए आप का क्या हुक्म है?"-जाबान ने पूछा-"क्या मैं उस से लड़ूं या आप के आने तक जंग शुरू न करूं?"

"तुम्हारी कोशिश ये होनी चाहिए के मेरी वापसी तक तसादुम न हो"-जाज़विया ने कहा।

आतिश परस्तो के लश्कर का कूच रोक कर इसे वहीं खेमा ज़न कर दिया गया और बहमन जाज़विया अपने मुहाफिज़ दस्ते के चन्द एक घुड़ सवारों को साथ ले कर मदाइन को रवाना हो गया।

❁

बकर बिन वायल की बस्तियों में एक तरफ गिरया वज़ारी थी और दूसरी तरफ जोश व खरोश और जज़बाऐ इन्तेक़ाम की लल्कार। इस इसाई क़बीले के वो हज़ारों आदमी जो लल्कारते और नारे लगाते हुए आतिश परस्त लश्कर के साथ मुसलमानों को फारस की सरहद से निकालने गए थे, वो मैदाने जंग से भाग कर अपनी बस्तियों को चले गए थे। ये वो थे जो ज़िन्दा निकल गए थे। इन के कई साथी मारे गए थे। इन में बाज़ ज़ख्मी थे जो अपने आप को घसीटते आ रहे थे मगर रास्ते में मर गए थे।

ये इसाई जब सर झुकाए हुए अपनी बस्तियों में पहुंचने लगे तो घर घर से औरतें, बच्चे और बूढ़े निकल आए। इन शिकस्त खूर्दा टोलियों में औरतें अपने बेटों, भाईयों और खाविंदों को ढूंडने लगीं। बच्चे अपने बापों को देखते फिर रहे थे। इन्हें पहला सदमा तो ये हुआ के वो पिट कर लौटे थे, फिर सदमा उन्हें हुआ जिन के अज़ीज़ वापस नही आए थे। बस्तियों में औरतों की आह व फुग़ां सुनाई देने लगी। वो ऊंची आवाज़ में रोती थीं।

"फिर तुम ज़िन्दा क्यों आ गए हो?"-एक औरत ने शिकस्त खा कर आने वालों से चिल्ला चिल्ला कर कहा-"तुम उन के खून का बदला लेने के लिए वहीं क्यों नही रहे?"

ये आवाज़ कई औरतों की आवाज़ बन गई, फिर औरतों की यही लल्कार सुनाई देने लगी-"जाओ और शिकस्त का इन्तेक़ाम लो....मिस्ना बिन हारिसा का सर काट कर लाओ जिस ने एक ही क़बीले को दो धड़ों में काट दिया है।"

मिस्ना बिन हारिसा इसी क़बीले का एक सरदार था। उस ने कुछ अर्सा पहले इस्लाम कुबूल कर लिया था और उस के ज़ेर-ए-असर इस क़बीले के हज़ारों लोग मुसलमान हो गए थे इन मुसलमानों में से कई ख़ालिद(र०) की फौज में शामिल हो गए थे। इस तरह एक ही क़बीले के लोग एक दूसरे के ख़िलाफ सफ आ हो गए थे।

तिवरी और इब्ने क़तीवा ने लिखा है के शिकस्त खूर्दा इसाई अपनी औरतों के तानों और उन की लल्कार से मुतास्सिर हो कर मुसलमानों के खिलाफ लड़ने के लिए तैयार हो गए। वैश्तर मोअररि्खेन ने लिखा है के ईसाइयों को इस लिए भी तैश आया था के उन के अपने कबीले कें कई ऐसे अफराद ने इस्लाम कुबूल कर लिया था जिन की कोई हैसियत ही नहीं थी लेकिन वही अफराद इस्लामी फौज में जा कर ऐसी ताक़त बन गए थे के फारस जैसी ताक़तवर शहंशाही को न सिर्फ लल्कार रहे थे

बल्कि उसे तीसरी शिकस्त दे चुके थे।

"अब इन लोगों को अपने मज़हब में लाना बहुत मुश्किल है"-बकर बिन वायल के एक सरदार अब्दुलअसूद अजली ने कहा- "इन का एक ही इलाज है के इन्हें क़त्ल कर दिया जाए।"

अब्दुलअसूद बनू अजलान का सरदार था। ये भी बकर बिन वायल की शाख़ थी इस लिए वो अजली कहलाता था। माना हुआ जंगजू इसाई था।

"क्या तुम मुसलमानों के क़त्ल को आसान समझते हो?"-एक बुढ़े इसाई ने कहा-"मैदाने जंग में तुम उन्हें पीठ दिखा आए हो।"

"मैं एक मशवरा देता हूं"-इस क़बीले के एक और बड़े ने कहा-"हमारे साथ जो मुसलमान रहते हैं, इन्हें ख़त्म कर दिया जाए। पहले इन्हें कहा जाए के ईसाइयत में वापस आ जाएं। अगर इन्कार करें तो इन्हें खुफिया तरीक़ों से क़त्ल किया जाए।"

"नही-अब्दुलअसूद ने कहा-"क्या तुम भूल गए हो के हमारे क़बीले के इन मुसलमानों ने खुफिया कारर्वायों से फारस की शहंशही में कैसी तबाही मचाई थी। उन्होंने कितनी दिलैरी से फारस की फौजी चौकियों पर हमले किये थे। उन्होंने किसरा की रिआया हो कर किसरा की फौज के कई कमांडरों को क़त्ल कर दिया था। अगर तुम ने यहां किसी एक मुसलमान को खुफिया तरीक़े से क़त्ल किया तो मिस्ना बिन हारिसा का गिरोह खुफिया तरीक़ों से तुम्हारे बच्चे बच्चे को क़त्ल कर देगा। इन में से कोई भी तुम्हारे हाथ नही आएगा।"

फिर हम इन्तेक़ाम किस तरह लेंगे?"-एक ने पूछा-"तुम्हारे लिए तो इन्तेक़ाम बहुत ही ज़रूरी है क्योंके तुम्हारे दो जवान बेटे वल्जा की लड़ाई में मुसलमानों के हाथों मारे गए हैं।"

"शहंशाहे फारस और मुसलमानों की अपनी जंग है"-अब्दुलअसूद ने कहा-"हम अपनी जंग लड़ेंगे लेकिन फारस की फौज की मदद के बग़ैर शायद हम मुसलमानों को शिकस्त नहीं दे सकेंगे। अगर तुम लोग मुझे इजाज़त दो तो मैं मदाइन जा कर शहंशाहे फारस से मिलूंगा। मुझे पूरी उम्मीद है के वो हमें मदद देगा। अगर उस ने मदद न दी तो हम अपनी फौज बना कर लड़ेंगे। तुम ठीक कहते हो, मुझे मुसलमानों से अपने दो बेटों के खून का हिसाब चुकाना है।"

ईसाइयों के सरदारों ने उस वक़्त फैसला कर लिया के जिस क़द्र लोग मुसलमानों के खिलाफ लड़ने के लिए तैयार हो सकें वो दरियाए फरात के किनारे उल्लीस के मुक़ाम पर इक्ठ्ठे हो जाएं और इन का सरदारे आला अब्दुलअसूद अजली होगा। क़बीला बकर बिन वायल और इस के ज़ैली क़बीलों के जज़्बात भड़के हुए थे। इन के ज़ख्म ताज़ा थे। मुसलमानों के हाथों हलाक होने वालों के घरों में मातम हो

रहा था। इन हालात और इस जज़बाती कैफियत में नौजवान भी और वो बूढ़े भी जो अपने आप को लड़ने के क़ाबिल समझते थे, लड़ने के लिए निकल आए। ये लोग इस क़दर भड़के हुए थे के जवान लड़कियां भी मर्दो के दोश बदोश लड़ने के लिए तैयार हो गई।

۞

ईराक़ी ईसाइयों के अज़ायम जंगी तैयारियों और उल्लीस के मुक़ाम पर उन का एक फौज की सूरत में इजतेमाअ ख़ालिद(र०) से पोशिदा नहीं था। ख़ालिद(र०) की फौज वहां से दूर थी लेकिन उन्हें दुश्मन की हर नक़ल व हरकत की इत्तेला मिल रही थी। उन के जासूस हर तरफ फैले हुए थे। ईसाइयों के इलाक़े में अरब के मुसलमान भी रहते थे। उन की हमदर्दियां मदीना के मुसमलानों क़े साथ थीं। मुसलमानों की फतूहात को देख कर उन्हें आतिश परस्तों से आज़ादी और दहशत गर्दी से निजात बड़ी साफ नज़र आने लगी थी। वो दिल व जान से मुसलमानों के साथ थे। वो किसी के हुक्म के बग़ैर ख़ालिद(र०) के लिए जासूसी कर रहे थे।

ख़ालिद(र०) के लश्कर के हौसले बुलंद थे। इतनी बड़ी जंगी ताक़त पर मुसलसल तीन फतुहात ने और बेशुमार माले ग़नीमत ने और इस्लामी जज़्बे ने उन के हौसलों को तरो ताज़ा रखा हुआ था लेकिन ख़ालिद(र०) जानते थे के उन के मुजाहेदीन की जिस्मानी हालत ठीक नहीं। मुजाहेदीन के लश्कर को आराम मिला ही नहीं था। वो कूच और पेशक़दमी की हालत में रहे या मैदाने जंग में लड़ते रहे थे।

"इन्हें मुकम्मिल आराम करने दो"-ख़ालिद(र०) अपने सालारों से कह रहे थे-"इन की हड्डियां भी दुख रही होंगी। जितने भी दिन मुमकिन हो सका इन्हें आराम की हालत मे रखूंगा....और उन दस्तों को भी यही बुला लो जिन्हें हम वल्जा के किनारे दुश्मन पर नज़र रखने के लिए छोड़ आए थे.....तुम में मुझे मिस्ना बिन हारिसा नज़र नही आ रहा।"

"वो गुज़िश्ता रात से नज़र नही आया"-एक सालार ने जवाब दिया।

एक घोड़े के टाप सुनाई दिये जो क़रीब आ रहे थे। घोड़ा ख़ालिद(र०) के ख़ेमे के क़रीब आ कर रूका।

"मिस्ना बिन हारिसा आया है"-किसी ने ख़ालिद(र०) को बताया।

मिस्ना घोड़े से कूद कर उतरा और दौड़ता हुआ ख़ालिद(र०) के ख़ेमे मे दाख़िल हुआ।

"तुझ पर अल्लाह की रहमत हो वलीद के बेटे!"-मिस्ना ने पुरजोश आवाज़ में कहा और बैठने की बजाए ख़ेमे में टहलने लगा।

"खुदा की क़सम इब्ने हारिसा!"-ख़ालिद(र०) ने मुस्कुराते हुए कहा-"तेरी

चाल ढाल और तेरा जोश बता रहा है के तुझे कहीं से खज़ाना मिल गया है।"

"ख़ज़ाने से ज़्यादा क़ीमती ख़बर लाया हूं इब्ने वलीद!" -मिस्ना बिन हारिसा ने कहा-"मेरे क़बीले के ईसाइयों का एक लश्कर तैयार हो कर उल्लीस के मुक़ाम पर जमा होने के लिए चला गया है। इन के सरदारों ने दरवाज़े बन्द कर के हमारे खिलाफ जो मंसूबा बनाया है वो मुझ तक पहुंच गया।"

"क्या यही ख़बर लाने के लिए तू रात से किसी को नज़र नही आया?"-ख़ालिद(र०) ने पूछा।

"हां"-मिस्ना ने जवाब दिया-"वो मेरा क़बीला है। मैं जानता था के मेरे क़बीले के लोग इन्तेक़ाम लिए बग़ैर चैन से नहीं बैठेंगे। मैं अपना हुलिया बदल कर उन के पीछे चला गया था। जिस मकान में बैठ कर उन्होंने हमारे खिलाफ लड़ने का मंसूबा बनाया है, मैं उस के साथ वाले मकान में बैठा हुआ था। में वहां से पूरी ख़बर ले कर निकला हूं...दूसरी इत्तेलाअ ये है के उन के सरदार इस मक़सद के लिए मदाइन चले गए हैं के वो उर्दशहर से फौजी मदद ले कर हम पर हमला करेंगे।"

"तो इस का मतलब ये हुआ के मैं अपने लश्कर को आराम की मोहलत नहीं दे सकूंगा"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"क्या तुम पसंद नहीं करोगे के जिस तरह हम ने वल्ज़ा में आतिश परस्तों को तैयारी की मोहलत नहीं दी थी इसी तरह हम ईसाइयों और आतिश परस्तों के इजतेमा से पहले ही उन पर हमला कर दें?"

"खुदा तेरी उम्र दराज़ करे इब्ने वलीद!"-मिस्ना ने कहा- "तरीक़ा यही बेहतर है के दुश्मन का सर उठने से पहले ही कुचल दिया जाए।"

ख़ालिद(र०) ने अपने दूसरे सालारों की तरफ देखा जैसे वो उन से मशवरा मांग रहा हो।

"होना तो ऐसा ही चाहिए"-सालार आसिम बिन उमरो ने कहा-"लेकिन लश्कर की जिस्मानी हालत देख लें। क्या हमारे लिए ये फायदा मंद न होगा के कम अज़ कम दो दिन लश्कर को आराम करने दें?"

"हां इब्ने वलीद(र०)!"-दूसरे सालार ऐदी बिन हातिम ने कहा-"कहीं ऐसा न हो के पहली तीन फतूहात के नशे में हमें शिकस्त का मुंह देखना पड़े।"

"इब्ने हातिम!"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"मैं तेरे इतने अच्छे मशवरे की तारीफ करता हूं, लेकिन ये भी सोच के हम ने दो दिन ईसाइयों को दे दिये तो क्या ऐसा नही होगा के फारस का लश्कर उन से आ मिले?"

"ऐसा हो सकता है"-ऐदी बिन हातिम ने कहा-"लेकिन बेहतर ये होगा के आतिश परस्तों के लश्कर को आने दें। यूं भी हो सकता है के हम बकर बिन वायल के ईसाइयों से उलझे हुए हो और आतिश परस्त अक़ब से हम पर आ पड़ें। जिस जिस

को हमारे खिलाफ लड़ना है उसे इस मैदान में आने दें जहां वो लड़ना चाहते हैं।

"इब्ने वलीद(र०) !"-मिस्ना बिन हारिसा ने कहा- "क्या तू मुझे इजाज़त नही देगा के ईसाइयों पर हमले की पहल मैं करूं?"

"तू ने ऐसा क्यों सोचा है?"-ख़ालिद(र०) ने पूछा।

"इस लिए के जितना इन्हें मैं जानता हूं और कोई नही जानता"-मिस्ना बिन हारिसा ने जवाब दिया- "और मैं इस लिए भी सब से आगे हो कर उन पर हमला करना चाहता हूं के इन के मंसूबे में ये भी शामिल है के उन के क़बीले के जिन लोगों ने इस्लाम कुबूल कर लिया है इन्हें क़त्ल कर दिया जाए। मैं इन्हें कहूंगा के देखो कौन किसे क़त्ल कर रहा है।"

"इस वक़्त हमारी नफरी कितनी है?"-ख़ालिद(र०) ने पूछा।

"अठारह हज़ार से कुछ ज़्यादा ही होगी"-एक सालार ने जवाब दिया।

"जब हम फारस की सरहद में दाखिल हुए थे तो हमारी नफरी अठारह हज़ार थी-ख़ालिद(र०) ने कहा-"इस इलाक़े के मुसलमानों ने मेरी नफरी कम नही होने दी।"

मोअररिख़ों ने लिखा है के इन तीन जंगों में बहुत से मुसलमान शहीद और शदीद ज़ख्मी हुए थे। बाज़ ने लिखा है के नफ़री तक़रीबन आधी रह गई थी, लेकिन मिस्ना बिन हारिसा के क़बीले ने नफरी की कमी पूरी कर दी थी।

☸

आतिश परस्तों का सालर बहमन जाज़विया उर्दशहर से नया हुक्म लेने के लिए मदाइन पहुंच चुका था लेकिन शाही तबीब ने उसे रोक लिया।

"अगर कोई अच्छी ख़बर लाए हो तो अंदर चले जाओ"-तबीब ने कहा-"अगर ख़बर अच्छी नहीं तो मैं तुम्हें अंदर जाने की इजाज़त नहीं दे सकता।"

"ख़बर अच्छी नहीं"-जाज़विया ने कहा- "हमारी फौज तीसरी बार शिकस्त खा चुकी है। अंदरज़ग़र ऐसा भगा है के लापता हो गया है।"

"जाज़विया !"-तबीब ने कहा-"उर्दशहर के लिए इस से ज़्यादा बुरी ख़बर और कोई नही हो सकती। अंदरज़ग़र को तो किसरा उर्दशहर अपनी जंगी ताकत का सब से ज़्यादा मज़बूत सतून समझता था। जब से ये सालार गया है। शहंशाह दिन में कई बार पूछता रहा के अंदरज़ग़र मुसलमानों को फारस की सरहद से निकाल कर वापस आया या है नहीं। थोड़ी देर पहले भी उस ने पूछा था।"

"मोहतरम तबीब!"-जाज़विया ने कहा-"क्या हम एक हक़ीक़त को छुपा कर ग़ल्ती नही कर रहे? किसरा को किसी न किसी दिन तो पता चल ही जाएगा।"

"जाज़विया!"-तबीब ने कहा- "मैं तुम्हें ख़बरदार करता हूं के तुम ने ये खबर

शहंशाह को सुनाई तो उस का खून तुम्हारी गर्दन पर होगा।"

"जाज़विया वहीं से लौट गया, लेकिन अपने लश्कर के पास जाने की बजाए इस ख्याल से मदाइन में रूका रहा के उर्दशहर की सेहत ज़रा बेहतर होगी तो वो उसे खुद शिकस्त की ख़बर सुनाएगा और उस के साथ वादा करेगा के वो मसुलमानों से तीनों शिकस्तों का इन्तेक़ाम लेगा।

उस रोज़ एक दो रोज़ बाद ईसाइयों का एक वफद उर्दशहर के पास पहुंच गया। उस का तबीब और शाही ख़ानदान का कोई भी फर्द क़ब्ल अज़ वक़्त न जान सका के ये वफद किस मक़सद के लिए आया है। उर्दशहर को चूंके मालूम था के ईसाइयों ने उस के लश्कर में शामिल हो कर मुसलमानों के खिलाफ जंग लड़ी है इस लिए उस ने बड़ी खुशी से इन ईसाइयों को मुलाक़ात की इजाज़त दे दी। इस वफद ने उर्दशहर को पहली खबर ये सुनाई के सालर अदंरज़ग़र शिकस्त खा गया है।

"अंदरज़ग़र शिकस्त नहीं खा सकता"-उर्दशहर ने एक झटके से उठ कर बैठते हुए कहा-"क्या तुम लोग मुझे ये झूटी ख़बर सुनाने आए हो?.....कहां है अंदरज़ग़र? अगर उस की शिकस्त की ख़बर सही है तो ये भी सही है के जिस रोज़ मदाइन में क़दम रखेगा, वो उस की ज़िन्दगी का आखिरी रोज़ होगा।"

"हम झूटी खबर सुनाने नहीं आए"-वफद के सरबराह ने कहा-"हम आप की इस तीसरी शिकस्त को फतह में बदलने का एहद ले कर आए हैं, लेकिन आप की मदद के बग़ैर हम कामयाब नहीं हो सकते।"

उर्दशहर कुछ देर चुप चाप ख़ला में घूरता रहा। उसकी बीमारी बढ़ती जा रही थी। वो बहुत कमज़ोर हो चुका था। दवाओं का उस पर उल्टा ही असर हो रहा था। अब तीसरी शिकस्त की ख़बर ने रही सही कसर भी पूरी कर दी। उस का तबीब उस के पास खड़ा था।

"किसरा को इस वक़्त आराम की ज़रूरत है"-तबीब ने कहा-"मोअज़्ज़िज़ मेहमान इस वक़्त चले जाएं तो किसरा के लिए बेहतर होगा।"

ईसाइयों का वफद उठ खड़ा हुआ।

"ठहरो!"-उर्दशहर ने नहीफ आवाज़ में कहा-"तुम लोगों ने शिकस्त को फतह में बदलने की बात की थी। तुम क्या चाहते हो?"

"अपने कुछ दस्ते जिन में सवार ज़्यादा हों हमें दे दें"-वफद के सरदार ने कहा-"हमारा पूरा क़बीला उल्लीस पहुंच गया होगा।"

"जो मांगोगे दूंगा"-उर्दशहर ने कहा-"बहमन जाज़विया के पास चले जाओ और उस का लश्कर अपने साथ ले लो। जाज़विया वल्जा के क़रीब कहीं होगा।"

"बहमन जाज़विया मदाइन में है"-किसी ने उर्दशहर को बताया-"वो शहंशाहे

के पास आया था लेकिन तबीब ने उसे आप तक नही आने दिया।"

"उसे बुलाओ"-उर्दशहर ने हुक्म दिया-"मुझ से कुछ न छुपाओ।"

❁

जब जाज़विया उर्दशहर को बता रहा था के उसे मैदाने जंग तक पहुंचने का मौका ही नही मिला। उस वक्त उल्लीस में सूरते हाल कुछ और हो चुकी थी। जाज़विया अपने दूसरे सालार जाबान को लश्कर दे आया था और उस ने जावान से कहा था के वो उस की वापसी तक मुसलमानों से लड़ाई से गुरैज़ करेगा।

जाबान उल्लीस के कही क़रीब था। उसे एक इत्तेला ये मिली के ईसाइयों का एक लश्कर उल्लीस के गर्दोनवाह में जमा है और दूसरी इत्तेला ये मिली के मुसलमानों का लश्कर उल्लीस की तरफ बढ़ रहा है। जाबान के लिए हुक्म तो कुछ और था लेकिन इस इत्तेला पर के मुसलमान पेश कदमी कर रहे हैं। वो खामोश नही बैठ सकता था। उस ने अपने लश्कर को कूच का हुक्म दिया और उल्लीस का रूख़ कर लिया।

अभी जाज़विया वापस नहीं आया था। जाबान तक उर्दशहर का भी कोई हुक्म नहीं पहुंचा था। चूंके वो वहां मौजूद था इस लिए ये उस की ज़िम्मेदारी थी के मुसलमानों को रोके। तारीख में बकर बिन वायल के उन ईसाइयों की तादाद को कोई इशारा नही मिलता जो उल्लीस में लड़ने के लिए पहुंचे थे। उन का सरदार और सालार आला अब्दुलअसूद अजली था। वो मदाइन से अपने वफद की वापसी का इन्तेज़ार कर रहे थे। ख़ालिद(र०) इन्तेज़ार करने वाले सालार नही थे। उन्होंने अपनी फौज को थोड़ा सा आराम देना ज़रूरी समझा था। फिर उन्होंने उल्लीस की तरफ पेशकदमी का हुक्म दिया। रफ्तार मामूल से कही ज़्यादा तेज़ रखी। मिस्ना बिन हारिसा अपने जांबाज़ों का दस्ता लिए बाक़ी लश्कर से अलग थलग जा रहा था।

"अल्लाह के सिपाहियों!"-मिस्ना ने रास्ते में अपने दस्ते से कहा-"ये लड़ाई तुम उस तरह लड़ोगे जिस तरह हम किसरा की सहरहदी चौकियां तबाह करने के लिए लड़ते रहे हैं....छापा मार लड़ाई.....शबखून....तुम उन लोगों से लड़ने जा रहे हो जो तुम्हारी तरह लड़ना नहीं जानते। इन्हें तुम जानते हो। वो तुम्हारे ही क़बीले लोग हैं। हम इन्हे भगा भगा कर लड़ाएंगे। इसी लिए मैं ने तुम्हें लश्कर से अलग कर लिया है, लेकिन ये ख्याल रखना के हम इसी लश्कर के सालार के मातहत है। और ये भी ख्याल रखना के ये मज़ाहिब की जंग है। दो बातिल अक़ीदे तुम्हारे मुक़ाबले में हैं। तुम्हें साबित करना है के खुदा तुम्हारे साथ है....खुदा की क़सम! यही वो लोग है जिन्होंने हमारे खिलाफ हमेशा मुख्बिरी की और आतिश परस्तों के हाथों हमारे घरों को नज़रे आतिश कराया है।

सवारों का ये दस्ता पुरजोश नारे लगाने लगा, लेकिन मिस्ना ने रोक दिया और कहा के खामोशी बरक़रार रखनी है, दुश्मन को उस वक्त पता चले के हम आ गए हैं जब हमारी तलवारें इन्हें काट रही हों।

ईसाइयों का लश्कर उल्लीस के मुक़ाम पर पड़ाव डाले हुए मदाइन से अपने वफद की वापसी का इन्तेज़ार कर रहा था।

"होशियार! दुश्मन आ रहा है"-इसाई लश्कर के संतरियों ने वावेला वपा कर दिया-"खबरदार! होशियार! तैयार हो जाओ।"

हड़बोंग मच गई। उन के सरदारों ने दरख्तों पर चढ़ कर देखा। एक लश्कर चला आ रहा था। सरदारों ने दरख्तो के ऊपर से ही हुक्म दिया के तीरअंदाज़ अगली सफ में आ जाऐं। ये लोग चूंके बाक़ायदा फौजी नहीं थे इस लिए इन में नज़्म व ज़ब्त और सब्र व तहम्मुल की कमी थी। वो लोग हुजूम की सूरत में लड़ना जानते थे, फिर भी उन्होंने सफ बंदी कर ली।

आने वाला लश्कर क़रीब आ रहा था। जब ये लश्कर और क़रीब आया तो सरदारों को कोई शक होने लगा। तब एक सालार ने कहा के ये लश्कर मुसलमानों का नहीं हो सकता क्योंके ये उस तरफ से आ रहा है जिधर बहमन जाज़विया का लश्कर होना चाहिए था। सालार ने दो घुड़सवारो को ये कह कर दौड़ाया के जाकर देखो, किसी का लश्कर है।

"ये दोस्त हैं"-एक सवार ने पीछे मुड़ कर बुलंद आवाज़ में कहा-"ये फारस की फौज है।"

"यसू मसीह(अ०) के पुजारियों!"दरख्त से सालारे आला ने चिल्ला कर कहा-"तुम्हारी मदद के लिए मदाइन से फौज आ गई है।"

इसाई नारे लगाने लगे और थोड़ी देर बाद जाबान का लश्कर ईसाइयों के पड़ाव में आ गया। जाबान ने इस तमाम लश्कर की कमान ले ली और इसाई सरदारों से कहा के अब वो इस के हुक्म और हिदायत के पाबंद होंगे। जाबान ने इसाइयों का हौसला बढ़ाने के लिए पुरजोश तक़रीर की जिस में उस ने इन्हें बताया के अब इन्हें पहली तीनों शिकसतों का इन्तेक़ाम लेना है।

"....और तुम अपनी जवान औरतों को भी साथ लाए हो"-जाबान ने कहा-"अगर तुम हार गए तो ये औरतें मुसलमानों का माले ग़नीमत होंगी। इन्हें वो लोंडियां बना कर ले जाऐंगे। इन्हीं की ख़ातिर अपनी जानें लड़ा दो।"

ईसाइयों की सफों में जोश व खरोश बढ़ता जा रहा था। वो तो पहले ही इन्तेक़ाम की आग में जल रहे थे। अब अपने साथ फारस का एक मुनज़्ज़म लश्कर

देख कर वो और ज़्यादा दिलैर हो गए।

मदीना की फौज की पैश क़दमी ख़ासी तेज़ थे। मिस्ना अपने दस्ते के साथ दायें तरफ़ कही आगे निकल गया था। वो सर सब्ज़ और शादाब इलाक़ा था। दरख़्तों की बोहतात थी। हरी झाड़ियां और ऊंची घास भी थी। थोड़ी दूर जा कर आदमी नज़रों से ओझल हो जाता था। ये वो इलाका था जहां फारस के बड़े बड़े अफसर सैर व तफरीह और शिकार वग़ैरा के लिए आया करते थे। उल्लीस से आगे हीरा एक शहर था जिस की अहमीयत तिजारती और फौजी लिहाज़ से ख़ासी ज़्यादा थी। आबादी के लिहाज़ से ये ईसाइयों का शहर था जो हर लिहाज़ से ख़ूबसूरत था।

"और ये भी ज़हन में रखो"-जाबान लश्कर के सालारों से कह रहा था-"के आगे हीरा है। तुम जानते हो के हीरा हमारी बादशाही का एक हीरा है। अगर मुसलमान इस शहर तक पहुंच गए तो न सिर्फ ये के किसरा का दिल टूट जाएगा बल्कि फारस के पूरे लश्कर के हौसले टूट जाऐंगे। हीरा मदाइन से ज़्यादा क़ीमती है।"

❁

सब्ज़ा ज़ार में एक घुड़ सवार जैसे तैरता चला आ रहा हो। ख़ालिद(र०) अपने लश्कर के वस्त में थे। किसी और को उस सवार की तरफ भेजने की बजाए उन्हेंाने अपने घोड़े को ऐड़ लगाई और उस सवार को रास्ते में जा लिया। वो मिस्ना बिन हारिसा के दस्ते का एक सवार था।

"इब्ने हारिसा का पैग़ाम लाया हूं"-सवार ने ख़ालिद(र०) से कहा-"उल्लीस के मैदान में आतिश परस्तों की फौज भी आ गई है। इब्ने हारिसा ने कहा है के संभल कर आगे आऐं।"

"फौरन वापस जाओ"-ख़ालिद(र०) ने सवार से कहा-"और मिस्ना से कहो के उड़ कर मुझ तक पहुंचे।"

मिस्ना का क़ासिद यूं ग़ायब हो गया जैसे उसे ज़मीन ने निगल लिया हो। उस के घोड़े के टाप कुछ देर तक सुनाई देते रहे जो दरख़्तों में से गुज़रती हवा की शां शां में तहलील हो गए। ख़ालिद(र०) वापस अपने लश्कर में आए और अपने सालारों को बुला कर इन्हें बताया के आगे सिर्फ बकर बिन वायल के लोग ही नही बल्कि मदाइन का लश्कर भी उन के साथ आ मिला है। उन्होंने अपने सालारों को ये भी बताया के मिस्ना बिन हारिसा आ रहा है। उन्होंने पहले की तरह सालार आसिम(र०) बिन मउमरों और सलार ऐदी(र०) बिन हातिम को दायें और बायें पहलू में रखा।

ज़्यादा देर नही गुज़री थी के मिस्ना यूं आन पहुंचा जैसे वो वाक़ेई उड़ कर आया हो।

"इब्ने हारिसा!"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"क्या तुम ने अपनी आंखों से फारस

के लश्कर को ईसाइयों के साथ देखा है?"

मिस्ना बिन हारिसा ने सिर्फ देखा ही नहीं था बल्कि उस ने जांबाज़ी का मुज़ाहेरा कर के बहुत कुछ मालूम कर लिया था। उस ने अपने जासूस आगे भेज रखे थे। उन्होंने उसे इत्तेला दी थी के मदाइन की फौज ईसाइयों से आ मिली है। मिस्ना ने पूरी मालूमात हासिल करने का इरादा कर लिया। रात को उस ने अपने साथ तीन सवार लिए और दुश्मन के पड़ाव के करीब जा कर घोड़ों से उतरे और इन्हें एक दरख्त के साथ बांध दिया। वहां से वो छुप छुप कर और जहां ज़रूरत पड़ी वहां पेट के बल रेंग कर पड़ाव के करीब चले गए। आतिश परस्तों के संतरी पड़ाव के इर्द गिर्द घूम फिर रहे थे। ये सफर 12 हिज्री के वस्त की रातें थी। आधे चांद की चांदनी थी जो फायदा भी दे सकती थी, नुक़सान भी।

दो संतरी इन के सामने से गुज़र गए। इन्हें पीछे से जा कर पकड़ा जा सकता था लेकिन इन के पीछे पीछे एक घुड़ सवार आ रहा था। उस ने अपने संतरियें को आवाज़ दे कर रोक लिया और इन के पास आ कर इन्हें बेदार और होशियार रहने को कहने लगा। वो कोई कमांडर मालूम होता था।

"मुसलमान रात को तो हमला नहीं कर सकते"-एक संतरी ने कहा-"फिर भी हम बेदार और होशियार हैं।"

"तुम सिपाही हो"-घुड़ सवार ने हुक्म के लहजे में कहा-"जो हम कमंडर जानते हैं वो तुम नहीं जानते मुसलमानों का कुछ पता नहीं वो किस वक्त क्या कर गुज़रें। इन्हें आम क़िस्म का दुश्मन न समझो। क्या तुम ने मिस्ना बिन हारिस का नाम नहीं सुना? क्या तुम नहीं जानते के किसरा ने मिस्ना के सर की कितनी क़ीमत मुक़र्रर है? तुम अगर उसे ज़िन्दा या मुर्दा पकड़ लाओ या उस का सिर्फ सर पेश कर दो तो तुम मालामाल हो जाओगे लेकिन तुम उसे पकड़ नहीं सकोगे वो जिन है, किसी को नज़र नहीं आता.... चलो आगे चलो। अपने इलाके की गश्त करो।"

संतरी आगे निकल गए और घुड़सवार वहीं खड़ा रहा। मिस्ना बिन हारिसा अपने तीन जांबाज़ों के साथ एक घनी झाड़ी के पीछे छुपा हुआ था। घुड़सवार उस तरफ जाने की बजाए जिस तरफ संतरी चले गए थे, दूसरी तरफ चला गया। घोड़े पर उसे पकड़ना ख़तरे से खाली नहीं था। मिस्ना ने अपने एक जांबाज़ के कान में कुछ कहा और घुड़सवार कमांडर को देखा जो आहिस्ता आहिस्ता चला जा रहा था।

मिस्ना क़रीब के एक दरख्त पर चढ़ गया। उस के जांबाज़ ने ज़रा ऊंची आवाज़ में कुछ कहा। कमांडर ने घोड़ा रोक लिया। जांबाज़ ने उसे वापस आने को कहा। वो इस आवाज़ पर वापस आ रहा था। अचानक दरख्त से मिस्ना कूदा और सवार के ऊपर गिरा और उसे घोड़े से गिरा दिया। मिस्ना के एक आदमी ने दौड़ कर

घोड़े की लगाम पकड़ ली और दो ने कमांडर को दबोच लिया और उस का मुंह बांध दिया। उसे और उस के घोड़े को वहां से दूर ले गए। उन्होंने अपने घोड़े खोले और वहां से इतनी दूर निकल गए जहां वो चीखा चिल्लाता तो भी उस की आवाज़ उस के पड़ाव तक न पहुंचती।

"ज़िन्दा रहना चाहते हो तो बताओ के तुम्हारी फौज कहां से आई है"-मिस्ना ने तलवार की नोक उस की शह रग पर रख कर पूछा।

वो बहमन जाज़विया के लश्कर का कमांडर था। उस ने जान बचाने की ख़ातिर सब कुछ बता दिया। ये भी के जाज़विया मदाइन चला गया है और उस की जगह जाबान सालार है और बकर बिन वायल का लश्कर इन्हें इत्तेफाक़ से मिल गया है। उस ने ये भी बताया के इस क़बीले के कुछ सरदार मदाइन से फौज अपने साथ लाएंगे।

"क्या तुम्हें मालूम है के मदीना की फौज कहां है?"-मिस्ना ने उस से पूछा।

"वो बहुत दूर है"-कमांडर ने जवाब दिया-"हम उस पर हमला करने जा रहे हैं....शायद दो रोज़ बाद।"

जब उस से हर एक बात मालूम हो गई तो उसे हलाक कर के लाश वहीं दफन कर दी गई।

☸

सूरज तुलू हो चुका था जब मिस्ना बिन हारिस ख़ालिद(र०) को ये रोदाद सुना रहा था।

"तादाद का अंदाज़ा किया है?"-ख़ालिद(र०) ने पूछा।

"सही अंदाज़ा मुश्किल है इब्ने वलीद!"-मिस्ना ने कहा-"हमारी और इन की तादाद का तनासुब वही है जो पहले था। वो हम से चार गुना नहीं तो तीन गुना से यक़ीनन ज़्यादा हैं।"

ख़ालिद(र०) ने अपनी फौज को रोका नहीं ताके वक़्त ज़ाए न हो और दुश्मन को बे ख़बरी में जा लें। उन्होंने चलते चलते अपने सालारों से मशवरे लिए, खुद सोचा और अहकाम दिये। इन अरबों के मुताल्लिक़ आतिश परस्तों के सब से ज़्यादा जरी और तर्जुबा कार सालार हरमज़ ने कहा था के ये लोग सहरा के रहने वाले हैं और सहरा में ही लड़ सकते हैं। हरमज़ ने ये भी कहा था के वो इन्हें वल्जा और फरात के इस इलाक़े में लड़ाएगा जिस में दरख़्त, झाड़ियां, घास और कहीं कहीं दलदल है लेकिन हरमज़ के ख्वाब इसी सर सब्ज़ और दलदली इलाक़े में टूट टूट कर बिखर गए थे।

"खुदा की क़सम, तुम अब दरियाओं और जंगलों में भी लड़ सकते

हो"–ख़ालिद(र०) ने अपने सालारों से कहा–"इस ज़मीन पर तुम ने इतने ताक़तवर दुश्मन को तीन शिकस्तें दी हैं। तुम ने ये भी देख लिया है के हमारे दुशमन के लड़ने का तौर तरीक़ा क्या है। मिस्ना ने बताया है के दुश्मन अगर उसी मैदान में हुआ जहां वो पड़ाव किए हुए है तो ये ज़हन में रख लो के ये मैदान दो दरियाओं दरियाएं फरात और दरियाए खसीफ के दरमियान है। मैदान हमवार है लकिन दरख्तों और सब्ज़े की बोहतात है। दौड़ते घोड़ों पर तुम्हें दरखतों का और इन के झुके हुए टहनों का ख्याल रखना पड़ेगा। वरना इन टहनों से टकरा कर मारे जाओगे....

"मैदान महदूद भी है। हमें दुश्मन को किसी क़िस्म का धोका देने का और चालें चलने का मौक़ा नहीं मिल सकेगा। हमें आमने सामने का मआरका लड़ना पड़ेगा। इब्ने उमरों और इब्ने हातिम पहलूओं के सालार होंगे। इन्हें जब भी और जैसा भी मौक़ा मिला, ये इस के मुताबिक नक़ल व हरकत करेंगे। अपने कमांडरों को ये बताना ज़रूरी है के आमने सामने की लड़ाई में जज़्बे की शिद्दत और जिस्मानी फुर्ती और मज़बूत हौसले की ज़रूरत होती है.....

"इब्ने हारिस! तुम हमारे पाबंद हो कर नहीं लड़ोगे। तुम्हारे साथ पहले तय हो चुका है के तुम अपने अंदाज़ का मआरका लड़ोगे लेकिन तुम ये अहतियात करोगे के तुम्हारे सवार हमारे रास्ते में न आऐं। तुम ने अपने सवारो को यही तरबीयत दे रखी है, इन्हें इसी तरह इस्तेमाल करो लेकिन अंधा धुंद नहीं। नज़्म व रब्त बहुत ज़रूरी है।"

"इब्ने वलीद!"–मिस्ना बिन हारिसा ने कहा–"तुझ पर अल्लाह की रहमत हो तूने जैसा कहा है तुझे वेसा ही नज़र आएगा...क्या तू मुझे इजाज़त देता है के में अपने दस्ते में चला जाऊं?"

"मैं तुझे अल्लाह के सुपुर्द करता हूं हारिसा के बेटे!"–ख़ालिद ने कहा–"जा... मैदाने जंग में मिलेंगे या मैदाने हश्र में।"

मिस्ना ने घोड़े को ऐड़ लगाई और पलक झपकते नज़रों से ओझल हो गया। उस के साथ उस आतिश परस्त कमांडर का घोड़ा भी था जिसे उस ने क़त्ल कर दिया था। वो ये घोड़ा ख़ालिद के लश्कर को दे गया था।

इतनी थोड़ी तादाद में और इतने महदूद वसायल के भरोसे मदीना के मुजाहेदीन उस लश्कर पर हमला करने जा रहे थे जिस की तादाद उन से तीन गुना से भी ज़्यादा थी और जिस के हथियार भी बेहतर थे और जिन के सर लोहे के खुदों से और चेहरे लोहे की ज़ंजीरों से ढके हुए थे।। उन की टांगों पर जानवरों की मोटी और खुश्क खालों के ख़ोल चढ़े हुए थे।

मुजाहेदीन के दिलों में कोई ख़ौफ न था, ज़हनों मे कोई वहम और वसवसा न था। उन के सामने एक पाक और अज़ीम मक़सद था। उन की निगाहों में अपने

अल्लाह, रसूल(स०) और मज़ाहिब की अज़मत थी। अपनी जानों की कोई अहमीयत न थी सिवाए इसके के ये जान अल्लाह की दी हुई है और इसे अल्लाह की राह में ही कुर्बान करना है। अपनी ज़िन्दगी दे कर वो इस्लाम को ज़िन्दा रखने का अहद किऐ हुए थे। वो घरों से, अपनी बीवियों से, अपनी माओं, बहनों और बेटियों से दूर ही दूर हटते जा रहे थे। उन के शब व रोज़ खाक व खून में गुज़र रहे थे। ज़मीन उन का बिछोना थी और ऊपर आसमान था। बातिल की चट्टानों से टकराना, कुफ्र के तलातुम को चीरना और दुश्मनाने दीन के अज़ायम को कुचलना उन की इबादत थी। उन की ज़बानो पर अल्लाह का नाम था। वो तलवार का वार करते थे तो अल्लाह का नाम लेते थे और तलवारों से कट कर गिरते थे तो अल्लाह का नाम लेते थे। ज़ख्मी होते तो अल्लाह को पुकारते थे। लारेब ईमान की पुख्तगी और जज़बे की दीवांगी उन के हथियार थे और यही उन की ढाल थी।

❁

वो उस वक्त दुश्मन के सामने पहुंचे जब दुश्मन का दोपहर का खाना तैयार हो चुका था। उन के सालार जाबान के हुक्म से लश्कर के लिए खास खाना तैयार किया गया था। मोअररिख़ तिबरी, इब्ने हशाम और मोहम्मद हुसैन हैकल लिखते हैं के फारस की फौज को सांडों की तरह पाला जाता था। सिपाहियों को मुर्ग़न खाने खिलाए जाते थे। फारस के शहंशाहों का उसूल बल्कि अक़ीदा था के मज़बूत और मुतमईन फौज ही सल्तनत और तख्त व ताज की सलामती की ज़ामिन होती है।

फारसी सालार जाबान ने उस से ज़्यादा मुर्ग़न और पुर तकल्लुफ खाना तैयार कराया था जो फौज को आम तौर पर मिला करता था। उस खाने का ज़िक्र तारीख़ों में भी आया है। बे शुमार जानवर ज़िबह कर दिये गए थे। गोश्त के अलावा कई चीज़ें पकाई गई थी। मोअररिख़ों ने लिखा है के जाबान अपने लश्कर की ख़ातिर तवाज़ेह कर रहा था के सिपाही खुलूसे दिल से लड़ें और अच्छे से अच्छा खाना खाने के लिए ज़िन्दा रहेंगे।

खाना चूंके ख़ास था इस लिए इस की तैयारी में मामूल से ज़्यादा वक्त लग गया। दिन का पिछला पहर शुरू हो चुका था जब खाना तैयार हुआ। लश्कर भूक से बेताब हो रहा था। जब लश्कर को इत्तेला दी गई के खाना तैयार हो गया है और लश्कर खाने के लिए बैठ जाए, ऐन उस वक्त गश्ती संतरियों ने इत्तेला दी के मुसलमानो की फौज सर पर आ गई है।

ख़ालिद(र०) अपने इस मकसद में कामयाब थे के दुश्मन को उन की आमद की ख़बर क़ब्ल अज़ वक्त न हो। उन्होंने दुश्मन को बेख़बरी में जा लिया था। आतिश परस्तों और ईसाइयों में हड़बोंग सी बपा हो गई। सालार और कमांडर चिल्ला

चिल्ला कर दोनों लश्करों को जंग की तैयारी और सफ बंदी का हुक्म दे रहे थे मगर लश्कर के सामने जो रंगा रंग खाने रखे जा रहे थे, उन्हें लश्कर छोड़ने पर आमादा न था। तिबरी की तहरीर शाहिद है के लश्कर से बड़ी बुलंद आवाज़ बुलंद उठी के मुसलमानो के पहुंचने तक वो खाना खा लेंगे। बेशतर सिपाही खाने में मसरूफ हो गए।

ख़ालिद(र०) की फौज जंगी तरतीब में बिल्कुल सामने आ गई। ये फौज हमले के लिए बिल्कुल तैयार थी। आतिश परस्तों और ईसाइयों में वो भी थे जो मुसलमानों से शिकस्त खा चुके थे। उन्होंने अपनी फौज को मुसलमानों की तलवारों और बरछियों से कटते देखा था। वो मुसलमानों को देख कर ही डर गए।

"खाना छोड़ दो"-इन में से कई एक ने वावेला बपा कर दिया-"इन मुसलमानों को मौक़ा न दो...काट देंगे। मार देंगे...तैयार हो जाओ।"

वो खाना छोड़ कर लड़ने की तैयारी करने लगे। बाक़ी लश्कर अपने सालारों और कमांडर का भी हुक्म नही मान रहा था। वो सब भूक से मरे जा रहे थे लेकिन जिन्होने मुसलमानों के हाथ देखे हुए थे, उन की खौफ ज़दा हड़बोंग देख कर सारा लश्कर खाना छोड़ कर उठ खड़ा हुआ।

मदीना के मुजाहेदीन और आगे चले गए। ख़ालिद(र०) इन्हें अहकाम दे रहे थे।

दुश्मन ने अभी ज़ीनें कसनी थीं और सारे लश्कर ने ज़िरा पहननी थी। जावान ने मोहलत हासिल करने के लिए ये तरीक़ा इख्तियार किया के उस दौर के रिवाज के मुताबिक ईसाइयों के सरदार अब्दुलअसूद अजली को ज़ाती मुक़ाबले के लिए आगे कर दिया।

"किस में हिम्मत है जो मेरे मुक़ाबले के लिए आएगा?"-अब्दुलअसूद ने अपने लश्कर से आगे आ कर मुसलमानों को ललकारा-"जिसे मेरी तलवार से कट कर मरने का शौक़ है वो आगे आजाए।"

"मैं हूं वलीद का बेटा!"-ख़ालिद(र०) ने नियाम से तलवार निकाल कर बुलंद की और घोड़े को ऐड़ लगाई-"मैं हूं जिसकी तलवार तुझ जैसे के खून की पियासी रहती है.... उस ने बुलंद आवाज़ से कहा-"नाम अजलान का बुलंद होगा।"

ख़ालिद(र०) का घोड़ा उस के करीब से गुज़र गया, आगे जा कर मुड़ा और ख़ालिद(र०) ने तलवार तान ली। अब्दुलअसूद ने भी तलवार निकाल ली थी। ख़ालिद(र०) ने दौड़ते घोड़े से उस पर वार किया, लेकिन ये वार ख़ता गया। अब्दुलअसूद ने भी ख़ालिद(र०) की तरह घोड़ा दौड़ा दिया और एक बार फिर दोनों आमने सामने आए। अब के अब्दुलअसूद ने वार किया। ख़ालिद ने वार इस तरह रोका के उन की तलवार अब्दुलअसूद की तलवार के दस्ते पर लगी जहां इस ईसाई सरदार का हाथ था। उस के इस हाथ की दो उंगलियों के ऊपर के हिस्से साफ कट

गए। तलवार उस के हाथ से गिर पड़ी।

अब्दुलअसूद ने भाग निकलने की बजाए बुलंद आवाज़ में कहा के उसे बरछी दी जाए। उस के लश्कर में से एक आदमी निकला जिस के हाथ में बरछी थी। वो दौड़ता हुआ अपने सरदार की तरफ आया। ख़ालिद(र०) ने उस का रास्ता रोकने के लिए घोड़े का रूख उस की तरफ कर दिया। वो आदमी पियादा था। उस ने ख़ालिद(र०) से बचने के लिए बरछी अपने सरदार की तरफ फैंकी। ख़ालिद(र०) पहुंच गए थे। बरछी आ रही थी जिसे ख़ालिद(र०) के सर के ऊपर से गुज़रना था। अब्दुलअसूद ने बरछी पकड़ने के लिए दोनों हाथ बुलंद कर रखे थे। ख़ालिद(र०) ने बरछी को तलवार मारी। बरछी कट तो न सकी, लेकिन उन का मक़सद पूरा हो गया। बरछी रास्तें में रूक गई और गिर पड़ी।

ख़ालिद(र०) ने घोड़े का रूख अब्दुलअसूद की तरफ कर दिया। अब ये शख्स वार से सिर्फ बच सकता था। वार को रोकना उस के बस की बात नहीं थी। ख़ालिद ने बग़र्ज-ए-तमाशा इसे इधर उधर भगाया।

"इब्ने वलीद!"-ख़ालिद(र०) के एक सालार ने बुलंद आवाज़ में कहा-उसे ख़त्म करो। दुश्मन तैयार हो रहा है।"

ख़ालिद(र०) ने घोड़े की रफ्तार तेज़ कर के और असूद के क़रीब से गुज़रते तलवार बरछी की तरह मारी। अब्दुलअसूद ने घोड़े के एक पहलू पर झुक कर बचने की कोशिश की, लेकिन ख़ालिद(र०) की तलवार उस के दूसरे पहलू में उतर गई। अब्दुअूसद संभल गया, लेकिन वो भागा नहीं। ख़ालिद(र०) ने अब पीछे से आकर उस पर ऐसा वार किया के उस की गर्दन इस तरह कटी के सर ढलक कर एक कंधे पर चला गया। गर्दन पूरी नहीं कटी थी।

❁

इधर ईसाइयों का सरदार अब्दुलअसूद घोड़े से गिरा उधर दरियाए फरात की तरफ से बेशुमार घोड़ों के दौड़ने का शौर सुनाई दिया। घोड़े सरपट दौड़ते आ रहे थे। उस पहलू पर ईसाइयों का लश्कर था। घुड़सवारों के हाथों में बरछियां थीं घोड़े ईसाइयों के लश्कर में जा घुसे और सवारो की बरछियों ने उन्हें छलनी करना शुरू कर दिया। ईसाइयों की तवज्जे सामने मुसलमानों की तरफ थी। वो मुक़ाबले के लिए संभल न सके।

"मैं हूं हारिस का बेटा मिस्ना"-इस शौर व ग़ौग़ा में से एक लल्कार सुनाई दे रही थी- "हम भी तुम में से है....मैं हूं मिस्ना बिन हारिसा"

ये मिस्ना का सवार दस्ता था जिसे उस ने ख़ालिद(र०) को बता कर लश्कर से अलग रखा था। वो छापा मार जंग लड़ने का माहिर था और इस जंग में लड़ाई का ये

तरीक़ा बेहद ज़रूरी था। वजह ये थी के ये मैदाने जंग बमुश्किल दो मील वसीअ था। इस के दायें और बायें दरिया थे। ख़ालिद(र०) ने पहले ही कह दिया था इस मैदान में वो अपनी मख़सूस जंगी चालें नही चल सकेंगे। अपने सालारों से उन्होंने कहा था के आमने सामने की लड़ाई में वो सिर्फ इस सूरत में कामयाब हो सकते हैं के दुश्मन पर बहुत तेज़ और शदीद हमला किया जाए बल्कि हमला मौज दर मौज हो यानी एक दस्ता दुश्मन से टकर ले कर पीछे हटे और दूसरा दस्ता हमला करे। ख़ालिद(र०) ने अपनी फौज को इसी क़िस्म के हमलो की तरबीयत दे रखी थी और अकसर उस की मश्क़ कराते रहते थे।

ख़ालिद(र०) ने हमले का हुक्म दे दिया। उन्होंने पहलूओं के दस्तों को भी इस हमले में झोंक दिया। हमले की पहली फौज की क़यादत ख़ालिद(र०) ने खुद की। पहलूओं के सालारों आसिम और ऐदी ने भी अपने अपने दस्तें के साथ खुद जा कर हमला किया। आतिश परसतों ने जम कर मुक़ाबला किया। वो ताज़ा दम थे। मुजाहेदीन थके हुए थे, लेकिन मसुलमानों को ये फायदा मिल गया के आतिश परस्त अभी पूरी तरह लड़ने के लिए तैयार नहीं थे। यूरपी मोअररिख़ों ने साफ लिखा है के फारस की फौज ज़हनी तौर पर भी लड़ने के लिए तैयार नहीं थी। ये फौज भूकी थी और उसे वो खाना छोड़ना पड़ा था जो उस के लिए ख़ास तौर पर पकवाया गया था। उस खाने के लिए तो उन्होंने मुसलमानों की भी परवाह नहीं की थी।

मुसलमानों को इस पहले हमले में खून की ख़ासी कुर्बानी देनी पड़ी। आतिश परस्तों ने तैयार होते हुए भी कई मुसलमानों को घायल कर दिया। ख़ालिद(र०) पीछे हटे और दूसरे दस्तों को आगे बढ़ाया। आतिश परस्तों को तादाद की इफरात का फायदा हासिल था। एक एक मुजाहिद का मुक़ाबला चार चार पांच पांच आतिश परस्तों और ईसाइयों से था। दुश्मन को इस फायदे से महरूम करने के लिए सवार दस्ता सर धड़ की बाज़ी लगाए हुए था। उस ने सवारो को मुताद्दिद टोलियों में तक़सीम कर दिया था। ये टोलियां बारी बारी घोड़े सरपट दौड़ाती बग़लो की तरह कभी पहलू से कभी अक़ब से आतीं और कुफ्फार के कई आदमियों को बरछियों से काटती गुज़र जातीं। इस तरह दुश्मन की तवज्जे अपने अक़ब पर भी चली गई, लेकिन मिस्ना के सवार रूक कर नही लड़ते थे। इन सवारों ने दुश्मन की तरतीब दरहम बरहम किए रखी। मिस्ना की इस कारर्वाई से ख़ालिद(र०) ने पूरा फायदा उठाया।

"बनू बकर!"-मैदाने जंग में एक ऐलान सुनाई देने लगा-"और ज़रतुश्त के पुजारियों! जम कर लड़ो। मदाइन से बहमन जाज़विया का लश्कर आ रहा है।"

ये ऐलान बार बार सुनाई देता था। ख़ालिद(र०) को ये ऐलान कुछ परेशान कर रहा था। उन्होंने पहलूओं के सालारें को पैग़ाम भेजे के हर तरफ ध्यान रखें।

ख़ालिद(र०) ने अपने महफूज़ दस्ते को भी ख़बरदार कर दिया के अक़ब से हमले का ख़तरा है।

तक़रीबन तमाम मोअररिख़ेन ने लिखा है के बहमन जाज़विया मदाइन से कोई लश्कर नही ला रहा था किसी ने भी ये नहीं लिखा के वो जाबान की मदद के लिए क्यों नही पहुंच सका था। एक मोअररिख़ याकूत ने लिखा है के बहमन जाज़विया अपने लश्कर में शामिल होने के लिए वापस आ रहा था। रास्ते में उसे इस लड़ाई से भागे हुए कुछ सिपाही मिल गए जिन्होंने उसे उल्लीस की जंग का हाल सुनाया। जाज़विया आगे आने की बजाए वहीं रूक गया। उस का मक़सद ये था के शिकस्त उस के खाते में न लिखी जाए। बहर हाल इस ऐलान ने के मदाइन से जाज़विया फौज ला रहा है मुसलमानों में नई रूह फूंक डाली। ख़ालिद(र०) ने ऐलान किया के मदाइन के लश्कर के पहुंचने से पहले पहले इस लश्कर का सफाया कर दो, लेकिन आतिश परस्त और ईसाई चट्टानों की तरह डटे हुए थे।

ख़ालिद(र०) दुआ तो करते ही थे, लेकिन ये पहला मौक़ा था के ख़ालिद घोड़े से उतरे, ज़मीन पर घुटने टेके और हाथ बुलंद कर के दुआ की- "खुदाए जुलजलाल! हिम्मत अता फरमा के हम इस लश्कर को नीचा दिखा सकें। मै एहद करता हूं के मैं तेरे दीन के दुश्मनों के खून का दरिया बहा दूंगा।"

अब के ख़ालिद(र०) ने नए जोश व खरोश से हमले करवाए। पहलूओं के दोनों सालारों ने दुश्मन को नीम दायरे में ले लिया। अक़ब से मिस्ना बिन हारिसा के सवारों ने अपनी छापा मार क़ारर्वाईयां जारी रखीं। दो तीन घंटे बाद साफ नज़र आने लगा के दुश्मन के क़दम उखड़ रहें हैं। चूंके दुश्मन की तादाद ज़्यादा थी इस लिए उस के मरने और ज़ख्मी होने वालों की तादाद भी ज़्यादा थी। ये हालत देख कर आतिश परस्तों और ईसाइयों के वो लोग जो पहली तीन जंगों से ज़िन्दा भाग निकले थे, हौसला हार बैठे और जानें बचाने के लिए मैदाने जंग से खिसकने लगे। फिर लश्कर के दूसरे लोग भी पीछे हटने लगे। ये सूरत देख कर मुसलमानों ने अपने हमलों में मज़ीद शिद्दत पैदा कर दी। फिर अचानक यूं हुआ के कुफ्फार ने भागना शुरू कर दिया।

❁

"तआक्कुब करो"-ख़ालिद(र०) ने अपने तमाम लश्कर में क़ासिद इस पैग़ाम के साथ दौड़ा दिए और बुलंद आवाज़ में ऐलान भी कराया-"इन्हें भागने मत दो। इन्हें क़त्ल भी न करो। ज़िन्दा पकड़ लाओ।"

इस ऐलान का कुफ्फार पर एक असर तो ये हुआ के उन्होंने भागने की बजाए हथियार डालने शुरू कर दिए। जंग ख़त्म हो चुकी थी। मैदाने जंग लाशों और तड़पते और बेहोश ज़ख्मियों से अटा पड़ा था। एक तरफ वो खाना महफूज़ पड़ा था जो

दुश्मन के लश्कर के लिए तैयार किया गया था। ख़ालिद(र०) के हुक्म से मुजाहेदीन खाने पर बैठ गए। जो सवार भागने वालों को पकड़ पकड़ कर ला रहे थे, वो भी बारी बारी खाना खाने लगे।

ख़ालिद(र०) ने मुजाहेदीन से कहा-"अल्लाह ने ये खाना तुम्हारे लिए तैयार कराया था। इतमीनान से खाओ।"

मुसलमान मुख़्तलिफ खाने देख देख कर हैरान हो रहे थे। उन्होंने ऐसे खाने पहले कभी देखे ही नहीं थे। वो जौ की रोटी, ऊंटनी का दूध और खजूरें खाने वाले लोग थे।

मोअरिख़ों ने लिखा है के दुश्मन के जिन आदमियों को ज़िन्दा पकड़ कर लाया जा रहा था, इन्हें ख़ालिद(र०) के हुक्म से खसीफ के किनारे ले जाते और उन के सर इस तरह काट दिए जाते के सर दरिया में गिरते थे। इन के धड़ इस तरह किनारे पर फैंके जाते के इन का खून दरिया में जाता था। इस तरह क़त्ल होने वालों की तादाद हज़ारों के हिसाब से थी।

ग़ैर मुस्लिम मोअरिख़ों और मुबस्सिरों ने ख़ालिद(र०) के इस हुक्म को ज़ालेमाना फैल क़हा है लेकिन ख़ालिद(र०) कहते थे के उन्होंने खुदा से एहद किया था वो कुफ्फार के खून का दरिया बहा देंगे। दरिया के ऊपर बंद बंधा हुआ था जिस ने दरिया का पानी रोका हुआ था इस लिए खून दरिया में जमता जा रहा था। किसी ने ख़ालिद(र०) को मशवरा दिया के खून का दरिया सिर्फ इस सूरत में बहेगा के बंद खोल दिया जाए। चुनांचे बंद खोल दिया गया। जब इतना ज़्यादा खून पानी में मिला तो पानी सुर्ख़ हो गया और खून का दरिया बहने लगा। इसी लिए तारीख़ में इस दरिया को दरिया-ए-खून लिखा गया है।

बाज़ मोअरिख़ों ने लिखा है के ख़ालिद(र०) ने बच निकलने वालों और हथियार डालने वालों का क़त्ले आम इस लिए कराया था के ये सिपाही एक जंग से भाग कर अगली जंग में फिर सामने आ जाते थे। इस का इलाज ख़ालिद(र०) ने ये सोचा के दुश्मन के किसी एक भी सिपाही को ज़िन्दा न रहने दिया जाए। कहते हैं तीन दिन आतिश परस्तों और ईसाइयों को क़त्ल किया जाता रहा। इस तरह क़त्ल होने वालों की तादाद मिला कर दरियाए खून की जंग में जो आतिश परस्त और ईसाइ मारे गए, इन की तादाद सत्तर हज़ार थी।

शहंशाहे फारस उर्दशहर जो नो शेरवान-ए-आदिल का परपोता था, ऐसे मर्ज़ में मुब्तेला हो गया था जो शाही तबीबों के क़ाबू में नहीं आ रहा था। इतना तो वो जानते थे के ये पै बा पै तीन शिकस्तों का सदमा है लेकिन सदमा आख़िर जिस्मानी मर्ज़ की सूरत इख्तियार कर गया था। इस का इलाज दवाओं से होना चाहिए था लेकिन यूं मालूम होता था जैसे वो दवाईयां नहीं बल्कि दवाईयां उसे खा रही हों।

उर्दशहर पर खमोशी तारी हो गई थी। वो जो अपने वक्त का फिरऔन था, सहर के दिये की तरह टिमटिमा रहा था। तबीब इस कोशिश में लगे रहते थे के उर्दशहर तक़ जंग की कोई बुरी ख़बर न पहुंचे लेकिन ये मुमकिन न था। वो जब बोलता था तो यही कहता था के आगे की क्या खबर है?

"खबरें अच्छी आ रही हैं"-तबीब जो हर वक्त हाज़िर रहता था, उसे जवाव देता और उसे सदमे से बचाने के लिए कभी कहता-"मुसलमान पछता रहे हैं। के वो किस देव को छेड़ बैठे हैं"-कभी कहता-फारस की शहंशाही एक चट्टान है। इस से जो भी टकराया उस ने अपना सर फौड़ लिया"-और कभी उस की चहीती मलिका ये कह कर उस का दिल मज़बूत करती-"अरब के बद्दु किसरा के जाह व जलाल की ताव नहीं ला सकते।"

इन तसल्लियों और इन हौसला अफज़ा अल्फाज़ का किसरा उर्दशहर पर दवाईवों की तरह उल्टा ही असर हो रहा था। इस की खामोशी न टूट सकी और उस के चेहरे पर उदासियों की परछाईयां कम होने की बजाए गहरी होती गईं।

उस की मन पसंद रक्क़ासा ने उस के सामने हसीन नागिन की तरह अपने जिस्म को वहुत वल दिये उस ने अपवा जिस्म नीम उरियां किया, उर्दशहर के अलील चेहरे पर अपने रेशम जैसे मुलायम बालों का साया किया, फिर उरियां हो कर रक्स की अदाओं से किसरा के रोगी वजूद को सहलाने के जतन किए मगर ऐसे लगता था जैसे मोरनी जंगल में नाच रही हो और नाच का तिलिस्म हवाओं में उड़ता जा रहा हो।

उस की पसंदीदा मुग़न्निया जो उर्दशहर को मसहूर कर लिया करती थी, उस का सहर भी रायगां गया। ये रक्क़ासा और ये मुग़न्निया फारस के हुस्न के शिकार थे फारस का हुस्न तो किसरा के हरम में फूलों की तरह खिला हुआ था। इन फूलो में अध

खिली कलियां भी थी उर्दशहर के मख़मली जिस्मों की बू बास से मदहोश रहा करता था मगर अब एक एक को उस की तन्हाई का साथी बनाया गया तो उर्दशहर ने किसी को भी कुबूल न किया। उस के सर्द जिस्म में नोखेज़ जवानी की तपिश ज़रा सी हरारत भी पैदा न कर सकी।

"बेकार है, सब बेकार है-मलिका ने बाहर आ कर उस बूढ़े शाही तबीब से कहा जिस के मुताल्लिक़ फारस कोने कोने तक मशहूर था के उसे देख कर मौत मुंह मोड़ जाती है। मलिका ने रूंधी हुई आवाज़ में उसे कहा-"क्या आप का इल्म और तर्जुबा भी बेकार है? क्या ये महज़ ढोंग है? क्या आप किसरा के होंटों पर हल्की सी मुस्कुराहट नहीं ला सकते? कौन कहता है आप मौत का मुंह मोड़ दिया करते हैं?"

"ज़रतुश्त की रहमत हो तुझ पर मलिका फारस!"-बूढ़े तबीब ने कहा-"न किसी की मौत मेरे हाथ में है न किसी की ज़िन्दगी मेरे हाथ में है। मैं ज़िन्दगी और मौत के दरमियान कमज़ोर सी एक दीवार हूं। मौत के हाथ इतने मज़बूत और तवाना हैं के इस दीवार को दरवाज़े के किवाड़ की तरह खोल लेते हैं और मरीज़ को उठा ले जाते है और मेरा इल्म और मेरा तर्जुबा मुंह देखते रह जाते हैं।

"अल्फाज़, महज़ अल्फाज़"-मलिका ने फर्श पर बड़ी ज़ोर से पांव मार कर कहा-"खोखले अल्फाज़....क्या अल्फाज़ किसी दुखयारे का दुख मिटा सकते हैं? किसी रोगी को रोग से निजात दिला सकते हैं? क्या आप के अल्फाज़ में इतनी ताक़त है के किसरा के रोग को चूस लें?"

"नहीं मलिका फारिस!"-तबीब ने बड़े तहम्मुल से कहा और कांपते हाथ से मलिका के बाज़ू को पकड़ा और उसे बैठा कर कहा-"अल्फाज़ किसी के दुख और किसी के रोग को मिटा नहीं सकते, अल्बत्ता दुख और रोग की अज़ीयत को ज़रा कम कर दिया करते हैं। हक़ीक़त के सामने अल्फाज़ कोई मानी नहीं रखते और हक़ीक़त अगर तल्ख हो तो आलिम के मुंह से निकलते हुए अल्फाज़ यूं लगते हे। जैसे खिज़ां में शजर के ज़र्द पत्ते गिर रहे हों। सूखे हूए इन पत्तों को फिर हवाएं उड़ाती फिरती हैं।"

"हम किसरा को हक़ीक़त से बे खबर रख रहे हैं"-मलिका ने कहा-"मैं इन्हें रक्स व नग़मा से बहलाने की..."

"कब तक?"-बूढ़े तबीब ने कहा-"मलिका किसरा?! तुम किसरा से इस हक़ीक़त को कब तक छुपाए रखोगी! ये रक़्स और ये नग़मे और ये मख़मल जैसे नर्म व मुलायम और नोखेज़ ज़िस्म किसरा उर्दशहर का दिल नहीं बहला सकते। अगर किसरा सिर्फ़ शहंशाह होते तो वो अपने आप को बड़े हसीन फरेब दे सकते थे। फरार के बड़े दिलकश रास्ते इख्तियार कर सकते थे लेकिन वो जंगजू भी हैं। इन के घोड़े के सुमों ने ज़मीन के तख्ते को हिला डाला था। फारस की इतनी वसी शहंशाही

किसरा के ज़ोर बाज़ू का हासिल है इस शहंशाही को उन्होंने रोमियों की ताक़तवर फौज से बचाया है। किसरा ने लड़ाईयां लड़ी है। बड़े खूँरेज़ मआरके लड़े है अब वो जंगजू उर्दशहर बेदार हो गया है। अब रक्स व नग़मा और ये तिलिस्माती जवानियां उन पर उल्टा असर कर रही है। अब वो किसी रक़्क़ासा और किसी मग़न्निया को नही, हरमज़ को बुलाते है। अंदरज़ग़र की पूछते है, बहमन जाज़विया और अनुशजान को पुकारते है।...कहां है इन के ये सालार? तुम इन्हें क्या धोका दोगी?"

"कुछ नहीं"–मलिका ने आह भर कर कहा–"कुछ भी नही...आप ठीक कहते है... लेकिन कुछ तो बताऐं मै कुछ नही समझ सकती। क्या आप इन मुसलमानों को जानते हैं? यहां चन्द इसाई आए थे। वो कहते हैं के मुसलमानों में कोई पुरइसरार ताक़त है जिस का मुक़ाबला कोई नहीं कर सकता....और मै ने देखा है के वल्जा और फरात के दरमियान इलाक़े में हम ने जिन मुसलमानों को आबाद कर के इन्हें अपना गुलाम बना रखा था और जिन्हें हम कीड़ों मकोड़ों से बढ़ कर कुछ नही समझते थे, वही मदीना वालों का बाज़ू बन गए हैं। और हमारा लश्कर इन के आगे भागा भागा फिर रहा है।"

"ये अक़ीदे की ताक़त है मलिका फारिस!"तबीब ने कहा।

"तो क्या इन का अक़ीदा सच्चा है?"

नहीं मलिका फारस!"–बूढ़े तबीब ने कहा–"एक बात कहूंगा जो शायद तुम्हें अच्छी न लगे मुसलमानों का अक़ीदा ये है के बादशाही सिर्फ अल्लाह की है और बंदे उस के हुक्म के पाबंद है.... और वो कहते हें के उस अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं...क्या तु इस राज़ को समझी हो मलिका किसरा?"

"नही बुज़ुर्ग तबीब!"–मलिका ने जवाब दिया–"मै नहीं समझ सकी। बादशाही तो एक ख़ानदान और इस के एक फर्द की होती है।"

"इस का अंजाम तुम देख रही हो मलिका किसरा!"–तबीब ने कहा–"आज वो एक इन्सान जो अपने आप को इन्सानों का शहंशाह समझता है, बे बस और मजबूर अंदर पड़ा है और अपनी बादशाही को बचा नही सकता। उस का लश्कर पस्पा होता चला आ रहा है। इन सिपाहियों को क्या पड़ी है के वो एक ख़ानदान और एक इन्सान की शहंशाही की ख़ातिर अपनी जानें दें? वो जो हज़ारों की तादाद में मर रहे हैं वो भागते हुए मर रहे है। वो जब देखते है के माले ग़नीमत तो है ही नही फिर लड़ें क्यों? वो तुम्हारे खज़ाने से माहाना वसूल करने के लिए ज़िन्दा रहना चाहते है।"

"और मुसलमान?"

"मुसलमान!–तबीब ने कहा–"मुसलमान किसी एक इन्सान के आगे जवाब दह नहीं। वो अल्लाह की खुशनूदी के लिए लड़ते है और अपने अमीर का हुक्म

मानते है। यही वजह है के वो इतनी कम तादाद में भी तूफान की तरह बढ़ते आ रहे है...मलिका फारस! अक़ीदा अपना अपना और मज़हब अपना अपना होता है। मै इल्म और तजुर्बे की बात करता हूं। जब एक ख़ानदान और एक इन्सान अपने आप को शहंशाह बना लेता है और इन्सानों को इन्सान समझना छोड़ देता है तो एक दिन आता है के वो अपने साथ अपनी फौज को भी और अपनी रिआया को भी तबाही के गढ़े में फैंक देता है।"

"मै नहीं समझ सकती"-मलिका ने कहा-"मै समझना नही चाहती। मै सिर्फ ये चाहती हूं के किसरा सहत याब हो जाऐं। कुछ करो बुज़ुर्ग तबीब! कुछ करो।"

"कुछ नहीं हो सकता मलिका-ए-फारस!"-तबीब ने कहा-"कुछ नहीं हो सकता। सिर्फ ये ख़बर ले आओ के मुसलमानों को फारस की सरहद से निकाल दिया गया है, या ख़ालिद(र०) बिन वलीद को ज़ंजीरो में बांध कर किसरा के दरबार में ले आओ तो किसरा उठ खड़े होंगे।"

"ऐसी ख़बर कहां से लाऊं!"-मलिका ने रंजीदा और शिकस्त खूर्दा लहजे में कहा-"मदीना के इस सालार को कैसे ज़ंजीरों से बांध कर ले आऊं.....अगर मेरे सालार शिकस्त खा कर ज़िन्दा आजाते तो मैं इन की टांगें ज़मीन में गाढ़ कर इन पर कुत्ते छोड़ देती।"

वो सर झुकाए हुए चल पड़ी।

❁

एक घोड़ा सरपट दौड़ता आया और महल के बाहर रूका। मलिका दौड़ती बाहर गई। बूढ़ा तबीब भी उस के पीछे गया। वो एक कमांडर था। घोड़े से कूद कर वो मलिका के सामने दो ज़ानों हो गया। उस का मुंह खुला हुआ था। आंखें सफेद हो गई थीं चेहरे पर सिर्फ थकन ही नहीं घबराहट भी थी।

"कोई अच्छी ख़बर लाए हो?"-मल्का ने पूछा और शाहना जलाल से बोली-"उठो और फौरन बताओ।"

"कोई अच्छी ख़बर नहीं"-कमांडर ने हांपती हुई आवाज़ से कहा-"मुसलमानों ने पूरा लश्कर काट दिया है। उन्होंने हमारे हज़ारों आदमों को पकड़ कर दरिया खसीफ के किनारे इस तरह क़त्ल कर दिया के दरिया में खून चल पड़ा। है। दरिया खुश्क था। मुसलमानों के सालार ने ऊपर से दरिया का बंद खुलवा दिया तो बाद कुली खून का दरिया बन गया।"

"तुम क्यों ज़िन्दा वापस आ गए हो?"-मलिका ने ग़ज़बनाक आवाज़ में पूछा-"क्या तुम मेरे हाथों कटने के लिए आए हो?"

"मै अगली जंग लड़ने के लिए ज़िन्दा आ गया हूं"-कमांडर ने जवाब

दिया-"मैं छुप कर अपने लश्कर के कैदियों के सर जिस्मों से अलग होते देखता रहा हूं।"

"ख़बरदार!"-मलिका ने हुक्म दिया-"ये ख़बर यहीं से वापस ले जाओ। शहंशाहे फारस को....."

"शहंशाहे फारस यही ख़बर सुनने के लिए ज़िन्दा है"-उर्दशहर की आवाज़ सुनाई दी।

मलिका ने और तबीब ने देखा। उर्दशहर एक सुतून के सहारे खड़ा था। दो बड़ी हसीन और नौजवान लड़कियों ने उस के हाथ अपने कंधों पर रखें हुए थे।

"यहां आओ"-उस ने कमांडर को हुक्म दिया-"मैं ने महसूस कर लिया था के कोई आया है...कहो क्या ख़बर लाए हो?"

कमांडर ने मलिका और तबीब की तरफ देखा।

"इधर देखो"-उर्दशहर ने गरज कर कहा-"बोलो।"

कमांडर ने वही ख़बर सुना दी जो वो मलिका को सुना चुका था। किसरा उर्दशहर आगे को झुक गया। दोनों लड़कियों ने उसे सहारा दिया। मलिका ने लपक कर उस का स़र ऊपर उठाया। बूढ़े तबीब ने उस की नब्ज़ पर उंगलियां रखीं। मलिका ने तबीब की तरफ देखा। तबीब ने मायूसी से सर हिलाया।

"फारस किसरा उर्दशहर से महरूम हो गया है"-तबीब ने कहा।

महल मे हड़बोंग मच गई। उर्दशेर की लाश उठा कर उस के उस कमरे में ले गए जहां उस ने कई बार कहा था के अरब के इन लूटेरे बद्दुओं को फारस की सरहद में क़दम रखने की जुर्रत कैसे हुई है। उस ने इसी कमरे में वलीद के बेटे ख़ालिद(र०) और हारिसा के बेटे मिस्ना को ज़िन्दा या मुर्दा लाने का हुक्म दिया था। अपने हुक्म की तामील से पहले ही इस कमरे इस की लाश पड़ी थी। वो शिकस्तों के सदमे से ही मर गया था।

मलिका ने हुक्म दिया के लड़ने वाले लश्कर तक किसरा की मौत की खबर न पहुंचने दी जाए।

❁

मुसलमानों के पड़ाव में एक घोड़ा सरपट दौड़ाता दाख़िल हुआ। उसका सवार चिल्ला रहा था।

"कहां है वलीद का बेटा!"-घुड़सवार बाज़ू बुलंद कर के लहराता आ रहा था-"बाहर आ इब्ने वलीद!

ख़ालिद(र०) बड़ी तेज़ी से सामने आए।

"इब्ने वलीद!"-सवार कहता आ रहा था-"तुझ पर अल्लाह की रहमत हो।

तेरी दहशत ने उर्दशहर की जान ले ली है।"

"क्या तू पागल हो गया इब्ने हारिसा!"-ख़ालिद(र०) ने आगे बढ़ कर कहा।

सवार मिस्ना बिन हारिसा था। वो घोड़े से कूदा और इतने पुर जोश तरीक़े से ख़ालिद(र०) से बग़लगीर हुआ के ख़ालिद(र०) गिरते गिरते बचे।

"मदाइन के महल रो रहे हैं"-मिस्ना ने खुशी से बे क़ाबू आवाज़ में कहा-"उर्दशहर को मरे आज चार दिन हो गए है। मेरे दो आदमी मदाइन के महल में मौजूद थे। वहां हुक्म दिया गया है के उर्दशहर की मौत की ख़बर उस के लश्कर को न दी जाए।"

ख़ालिद(र०) ने अपने दोनों हाथ आसमान की तरफ फैलाए।,

"मेरे अल्लाह!"-उन्होंने कहा-"मैं तेरा शुक्र किस तरह अदा करूं? मुझे फतह के तकब्बुर और गुरूर से बचाना खुदाए जुलजलाल! सब तारीफें तेरे लिए और सिर्फ तेरे लिए है।"

ख़ालिद(र०) ने हाथ नीचे कर के इधर उधर देखा और बुलंद आवाज़ से कहा-"अपने तमाम लश्कर को ये मज़दा सुना दो के फारस की वसी व अरीज़ शहंशाही का सुतून गिर पड़ा है और ये अल्लाह की देन है। सब से कह दो के किसरा को तुम्हारी दहशत ने मारा है।"

ख़ालिद(र०) मिस्ना बिन हारिसा को अपने खेमे में ले गए और उस से पूछा के आगे क्या है।

"थोड़ी ही दूर फारस का एक बड़ा शहर मनीशा है"-मिस्ना ने बताया-"ये शहर इस लिए बड़ा है के वहां फारस की फौज रहती है। इसे फौज का बहुत बड़ा अड्डा समझ लो। ये शहर तिजारती मरकज़ है। इस के इर्द गिर्द ज़मीन बहुत ज़रखेज़ है। तिजारत, अनाज और बाग़ों के फलों की वजह से अमनीशा अमीरों का शहर कहलाता है। शहर पनाह बहुत मज़बूत है। शहर के दरवाज़े मज़बूत है। क़रीब जाओगे तो दीवार के ऊपर से तीरों का मीना बरसेगा...वलीद के बेटे! इस शहर के लिए जानों की कुर्बानी देनी पड़ेगी। अगर तूने ये शहर ले लिया तो समझ ले के तूने दुश्मन की एक मोटी रग अपने हाथ में ले ली।"

"क्या अब भी वहां फौज है?"-ख़ालिद(र०) ने पूछा-"अगर है तो कितनी होगी?"

"इतनी नहीं होगी जितनी पहले थी"-मिस्ना ने जवाब दिया-"जहां तक मुझे बताया गया है उल्लीस की लड़ाई में कुछ फौज वहां से भी आई थी।"

दरियाए फरात मे एक छोटा दरिया आ कर गिरता था। इसे दरियाए बाद कुली कहते थे। जहां ये दरिया मिलते थे वहां शहर अमनीशिया अबाद था। ख़ालिद(र०)

बड़ी शिद्दत से महसूस कर रहे थे के उन का हर अगला क़दम पिछले क़दम से ज़्यादा दुश्वार होता जा रहा है। ताहम उन्होंने हुक्म दिया के फौरन अमनीशिया की तरफ कूच किया जाए। फौरन कूच से उन का मक़सद ये था के आतिश परस्तों को संभलने का मौक़ा न दिया जाए।

❁

वो मई 633 ई० (रबी अव्वल 12 हिज्री) के तीसरे हफ्ते का एक इब्तेदाई दिन था जब ख़ालिद(र०) ने उल्लीस से कूच किया। मदीना के मुजाहेदीन फतह व नुसरत से सरशार थे। वो इलाक़ा सरसब्ज़ और ज़रखेज़ था। घोड़ों और इन्सानों के लिए खुराक की कोई कमी नहीं थी लेकिन अमनीशिया का दिफा ख़ालिद(र०) को परेशान कर रहा था।

जब शहर की दीवार और बुर्ज नज़र आने लगे तो ख़ालिद(र०) ने अपने लश्कर को रोक लिया। मिस्ना बिन हारिसा उन से अलग हो गया था। वो छापा मार जंग लड़ने का माहिर था। वो अपने जांबाज़ों को साथ ले गया था। ख़ालिद(र०) ने ये काम उसे सौंपा था के अपने दो चार आदमियों को किसी भेस में अमनीशिया तक भेज कर मालूम करे के वहां आतिश परस्तों का कितना लश्कर है।

ज़्यादा देर नहीं गुज़री थी के मिस्ना आ गया।

"इब्ने वलीद!"- उस ने ख़ालिद(र०) से कहा-"ये धोका मालूम होता है खुदा की क़सम, आतिश परस्त आमने सामने की लड़ाई से मुंह मोड़ गए हैं और अब वो धोके और फरैब की लड़ाई लड़ना चाहते हैं।"

"क्या तू नहीं बताएगा के तूने क्या देखा-"ख़ालिद(र०) ने पूछा-"और वो कैसा धोका है जो आतिश परस्त हमें दे रहे हैं?"

"शहर ख़ाली है"-मिस्ना बिन हारिसा ने कहा-"दरवाज़े खुले हुए हैं। बुर्जों में और दीवारों पर कोई भी नज़र नहीं आता।"

"क्या तेरे आदमी शहर के अंदर गए थे?"

"नहीं इब्ने वलीद!"-मिस्ना ने जवाब दिया-"वो दरवाज़ों तक गए थे। वो तो क़ब्रिस्तान लगता है। वो कहते हैं के दरवाज़ों में से इन्हें न कोई इन्सान नज़र आया न जानवर.....क्या तू उसे धोका या जाल नहीं समझता इब्ने वलीद?"

"हां इब्ने हारिसा!"-ख़ालिद ने कहा-"मैं तेरे आदमियों पर शक नही करूंगा के वो झूट बोल रहे हैं। अगर उन्होंने ख्वाब नहीं देखा तो हमें अहतियात से आगे जाना होगा।"

"खुदा की क़सम वो झूट बोलने वालों में से नही"-मिस्ना ने कहा-"इन का ईमान इतना कमज़ोर होता तो वो फारसियों के ज़ोर व सितम से बचने के लिए कभी के

अपना मज़हब छोड़ चुके होते....और सुन वलीद के बेटे! सब से पहले मेरे आदमी शहर में दाखिल होंगे। अगर ये धोका है, फंदा है, जाल है, पहले इस में मेरे आदमी जाऐंगे ताके तेरा लश्कर महफूज़ रहे।"

ख़ालिद(र०) अपने सालारों को बुलाया और इन्हें बताया के अमनीशिया ख़ाली पड़ा है और ये धोका होगा।

"धोका यही होगा के हम अपने लश्कर को शहर में ले जाऐंगे- ख़ालिद(र०) ने कहा-"वहां कोई नहीं होगा। अचानक दरवाज़े बंद हो जाऐंगे और हम मुहासरे में या फंदे में आ जाऐंगे......हम फौरन शहर पर हल्ला बोल रहे हैं।...इब्ने हारिसा!"-ख़ालिद(र०) मिस्ना से मुख़ातिब हुए-"तेरा दस्ता लश्कर से दूर रहेगा और तेरी नज़र लश्कर पर होगी। अगर दुश्मन कहीं से निकल आया तो उस पर तेरा दस्ता अपने अंदाज़ से हमला करेगा और छापा मार क़िस्म के हमले करता रहेगा। तुझे और कुछ बताने की ज़रूरत नहीं।"

बाकी फौज को उन्हांने तीन हिस्सो में तक़सीम किया। पहले की तरह दायें और बायें सालार आसिम बिन उमरो और सालार ऐदी बिन हातिम को रखा। अब इन के काम मुख़तलिफ थे। दरवाज़े खुले होने की सूरत में ख़ालिद(र०) को शहार के अंदर जाना था। आसिम बिन उमरो को उन के पीछे रहना था ताके बवक़्त ज़रूरत ख़ालिद(र०) की मदद को पहुंच सकें। ऐदी बिन हातिम ने अपने दस्ते क़िले के इर्द गिर्द फैला देने थे।

तमाम तर हिदायत और अहकाम दे कर ख़ालिद(र०) ने पेश क़दमी का हुक्म दे दिया।

❁

लश्कर के तीनों हिस्से शहर के क़रीब जा कर एक दूसरे से अलग हो गए। आगे मिस्ना बिन हारिसा के जांबांज़ सवार शहर के बाहर के इलाक़े में घूम फिर रहे थे। क़रीब एक जंगल था। कुछ इलाक़ा चट्टानी था। मिस्ना ने अपने छापा मार दस्ते को टोलियों में तक़सीम कर दिया था। इन टोलियों ने हर वो इलाक़ा देख लिया था जहां दुश्मन के छुपने का इम्कान था लेकिन दुश्मन का कहीं नाम व निशन नहीं मिला था, फिर ये टोलियां दूर दूर तक गशत कर रही थीं।

लश्कर के तीनों हिस्से शहर की दीवार के क़रीब पहुंच गए तो सालार ऐदी बिन हातिम ने अपने दस्तों को शहर के इर्द गिर्द फैला दिया। ख़ालिद(र०) ने बड़े दरवाज़े में जा कर बुलंद आवाज़ से ऐलान कराए के शहर के लोग घरों से बाहर आजाऐं।

"अगर लोग बाहर न आऐ तो शहर का कोई मकान खड़ा नहीं रहने दिया दिया

जाएगा।"

"आतिश परस्तो! ज़िन्दा रहना है तो बाहर आ जाओ।"

"अपने सालारों से कहो बुज़दिल न बनें।"

इस तरह के ऐलान होते रहे मगर दरवाज़े के अंदर सुकूत तारी रहा। ख़ालिद(र०) ने नियाम से तलवार निकाली, बुलंद आवाज़ से कहा-"मेरे पीछे आओ"-और उन्होंने घोड़े को ऐड़ लगा दी। फौज के जो दस्ते उन के सथ थे। वो उन के पीछे शहर के दरवाज़े में यूं दाख़िल हुए जैसे किसी नहर का बंद टूट जाता है। सब से आगे सवार दस्ते थे।

अंदर जा कर घोड़े फैल गए। ख़ालिद(र०) ने हुक्म दिया के घर घर की तलाशी ली जाए। ख़ालिद(र०) खुद एक ऊंची जगह खड़े हो गए। और अहकाम देने लगे। उन्होंने क़ासिद से कहा के सालार आसिम बिन उमरों के पास जाए और उसे कहे के अपने दस्ते अंदर ले ओओ और पियादा तीर अंदाज़ों को शहर पनाह की दीवारों पर फैला दो।

देखते ही देखते आसिम बिन उमरों के तीर अंदाज़ तमाम दीवार पर फैल गए। वो अंदर भी देख रहे थे बाहर भी। ख़ालिद(र०) दीवार के ऊपर गए और सारे शहर के गिर्द घूम आए। शहर में इन्हें अपने दस्तों के सिवा और कोई भी नज़र नहीं आ रहा था। बाहर ऐदी बिन हातिम के दस्ते थे। ख़ालिद(र०) की नज़र जहां तक काम करती थी, इन्हें दुश्मन के लश्कर का कोई खरा खोज नहीं मिल रहा था। इन्हें घुड़ सवारों की दो तीन टोलियां दिखाई दीं। वो मिस्ना बिन हारिसा के सवार थे। ख़ालिद(र०) नीचे आ गए। इन्हें बताया गया के एक ज़ईफ़ुल उम्र आदमी एक मकान में चार पाई पर पड़ा ऊंग रहा है। ख़ालिद(र०) उस मकान में गए। एक बूढ़ा जिस की आंखें अध खुली थीं और मुंह भी खुला हुआ था, चारपाई पर पड़ा लाश लग रहा था। उस की आवाज़ सरगोशी से बुलंद नहीं थी। वो कुछ कह रहा था। ख़ालिद(र०) ने अपने एक मुहाफिज़ से कहा के वो(र०) इस के मुंह के साथ कान लगा कर सुने।

"क्या तुम वही लोग हो जिन के डर से शहर खाली हो गया है?"-बूढ़े ने पूछा।

"हम मुसलमान हैं"-मुहाफ़िज़ ने कहा।

"मदीना के मुसलमान?-बूढ़े ने पूछा और जवाब का इन्तेज़ार किए बग़ैर कहने लगा-"मैं यहां का इसाई हूं। वो मुझे मरने के लिए छोड़ गए हैं। सब चले गए हैं"

"कहां चले गए है।?"

"भाग गए हैं"-बूढ़े ने कहा-"सालार भाग जाऐं, फौज भाग जाए तो लोग क्यों नहीं भागेंगे? क्या ख़ालिद(र०) बिन वलीद तुम्हारा सालार है?......यहां सब

उसे जिन और देव कहते हैं.....हां.....हां...जिस ने किसरा की इतनी ताक़तवर फौज को भगा दिया है वो इन्सान नहीं होगा।"

ख़ालिद(र०) ने उसे न बताया के वो जिन और देव, उस के सामने खड़ा है। उन्होंने ने हुक्म दिया के बूढ़े के मुंह में दूध डाला जाए।

"फौज गई कहां है?"–बूढ़े से पूछा गया।

"आगे शहर हीरा है"–बूढ़े ने जवाब दिया–अज़ादबा वहां का हाकिम है। शायद उस ने हुक्म दिया था के सब लोग हीरा आ जाओ....हमारे इस शहर के जवान आदमी मदीना वालों के खिलाफ लड़ने गए थे। बहुत सारे मारे गए हैं। वो जो बच कर आ गए थे, वो हीरा चले गए थे पीछे बूढ़े, औरतें और बच्चे रह गए थे। यहां के सब लोग ख़ालिद(र०) बिन वलीद से डरते हैं। हमारे भाग कर आने वाले जवानों ने लोगों को और ज़्यादा डरा दिया। वो कहते थे के मुसलमान खून का दरिया बहा देते हैं, और वो इधर आ रहे हैं....सब भाग गए मैं नहीं भाग सका। मैं तो उठ भी नहीं सकता। वो मुझे मरने के लिए छोड़ गए हैं।"

इस बूढ़े को ऊंटनी का दूध पिला कर उस के हाल पर छोड़ दिया गया।

तक़रीबन तमाम मोअररि्ख़ों ने लिखा है के अमनीशिया शहर इस हालत में खाली था के लोगों के घरों में सामान और क़ीमती अशिया ऐसे पड़ी थीं जैसे इन मकानों के मकीन अभी अभी कुछ देर के लिए बाहर निकल गए हों। लोग इतनी उजलत में भागे थे के रक़में और सोना वग़ैरा भी पीछे छोड़ गए।

ख़ालिद(र०) के हुक्म से तमाम फौज को शहर में बुलाया गया और इन्हें माले ग़नीमत इक्ळा करने की छुट्टी दे दी गई। ये अमीरों का शहर था। घरों में क़ीमती अशिया और कपड़ों की इफ़रात थी। मुसलमान बाज़ चीज़ों को देख कर हैरान होते थे। ये चीज़ें वो अपने साथ ले जाना चाहते थे।

जब सामान एक जगह इक्ळा किया गया तो ख़ालिद(र०) ने देखा।

"आग लगा दो इस सामान को"–ख़ालिद(र०) ने हुक्म दिया–"ये ऐश व इशरत का वो सामान है जिस ने इस क़ौम को बुज़दिल बना दिया है। इन लोगों का अंजाम देख लो। इन के महल और मकान देख लो। खुदा की क़सम खुदा जिसे तबाह करना चाहता है उसे ऐश व इशरत में डाल देता है.....हमें आगे जाना है.....जला दो इसे और सोना, हीरे जवाहरात और रक़में अलग जमा कर दो।"

तिबरी ने ख़ास तौर पर लिखा है के ख़ालिद(र०) ने इस ख्याल से क़ीमती ज़रूफ, रैशमी कपड़े और अमीर घरों का सामान जला देने का हुक्म दिया था के मुजाहेदीन जिहाद से मुंह मोड़ जाऐंगे। तिबरी के अलावा दूसरे मोअररि्ख़ों ने भी लिखा है के जो माले ग़नीमत इस शहर से मिला इतना कहीं से भी नहीं मिला था।

ख़ालिद(र०) ने दस्तूर के मुताबिक़ इस के चार हिस्से फौज में तक़सीम कर दिये और पांचवां हिस्सा मदीना ख़लीफातुलमुस्लेमीन को भेज दिया।

मोहम्मद हुसैन हैकल ने मुख़्तलिफ मोअरिख़ों के हवाले से लिखा है के माले ग़नीमत का पांचवां हिस्सा जो मदीना को भेजा गया इस का मीर -ए-कारवां बनी अजल का एक खश्स जिन्दल था। फारसियों के खिलाफ पहली तीनों जंगों के जंगी क़ैदियों को इसी क़ाफले के साथ मदीना भेजा गया। खलीफातुल मुस्लेमीन अबुबकर(र०) ने इन क़ैदियों में से एक खूबसूरत लोंडी जिन्दल को बतौर इनाम दी।

तिबरी ने लिखा है के खलीफातुल मुस्लेमीन ने मदीना के मुसलमानों को मस्जिद में बुलाया और इन्हें ख़ालिद(र०) की फतुहात की तफसीलात सुनाईं। उन्होंने कहा-"ऐ कुरैश! तुम्हारा शेर एक और शेर झपट पड़ा और उसे मार गिराया है। अब औरतें ख़ालिद(र०) जैसा बेटा पैदा करने से क़ासिर है।"

❁

"वलीद के बेटे!"-मिस्ना बिन हारिसा ने ख़ालिद(र०) से कहा-"आगे फारस की शहंशाही का एक और बड़ा शहर हीरा है। इसे तू फारस का हीरा समझ लेकिन इसे लेना आसान नहीं होगा।"

"हां हारिसा के बेटे!"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"अमनीशिया की तमाम फौज और तमाम इसाई जवान हीरा पहुंच गए हैं। वो सब हमारे मुक़ाबले में आएंगे। इन्हें मुक़ाबले में आना चाहिए.....मदाइन की क्या खबर है?"

"आज ही मेरा एक जासूस वापस आया है"-मिस्ना ने कहा-"वो बताता है के मदाइन में मायूसी फैली हुई है। किसरा के महल में मातम हो रहा है...अच्छी खबर ये है के वहां से अब फौज का कोई दस्ता नहीं आएगा।"

"क्या ये लोग अब भी नहीं समझे के तख़्त व ताज और ख़ज़ाने ताक़त नही होते के दुश्मन से बचा लें?"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"क्या ये हमारा फर्ज़ नहीं के इन लोगों को अल्लाह के सच्चे रसूल(स०) का पैग़ाम दें के ताक़त और सरवत सिर्फ अल्लाह के हाथ में है और अल्लाह ही इबादत के लायक़ है जिस का कोई शरीक नहीं?"

"हां इब्ने वलीद!"-मिस्ना ने कहा-"ये हमारा फर्ज़ है के इन तक अल्लाह का पैग़ाम पहुंचाएं।"

"इस के साथ ही मुझे हर उस ख़तरे को कुचलना है जो इस्लाम को नुक़सान पहुंचा सकता है"-ख़ालिद(र०) ने कहा-कुफ्र का सर कुचलना है।"

तारीखे इस्लाम का ये इब्तेदाई दौर बड़ा ही नाज़ुक था। इसी दौर में इस्लाम की असकरी रिवायत की बुनियाद रखनी थी। उम्मते रसूल(स०) के लिए जज़्बे की शिद्दत

और अहमीयत का तअय्युन करना था। इस रिवायत की बुनियाद इस उसूल पर रखनी थी के नफरी और ताक़त की कमी शिकस्त का बाअस नही बन सकती। जज़्बा और इस्लाम की मोहब्बत इस कमी को पूरा कर दिया करती है।

ख़ालिद(र०) को अहसास था के वो इस खयाल से पीछे हट आए के लश्कर मुसलसल लड़ लड़ कर थक गया है और नफरी भी कम होती जा रही है और मुसतक़िर यानी मदीना से भी दूर हटते जा रहे हैं तो आने वाली नस्लों के लिए यही रिवायत बन जाएगी। जहां रूकावट या कोई दुश्वारी पेश आ गई, सालार अपनी फौज को वापस ले आऐंगे। ख़ालिद(र०) ऐसी रिवायत क़ायम नही करना चाहते थे।

ख़ालिद(र०) को ख़लीफातुल मुस्लेमीन की पुश्त पनाही हासिल थी। उस वक्त की ख़िलाफत की पालीसी में कुफ्फार के साथ दोस्ती या मज़ाकरात का ज़रा सा भी दख़ल नही था। दुश्मन को दुश्मन ही समझा जाता था। ये नहीं देखा जाता था के दुश्मन कितनी दूर है और कितना ताक़तवर है। उसूल ये था के दुश्मन के सर पर सवार रहो और उस के लिए दहशत बन जाओ।

फारस की शहंशाही कोई मामूली ताक़त नहीं थी। ख़ालिद(र०) ने इतनी बड़ी ताक़त के पेट में जा कर भी पीछे हटने की न सोची। उन्होंने ये भी न सोचा के लश्कर को कुछ आराम देते और इस की तंज़ीम में अगर कुछ खामियां रह गई थीं तो वो दूर कर लेते। मिस्ना बिन हारिसा ने इन्हें बताया के हीरा में मुक़ाबला बड़ा सख्त होगा तो भी ख़ालिद(र०) ने अपने फैसले पर नज़रे सानी की न सोची। उन्होंने उसी वक्त अपने सालारों को बुलाया।

"खुदा की क़सम!"-ख़ालिद(र०) ने सालारों से कहा-"मुझे यक़ीन है के तुम ये नहीं सोच रहे के हम जितना आगे बढ़ते जा रहे हैं हमारे लिए ख़तरे बढ़ते जा रहे हैं।"

"नही इब्ने वलीद!"- एक सालार ने कहा-"हम में से कोई भी ऐसा नहीं सोच रहा।"

"और हम में से कोई भी ऐसा नहीं सोचेगा"-दूसरे सालार ने कहा।

"और मुझे ये भी यक़ीन है"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"के तुम में से कोई भी नहीं सोचेगा के दुश्मन कितना ताक़तवर है।"

"नही इब्ने वलीद!"-सालार आसिम बिन उमरो ने कहा-"हमें ये बता के तू आज ये बात क्यों पूछ रहा है?"

"तुम पर अल्लाह की रहमत हो!"-ख़ालिद(र०) ने कहा-"हमारी अगली मंज़िल बहुत दुश्वार है। अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता के हम में से कौन रहता है और कौन दुनिया से उठ जाता है। अपने दिलों पर नक़्श कर लो के अपने फर्ज़ से मुंह

मोड़ कर अल्लाह के सामने जाओगे तो तुम्हारा ठिकाना बहुत बुरा होगा और तुम जानते हो वो ठिकाना कैसा है। रिवायत जो तुम आज क़ायम करोगे वो एक विरसा होगा जो तुम आने वाली नस्लों के लिए छोड़ जाओगे और ये रिवायत इस्लाम की बक़ा का या फना का बाअस बनेगी। हमें इस्लाम की बक़ा और सर बुलंदी के लिए लड़ना है। कुर्आन का हुक्म याद करो के लड़ो उस वक्त तक जब तक कुफ्र का फितना मौजूद है और दुश्मन को मआफ उस वक्त करो जब वो हथियार डाल कर तुम्हारे आगे झुक जाए, फिर उस से वो शर्तें मनवाओ के उस का डंक मारा जाए और उस का दिल रसूल अल्लाह(स०) के शैदायों के ख़ौफ से कांपता रहे।"

अपने सालारों के जज़्बे में नई रूह फूंक कर ख़ालिद(र०) ने इन्हें बताया के आगे आतिश परस्तो का बड़ा मज़बूत फौजी अड्डा हीरा है जहां के हाकिम अज़दाबा ने बहुत बड़ा लश्कर जमा कर रखा है। आतिश परस्त पहली लड़ाईयों में बे शुमार कश्तियाँ लाए थे। वो अब मसुलमानों के कब्ज़े में थीं। ख़ालिद(र०) ने अपने लश्कर को कश्तियों में हीरा तक ले जाने का फैसला किया। दरियाई रास्ता आसान था और छोटा भी। ये पहला मौक़ा था के रेगज़ारों में लड़ने वाले दरियाओं के सीने पर सवार हुए।

कश्तियों में सवार लश्कर की हिफाज़त के लिए ख़ालिद(र०) ने ये इन्तेज़ाम किया के दरिया के दोनों किनारों पर सौ डेढ़ सौ घुड़सवारों को रखा जिन्हें कश्तियों के साथ साथ जाना था। फतह व नुसरत से सरशार लश्कर जज़्बे और इस्लाम की मोहब्बत के जोश से दरियाऐ फरात के सीने पर चला जा रहा था। जंगी तराने की एक गूंज थी जो फरात के पानी पर वज्द तारी कर रही थी। फिर ये जंगी तराना कलमा-ए-तैय्यबा में बदल गया। अठारह हज़ार मुसलमानों की आवाज़ एक, अज़्म एक, जज़्बा एक था। उन के दिलों में एक अल्लाह और रसूल का इश्क था।

❁

दुश्मन सोया हुआ नही था। हीरा का हाकिम अज़दाबा रातों को भी नहीं सोता था। हीरा में ये ख़बर नहीं पहुंचने दी गई थी के शहंशाहे फारिस उर्दशहर मर चुका है। वो अभी तक हर बात और हर हुक्म में उर्दशहर का नाम लेता था।

उस रोज़ हीरा की शहर पनाह का मुआयना कर रहा था। उस ने शहर में बे पनाह लश्कर जमा कर लिया था। वो जिस दस्ते के सामने जाता वहां चिल्ला चिल्ला कर कहता- "ज़रतुश्त की रहमत हो तुम पर! वो बुज़दिल थे जो काज़मा, मज़ार और उल्लीस में सहरा के बद्दुओं के हाथों पिट गए थे। उन के मुर्दा जिस्मों को ज़रतुश्त के शौले चाट रहे हैं....ऐ यसू मसीह के नाम लेवाओं! तुम हमारे साथ कंधे से कंधा मिला कर मुसलमानों के ख़िलाफ लड़ने आए हो। याद करो अपनी उन बेटियों को जो

लोंडियां बन कर मदीना पहुंच गई है। याद करो उन जवान बेटों को जिन के मुर्दा जिस्मों का गोश्त भेड़िये, गीदड़ और गोश्त ख़ोर परिंदे खा गए है और उन्हें भी जो क़ैदी हो कर मदीना वालों की गुलामी में जा पड़े है।....मुसलमान फतह के नशे में बे ख़तर बढ़े आ रहे हैं। उन के लिए ऐसा ख़तरा बन जाओ के ज़िन्दा वापस न जा सकें। शहंशाहे फारस उर्दशहर तुम्हें खुद मुबारकबाद देने आऐंगे, तुम्हें इनाम व इकराम से मालामाल कर देंगे।"

शहर पनाह और बुर्जों के मुआयने के दौरान उस ने देखा, दूर एक घुड़सवार घोड़े को इन्तेहाई रफ्तार पर दौड़ाता आ रहा था।

"दरवाज़ा खोल दो"-अज़ादबा चिल्लाया-"ये सवार अमनीशिया की तरफ से आ रहा है।"

कई आवाज़े सुनाई दी-"दरवाज़ा खोल दो। सवार को आने दो।"

अज़दाबा बड़ी तेज़ी से दीवार से उतर गया। सवार के पहुंचने तक दरवाज़ा खोल दिया गया था। सवार रफ्तार कम किए बग़ैर अंदर आ गया। अज़ादबा घोड़े पर सवार था। उस ने घोड़े को ऐड़ लगाई और आने वाले सवार की तरफ गया। दोनों घोड़े पहलू ब पहलू रूक गए।

"कोई ख़बर?"-अज़दाबा ने पूछा।

"वो आ रहे हैं"-सवार ने हांपती हुई आवाज़ में कहा-"सारा लश्कर कश्तियों में आ रहा है।"

वो ख़ालिद(र०) के लश्कर की पेशक़दमी की खबर दे रहा था।

"कश्तियों में?"-अज़दाबा ने पूछा-"बंद से कितनी दूर हैं?"

"बहुत दूर"-सवार ने जवाब दिया-"अभी बहुत दूर है।"

अज़ादवा का बेटा सालार था। अज़ादबा ने अपने बेटे को बुलाया। (किसी भी तारीख़ में उस के बेटे का नाम नहीं मिलता। इसे "अज़ादबा का बेटा" ही लिखा गया है)

"आज तेरी आज़माईश का वक़्त है मेरे बेटे!"-अज़ादबा ने कहा-"एक सवार दस्ता साथ ले और तूफान से ज़्यादा तेज़ रफ्तार बंद तक पहुंच और फरात का पानी इस तरह पी ले के सूख जाए। मुसलमानों का लश्कर कश्तियों में आ रहा है। देख, तू पहले पहुंचता है या मुसलमान!"

उस का बेटा एक सवार दस्ता लेकर बहुत तेज़ रफ्तार से शहर से निकल गया।

❁

ख़ालिद(र०) का लश्कर बड़ी अच्छी रफ्तार पर आ रहा था। चूंके वो बारिश को मौसम था इस लिए दरिया में पानी कम था लेकिन कश्तियों के लिए काफी था।

अचानक पानी कम होने लगा, फिर पानी ख़त्म हो गया और तमाम कश्तियां कीचड़ में फंस के रह गईं। मदीना के मुजाहेदीन पर ख़ौफ तारी हो गया। देखते ही देखते दरिया का खुश्क हो जाना ख़ौफ वाली बात थी। खुद ख़ालिद परेशान हो गए।

"मत घबराओ वलीद के बेटे!"–किनारे से मिस्ना बिन हारिसा की लल्कार सुनाई दी–"और मत डरो अहले मदीना आगे दरिया पर एक बंद है! हमारे दुश्मन ने बंद पर पानी रोक लिया है।"

बड़ी तेज़ी से सवार अपने घोड़े कश्तियों से निकाल लाए और ये दस्ता सरपट दौड़ाता बंद तक पहुंचा। अज़ादबा का बेटा अभी अपने सवारों के साथ वहीं था। मुसलमान सवारों ने उन पर हल्ला बोल दिया और इन में से किसी एक को भी ज़िन्दा न छोड़ा मुसलमानों ने बंद खोल दिया। कश्तियों तक पानी पहुंचा तो कश्तियां उठने लगीं। मल्लाहों ने चप्पू थाम लिए और कश्तियां तैरने लगीं।

अज़दाबा अच्छी खबर के इन्तेज़ार में दीवार पर खड़ा बेताब हो रहा था। उस का एक सालार उस के पास आन खड़ा हुआ।

"बहुत बुरी ख़बर आई है"–सालार ने कहा।

"कहां से ?"–अज़ादबा ने घबरा कर पूछा–"क्या मेरा बेटा...."

"मदाइन से!"–सालार ने कहा–"शंहशाहे उर्दशहर मर गए हैं लेकिन ये ख़बर खुफिया रखनी है।"

इतने में एक सवार उन के पास आया और घोड़े से उतर कर आदाब बजा लाया।

"अगर ये मेरा फर्ज़ न होता तो मैं ऐसी ख़बर ज़ुबान पर न लाता"–सवार ने कहा।

"मैं सुन चुका हूं"–अज़ादबा ने कहा–"किसरा उर्दशहर....."

"नहीं"–सवार ने कहा–"आप का बेटा बंद पर मारा गया है। उस के तमाम सवारों को मुसलमानों ने काट डाला है।"

"मेरा बेटा!"–अज़ादबा के मुंह से निकला और उस का रंग लाश की तरह सफैद हो गया।